

₹২০০
₹২০০
₹২০০
₹২০০
₹২০০
₹২০০
₹২০০
₹২০০

॥ শ্রীমদ্ভগবদ্গীতা ॥

॥ যথার্থ গীতা ॥

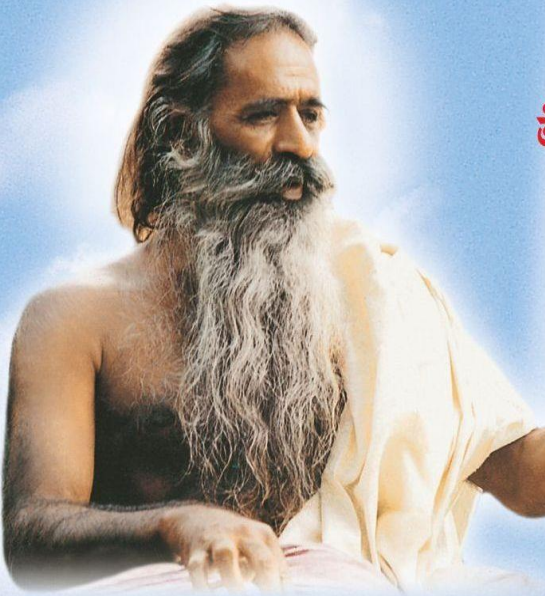
₹২০০
₹২০০
₹২০০
₹২০০
₹২০০
₹২০০
₹২০০

॥ শ্রীমদ্ভগবদ্গীতা ॥

॥ যথার্থ গীতা ॥

স্বামী অন্নগুডানন্দ

বছৰৰ দীঘলীয়া
অন্তৰালৰ পিছত
শ্রীমদ্ভগবদ্ গীতাৰ
শাস্বত ব্যাখ্যা



Assamese

লেখকৰ প্ৰতি

“যথার্থ গীতা” ৰ লেখক মহাপুৰুষ, যি জন বিশ্ব বিদ্যালয়ৰ ‘উপাধি’ সমূহৰ দ্বাৰা সংযুক্ত নোহোৱা স্বতেও সদৃশৰ কৃপাৰ ফলস্বৰূপে ঈশ্বৰীয় আদেশৰ দ্বাৰা সঞ্চালিত। লিখনীয়ে সাধন ভজনৰ ব্যৱধানৰ সৃষ্টি কৰিব বুলি তেখেতে ভাবিছিল। কিন্তু গীতাৰ এই ব্যাখ্যা নিৰ্দেশনৰ নিমিত্তক ৰূপেহে কাম কৰিছে। ভগৱানে তেওঁক অনুভৱত কৈছিলে যে গীতাৰ ব্যাখ্যা লিখাৰ বাদে তেওঁৰ সকলো ইচ্ছা শাস্ত হৈ গৈছে। স্বামীজীয়ে ভজন কৰিয়ে এই ইচ্ছা নাশ কৰিব বিচাৰিলে, কিন্তু ভগৱানৰ আদেশৰ মুৰ্ত্ত স্বৰূপে ঠিয় দিলে “যথার্থ গীত” ই, য’ত ভুল হ’ব ধৰিছিল ভগৱানে ঠিক কৰি দিছিল। স্বামীজীৰ শাস্তঃ সুখায় এই কৃতি সৰ্বান্ত সুখায় হওক, শুভ কামণাৰে সৈতে।

প্ৰকাশকৰ ফালৰ পৰা-

॥ ॐ नमः सद्गुरुदेवाय ॥

श्रीमद्भगवद् गीता

यथार्थ गीता

मानव धर्मशास्त्र

व्याख्याकार

परमपूज्य श्री परमहंस जी महाराज कृपाप्रसाद

स्वामी श्री अड़गड़ानन्द जी

श्री परमहंस आश्रम, शक्लेशगढ़

ग्राम-डाक - शक्लेशगढ़, जिला-मिर्जापुर

उत्तर प्रदेश, भारत

दूरभाष : (०५४४७)२७८०४०

असमीया भाषानुवाद

श्री यदु नाथ बशिष्ठ, हिन्दी शिक्षक

बंगाली बिर्जाभ मध्य इंग्रजी विद्यालय

गाँव :- गोलाजुलि, बङ्गा-डि-बिर्जाभ

डाक - मेरबिल, लखिमपुर, असम- १८४१७०।



শ্রী কৃষ্ণই যি সময়ত গীতাৰ উপদেশ দিছিল, সেই সময়ত তেওঁৰ মনোগত ভাৱ কি আছিল ? মনোগত সকলো ভাৱ ব্যক্ত কৰিব নোৱাৰি। কিছু কব পাৰি, কিছু ভাৱ ভঙ্গীত ব্যক্ত হয়, আৰু বাকী সম্পূৰ্ণ ক্ৰিয়াত্মক থাকে যাক অনুসৰণৰদ্বাৰাহে উপলব্ধি কৰিব পাৰি। যি স্তৰত শ্রী কৃষ্ণ আছিল, ক্ৰমশঃ গৈ গৈ সেই অৱস্থা প্ৰাপ্ত কৰা মহাপুৰুষেহে কব পাৰে যে গীতাই কি কয়? তেওঁ গীতাৰ কথা খিনিকে ব্যক্ত কৰাই নহয়, তেওঁ সেই ভাৱকো দৰ্শায়, কি যেনো তেওঁৰ সন্মুখত সেই দৃশ্যই ভাঁহিথাকে যি দৃশ্য কৃষ্ণৰ সন্মুখত আছিল আৰু বৰ্তমান মহাপুৰুষ জনৰো আগত সেই দৃশ্যই দৃশ্যমান হৈ থাকে। সেইকাৰণে তেওঁ নিজে দেখে, দেখুৱায় আৰু আপোনাকো জাগৃত কৰি দি সেই পথত চলায়।

পূজনীয় পৰমহংস মহাৰাজও সেই স্তৰৰেই মহাপুৰুষ আছিল। তেওঁৰ বানী আৰু অন্তঃ প্ৰেৰণাৰে গীতাৰ যি অৰ্থ উলিয়াইছে তাৰ সংকলনেই হল “যথার্থ গীতা”।

“স্বামী অড়গড়ানন্দ”

ভাৰত গৌৰৱ সন্মান পত্ৰ

আমাৰ প্ৰকাশন

কিতাপ

ভাষা

যথার্থগীতা	❖ ভাৰতীয় ভাষা	হিন্দী, মাৰাথী, পঞ্জাবী, গুজৰাটী, বাংলা, তামিল, উৰ্দু, তেলেগু, মলায়লম, অসমীয়া সংস্কৃত উড়িয়া, কন্নড়।
	❖ অন্তৰাষ্ট্ৰীয় ভাষা সমূহ	ইংৰাজী, জাৰ্মান, ফ্ৰেঞ্চ, স্পেনিছ, উটালিয়ান, নেপালী, নাৰ্বেজিয়ান, চাইনিজ, চেক, ৰুচী।
শঙ্কা সমাধান		হিন্দী, গুজৰাটী, মাৰাঠী, ইংৰাজী
জীৱনাদৰ্শ আৰু আত্মানুভূতি		হিন্দী, মাৰাঠী, গুজৰাটী, ইংৰাজী।
অঙ্গ স্পন্দনৰ কাৰণ কি		
আৰু কি সংকেত কৰে		হিন্দী, ইংৰাজী, গুজৰাটী, জাৰ্মান।
অনচাহে প্ৰশ্ন		হিন্দী, মাৰাঠী, গুজৰাটী।
একলব্যৰ আঙুলী		হিন্দী, মাৰাঠী, গুজৰাটী।
ভজন কাৰ কৰিব ?		হিন্দী, বাঙ্গালী, অসমীয়া, মাৰাঠী, গুজৰাটী, জাৰ্মানী ইংৰাজী।
যোগশাস্ত্ৰীয় প্ৰণায়ম		হিন্দী, গুজৰাটী, মাৰাঠী
গ্লোৰিচ অফ যোগা		ইংৰাজী
ষোড়শোপচাৰ পূজন পদ্ধতি		হিন্দী, মাৰাঠী, গুজৰাটী।।
<u>অডিঅ কেচেটচ</u>		
এথার্থ গীতা		হিন্দী, গুজৰাটী, মাৰাঠী, ইংৰাজী।
অমৃত বাণী		হিন্দী।
(শ্ৰী স্বামীজীৰ মুখাৰ বিন্দৰ পৰা নিঃসৃত অমৃতবাণী সংকলন।		
গুৰু বন্দনা- আৰতি		
<u>অডিও চিডি (এম পি.)</u>		
যথার্থগীতা		হিন্দী, গুজৰাটী, মাৰাঠী, ইংৰাজী জাৰ্মান।
অমৃত বাণী		হিন্দী।

© সৰ্বস্বত্ব- লেখক

(এই কিতাপৰ কোনো অংশ প্ৰকাশন, ৰেকডিং, প্ৰতিলিপি প্ৰকাশন অথবা সংশোধন লেখকৰ বিনা অনুমতিত বৰ্জিত আছে।)

অনন্ত শ্ৰী বিভূষিত
যোগী ৰাজ যুগ পিতামহ
পৰম পূজ্য শ্ৰী স্বামী পৰমানন্দ জী
শ্ৰী পৰমহংস আশ্ৰম অনুসুইয়া
(চিত্ৰ কুট)ৰ

পৰম পাবন চৰণত

সাদৰ সমৰ্পিত

— অন্তশ্ৰেৰণা ।



গুৰু- বন্দনা

॥ ওঁ শ্ৰী সদ্গুৰুদেৱ ভগৱানৰ কী জয় ॥

জয় সদ্গুৰুদেৱং পৰমানন্দং অমৰ শৰীৰং অবিকাৰী।

নিৰ্গুণ নিৰ্মূলং, ধৰি স্কুলং, কাটন শুলং ভৱভাৰী ॥

সূৰত নিজ সোহং কলিমল খোহং, জনমন মোহন ছবিভাৰী।

অমৰাপুৰবাসী, সবসুখবাশী, সদা একৰস নিৰ্বিকাৰী ॥

অনুভৱ গন্তীৰা, মতি কে ধীৰা, অলখ ফকিৰা অৱতাৰী।

যোগী অন্ধৈষ্টা, ত্ৰিকাল দ্ৰষ্টা, কেৱল পদ আনন্দকাৰী ॥

চিত্ৰকূটহি আয়ো, অদ্বৈত লখায়ো, অনুসুইয়া আসন মাৰী।

শ্ৰীপৰমহংস স্বামী, অন্তৰ্য্যামি, হেয় বড়নামী সংসাৰী ॥

হংসন হিতকাৰী, জগ পগুধাৰী, গৰ্ব প্ৰহাৰী উপকাৰী।

সংপস্থ চলায়ো, ভ্ৰম মিটায়ো, ৰূপ লখায়ো কৰতাৰী ॥

ইহ শিষ্য হেয় তেৰো, কৰত নিহোৰো, মোপৰ হেৰো প্ৰণধাৰী ॥

জয় সদ্গুৰু ----- ভৱভাৰী ॥



“आत्मने मोक्षार्थं जगत् हिताय च”



श्री श्री १००८ श्री स्वामी परमानन्दजी महाराज (परमहंसजी)

जन्म : शुभ संवत् विक्रम १९७९ (१९११ शीष्टाब्द)

महाप्रयाण : ज्येष्ठ शुक्ला सप्तमी, संवत् २०२७, तारिख २७/०५/१९७९

परमहंस आश्रम, अनुसुइया (चित्रकूट)



শ্রী স্বামী অড়গড়ানন্দজী
(পরমহংস মহারাজের কৃপাধসাদ)



WORLD RELIGIOUS PARLIAMENT

(विश्व धर्म संसद)

C-121, KIRTI NAGAR, NEW DELHI - 110 015 (INDIA).

विश्वगौरव सम्मानपत्र

वेदवेदांग आयुर्वेद ज्योतिषादि शास्त्रपरम्परासुरक्षाव्रती, अखिल संस्कृतवाङ्मयसंरक्षण—प्रचार—
प्रसारपक्षधर आर्षसनातनमर्यादाजीवनपद्धतिसदाचारपरायण, "सर्वभूतहिते रतः—बसुधैव कुटुम्बकम्"
के सद्भावना पर्यावरण से ओतप्रोत,

सम्माननीय श्री स्वामी अङ्गदानन्दजी महाराज - परमहंस उग्रश्रम
निवासी शान्तिशागढ़ चुनार (मीरपुर) को

अन्तर्ाष्ट्रीय अधिवेशन में विश्वगौरव सम्मानपत्र से विभूषित किया जाता है।

एतद्देशप्रसूतस्य सकशाद्यजन्मनः।

स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पुषिष्यां सर्वमानवाः।

World Religious Parliament is pleased to confer

The Title of Vistwagaurav

In recognition of his meritorious contribution for World Development

through श्रीमद्भगवद्गीता, धर्मशास्त्र, (आद्यात्मशास्त्री)

दिनांक दुसरे मेल 10-11-98 ई० १९९८

Chairman (उग्रश्रम)
Presentation Committee

Acharya Prabhakar Mishra
Chairman
World Religious Parliament

विंश शताब्दीर अन्तिम महाकुम्भर समयत हबिद्दाबत समस्त शंकराचार्या, महामण्डलेशचर, ब्रह्मण महा सभा आरु ८८ खन देशर धर्मशील विद्धान सकलर उपस्थितित विश्वधर्म संसद द्वाबा पूजा स्वामी जीक "विश्वगौरवर" सन्मान पत्र प्रदान कबा हय।



विश्व धर्म संसद्
WORLD RELIGIOUS PARLIAMENT
C-121, KIRTI NAGAR, NEW DELHI 110 015 (INDIA)

सम्मान प्रमाणपत्र

“शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्” के मौलिक सिद्धान्तों पर आधारित विश्व में निरोगसमाज की स्थापना तथा शारीरिक मानसिक बौद्धिक सामाजिक स्वास्थ्य की उपलब्धि के लिए प्रयत्नशील एवं बाह्य तथा आन्तरिक पर्यावरण की स्वच्छता के लिए संकल्पित विश्व धर्मसंसद् प्राच्यअर्वाच्य ज्ञान विज्ञान की किसी भी शाखा के माध्यम से मानवता की सेवाओं में समर्पित व्यक्तियों को सम्मान करने में गौरव समझती है।

इसी धारणा-अवधारणा के दृष्टिकोण से उल्लेखनीय ज्ञान तथा सेवाओं के लिए श्री विश्वज्ञानचक्र को रक्तधर्मशास्त्र दाता विश्वगौरव स्वामी अङ्गद्वानन्द जी को —अध्यापक गीता धार्मिक— क्षेत्र/विषय में —विश्वगुरु— सम्माननीय उपाधि से सम्मानित तथा जनसेवा के क्षेत्र में अग्रणी प्रमाणित करती है।

श्रीमद् अंगद्वानन्द जीता भाष्य “अध्यापक गीता” धर्मशास्त्र है।

World Religious Parliament is pleased to confer the above Title in recognition of his meritorious contribution for World Development through _____

A. C. S. Pandey, President

Chairman

Presentation Committee

or

Presiding Authority

26-1-2001

भारतीय
संघ



Acharya Prabhakar Mishra

Acharya Prabhakar Mishra

Chairman (Indian Region)

World Religious Parliament

विश्व धर्म परिषदे विश्व मानव धर्मशास्त्र श्रीमद्भागवद् गीता भाष्य यथार्थ गीता ओपबत पबम पूज्य विश्वगौरव स्वामी श्री अङ्गद्वानन्द महाबाज जीक प्रयाग पबम पावन उद्वसर महाकुम्भर समयत २७-१-२००१ तारिखे “विश्वगुरु” उपाधिरे विभूषित कबा हय।

॥ श्री काशीविद्वत्परिषद् विजयते ॥

सर्वतन्त्रस्वतन्त्र-शास्त्रार्थविद्यावतार-विश्वविश्रुत-महामहोपाध्यायदिविरुद्विभूषक
पण्डितसम्राट-प्रातःस्मरणीय श्री शिवकुमारशास्त्रिमिश्रप्रतिष्ठापिता
वाराणसेयसर्वविधविद्वत्समाज-प्रतिनिधिभूता-

श्री काशीविद्वत्परिषद्

पत्राचार कार्यालय :
डी.१७/५८, दशाश्वमेध,
वाराणसी, उत्तर प्रदेश
मो. नं. ९४१५ २८५८५६
टे. नं. ०५४२-२४५२११३

दिनांक १.३.०४

श्री काशीविद्वत्परिषद् समय-समय पर धर्म की समीक्षा करती आयी है । धर्म के सम्बन्ध में यह समाज को निर्देश देने का अधिकार रखती है । धार्मिक प्रकरणों में यह भारत की बहुमान्य सर्वोच्च संस्था है । किसी निर्णय को संशोधित करने का अधिकार परिषद् की कार्यकारिणी को है किन्तु धर्म और धर्मशास्त्र अपरिवर्तनशील होने से आदिकाल से धर्मशास्त्र श्रीमद्भगवद्गीता ही रही है ।

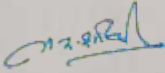
इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम् ।

विवस्वान्मनवे प्राह मनुर्निश्वाकवेऽब्रवीत् ॥ गीता, ४/१

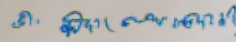
अर्जुन ! इस अविनाशी योग को कल्प के आदि में मैंने सर्वप्रथम सूर्य के प्रति कहा । सूर्य ने अपने पुत्र मनु से कहा । मनु ने इस स्मृत ज्ञान को सुरक्षित रखने के लिए स्मृति की परम्परा चलायी और अपने पुत्र इक्ष्वाकु से कहा । कालान्तर में इस स्मृति ज्ञान को महर्षि वेदव्यास ने लिपिबद्ध किया । मानव जीवन का नियमन तथा निःश्रेयस प्रदान करने वाली आदि मनुस्मृति गीता ही है ।

मनु के समक्ष अवतरित वेद इसी का विस्तार है । अन्य शास्त्र समयानुसार विश्व की विविध भाषाओं में ईश्वरीय गायन श्रीमद्भगवद्गीता की ही प्रतिध्वनि हैं । गीता की अवधारणा को स्वामी अङ्गदानन्द जी ने 'यथार्थ गीता' में व्यक्त किया है जो शत-प्रतिशत सत्य है । परा विद्या की परिभाषा है ।

स्वामी जी ने गीता की यह व्याख्या देकर विश्व मानव को एक धर्मशास्त्र, एक परमात्मा के पथ को प्रशस्त किया है । धर्मशास्त्र की व्याख्या के रूप में हम सभी 'यथार्थ गीता' की अनुशंसा करते हैं ।



गणेशदत्त शास्त्री
मंत्री
श्री काशीविद्वत्परिषद्
भारत



आचार्य केदारनाथ त्रिपाठी दर्शनरत्नम वाचस्पति
अध्यक्ष
श्री काशीविद्वत्परिषद्
भारत

ভারতের ধর্মীয় পণ্ডিতদের সর্বোচ্চ সংস্থা 'শ্রী কাশী বিদ্বত পরিষদ'
১লা মার্চ ২০০৪-এ 'শ্রীমদ্ভগবৎ গীতা'-কে 'ধর্মশাস্ত্র'
(সায়েন্স অফ রিলিজিয়ন) রূপে এবং যথার্থ গীতা-কে সত্য অন্বেষণকারী
রূপে স্বীকার করেছেন ।

॥ श्री काशीविद्यनाथो विजयते ॥

सर्वतन्त्रस्वतन्त्र-शास्त्रार्थविद्यावतार-विश्वविश्रुत-महामहोपाध्यायदिव्यरुद्रविभूषक
पण्डितसम्राट-प्रातःस्मरणीय श्री शिवकुमारशास्त्रिमिश्रप्रतिष्ठापिता
वाराणसेयसर्वविद्यविद्वत्समाज-प्रतिनिधिभूता-

श्री काशीविद्वत्परिषद्

पत्राचार कार्यालय :
डी.१७/५८, दशाश्रमेय,
वाराणसी, उत्तर प्रदेश
मो. नं. ९४१५ २८५८५६
टे. नं. ०५४२-२४५२९९३

दिनांक १.३.०४

श्री परमहंस आश्रम, शक्तेश गढचुनार की अपनी सौभाग्यपूर्ण यात्रा का सुअवसर प्राप्त हुआ है। वहाँ के वर्तमान परमहंस स्वामी श्री अडगडानन्दजी महाराज के दर्शन का स्मरणीय अवसर काशी की विद्वन्मण्डली के साथ मुझे प्राप्त हुआ। श्री परमहंस स्वामी अडगडानन्दजी महाराज बह्यलीन योगिराज स्वामी श्री परमानन्द परमहंस जी के शिष्य है और उनके द्वारा प्राप्त मानव धर्मोपदेश को स्वरचित 'यथार्थ गीता' के माध्यम से मानव मात्र के लिये प्रसारित कर रहे है, जिस गीता का ज्ञान भगवान कृष्ण ने अपने मुखारविन्द से अर्जुन के माध्यम से समस्त मानव के लिये किया था। इसीलिये श्रीमद्भगवद् गीता मानव मात्र का धर्मशास्त्र है। भगवान एक है और सबके है अतः उनकी गीता भी एक आकाश, एक सूर्य और एक चन्द्र के समान सबके लिये है।

इस प्रकार गीता एकतामूलक है और स्वयं भी एकता का मूल है। भगवान ने स्वयं कहा है - 'ममैवांशो जीव लोकः' अर्थात् प्राणी मात्र भगवान का ही अंश है तथा अंश अंशों में भेद नहीं होता है। अतः प्रत्येक प्राणी भगवद्भिन्नता के आधार पर वस्तुगत्या परस्पर में भी अभिन्न ही हैं। "तदभिन्नाभिन्नस्य तदभिन्नत्व नियमः" यह वस्तुस्थिति है। अतः गीता एकतामूलक तथा एकता का मूल दोनों ही है। यही गीता की यथार्थता है जिसे पूज्य परमहंस जी महाराज ने "यथार्थ गीता" में, जो भाष्यरूप है, प्रतिपादित किया है।

यहाँ "यथार्थ गीता" पद से यह भ्रम नहीं होना चाहिए कि कोई अयथार्थ गीता भी है क्योंकि गीता एक है - श्रीमद्भगवद् गीता। प्रस्तुत 'यथार्थ गीता' श्रीमद्भगवद् गीता' का ही भाष्य है, जिसे स्वयं परमहंस श्री स्वामी जी महाराज ने प्रत्येक अध्याय की अंतिम पुष्पिका में कहा है। - 'यथार्थ गीता' भाष्ये - ऐसा उल्लेख करते हुये। इसलिये 'यथार्थ गीता' का अभिप्रेतार्थ है। गीता की यथार्थता! इस अभिप्रेतार्थ को श्री स्वामी परमहंस जी ने इस सम्पूर्ण भाष्य में प्रतिपादित किया है।

श्रीमद्भगवद् गीता पर अनेक भाष्य निर्मित हुए है - जैसे कर्म की प्रधानता बताते हुए लोकमान्य तिलक का गीता रहस्य, भगवद्भक्ति प्रधान वैष्णव भाष्य तथा ज्ञान प्रधान शांकरभाष्यादि प्रन्थ! किन्तु प्रस्तुत यथार्थ गीता में एकेश्वरवाद मुख्यतया प्रतिपादित है जिसका किसी से विरोध नहीं है, प्रत्युत सबके साथ एक ईश्वरत्व की अनुभूति के रूप में सामंजस्य प्रकाशक है। क्योंकि कर्मकलाप भी उसी में पर्यवसित, भक्ति भी उसी की, तथा उसी का साक्षात्कार परमपुरुषार्थ मोक्ष का साधक है। भगवान ने स्वयं कहा है-

"यत्करोषि यदृशनासि यच्चुहोषि ददासि यत् ।

यत्तपस्यसि कौन्तेय! तत्कुरुस्व मदर्पणम् ॥

"मय्येव मन आधत्स्व मयि बुद्धिं निवेशय ।

निवसिष्यसि मय्येव अत ऊर्ध्वं न संशयः ॥

तथा "ज्ञात्वा मां शान्तिं मृच्छति, "ज्ञान लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधि गच्छति "सर्वं ज्ञानप्लवेनैव वृजिनं सन्तारिष्यसि" तथा सर्वं कर्माखिलं पार्थ! ज्ञाने परिसमाप्यते" इत्यादि। इस प्रकार प्रस्तुत "यथार्थ गीता" की यथार्थता है - एक परमतत्व परमात्मा के आधार पर सबमें समत्व की अनुभूति -

"समो जहं सर्वभूतेषु न मं द्वेष्यो रित्त न प्रियः ।

इस पवित्र उद्देश के साथ श्री परमहंस स्वामी अडगडानन्दजी महाराज द्वारा संस्थापित एवं संचालित यह परमहंस आश्रम ऋषियों के प्राचीन गुफाओं एवं अरण्यो की तरह इस पर्वत श्रेणी के बीच से लोक में गीतक इस उपदेश को उद्बुद्ध करने वाला है कि शास्त्रानुमोदित स्वाभाविक व्यवहार को अपनाते हुए सबमें "अभेदभावनयैव यतितव्यम् भाव को लोक कल्याणार्थ प्रसारित करना है।

हरि ॐ तस्तत्

श्री. केशव लाल शर्मा

आचार्य केदारनाथ त्रिपाठी दर्शनरत्नम वाचस्पति
अध्यक्ष
श्री काशीविद्वत्परिषद्
भारत

ভারতের ধর্মীয় পণ্ডিতদের সর্বোচ্চ সংস্থা 'শ্রী কাশী বিদ্বত পরিষদ'
১লা মার্চ ২০০৪-এ 'শ্রীমদ্ভগবৎ গীতা'-কে 'ধর্মশাস্ত্র'
(সায়েন্স অফ রিলিজিয়ন) রূপে এবং যথার্থ গীতা-কে সত্য অন্বেষণকারী
রূপে স্বীকার করেছেন।

“গীতা মানৱ মাত্ৰৰে ধৰ্মশাস্ত্ৰ” “মহৰ্ষি বেদব্যাস”

শ্ৰী কৃষ্ণ কালিন মহৰ্ষি বেদব্যাসৰ পূৰ্বে কোনো শাস্ত্ৰই গ্ৰন্থ আকাৰত উপলব্ধ নাছিল। শ্ৰুতি জ্ঞানৰ এই পৰম্পৰাক ভাঙি তেখেতে চৰিবেদ, ব্ৰহ্মসূত্ৰ মহাভাৰত, ভাগৱত আৰু গীতাৰ নিচিনা গ্ৰন্থত পূৰ্ব সঞ্চিত ভৌতিক আৰু আধ্যাত্মিক জ্ঞানবাসিক সংকলন কৰিলে আৰু শেষত নিজেই এইটো নিৰ্ণয় দিলে যে—

“সৰ্বোপনিষদো গাবো দোন্ধা গোপালনন্দনঃ”

সকলো বেদৰ প্ৰাণ- উপনিষদৰো সাৰমন্মুহি এই গীতা যাক গোপাল শ্ৰী কৃষ্ণই খিৰাইছিল আৰু অশান্ত জীৱক পৰমাত্মাৰ দৰ্শন আৰু সাধনাৰ স্থিতি, শাস্ত্ৰত শান্তিৰ স্থিতিলৈকে পাব পৰা কৰিছিল। সেইজন মহাপুৰুষেই নিজৰ কৃতিৰ ভিতৰত গীতাক শাস্ত্ৰৰ সংজ্ঞা দি স্তুতি কৰিছিল আৰু কৈছিল

“গীতা সুগীতা কৰ্তব্য”

গীতা হল উত্তম প্ৰকাৰে মনন কৰি হৃদয়ত ধাৰণ কৰাৰ যোগ্য, যি পদ্যনাভ ভগৱানৰ শ্ৰীমুখৰ পৰা নিঃসৃত বাণী, তেতিয়া হলে অন্য শাস্ত্ৰ সংগ্ৰহৰ আৱশ্যকতা কত থাকিল?

গীতাৰ সাৰাংশ এই শ্লোকেৰে স্পষ্ট হয়—

একং শাস্ত্ৰং দেৱকীপুত্ৰ গীতম্, একো দেবো দেৱকীপুত্ৰ এব।

একো মন্ত্ৰস্তস্য নামানি যানি, কৰ্মাপ্যেকো তস্য দেৱস্য সেৱা।।

অৰ্থ হল একমাত্ৰ শাস্ত্ৰ সেৱা, যি দৈৱকীপুত্ৰ ভগৱানৰ শ্ৰীমুখৰ পৰা গাইছিল, ‘গীতা’। একমাত্ৰ প্ৰাপ্ত কৰিব লগীয়া দেৱ তেৱেই। সেই গানত যাক সত্য বুলি কোৱা হৈছে সেয়াই ‘আত্মা’। আত্মাৰ বাহিৰে একোৱেই শাস্ত্ৰত নহয়। সেই গানত সেইজন মহা যোগেশ্বৰে কি জপ কৰিবলৈ কৈছিল? “ওঁ ” অৰ্জুন ওঁ অক্ষয় পৰমাত্মাৰ নাম হয়, তাৰে জপ কৰা আৰু ধ্যান মোৰ

ধৰা । গীতাত বৰ্ণিত এটাই ধৰ্ম হ'ল, পৰমদেৱ এক পৰমাত্মাৰ সেৱা কৰা ।
তেওঁক শ্ৰদ্ধা সহকাৰে নিজৰ হৃদয়ত ধাৰণ কৰা । গতিকে আৰম্ভণীৰ পৰাই
গীতা সকলোৰে একমাত্ৰ পুৰাতন শাস্ত্ৰ ।

ভগৱান শ্ৰী কৃষ্ণে হাজাৰ বছৰৰ পাছতো পৰৱৰ্তী যি মহাপুৰুষ
সকলে এক ঈশ্বৰেই সত্য বুলি কলে, তেওঁলোকে গীতাৰেই বাণী প্ৰচাৰ কৰিলে ।
ঈশ্বৰৰ পৰা লৌকিক আৰু পাৰলৌকিক সুখৰ কামনা, ঈশ্বৰক ভয় কৰা,
অন্য কাকো ঈশ্বৰ নমনা, এই সকলোখিনিটাকে সকলো মহাপুৰুষে কৈছে
কিন্তু ঈশ্বৰীয় সাধনা, ঈশ্বৰৰ সৈতে দূৰত্বহীন এই খিনি মাত্ৰ গীতাতেই
সাংগপাংগ সুৰক্ষিত হৈ থাকিল । গতিকে গীতা শাস্ত্ৰহে অধ্যয়ন কৰা । গীতা
অধ্যয়নৰ পৰা সুখ শান্তিতো প্ৰাপ্ত কৰিব পাৰিয়েই তদুপৰি ই অক্ষয় অনাময়
পদ ও দিব পাৰে । গীতাৰ বিশ্ব-গৌৰৱ প্ৰাপ্ত টিকা “যথার্থ গীতা” ।

যদিও বিশ্বত সৰ্বত্ৰ গীতাৰ সমাদৰ আছে তথাপিও ই কোনো জাতিৰ
বা সম্প্ৰদায়ৰ সাহিত্য হৈ নাথাকিল কিয়নো সম্প্ৰদায় বুলিলে যি কোনো
সংসাৰত আবদ্ধ হৈ থাকে । ভাৰতত উদ্ভৱ হোৱা গীতা বিশ্ব মানৱৰ কাৰণে
লাইখুটা হৈ থাকিল, সেয়ে ইয়াক ৰাষ্ট্ৰীয় স্তৰৰ মান দি উচ্চ-নীচ, ভেদ-ভাৱ
আৰু কলহ পৰম্পৰাৰে পিড়িত বিশ্বৰ সম্পূৰ্ণ জনতাক শান্তি দিয়াৰ প্ৰচেষ্টা
হওঁক ।



ধৰ্ম সিদ্ধান্ত – এক

- ১) সকলোৰে প্ৰভুৰে পুত্ৰ –
মমৈবাংশো জীৱলোকে জীবভূতঃ সনাতনঃ
মনঃ ষষ্ঠানীন্দ্ৰিয়াণি প্ৰকৃতিস্থানি কৰতি ॥১৫ ৭॥
সকলো মানৱ ঈশ্বৰৰে সন্তান।
- ২) মানৱ তনৱ সাৰ্থকতা –
কিং পুনৰ্ৰাক্ষণাঃ পুণ্যা ভক্তা ৰাজৰ্ষয়স্তথা।
অনিত্যমসুখং লোকমিমং প্ৰাপ্য ভজস্ব মাম্ ॥৯ ৩৩॥
সুখৰহিত, ক্ষনভংগৰ কিন্তু দুৰ্লভ মানৱ তন পাই মোৰ ভজনা কৰা,
মানে ভজনা কৰাৰ অধিকাৰ মনুষ্য দেহতে আছে।
- ৩) মানুহৰ মাত্ৰ দুটাহে জাতি –
দ্বৌ ভূতসৰ্গৌ লোকেহস্মিন্দৈব আসুৰ এব চ।
দৈবো বিস্তৰশঃ প্ৰোক্তে আসুৰং পাৰ্থ মে শূণ ॥১৬ ৬॥
মানুহ মাত্ৰ দুই প্ৰকাৰৰ হয়, দেৱতা আৰু অসুৰ। যাৰ হৃদয়ত
দৈৱি সম্পত্তিয়ে কাৰ্য্য কৰি থাকে তেওঁ দেৱতা আৰু যাৰ হৃদয়ত
আসুৰি সম্পত্তিয়ে কাৰ্য্য কৰি থাকে তেওঁ অসুৰ। তৃতীয় কোনো
অন্যজাতি সৃষ্টিত নাই।
- ৪) প্ৰত্যেক কামনা ঈশ্বৰৰ পৰা সূলভ-
ত্ৰৈবিদ্যা মাং সোমপাঃ পূতপাপা যত্ৰৈৰিষ্ট্ব বা স্বৰ্গতিং প্ৰাৰ্থয়ন্তে।
তে পুণ্যমাসাদ্য সুৰেন্দ্রলোকমশ্ৰুন্তি দিব্যান্ দিবি দেৱভোগান্ ॥৯ ২০॥
মোৰ ভজনা কৰি লোকে স্বৰ্গলৈকে কামনা কৰে, মই তেওঁলোকক
দিওঁ। মানে সকলো এক পৰমাত্মাৰ পৰা সূলভ।
- ৫) ভগৱানৰ চৰণত পাপ নাশ হয় -
অপি চেদসি পাপেভ্যঃ সৰ্বেভ্যঃ পাপকৃত্তমঃ
সৰ্বং জ্ঞানপ্ৰবেনৈব বৃজিনং সন্তুৰিয্যসি ॥৪ ৩৬॥
সম্পূৰ্ণ পাপীতকৈয়ো অধিক পাপ কৰা জনো জ্ঞানৰূপী নৌকাৰে ি
নঃসন্দেহ পাৰ হৈ যায়।

৬) জ্ঞান -

অধ্যাত্মজ্ঞাননিত্যত্বং তত্ত্বজ্ঞানাত্ম দৰ্শনম্।

এতজ্ জ্ঞানমিতি প্রোক্তমজ্ঞানং যদতোহন্যথা ॥১৩ ১১ ॥

আত্মাৰ আধিপত্যৰ আচৰণ, তত্ত্বৰ অৰ্থ ৰূপ মই পৰমাত্মাৰ প্ৰত্যক্ষ দৰ্শনেই জ্ঞান, আৰু ইয়াৰ অতিৰিক্ত যি কোনোৱেই অজ্ঞান ,সেয়েঃ ঈশ্বৰৰ প্ৰত্যক্ষ অনুভূতিয়েই জ্ঞান।

৭) ভজনাৰ অধিকাৰ সকলোৰে-

অপি চেৎসুদূৰাচাৰো ভজতে মামনন্যাভাক্।

সাধুৰেব স মন্তব্যঃ সম্যগ্ণ্যবসিতো হি সঃ।

ক্ষিপ্ৰং ভবতি ধৰ্মাত্মা শশ্বচ্ছান্তিঃ নিগচ্ছতি ॥

কৌন্তেয় প্ৰতিজানিহি ন মে ভক্তঃ প্ৰণশ্চতি

৯ ৩০-৩১ ॥

অত্যন্ত দূৰাচাৰিও মোৰ ভজনা কৰিলে শীঘ্ৰেই ধৰ্মাত্মা হৈ যায় আৰু চিৰ শ্বাসত শান্তি প্ৰাপ্ত কৰে। সেয়ে ধৰ্মাত্মা সেইজনেই যি এক পৰমাত্মাৰ প্ৰতি সমৰ্পিত আৰু ভজন কৰাৰ অধিকাৰ দূৰাচাৰি লৈকো আছে।

৮ : ভগৱত্ পথত বীজৰ বিনাশ নাই -

নেহাভিক্ৰমনাশোহস্তি প্ৰত্যবায়ো ন বিদ্যতে।

স্বল্পমপ্যস্য ধৰ্মস্য ত্ৰায়তে মহতো ভয়াৎ ॥২ ৪০ ॥

এই আত্মদৰ্শন ক্ৰিয়াৰ স্বল্প আচৰণেই জন্ম-মৰণৰ মহান ভয়ৰ পৰা উদ্ধাৰ কৰে।

৯ : ঈশ্বৰৰ নিবাস

ঈশ্বৰঃ সৰ্বভূতানাং হৃদেদেশেহৰ্জুন তিষ্ঠতি।

ভ্ৰাময়ন্ সৰ্বভূতানি যন্ত্ৰাকটানি মায়য়া ॥১৮ ৬১ ॥

ঈশ্বৰ সকলো ভূত-প্ৰাণীৰ হৃদয়ত থাকে।

তমৈৰ শৰণং গচ্ছ সৰ্বভাবেন ভাৰত।

সম্পূৰ্ণ ভাৱেৰে সেই এক পৰমাত্মাৰ শৰণত যোৱা-যাৰ কৃপাত
তুমি পৰমশান্তি স্বাশত পৰম ধৰ্ম প্ৰাপ্ত কৰিবা।

১০ : যজ্ঞ -

সৰ্বাণীন্দ্ৰিয়কৰ্মাণি প্ৰাণকৰ্মাণি চাপৰে।

আত্মসংযমযোগাগ্নৌ জুহুতি জ্ঞানদীপিতে ॥৪ ২৭॥

সম্পূৰ্ণ ইন্দ্ৰিয়ৰ কৰ্মবোৰক, মনৰ চেষ্টাক, জ্ঞানেৰে প্ৰকাশিত
কৰি আত্মাত সংযম ৰূপী যোগাগ্নিত আৰ্হতি দিয়া।

অপানে জুহুতি প্ৰানং প্ৰাণেহপাণং তথাপৰে।

প্ৰাণাপানগতী ৰুদ্ধা প্ৰাণায়ামপৰায়ণাঃ ॥ ৪/২৯ ॥

বহুত যোগীয়ে শ্বাসক প্ৰশ্বাসত আৰ্হতি দিয়ে আৰু বহুতে প্ৰশ্বাসক
শ্বাসত। ইয়াতকৈও উন্নত অৱস্থা প্ৰাপ্ত কৰিলে অন্য শ্বাস প্ৰশ্বাসৰ গতি ৰুদ্ধ
কৰি প্ৰাণায়াম পৰায়ণ হয়। এই প্ৰকাৰৰ যোগ সাধনাৰ বিধি বিশেষৰ নামেই
যজ্ঞ। সেই যজ্ঞক কাৰ্য্যক্ৰম দিয়াই হ'ল কৰ্ম।

১১ : যজ্ঞ কৰাৰ অধিকাৰ -

যজ্ঞশিষ্টায়তভূজো যান্তি ব্ৰহ্ম সনাতনম্ ।

নায়ং লোকোহস্ত্যযজ্ঞস্য কুতোহন্যঃ কুৰুসত্তম ॥ ৪/৩১ ॥

যজ্ঞ নকৰা জনৰ পুণৰ মনুষ্য শৰীৰ প্ৰাপ্ত নহয়, মানে যজ্ঞ
কৰাৰ অধিকাৰ- তেওঁলোকৰে আছে যিয়ে মনুষ্যশৰীৰ প্ৰাপ্ত
কৰিছে।

১২ :- ঈশ্বৰ দৰ্শন পাব পাৰি-

ভক্ত্যা ত্বনন্যয়া শক্য অহমেবংবিধোহৰ্জুন।

জ্ঞাতুং দ্ৰষ্টুং চ তত্ত্বেন প্ৰবেষ্টুং চ পৰন্তপ ॥ ১১/৫৪ ॥

অনান্য ভক্তিৰ দ্বাৰা মোক প্ৰত্যক্ষ ভাৱে দেখিব পাৰে, জানিব
পাৰে আৰু প্ৰৱেশ কৰিবৰ সুলভ হয়।

আশ্চৰ্যবৎ পশ্যতি কশ্চিৎচৈনম্

আশ্চৰ্যবদ্ বদতি তথৈব চান্যঃ ।

আশ্চৰ্যবচৈনমন্যঃ শৃণোতি

शुक्राप्येनं वेद न चैव कश्चि७ ॥ २/२९ ॥

এই অবিনাশী আত্মাক বহুত কম লোকেহে আশ্চৰ্য্য ভাবে
দেখে মানে এয়েই প্ৰত্যক্ষ দৰ্শন।

১৩ :- আত্মাই সত্য, আত্মাই সনাতন-

अच्छेद्योहयमदाह्योहयमक्लेद्योहशोष्य एव च ।

नित्यः सर्वगतः स्थाणुचलोहयं सनातनः ॥ २/२४ ॥

এই আত্মা সৰ্বব ব্যাপক, অচল স্থিৰেৰে থাকিব পৰা আৰু সনাতন
হয়। আত্মাই সত্য। এই অবিনাশী আত্মাক বহুত কম
লোকেহে আশ্চৰ্য্য ভাবে দেখে মানে এয়েই প্ৰত্যক্ষ দৰ্শন।

১৪ :- বিধাতা আৰু তেওঁৰ উৎপন্ন সৃষ্টি নাশবান –

आब्रम्नाडुवनाल्लोकाः पुनर्बावर्तिनोहर्जुन ।

मामुपेत्य तू कौस्तुय पुनर्जन्म न विद्यते ॥ ८/१७ ॥

ব্ৰহ্মা আৰু তেওঁৰ নিৰ্মিত সৃষ্টি, দেৱতা আৰু দানৱ দুখৰ
আকৰ ,ক্ষণ ভংগৰ আৰু নশ্বৰ।

১৫ :- দেৱ পূজা -

कामैस्तैस्तैर्হতজ্ঞানাः प्रपद्यन्तेहन्यदेवताः ।

तं तं नियममास्थाय प्रकृत्या नियता स्वया । १/२० ॥

কামনাৰ দ্বাৰা যাৰ বুদ্ধি আক্ৰান্ত হৈ আছে এনে অজ্ঞবুদ্ধিয়েই
পৰমাত্মাৰ অতিৰিক্ত অন্য দেৱতাৰ পূজা কৰে।

येहप्यान्यदेवता भक्ता यजन्ते श्रद्धयाग्निताः ।

तेहपि मामेव कौस्तुय यजन्त्यविधिपूर्वकम् ॥ ९/२७ ॥

দেৱতাৰ পূজা কৰা সকলে মোৰেই পূজা কৰে কিন্তু এই পূজন ন
বিধিপূৰ্বক নোহোৱা হেতুকে নষ্ট হৈ যায়।

शास्त्रविधिर् त्याग-

अर्जुन ! शास्त्रविधिर् त्याग कर्षि भजा विलाकक सात्त्विक श्रद्धावाने

देरताक, बाजस पूरुषे यस्-बास्सक आरु तामस पूरुषे

भूत-प्रेतर् पूजा कर्षे किन्तु

কৰ্শয়ন্তঃ শৰীৰস্থং ভূতগ্রামমচেতসঃ ।

মাং চৈবান্তঃ শৰীৰস্থং তান্ বিদ্যাসুৰনিশ্চয়ান্ ॥ ১৭/৬ ॥

তেওঁলোকে শৰীৰ ৰূপত স্থিত ভূত সমূহক আৰু অন্তৰ্যামী

ৰূপত স্থিত মোক পৰমাত্মাক বিৰোধ কৰে। তেওঁলোকক

তুমি অসুৰ বুলি জানা। বস্তুতঃ দেৱতাৰ পূজা কৰা জনো আসুৰি

বৃত্তিৰে অন্তৰ্গত।

১৬ :- অধম-

অশাস্ত্ৰবিহিতং ঘোৰং তপ্যন্তে যে তপো জনাঃ ।

দন্তাহ্ৰসংযুক্তাঃ কামৰাগবলাঘিতাঃ ॥ (১৬/৭-১৯)

যিজনে যজ্ঞৰ বিধি ত্যাগ কৰি কল্লিত বিধিৰে পূজন কৰে তেওঁ

দ্রুৰকৰ্মী, পাপাচাৰী আৰু মনুষ্যৰ ভিতৰত অধম। অন্য কোনো অধম নহয়।

১৭ :- প্রকৃত বিধি কি ?

ওমিত্যেকাঙ্কৰং ব্রহ্ম ব্যাহৰন্ মামনুস্মৰন্ ।

য়াঃ প্রযাতি ত্যজন্ দেহং স যাতি পৰমাং গতিম্ ॥ ৮/১৩ ॥

‘ওঁ’ যি অক্ষয় ব্ৰহ্মৰ পৰিচায়ক তাৰে জপকৰা, মোৰ, এক পৰমাত্মাৰ

স্মৰণ কৰা, আৰু তত্ত্বদৰ্শী মহাপুৰুষৰ ধ্যান কৰা।

১৮ :- শাস্ত্ৰ

ইতি গুহ্যতমং শাস্ত্ৰমিদমুক্তং ময়ানঘ ।

এতদ্বুদ্ধিগ্ৰহণ বুদ্ধিমান্ স্যাৎ কৃতকৃত্যশ্চ ভাৰত ॥ ১৫/২০ ॥

এনে প্ৰকাৰে এই অতি গোপনীয় শাস্ত্ৰ মোৰ দ্বাৰা ব্যক্ত কৰা

হল। এয়াই স্পষ্ট যে শাস্ত্ৰ হল গীতা।

শাস্ত্ৰ গীতা

তস্মাচ্ছাস্ত্ৰং প্ৰমাণং তে কাৰ্যাকাৰ্যব্যবস্থিতৌ ।

জ্ঞাত্বা শাস্ত্ৰবিধানোক্তং কৰ্ম কৰ্তুমিহাহঁসি ॥ ১৬/২৪ ॥

কৰ্তব্য-অকৰ্তব্যৰ নিৰ্ধাৰণ শাস্ত্ৰই প্ৰমাণ। সেয়ে গীতাত নিৰ্ধাৰিত

বিধিৰ আচৰণ কৰক।

১৯ :- ধৰ্ম –

সৰ্বধৰ্মান্ পৰিত্যজ্য মামেকং শৰণং ব্ৰজ ॥(১৮/৬৬)

বিভিন্ন ধাৰ্মিক ভাৱ বাদ দি মোৰ শৰণ লোৱা, এক ভগৱানৰ প্ৰতি পূৰ্ণ
সমৰ্থনেই ধৰ্মৰ মূল, সেইজন প্ৰভূক পাবৰ বাবে নিৰ্ধাৰিত বিধিৰ

আচৰণেই হ'ল ধৰ্মাচৰণ (আধ্যায়- ২ শ্লোক ৪০) আৰু যি জনে
সেইটো কৰে তেওঁঅত্যন্ত পাপী হলেও শীঘ্ৰেই ধৰ্মাত্মা লাভ কৰিব
পাৰে- (আধ্যায় ৯ শ্লোক ৩০)

২০ :- ধৰ্ম প্ৰাপ্ত ক'ৰ পৰা হয় ?

ব্ৰহ্মণো হি প্ৰতিষ্ঠাহমমৃতস্যাব্যয়স্য চ ।

শাস্ততস্য চ ধৰ্মস্য সুখসৈক্যান্তিকস্য চ ॥ ১৪/২৭ ॥

সেই অবিনাশী ব্ৰহ্মৰ, অমৃতৰ, শাস্তত ধৰ্মৰ আৰু অখণ্ড একৰস
আনন্দৰ- ময়েই আশ্ৰয় স্থল, অৰ্থাৎ পৰমাত্মা স্থিত সদগুৰুয়েই
এই সকলোৰে আশ্ৰয় ।

নোটঃ- বিশ্বৰ সকলো ধৰ্মৰ সত্যধাৰা গীতাৰেই প্ৰসাৰণ ।

॥ ৩ ॥

॥ ॐ ॥

প্ৰাচীন কালৰ পৰা অদ্যপৰিমিত মনিষি সকলৰ দ্বাৰা দিয়া বাণীৰ তথ্যৰ ক্ৰম-

(শ্ৰীপৰমহংস আশ্ৰম জগতানন্দ গাওঁ-ডাম বৰৈণী কছাৰা,জিলা-
মিৰ্জাপুৰ(উঃ প্ৰঃ) ত নিজৰ আৱাস গৃহত প্ৰৱেশৰ সময়ত স্বামী অড়গডানন্দ
জীয়ে প্ৰৱেশ দ্বাৰৰ ওচৰত ব'ৰ্ডত গংগা দশহৰা (১৯৯৩ ইং)ৰ পুণ্য দিবসত
ইয়াক তালিকা কৰি লিখি থলে)

॥ বিশ্বগুৰু ভাৰত ॥

বৈদিক ঋষি (অনাদিকাল- নাৰায়ণ সূক্ত)

প্ৰতিটো অণু পৰমাণুত ব্যাপ্ত ব্ৰহ্মই সত্য। সেই জনাক জনাৰ বাহিৰে মুক্তিৰ
কোনো উপায় নাই।

* ভগৱান শ্ৰীৰাম (ত্ৰেতা- লাখ লাখ বছৰৰ আগতে- ৰামায়ণ) একমাত্ৰ
পৰমাত্মাৰ ভজনৰ বিনাই যি জনে কল্যাণ বিচাৰে তেওঁ অঙ্গ।

* যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণ (৫২০০ বছৰৰ আগতে- গীতা) পৰমাত্মাই সত্য।
চিন্তনৰ পাছৰ পূৰ্ণতাত সেই সনাতন ব্ৰহ্মৰ প্ৰাপ্তী সম্ভৱ হয়। দেৱী-দেৱতাৰ
পূজা অঙ্গতাৰ পৰিচায়ক।

* মহাত্মা জৰথুস্ত্ৰ (৪০০০ বছৰৰ আগতে পাৰ্চী ধৰ্ম) ঈশ্বৰৰ উপাসনা
কৰি হৃদয়ৰ কু-ভাৱবোৰ নাশ কৰা উচিত। এই কু-ভাৱবোৰেই হল দুখৰ
কাৰণ।

* মহাত্মা মুচা- (৩০০০ বছৰৰ আগতে- ইহুদী ধৰ্ম) তুমি ঈশ্বৰৰ পৰা
শ্ৰদ্ধা আঁতৰাই, মুৰ্তি, সাজিলা- তাৰ ফলত ঈশ্বৰ অপ্ৰসন্ন হৈ আছে। প্ৰাৰ্থনা
কৰা।

* ভগৱান মহাবীৰ- (২৬০০ বছৰৰ আগতে- জৈন গ্ৰন্থ) আত্মাই
সত্য। কঠোৰ তপস্যাবে এই জন্মতেই জানিব পাৰি।

* গৌতম বুদ্ধ (২৫০০ বছৰৰ আগতে-মহাপৰিনিৰ্বাণ সূত্ৰ) মই সেই মোক্ষ।

* যিশু খৃষ্ট (২০০০ বছৰৰ আগতে- খৃষ্ট ধৰ্ম) ঈশ্বৰ প্ৰাৰ্থনাৰে প্ৰাপ্ত হয়। মোৰ অথবা সদগুৰুৰ ওচৰলৈ আহা যাতে ঈশ্বৰৰ পুত্ৰ হব পাৰা।

* হজৰত মহম্মদ (১৪০০ বছৰৰ আগতে- ইচলাম ধৰ্ম) লা ই লাহ ইল্লাহ মহম্মদুৰ্ৰ বসুল্লাহ- সবৰ্ৰ ব্যাপ্ত হৈ থকা খুদা (ঈশ্বৰ) ৰ বাহিৰে কোনো পূজনীয় নাই। মহম্মদ আল্লাৰ- বাৰ্ত্তাবাহক আছিল।

* আদি শংকাৰাচাৰ্য্য (১২০০ বছৰৰ আগতে) সংসাৰ মিছা। ইয়াত সত্য ইমানেই হৰি আৰু তেওঁৰ নাম।

* সন্ত কবিৰ (৬০০ বছৰৰ আগতে) ৰাম নাম অতি দুৰ্লভ, ঐৰনতে নহী কাম। আদি মধ্য, ঐৰ অন্তৰ্হ, ৰামহি তে সংগ্ৰাম। ৰামক লৈ সংঘৰ্ষ কৰা সেয়াই কল্যাণকাৰী।

* গুৰু নানক (৫০০ বছৰৰ আগতে) “এক ওঁকাৰ সদগুৰু প্ৰসাদী। এক ওঁকাৰেই সত্য। কিন্তু সেয়া- সদগুৰুৰ কৃপা প্ৰসাদ।

* স্বামী দয়ানন্দ সৰস্বতী (২০০ বছৰৰ আগতে) অজৰ, অমৰ, অবিনাশী এক পৰমাত্মাৰ উপাসনা কৰা। সেই ঈশ্বৰৰ মুখ্য নাম ‘ওঁ’।

* স্বামী শ্ৰী পৰমানন্দজী (১৯১১ -১৯৬৯ ইংৰাজী) ভগৱানে যেতিয়া দয়া কৰে, শত্ৰুও মিত্ৰ হৈ যায়, বিপত্তি সম্পত্তি হৈ যায়। ভগৱানে সবৰ্ৰ দেখে।

“ ওঁ ”

ঃ অনুক্রমনিৰূপনা :ঃ

বিষয়		পৃষ্ঠা সংখ্যাঃ
ধৰ্ম্ম সিদ্ধান্ত	একঃ—	অ-উ
প্ৰাক্ কথন		ক-ড
প্ৰথম আধ্যায়	(সংশয়- বিষাদ যোগ)	১-২৪
দ্বিতীয় আধ্যায়	(কৰ্ম জিজ্ঞাসা)	২৫-৬৬
তৃতীয় আধ্যায়	(শত্ৰু বিনাশ- প্ৰেৰণা)	৬৭-৯২
চতুৰ্থ আধ্যায়	(যজ্ঞ কৰ্ম স্পষ্টিকৰণ)	৯৩-১২৬
পঞ্চম আধ্যায়	(যজ্ঞ ভোক্তা মহাপুৰুষ মহেশ্বৰ)	১২৭-১৪০
ষষ্ঠ আধ্যায়	(অভ্যাস যোগ)	১৪১-১৬০
সপ্তম আধ্যায়	(সমগ্ৰ জানকাৰী)	১৬১-১৭৪
অষ্টম আধ্যায়	(অক্ষৰ ব্ৰহ্মযোগ)	১৭৫-১৯২
নবম আধ্যায়	(ৰাজবিদ্যা জাগৃতি)	১৯৩-২১২
দশম আধ্যায়	(বিভূতি বৰ্ণন)	২১৩-২৩০
একাদশ আধ্যায়	(বিশ্বৰূপ দৰ্শন যোগ)	২৩১-৩৫৬
দ্বাদশ আধ্যায়	(ভক্তি যোগ)	৩৫৭-২৬৬
ত্ৰয়োদশ আধ্যায়	(ক্ষেত্ৰ- ক্ষেত্ৰজ্ঞ বিভাগ যোগ)	২৬৭-২৮০
চতুৰ্দশ আধ্যায়	(গুণত্ৰয় বিভাগ যোগ)	২৮১-২৯২
পঞ্চদশ আধ্যায়	(পুৰুষোত্তম- যোগ)	২৯৩-৩০৪
ষষ্ঠদশ আধ্যায়	(দৈবাসুৰ সম্পদ বিভাগ যোগ)	৩০৫-৩১৪
সপ্তদশ আধ্যায়	(ওঁ তৎসৎ তথা শ্ৰদ্ধাত্ৰয় বিভাগ যোগ)	৩১৫-৩২৮
অষ্টাদশ আধ্যায়	(সন্যাস যোগ)	৩২৯-৩৬০
উপসংহাৰ -		৩৬১-৩৮৭

প্ৰাক্ কথা

বস্তুতঃ গীতা শাস্ত্ৰৰ ওপৰত আলোচনা সমালোচনা কৰাৰ কোনো আৱশ্যকতা নাই, কিয়নো ইয়াৰ ওপৰত শতাধিক টিকা- টিপ্পনি লিখা হৈ গৈছে, যাৰ ভিতৰত পঞ্চাশতকৈ অধিক সংস্কৃততে আছে। গীতাক লৈ বহুতো মত আছে, যি নেকি সকলোৰ আধাৰ হ'ল গীতা। যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই বহুতো কথাই কৈছিল আকৌ এই মত ভিন্নতা কিয়? বস্তুত বক্তাই এটা কথাকেই কয় কিন্তু শ্ৰোতা যদি দহ জন থাকে তেতিয়া দহ প্ৰকাৰে তেওঁলোকে গ্ৰহণ কৰি লয়। ব্যক্তিৰ বুদ্ধিৰ ওপৰত তামসি, ৰাজসি আৰু সাত্বিক গুণৰ যিমান প্ৰভাৱ, সেই স্তৰৰেই তেওঁলোকে ধৰিব পাৰে। তাতকৈ বেছি তেওঁ বুজিব নোৱাৰে। সেয়েহে মতভেদ থকাটো স্বাভাৱিক।

বিভিন্ন মতবাদৰে আৰু কেতিয়াবা একেই সিদ্ধান্তক বেলেগ বেলেগ সময়ত আৰু বেলেগ বেলেগ ভাষাত ব্যক্ত কৰিলে সাধাৰণ মানুহ আশংকাত পৰে। বহুতো টিকাৰ মাজত সেই সত্য ধাৰাই প্ৰৱাহিত হৈ থাকে, তথাপিও শুদ্ধ অৰ্থ থকা এখন মাত্ৰ পুথি হাজাৰ খন টিকা মাজত ৰাখি দিলে চিনিব পৰা কঠিন হৈ পৰে যে যথার্থ কোন? বৰ্তমান কালত গীতাৰ বহুতো টিকা হৈ গৈছে, সকলোৱে নিজৰ সত্যতাৰ ঘোষণা কৰিছে, কিন্তু গীতাৰ শুদ্ধ অৰ্থৰ পৰা সিহঁত বহুত দূৰত থাকে। নিঃসন্দেহে কোনো কোনো মহাপুৰুষে সত্যক উপলব্ধি কৰিব পাৰিছে যদিও বিভিন্ন কাৰণত তেওঁলোকে সমাজৰ সন্মুখত প্ৰস্তুত কৰিব পৰা নাই।

শ্ৰী কৃষ্ণৰ ভাৱক হৃদয়ঙ্গম কৰিব নোৱাৰা মূল কাৰণ হ'ল যে তেওঁ এজন যোগী আছিল। শ্ৰীকৃষ্ণই যি স্তৰৰ কথা কৈছিল, ক্ৰমশঃ গৈ গৈ সেই স্তৰ প্ৰাপ্ত কৰা কোনো মহাপুৰুষেহে আখৰে আখৰে কব পাৰিব যে শ্ৰী কৃষ্ণই যি সময়ত গীতাৰ উপদেশ দিছিল সেই সময়ত তেওঁৰ মনোগত ভাৱ কি আছিল? মনোগত সমস্ত ভাৱ ব্যক্ত কৰিব নোৱাৰি। কিছু কথাৰে, কিছু ভাৱ ভঙ্গীৰে আৰু বাকী সমস্ত ত্ৰিগ্ৰন্থক হৈ থাকে, যাক অনুসৰণৰ দ্বাৰাহে জানিব পাৰি। যি স্তৰত শ্ৰীকৃষ্ণ আছিল ক্ৰমশঃ গৈ গৈ সেই অৱস্থা প্ৰাপ্ত

মহাপুৰুষেহে জানিব পাৰে যে গীতাই কি কয়? তেওঁ গীতাৰ বাক্যই পুনৰাবৃত্তি নকৰে আনকি তেওঁ ভৱকো দৰ্শায় কিয়নো যি দৃশ্য শ্ৰীকৃষ্ণৰ সন্মুখত আছিল সেই একেই দৃশ্য মহাপুৰুষ জনৰ সন্মুখতো আছে। সেই কাৰণেতেওঁ দেখে, দেখুৱায় আপোনাক জাগৃত কৰি সেই পথত চলায়।

পূজনীয় শ্ৰীপৰমহংস মহাৰাজও সেই স্তৰৰে মহাপুৰুষ আছিল। তেওঁৰ বাণী আৰু অন্তঃপ্ৰেৰণাৰে মই গীতাৰ যি অৰ্থ পালোঁ তাৰ সংকলনেই “ যথার্থ গীতা ”। ইয়াত মোৰ নিজস্ব একো নাই। এইটো ক্ৰিয়াত্মক। সাধনা আয়ও কৰিব বিচৰা প্ৰত্যেক পুৰুষে এই পৰিধিৰে যাব লাগিব। যেতিয়ালৈকে তেওঁ ইয়াৰ পৰা পৃথক হৈ থাকে তেতিয়া লৈকে স্পষ্টকৈ কব পাৰি যে তেওঁ সাধনা কৰাই নাই, কিবা প্ৰকাৰৰ অন্য অনুসৰণহে কৰি আছে, সেয়েহে কোনো মহাপুৰুষৰ শৰণ লোৱা উচিত। শ্ৰীকৃষ্ণই কোনো অন্য সত্যৰ কথা কোৱা নাই।

‘ঋষিভিৰ্ব্ৰহ্মা গীতম্’

ঋষি সকলে বহুবাৰ যাৰ কথা কৈছিল তাকেই কব বিচাৰিছোঁ। তেওঁ এইটো কোৱা নাছিল যে সেই জ্ঞান মইহে অকলে জানো, অথবা মইহে কও, আনকি তেওঁ কোনো তত্ত্বদৰ্শীৰ ওচৰলৈ যাবলৈ, নিষ্কপট ভাৱেৰে তেওঁক সেৱা কৰিবলৈ আৰু সেই জ্ঞান প্ৰাপ্ত কৰিবলৈ কৈছিল। শ্ৰীকৃষ্ণই মহাপুৰুষসকলৰ দ্বাৰা পৰিশোধিত সত্য হে উদঘাটন কৰিছিল।

গীতা সুবোধ সংস্কৃতত আছে। যদি আপুনি অণ্ডয় অৰ্থ লয় তেতিয়া গীতাৰ অধিকাংশই আপুনি নিজে হৃদয়ঙ্গম কৰিব পাৰিব, কিন্তু আপুনি জনা অৰ্থ আছে তেনে ভাৱে অৰ্থ নাপাবও পাৰে। উদাহৰণৰ কাৰণে শ্ৰীকৃষ্ণই স্পষ্ট ভাবে কৈছে যে যজ্ঞৰ প্ৰক্ৰিয়াই কৰ্ম; আকৌ আপুনি কয় খেতি কৰাই কৰ্ম। যজ্ঞক স্পষ্ট কৰি তেওঁ কৈছে যে যজ্ঞত বহুতো যোগীয়ে প্ৰাণক অপান বায়ুত হৰন কৰে, বহুতে অপানক প্ৰাণত হৰন কৰে, বহুতো যোগীয়ে প্ৰাণ অপানক দুইটাকে ৰোধ কৰি প্ৰাণায়াম-পৰায়ণ হয়। বহুতো যোগীয়ে ইন্দ্ৰিয়ৰ সম্পূৰ্ণ প্ৰবৃত্তিক সংযমায়িত হৰন কৰে। এই প্ৰকাৰৰ স্বাস-প্ৰশ্বাস চিন্তনেই হ’ল যজ্ঞ। মনৰ লগত ইন্দ্ৰিয়ৰ সংযমেই যজ্ঞ। শাস্ত্ৰকাৰ সকলে স্বয়ং যজ্ঞৰ

কথা কৈছে, আকৌ আপুনি কয় যে বিষ্ণুৰ বাবে স্বাহা কৈ জুইত ঘী-তিল হৰন কৰাই যজ্ঞ। সেই জন যোগেশ্বৰে এনে কিন্তু এটা কথাও কোৱা নাই।

কি কাৰণত আপুনি বাৰু বুজি পোৱা নাই? অথচ পৰিশ্ৰমৰ পিছতো আপুনি যথার্থ জ্ঞানৰ পৰা শুণ্য হৈ আছে? বস্তুতঃ মানুহ জন্মৰ পিছৰ পৰা ক্ৰমশঃ ডাঙৰ হয়, নিজৰ পৈত্ৰিক সম্পত্তি (ঘৰ, দোকান, মাটি-বাৰী পদ-প্ৰতিষ্ঠা, গৰু-ম'হ, যন্ত্ৰ-পাতি ইত্যাদি) ৰ অধিকাৰী হৈ পৰে। ঠিক তেনেদৰে কিছু অন্ধ বিশ্বাস, পৰম্পৰা, পূজা-পদ্ধতিবোৰো যৌতুক হিচাবে পায়। তেতিয়া কোটি দেৱতাৰ কথাটো ভাৰতত বহুত আগৰ পৰাই গম্ভীৰ কৰা হয়। বিশ্বত তেওঁলোকৰ ৰূপ অলেখ। শিশু যেতিয়া ডাঙৰ হৈ আহে নিজৰ মাক দেউতাক ককাই-ভাই ওচৰ-চুবুৰিয়াৰ পূজা অৰ্চনা প্ৰত্যক্ষ কৰে। ঘৰত-পৰিয়ালত প্ৰচলিত এনে পূজা পদ্ধতিৰ অমিট ছাপ তেওঁলোকৰ মস্তিষ্কত সোমাই যায়। দেৱীৰ পূজা পালে জীৱনভৰ তেওঁ দেবী দেবীয়ে চিঞৰী থাকে। আৰু পৰিয়ালত ভূত-পূজাৰ প্ৰাধান্য দেখে তেনেহলে ভূত ভূত কৰিয়েই জীৱন কটায়। কোনোৱে শিৱ কলে কোনোৱে কৃষ্ণ কয় কিবা এটাক ধৰি ৰাখিবই। তাক তেওঁ এৰিব নোৱাৰে।

এনে ভ্ৰান্ত পুৰুষে গীতাৰ নিচিনা কল্যাণকাৰী শাস্ত্ৰ, পালেও তাক বুজিব নোৱাৰে। লাগিলে তেওঁ পৈত্ৰিক সম্পত্তি, এৰিব পাৰে কিন্তু এই অন্ধ পৰম্পৰাক, ধৰ্মীয় পৰম্পৰাক এৰিব নোৱাৰে। পৈত্ৰিক সম্পত্তি ত্যাগ কৰি অথবা এৰি বহুদূৰ যাব পাৰে, কিন্তু মস্তিষ্কত অংকিত হৈ থকা এই অন্ধপৰম্পৰাই তাতো আপোনাৰ পিছ নেৰে। আপুনি মূৰ কাটি বেলেগেতো ৰাখিব নোৱাৰে। সেয়ে আপুনি যথার্থ শাস্ত্ৰকো সেই অন্ধ পৰম্পৰা, ৰীতি-নীতি আৰু পূজা পদ্ধতিৰ অনুৰূপত ঢালি চায়। যদি সেই বিলাকে অনুৰূপ কথা মিলায় তেতিয়া আপুনি তাক শুদ্ধ বুলি মানি লয় আৰু যদি অনুৰূপ নহয় তেতিয়া আপুনি ভুল বুলি কয়। সেইকাৰণে আপুনি গীতাৰ মাহাত্ম্য বুজি নাপায়। গীতাৰ ৰহস্য ৰহস্যই হৈ থাকে। ইয়াৰ বাস্তৱিক ৰাস্তা দেখুওৱা জন হ'ল সন্ত বা সদ্গুৰু। তেওঁৱেই কব পাৰে যে গীতা কি? কি কয়? সকলোৱে নাজানে। সকলোৰে বাবে সূলভ উপায় হ'ল ইয়াক কোনোবা মহাপুৰুষৰ ওচৰত গৈ বুজি লোৱা, যাক শ্ৰীকৃষ্ণই অধিক জোৰ দি কৈছে।

গীতা কোনো বিশিষ্ট ব্যক্তিৰ জাতি, বৰ্ণ, পন্থ, দেশ, কাল বা কোনো অন্ধ পৰম্পৰাৰ, সম্প্ৰদায়ৰ গ্ৰন্থ নহয়, আনকি ই সাৰ্বলৌকিক, সাৰ্বকালিক। ধৰ্ম গ্ৰন্থ হয়। এইখন প্ৰত্যেক দেশ, প্ৰত্যেক জাতি বা প্ৰত্যেক স্তৰৰ প্ৰত্যেক স্ত্ৰী-পুৰুষৰ কাৰণে, সকলোৰ কাৰণে হয়। মাত্ৰ আনৰ কথা শুনি বা আনৰ পৰা প্ৰভাৱিত হৈ মনুষ্যই এনে নিৰ্ণয় লব নালাগে, যাৰ প্ৰভাৱ পোনে পোনে তাৰ অস্তিত্বত পৰে। পূৰ্বাগ্ৰহৰ ভাৱনাৰ পৰা মুক্ত হোৱা সত্যাস্থেয়ী সকলৰ কাৰণেই এই আৰ্যগ্ৰন্থ আলোক স্তম্ভ। হিন্দু সকলৰ বাবে “ বেদেই প্ৰমাণ”। বেদৰ অৰ্থ হ’ল জ্ঞান, পৰমাত্মাক জনা। পৰমাত্মা সংস্কৃততো নাই সংহিতাতো নাই। কিতাপ তেওঁৰ সাংকেতিক চিহ্ন মাত্ৰ। তেওঁ বস্তুতঃ হৃদয়ত জাগৃত হয়। বিশ্বামিত্ৰ চিন্তনত আছিল। তেওঁৰ ভক্তি দেখি ব্ৰহ্মা আহি কলে “আজিৰ পৰা তুমি ঋষি হ’লা ”। বিশ্বামিত্ৰৰ সন্তোষ নহল, চিন্তনত লাগি থাকিল। কিছু কালৰ পাছত দেৱতাৰ সহিতে ব্ৰহ্মা আকৌ আহি কলে “আজিৰ পৰা তুমি ৰাজৰ্ষি হ’লা ”। কিন্তু বিশ্বামিত্ৰই সমাধান নাপালে। তেওঁ একেৰাহে চিন্তনত লাগি থাকিল। ব্ৰহ্মা দৈবী সম্পদেৰে পুনঃ আহি কলে যে তুমি আজিৰ পৰা মহৰ্ষি হ’লা। বিশ্বামিত্ৰই কলে “ নহয়, মোক জিতেন্দ্ৰিয় ব্ৰহ্মৰ্ষি কওক ”। ব্ৰহ্মাই কলে “ এতিয়া তুমি জিতেন্দ্ৰিয় হোৱা নাই ”। বিশ্বামিত্ৰ পুনঃ তপস্যাত লাগি গল, তেওঁৰ মস্তিষ্কৰ পৰা ধূঁৱা ওলাবলৈ ধৰিলে, তেতিয়া দেৱতা সকলে গৈ ব্ৰহ্মাক নিবেদন কৰিলে। ব্ৰহ্মাই গৈ বিশ্বামিত্ৰক পুনঃ কলে “ এতিয়া তুমি ব্ৰহ্মৰ্ষি হ’লা ”। বিশ্বামিত্ৰই কলে “ যদি মই ব্ৰহ্মৰ্ষি হ’লো তেতিয়া হলে বেদ মোক বৰণ কৰক ”। বেদ বিশ্বামিত্ৰৰ হৃদয়ত সোমাল। যি তত্ব নাজানিছিল, সেইটো জানিলে। এয়াই বেদ, বেদকোনো গ্ৰন্থ নহয়। যত বিশ্বামিত্ৰ তাত বেদ ও আছিল।

এইটো শ্ৰীকৃষ্ণইও কৈছিল, “ সংসাৰ অবিনাশী আইতৰ গছ হয়, ওপৰত পৰমাত্মা যাৰ মূল আৰু তলত প্ৰকৃতি পৰ্য্যন্ত শাখা। যিয়ে এই প্ৰকৃতিৰ অন্ত কৰি পৰমাত্মাক বিদিত কৰি লৈছে তেৱেই বেদবিদ্। অজুৰ্ন! মইয়ো বেদবিদ্। সেয়েহে প্ৰকৃতিৰ প্ৰসাৰ আৰু শেষত পৰমাত্মাৰ অনুভূতিৰ নামেই বেদ। এই অনুভূতি ঈশ্বৰ প্ৰদত্ত, সেই কাৰণে বেদক অপৌৰুষেয় বুলি কোৱা

হয়। মহাপুৰুষ অপৌৰুষেয় হয়, তাৰ মাধ্যমেদি পৰমাত্মাই মাতে। তেওঁ পৰমাত্মাৰ বাণী প্ৰসাৰক(ট্ৰেন্সমিটাৰ) হৈ পৰে। মাত্ৰ শব্দ জ্ঞানৰ আধাৰত তেওঁৰ বাণীত নিহিত যথার্থক জানিব নোৱাৰি। তেওঁক সেইজনেই জানে যি জনে ক্ৰিয়াত্মক পক্ষত চলি এই অপৌৰুষেয় স্থিতি প্ৰাপ্ত কৰিছে, যাৰ পুৰুষ (অহং) পৰমাত্মাত বিলিন হৈ গৈছে।

বস্তুতঃ বেদ অপৌৰুষেয় হয়, কিন্তু কোৱা মানুহ এশ ডেৰশ মান মহাপুৰুষেই আছিল। তেওঁলোকৰ বাণীৰ সংকলনকেই ‘ বেদ ’কোৱা হয়। কিন্তু যেতিয়া শাস্ত্ৰ লিখিত ৰূপত হয়, তেতিয়া সামাজিক ব্যৱস্থাৰ নিয়মো লগতে লিখা হয়। মহাপুৰুষৰ নামত জন সাধাৰণে তাৰোপালন কৰিবলৈ ধৰে, যদিও ধৰ্মৰ পৰা এওঁলোকৰ সমন্ধ বহুত দূৰত থাকে। আধুনিক যুগত মন্ত্ৰীৰ আগে পিছে থাকি পালী নেতা বিলাকেও নিজৰ কাম কৰাই লয়, যিটো মন্ত্ৰীয়েও এনে নেতাক চিনি নাপায়। এই ধৰণে সামাজিক ব্যৱস্থাকাৰ মহাপুৰুষৰ আঁৰত থাকি খোৱা-লোৱাৰ নিয়মো গ্ৰহণত লিপিবদ্ধ কৰি দিয়া হয়। সেইবোৰৰ সামাজিক উপযোগীতা সাময়িক ভাৱে হয়। বেদৰ সম্বন্ধতো একেই। তাৰ চিৰন্তন সত্য উপনিষদত সংগৃহিত আছে। সেই উপনিষদ বিলাকৰ সাৰাংশ যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণৰ বাণী ‘গীতা’। সাৰাংশত গীতা অপৌৰুষেয়‘বেদ’ ৰসৰ পৰা সমুদ্ভূত উপনিষদ সুধাৰ সাৰ সৰ্বস্ব হয়।

এনে ধৰণে প্ৰত্যেক মহাপুৰুষ যি পৰমতত্ত্ব প্ৰাপ্ত কৰি লৈছে,স্বয়ং তেৱেই ধৰ্মগ্ৰন্থ। তেওঁৰ বাণীৰ সংকলন বিশ্বৰ যতেই নাথাকক সেইটোকে শাস্ত্ৰ বুলি কোৱা হয়। কিন্তু কিছু ধৰ্মাৱলম্বী সকলে এইটোও কয় যে“যিমান কুৰাণত লিখা আছে সেইটোহে সচা, এতিয়া কোৰাণ আকৌ নামি নাহে”। “ঈসামসীহক বিশ্বাস নকৰিলে স্বৰ্গ প্ৰাপ্ত নহয়, তেওঁ ঈশ্বৰৰ অকলশৰীয়া লৰা আছিল” আৰু এনে মহাপুৰুষ হবই নোৱাৰে”। এইটো তেওঁলোকৰ অন্ধ বিশ্বাস। যদি সেই তত্ত্বকে সাক্ষাত কৰি লোৱা হয়, তেতিয়া সেই একে কথাকে হব।

গীতা সাৰ্বভৌম গ্ৰন্থ হয়। ধৰ্মৰ নামত প্ৰচলিত বিশ্বৰ সমস্ত ধৰ্ম গ্ৰন্থৰ ভিতৰত গীতাৰ স্থান অদ্বিতীয়। ই অকল ধৰ্মশাস্ত্ৰই নহয়, আনকি অন্য ধৰ্ম

নাই। ভাষান্তৰৰ সময়ত এই শব্দবোৰৰ অৰ্থ প্ৰয়োগৰ ক্ষেত্ৰত বিশেষ ধ্যান দিয়া হৈছে আৰু আৱশ্যক স্থানত ব্যাখ্যাও কৰা হৈছে। গীতাৰ আকৰ্ষণ নিম্ন প্ৰশ্ন বিলাকতে আছে, যাৰ বাস্তবিক অৰ্থ আধুনিক সমাজে পাহৰি গৈছে।

নাই। ভাষান্তৰৰ সময়ত এই শব্দবোৰৰ অৰ্থ প্ৰয়োগৰ ক্ষেত্ৰত বিশেষ ধ্যান দিয়া হৈছে আৰু আৱশ্যক স্থানত ব্যাখ্যাও কৰা হৈছে। গীতাৰ আকৰ্ষণ নিম্ন প্ৰশ্ন বিলাকতে আছে, যাৰ বাস্তবিক অৰ্থ আধুনিক সমাজে পাহৰি গৈছে।

সেইবোৰ এনেধৰণৰ যি বিলাক “যথার্থ গীতাত” আপুনি পাব —

- ১) **শ্ৰীকৃষ্ণঃ** ঃ- এজন তত্বদৰ্শী যোগী আছিল।
- ২) **সত্য** ঃ- আত্মাই একমাত্ৰ সত্য।
- ৩) **সনাতন** ঃ- আত্মাই সনাতন, পৰমাত্মাই সনাতন।
- ৪) **সনাতন ধৰ্ম** ঃ- পৰমাত্মাৰ লগত মিলনৰ প্ৰক্ৰিয়া।
- ৫) **যুদ্ধ** ঃ- দৈব আৰু আসুৰিক গুণ সমূহৰ সংঘৰ্ষই যুদ্ধ। ই অন্তঃকৰণৰ দুটা প্ৰবৃত্তি। এই দুটাৰ সমাপ্তিয়েই পৰিণাম।
- ৬) **যুদ্ধ স্থান** ঃ- এই মানৱ শৰীৰ মনৰ সৈতে ইন্দ্ৰিয় সমূহৰ যুদ্ধ স্থল।
- ৭) **জ্ঞান** ঃ- পৰমাত্মাৰ প্ৰত্যক্ষ অনুভূতিয়েই জ্ঞান।
- ৮) **যোগ** ঃ- সংসাৰৰ সংযোগ- বিয়োগ ৰহিত অব্যক্তব্ৰহ্মাৰ লগত মিলনেই যোগ।
- ৯) **জ্ঞান যোগ** ঃ- আৰাধনাই কৰ্ম। স্বয়ং নিজৰ ওপৰত নিৰ্ভৰশীল হৈ কৰ্মত প্ৰবৃত্তি হোৱাই হল জ্ঞানযোগ।
- ১০) **নিষ্কাম কৰ্মযোগ** ঃ- ইষ্টৰ ওপৰত নিৰ্ভৰ হৈ অথাতি সমৰ্পণ ভাৱে কৰ্মত প্ৰবৃত্তি হোৱাই হল নিষ্কাম কৰ্মযোগ।
- ১১) **শ্ৰীকৃষ্ণই কোন সত্যৰ কথা কৈছে-** শ্ৰীকৃষ্ণই সেই সত্যকে কৈছে, যিটো তত্বদৰ্শী সকলে আগতো দেখিছিলে আৰু আগলৈও দেখা পায়।

১২) যজ্ঞঃ-সাধনাৰ বিধি- বিশেষৰ নামেই 'যজ্ঞ'

১৩) কৰ্মঃ-যজ্ঞক কাৰ্য্যৰূপ দিয়াই হ'ল কৰ্ম।

১৪) বৰ্ণঃ- আৰাধনাৰ এক প্ৰকাৰৰ বিধি যাৰ নাম কৰ্ম যাক চাৰি ভাগত বিভক্ত কৰা হৈছে, সেয়াই চাৰি বৰ্ণ। সাধনাৰ পথত একেই সাধকৰ উচ্চ-নিচ স্তৰ, যিটো কোনো জাতি নহয়।

১৫) বৰ্ণ সংকৰঃ - পৰমাত্মাৰ পথৰ পৰা চূত্ৰ হোৱা সাধনাত ভ্ৰম উৎপন্ন হোৱাই হ'ল বৰ্ণ সংকৰ।

১৬) মনুষ্যৰ শ্ৰেণীঃ - অন্তঃকৰণৰ স্বভাৱ অনুসৰি মনুষ্য দুই প্ৰকাৰৰ হয় - এজন দেৱতাৰ দৰে, অন্যজন অসুৰৰ দৰে। এইটোৱেই মনুষ্যৰ - এজন দেৱতাৰ দৰে, অন্যজন অসুৰৰ দৰে। এইটোৱেই মনুষ্যৰ দুটা জাতি, যিটো স্বভাৱৰ দ্বাৰা নিৰ্দ্ধাৰিত হয় আৰু এই স্বভাৱ উঠা নমা কৰে।

১৭) দেৱতা - হৃদয় ক্ষেত্ৰত পৰম দেৱৰ দেৱত্ব আৰ্জন কৰিব পৰা গুণ সমূহ। বাহ্য দেৱতাৰ পূজা অজ্ঞ বুদ্ধিৰ পৰিচয়।

১৮) অৱতাৰ - অৱতাৰৰ আৰিভাৰ ব্যক্তিৰ হৃদয় ক্ষেত্ৰত হয়, বাহিৰত নহয়।

১৯) বিৰাট দৰ্শন - যোগীৰ হৃদয়ত ঈশ্বৰৰ দ্বাৰা দিয়া অনভূতি। ভগৱান সাধকৰ হৃদয়ত দৃষ্টি দি থিয় হয়, তেতিয়া দেখা পায়।

২০) পূজনীয় দেৱ (ইষ্ট)- একমাত্ৰ পৰাৎপৰ ব্ৰহ্মই পূজনীয় দেৱ। তেওঁক বিচৰাৰ ক্ষেত্ৰ হ'ল হৃদয় দেশ। সেই অব্যক্ত স্বৰূপ স্থিত মহাপুৰুষ পৰাৎপৰ ব্ৰহ্ম প্ৰাপ্তীৰ একমাত্ৰ স্ৰোত।

এতিয়া যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণৰ স্বৰূপ অনুভৱ কৰিবলৈ হলে তিনি আধ্যায় লৈকে আপুনি পঢ়িব লাগিব, আধ্যায় তেৰলৈকে পাওতে আপুনি স্পষ্ট অনুভৱ কৰিব পাৰিব যে শ্ৰীকৃষ্ণ এজন যোগী আছিল। আধ্যায় দুইৰ পৰাই সত্য অৱগত হব। সনাতন আৰু সত্য এক আনটোৰ পৰিপূৰক, এই আধ্যায় দুইৰ পৰাই স্পষ্ট হব আৰু এইটো শেষ আধ্যায় লৈকে চলি থাকিব। যুদ্ধ শব্দৰ অৰ্থ চাৰি আধ্যায় লৈ স্পষ্ট হব, এঘাৰ আধ্যায়ত সংশয় নিৰ্মূল হব তথাপিও

ইয়াৰ অধিক জানিবৰ বাবে যোদ্ধা আধ্যায় লৈকে চাব লাগে। যুদ্ধ স্থল বুজিবৰ বাবে আধ্যায় বাৰ-তেৰ চাওক।

জ্ঞানৰ অৰ্থ চতুৰ্থ আধ্যায় লৈকে স্পষ্ট হয় কিন্তু তেৰ অধ্যায়ত স্পষ্ট হৈ যাব যে প্ৰত্যক্ষ দৰ্শণৰ নামেই ‘ জ্ঞান’। যোগ অধ্যায় ছয় লৈ কে পঢ়িলে আপুনি বুজি পাব, তেনেকৈ শেষলৈকে যোগৰ বিভিন্ন অংশৰ পৰিভাষা দিয়া আছে। জ্ঞান যোগ আধ্যায় তিনিৰ পৰা ছয় লৈ কে স্পষ্ট হৈ যাব, আগলৈ চাবৰ বিশেষ প্ৰয়োজন নাথাকে। নিষ্কাম কৰ্মযোগ “আধ্যায় দুইৰ পৰা আৰম্ভ হৈ শেষলৈকে আছে। যজ্ঞ সম্পৰ্কে আপুনি তিনি আধ্যায়ৰ পৰা চাৰিলৈকে পঢ়িলে স্পষ্ট হৈ যাব। দুটা জাতি, যিটো স্বভাৱৰ দ্বাৰা নিৰ্দ্ধাৰিত হয় আৰু এই স্বভাৱ উঠা নমা কৰে। সাধকৰ হৃদয়ত দৃষ্টি দি থিয় হয়, তেতিয়া দেখা পায়।

‘কৰ্ম’ৰ নাম আধ্যায় ২/৩৯ ত প্ৰথম দিয়া হৈছে। এই শ্লোকৰ পৰাই আধ্যায় চাৰিলৈকে পঢ়িলে স্পষ্ট হৈ যাব যে কৰ্মৰ অৰ্থ হ’ল কিয় আৰাধনা-ভজন? আধ্যায় যোদ্ধা আৰু সোতৰই সত্যক স্থিৰ কৰি দিব। ‘ বৰ্ণ সংকৰ’ তিনি আধ্যায়ত আৰু ‘অৱতাৰ’ চাৰি অধ্যায়ত স্পষ্ট হৈ যাব। বৰ্ণ ব্যৱস্থাৰ কাৰণে ওঠৰ আধ্যায় চাব লাগিব, তেনেকৈ সংকেত অৱশ্যে তিনি-চাৰি আধ্যায়তো আছে। মনুষ্যৰ দেবাসুৰ জাতিৰ বাবে আধ্যায় যোদ্ধাই দ্ৰষ্টব্য, বিৰাট দৰ্শন আধ্যায় দহৰ পৰা এঘাৰলৈ স্পষ্ট হৈ যায়। আধ্যায় সাত, ন আৰু পোন্ধৰত ইয়াৰ প্ৰকাশ পাইছে, আধ্যায় সাত, ন আৰু সোতৰত বাহ্য দেৱতা সকলৰ অস্তিত্বহীনতা স্পষ্ট হৈ যায়। পৰমাত্মাৰ পূজাৰ মূল হৃদয় দেশতে আছে, যত ধ্যান, স্বাশ-প্ৰশ্বাসৰ চিন্তন ইত্যাদি ক্ৰিয়া, যি একান্ত বহি (মন্দিৰ মুৰ্তীৰ ওচৰত নহয়) কৰিব পৰা যাব। আধ্যায় তিনি, চাৰি, ছয় আৰু ওঠৰত এইটো স্পষ্ট হৈ যাব। বেছি ভবা-চিন্তাৰ কোনো প্ৰয়োজন নাই। যদি আধ্যায় ছয়লৈকে আপুনি অধ্যায়ন কৰে তেতিয়াও “যথার্থ গীতাৰ সাৰ বিষয় আপুনি বুজি পাব।

গীতা জীৱন নিৰ্বাহৰ সাধন নহয়, বৰঞ্চ জীৱন সংগ্ৰামত শাস্ত্ৰত বিজয়ৰ ক্ৰিয়াত্মক প্ৰশিক্ষন হয়, সেই কাৰণেই যুদ্ধ-গ্ৰন্থ, যিয়ে বাস্তৱিক বিজয়

প্ৰদান কৰে, কিন্তু গীতোক্ত যুদ্ধ তৰোৱাল , ধনু-শৰ গদালৈ কৰা যুদ্ধ নহয়, সাংসাৰিক যুদ্ধ নহয়, আৰু এনে যুদ্ধত শাস্ত্ৰত বিজয় নাই। এইটো সদায় সত্ৰ প্ৰবৃত্তিৰ সংগ্ৰাম, যাৰ ৰূপকাত্মক বৰ্ণনাৰ পৰম্পৰা আছে। বেদৰ ইন্দ্ৰ আৰু বৃত্ৰাসুৰ, বিদ্যা আৰু অবিদ্যা, পূৰ্বাণত দেবাসুৰ সংগ্ৰাম, মহাকাব্যত ৰাম আৰু ৰাৱণ, কৌৰৱ আৰু পাণ্ডৱৰ সংঘৰ্ষকে গীতাই ধৰ্মক্ষেত্ৰ আৰু কুৰুক্ষেত্ৰত দৈৱি সম্পদ আৰু আসুৰিক সম্পদ, সজাতিয় আৰু বিজাতিয়, সদগুণ আৰু দুৰ্গুণৰ সংঘৰ্ষৰ কথা কৈছে।

এই সংঘৰ্ষ য'ত হয়, সেই স্থান ক'ত? গীতাৰ ধৰ্মক্ষেত্ৰত আৰু কুৰুক্ষেত্ৰ ভাৰতৰ কোনো ভূ-খণ্ড নহয়, আনকি স্বয়ং গীতাকাৰৰ শব্দত “ইদং শৰীৰং কৌন্তেয় ক্ষেত্ৰমিত্যভিধীয়তে” কৌন্তেয়! এই শৰীৰেই হ'ল এখন ক্ষেত্ৰ, যত সিঁচা ভাল বেয়াৰ বীজ সংস্কাৰ ৰূপত সদায় অংকুৰিত হয়। দহ ইন্দ্ৰিয়, মন, বুদ্ধি, চিত্ত, অহংকাৰ পঞ্চ বিকাৰ, আৰু তিনি গুণৰ বিকাৰ এই ক্ষেত্ৰৰ প্ৰসাৰ। প্ৰকৃতিৰ পৰা উৎপন্ন এই তিনি গুণৰ পৰা মানুহ বিবশ হৈ কৰ্ম কৰে, সি এখন্তেকো কৰ্ম নকৰাকৈ থাকিব নোৱাৰে।

“পুনৰপি জননম্ পুনৰপি মৰণম্, পুনৰপি জননী জঠৰে শয়নম্”

জন্ম জন্ম এইখিনি কৰিয়েই তো পাৰ হৈছে। এয়াই কুৰুক্ষেত্ৰ। সদগুৰু মাধ্যমেৰে সাধনা কৰি শুদ্ধ ৰাস্তায়েদি সাধক যেতিয়া পৰমধৰ্ম পৰমাত্মাৰ ফালে অগ্ৰসৰ হয়, তেতিয়াই এই ক্ষেত্ৰ ধৰ্মক্ষেত্ৰ হৈ পৰে। এই শৰীৰেই ক্ষেত্ৰ।

এই শৰীৰৰ অন্তৰালত থকা অন্তঃকৰণৰ দুই প্ৰবৃত্তি বৰ প্ৰাচীন, সেয়া হল দৈৱি সম্পদ আৰু আসুৰি সম্পদ। দৈৱি সম্পদত আছে পুণ্যৰূপী পাণ্ডু আৰু কৰ্ত্তব্যৰূপী কুন্তী। পুণ্য জাগ্ৰিত হলে মানুহে যি কোনো কৰ্ত্তব্য ভাবিচিন্তি কৰে, নিজৰ মতে তেওঁ কৰ্ত্তব্যই কৰি গৈছে কিন্তু তেওঁৰ এই কৰ্ত্তব্য নহল, কিয়নো পুণ্যৰ বিনা কৰ্ত্তব্য বুজি পোৱা নাযায়। কুন্তীয়ে পাণ্ডুৰ লগত সম্বন্ধ হোৱাৰ পূৰ্বতে যি কৰিলে সেয়া আছিল আৰ্জিত-কৰ্ণ। আজীৱন কুন্তীৰ পুত্ৰ বিলাকৰ লগতে যুজি থাকিল। পাণ্ডুৰ দুধৰ্ষ শত্ৰু আৰু কোনো যদি আছিল

তেন্তে আছিল 'কৰ্ণ'। বিজাতিৰ কৰ্মই কৰ্ণ যি বন্ধনকাৰি, যত পৰম্পৰাগত অজ্ঞতাৰ চিত্ৰ দাঙি ধৰিছে, পূজা - পদ্ধতি যত এৰিব পৰা নাই। পুণ্য জাগৃত হোৱাৰ বাবে ধৰ্মৰূপী যুধিষ্ঠিৰ অনুৰাগ ৰূপী 'অজুন' ভাৱৰূপী 'ভীম' নিয়মৰূপী 'নকুল' সৎসঙ্গ ৰূপী 'সহদেৱ' সাত্ত্বিকতাৰূপী 'সাত্যকি' কায়াত সামৰ্থ্য ৰূপী 'কাশীৰাজ' কৰ্তব্যৰ দ্বাৰা ভৱত বিজয় 'কুন্তিভোজ' ইত্যাদি ইষ্টমুখি মানসিক প্ৰবৃত্তিৰ উৎকৰ্ষ হৈছিল, যাৰ গণনা সাত অক্ষৌহিণী। 'অক্ষ' দৃষ্টিক কোৱা হয়। সত্যময়ী দৃষ্টিকোণেৰে যাৰ গঠন হৈছে সেয়াই দৈবি সম্পদ। পৰমধৰ্ম পৰমাত্মা লৈকে নিব পৰা এই সাত খটখটি সাত ভূমিকা হয় এয়াই কোনো গণনা বিশেষ নহয়। বস্তুতঃ এই প্ৰবৃত্তিবোৰ অনন্তঃ।

দ্বিতীয় হ'ল 'কুৰুক্লেত্ৰ'। যত দহ ইন্দ্ৰিয় আৰু এক মন এঘাৰ অক্ষৌহিণী সৈন্য। মনৰ সৈতে ইন্দ্ৰিয়ময়ী দৃষ্টিকোণেৰে যাৰ গঠন হৈছে, সেইটোৱেই আসুৰি সম্পদ, যত অজ্ঞান ৰূপী 'ধৃতৰাষ্ট্ৰ' আছে, যি সত্যক উপলব্ধি কৰিব পাৰিও অন্ধ হৈ আছে। তেওঁৰ সহধৰ্মিণী 'গান্ধাৰী' প্ৰবৃত্তিবোৰ ইন্দ্ৰিয়ৰে ভৰা। ইয়াৰ লগতে মোহৰূপী 'দূৰ্যোধন', দুৰ্বুদ্ধীৰূপী 'দুঃশাষন', বিজাতিয় কৰ্মৰূপী 'কৰ্ণ', ভ্ৰমৰূপী 'ভীষ্ম' দ্বৈত আচৰণৰূপী 'দ্ৰোণাচাৰ্য্য', আসক্তিকৰূপী 'অশ্বথামা' বিকল্পৰূপী 'বিকৰ্ণ' আধৰুৱা সাধনাৰ কৃপাৰ আচৰণৰূপী 'কৃপাচাৰ্য্য', আৰু এই সকলোৰে মাজত জীৱৰূপী 'বিদূৰ' যি অজ্ঞানতে থাকে কিন্তু দৃষ্টি সদায় পাণ্ডৱৰ ওপৰত, পুণ্যৰে প্ৰবাহিত প্ৰবৃত্তিৰ ওপৰত কিয়নো আত্মাই পৰমাত্মাৰ শুদ্ধ অংশ। এনেধৰণেৰে আসুৰি সম্পদো অনন্ত। ক্ষেত্ৰ এটাই এই শৰীৰ, ইয়াত যুদ্ধ কৰিব পৰা দুটা প্ৰবৃত্তি আছে। এটা প্ৰকৃতিত বিশ্বাস আনি দিয়ে, নীচ-অধম যোনিৰ কাৰণ হয়, ঠিক দ্বিতীয় টোৱে পৰমপুৰুষ পৰমাত্মাত বিশ্বাস আনি প্ৰবেশ কৰাই দিয়ে। তত্ৰদৰ্শী মহাপুৰুষৰ ওচৰত থাকি ক্ৰমশঃ সাধনা কৰিলে দৈবি সম্পদৰ উৎকৰ্ষ হয় আৰু আসুৰি সম্পদ সৰ্ব্ব প্ৰকাৰে শমন হয়। যেতিয়া কোনো বিকাৰেই নাথাকিব মনৰ নিৰোধ উৎপন্ন হ'ব, আৰু নিৰুদ্ধ মনৰ বিলয়ৰ পাছত দৈবি সম্পদৰো আৱশ্যকতা সমাপ্ত হৈ যাব। অৰ্জুনে দেখিলে যে কৌৰৱ পক্ষৰ বাদেও পাণ্ডৱ পক্ষৰ যোদ্ধা সকলো যোগেশ্বৰত সমাহিত হৈ আছে। পূৰ্ণতাৰ

লগে লগে দৈবি সম্পদো বিলয় হৈ গৈ আছে, শেষত শাস্ত্ৰত পৰিণাম ওলাই পৰিছে। ইয়াৰ পিছতো মহাপুৰুষে যদি কিবা কৰে, তেতিয়াহলে মাত্ৰ নিজৰ সমৰ্থনকাৰীৰ মাৰ্গদৰ্শনৰ কাৰণেহে কৰে।

লোক সংগ্ৰহৰ এই ভাৱনাৰে মহাপুৰুষ সকলে সুক্ষ্ম মনোভাৱৰ বৰ্ণন এনেদৰে স্থূল ৰূপত দিয়ে। ‘গীতা’ ছন্দবদ্ধ, ব্যাকৰণ সন্মত, কিন্তু ইয়াৰ পাত্ৰবোৰ প্ৰতিকাত্মক, অমূৰ্ত্ত যোগ্যতাৰ মুৰ্ত্তৰূপ মাত্ৰ। গীতাৰ আৰম্ভনীতে ঐশ-চল্লিশ পাত্ৰৰ নাম উল্লেখ কৰা হৈছে যাৰ আধা সংখ্যাই সজাতীয় আৰু আধা বিজাতীয়। কিছু পাণ্ডৱ পক্ষৰ আৰু কিছু কৌৰৱ পক্ষৰ, “বিশ্বৰূপ দৰ্শনৰ” সময়ত ইয়াৰে দুইচাৰিটা নাম পুনঃ উল্লেখিত হৈছে, অন্যথা সম্পূৰ্ণ গীতাত এই নাম বোৰৰ কতো আলোচনা নাই। একমাত্ৰ অৰ্জুনেই এনেকুৱা এটা পাত্ৰ যি আৰম্ভনীৰ পৰা শেষলৈকে যোগেশ্বৰৰ সন্মুখত আছে। সেই অৰ্জুনো মাত্ৰ যোগ্যতাৰ প্ৰতীক হে তেওঁকোনো ব্যক্তি বিশেষ নহয়। গীতাৰ আৰম্ভণীত অৰ্জুন সনাতন কুলধৰ্মৰ কাৰণে আকুল হৈ আছিল কিন্তু যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই তাক অজ্ঞানতা বুলি অভিহিত কৰিলে আৰু বুজাই দিলে যে আত্মাই সনাতন , শৰীৰ নাশবান সেই কাৰণে যুদ্ধ কৰা। এই আদেশৰ পৰা এইটো স্পষ্ট নহয় যে অৰ্জুনে কৌৰৱকে মাৰক। পাণ্ডৱ পক্ষতোতো দেহধাৰী আছিল , দুটাৰ মাজত সম্বন্ধও আছিল। সংস্কাৰৰ ওপৰত আধাৰিত শৰীৰক কি তৰোৱালে কাটি সমাপ্ত কৰিব পাৰে? শৰীৰেই যেতিয়া নাশশীল, যাৰ অস্তিত্বই যেতিয়া নাই তেতিয়া হলে অৰ্জুন কোন আছিল? শ্ৰীকৃষ্ণ কাৰ ৰক্ষাৰ কাৰণে ঠিয় হৈ আছিল? কি কোনো দেহধাৰীৰ ৰক্ষা কৰিবৰ বাবে ঠিয় হৈছিল নে কি? শ্ৰী কৃষ্ণই কৈছে- “ যি জনে নিজৰ শৰীৰৰ কাৰণে প্ৰবিশ্ৰম কৰে, তেওঁ পাপায়ু অজ্ঞ বুদ্ধিৰ লোক তেওঁ এনেয়ে জীয়াই আছে। “যদি শ্ৰীকৃষ্ণ কোনো শৰীৰধাৰীৰ ৰক্ষাৰ বাবে ঠিয় হৈছে তেতিয়াহলে তেৱো অজ্ঞ-মুঢ় বুদ্ধিৰ লোক, ব্যৰ্থই জীয়াই আছে। আচলতে অনুৰাগ হ’ল অৰ্জুন।

অনুৰাগীৰ বাবে মহাপুৰুষ সদায়েই প্ৰস্তুত আছে। অৰ্জুন শিষ্য আছিল আৰু শ্ৰীকৃষ্ণ আছিল এজন সদগুৰু। অতিবিনয়েৰে তেওঁ কলে যে ধৰ্মৰ মাৰ্গত মোহ চিন্তৰে আণ্ডৰা মই আপোনাক সুধিব বিচাৰিছো, যি শ্ৰেয় (পৰম কল্যাণ

কাৰক) হয় তেনে উপদেশ মোক দিয়ক। অৰ্জুনে শ্ৰেয় বিচাৰিছিল, প্ৰেয়(ভৌতিক পদাৰ্থ) নহয়। মাত্ৰ কোৱাকথাই নহয়, সাধনে ভজনে মই আপোনাৰে;মই আপোনাৰে শিষ্য আপোনাৰ শৰণত পৰিছোঁ। ঠিক এনে ধৰণে গীতাৰ ঠায়ে ঠায়ে স্পষ্ট হৈ পৰিছে যে অৰ্জুন আৰ্তী আছিল আৰু যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণ আছিল সদগুৰু। তেওঁ সদগুৰু অনুৰাগী সকলৰ ওচৰত সদায় আছে, তেওঁলোকৰ মৰ্গদৰ্শন কৰায়।

যেতিয়া ভাবুক হৈ কোনো ব্যক্তি‘পূজ্য মহাৰাজৰ’ ওচৰত থাকিবৰ আগ্ৰহ কৰে তেতিয়া তেওঁ কৈছিল-“যোৱা শাৰীৰিক ভাৱে যতে থাকা, মনেৰে মোৰ ওচৰলৈ আহি থাকা। প্ৰতি গধূলী ৰাম,শিৱ,ওঁ কোনো দুই চাৰি আখৰৰ নামৰ জপ কৰি থাকা আৰু মোৰ স্বৰূপৰ হৃদয়ত ধ্যান কৰা। এক মিনিটো যদি স্বৰূপ ধৰি চোৱা, যাৰ নাম ভজন কৰিছা তেওঁক মই তোমাক দি দিম। ইয়াতকৈ বেছি যদি ধৰিব পাৰা তেতিয়া হলে তোমাৰ হৃদয়ৰ সাৰথি হৈ সদায় তোমাৰ লগতে থাকিম।”যেতিয়া সুৰত ধৰা খাই যাব, তেতিয়া তাৰ পাছৰ পৰা মহাপুৰুষ আপোনাৰ ইমান ওচৰতে থাকিব যি দৰে আপোনাৰ হাত ভৰি, নাক- কান আপোনাৰে ওচৰতে আছে। আপোনাৰ ওচৰতে সদায় তেওঁ আছে, লাগিলে আপুনি যিমান দূৰত নাথাকক কিয়। মনৰ ভাৱ উদয় হোৱাৰ আগতেই আপোনাৰ মৰ্গ দৰ্শন কৰাবলৈ ধৰিব। অনুৰাগীৰ হৃদয়ত সেই জন মহাপুৰুষ সদায়েই আত্মাৰ পৰা অভিন্ন হৈ জাগ্ৰত হৈ থাকে। অৰ্জুন অনুৰাগৰ প্ৰতীক।

গীতাৰ এঘাৰ আধ্যাত শ্ৰীকৃষ্ণৰ ঐশ্বৰ্য্য দেখাৰ পৰাঅৰ্জুনে নিজৰ ক্ষুদ্ৰ ঙ্ৰটিবোৰৰ কাৰণে ক্ষমা ভীক্ষা কৰিব ধৰিলে। শ্ৰীকৃষ্ণই ক্ষমা কৰিলে, আৰু প্ৰাৰ্থনাৰ অনুৰূপ সৌম্য স্বৰূপ ধাৰণ কৰি কবলৈ ধৰিলে-“ অৰ্জুন! মোৰ এই স্বৰূপক প্ৰথমে কোনেও দেখাও নাছিল আৰু ভবিষ্যতেও কোনেও নেদেখিব।” তেতিয়া হলে গীতা আমালোকৰ কাৰণে নহয়েই, কিয়নো ই ইয়াৰ দৰ্শনৰ যোগ্যতাঅৰ্জুনলৈকেহে সীমিত আছিল। আকৌ সেই সময়তে সঞ্জয়েও দেখি আছিল। প্ৰথমে তেওঁ কৈছিল“ বহুত যোগী জনে জ্ঞানৰূপী তপত পবিত্ৰ হৈ মোৰ সাক্ষাৎ স্বৰূপৰ দৰ্শণ প্ৰাপ্ত কৰিছে। তেতিয়া হলে

মহাপুৰুষজনে কি কববিচাৰিছিল? মূলতঃ অনুৰাগেই হ'ল 'অৰ্জুন' যি আপোনাৰ হৃদয়ৰ ভাৱ বিশেষ। অনুৰাগ বিহীন পুৰুষে আগতেও দেখা নাপালে আৰু ভবিষ্যতেও দেখা নাপাব।

“মিলহি ন বধুপতি বিনু অনুৰাগা
কিয়ে জোগ তপ জ্ঞান বিৰাগা”

সেয়ে অৰ্জুন এটা প্ৰতীক হে। যদি প্ৰতীকত্ব নাই তেতিয়া হলে আপুনি গীতাৰ পাছত পৰা কোনো কাৰণ নাই। গীতা আপোনাৰ কাৰণে নহয়, তেতিয়া তো সেই দৰ্শণৰ যোগ্যতা অৰ্জুন লৈকেহে সীমিত আছিল।

আধ্যায়ৰ শেষত যোগেশ্বৰে এইটো নিৰ্ণয় দিয়ে- “অৰ্জুন! অনন্য ভক্তি আৰু শ্ৰদ্ধাৰ দ্বাৰা মই এই ধৰণে প্ৰত্যক্ষ দেখিবৰ কাৰণে (যেনে ভাৱে তুমি দেখিলা) তত্বৰে স্পষ্ট জানিবৰ কাৰণে আৰু প্ৰবেশ কৰিবৰ কাৰণে “মই সুলভ হওঁ।” অনন্য

ভক্তি অনুৰূপৰেই অন্য ৰূপ আৰু এইটোৱেই অৰ্জুনৰো স্বৰূপ। অৰ্জুন পথিকৰ প্ৰতীক। এইদৰে গীতাৰ পাত্ৰবোৰ প্ৰতীকাত্মক। যথাস্থানত তাৰ সংকেত দিয়া হৈছে।

থাকিব পাৰে কোনো ঐতিহাসিক শ্ৰীকৃষ্ণ আৰু অৰ্জুন, নিশ্চয় হৈছিল কোনোৱা বিশ্বযুদ্ধ, কিন্তু গীতাত ভৌতিক যুদ্ধৰ চিত্ৰণ কতো নাই। সেই ঐতিহাসিক যুদ্ধৰ প্ৰাক্ মুহূৰ্ত্ত বিচলিত যদি কোনোৱা হৈছিল তেওঁ আছিল অৰ্জুন, সৈন্য নহয়। সৈন্য সকলতো যুদ্ধৰ বাবে সাজু আছিল।

গীতাৰ উপদেশ দি শ্ৰীকৃষ্ণেই কি সব্যসাচী অৰ্জুনৰ সৈনিকৰ যোগ্যতা বঢ়াইছিল নেকি? মূলতঃ সাধনা লিখি শেষ কৰিব নোৱাৰি। সকলো খিনি পঢ়াৰ পাছতো তাত চলাটোহে আচল কথা। এই প্ৰেৰণা হ'ল “যথার্থ গীতা”।

শ্ৰীগুৰু পূৰ্ণিমা

২৪ জুলাই ১৯৮৩ ইং

সদগুৰু কৃপাশ্ৰয়ী, জগবন্ধু

স্বামী অড়গড়ানন্দ

“ওঁ”

শ্ৰী পৰমাত্মনে নমঃ
যথার্থ গীতা
(শ্ৰী মদ্ভগবদ্ গীতা)

অথ প্ৰথমোহধ্যায়ঃ

ধৃতৰাষ্ট্ৰ ওবাচ

ধৰ্মক্ষেত্ৰে কুৰুক্ষেত্ৰে সমবেতা যুযুৎসবঃ ।

মামকাঃ পাণ্ডবশ্চৈব কিমকুৰ্বত সঞ্জয় ॥১॥

ধৃতৰাষ্ট্ৰই প্ৰশ্ন কৰিলে- “হে সঞ্জয়! ধৰ্মক্ষেত্ৰ, কুৰুক্ষেত্ৰত একত্ৰ হৈ যুদ্ধৰ ইচ্ছা কৰা মোৰ আৰু পাণ্ডুৰ পুত্ৰ সকলে কি কৰিলে?”

অজ্ঞানৰূপী ‘ধৃতৰাষ্ট্ৰ’ আৰু সংযমৰূপী ‘সঞ্জয়’। অজ্ঞানতা মনৰ অন্তৰালত থাকে। অজ্ঞানেৰে আবৃত্ত মন ধৃতৰাষ্ট্ৰ জন্মান্ত আছিল কিন্তু সংযমৰূপী সঞ্জয়ৰ মাধ্যমেৰে তেওঁ দেখা পায়, শুনে। তেওঁ বুজি পায় যে পৰমাত্মাই সত্য, তথাপিও যেতিয়ালৈকে মোহৰূপী দুৰ্যোধন জীয়াই থাকিব, তেওঁৰ দৃষ্টি সদায়েই কৌৰৱৰ ওপৰত থাকে, বিকাৰৰ ওপৰতে থাকে।

শৰীৰ এটা ক্ষেত্ৰ। যেতিয়া হৃদয়দেশত দৈৱি সম্পদৰ বাহুল্যতা থাকে তেতিয়া এই শৰীৰ ধৰ্মক্ষেত্ৰ হৈ পৰে আৰু যেতিয়া ইয়াত আসুৰি সম্পদৰ বাহুল্যতা থাকে তেতিয়া এই শৰীৰ কুৰুক্ষেত্ৰ হৈ পৰে। ‘কুৰু’ অথাৎ কৰা- এই শব্দ আদেশাত্মক। শ্ৰীকৃষ্ণই কয়,- প্ৰকৃতিৰ দ্বাৰা উৎপন্ন তিনি গুণৰ দ্বাৰা বশিভূত হৈ মানুহে কৰ্ম কৰে, তেওঁ ক্ষণিকো কৰ্ম নকৰাকৈ থাকিব নোৱাৰে। গুণে তাক কৰায় লয়। শূই থাকিলেও কৰ্ম বন্ধ নহয়, সিও সুস্থ শৰীৰৰ আৱশ্যকীয় খোৰাক মাত্ৰ। তিনিও গুণে মনুষ্যক দেৱতাৰ পৰা আৰম্ভ কৰি

কীৰ্ত পৰ্য্যন্ত শৰীৰতে বান্ধি থয়। যেতিয়ালৈকে প্ৰকৃতি আৰু প্ৰকৃতিৰ পৰা উৎপন্ন গুণ জীৱিত থাকে, তেতিয়ালৈকে 'কুৰু' লাগিয়ে থাকে। সেয়েহে জন্ম-মৃত্যুৰ ক্ষেত্ৰ, বিকাৰৰ ক্ষেত্ৰ কুৰুক্ষেত্ৰ আৰু পৰমধৰ্ম পৰমাত্মাত প্ৰৱেশ কৰাব পৰা পুণ্যময়ী প্ৰবৃত্তি বোৰ (পাণ্ডৱৰ) ৰ ক্ষেত্ৰই ধৰ্মক্ষেত্ৰ।

পুৰাতত্ত্ববিদ সকলে পাঞ্জাৱত, কাশী-প্ৰয়াগত তথা বহুতো স্থানত কুৰুক্ষেত্ৰৰ অনুসন্ধান কৰিছে ; কিন্তু গীতাকাৰে নিজে কৈছে যে যি ক্ষেত্ৰত এই যুদ্ধ হৈছিল, সেইটো ক'ত আছে-? **‘ই দং শৰীৰং কৌণ্ডেয় ক্ষেত্ৰমিত্যভিধীয়তে।’** “অৰ্জুন! এই শৰীৰেই সেই ক্ষেত্ৰ, আৰু যি জনে ইয়াক চিনি পায় তেওঁ সিকুল পায়, তেঁৱেই ক্ষেত্ৰজ্ঞ!” আগলৈ গৈ তেওঁ এই ক্ষেত্ৰৰ বিস্তাৰ কৰিলে, যত দহ ইন্দ্ৰিয়, মন, বুদ্ধি, অহংকাৰ পঞ্চ বিকাৰ আৰু তিনিও গুণৰ বৰ্ণনা কৰা আছে। শৰীৰেই ক্ষেত্ৰ, ই এটা আখাড়া। ইয়াত যুদ্ধ কৰা প্ৰবৃত্তি দুটা আছে 'দৈৱি সম্পদ' আৰু 'আসুৰি সম্পদ'- 'পাণ্ডৱৰ সন্তান' আৰু 'ধৃতৰাষ্ট্ৰৰ সন্তান', সজাতীয় আৰু 'বিজাতীয় প্ৰবৃত্তি।’

অনুভৱী মহাপুৰুষৰ সান্নিধ্যলৈ গলে এই দুই প্ৰবৃত্তিৰ সংঘৰ্ষৰ সুত্ৰপাত হয়। এই ক্ষেত্ৰ ক্ষেত্ৰজ্ঞৰ সংঘৰ্ষ হয় আৰু এয়াই বাস্তৱিক যুদ্ধ। বিশ্বযুদ্ধৰে ইতিহাস ভৰি পৰিছে, কিন্তু তাত বিজয় প্ৰাপ্ত কৰা সকলেও শাস্ত বিজয় লাভ নকৰে। এইটো নিজৰ ভিতৰৰ প্ৰতিশোধ। প্ৰকৃতিক সকলো ফালৰ পৰা শমন কৰি প্ৰকৃতিৰ উৰ্দ্ধ সত্তাৰ দিক্‌দৰ্শন কৰা আৰু তাত প্ৰবেশ কৰাই হ'ল বাস্তৱিক বিজয়। এইটোৱেই এনেকুৱা বিজয় যাৰ কোনো পৰাজয় নাই। এয়েই মুক্তি, যাৰ পিছত জন্ম-মৃত্যুৰ বন্ধন নাথাকে।

এই প্ৰকাৰৰ অজ্ঞানেৰে আচ্ছাদিত প্ৰত্যেক মনে সংযমৰ দ্বাৰা জানিব পাৰিব যে ক্ষেত্ৰ ক্ষেত্ৰজ্ঞৰ যুদ্ধত পৰিণাম কি হয়? এতিয়া যাৰ যেনে উৎখান সংযম মন, তাৰ তেনেদৰে দৃষ্টি পাই থাকিব।

সঞ্জয় উৱাচ

দৃষ্ট্ব তু পাশুৰানিকং ব্যুঢ়ং দুৰ্যোধনস্তদা।

আচাৰ্যমুপসঙ্গম্য ৰাজা ৰচনমব্ৰবীৎ ॥২॥

সেই সময়ত ৰজা দুৰ্যোধনে ব্যুহ ৰচনায়ুক্ত পাণ্ডৱৰ সৈন্যক দেখি
দ্রোণাচাৰ্য্যৰ ওচৰলৈ গৈ এই বচন কবধৰিলে।

দ্বৈতৰ আচৰণেই 'দ্রোণাচাৰ্য্য'। যেতিয়া গম পাইযাব যে আমি পৰমাত্মাৰ
পৰা বেলেগ হৈ গৈছোঁ (এইটোৱেই দ্বৈতৰ ভক্তি) তেতিয়া তেওঁক প্ৰাপ্তী কৰিবৰ
কাৰণে তাজনা জাগৃত হব, তেতিয়া আমি গুৰুৰ সন্ধানত ওলাও। দুটা প্ৰবৃত্তিৰ মাজত
এয়েই প্ৰাথমিক গুৰু; তথাপি পিছত সদগুৰু যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণ হ'ব, যি যোগৰ স্থিতি
দিব পৰা হ'ব।

ৰজা দুৰ্যোধন আচাৰ্য্যৰ ওচৰলৈ যায়। মোহৰূপী দুৰ্যোধন! মোহ
সম্পূৰ্ণ ব্যাধিৰ মূল, ৰজা। দুৰ্যোধন দুৰ্ অৰ্থাৎ দুৰ্বিত এই ধন। আত্মিক সম্পত্তি
হে স্থিৰ সম্পত্তি। তাত যি দোষ উৎপন্ন কৰে সেইটোৱেই মোহ। ই প্ৰকৃতিৰ
ফালে টানি থাকে আৰু বাস্তৱিক জানিবৰ বাবে প্ৰেৰণা দিয়ে। মোহ আছে,
সেই কাৰণে সোধা প্ৰশ্নত আছে, নহলে সকলো পূৰ্ণই হৈ থাকে।

সেইয়ে ব্যুহ ৰচনা যুক্ত পাণ্ডৱৰ সৈন্যক দেখি অৰ্থাৎ পূণ্যৰে প্ৰবাহিত
সজাতীয় বৃত্তি সংগঠনক দেখি মোহৰূপী দুৰ্যোধনে প্ৰথমে গুৰু দ্রোণৰ
ওচৰলৈ গৈ এইটো কলে -

পশ্চৈতাং পাণ্ডুপুত্ৰাণামাচাৰ্য মহতীং চমুম্।

ব্লুতাং দ্ৰুপদপুত্ৰেণ তৰ শিষ্যেণ ধীমতা ॥৩॥

হে আচাৰ্য্য! নিজৰ বুদ্ধিমান শিষ্য দ্ৰুপদ-পুত্ৰ ধ্ৰুপ্তদ্যুম্ন দ্বাৰা ব্যুহাকাৰে
ঠিয় হৈ থকা পাণ্ডুপুত্ৰৰ এই বিশাল সৈন্যক চাওকচোন।

শাস্ত্ৰত অচল পদত আস্থা ৰখা দৃঢ় মনেই 'ধ্ৰুপ্তদ্যুম্ন'। এয়াই পূন্যময়ী
প্ৰবৃত্তিৰ নায়ক। সাধন কঠিন নহয়, মনৰ দৃঢ়তা কঠিন হ'ব লাগিব। এতিয়া
চাওক সৈন্য বিস্তাৰ --

অত্র শূৰা মহেষ্বাসা ভীমার্জুনসমা যুধি।

যুযুধানো বিৰাটশ্চ দ্ৰুপদশ্চ মহাৰথঃ ॥৪॥

এই সৈন্য বাহীনিত মহেষ্বাসা মহান ঈশ্বৰ নিবাস দিব পৰা ভাৱৰূপী 'ভীম'
অনুৰাগ ৰূপী 'অৰ্জুন' ৰ সমান বহুতো বীৰ; যেনে- সাত্বিকতাৰূপী 'সাত্যকি'

বিৰাট সৰ্বত্ৰ ঈশ্বৰীয় প্ৰবাহৰ ধাৰণা দিব পৰা, মহাৰথী ৰাজা দ্ৰুপদ অৰ্থাত্
অচল স্থিতি থকা, তথা –

ধৃষ্টকেতু শ্চেকিতানঃ কাশিৰাজশ্চ বীৰ্যৰান্ ।

পুৰজিৎকুন্তিভোজশ্চ শৈব্যশ্চ নৰপুঙ্গৱঃ ॥৫॥

‘ধৃষ্টকেতু’ দৃঢ়কৰ্তব্য ‘চেকিতান’ যতেই যাওক তাৰ পৰা চিত্তক টানি
ইষ্টৰ প্ৰতি স্থিৰ কৰোৱা, ‘কাশিৰাজ’ দেহৰূপী কাশীৰ যাৰ সাম্ৰাজ্য, ‘পুৰজিত’
স্কুল, সুক্ষ্ম আৰু কাৰণ শৰীৰৰ ওপৰত বিজয় দিব পৰা পুৰজিত, ‘কুন্তিভোজঃ’
কৰ্তব্যৰে ভৱত বিজয়, নৰৰ ভিতৰত শ্ৰেষ্ঠ ‘শৈব্য’ অৰ্থাত্ সত্য ব্যৱহাৰ –

যুধামন্যুশ্চ বিক্ৰান্ত উত্তমৌজাশ্চ বীৰ্যৰাণ ।

সৌভদ্ৰো দ্ৰৌপদেয়াশ্চ সৰ্ব এব মহাৰথাঃ ॥৬॥

আৰু পৰাক্ৰমী ‘যুধামন্যু’ - যুদ্ধৰ অনুৰূপ মনৰ ধাৰণা, ‘উত্তমৌজাঃ’
শুভৰ ভাৱ, সুভদ্ৰাপুত্ৰ অভিমন্যু - যেতিয়া শুভৰ আধাৰ পোৱা যায় তেতিয়া
মন ভয় ৰহিত হয়, এনেকুৱা শুভ আধাৰত উৎপন্ন অভয় মন, ধ্যানৰূপী
দ্ৰৌপদীৰ পঞ্চ পুত্ৰ - বাত্‌সল্য, লাৱণ্য, সহৃদয়তা, সৌম্যতা, স্থিৰতা সকলোৱে
এজন মহাৰথী। সাধন পথত সম্পূৰ্ণ যোগ্যতাৰে চলিব পৰা ক্ষমতা।

এই প্ৰকাৰে দুৰ্যোধনে পাণ্ডৱ পক্ষৰ বিশ জনৰ নাম কলে, যি বোৰ
দৈব সম্পদৰ মহত্বপূৰ্ণ অংগ। বিজাতীয় প্ৰবৃত্তিৰ ৰজা হোৱা সত্বেও ‘মোহে’
সজাতীয় প্ৰবৃত্তিবোৰক বুজিবলৈ বাধ্য কৰায়।

অস্মাকং তু বিশিষ্টা য়ে তান্নিবোধ দ্বিজোত্তম ।

নায়কা মম সৈন্যস্য সঞ্জ্ঞার্থং তান্‌ব্ৰবীমি তে ॥৭॥

দ্বিজোত্তম্ ! আমাৰ পক্ষত যি বোৰ প্ৰধান আছে, তেওঁলোককো
জানি লওক। আপুনি জ্ঞাত হবৰ বাবে মোৰ সৈন্যৰ যিবোৰ নায়ক আছে
সেইবোৰ হৈছে যেনে বাহ্য যুদ্ধৰ বাবে সেনাপতিক দ্বিজোত্তম সম্বোধনটো
অসাময়িক। মূলতঃ গীতাত অন্তঃকৰণৰ দুটা প্ৰবৃত্তিৰ সংঘৰ্ষৰ কথা আছে।
যত দ্বৈতৰ আচৰণত আছে ‘দ্ৰোণ’। যেতিয়ালৈকে আমি ক্ষন্তেকৰ বাবেওনিজৰ
আৰাধ্যৰ পৰা আতঁৰি থাকো তেতিয়ালৈকে প্ৰকৃতি বিদ্যমান হৈ থাকে, দ্বৈত

হৈ থাকে। এই 'দ্বি' ৰ ওপৰত বিজয় প্ৰাপ্তৰ প্ৰেৰণা প্ৰথম গুৰু দ্ৰোণাচাৰ্য্যৰ পৰাই পায়। আধৰুৱা শিক্ষাই পূৰ্ণ ভাৱে জানিবৰ বাবে প্ৰেৰণা দিয়ে সেইটো পূজাপ্ৰলী নাছিল, তাত শৌৰ্যসূচক সম্বোধনেই হ'ব লাগিছিল।

বিজাতীয় প্ৰবৃত্তিৰ নায়ক কোন কোন আছিল ?

ভবান্ভীত্মশ্চ কৰ্ণশ্চ কৃপশ্চ সমিতিঞ্জয়ঃ।

অশ্বখামা বিকৰ্ণশ্চ সৌমদত্তিস্তুথৈব চ।। ৮।।

এজনটো স্বয়ং আপুনি, (দ্বৈতৰ আচৰণৰূপী দ্ৰোণাচাৰ্য্য) ভ্ৰমৰূপী পিতামহ 'ভীষ্ম'। ভ্ৰম এই বিকাৰবোৰৰ উদ্‌গম স্থল, শেষলৈকে জীয়াই থাকে, সেই কাৰণে পিতামহ। সম্পূৰ্ণ সৈন্য মৰি শেষ হ'ল, এওঁ জীয়াই শৰশয্যাতে অচেতন আছিল, তথাপিও জীয়াই আছিল। এয়াই হ'ল ভ্ৰমৰূপী 'ভীষ্ম'। ভ্ৰম শেষলৈকে থাকে। এই ধৰণে বিজাতীয় কৰ্মৰূপী 'কৰ্ণ' তথা সংগ্ৰামবিজয়ী 'কৃপাচাৰ্য্য'। সাধনা অৱস্থাত সাধকৰ দ্বাৰা কৃপাৰ আচৰণেই 'কৃপাচাৰ্য্য'। ভগৱান কৃপাময় আৰু প্ৰাপ্তিৰ পিছত সন্তৰো সেই স্বৰূপেই হয়, কিন্তু সাধনা কালত যেতিয়ালৈকে আমি বেলেগে থাকো, পৰমাত্মা বেলেগে ৰাখো, বিজাতীয় প্ৰবৃত্তি জীয়াই থাকিব। মোহে আক্ৰমণ কৰি থাকিব, এনে পৰিস্থিতিত সাধকে যদি কৃপাৰ আচৰণ কৰে তেতিয়া তেওঁ নষ্ট হৈ যায়। সীতাই দয়া কৰিছিল, সেই বাবে কিছুকাল লংকাত থাকি প্ৰায়শ্চিত্ত কৰিব লগীয়া হ'ল। বিশ্বামিত্ৰই দয়াশীল প্ৰদৰ্শন কৰাৰ বাবে পতিত হ'ব লগা হ'ল। যোগ সুত্ৰকাৰ মহৰ্ষি পতংজলীয়েও এইটো কৈছিল — তে সমাধাবুপসৰ্গা বুখান সিদ্ধয়ঃ (৩/৩৭) ঔত্থান কালত সিদ্ধি প্ৰকট হয়, সেইবোৰ বাস্তৱ সিদ্ধি, কিন্তু কৈৱল্য প্ৰাপ্তিৰ কাৰণে সিমানেই ডাঙৰ বাধা, যিমান কাম, ত্ৰোধ, লোভ, মোহ ইত্যাদি হয়। গোপস্বামী তুলসী দাসেও এইটো নিৰ্ণয় দিছে।

ছোৰত গ্ৰন্থি জানি খগৰায়া।

বিঘ্ন অনেক কৰই তব মায়া।।

বিদ্ধি সিদ্ধি প্ৰেৰই বহু ভাই।

বুদ্ধিহিঁ লোভ দিখাবহিঁ আই।। (ৰাগঃ মাঃ ৭/১২৭/৬-৭)

মায়াই বহু বিঘ্ন কৰে। ঋদ্ধি প্ৰদান কৰে, আনকি সিদ্ধ কৰি পেলায়।

এনে অৱস্থাত সাধক মৰিব ধৰা ৰোগীৰ ওচৰত গলেই ৰোগী জী উঠে। সেইটো যিয়েই নহওক কিন্তু সাধকে যদি নিজৰ পৰাক্ৰম বুলি মানিলয় তেতিয়া তেওঁ নষ্ট হৈ যাব। এজন ৰোগীৰ ঠাইত হাজাৰ ৰোগীয়ে ঘেৰি ধৰিব, ভজন-চিন্তনৰ ধাৰা বদ্ধ হৈ যাব, আৰু এনেদৰে প্ৰকৃতিৰ বশবৰ্তী হৈ পৰিব। যদি লক্ষ্য দূৰত আছে আৰু সাধকে যদি কৃপা কৰে, তেতিয়া কৃপাৰ নিজস্ব আচৰণেই ‘সমিতিঞ্জয়’ সকলো সৈন্যকে জিকিব পাৰিব। সেই কাৰণে সাধকক শেষ পৰ্য্যন্ত ইয়াৰ পৰা সতৰ্ক হৈ থাকিব লাগিব। **দয়া বিনু সন্ত কচাই দয়া কৰি,তো আফত আই।**

অৰ্থাৎ দয়া নকৰিলে সাধু ব্যক্তি কচাইৰ তুল্য আৰু দয়া প্ৰদৰ্শন কৰিলেও অধঃপতনৰ সম্ভাৱনা। কিন্তু আধৰুৱা অৱস্থাত ই বিজাতীয় প্ৰবৃত্তিৰ দুৰ্ঘৰ্ষ যোদ্ধা। এই ধৰণে আশক্তিকৰণী অশ্বখামা, বিকল্পকৰণী বিকৰ্ণ আৰু ভ্ৰমময়ী শ্বাস ভূৰিশ্ৰৱা। এই সকলোবোৰ বহিমুখী প্ৰৱাহৰ নায়ক।

অন্যোচ বহবঃ শূৰা মদৰ্থে ত্যক্তজীৱিতাঃ।

নানাশস্ত্ৰপ্ৰহৰণাঃ সৰ্বে যুদ্ধৰিশাৰদাঃ।।৯।।

আৰু ও বহুতো মহানবীৰ সকলে অস্ত্ৰ-শস্ত্ৰে যুক্ত হৈ মোৰ বাবে জীৱনৰ আশা ত্যাগ কৰি যুদ্ধৰ বাবে প্ৰস্তুত আছে। সকলো মোৰ বাবে প্ৰাণ দিবলৈ সাজু আছে, কিন্তু সিহঁতৰ কোনো সীমাৰ সংখ্যা নাই। এতিয়া কোন সেনাই কি ভাৱৰ দ্বাৰা সুৰক্ষিত হৈ আছে? ইয়াৰ বিষয়ে কৈছে -

অপৰ্যাপ্তং তদস্মাকং বলং ভীষ্মাভিৰক্ষিতম্।

পৰ্যাপ্তং ত্ৰিদমেতেষাং বলং ভীষ্মাভিৰক্ষিতম্।।১০।।

ভীষ্মৰ দ্বাৰা ৰক্ষিত আমাৰ সৈন্য সকলো ফালৰ পৰা অজেয় হৈ আছে আৰু ভীষ্মৰ দ্বাৰা ৰক্ষিত তেওঁলোকৰ সৈন্যক জিকিবৰ সহজ হৈ আছে। পৰ্যাপ্ত আৰু অপৰ্যাপ্ত এনে শ্লিষ্ট শব্দৰ প্ৰয়োগে দুৰ্যোধনৰ আশংকাকে ব্যক্ত কৰিছে। সেয়ে চাব লাগিব ভীষ্ম কি সত্তা হয় যাৰ ওপৰত কৌৰৱে নিৰ্ভৰ কৰি আছে, আৰু ভীষ্ম কি সত্তা হয় (দৈৱি সম্পদ) সম্পূৰ্ণ পাণ্ডৱে নিৰ্ভৰ হৈ আছে। দুৰ্যোধনে নিজৰ ব্যৱস্থাৰ বিষয়ে কয় -

অয়নেষু চ সৰ্বেষু যথাভাগমবস্থিতাঃ ।
ভীষ্মমেৰাভিবক্ষন্ত ভৱন্তঃ সৰ্ব এব হি ॥১১১॥

সেইকাৰণে সকলো ফালৰ পৰা নিজৰ স্থানত থাকি আপোনালোক সকলোৱে ভীষ্মকেই বক্ষা কৰি থাকিব। যদি ভীষ্ম জীয়াই থাকে তেতিয়া আমি অজেয় হৈ থাকিম। সেইকাৰণে আপোনালোকে পাণ্ডৱৰ লগত যুদ্ধ নকৰি মাত্ৰ ভীষ্মকেই বক্ষা কৰি থাকিব। কেনে যোদ্ধা এই ভীষ্ম, যি স্বয়ং নিজকে বক্ষা কৰিব নোৱাৰিছে, কৌৰৱে তেওঁৰ বক্ষাৰ ব্যৱস্থা কৰিব লগীয়া হৈছে? এই জন কোনো বেপেৰুৱা যোদ্ধা নহয়, ভ্ৰমেই ভীষ্ম। যেতিয়ালৈকে ভ্ৰম জীয়াই থাকিব তেতিয়ালৈকে বিজাতীয় প্ৰবৃত্তি (কৌৰৱ) অজেয় হৈ থাকিব। অজেয়ৰ অৰ্থ এইটো নহয় যে যাক জিকিব নোৱাৰি, আনকি অজেয়ৰ অৰ্থ দুৰ্জয় হয়, যাক বহুত কঠোৰ ভাৱে জিকিব পাৰি - ‘মহা অজয় সংসাৰ ৰিপু, জীতি সকই সো বীৰ’ (ৰামচৰিতমানস ৬/৮০)

যদি ভ্ৰম সমাপ্ত হৈ যায় তেতিয়া অবিদ্যা অস্তিত্বহীন হৈ পৰিব, মোহ ইত্যাদি আংশিক ৰূপত যি বিলাক থাকে, সোনকালেই সমাপ্ত হৈ যাব। ভীষ্মৰ ইচ্ছা মৃত্যু আছিল। ইচ্ছাই ভ্ৰম। ইচ্ছাৰ অন্ত হোৱা মানে ভ্ৰমৰো অন্ত হোৱা, একেই কথা। ইয়াকে সন্ত কবীৰে বৰ সৰল ভাষাত কৈছে—

ইচ্ছা কায়া, ইচ্ছা মায়া, ইচ্ছা জগ উপজায়া।

কহু কবীৰ জে ইচ্ছা বিবৰ্জিত, তাকা পাৰ ন পায়।।

যত ভ্ৰম নাই, সেই অপাৰ আৰু অব্যক্ত। এই শৰীৰৰ জন্মৰ কাৰণে ইচ্ছা। ইচ্ছাই মায়া আৰু ইচ্ছাই জগত উৎপত্তিৰ কাৰণে। ‘সৌহকাময়ত তদৈক্ষত বহুস্যাং প্ৰজায়েয় ইতি (ছান্দোগ্য ৬/২/৩) কবীৰে কয়, যি সকলো সময়ত ইচ্ছাৰ পৰা বাহিৰত থাকে তেওঁৰ পাৰ নাপায়, তেওঁ অপাৰ অনন্ত, অসীম তত্বত প্ৰবেশ প্ৰাপ্ত কৰে। যৌহকামো নিষ্কাম আপ্তকাম, আত্মকামো ন তস্য প্ৰাণা উত্ক্ৰামন্তি ব্ৰহ্মৈব সনু ব্ৰহ্মা পৈয়াতি (বৃহদাৰণ্যেকোপনিষদ ৪/৪/৬) যি কামনাৰহিত হৈ থাকে তেওঁ আত্মস্থিত আত্ম স্বৰূপ। তেওঁৰ কেতিয়াও পতন নহয়। তেওঁ ব্ৰহ্মাৰ লগত এক হৈ থাকে। আৰম্ভণীত ইচ্ছাও পূৰণ হয়,

তেতিয়া ইচ্ছা শেষ হয়। যদি তাতকৈও ডাঙৰ কিবা বস্তু থাকিলেহেঁতেন তেতিয়া তাৰো ইচ্ছা আপুনি নিশ্চয় কৰিলেহেঁতেন। যেতিয়া তাতকৈ আৰু কোনো বস্তুৰেই নাই তেতিয়া কিহৰ ইচ্ছা হব। যেতিয়া প্ৰাপ্ত হবৰ যোগ্য কোনো বস্তু অপ্রাপ্য হৈ নাথাকে তেতিয়া ইচ্ছা সমূলে নষ্ট হৈ যায়। আৰু ইচ্ছাৰ শেষৰ পিছতেই ভ্ৰম একেবাৰে নাইকিয়া হৈ যায়। এয়েই ভীষ্মৰ ইচ্ছামৃত্যু এই ধৰণে ভীষ্মৰ দ্বাৰা ৰক্ষিত আমাৰ সৈন্য সকলো ফালৰ পৰা অজেয় হৈ আছে। যেতিয়া লৈকে ভ্ৰম থাকিব তেতিয়ালৈকে অবিদ্যাৰ অস্তিত্বও থাকিব। ভ্ৰম শান্ত হ'ল, অবিদ্যাৰো সমাপ্ত হ'ল।

ভীমৰ দ্বাৰা- ৰক্ষিত তেওঁলোকৰ সৈন্য জিকিবলৈ সহজ আছে। ভাৰুপী ভীম। ভাৰত সেইটো ক্ষমতা আছে অজানা পৰমাত্মাও বিদিত হৈ যায়। শ্ৰীকৃষ্ণই ইয়াক শ্ৰদ্ধা বুলি সম্বোধন কৰিছে। ভাৰত সেইটো ক্ষমতাও যে ভগৱানকো বশ কৰিব পাৰে। ভাৰৰ দ্বাৰাই সকলো পুণ্যময়ী প্ৰবৃত্তিৰ বিকাশ হয়। ই পুণ্যৰ সংৰক্ষক। ই ইমানেই শক্তিশালী যে পৰম দেৱ পৰমাত্মাক সন্তৰ কৰি পেলায়, কিন্তু লগতে ইমানেই কোমল যে- আজি ভাৰ আছে, হয়তো কালিলৈ ভাৰ বিহীনত পৰিণত হবলৈ সময় নালাগিব। আজি আপুনি কব- মহাৰাজ বহুত ভাল, কালিলৈ হয়তো কব, নহয় মহাৰাজে পায়স খায়--

ঘাস-পাত যেখাত হাঁয়, তিনহুঁহি সতাবে কাম।

দুধ মলাই খাত যে, তিনকী জানে ৰাম।।

ইষ্টত অকনোমা ত্ৰুটি হোৱা গম পালেই ভাৰ বিচলিত হৈ পৰে, পুণ্যময়ী প্ৰবৃত্তি বিচলিত হৈ উঠে, ইষ্টৰ লগত সম্বন্ধ ভাঙি পৰে, সেই কাৰণে ভীমৰ দ্বাৰা ৰক্ষিত সিহঁতৰ সৈন্য বিলাকক পৰাজয় কৰাত সহজ হয়। মহৰ্ষি পতঞ্জলিয়েও এইটো নিৰ্ণয় দিছে--

তস্য সঞ্জয়ন্ হৰ্ষং কুৰুবৃদ্ধঃ পিতামহঃ।

সিংহনাদং বিনদ্যোচ্চৈঃ শঙ্খং দধেমী প্ৰতাপবান্।।১২।।

এই দৰে নিজৰ সামৰ্থ্যৰ নিৰ্ণয় লৈ শংখ ধ্বনী হ'ল। শংখধ্বনী হ'ল পাত্ৰৰ পৰাক্ৰমৰ ঘোষণা, জিকিলে কোন পাত্ৰই আপোনাক কি দিব? কৌৰৱৰ

ভিতৰত বৃদ্ধ প্ৰতাপশালী পিতামহ ভীষ্মই দুৰ্যোধনৰ হৃদয়ত হৰ্ষ উৎপন্ন কৰিবৰ কাৰণে উচ্চ সুৰত সিংহনাদৰ সমান ভয়ংকৰ শংখ বজালে। সিংহ প্ৰকৃতিৰ ভয়াবহতাৰ প্ৰতীক। ঘনঅৰণ্যৰ জয়াল একান্তত সিংহৰ গৰ্জন যদি কানত পৰে তেতিয়া গাৰ নোম ঠিয় হৈ যায়, বুকু কঁপিবলৈ ধৰে, যদিও সিংহআপোনাৰ পৰা বহুত দূৰতে থাকে। ভয় প্ৰকৃতিত হে থাকে, পৰমাত্মাত নহয়, তেওঁতো অভয়ৰ সত্তা। ভ্ৰমৰূপী ভীষ্মই যদি বিজয় প্ৰাপ্ত কৰে তেতিয়া হলে প্ৰকৃতিৰ যি ভয়াৰণ্যত আপুনি আছে তাতকৈ ও বেছি ভয়ৰ আবৰণে আপোনাক বান্ধি ৰাখিব। ভয়ৰ এটা সীমা বাঢ়ি হে যাব, ভয়ৰ আবৰণ আৰু হে ঘনীভূত হ'ব। এই ভ্ৰমে ইয়াৰ অতিৰিক্ত একোৰেই দিব নোৱাৰিব। সেয়ে প্ৰকৃতিৰ পৰা নিবৃত্তি হোৱাটোৱে হ'ল গন্তব্যৰ ৰাস্তা। সংসাৰত প্ৰবৃত্তি হ'ল ভাৱ, ঘোৰ অন্ধকাৰৰ ছাঁ। ইয়াৰ পিছত কৌৰৱৰ কোনো ঘোষণা নহ'ল। কৌৰৱৰ ফালৰ পৰা বহুতো বাদ্যযন্ত্ৰ একেবাৰে বাজিলে, কিন্তু মুঠতে সিহঁতে ভয়ৰহে সঞ্চাৰ কৰিলে, তাতকৈ আৰু একো নহ'ল। প্ৰত্যেক বিকাৰে কিবা এটা ভয়তো দিয়েই। সেই কাৰণে তেৱো ঘোষণা কৰিলে

ততঃ শঙ্খাশ্চ ভৈৰ্ষশ্চ পণবানকগোমুখাঃ ।

সহসৈৰাভ্যহন্যন্ত স শব্দস্তমুলোহভবৎ ॥১৩॥

তদন্তৰে বহুতো শংখ, নাগাড়া, ঢোল, বিগুল আদি বাদ্য একেলগে বাজি উঠিল। তাৰ শব্দও বৰ ভয়ংকৰ আছিল। ভয়ৰ সঞ্চাৰ কৰাৰ বাদে কৌৰৱৰ কোনো অন্য ঘোষণা নাছিল। বাহুমুখী বিজাতীয় প্ৰবৃত্তি সফল হ'লে মোহময়ী বন্ধন আৰু বেছি হয়।

এতিয়া পুণ্যময়ী প্ৰবৃত্তি ফালৰ পৰা ঘোষণা হ'ল, য'ত প্ৰথম ঘোষণা যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কৰিলে—

ততঃ শ্বেতৈৰ্যৈৰ্যুক্তে মহতি স্যন্দনে স্থিতৌ ।

মাধৱঃ পাণ্ডৱশ্চৈব দিব্যৌ শঙ্খৌ প্ৰদধ্মতুঃ ॥১৪॥

তাৰ পিছত শ্বেত ঘোৰা সংযুক্ত (য'ত অলপমাত্ৰও কালিমা নাই, দোষ নাই, শ্বেত সাত্বিক, নিৰ্মলতাৰ প্ৰতীক) 'মহতি স্যন্দনে' মহান বথৰ

ওপৰত থকা যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণ আৰু অৰ্জুনেও অলৌকিক শংখ বজালে। অলৌকিকৰ অৰ্থ হ'ল, লোকৰ ওপৰত, লোকৰপৰত। মৃত্যুলোক, দেৱলোক, ব্ৰহ্মলোক, য'লৈকে জন্ম মৰণৰ ভয় আছে, সেই সমস্ত লোকৰ পাৰত পাৰলৌকিক, পাৰমাৰ্থিক স্থিতি প্ৰদান কৰিবৰ ঘোষণা যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কৰিলে। সোন-ৰূপ, কাঠৰ বথ নহয়, বথ অলৌকিক, শংখ অলৌকিক, সেয়ে ঘোষণাও অলৌকিক। লোকৰ পৰা পাৰত একমাত্ৰ ব্ৰহ্মইহে আছে, পোনে পোনে তেওঁৰ লগত সম্পৰ্ক স্থাপন কৰাৰ ঘোষণা। তেওঁ এই স্থিতি কেনেকৈ প্ৰদান কৰিব।

পাঞ্চজন্যং হৃষীকেশো দেবদত্তং ধনঞ্জয়ঃ।

পৌণ্ড্ৰং দধেমী মহাশঙ্খং ভীমকৰ্মা বৃকোদৰঃ।।১৫।।

“হৃষীকেশঃ” - যি হৃদয়ৰ সৰ্বস্ব জ্ঞাতা সেই শ্ৰীকৃষ্ণই ‘পাঞ্চজন্য’ শংখ বজালে। পঞ্চ জ্ঞানেन्द्रিয়ক পঞ্চ তন্মাত্ৰাত(শব্দ, স্পৰ্শ, ৰূপ,বস,গন্ধ) একত্ৰিত কৰি নিজৰ (ভক্ত) শ্ৰেণীত পেলাব কাৰণে ঘোষণা কৰিলে। বিভৎস ৰূপত উটি যোৱা ইन्द्रিয় সমূহক একত্ৰিত কৰি তেওঁৰ নিজৰ সেৱকৰ শাৰীত ঠিয় কৰাই দিব পৰা হৃদয়ৰ প্ৰেৰণা সদগুৰুৰেই অৱদান হয়। শ্ৰীকৃষ্ণ এজন যোগেশ্বৰ, সদগুৰু আছিল। ‘শিষ্যস্তেহহং’ ভগৱান মই আপোনাৰে শিষ্য। বাহ্যিক বিষয় বস্তুক বাদ দি ধ্যানত ইষ্টৰ অতিৰিক্ত কাকো নেদেখা, একো অন্য নুশুনা, অন্য কাকো স্পৰ্শ নকৰা ; এইবোৰ সদগুৰুৰ ভাৱ সঞ্চাৰৰ ওপৰত নিৰ্ভৰ কৰে।

‘দেৱদত্ত ধনঞ্জয়’ - দৈৱি সম্পত্তিক নিজৰ অধিন কৰিব পৰা অনুৰাগেই অৰ্জুন। ইষ্টৰ অনুৰূপত লাগিব পৰা ক্ষমতা, য'ত বিয়োগৰ বেদনা, বৈৰাগ্য অশ্ৰুপাত থাকে, “গদগদ গিৰা নয়ন বহ নীৰা” ৰোমাঞ্চ হয়, ইষ্টৰ অতিৰিক্ত অন্য বিষয় বস্তুত অকনো অসক্তি নাথাকে, তাকে অনুৰাগ বুলি কোৱা হয়। যদি ইয়াত সফল হয়, তেতিয়া পৰমদেৱ পৰমাত্মাত প্ৰৱেশ কৰিব পৰা দৈৱি সম্পত্তিৰ ওপৰত অধিপত্য প্ৰাপ্ত কৰি লব। ইয়াৰে অন্য একমাত্ৰ ‘ধনঞ্জয়’, এটা ধনবাহিৰ সম্পত্তি যত শৰীৰ নিৰ্বাহৰ ব্যৱস্থা থাকে, আত্মাৰ লগত ইয়াৰ কোনো সম্বন্ধ নাই। ইয়াৰ ওপৰত স্থিৰ আত্মিক

সম্পত্তিয়েই নিজ সম্পদ। বৃহদাৰণ্য উপনিষদত যাকবল্ক্যই মৈত্ৰেয়ীক বুজাইছিলে যে - ধনেৰে পৰিপূৰ্ণ পৃথিবীৰ স্বামীত্বতো অমৃতত্ব প্ৰাপ্ত হব নোৱাৰে। তাৰ উপায় আত্মিক সম্পত্তি হে।

ভয়ানক কৰ্মকৰা ভীমসেনে ‘পৌল্ভ’ অথাৎ প্ৰীতি নামৰ মহাশংখ বজালে। ভাৰৰ উদ্গম আৰু নিবাস স্থল হ’ল হৃদয় সেই কাৰণে তেওঁৰ নাম ‘বৃকোদৰ’। আপোনাৰ ভাৰ- অনুৰাগ কেচুৰা হৈ থাকে, কিন্তু মূলতঃ সেই অনুৰাগ আপোনাৰ হৃদয়ত থাকে, যি কেচুৱাৰ দৰে মুৰ্ত্ত হৈ থাকে। এই ভাৰ গভীৰ আৰু মহান বলবান হয়, তেওঁ প্ৰীতি নামৰ মহাশংখ বজালে। ভাৰতে সেই প্ৰীতি নিহিত হৈ থাকে, সেই কাৰণে ভীমে ‘পৌল্ভ’(প্ৰীতি) নামৰ মহাশংখ বজালে। ভাৰ মহান বলবান হৈ থাকে কিন্তু প্ৰীতি সঞ্চাৰৰ মাধ্যমেৰে।

অনন্তবিজয়ং ৰাজা কুন্তীপুত্ৰো যুধিষ্ঠিৰঃ।

নকুলঃ সহদেবশ্চ সুঘোষমণিপম্পকৌ।।১৬।।

কুন্তীপুত্ৰ ৰাজা যুধিষ্ঠিৰে ‘অনন্ত-বিজয়’ নামক শংখ বজালে। কৰ্ত্তব্যৰূপী কুন্তী আৰু ধৰ্মৰূপী যুধিষ্ঠিৰ। ধৰ্মত স্থিৰ হৈ থাকিলে ‘অনন্ত বিজয়’ অনন্ত পৰমাত্মাত স্থিতি লগাই দিব। প্ৰকৃতি- পুৰুষ, ক্ষেত্ৰ- ক্ষেত্ৰজ্ঞৰ সংঘৰ্ষত স্থিত হৈ থাকে, বহুতো দুখতো বিচলিত নহয়, তেতিয়া এদিন অনন্ত, যাৰ কোনো অন্ত নাই, সেই পৰম তত্ত্ব পৰমাত্মা তাৰ ওপৰত বিজয় প্ৰাপ্ত হয়। নিয়মৰূপী নকুলে “সুঘোষ” নামৰ শংখ বজালে। যিমানেই নিয়মবোৰ উন্নত হব, অশুভৰ অৱসান হব, শুভৰ ঘোষণা হব ধৰিব। সংস্কৰূপী সহদেৱে ‘মণিপম্পক’ শংখ বজালে। মনিষি সকলে শ্বাসক বহুমূলীয়া মণিৰ সংগ্ৰহ দিছে। ‘হীৰা জৈসি শ্বাসাবাতোমে বীতি য়ায়ে’এটা সংস্ক সেইটো যিটো আপুনি সংপুৰুষৰ বাণীৰ পৰা শুনে, কিন্তু যথার্থ সংস্ক আন্তৰিক হে। শ্ৰী কৃষ্ণৰ মতে অত্মাই সত্য, সনাতন। চিত্তই চাৰিওফালৰ পৰা টানি আনি আত্মাৰ লগত সঙ্গ কৰাই দিয়ে এয়াই বাস্তৱিক সংস্ক। এই সংস্ক চিন্তন, ধ্যান আৰু সমাধিৰ অভ্যাসত সম্পন্ন হয়। যেতিয়াই সত্যৰ সান্নিধ্যত সুৰত টিকি থাকিব

তেতিয়াই এক এক শ্বাসে নিয়ন্ত্ৰণ পায়, মনৰ সৈতে ইন্দ্ৰিয়ৰ নিৰোধ হব ধৰে। যেতিয়াই সম্পূৰ্ণ নিৰোধ হব, বস্তু প্ৰাপ্ত হৈ যাব। বাদ্যযন্ত্ৰৰ দৰে চিত্তক আত্মাৰ সুৰত সুৰ মিলাই সংগত কৰে সেয়াই সংসঙ্গ। বাহ্যিক মণি বৰ কঠিন, কিন্তু শ্বাস- মণি ফুলতকৈও কোমল। ফুলতো বিকশিত হোৱালৈ বা চিঙি গলেও সজিব থাকে, কিন্তু আপুনি পিছৰ শ্বাসলৈকে যে জীয়াই থাকিব তাৰ কোনো নিশ্চয়তা দিব নোৱাৰিব। কিন্তু সংসঙ্গ সফল হলে প্ৰত্যেক শ্বাস- প্ৰশ্বাসক নিয়ন্ত্ৰণ কৰি পৰম লক্ষ্যৰ প্ৰাপ্তী হয়। পাণ্ডৱে ইয়াতকৈ অধিক বিচৰা নাই, কিন্তু প্ৰত্যেক সাধকৰ ক্ষেত্ৰত কিছু পবিত্ৰতাৰ পথ দূৰতে থাকে। তাৰ পিছত কোৱা হৈছে –

কাশ্যশ্চ পৰমেষ্वासः शिखण्डी च महाबथः।

धृष्टद्युम्नो विषाटश्च सात्यकिश्चापराजितः॥१५॥

কায়াৰূপী কাশী। পুৰুষ যেতিয়া চাৰিওফালৰ পৰা মনৰ সৈতে ইন্দ্ৰিয়ক একত্ৰিত কৰি কায়াতে কেন্দ্ৰিত কৰে, তেতিয়াই **‘পৰমেষ্वासঃ’** পৰম ঈশ্বৰ বাসৰ অধিকাৰী হৈ পৰে। পৰম ঈশত নিবাস দিব পৰা সক্ষম কায়াই কাশী। কায়াতেই পৰম ইশৰ নিবাস। শব্দৰ অৰ্থ শ্ৰেষ্ঠ ধনুযধাৰী নহয়, আনকি পৰম- ঈশ- বাস হয়।

শিখা- সুত্ৰৰ ত্যাগেই হ’ল **‘শিখণ্ডী’**। আজিকালি মানুহ বিলাকে মুৰৰ চুলি অৰ্থাৎ শিখাকাটি লয় আৰু সুত্ৰৰ নামত নিজৰ কান্ধত থকা লগুন ডালকো পেলাই দিয়ে, জুই জ্বলাবলৈ এৰি দিয়ে। তেতিয়া হৈ গ’ল সন্যাস। নহয় মূলত শিখা লক্ষ্যৰ প্ৰতীক, যি আপোনাৰ প্ৰাপ্য আৰু সুত্ৰ হ’ল **‘সংস্কাৰ’**। যেতিয়া পৰমাত্মক প্ৰাপ্ত কৰিবলৈ এতিয়াও বাকী আছে, আপোনাৰ সংস্কাৰৰ সুত্ৰপাত হৈ আছে, তেতিয়া তাৰ ত্যাগ হ’ল কেনেকৈ ? এতিয়ালৈ পথৰ পথিক হে। যেতিয়া প্ৰাপ্য হৈ যাব, আপোনাৰ সংস্কাৰৰ সুত্ৰপাত কাট খাই যাব, এনে অৱস্থাত ভ্ৰম শান্ত হৈ যায়। সেইকাৰণে শিখণ্ডীয়েই ভ্ৰমৰূপী ভীষ্মক বিনাশ কৰিব পাৰিব। শিখণ্ডী চিন্তন পথৰ বিশিষ্ট যোগ্যতা হয়, মহাৰথী হয়।

‘ধৃষ্টদ্যুম্ন’- দৃঢ় আৰু অচল মন তথা **‘বিষাট’** চাৰিওফালে বিষাট ঈশ্বৰৰ প্ৰসাৰতা দেখাৰ ক্ষমতা ইত্যাদি দৈবি সম্পদৰ প্ৰধান গুণ হয়।

সাত্বিকতাই সাত্যকি। সত্য চিন্তনৰ প্ৰবৃত্তি অথাৎ সাত্বিকতা যদি হৈ থাকে,
তেতিয়া পতিত হব নোৱাৰিব। এই সংঘৰ্ষত পৰাজিত হব নিদিব।

দ্রুপদো দ্রৌপদেয়াশ্চ সৰ্বশঃ পৃথিবীপতে।

সৌভদ্রশ্চ মহাবাহুঃ শঙ্খান্দধমুঃ পৃথক্‌পৃথক্‌ ॥১৮॥

অচল পদ দিব পৰা দ্রুপদ আৰু ধ্যানৰূপী দ্রৌপদীৰ পাঁচ পুত্ৰ,
সহৃদয়তা, বাৎসল্য, লাৰণ্য, সৌম্যতা, স্থিৰতা আদি সাধনাত মহান সহায়ক
মহাৰথী সকল- তথা শক্তিশালী বাহ্যুদ্ভূত অভিমন্যু এওঁলোকে নিজৰ নিজৰ
শংখ বজালে। বাহু হ'ল কাৰ্য্যক্ষেত্ৰৰ প্ৰতীক। যেতিয়া মন ভয়ৰ পৰা আঁতৰি
থাকে, তেতিয়া তেওঁ বহু দূৰলৈকে ভাবিব পাৰে।

মহাৰাজ! এওঁলোক সকলোৱে বেলেগে বেলেগে শংখ বজালে।
সাধনাৰ ক্ষেত্ৰত এওঁলোকো কিছু দূৰ পাইছে, সেইয়ে ইহতঁৰ নাম লেখত
লব পাৰি। ইয়াৰ অতিৰিক্ত আৰু কিছু দূৰ আছে, যিটো মন বুদ্ধিৰ সিপাৰত।
ভগৱানে নিজে অন্তঃকৰণত থাকি তাৰ ব্যৱস্থা কৰি দিয়ে। এফালে দৃষ্টি হৈ
অত্মাত ঠিয় হৈ থাকে আৰু আনফালে নিজে ঠিয় হৈ নিজৰ পৰিচয় দিয়ে।

স ঘোষো ধাৰ্তৰাষ্ট্ৰাণাং হৃদয়ানি ব্যদাৰয়ৎ।

নভশ্চ পৃথিবীং চৈৱ তুমুলো ব্যনুনাদয়ন্ ॥১৯॥

সেই বিকট শব্দই আকাশ আৰু পৃথিবীক কঁপাই ধৃতৰাষ্ট্ৰৰ পুত্ৰৰ
হৃদয় বিদিৰ্ণ কৰি দিলে। সৈন্য পাণ্ডৱৰ ফালেওতো আছিল, কিন্তু অন্তৰ কঁপি
উঠিল ধৃতৰাষ্ট্ৰৰ পুত্ৰৰ। মূলতঃ পাণ্ডজন্য, দৈৱি শক্তিৰ ওপৰত অধিকাৰ,
অনন্তৰ ওপৰত বিজয় প্ৰাপ্ত, অশুভৰ শেষ, আৰু শুভৰ আৰম্ভণী যেতিয়া হব
ধৰিলে, তেতিয়া কুৰুক্ষেত্ৰ, আসুৰি সম্পদ, বাহ্যিক প্ৰবৃত্তিবোৰৰ হৃদয় বিদিৰ্ণ
হব ধৰিলে। তেওঁলোকৰ শক্তি লাহে লাহে লোপ পাব ধৰিলে। চাৰিওফালৰ
সফলতা লভিলে মোহময়ী প্ৰবৃত্তিবোৰ শান্ত হৈ থাকে।

অথ ব্যবস্থিতান্দৃষ্ট্বা ধাৰ্তৰাষ্ট্ৰান্‌কপিধবজঃ।

প্ৰবৃত্তে শস্ত্ৰসম্পাতে ধনুৰ্‌দ্যম্য পাণ্ডবঃ ॥২০॥

হাৰিকেশং তদা বাক্যমিদমাহ মহিপতে।

বিজয় প্ৰাপ্ত, অশুভৰ শেষ, আৰু শুভৰ আৰম্ভণী যেতিয়া হব ধৰিলে, তেতিয়া কুব্ৰক্ষত্ৰ, আসুৰি সম্পদ, বাহ্যিক প্ৰবৃত্তিবোৰৰ হৃদয় বিদিৰ্গ হব ধৰিলে। তেওঁলোকৰ শক্তি লাহে লাহে লোপ পাব ধৰিলে। চাৰিওফালৰ সফলতা লভিলে মোহময়ী প্ৰবৃত্তিবোৰ শাস্ত হৈ থাকে।

অৰ্জুন উবাচ

সেনয়োৰুভয়োৰ্মধ্যে বথং স্থাপয় মেহচ্যুত।।২১।।

সংযমৰূপী সঞ্জয়ই অজ্ঞানেৰে ঢাকি থোৱা মনক বুজালে হে মহাৰাজ তাৰ পিছত 'কপিধ্বজ' বৈৰাগ্যৰূপী হনুমান বৈৰাগ্যই যাৰ পতাকা, পতাকাক ৰাষ্ট্ৰৰ প্ৰতীক ভৱা হয়।

কোনোৱাই কয়- চঞ্চল আছিল সেই কাৰণে কপিধ্বজ কোৱা হৈছিল। কিন্তু এইটো নহয়, ইয়াত কপি সাধাৰণ বান্দৰ নহয় স্বয়ং হনুমান আছিল, যি জনে মান- অপমানক শেষ কৰিছিল - প্ৰকৃতিৰ দেখা-শুনা বস্ত্ৰৰ পৰা, বিষয় ৰাগক ত্যাগ কৰাই হ'ল 'বৈৰাগ্য'। সেয়ে বৈৰাগ্যই যাৰ পতাকা, সেই অৰ্জুনে ব্যৱস্থিত ৰূপত ধৃতৰাষ্ট্ৰৰ পুত্ৰ সকলক ঠিয় হোৱা দেখি, অস্ত্ৰ চলাবৰ বাবে প্ৰস্তুতি হোৱাৰ সময়ত ধনু ওঠাই 'হাৰিকেশম্' যি জন হৃদয়ৰ সৰ্বস্ব জ্ঞাতা, সেই যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণক এই বচন কলে- হে অচ্যুত(যি কেতিয়াও চ্যুত নহয়) " মোৰ ৰথক দুই সৈন্যৰ মাজত ঠিয় কৰাই দিয়ক।" ইয়াত সাৰথিক দিয়া নিৰ্দেশ এয়া নহয়, ইষ্ট (সদগুৰু) ৰ ওচৰত কৰা প্ৰাৰ্থনাহে। কি কাৰণে ঠিয় কৰাব লাগে ?

যাবদেতান্ নিৰীক্ষেহহং যোদ্ধুকামানবস্থিতান্।

কৈৰ্ময়া সহ যোদ্ধব্যমস্মিন্ৰণসমুদ্যমে।।২২।।

যেতিয়ালৈকে মই যুদ্ধৰ কামনা কৰি থকা সকলক ভালকৈ চাই নলও যে এই যুদ্ধত কাৰ লগত যুদ্ধ কৰিব লাগিব, এই যুদ্ধৰ ব্যাপাৰত কোন মোৰ যোদ্ধা হব ?

যোৎসামানানৰেক্ষেহহং য এতেহত্র समागताः।

धार्तराष्ट्रस्य दुर्बुद्धेर्युद्धे प्रियचिकीर्षरः॥२३॥

দুৰ্বুদ্ধি দুৰ্যোধনৰ যুদ্ধত কল্যাণ বিচৰা বজা বিলাক যুদ্ধলৈ যি বোৰ আহিছে, সেই যোদ্ধা বিলাকক মই চাওঁ, সেই কাৰণে ঠিয় কৰাই দিয়ক। মোহৰূপী দুৰ্যোধনৰ মোহময়ী প্ৰবৃত্তিৰ কল্যাণ বিচৰা যি বজা বিলাক এই যুদ্ধলৈ আহিছে, তেওঁলোকক মই চাই লওঁ।

सञ्जय उवाच

एवमुक्त्वा हवीकेशो गुडाकेशेन भारत।

सेनयोः कृभयोर्मध्ये स्थापयित्वा बभूव उত্তमम्॥२४॥

भीष्मद्रोण प्रमुखतः सर्वेषां च महीक्षिताम्।

उवाच पार्थ पश्यैतान्समবেतান्कুব্ৰনिति॥२५॥

সঞ্জয়ে কলে- নিদ্ৰাজয়ী অৰ্জুনৰ দ্বাৰা এনে ধৰণে কোৱাৰ পিছত অন্তৰৰ জ্ঞাতা শ্ৰীকৃষ্ণই দুই সৈন্যৰ মাজত ভীষ্ম, দ্ৰোণ আৰু 'মহীক্ষিতাম' শৰীৰ ৰূপী পৃথিৱীৰ ওপৰত অধিকাৰ ৰখা সম্পূৰ্ণ বজা সকলৰ মাজত উত্তম ৰথক ঠিয় কৰি কবলৈ ধৰিলে যে পাৰ্থ এই ভাৱে একত্ৰিত হোৱা কৌৰৱক চোৱা। ইয়াত উত্তম ৰথ সোন-ৰূপৰ ৰথ নহয়। সংসাৰত উত্তমৰ সংজ্ঞা নশ্বৰৰ প্ৰতি অনুকূলতা- প্ৰতিকূলতাৰ ওপৰত কৰা হয়, এই সংজ্ঞা অপৰ্ণ। যিয়ে আমাৰ আত্মা, আমাৰ স্বৰূপক সদায়েই লগ দি আছে সেইয়ে উত্তম, যাৰ পিছত অনুত্তম বা মলিনতা নাই।

तत्रापश्यं स्थितान् पार्थः पितृनथ पितामहान्।

आचार्यान् मातुलान् भ्रातॄन् पुत्रान्पौत्रान् सखींस्तथा॥२६॥

श्वशुरान् सुहृदश्चैव सेनयोः कृभयोःपि॥

ইয়াৰ পিছত অব্যৰ্থ লক্ষ্যধাৰী, পাৰ্থিৱ শৰীৰক ৰথ বনাবপৰা পাৰ্থই, দুয়ো পক্ষৰ সৈন্যত থকা খুৰাইঁত, ককা, আচাৰ্য্য, মোমাইহঁত, ভাইহঁত, পুত্ৰবোৰ, নাতিনীয়েকহঁত, বন্ধু সকল, শত্ৰু, আৰু আত্মীয় স্বজন বিলাকক দেখিলে। দুয়ো সৈন্যৰ মাজত অৰ্জুনে মাত্ৰ নিজৰ পৰিয়াল, মামাহতঁৰ পৰিয়াল, শত্ৰুৰ ঘৰৰ পৰিয়াল, বন্ধুসকল আৰু গুৰুজনক হে দেখি পালে।

মহাভাৰত কালৰ গণনা অনুসৰি ওঠৰ অক্ষৌহিনী প্ৰায়ে চল্লিশ লাখৰ সমান হব, কিন্তু বৰ্তমান প্ৰচলিত গণনা অনুসৰি ওঠৰ অক্ষৌহিনী সমান চাড়ে ছয়শ কোটি সমকক্ষ হব যিটো আজিৰ বিশ্বৰ জন সংখ্যাৰ সমান। ইমানৰ কাৰণে কেতিয়াবাহে বিশ্বস্তৰত আৱাস আৰু খাদ্য-সমস্যাই দেখা দিছিল। ইমান বিশাল জনসংখ্যা অৰ্জুনৰ তিনি- চাৰি সম্বন্ধীয় পৰিয়ালৰ মাত্ৰ আছিল নে? ইমান ডাঙৰ কাৰোবাৰ পৰিয়াল হব পাৰেনে? নোৱাৰে, কেতিয়াও হব নোৱাৰে। এইটো এটা হৃদয় দেশৰ চিত্ৰণ।

তানসমীক্ষ্য স কৌন্তেয়ঃ সৰ্বান্বন্ধুনবস্থিতান্ । ২৭
কুপয়া পৰয়াবিষ্টো বিষীদমিদমব্ৰৱীৎ ॥

এই ধৰণে ঠিয় হোৱা সম্পূৰ্ণ বন্ধু- বান্ধৱক দেখি অত্যন্ত কৰুণা ভাৱে কুন্তীপুত্ৰ অৰ্জুনে শোক কৰিব ধৰিলে কিয়নো তেওঁ দেখিলে যে এওঁলোক সকলো দেখোন নিজৰ পৰিয়ালৰ মানুহ, সেয়ে কলে—

অৰ্জুন উবাচ

দৃষ্টেবমং স্বজনং কৃষ্ণ যুযুৎসুং সমুপস্থিতম্ ॥ ২৮ ॥
সিদন্তি মম গাত্ৰাণি মুখম চ পৰিশুশ্ৰ্যতি ।
ৰেপথুশ্চ শৰীৰে মে ৰোমহৰ্ষশ্চ জায়তে ॥ ২৯ ॥

হে কৃষ্ণ যুদ্ধৰ ইচ্ছা কৰি ঠিয় হোৱা এই আত্মীয় স্বজনক দেখি মোৰ দেহা ভাগৰি গৈছে, মুখ শুকাই গৈছে আৰু মোৰ শৰীৰ কপিব ধৰিছে আৰু ৰোমাঞ্চিত হৈছে। ইমানেই নহয় —

গাণ্ডীৰং অংসতে হস্তাভ্ৰক্ৰৈৰ পৰিদহাতে ।

ন চ শক্লোম্যবস্থাৎ ভ্ৰমতীৰ চ মে মনঃ ॥ ৩০ ॥

হাতৰ পৰা গাণ্ডীৰ পৰি গৈছে, ছাল বিলাক পুৰিছে। অৰ্জুনৰ জ্বৰ নিচিনা হৈ গ'ল তেওঁৰ গাটো গৰম হৈ উঠিল, তেওঁ দেখিলে যে এইটো কেনেকুৱা যুদ্ধ, যত অকল আত্মীয় স্বজনেই আছে? অৰ্জুনৰ ভ্ৰম হৈ গ'ল। তেওঁ কব ধৰিলে মই এতিয়া ঠিয় হৈ থাকিব নোৱাৰিম, আৰু একো দেখা পোৱা নাই।

নিমিত্তানি চ পশ্যামি বিপৰীতানি কেশৰ ।

ন চ শ্ৰেয়োহনুপশ্যামি হত্বা স্বজনমাহৰে ॥ ৩১ ॥

হে কেশৰ! এই যুদ্ধৰ লক্ষণে মই বিপৰীতহে দেখিছো। যুদ্ধত নিজৰ কুলক মাৰি পৰম কল্যাণ দেখা নাপাও। কুল ধ্বংস কৰিলে কল্যাণ কেনেকৈ হব ?

ন কাঙ্ক্ষে বিজয়ং কৃষ্ণ ন চ ৰাজ্যং সুখানি চ ।

কিং নো ৰাজ্যেন গোবিন্দ কিং ভোগৈর্জীৱিতেন বা ॥ ৩২ ॥

সম্পূৰ্ণ পৰিয়াল যুদ্ধৰ দুৱাৰ ডলিত আছে, এওঁলোকক যুদ্ধত মাৰি বিজয় প্ৰাপ্ত কৰিবলৈ বিজয়ৰ পৰা পাবলগা ৰাজ্য, ৰাজ্যৰ পৰা পাব লগা সুখ অৰ্জুনক নালাগে। তেওঁ কয়- হে কৃষ্ণ ! মই বিজয় নিবিচাৰো, ৰাজ্য আৰু সুখো নালাগে। গোবিন্দ! মোক ৰাজ্য, ভোগ অথবা জীৱনৰেই বা কি প্ৰয়োজন আছে ? তেওঁ কয়-

যেষামৰ্থে কাঙ্ক্ষিতং নো ৰাজ্যং ভোগাঃ সুখানি চ ।

ত ইমেহবস্তুতা যুদ্ধে প্ৰাণাংস্ত্যক্ত্বা ধনানি চ ॥ ৩৩ ॥

আমি যাৰ কাৰণে ৰাজ্য, ভোগ আৰু সুখৰ ইচ্ছা কৰিছিলো, সেই আত্মীয় সকলেই নিজৰ জীৱনৰ আশা ত্যাগ কৰি যুদ্ধৰ পথাৰত ঠিয় হৈ আছে। আমাৰ ৰাজ্যৰ ইচ্ছা আছিল এই পৰিয়াল সকলক লৈ; ভোগ সুখ আৰু ধনৰ আছিল, আত্মীয় স্বজনলৈ ভোগ কৰিবলৈ; কিন্তু যেতিয়া সকলোৰে প্ৰাণৰ আশা ত্যাগ কৰি যুদ্ধৰ বাবে বৈ আছে, তেতিয়াহলে মোক সুখ, ৰাজ্য ভোগ নালাগে। এইবোৰ বস্তু তেওঁলোকৰ আমাৰ প্ৰয়োজনীয় নহয়। যেতিয়া লৈকে পৰিয়াল থাকিব। তেতিয়ালৈকে বাসনাও থাকিব। পৰ্ণ কুটীৰত থকা জনেও নিজৰ পৰিয়াল আত্মীয় স্বজনক মাৰি বিশ্বৰ সাম্ৰাজ্য স্বীকাৰ নকৰে। অৰ্জুনেও এইটোৱেই কৈছিল যে মোৰ ভোগ প্ৰিয় আছিল, বিজয়প্ৰিয় আছিল, কিন্তু কাৰ কাৰণে ? যেতিয়া ভোগ কৰা জনেই নাথাকিব তেতিয়া ভোগৰ কি প্ৰয়োজন ? এই যুদ্ধত কাক মাৰিব লাগে ?

আচাৰ্য্য ঃ পিতৰঃ পুত্ৰাস্তথৈব চ পিতামহা ঃ ।

মাতুলা ঃ শ্বশুৰাঃ পৌত্ৰাঃ শ্যালাঃ সম্বন্ধিনস্তথা ॥ ৩৪ ॥

এই যুদ্ধত আচাৰ্য্য, ককা, খুৰাসকল, ভতিজাবোৰ এনেদৰে মামাৰ ঘৰৰ ককা, মোমাইহঁত, শহুৰ, নাতিনীয়েক, খুলশালীহঁত তথা সম্পূৰ্ণ আত্মীয় স্বজনেই আছে।

এতন্ন হস্তমিচ্ছামি য্নতোহপি মধুসূদন।

অপি ত্ৰৈলোক্যৰাজ্যস্য হেতোঃ কিং নু মহীকৃতে ॥৩৫॥

হে মধুসূদন! মোক মাৰিলেও অথবা তিনিও লোকৰ ৰাজ্য মোক দিলেও, মই এওঁলোকক মাৰিব নিবিচাৰো, পৃথিবীৰ বাবেতো কব লগা নায়েই।

ওঠৰ অক্ষৌহিণী সৈন্যৰ কাষত অৰ্জুনে অকল নিজৰ পৰিয়ালক হে দেখিবলৈ পালে। ইমান বেছি পৰিয়াল কি বাস্তৱত আছিল নে ? মূলত ; অনুৰাগেই অৰ্জুন। ভজনৰ প্ৰাৰম্ভনীত প্ৰত্যেক অনুৰাগী সকলৰ সন্মুখত এইটো সমস্যা থাকে। সকলোৱে বিচাৰে যে ভজন কৰিম, সেই পৰম সত্যক লাভ কৰিম। কিন্তু কোনো অনুভবী সদগুৰুৰ ওচৰলৈ গৈ, কোনো অনুৰাগিয়ে যেতিয়া ক্ষেত্ৰ-ক্ষেত্ৰগুৰুৰ সংঘৰ্ষত পৰে, তেতিয়া তেওঁ কাৰ লগত যুদ্ধ কৰিব এই বিষয়ে ভাবি হতাশ হৈ যায়। তেওঁ বিচাৰে যে নিজৰ দেউতাৰ পৰিয়াল, শহুৰৰ পৰিয়াল, মোমাইৰ পৰিয়াল, বন্ধু-বান্ধৱ গুৰু লগতে থাকক, সকলো সুখেৰে থাকক, এই সকলো ব্যৱস্থাৰ মাজেদি মই পৰমাত্মা স্বৰূপ প্ৰাপ্ত কৰি লওঁ। কিন্তু যেতিয়া সি বুজি পাব যে চিন্তনত বা আৰাধনাত অগ্ৰসৰ হবলৈ হলে পৰিয়ালকো এৰিব লাগিব, এই আত্মীয় স্বজনৰ মোহ ত্যাগ কৰিব লাগিব ; তেতিয়া সি অধীৰ হৈ উঠে।

পূজ্য মহাৰাজ জীয়ে কৈছিল - ‘মৰা আৰু সাধু হোৱা একেই।’ সন্যাসিৰ বাবে এই সৃষ্টিত অন্য কোনো জীয়াই থাকিব পাৰে, কিন্তু পৰিয়ালৰ নামত নহয়। যদি কাৰো প্ৰতি জীয়াই থকাৰ ভাৱ থাকে, সেইটো এটা আকৰ্ষণ, মোহ কত গল ? যেতিয়ালৈকে আকৰ্ষণ আছে তাৰ পূৰ্ণ ত্যাগ নহল। সেই আকৰ্ষণৰ অস্তিত্ব মচিব পাৰিলেহে বিজয় প্ৰাপ্ত কৰিব পাৰিব। এই আত্মীয় বিলাকৰ প্ৰসাৰেই তো জগত, নহলে জগতত আমাৰ কি আছে ?

মনৰ প্ৰসাৰণেই জগত। যোগেশ্বৰ কৃষ্ণয়েও মনৰ প্ৰসাৰতাকেই জগত

বুলি কৈছে। যি জনে ইয়াৰ পৰা ৰক্ষা পালে তেৱেই জগতক জিকিলে। মাত্ৰ অৰ্জুনেই যে অধীৰ আছিল এনে নহয়। অনুৰাগ সকলোৰে হৃদয়তে আছে। প্ৰত্যেক অনুৰাগীয়েই অধীৰ হৈ উঠে, তাৰ আত্মীয়লৈ মনত পৰে। প্ৰথমে তেওঁ ভাৱে ভজনৰ পৰা কিবা লাভ হব, তেতিয়া এওঁ লোকে সুখ পাব। তেওঁলোকৰ লগত থাকি এওঁলোকে সুখ পাব। তেওঁলোকৰ লগত থাকি এওঁ ভোগ কৰিব। যেতিয়া এওঁলোকে নেথাকিল তেতিয়া সুখ কিহৰ বাবে ? অৰ্জুনৰ দৃষ্টি ৰাজ্য সুখ ভোগতেই সিমিত আছিল। তেওঁ তিনিও লোকৰ সাম্ৰাজ্যৰ সুখক শেষ সুখ বুলি ভাবিছিল। ইয়াৰ পিছতো কিবা সত্য আছে, সেই বিষয়ে অৰ্জুনে গম নাপায়।

নিহত্য ধাৰ্ত ৰাষ্ট্ৰান্নঃ কা প্ৰীতিঃ স্যাজ্জনাদৰ্শন।

পাপমেবাশ্ৰয়েদস্মান্‌হত্বেতানাততায়িনঃ ॥৩৬॥

হে জনাদৰ্শন! ধৃতৰাষ্ট্ৰৰ পুত্ৰ বিলাকক মাৰি আমি কি আনন্দ পামনে ? যত ধৃতৰাষ্ট্ৰ, অৰ্থাত ধৃত্ততাৰ ৰাষ্ট্ৰ, তাৰ পৰা উৎপন্ন মোহৰূপি দুৰ্যোধন ইত্যাদিক মাৰি আমি কি প্ৰসন্ন হব পাৰিম ?

এই আততায়ী সকলক মাৰিলে আমাক পাপহে লাগিব। যিয়ে জীৱন যাপনৰ তুচ্ছ লাভৰ বাবে দুৰ্গীতি কৰে সিয়ো আততায়ীয়েই হয়, কিন্তু মূলত তেওঁহে বেছি ডাঙৰ আততায়ী যি আত্মাৰ পথত বাধা আনে। আত্মা দৰ্শনৰ বাধক কাম, ক্ৰোধ, লোভ, মোহ আদিয়েই হল আততায়ী।

তস্মান্নাৰ্হা বয়ং হস্তং ধাৰ্তৰাষ্ট্ৰান্‌স্বৰাক্ষবান্।

স্বজনং হি কথং হত্বা সুখিনঃ স্যাম মাধব ॥৩৭॥

সেই কাৰণে হে মাধৱ! নিজৰ বান্ধৱ ধৃতৰাষ্ট্ৰৰ পুত্ৰ বিলাকক মাৰিবৰ বাবে আমি যোগ্য নহওঁ। নিজৰ বান্ধৱ কেনেকুৱা ? তেওঁলোকতো শত্ৰুহে আছিল মূলত শৰীৰৰ সমন্ধ অজ্ঞানতাৰ পৰা উৎপন্ন হয়। এইজন মোমাই, এইজন শত্ৰু, এইবিলাক মোৰ আত্মীয় এই সকলো অজ্ঞানতা। যেতিয়া শৰীৰেই নশ্বৰ, তেতিয়া ইয়াৰ সমন্ধই থাকিব কত ? যেতিয়ালৈকে মোহ থাকিব, তেতিয়ালৈকে সুহৃদয়, পৰিয়াল, সংসাৰ। মোহ নাই একোৱেই নাই। সেই কাৰণে শত্ৰুকো অৰ্জুনে নিজৰ বুলি ভাবিলে। তেওঁ কব ধৰিলে যে নিজৰ

পৰিয়ালক মাৰি আমি কেনেকৈ সুখি হব পাৰিম ? যদি অজ্ঞানতা আৰু মোহ নাথাকিলেহেঁতেন তেতিয়া পৰিয়ালৰ অস্তিত্বই নাথাকে। এই অজ্ঞানতাই জ্ঞানৰ প্ৰেৰক। ভৰ্তৃহৰি, তুলসীদাস ইত্যাদি বহুতো মহাপুৰুষৰ বিৰাগৰ প্ৰেৰণা কোনোবাই পত্নীৰ পৰা পাইছিল, কোনোবাই সতীনি মাকৰ পৰা পাইছিল, কোনোবাই কাৰোবাৰ ব্যৱহাৰত অতিষ্ঠ হৈ বৈৰাগী পথত অগ্ৰসৰ হোৱা দেখিবলৈ পোৱা যায়।

যদ্যপ্যেতেন পশ্যন্তি লোভোপহতচেতসঃ।

কুলক্ষয়কৃতং দোষং মিত্ৰদ্রোহে চ পাতকম্ ॥৩৮॥

যদিও লোভত চিওভ্ৰষ্ট হোৱা মানুহে কুলনাশৰ দোষ আৰু মিত্ৰদ্রোহৰ পাপক নেদেখে, এই টোয়েই তেওঁলোকৰ দুৰ্বলতা, তথাপিও-

কথং ন জ্ঞেয়মস্মাভিঃ পাপাদস্মান্নিবৰ্তিতুম।

কুলক্ষয়কৃতং দোষং প্ৰপশ্যন্তিৰ্জনাদন ॥৩৯॥

হে জনাৰ্দন ! কুলনাশ হব পৰা দুখক জানিও আমালোকে এই পাপৰ পৰা ৰক্ষা পাবলৈ চেষ্টা কৰিব নালাগে ? মই যে পাপ কৰিছোঁ এইটো নহয়, আপুনিও ভুল কৰি আছে। শ্ৰীকৃষ্ণকো দোষাৰোপ কৰিলে। এতিয়া তেওঁ নিজকে কৃষ্ণতকৈ কম বুলি ভবা নাই। প্ৰত্যেক নতুন সাধকে সদগুৰুৰ শৰণত গলে এনে ধৰনে তৰ্ক কৰে আৰু নিজে কম জনা নাভাবে। অৰ্জুনে এইটোকে কৈছে যে তেওঁলোকে বুজি নেপালেও আমিতো বুজি পাওঁ। কুলনাশৰ দোষৰ বাবে আমিও ভবা উচিত। কুলনাশত কি দোষ আছে ?

কুলক্ষয়ে প্ৰণশ্যন্তিকু লধৰ্মাঃ সনাতনাঃ।

ধৰ্মেনষ্টে কুলং কৃৎস্নমধৰ্মোহভিভবতু্যত ॥৪০॥

কুলৰ নাশ হলে সনাতন কুলধৰ্ম নষ্ট হৈ যায়। অৰ্জুনে কুলধৰ্ম কুলাসৰকে সনাতন ধৰ্মবুলি ভাবিছিল। ধৰ্ম নাশ হলে সম্পূৰ্ণ কুলত পাপে ঘেৰি লব।

অধৰ্মাভিভবাৎকৃষ্ণং প্ৰদুষ্যন্তি কুলদ্বিয়ঃ।

স্ত্ৰীষু দুষ্টাসু বাৰ্ষেয় জায়তে বৰ্ণসঙ্ঘৰঃ ॥৪১॥

হে কৃষ্ণ ! পাপ অধিক বাঢ়ি গলে কুলীনস্ত্ৰী বিলাক দুষীত হয়। হে

বাৰ্ষেয় ! স্ত্ৰীৰ দোষৰ বাবে বৰ্ণসংকৰৰ উৎপন্ন হয়। অৰ্জুনৰ মতে কুলীন স্ত্ৰী দুৰ্ঘীত হলে বৰ্ণসংকৰ হয়, কিন্তু কৃষ্ণই ইয়াক খণ্ডন কৰি কৈছে যে মই অথবা স্বৰূপ স্থিত মহাপুৰুষ সকলে সাধনাৰ পথত অবৰোধ উৎপন্ন কৰিলে হে বৰ্ণসংকৰ হয়। বৰ্ণসংকৰ দোষক প্ৰকাশ কৰি অৰ্জুনে কই -

সঙ্কৰো নৰকায়েব কুলঘ্নানাং কুলস্য চ।

পতন্তি পিতৰো হ্যেমাং লুপ্তপিণ্ডোদকক্ৰিয়াঃ ॥৪২॥

বৰ্ণসংকৰ কুলঘাতি আৰু কুলক নৰকলৈ যাবলৈহে হয়। পিণ্ড ক্ৰিয়া আদি লুপ্ত হোৱাৰ বাবে তেওলোকৰ পিতৃও পতিত হয়। বৰ্ত্তমানো নষ্ট হৈ যায়, অতিতৰো পিতৃ ও পতিত হয় আৰু ভবিষ্যতেও নাইকিয়া হৈ যায় ইমানেই নহয় -

দৌষেৰেতৈঃ কুলঘ্নান।ং বৰ্ণসঙ্কৰকাৰকৈঃ।

উৎসাদ্যন্তে জাতিধৰ্মাঃ কুল ধৰ্মাশ্চ শাস্বতাঃ ॥৪৩॥

এই বৰ্ণসংকৰ কাৰকৰ দোষত কুল আৰু কুলঘাটি সকলৰ সনাতন কুলধৰ্ম আৰু জাতিধৰ্ম নষ্ট হৈ যায়। অৰ্জুনে ভাবিছিল যে কুল ধৰ্মই সনাতন, কুলধৰ্মই শাস্বত বুলি। কিন্তু কৃষ্ণই ইয়াৰ খণ্ডন কৰি আগত কৈছে যে আত্মাই সনাতন শাস্বত ধৰ্ম। বাস্তবিক সনাতন ধৰ্মক জনাৰ প্ৰাক মুহুৰ্ত্তত মানুহে ধৰ্ম নামত কোনো এটা পুৰাতন সংস্কাৰকে জানি থয়। ঠিক এইদৰে অৰ্জুনেও জানিছিল, যি শ্ৰীকৃষ্ণৰ কাৰণে ৰুঢ়িবাদিতাই আছিল।

উৎসন্নকুলধৰ্মাণাং মনুষ্যাণাং জনাৰ্দন।

নৰকেহনীয়তং বাসো ভবতীত্যনুশুশ্ৰম ॥৪৪॥

হে জনাৰ্দন ! কুলধৰ্ম নষ্ট হোৱা মানুহ অনন্তকাল লৈকে নৰকত বাস কৰে, এনেকুৱা মই শুনিছো। মাত্ৰ কুলধৰ্মই নষ্ট নহয়, আনকি শ্বাশত সনাতন ধৰ্মও নষ্ট হয়। যেতিয়া ধৰ্মই নষ্ট হৈ গ'ল, তেতিয়াতো এনে পুৰুষ অনন্তকাললৈকে নৰকতে বাস কৰে, মই এনেদৰে শুনিছো। দেখানাই, শুনিছোহে।

অহো বত মহৎপাপং কৰ্ত্তুং ব্যবসিতা বয়ম্।

যদ্রাজ্যসুখলোভেন হস্তং স্বজনমুদ্যতাঃ ॥৪৫॥

হায় হায় ! আমি বুদ্ধিমান হৈও মহান পাপ কৰিবলৈ সাজু হৈছো, এইয়ে আমাৰ দুখ। ৰাজ্য আৰু সুখৰ লোভৰ বাবে নিজৰ কুলক মাৰিবলৈ উদ্যত হৈছো।

এতিয়া অৰ্জুনে নিজকে কম বুদ্ধিমান বুলি ভৱা নাই। মহাত্মা বুদ্ধই কৈছিল যে মানুহে যেতিয়া কম জ্ঞানী হৈ থাকে, তেতিয়া নিজকে মহান জ্ঞানী বুলি ভাবে আৰু যেতিয়া আধাতকৈ বেছি জনা হয় তেতিয়া নিজকে মুৰ্খ বুলি ভাবে। ঠিক এইদৰে অৰ্জুনেও নিজক জ্ঞানী বুলি ভাবিছিল। তেওঁ শ্ৰীকৃষ্ণক বুজাব বিচাৰিছে যে সেই পাপত লাগিলে পৰম কল্যাণেই হওক, সেইটো নহয়, মাত্ৰ ৰাজ্য আৰু সুখৰ লোভত পৰি নিজৰ কুলক নাশ কৰিব বিচাৰিছে, যিটো মহান ভুল কৰি আছে। আমি যে ভুল কৰি আছে এনে নহয়, আপুনিও ভুল কৰি আছে। শ্ৰীকৃষ্ণকো তেওঁ এশিকনি দিলে। শেষত অৰ্জুনে নিজৰ মত এনে দৰে দিলে-

যদি মামপ্ৰতিকাৰমশস্ত্ৰং শস্ত্ৰপাণয়ঃ ।

ধাৰ্তৰাষ্ট্ৰী ৰণে হন্যস্তন্মে ক্ষেমতৰং ভবেৎ ॥৪৬॥

শাস্ত্ৰৰহিত তথা যুদ্ধ নকৰা মোক যদি অস্ত্ৰধাৰী ধৃতৰাষ্ট্ৰৰ পুত্ৰ সকলে মাৰিলেও সেই মৰণক মই কল্যাণ কাৰক বুলিয়েই ভাবো। ইতিহাসেতো কব যে অৰ্জুনে বুজি পাইছিল কাৰণে বলি দি হলেও যুদ্ধক নিবিচাৰিছিল। মানুহে নিজৰ প্ৰাণ কণ কণ অবোধ শিশু সকলৰ সুখৰ কাৰণে আৰ্হতি দিয়ে, কুলক ৰক্ষা কৰে। মানুহ বিদেশলৈ গৈ ৰাজঅট্টালিকাত সুখত যদি থাকে, দুদিনৰ পিছতে এৰি অহা পৰ্ণকুটিৰলৈ মনত পৰে। মোহ ইমান প্ৰবল হয়। সেইকাৰণে অৰ্জুনে কৈছে যে অস্ত্ৰধাৰী ধৃতৰাষ্ট্ৰৰ পুত্ৰ সকলে প্ৰতিকাৰ নকৰা মোক যুদ্ধত যদি মাৰে, তেতিয়াও কল্যাণকাৰী হব যাতে লৰাবোৰ সুখত থাকে।

সঞ্জয় উবাচ

এবমুক্ত্বাৰ্জুনঃ সঙ্খ্য ৰথোপস্থ উপাৰিশৎ ।

বিসৃজ্য সশৰং চাপং শোকসংবিগ্নমানসঃ ॥৪৭॥

সঞ্জয়ে কলে যে যুদ্ধভূমিত শোকত উদ্ভিগ্ন হোৱা অৰ্জুনে এইদৰে কৈ শৰৰ সৈত্য ধনুখন থৈ বথৰ পিছফালে গৈ বহি থাকিল অৰ্থাৎ ক্ষেত্ৰ-ক্ষেত্ৰজ্ঞৰ সংঘৰ্ষৰ পৰা আতৰি থাকিল।

নিষ্কৰ্ষ :

গীতা হল ক্ষেত্ৰ-ক্ষেত্ৰজ্ঞৰ - যুদ্ধৰ নিৰূপক। ই ঈশ্বৰীয় বিভূতি সম্পন্ন ভগৱৎ স্বৰূপক দেখুৱাব পৰা গীত হয়। ই যি ক্ষেত্ৰত গোৱা হয় সেইটো যুদ্ধক্ষেত্ৰ শৰীৰ হয়। যত দুটা প্ৰবৃত্তি আছে - ধৰ্মক্ষেত্ৰ আৰু কুৰ্মক্ষেত্ৰ। এই সৈন্যসকলৰ পৰাক্ৰম শংখ ধ্বনীৰ দ্বাৰা জনাইছে। তাৰ পিছতে যি সৈন্যৰ লগত যুঁজিবলাগিৰ তাৰ নিৰীক্ষণ কৰা হয়। যাৰ গণনা ওঠৰ অক্ষৌহিণী (প্ৰায় চাড়ে ছয় কোটি) কোৱা হৈছে ; কিন্তু এয়া অনন্ত। প্ৰকৃতিৰ দৃষ্টিকোণ দুটা আছে- এটা ইষ্টোনমুখি প্ৰবৃত্তি যেনে 'দৈবি সম্পদ' আনটো বাহ্যিক প্ৰবৃত্তি- যেনে আসুৰি সম্পদ। দুটাই হল প্ৰকৃতি। এটাই ইষ্টৰ ফালে লৈ যায় আৰু আনটোয়ে অন্য প্ৰকৃতিক বিশ্বাস জগায়। প্ৰথমে দৈৱিক সম্পদক আহৰণ কৰি আসুৰি সম্পদক শেষ কৰি দিয়া হয়, পূনৰ শাস্ত সনাতন পৰব্ৰহ্মৰ দিক্‌দৰ্শন আৰু তাত স্থিতি লগতে দৈবি সম্পদৰ আৱশ্যকতাৰ শেষ নাথাকে, যুদ্ধৰ পৰিণাম ওলাই যায়।

অৰ্জুনে সৈন্য নিৰীক্ষণ কৰাত নিজৰ পৰিয়ালকে দেখা পালে, যাক মাৰিব লাগিব। যলৈকে সম্বন্ধ আছে সেয়াই সংসাৰ। অনুৰাগৰ প্ৰথম অৱস্থাত পৰিয়ালৰ মোহে বাধা প্ৰদান কৰে। সাধকে যেতিয়া দেখে যে ইমান মধুৰ সম্বন্ধত বিচ্ছেদ আহি যাব, তেওঁ তাতে নাছিল যেতিয়া তেওঁ ভয় খাই যাব। আত্মীয় আসক্তিৰ কাৰণে তেওঁলোকক মৰাটো অকল্যাণ বুলি ভাবি লয়। তেওঁ প্ৰচলিত পৰম্পৰাত নিজক বক্ষা কৰিব বিচাৰে, অৰ্জুনে যেনে ধৰনে বিচাৰিছিল। তেওঁ কলে “কুলধৰ্মই সনাতন ধৰ্ম”। এই যুদ্ধৰ দ্বাৰা সনাতন ধৰ্ম নষ্ট হৈ যাব, কুলীন স্ত্ৰীবিলাক দুৰ্বীত হব, বৰ্ণসংকৰৰ উৎপন্ন হব যাৰ দ্বাৰা কুল আৰু কুলঘাটি বিলাকক অনন্তকাললৈকে নৰকলৈ লৈ যোৱা হৈ হব। “অৰ্জুন নিজৰ মতে 'সনাতন ধৰ্ম' বক্ষা কৰিব কাৰণে আকুল হৈ আছে। তেওঁ

শ্রীকৃষ্ণক অনুৰোধ কৰিছে যে আমি জনা-বুজা লোক হৈয়ো কিয় এই মহাপাপ কৰিবলৈ গৈ আছে ? অৰ্থাৎ শ্রীকৃষ্ণয়ো পাপ কৰিবলৈ গৈ আছে। উপায়ান্তৰ হৈ পাপৰ পৰা ৰক্ষা পাবলৈ “মই যুদ্ধ নকৰো” এইদৰে কৈ হতাশ অৰ্জুন ৰথৰ পিছফালে গৈ বহিলে; মানে ক্ষেত্ৰ-ক্ষেত্ৰজ্ঞৰ সংঘৰ্ষৰ পৰা তেওঁ আতঁৰি থাকিল।

টীকাকাৰ সকলে এই আধ্যায়ক “**অৰ্জুন বিষাদ যোগ**” বুলি কৈছে। অৰ্জুন হ’ল অনুৰাগৰ প্ৰতীক। সনাতন ধৰ্মৰ কাৰণে আকুল হোৱা অনুৰাগীৰ বাবে বিষাদ যোগ। এনেকুৱা বিষাদ মনুৰো হৈছিল। “হৃদয় বহুত দুঃখ লাগ, জনম গয়েও হৰি ভগতি বিনু”

(ৰাম চৰিত মানস, ১/১৪২) আশংকাত পৰিহে মানুহে বিষাদ কৰে। তেওঁৰ সন্দেহ আছিল বৰ্ণসংকৰ উৎপন্ন হব, যি নৰকলৈ নিব। সনাতন ধৰ্ম নষ্ট হোৱাৰ বাবেও তেওঁৰ বিষাদ আছিল। সেয়েহে সংশয় বিষাদ যোগৰ সামান্য নামাকৰণ এই আধ্যায়ৰ কাৰণে উপযুক্ত হৈছে। অতঃ

ওঁ তৎ সদ ইতি শ্ৰী মৎ ভগৱদ্ গীতা সূপনিষদৎসু ব্ৰহ্মবিদ্যায়াং যোগ শাস্ত্ৰে শ্ৰী কৃষ্ণাৰ্জুন সংবাদে সংশয় বিবাদ যোগো নাম প্ৰথমোহধ্যায়ঃ ॥১॥

এই ধৰণে শ্ৰীমৎ ভাগৱত গীতাৰূপী উপনিষদ অথবা ব্ৰহ্মবিদ্যা তথা যোগশাস্ত্ৰ বিষয়ক শ্ৰীকৃষ্ণ আৰু অৰ্জুনৰ সংবাদৰ সংশয় বিষাদ যোগ নামৰ প্ৰথম আধ্যায় পূৰ্ণ হ’ল।

ইতি শ্ৰীমৎ পৰমহংস পৰমানন্দস্য শিষ্য স্বামী অঙ্কুৰানন্দ কৃতে শ্ৰীমৎ ভাগৱত গীতয়াঃ ‘যথার্থ গীতা’ ভাষ্য “সংশয় বিষাদ যোগ” নাম প্ৰথমোধ্যায়ঃ ॥১॥

॥ হৰি ওঁ তৎসৎ ॥

‘ওঁ’

শ্ৰী পৰমাত্মনে নমঃ

অথ দ্বিতীয়োহধ্যায়ঃ

প্ৰথম অধ্যায় হল গীতাৰ প্ৰবেশিকা, য’ত প্ৰথম অৱস্থাত পথিকক পতিয়ন নিযাব পৰা কিছু সমস্যাৰ চিত্ৰণ আছে। যুদ্ধত কৌৰব আৰু পাণ্ডবেই আছিল; কিন্তু সংশয়ৰ পাত্ৰ মাত্ৰ আছিল অৰ্জুন। অনুৰাগ হ’ল অৰ্জুন। ইষ্টৰ অনুৰূপৰ বাগ, যিটোৱে পথিকক ক্ষেত্ৰ-ক্ষেত্ৰজ্ঞৰ সংঘৰ্ষৰ কাৰণে প্ৰেৰিত কৰে। অনুৰাগ হ’ল প্ৰাথমিক স্তৰ। পূজ্য মহাৰাজ জীয়ে কৈছিল “সদৃগৃহস্থ আশ্ৰমত থাকি যাৰ গ্লানী হব ধৰিছে, অশ্ৰুপাত হব ধৰিছে, কণ্ঠ অবৰুদ্ধ হব ধৰিছে, তেতিয়া বুজিব লাগিব যে তাৰ পৰাই ভজন আৰম্ভ হৈ গ’ল।” অনুৰাগত এই সকলোখিনি হয়। তাত ধৰ্ম, নিয়ম, সৎসঙ্গ, ভাব সকলো বিদ্যমান হয়।

অনুৰাগৰ প্ৰথম অৱস্থাত পাৰিবাৰিক মোহে বাধা দিয়ে। প্ৰথমে মানুহে বিচাৰে যে তেওঁ পৰম সত্যক প্ৰাপ্ত কৰক, কিন্তু আগ বাঢ়িলে তেওঁ দেখিবলৈ পায় যে এই মধুৰ সন্মুক্তক এৰিব লাগিব, তেতিয়া তেওঁ নিৰাশ হৈ যায়। তেওঁ প্ৰথমৰ পৰাই যাক ধৰ্ম কৰ্ম বুলি মানিছিল; তাতেই সন্তোষ লবলৈ ধৰে। নিজৰ মোহ ভাব অটুট ৰাখিবৰ বাবে তেওঁ পৰম্পৰাৰ প্ৰচলিত প্ৰমাণ সমূহৰ সমৰ্থন কৰিবৰ ধৰে, যেনেকৈ অৰ্জুনে কুলধৰ্ম কেই সনাতন কৈছিল। যুদ্ধৰ ফলত সনাতন ধৰ্ম লোপ হয়, কুলৰ ক্ষয় হয়, স্বেচ্ছাচাৰিতা বাঢ়ে। এইটো অৰ্জুনৰ উত্তৰ আছিল, আনকি সদগুৰু লাভৰ আগতেই ব্যৱহাৰ কৰা কুৰীতিহে মাত্ৰ আছিল।

এই কুৰীতিবোৰত পৰি মানুহে বেলেগ বেলেগ ধৰ্ম, বহুতো সম্প্ৰদায়, বহুতো সমষ্টি আৰু অসংখ্য জাতিৰ ৰচনা কৰে। কোনোবাই নাক কোচাই, কোনোবাই কান ফালে, কাৰোবাক চুলে ধৰ্ম নষ্ট হয় আৰু কাৰোবাৰ আহাৰ

পানী গ্ৰহণ কৰিলে ধৰ্ম নষ্ট হয়। তেতিয়াহলে এই দোষ কাৰ ? দোষ আমাক ভ্ৰমত পেলোৱা সকলৰ। ধৰ্মৰ নামত আমি কুৰীতিৰ চীকাৰ হৈছো, সেইটোৱেই আমাৰ দোষ।

মহাত্মা বুদ্ধৰ সময়ত কেশ কাম্বল এটা সম্প্ৰদায় আছিল, যুত কেশ বঢ়াই কাম্বলৰ নিচিনা প্ৰয়োগ কৰিবলৈ এটা মাননীয় কাম আছিল। কোনোবা গোব্ৰতিক (গৰুৰ নিচিনা থকা খোৱা) আছিল; কোনোবা কুকুৰ ব্ৰতিক (কুকুৰৰ দৰে থকা খোৱা) আছিল। ব্ৰহ্মবিদ্যাৰ লগত ইহতৰ কোনো সম্বন্ধ নাই। সম্প্ৰদায় আৰু কুৰীতি আগতো আছিল আৰু আজিও আছে। ঠিক এই দৰে কৃষ্ণৰ কালতো সম্প্ৰদায় আছিল, কুৰীতি আছিল। এনে কেইটামান কুৰীতিঅৰ্জুনতো আছিল, তেও চাৰিটা তৰ্ক ৰাখিছিল। ৰ। এনে যুদ্ধত সনাতন ধৰ্ম নষ্ট হব চ। বৰ্ণসংকৰৰ উৎপন্ন হয়; পিণ্ডোদক ক্ৰিয়ালোপ পাব আৰু ছু। আমি কুলক্ষয়ৰ দ্বাৰা মহাপাপ কৰিবলৈ সাজু হৈছো। ইয়াত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছে

সঞ্জয় উৱাচ

তং তথা কৃপয়াবিস্তমশ্ৰুপূৰ্ণাকুলক্ষণম্।

বিশীদন্তমিদং বাক্যমুবাচ মধুসূদনঃ।।১।।

কৰুণাপ্লুত, অশ্ৰুপূৰ্ণ নেত্ৰথকা অৰ্জুনৰ প্ৰতি ‘মধুসূদন’, মদৰ বিনাশ কৰা ভগৱানে এই কথা কলে-

শ্ৰীভগৱানুবাচ

কুতস্ত্বা কাম্বলমিদং বিষমে সমুপস্থিতম্।

অনাৰ্যজুস্তমস্বৰ্গ্যমকীৰ্তিকৰমৰ্জুন।।২।।

অৰ্জুন ! এই বিষম ক্ষেত্ৰত তোমাৰ এই অজ্ঞানতা কৰ পৰা আহিল ? বিষম ক্ষেত্ৰ মানে যাৰ মমতাৰ সৃষ্টিত কোনো স্থানেই নাই, পাৰলৌকিক লক্ষ্যই যাৰ এনে নিৰ্বিবাদ ক্ষেত্ৰত তোমাৰ অজ্ঞানতা কেনেকৈ আহিল ? অজ্ঞানতা কিহৰ ? অৰ্জুনতো সনাতন ধৰ্ম ৰক্ষাৰ কাৰণে কটিবদ্ধ আছিল।

সনাতন ধৰ্মক বক্ষা কৰিবলৈ প্ৰাণ পণে চেষ্টা কৰাটো কি অজ্ঞানতা নেকি ? শ্ৰী কৃষ্ণই কয়- হয়, এইটোয়েই অজ্ঞানতা। কোনো সম্ভাৱিত পুৰুষেও ইয়াৰ আচৰণ কৰা নাছিলে ইয়ে স্বৰ্গও দিব নোৱাৰে আৰু কোনো যশও ৰাখিব নোৱাৰে। সৎমৰ্গত যি দৃঢ় ভাৱে চলি আছে, তাক আৰ্য্য বুলি কোৱা হয়। পৰিয়ালৰ বাবে মাৰ ধৰ কৰা যদি অজ্ঞানতা নহলহেঁতেন, তেতিয়া মহাপুৰুষ সকল তাতেই চলি থাকিল হেতেন। যদি কুল ধৰ্মই সত্য হয়, তেতিয়া হলে স্বৰ্গ আৰু কল্যাণৰ শ্ৰেণী বিভাগ হলেহেঁতেন। এইটোৱে কীৰ্তিও নিদিয়। মীৰাই ভজন কৰিবলৈ যেতিয়া লাগিল “লোকে কব ধৰিলে মীৰা বিৰাগী হৈ গ’ল, কিন্তু শাহুৱে কৈছিল ই কুলনাশী হৈ গ’ল।” যি পৰিয়ালৰ, কুলৰ বাবে মৰ্যাদাৰ বাবে মীৰাৰ শাহু উত্ৰাওল হৈছিল, আজি সেই কুল ৰক্ষী শাহুক কোনেও চিনি নাপায়, মীৰাক বিশ্বই জানে। ঠিক এনে ধৰণে পৰিয়ালৰ বাবে যি আকুল হৈ আছে, তাৰ নাম যশ কিমান দিন থাকিব ? যত কীৰ্তি নাই, কল্যাণ নাই, শ্ৰেষ্ঠ পুৰুষ সকলে পাহৰিও যাৰ আচৰণ নকৰে, তেতিয়া হলে সেইটো পূৰ্ণ অজ্ঞানতাই হব। সেয়া-

ক্লেব্যং মা স্ম গমঃ পাৰ্থ নৈতদ্ভ্যুপদ্যতে।

ক্ষুদ্ৰং হৃদয়দৌৰ্বল্যং ত্যক্ত্বেত্তিষ্ঠ পৰন্তপ ॥৩॥

অৰ্জুন ! নপুংসকতা নানিবা। কিন্তু অৰ্জুন নপুংসক আছিলনে ? কি আপুনি পুৰুষ ? নপুংসক সেই জনে যাৰ পুৰুষত্ব নাই। সকলোৱেতো নিজৰ মতে পুৰুষাৰ্থেইতো কৰে। খেতিয়ক সকলে দিনে-ৰাতিয়ে তেজক পানী কৰি পথাৰত পুৰুষাৰ্থ কৰে। কোনোবাই বেপাৰকে পুৰুষাৰ্থ বুলি ভাৱে, কোনোবাই নিজৰ পদৰ দুৰপাযোগ কৰি পুৰুষাৰ্থী হব বিচাৰে। গোটেই জীৱন পুৰুষাৰ্থ কৰিলেও শেষত খুদা হাতে যাব লাগিব। সেই কাৰণে আচলতে ই পুৰুষাৰ্থ নহয়। শুদ্ধ পুৰুষাৰ্থ হল আত্ম দৰ্শন। গাৰ্গীয়ে যাজ্ঞবল্ক্যক কৈছিল।

নপুংসক পুমান্ জ্ঞেয়ো যো বেত্তি হৃদি স্থিতম্।

পুৰুষং স্বপ্ৰকাশং তস্মানন্দান্ধানমব্যয়ম্। (আত্মপুৰাণ)

যি পুৰুষ হৈও নপুংসক যিজনে হৃদয়ত থকা আত্মাক চিনি নাপায়।

সেই আত্মাই পুৰুষ স্বৰূপ, স্বয়ং প্ৰকাশমান, উত্তম, আনন্দ যুক্ত আৰু অব্যক্ত। তাক পাবৰ কাৰণে যি প্ৰয়াস সেয়াই পৌৰুষ। অৰ্জুন! তুমি নপুংসকতা নানিবা। এইটো তোমাৰ যোগ্য নহয়। হে পৰশুপ! হৃদয়ৰ ক্ষুদ্ৰ দুৰ্বলতাক ত্যাগ কৰি যুদ্ধৰ কাৰণে ঠিয় হোৱা। আসক্তিক ত্যাগ কৰা। এইটো হৃদয়ৰ দুৰ্বলতা। ইয়াত অৰ্জুনে আন এটা প্ৰশ্ন কৰিলে।

অৰ্জুন উৱাচ

কথং ভীষ্মমহং সজ্জ্যে দ্ৰোণং জ মধুসূদন।

ইযুভিঃ প্ৰতি যোৎস্যামি পূজাৰ্হাৰিসূদন ॥৪॥

অহংকাৰক নাস কৰিব পৰা হে মধুসূদন ! মই এই যুদ্ধত পিতামহ ভীষ্ম আৰু আচাৰ্য্য দ্ৰোণৰ লগত কেনেকৈ যুদ্ধ কৰিম, কিয়নো হে অৰিসূদন! তেওঁ লোক দুজনেই যে মোৰ পূজনীয়।

দ্বৈতই দ্ৰোণ। প্ৰভু বেলেগ, আমি বেলেগ দ্বৈতৰ এই ভাৱনাই প্ৰাপ্তিৰ প্ৰেৰণাত আৰম্ভণী। এইটোই দ্ৰোণাচাৰ্য্যৰ গুৰুত্ব। ভ্ৰমই ভীষ্ম। যেতিয়ালৈকে ভ্ৰম থাকিব ল'ৰা ছোৱালী, পৰিয়াল, আত্মীয় কুটুম্ব সকলো নিজৰ যেনে লাগে। নিজৰ লগা মানে ভ্ৰমত পৰা। আত্মাই এওঁ লোককে পূজনীয় বুলি দেউতা, ককা, কুলগুৰু বুলি লগতে থাকিব বিচাৰে। সাধনাৰ অন্তিম সময়ত “গুৰু ন চেলা, পুৰুষ অকেলা”

ন বন্ধুনমিত্ৰং গুৰুৰ্ণৈব শিষ্যঃ।

চিদানন্দৰূপঃ শিবোহহং শিবোহহং।।

যেতিয়া চিন্ত সেই পৰম আনন্দত বিলিন হৈ যায়, তেতিয়া জ্ঞান দাতা গুৰু আৰু গ্ৰহণকৰ্তা শিষ্য কোনোটোৰে নেথাকিব। এইটোৱেই হল পৰম স্থিতি। গুৰুৰ গুৰুত্ব প্ৰাপ্ত হোৱাৰ পিছত গুৰুত্ব একেই হয়। শ্ৰীকৃষ্ণই কয়- অৰ্জুন তুমি মোতেই মিলিবা। যেনে কৃষ্ণ তেনেই অৰ্জুন আৰু ঠিক তেনে দৰে প্ৰাপ্তিৰান মহাপুৰুষেও এক হৈ যায়। এনে অৱস্থাত গুৰুৰো বিলয় হয়, গুৰুত্ব হৃদয়তে প্ৰবাহিত হৈ থাকে। অৰ্জুনে গুৰুপদৰ ঢাল বনাই এই সংঘৰ্ষত

প্ৰবৃত্তিৰ পৰা আতৰিব বিচাৰে। তেওঁ কয় :-

গুৰুনহত্বা হি মহানুভাবান্

শ্ৰেয়ো ভোক্তুং ভৈক্ষ্যমপীহ লোকে।

হত্বাৰ্থকামাংস্ত গুৰুনিহৈব

ভুক্তীয় ভোগান্ ৰুধিৰপ্ৰদিগ্ধান্ ॥৫॥

এই মহানুভৱ গুৰুসকলক নামাৰি মই এই লোকত ভিক্ষাৰ অন্নকেই শ্ৰেয় বুলি ভাবো। ইয়াত ভীক্ষাৰ অৰ্থ উদৰ ভৰাবৰ বাবে ভীক্ষা কৰা নুবুজাব, আনকি সৎপুৰুষ সকলক যেনেতেনে সেৱা কৰি তেওলোকৰ পৰা কল্যাণৰ ভীক্ষা কৰা।

অন্নং ব্ৰহ্মোতি ব্যাজানাৎ। (তৈত্তিৰীয. ৩/২/১)

অন্নই একমাত্ৰ পৰমাত্মা হয় যাক প্ৰাপ্ত কৰি আত্মা সদায় তৃপ্ত হৈ থাকে। কেতিয়াও অতৃপ্ত হৈ নাথাকে। মহাপুৰুষৰ সেৱা আৰু ভিক্ষাৰ দ্বাৰা লাহে-লাহে ব্ৰহ্মত্ব পাপ্ত কৰোঁ ; কিন্তু এই পৰিয়াল অটুট ভাৱে থাকক অৰ্জুনৰ এইয়েই ভিক্ষাৰ কামনা আছিল। সংসাৰত বেছি ভাগ লোকেই এনেকুৱা কৰে। তেওঁলোকে বিচাৰে যে নিজৰ পাৰিবাৰিক মৰমৰ সম্বন্ধেও নমৰক আৰু লাহে লাহে মুক্তিও লাভ কৰো। কিন্তু সাধনাৰ পথিকৰ বাবে যাৰ সংস্কাৰ ইয়াতকৈ ও পৰত আছে, যাৰ সংৰ্ষ কৰাৰ ক্ষমতা আছে, স্বভাৱতে যাৰ ক্ষত্ৰিয়ত্ব প্ৰবাহিত হৈ আছে, তাৰ কাৰনে এই ভিক্ষাৰ বিধান নাই। নিজে নকৰি লোকৰ পৰা বিচৰা হল ভিক্ষাৰ। গৌতম বুদ্ধইও মজ্জিম নিকায়ৰ ধম্মদায়াদ সুত্ত (১/১/৩) ত এই ভিক্ষাৰক আমিষ-দায়াদ বুলি নিকৃষ্ট মানিছিল, যদিও তেওলোক জীৱন যাপনত সকলোৱে ভীক্ষুক আছিল।

এই গুৰুজন সকলক মাৰি পাম কি ? এই লোকত ৰক্ত মাখা অৰ্থ আৰু কামৰ ভোগেই তো পাম। অৰ্জুনে ভাবিছিল যে ভজন চিন্তনৰ ফলত ভৌতিক সুখৰ মাত্ৰাত অভিবৃদ্ধি হব। ইমান সংৰ্ষ কৰাৰ পিছত এই শৰীৰৰ বাবে কাম আৰু অৰ্থ এইটোৱেইতো পাব। তেওঁ আকৌ প্ৰশ্ন কৰে-

ন চৈতদ্দিনঃ কতৰনো গৰীয়ো

যদ্বা জয়েম যদি বা নো জয়েয়ুঃ।
যানেব হত্না ন জিজীবিষামস্তেহ-
বস্থিতাঃ প্রমুখে ধাৰ্ত্তবাস্ত্ৰাঃ ॥৬॥

এইটোও নিশ্চিত নহয় যে ভোগ পামেই । এইটোও মই নাজানো যে মই কি কৰা শ্ৰেয়, কিয়নো যি মই কলো, সেইটো অজ্ঞানতাই প্ৰমাণিত হল । এইটোও জ্ঞাত নহয় যে আমিয়েই জিকিম বা সিহতেই জিকিব । যাক মাৰি আমি জীয়াই থাকিব নিবিচাৰো, সেই পুত্ৰৰ পুত্ৰ বিলাকে আমাৰ সন্মুখত আছে । অজ্ঞানৰূপী পুত্ৰৰ পৰা উৎপন্ন মোহ ইত্যাদি আত্মীয় স্বজন যেতিয়া হেৰাই যাব, তেতিয়া আমি জীয়াই থাকিনো কি কৰিম? অৰ্জুনে আকৌ ভাবিলে যে মই যি কলো এই খিনিও অজ্ঞানতাই নহয়তো, সেয়ে তেওঁ প্ৰাৰ্থনা কৰিলে -

কাৰ্পণ্যদোষোপহতস্বভাবঃ
পৃচ্ছামি ত্বাং ধৰ্মসন্মূঢ়চেতাঃ।
যচ্ছেয়ঃ স্যান্নিশ্চিতং ক্ৰহি তন্মে
শিষ্যস্তেহহং শাধি মাং ত্বাং প্ৰপন্নম্ ॥৭॥

দুৰ্বলতা দোষৰ বাবে স্বভাব নষ্ট হোৱা, ধৰ্ম বিষয়ত সৰ্বথা মোহিত চিত্ত থকা মই আপোনাক সুধিছো যি নিশ্চিত মঙ্গলকাৰী, সেই সাধনাৰ বিষয়ে মোক কওক । মই ভগৱানৰ শিষ্য, আপোনাৰ শৰণত পৰিছো । মোক আকোৱালি লওক, অকল শিক্ষা দিয়াই নহয়, আনকি যত মই বিচলিত হওঁ তাত মোক ৰক্ষা কৰক । “বোজাই দিয়ক আৰু বোজাই কৰাজন লগতে চলক, হঠাৎ কৰবাত পৰি গলে কোনে বোজাই কৰি দিব ।” অৰ্জুনৰ সমৰ্পণৰ ভাব এনে আছিল । ইয়াত অৰ্জুনে পূৰ্ণ সমৰ্পণ কৰি দিলে । এতিয়ালৈকে তেওঁ শ্ৰীকৃষ্ণক নিজৰ সমকক্ষ বুলি ভাবিছিল । বহুতো জনা ভিতৰত নিজকো এজন বুলি ভাবিছিল । ইয়াত নিজৰ লেকাম ডাল কৃষ্ণক দিলে । সদগুৰু শেষলৈকে হৃদয়তে থাকি সাধকৰ লগতে চলে । যদি তেওঁ লগত নাথাকে সাধক পাৰ নহব । গাভৰু ছোৱালীক পৰিয়ালৰ লোকে বিয়া কৰি নিদিয়ালৈকে যেনেকৈ

সংযমৰ শিক্ষা দি ৰাখে, ঠিক তেনেকৈসদগুৰুৱেও নিজৰ শিষ্যক অন্তৰাত্মাৰ সাৰথি হৈ তেওক প্ৰকৃতিৰ প্ৰবৃত্তিৰ পৰা উদ্ধাৰ কৰি পাৰ কৰি দিয়ে। অৰ্জুনে নিবেদন কৰি কয় যে হে ভগৱান আৰু এটা কথা আছে।

ন হি প্ৰপশ্যামি মমাপনুদ্যাদ
যচ্ছোকমুচ্ছোষণমিদ্ৰিয়াণাম্।
অৱাপ্য ভূমাবসপত্ত্বমৃদ্ধং
ৰাজ্যং সুৰাণামপি চাধিপত্যম্ ॥৮॥

পৃথিৱীত নিষ্কণ্টক ধন ধানেৰে পৰিপূৰ্ণ ৰাজ্য আৰু দেৱতাৰ স্বামী ইন্দ্ৰপদ পালেও মই সেই উপায় দেখা নাই, যিয়ে মোৰ ইন্দ্ৰিয়ক শুকাই দিয়া শোকক দূৰ কৰিব পাৰে। যেতিয়া দুখ থাকিয়েই যাব, তেতিয়া হলে এই সকলোবোৰ কিহৰ কাৰণে ? যদি ইমানেই পাও তেতিয়া হলে মোক ক্ষমা কৰক। অৰ্জুনে ভাবিলে, তাতকৈ বেছি তেওঁ কবনো কি ?

সঞ্জয় উৱাচ

এবমুক্ত্বা হৃষীকেশং গুড়াকেশঃ পৰন্তপ।
ন যোৎস্য ইতি গোবিন্দমুক্ত্বাতৃষ্ণীং বভূৰ হ ॥৯॥

সঞ্জয়ে কলে হে ৰাজন ! মোহ আৰু নিশাক জয় কৰা অৰ্জুনে হৃদয়ৰ কথা জনা শ্ৰীকৃষ্ণক এইটো কলে যে, 'হে গোবিন্দ মই যুদ্ধ নকৰো'। চুপ হৈ থাকিল। তেতিয়ালৈকে অৰ্জুনৰ ভাৱনাবোৰ পৌৰাণিক আছিল, যত কৰ্ম-কাণ্ডৰ লগত ভোগৰ উপলব্ধি বিধান আছে, যত স্বৰ্গকেই সকলো বুলি ধৰা হয়- যত শ্ৰীকৃষ্ণয়েই বিচাৰধাৰাক ভুল বুলিয়েই প্ৰকাশ কৰিছে।

তমুবাচ হৃষীকেশঃ প্ৰহসন্নিৰ ভাৰত।

সেনয়োৰুভয়োৰ্মধ্যে বিধীদন্তুমিদং ৰচঃ ॥১০॥

তাৰ ওপৰিও হে মহাৰাজ ! অন্তৰ্য্যামি যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই দুই সৈন্যৰ মাজত শোকাকুল হৈ থকা অৰ্জুনক হাঁহি এই কথা কলে -

শ্ৰীভগবানুবাচ

অশোচ্যানম্মশোচস্ত্বং প্ৰজ্ঞাৱাদাংশ্চ ভাষসে।

গতাসূনগতাসুংশ্চ নানুশোচন্তি পণ্ডিতাঃ ॥১১॥

অৰ্জুন! তুমি যাক শোক কৰিবলগীয়া নহয় তাক শোক কৰিছা আৰু কথা বিলাক পণ্ডিতৰ নিচিনাকৈ কৈছা, কিন্তু বুদ্ধিমান পণ্ডিত সকলে যাৰ প্ৰাণ গল আৰু যাৰ প্ৰাণ যোৱা নাই তাৰ কাৰণে কোনো শোক নকৰে, কিয়নো তেওঁ এদিন যাব। তুমি পণ্ডিতৰ নিচিনা কথা কোৱা যদিও তুমি নাজানা ; কিয়নো-

ন ত্বেৱাহং জাতু নাসং ন ত্বং নেমে জনাধিপাঃ ।

ন চৈব ন ভবিষ্যামঃ সৰ্বে ৰয়মত্ত পৰম্ ॥১২॥

এইটো এনেকুৱাও নহয় যে মই অৰ্থাৎ সদৃশক কোনো কালত নাছিল, তুমি অনুৰাগি অধিকাৰী অথবা 'জনাধিপা' ৰজাসকল অৰ্থাৎ ৰাজ বৃত্তিত থকাজনো নাছিল আৰু এনেকুৱাও নহয় যে আগলৈ আমিও নাথাকে। সদৃশক সদায়েই থাকেই, অনুৰাগীও সদায়েই থাকে। ইয়াত যোগেশ্বৰে যোগৰ অনাদিৰ ওপৰত প্ৰকাশ কৰি ভবিষ্যতেও থাকিবলৈ জোৰ দিছে। মৰা জনৰ কাৰণে শোক নকৰিবৰ কাৰণে তেওঁ কৈছে -

দেহিনোহস্মিন্যথা দেহে কৌমাৰং যৌবনং জৰা ।

তথা দেহান্তৰ প্ৰাপ্তিৰ্থীৰস্তত্র ন মুহ্যতি ॥১৩॥

যেনেদৰে জীৱাত্মাৰ এই দেহত কুমাৰ, যুবা আৰু বৃদ্ধ অৱস্থা প্ৰাপ্ত হয়, তেনে দৰে শৰীৰৰ অন্য ভাগ বোৰ প্ৰাপ্ত হলেও ধীৰ পুৰুষ মোহিত নহয়। কেতিয়াবা আপুনি বালক আছিল, লাহে লাহে যুৱক হল, তেতিয়া আকৌ লাহে লাহে বৃদ্ধ হল। পুৰুষ একেজনে, নতুন দেহ প্ৰাপ্তিৰ বাবে কোনো বেলেগ প্ৰকাৰ নাথাকে। কলেবৰৰ এই পৰিবৰ্তন তেতিয়ালৈকে চলি থাকিব, যেতিয়ালৈকে পৰিবৰ্তনৰ পিছৰ বস্তু প্ৰাপ্ত নহয়।

মাত্ৰাস্পৰ্শাস্ত কৌন্তেয় শীতোষ্ণসুখদুঃখদাঃ ।

আগম্যপায়িনোহনিত্যাস্তাংস্তিতিক্ষস্ব ভাৰত ॥১৪॥

হে কুন্তী পুত্ৰঙ্গ সুখ-দুখ, শিত-তাপ দিব পৰা ইন্দ্ৰিয় আৰু বিষয়ৰ সংযোগতো অনিত্য হয়, ক্ষণ ভংগুৰ হয়। সেয়ে ভৰতবংশী অৰ্জুন ঙ্গ তুমি

ইয়াক ত্যাগ কৰা। অৰ্জুন ইন্দ্ৰিয় আৰু বিষয়ৰ সংযোগত হোৱা সুখক স্মৰণ কৰি ব্যাকুল আছিল। কুল ধৰ্ম, কুল গুৰুৰ পূজন ইত্যাদি ইন্দ্ৰিয় সম্পৰ্কৰ অন্তৰ্গত হয়। ইহঁত ক্ষন্তেকিয়া, মিছা আৰু নাশবান হয়। বিষয়ৰ সংযোগ পোৱাটো সদায় নহয়, আৰু সদায় ইন্দ্ৰিয় ক্ষমতাও নাথাকে সেয়ে অৰ্জুনঙ্গ তুমি ইয়াক ত্যাগ কৰা, সহ্য কৰা। কিয় ? কি হিমালয়ৰ যুদ্ধ আছিল নেকি অৰ্জুনে শীত সহ্য কৰিব ? অথবা মৰুভূমি আছিল নেকি যত অৰ্জুনে তাপ সহ্য কৰিব ? কুৰুক্ষেত্ৰত মানুহে কয় সম-শিতোষঃ স্থল বুলি। মাত্ৰ ঠুঠৰ দিন হে যুদ্ধ হৈছিল, ইমানতে কত গৰম ঠাণ্ডাপাৰ হৈ গল ? সাধাৰণতঃ শীত-তাপ, সুখ-দুখ, মান-অপমানক সহ্য কৰা এক যোগীৰ ওপৰত নিৰ্ভৰ কৰে। এইটো হৃদয় দেশৰ যুদ্ধৰ চিত্ৰণ, বাহিৰৰ যুদ্ধৰ কাৰণে গীতায়ৈ কোৱা নাই। এইটো ক্ষেত্ৰ-ক্ষেত্ৰজ্ঞৰ সংঘৰ্ষ, যত আসুৰি সম্পদৰ বিনাশ হৈ পৰমাত্মাত স্থিতি লয়, শেষত দৈবিসম্পত্তিৰো লয় হয়। যেতিয়া বিকাৰেই নাথাকিব তেতিয়া সজোতিয়-প্ৰবৃত্তিয়ে কাক আক্ৰমণ কৰিব ? সেয়ে পূৰ্ণত্ব প্ৰাপ্তিৰ পিছত সেইটোও শান্ত হয়। গীতা আন্তৰিক যুদ্ধৰ চিত্ৰণ হয়। ইয়াক ত্যাগ কৰিলে কি হয় ? কি লাভ হয় ? এই বিষয়ে কৃষ্ণই কই -

যং হি ন ব্যথয়ন্ত্যেতে পুৰুষং পুৰুষৰ্ষভ।

সমদুঃখসুখং ধীৰং সোহমৃতত্বায় কল্পতে ॥১৫॥

কাৰণ,হে পুৰুষশ্ৰেষ্ঠ! সুখঃ-দুখক সমান ভাবিব পৰা যি ধীৰ পুৰুষক ইন্দ্ৰিয় সমূহ আৰু বিষয়ৰ সংযোগে ব্যথিত কৰিব নোৱাৰে, তেনেব্যক্তিয়ে অমৃতত্ব পাবৰ যোগ্য হয়। ইয়াত শ্ৰীকৃষ্ণই 'অমৃত' তেওঁৰ উপলব্ধিৰ চৰ্চা কৰিলে। অৰ্জুনে ভাবিছিল যুদ্ধৰ পৰিণাম স্বৰ্গ আৰু পৃথিৱী লাভ কৰিব। কিন্তু শ্ৰী কৃষ্ণই কলে নহয় স্বৰ্গ লাভ হ'ব নহয় পৃথিৱী, পৰন্তু অমৃত লাভ হ'ব। অমৃত কি ?

নাসতো ৰিদ্যতে ভাৰো নাভাৰো বিদ্যতে সতঃ।

উভয়োৰপি দৃষ্টৌহন্তুস্ত্ব নয়োস্তুত্ব দৰ্শিভিঃ ॥ ১৬ ॥

অৰ্জুনঙ্গ অসত্ বস্তৰ অস্তিত্বই নাই, সি নায়েই,তাক ৰুধিবও নোৱাৰি, আৰু সত্য তিনিও কালত অভাৱ নাই, তাক মচিবও নোৱাৰি। অৰ্জুনে সুধিলে

-“কি ভগৱান হোৱাৰ বাবে আপুনি কলেনে?” শ্ৰীকৃষ্ণই কলে মইতো কৈয়েই আছো, এই দুটাৰ প্ৰভেদ আমাৰ লগতে তত্বদৰ্শীসকলেও দেখিছে। শ্ৰীকৃষ্ণইও এজন তত্বদৰ্শী আছিল। পৰমতত্ব পৰমাত্মাক প্ৰত্যক্ষ দৰ্শন লাভ কৰি তাতেই স্থিতি লাভ কৰা জনকেই তত্বদৰ্শী বুলি কোৱা হয়। সত্ আৰু অসৎ নো কি? ইয়াত কৈছে -

অবিনাশি তু তদ্বিদ্ধি যেনবৰ্য মিদং ততম্।
বিনাশমব্যয়স্যাস্য ন কশ্চিৎকৰ্তুমৰ্হতি ॥ ১৭ ॥

অবিনাশীতো সেয়াই যত সম্পূৰ্ণ জগত ব্যাপ্ত হৈ আছে। এই অবিনাশীৰ বিনাশ কৰিব পৰা ‘অব্যয়স্য’ কাৰো সামৰ্থ্য নাই, কিন্তু এই অবিনাশী অমৃতৰ নাম কি? সি কোন?

অন্তবন্ত ইমে দেহা নিত্যস্যোক্তাঃ শৰীৰিণঃ।
অনাশিনোহপ্ৰমেয়স্য তস্মাদ যুধ্যস্ব ভাৰত ॥ ১৮ ॥

অবিনাশী, অপ্ৰমেয়, নিত্যস্বৰূপ আত্মাৰ এই শৰীৰ নাশৱান; সেই কাৰণে ভাৰতবংশী হে অৰ্জুনঙ্গ তুমি যুদ্ধ কৰা। আত্মাই অমৃত। আত্মাই অবিনাশী যাৰ তিনিও কালত নাশ নাই। আত্মাই সৎ। শৰীৰ নাশশীল এয়াই অসৎ, যাৰ তিনিও কালত অস্তিত্ব নাই।

“শৰীৰ নাশশীল, সেইকাৰণে তুমি যুদ্ধ কৰা” - এই আদেশে এইটো স্পষ্ট নকৰে যে অৰ্জুনে কেৱল কৌৰৱকে মাৰক। পাণ্ডৱ পক্ষতো শৰীৰধাৰীয়েইতো ঠিয় হৈ আছিল, কি পাণ্ডৱৰ শৰীৰ অবিনাশী আছিলনে? যদি শৰীৰ নাশৱানেই হয়, তেতিয়া শ্ৰীকৃষ্ণ কাৰ বক্ষাৰ বাবে আছিল? অৰ্জুন কোনো শৰীৰধাৰী আছিলনে? শৰীৰ, যি অসৎ, যাৰ অস্তিত্বই নাই, যাক কোনোও ৰাখিব নোৱাৰে, শ্ৰীকৃষ্ণ তেনে শৰীৰৰ বক্ষাৰ বাবে ঠিয় হৈছিল নে? তেনেকুৱাই যদি হয়, তেতিয়া হলে তেওঁ অবিবেকী আৰু মুঢ় আছিল, কিয়নো শ্ৰীকৃষ্ণই নিজেই কৈছে যে যি জনে কেৱল শৰীৰৰ কাৰণেই ভাৱে শ্ৰম কৰে (যৱ) তেওঁ অবিবেকী আৰু অজ্ঞ। সেই পাপমতি পুৰুষ মিছাতেই জীৱন ধাৰণ কৰে। অন্ততঃ অৰ্জুন কোন আছিল?

বস্তুতঃ অনুৰাগেই অৰ্জুন। অনুৰাগী সকলৰ কাৰণে ইষ্ট সদায় সাৰথি

হৈ লগতে থাকে। বন্ধুৰ নিচিনাকৈ তেওক পথ প্ৰদৰ্শক হয়। শৰীৰতো আৱৰণ মাত্ৰ, থকাৰ ঘৰ। তাত থকা অনুৰাগ হ'ল আত্মা। ভৌতিক যুদ্ধৰ দ্বাৰা কাটিলে-মাৰিলে শৰীৰৰ নাশ নহয়। শৰীৰ নাশ হয়, আত্মাই অন্য এটা শৰীৰ ধাৰণ কৰে। এই সন্দৰ্ভত শ্ৰীকৃষ্ণই আগতেই কৈ গৈছে যে যি ধৰণে বাল্যকালৰ পৰা যুৱাৱস্থা বা বৃদ্ধাৱস্থা প্ৰাপ্ত হয়, সেই ধৰণে দেহান্তৰৰো প্ৰাপ্তি ঘটে। শৰীৰক কাটি পেলালেও জীৱাত্মাই নতুন বস্ত্ৰ ধাৰণ কৰে। শৰীৰ সংস্কাৰৰ আশ্ৰিত আৰু সংস্কাৰ মনৰ ওপৰত আধাৰিত।

‘মন এব মনুষ্যাণং কাৰণং বন্ধ মোক্ষয়োঃ’। পঞ্চদশী, ৫/৬০

মনৰ সৰ্ব্ব প্ৰকাৰে নিৰোধ হোৱা, অচল, স্থিৰ হৈ থকা আৰু অন্তিম সংস্কাৰত বিলয় হোৱা একেই ক্ৰিয়া। সংস্কাৰৰ গভীৰতা হেৰাই যোৱাই হ'ল শৰীৰৰ অন্ত হোৱা। ইয়াক ভাঙিবৰ কাৰণে আপোনাক আৰাধনা কৰিব লাগিব, যাক শ্ৰীকৃষ্ণই কৰ্ম আৰু নিষ্কাম কৰ্মযোগৰ সংজ্ঞা দিছে। শ্ৰীকৃষ্ণই সময়ে সময়ে অৰ্জুনক যুদ্ধৰ প্ৰেৰণা দিছে, কিন্তু এটাও এনেকুৱা নাই য'ত ভৌতিক যুদ্ধৰ দ্বাৰা মৰা-কাটাক সমৰ্থন কৰিছে। এই যুদ্ধ সজাতীয় বিজাতীয় প্ৰবৃত্তিৰ, অন্তৰ্দেশৰ।

য এনং বেত্তি হস্তাৰং যশ্চনং মন্যতে হতম্।

উভৌ তৌ ন বিজানীতো নায়ং হস্তি ন হন্যতে।। ১৯।।

যি জনে এই আত্মাকে মাৰোতা বুলি ভাবে তথা যি জনে এই আত্মাক মৰা বুলি ভাবে তেওঁলোক দুয়োজনেই আত্মাক চিনি নাপায়; কিয়নো এই আত্মা নেমাৰেও আৰু নমৰেও। পূণৰ ইয়াত জোৰ দি কৈছে -

ন জায়তে স্মিয়তে বা কদাচি-

ন্নাযং ভুত্বা ভবিতা বা ন ভূয়ঃ।

অজো নিত্যঃ শাস্ত্বতোহয়ং পুৰাণো

ন হন্যতে হন্যমানে শৰীৰে।। ২০।।

এই আত্মা কোনো কালতে নজন্মেও আৰু নমৰেও; কিয়নো ই চোলাহে বদলায়। ই আত্মা হে ইয়াৰ পৰা অন্য একো নহয়, কিয়নো ই অজন্মা,

নিত্য, শাস্ত্ৰ আৰু পুৰাতন। শৰীৰৰ নাশ হলেও ইয়াৰ বিনাশ নাই। আত্মাই সত্য, আত্মাই পুৰাতন, আত্মাই শাস্ত্ৰ আৰু সনাতন। আপুনি কোন? সনাতন ধৰ্মৰ অনুসৰণকাৰী। আত্মা, পৰমাত্মা আৰু ব্ৰহ্মৰ এক অন্যৰ পৰ্য্যায়ৰ আপুনি কোন? শাস্ত্ৰ ধৰ্মৰ উপাসক। শাস্ত্ৰ কোন? আত্মা অৰ্থাৎ আমি আপুনি আত্মাৰ উপাসক। যদি আপুনি আত্মিক পথ চিনি নাপায় তেতিয়া হ'লে আপোনাৰ ওচৰত শাস্ত্ৰ-সনাতন নামৰ কোনো বস্তু নাই। তাৰ কাৰণে আপুনি যদি ছমুনিয়াহ কাঢ়ে তেতিয়া হলে আপুনি নিশ্চয় প্ৰত্যাশি, কিন্তু সনাতন ধৰ্মী নহয়। সনাতন ধৰ্মৰ নামত কোনো অন্ধ পৰম্পৰাক সমৰ্থন কৰি আছে।

দেশে বিদেশে, মানৱ মাত্ৰেই আত্মা একেই। সেই কাৰণে বিশ্বৰ কৰবাত কোনোবাই আত্মাৰ স্থিতি দিব পৰা ক্ৰিয়া যদি জানে, আৰু তাৰ ওপৰত চলিবলৈ প্ৰযত্নশীল তেতিয়া হলে তেৱেই সনাতন ধৰ্মী; লাগিলে তেওঁ নিজক খৃষ্টিয়ান, মুচলমান, ইহুদী অথবা যিয়েই নহওঁক।

বেদাবিনাশিনং নিত্যং য এনমজমব্যয়ম্।

কথং স পুৰুষঃ পাৰ্থ কং যাতয়তি হস্তি কম্ ॥ ২১ ॥

পাৰ্থিৱ শৰীৰক বথ বনাই ব্ৰহ্মৰূপীলক্ষিত কাড় মাৰিব পৰা পৃথাপুত্ৰ হে অৰ্জুন। যি জন পুৰুষে এই আত্মাক বিনাশ কৰিব নোৱাৰা, নিত্য অজন্মা আৰু অব্যক্ত বুলি জানে সেইজন পুৰুষে কাকো মৰোৱাবও নোৱাৰে। অবিনাশীৰ বিনাশ অসম্ভৱ। অজন্মাই জন্মই নলয়। সেয়ে শৰীৰৰ কাৰণে শোক কৰিব নালাগে। এটা উদাহৰণেৰে স্পষ্ট কৰা হৈছে -

বাসাংসি জীৰ্ণানি যথা বিহায়

নবানি গৃহ্নাতি নৰোহপৰাগি।

তথা শৰীৰাগি বিহায় জীৰ্ণা-

ন্যন্যানি সংযাতি নবানি দেহী ॥ ২২ ॥

যেনেদৰে মনুষ্যই 'জীৰ্ণানি বাসাংসি' জীৰ্ণ-শীৰ্ণ (ফটা-চিটা) পুৰণা বস্ত্ৰক ত্যাগ কৰি নতুন বস্ত্ৰক গ্ৰহণ কৰে, ঠিক তেনেদৰে এই জীৱাত্মাই পুৰণা শৰীৰক ত্যাগ কৰি অন্য নতুন শৰীৰ ধাৰণ কৰে। পুৰণা হ'লেই নতুন ধাৰণ

কৰিব লাগে যেতিয়া শিশু কিয় মৰে? এই বস্তু আৰু বিকশিত হে হব লাগিছিল। মূলত এই শৰীৰ সংস্কাৰত আধাৰিত। যেতিয়া সংস্কাৰ জীৰ্ণ হয় তেতিয়া শৰীৰ নাশ হয়। যদি সংস্কাৰ দুদিনৰ আছে তেতিয়া তাৰ পিছদিনাই শৰীৰ জীৰ্ণ হৈ গ'ল।

ইয়াৰ পিছত মানুহ এক শ্বাস লৈকোও জীয়াই থাকিব নোৱাৰে। সংস্কাৰেই হ'ল শৰীৰ। আত্মাই সংস্কাৰ অনুসৰি নতুন শৰীৰ ধাৰণ কৰি লয় - “অথ খলু ক্ৰতুময়ঃ পুৰুষঃ। যথা ইহৈব তথৈব প্ৰেত্য ভবতি। কৃতং লোকং পুৰুষোহভিজায়তে”(ছান্দোগ্যোপনিষদ্ ৩/১৪) এই পুৰুষ নিশ্চয় সংকল্প ময়। এই লোকত পুৰুষ যেনেধৰণে সংকল্প কৰে, তেনেকৈ তেওঁ মৰাৰ পিছত হয়। নিজৰ সংকল্পৰ দ্বাৰা ৰচা শৰীৰত পুৰুষ উৎপন্ন হয়। এই প্ৰকাৰে মৃত্যু শৰীৰৰ পৰিৱৰ্ত্তন মাত্ৰ হয়, আত্মা নমৰে। পূৰ্ণৰ ইয়াৰ অজৰ অমৰৰ ওপৰত জোৰ দি কয় -

নৈনং ছিন্দন্তি শস্ত্ৰাণি নৈনং দহতি পাৰকঃ।

ন চৈনং ক্লেদয়ন্ত্যাপো ন শোষয়তি মাৰুতঃ।। ২৩।।

অৰ্জুন! এই আত্মাক শস্ত্ৰ আদিয়ে নেকাটে। জুইৰে ইয়াক পুৰিব নোৱাৰে। পানীয়ে ইয়াক তিতাব নোৱাৰে আৰু বায়ুয়ে শুকাব নোৱাৰে।

অচ্ছেদ্যোহয়মদাহ্যোহয়মক্লেদ্যোহশোষ্য এব চ।

নিত্যঃ সৰ্বগতঃ স্থাণুৰচলোহয়ং সনাতনঃ।। ২৪।।

এই আত্মা অচ্ছেদ্য ইয়াক ভাঙিব নোৱাৰি। ই অদাহ-ইয়াক জলাব নোৱাৰি। ই অক্লেদ্য-ইয়াক পানীৰে তিতাব নোৱাৰে। আকাশে ইয়াক নিজৰ মাজত লুকাই ৰাখিব নোৱাৰে। এই আত্মা নিঃসন্দেহে অশূন্য, সৰ্বব্যাপক, অচল, স্থিৰেৰে থাকিব পৰা আৰু সনাতন।

অৰ্জুনে কৈছিল যে কুলধৰ্মই সনাতন। এনে যুদ্ধ কৰিলে সনাতন ধৰ্মৰ নষ্ট হব। হব। কিন্তু শ্ৰীকৃষ্ণই ইয়াক অজ্ঞানতা বুলি কৈছে আত্মাক সনাতন বুলি কৈছে। আপুনি কোন? সনাতন ধৰ্ম সমৰ্থক। সনাতন কি? আত্মা। যদি আপুনি আত্মা সম্পৰ্কীয় বিধি-বিশেষ নাজানে, তেতিয়া হলে আপুনি সনাতন

ধৰ্মকো নাজানে।

ইয়াৰ কুপৰিণাম সাম্প্ৰদায়িকতাত মজি থকা ধৰ্মভীৰু সকলেভোগ কৰি আছে। মধ্যকালীন ভাৰতত বাহিৰৰ পৰা অহা মুছলমান মাত্ৰ বাৰ হেজাৰ আছিল। আজি আঠাইশ কোটি। বাৰ হাজাৰৰ পৰা বাঢ়ি লাখ হ'ল হেঁতেন, তাতকৈ বেছি কোটি হ'ল হেঁতেন। ইহঁত যে আঠাইশ কোটিতকৈ বেছি হৈ আছে। সকলোহিন্দুয়েইতো আপোনাৰে নিজৰ ভাইবন্ধু, যি সকল অস্পৃশ্যতাৰ বাবে নষ্ট হৈ গ'ল। তেওঁলোক নষ্ট হোৱা নাই কিন্তু তেওঁলোকৰ সনাতন, অপৰিবৰ্ত্তনশীল ধৰ্ম নষ্ট হৈ গ'ল।

যেতিয়া কোনো এটা বস্তু (**Matter**) পথাৰত উৎপন্ন হয় এই সনাতনক স্পৰ্শই নকৰে, তেতিয়া হলে সেই বস্তুৰে ছুলে আৰু খালে সনাতন ধৰ্ম কেনেকৈ নষ্ট হব পাৰে। ই ধৰ্ম নহয়; এটা কুৰীতিৰ পৰিস্থিতি আছিল, যাৰ ফলত ভাৰতত সাম্প্ৰদায়িকতা বাঢ়িলে, দেশৰ বিভাজন হ'ল আৰু ৰাষ্ট্ৰীয় একতাৰ সমস্যা আজিও আছে।

এই কুৰীতিৰ কাহিনী বুৰঞ্জীৰ পাতত ভৰ্তী হৈ আছে। হমিৰপুৰ জিলাত পঞ্চাশ-ষাঠিটা পৰিয়াল কুলীন ক্ষত্ৰিয় সকলৰ আছিল। আজি তেওঁলোক সকলো মুছলমান হৈ গ'ল। তেওঁলোকৰ ওপৰত কোনো অস্ত্ৰ-শস্ত্ৰৰ আক্ৰমণ হোৱা নাছিল। কি হৈছিল? অৰ্দ্ধৰাত্ৰী দুই এজন মৌলবী, গাঁৱৰ একমাত্ৰ কুঁৱা যত আছিল তাত গৈ লুকাই থাকিল যাতে ব্ৰাহ্মন বিলাক কোনোবা প্ৰথমেই তাত গাধুবলৈ আহিব আৰু তেওঁলোকে ধৰিব। আহিল, ধৰিলে, তেওঁৰ মুখবন্ধ কৰিলে। তেওঁৰ সাক্ষাতত কুৱাৰ পৰা পানী ওলিয়ালে, মুখ লগাই খালে, বাকী থকা পানী কুঁৱাতে পেলাই দিলে। ৰুটিৰ টুকুৰা এটাও কুঁৱাত পেলাই দিলে। পণ্ডিতে চাই থাকিল। কি কৰিব? উপায় নাছিল। তাৰ পিচত পণ্ডিতক লগত লৈ গ'ল। নিজৰ ঘৰত বন্দি কৰি থৈ দিলে।

পিছদিনাখন তেওঁলোকে হাতযোৰ কৰি পণ্ডিতক ভোজন নিবেদন কৰিলে - তেতিয়া তেওঁ জাঙুৰ খাই উঠিল, কলে -“তোমালোক যৱন, মই ব্ৰাহ্মণ, মই তোমালোকৰ স্পৰ্শ বস্তু কেনেকৈ খাম?” তেওঁলোকে কলে,

“মহাৰাজ ! আমাক আপোনাৰ নিচিনা বিবেকৱান মানুহৰ বৰ আৱশ্যকতা আছে। ক্ষমা কৰক।” পণ্ডিতক এৰি দিলে।

পণ্ডিতজী নিজৰ গাঁৱলৈ আহিল। দেখিলে মানুহ বিলাকে পূৰ্বৰ নিচিনাকৈ সেই খন কুঁৱাৰ পানী ব্যৱহাৰ কৰি আছে। তেওঁ অনশন কৰিলে। মানুহে কাৰণ সুধিলে, তেতিয়া কলে- যবন সকল এই কুঁৱালৈ আহিছিল, মোৰ সন্মুখতে এই কুঁৱাক তেওঁলোকে জুঠা কৰিলে, ইয়াত ৰুটিৰ টুকুৰাও পেলাই দিলে। গাঁৱৰ মানুহ স্তব্ধ হৈ গ'ল। সুধিলে এতিয়া কি হব ? পণ্ডিতজীয়ে কলে “এতিয়া কি হব আৰু ? ধৰ্মতো নষ্ট হ'লেই।”

সেই সময়ত মানুহবোৰ শিক্ষিত নাছিল। মহিলা আৰু শূদ্ৰইতো পঢ়াৰ অধিকাৰ কেতিয়াবাই হেৰাইছিল। বৈশ্যই ধন উপাৰ্জনকেই নিজৰ ধৰ্ম বুলি ভাবিছিল। ক্ষত্ৰিয় সকল ৰজাৰ ওচৰত থাকি প্ৰসংশা বুটলাত ব্যস্ত আছিল। অন্নদাতাৰ তৰোৱালৰ চিকমিকনিত দিল্লী থৰক-বৰক হৈছিল। সন্মান এনেই প্ৰাপ্ত হৈছিল, তেতিয়া পঢ়িব কিয় ? ধৰ্মৰ লগত তেওঁৰ কি লেনা-দেনা ? ধৰ্ম মাত্ৰ ব্ৰাহ্মন সকলৰ বস্তু হৈ আছিল। তেওঁলোকেই ধৰ্মসূত্ৰৰ ৰচনা কৰিছিল, তেওঁলোকেই ব্যাখ্যাইও কৰিছিল আৰু তেওঁলোকেই সাঁচা-মিছাৰ নিৰ্ণায়ক আছিল। আনকি সেই কালত মহিলা, শূদ্ৰ, বৈশ্য, ক্ষত্ৰিয় আৰু ব্ৰাহ্মণ সকলোৰে বেদ পঢ়াৰ অধিকাৰ আছিল। প্ৰত্যেক বৰ্গৰ ঋষি সকলে বৈদিক মন্ত্ৰ ৰচনা কৰিছিল, শাস্ত্ৰাৰ্থ নিৰ্ণয়ত ভাগ লৈছিল। প্ৰাচীন ৰজা সকলে ধৰ্মৰ নামত আড়ম্বৰ কৰা জনক শাস্তি দিছিল, আৰু ধৰ্ম পৰায়ণ সকলক সমাদৰ কৰিছিল।

কিন্তু মধ্যকালীন ভাৰতত সনাতন ধৰ্মক যথার্থ ভাবে নজনাৰ বাবে উপৰোক্ত গাঁৱৰ লোকসকল ভেড়াৰ দৰে এটা চুকত ধৰ্ম নষ্ট হ'ল বুলি ঠিয় হব ধৰিছিল। বহুতো লোকে এই অপ্ৰীয় শব্দ শুনি আত্মহত্যা কৰিছিল; কিমানে নো প্ৰাণ দিব ? অটুট শ্ৰদ্ধা থকা স্বত্বেও উপায়হীন হৈ অন্য সমাধান বিচাৰিব ধৰিলে। আজিও তেওঁলোকে বাঁহ পুতি, ঢেকি থোৰা ৰাখি হিন্দুৰ নিচিনাকৈ বিয়া পাতে, শেষত এজন মৌলবীয়ে নিকাহ পঢ়ি যায়। সকলো

হিন্দু আছিল মুছলমান হৈ গ'ল।

কিনো হৈছিল? পানী খাইছিল, নজনাকৈ মুছলমানৰ চুৱা ইছিল, তাতেই ধৰ্ম নষ্ট হৈ গ'ল। ধৰ্মতো ছুলেই মৰি যায়। এইটো যেনিবা লাজুকি কাঁইটহে। আপুনি ছুলেই পাতবিলাক জাপ খাই গ'ল আৰু এৰি দিলেই পুনৰ মুকলি হ'ল। গছজোপাতো হাত এৰি দিলে মুকলি হয়, কিন্তু ধৰ্ম এনেকৈ জাপ খাই যায় যে মুকলিয়েই নহয়। তেওঁলোক যেনিবা মৰিহে গল। ৰাম-কৃষ্ণ আৰু পৰমাত্মাও যেন মৰি গ'ল। যি শাস্ত্ৰত আছিল সেয়া মৰি গ'ল। বাস্তৱত সেইটো শাস্ত্ৰতৰ নামত কিবা কুৰীতিহে আছিল। যাক মানুহে ধৰ্ম বুলি ভাবিছিল।

ধৰ্মৰ শৰণ লৈ আমি কিয় যাম বাৰু; কিয়নো আমি মৰণশীল আৰু ধৰ্ম এনে এটা বস্তু, যাৰ শৰণত গলে আমি অমৰ হৈ যাম। আমিহে মাৰিলে হে মৰিম, কিন্তু এই ধৰ্ম ছুলেই মৰিব যেতিয়া আমাৰ ৰক্ষা কেনেকৈ কৰিব। ধৰ্মইতো আপোনাক ৰক্ষা কৰিব লাগিব, আপোনাতকৈ শক্তিশালী নহয়জানো। আপোনাক তৰোৱালেৰে কাটিলে মৰিব, কিন্তু ধৰ্ম? সিতো ছুলেই মৰিব। কেনেকুৱা আপোনাৰ ধৰ্ম? কুৰীতি নষ্ট হয় অথবা সনাতন।

সনাতন এনেকুৱা এটা বস্তু, যাক শস্ত্ৰৰ দ্বাৰা কাটিব নোৱাৰি, জুইয়ে নজলায়, পানীয়ে নিতিতায়। খোৱা-বোৱা কথাতো বাদেই দিয়ক, প্ৰকৃতিৰ পৰা উৎপন্ন কোনো বস্তুয়েই তাক স্পৰ্শ কৰিব নোৱাৰে, তেতিয়াহলে সনাতন কেনেকৈ নষ্ট হ'ল?

এনেকুৱা কিছুমান কুৰীতি অৰ্জুনৰ সময়তো আছিল। তাৰ চিকাৰ অৰ্জুনো হৈছিল। তেওঁ শোকাবুল হৈ কৈছিল যে কুলধৰ্মই সনাতন। যুদ্ধই সনাতন ধৰ্মনষ্ট কৰে। কুলধৰ্ম নষ্ট হলে আমি অনন্ত কাললৈকে নৰকত থাকিব লাগিব। কিন্তু শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছিল- “তোমাৰ অজ্ঞানতা ক'ৰ পৰা উৎপন্ন হ'ল?” তাৰ পৰা প্ৰমাণ হয় যে সেইটো কিবা কুৰীতি আছিল, সেয়ে শ্ৰীকৃষ্ণই তাৰ নিৰাকৰণ কৰি কৈছিল আৰু কৈছিল যে আত্মাই সনাতন। যদি আপুনি আত্মিক পথ চিনি নাপায়, তেতিয়া হলে সনাতন ধৰ্ম আপোনাৰ তাত এতিয়াও প্ৰৱেশ

কৰা নাই।

যেতিয়া এই সনাতন শাস্ত্ৰত আত্মা সকলোৰে ভিতৰত আছে তেতিয়া কাক বিচাৰিব? এই সম্পৰ্কত শ্ৰীকৃষ্ণই কয়-

অব্যক্তোহয়মচিন্ত্যোহয়মবিকাৰ্যোহয়মুচ্যতে।

তস্মাদেৰং ৰিদিত্বৈনং নানুশোচিতুমহঁসি।। ২৫।।

এই আত্মা অব্যক্ত অৰ্থাৎ ইন্দ্ৰিয়ৰ বিষয় নহয়। ইন্দ্ৰিয়ৰ দ্বাৰা ইয়াক বুজাব নোৱাৰি। যেতিয়ালৈকে ইন্দ্ৰিয় আৰু বিষয়ৰ সংযোগ আছে, তেতিয়ালৈকে আত্মা, কিন্তু তাক বুজাব নোৱাৰি। সি অচিন্ত্য। যেতিয়ালৈকে চিত্ত আৰু চিত্তৰ টো আছে তেতিয়ালৈকে ই শাস্ত্ৰতেই, কিন্তু আমাৰ দৰ্শণ, উপভোগ আৰু প্ৰবেশৰ বাবে নহয়। সেয়ে চিত্তক নিৰোধ কৰিব লাগে।

আগতে শ্ৰীকৃষ্ণই কৈ আহিছে যে অসং বস্তুৰ অস্তিত্ব নাই আৰু সত্যৰ তিনিও কালত অভাৱ নাই। সেই সত্যই আত্মা। আত্মা হ'ল অপৰিবৰ্ত্তনশীল, শাস্ত্ৰত, সনাতন আৰু অব্যক্ত। তত্ত্বদৰ্শী সকলে আত্মাক এই গুণ বিশিষ্ট বুলি কৈছে। দহটা ভাষা জনা জনৰ বাবেও এই দেখা হোৱা নাই, সম্বুদ্ধিশালী সকলেও নেদেখিলে, আনকি তত্ত্বদৰ্শী সকলেহে দেখিলে। শ্ৰীকৃষ্ণইকৈছে তত্ত্বই হ'ল পৰমাত্মা। মনক নিৰোধ কৰা সাধকে তাৰ দৰ্শন পায় আৰু তাত প্ৰবেশ কৰে। প্ৰাপ্তীকালত ভগৱান প্ৰাপ্ত হয় আৰু পিছৰ কালত তেওঁ নিজৰ আত্মাক ঈশ্বৰীয় গুণ ধৰ্মেৰে বিভূষিত হোৱা দেখা পায়। তেওঁ দেখিবলৈ পায় যে আত্মাই সত্য, সনাতন আৰু পৰিপূৰ্ণ। এই আত্মা অচিন্ত্য। ই বিকাৰ ৰহিত অৰ্থাৎ কেতিয়াও সলনি নহয়। সেয়ে হে অৰ্জুনঙ্গ আত্মাক এনেকুৱা জানি তুমি বেজাৰ নকৰাই শ্ৰেয়। এতিয়া শ্ৰীকৃষ্ণই অৰ্জুনৰ ভাৱক বিৰোধ কৰিব বিচাৰিছে, তৰ্কৰে-

অথ চৈনং নিত্যজাতং নিত্যং বা মন্যসে মৃতম্।

তথাপি ত্বং মহাবাহো নৈৰং শোচিতুমহঁসি।। ২৬।।

যদি তুমি ইয়াক সদায় জন্ম হোৱা আৰু মৃত্যু হোৱা বুলি জানি ললেও শোক কৰা উচিত নহয়, কিয়নো-

जातस्य हि प्रब्रुवो मृत्युर्ध्वं जन्म मृतस्य च ।

तस्मादपविहार्येहर्था न त्वं शोचिष्यसि ॥ २१ ॥

एनेदबे भारि ललेओ जन्म लोरा जनर निश्चित मृत्यु आरु मबाजनर निश्चित जन्म ह्येइ । तार कारणेओ एको करिब नोराबा तुमि एइ विषयत शोक कबाटो उचित नह्य । यार कोनो विकल्प ब्यरह्यइ नई, तक लै शोक कबा माने अन्य एटा दुखक आमन्त्रण कबा ।

अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्तमथ्यानि भावत ।

अव्यक्तनिधनान्ये तत्र का पविरेदना ॥ २८ ॥

अर्जुन ! सम्पूर्ण प्राणी जन्मर आगतेओ शरीर नथका आरु मृत्युवर पाह्यतो देह नथका ह्य । जन्मर आगतेओ आरु मृत्युवर पिह्यतो देखिबलै पोरा नायाय । मात्र जन्मर पबा मृत्यु पर्याप्त ह्य, देहधारी ह्ये थाके । सेये एइ परिवर्तनर कारणे मिह्यइ किय चिन्ता कबा ? एइ आत्माक कोनो देखा नापाय ? एइ सन्दर्भत कय-

आश्चर्यवत्पश्यति कश्चिदेन-

माश्चर्यवद्दति तथैव चान्यः ।

आश्चर्यवत्तेन मन्यः शृणोति

श्रद्धाप्येन वेद न तैव कश्चित् ॥ २९ ॥

प्रथमे श्रीकृष्णइ कैछिल ये, एइ आत्माक तद्दर्शी सकलेहे देखे, एतिया तद्दर्शीर दूर्लभतार ओपरत प्रकाश करि कय ये बह्यत कम महापुरुषेहे एइ आत्माक आश्चर्य ह्ये चाय । नुशुने, प्रतेक्ष्य देखे आरु तेनेकै अन्य महापुरुषे आश्चर्यरे तार तत्र कय । यिजने देखिछे तेओँहे यथार्थ बारे कब पाबिछे । अन्य कोनो कम साधकेहे इयाक आश्चर्यरे शुने, सकलोरे नुशुनेओ, कियनो यार अधिकार प्राप्त ह्येछे सिहे शुने । हे अर्जुन ! कोनोबाइतो शुनिलेओ एइ आत्माक नाजाने; कियनो साधक पूर्ण होरा नई । आपुनि लाख ज्ञानर कथा शुकक, बृजक, बह्यते बृजक, शुनिबलै आग्रही ह्ये थाकक, किन्तु मोह ह'ल वर प्रबल, अल्प समयर पिह्यतेइ आपुनि आपोनार सांसारिक ब्यरह्यत लिप्त ह्ये पबिब । शेषत श्रीकृष्णइ कय-

দেহী নিত্যমবধ্যোহয়ং দেহে সৰ্বস্য ভাৰত।

তস্মাৎ সৰ্বাণি ভূতানি ন ত্বং শোচিতুমহঁসি।। ৩০।।

অৰ্জুনঙ্গ এই আত্মা সকলোৰে শৰীৰত সদায়েই অবধ্য আৰু অকাটা হৈ আছে। সেই কাৰণে সম্পূৰ্ণ ভূত প্ৰাণীৰ বাবে তুমি শোক কৰাটো যোগ্য নহয়।

‘আত্মাই সনাতন’ এই তথ্যৰ সম্পূৰ্ণ প্ৰতিবাদিতা আৰু প্ৰভূতাৰ বৰ্ণন কৰি এই প্ৰশ্ন ইয়াতেই পূৰা কৰা হ’ল। এতিয়া প্ৰশ্ন হয় ইয়াৰ প্ৰাপ্তী কেনেকৈ হয়? সম্পূৰ্ণ গীতাত ইয়াৰ দুটাহে ৰাস্তা দেখুৱা আছে- প্ৰথম পথ নিষ্কাম কৰ্মযোগ আৰু দ্বিতীয়টো হ’ল জ্ঞানযোগ। দুইটা পথতেই কৰা কৰ্ম একেই। সেই কৰ্মৰ অনিবাৰ্যতাৰ ওপৰত জোৰ দি যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই জ্ঞানযোগৰ বিষয়ত কয়-

স্বধৰ্মমপি চাবেক্ষ্য ন ৰিকম্পিতুমহঁসি।

ধৰ্ম্যাঙ্কি যুদ্ধাচ্ছেয়োহন্যৎ ক্ষত্ৰিয়স্য ন বিদ্যতে।। ৩১।।

অৰ্জুন! স্বধৰ্মক দেখিও তুমি ভয় কৰা যোগ্য নহয়, কিয়নো ধৰ্ম সংযুক্ত যুদ্ধতকৈ পৰম কল্যাণকাৰী মাৰ্গ ক্ষত্ৰিয়ৰ কাৰণে একো নাই। এতিয়ালৈকেতো **‘আত্মা শাস্বত’, ‘আত্মা সনাতন’**, সেইটোৱেই একমাত্ৰ ধৰ্ম; আদিতো কোৱা হৈছে। এতিয়া স্বধৰ্মনো কেনেকুৱা? ধৰ্মতো একমাত্ৰ আত্মাহে। সেইটো অচল, স্থিৰ, তেতিয়াহলে ধৰ্মাচৰণ কি? বস্তুতঃ এই আত্মা পথত প্ৰবৃত্ত হবৰ কাৰণে ক্ষমতা প্ৰত্যেক ব্যক্তিৰ বেলেগ বেলেগ। স্বভাৱৰ পৰা উৎপন্ন এই ক্ষমতাক স্বধৰ্ম বুলি কোৱা হৈছে।

এই এক সনাতন আত্মিক পথত চলা সাধকক মহাপুৰুষে স্বভাৱত তেওঁলোকৰ ক্ষমতা অনুসৰি চাৰিটা শ্ৰেণীত ভাগ কৰিছে- শূদ্ৰ, বৈশ্য, ক্ষত্ৰিয় আৰু ব্ৰাহ্মণৰ সাধকৰ আৰম্ভণীত প্ৰত্যেক সাধকেই শূদ্ৰ অৰ্থাৎ অল্পজ্ঞ। ঘণ্টা ঘণ্টা ধৰি সাধন কৰিব বহিলেও দহ মিনিটও নিজৰ পক্ষত আনিব নোৱাৰে। তেওঁ প্ৰকৃতিৰ মায়াজালক কাটিব নোৱাৰে। এই অৱস্থাত মহাপুৰুষৰ সেৱাৰ দ্বাৰা তাৰ স্বভাৱত সদৃগুণৰ উদয় হয়। তেওঁ বৈশ্য শ্ৰেণীৰ সাধকলৈ উন্নিত হয়। আত্মিক সম্পত্তিহে স্থিৰ সম্পত্তি। এই কথা তেওঁ লাহে লাহে সংগ্ৰহ

কৰে আৰু গোপালন অৰ্থাৎ ইন্দ্ৰিয়ৰ সুৰক্ষাৰ কাৰণে সক্ষম হয়। কাম-ক্ৰোধ ইত্যাদিৰ দ্বাৰা ইন্দ্ৰিয়ৰ হিংসা হয় আৰু বিবেক বৈৰাগ্যৰ দ্বাৰা এওঁলোকৰ সুৰক্ষা হয়, কিন্তু প্ৰকৃতিক একেবাৰে শেষ কৰা ক্ষমতা এওঁৰ নাথাকে। ক্ৰমশঃ উন্নত কৰি কৰি সাধকৰ অন্তঃকৰনত তিনিও গুণক কাটিব পৰা ক্ষমতা অৰ্থাৎ ক্ষত্ৰিয়ত্ব প্ৰাপ্ত হয়। এই স্তৰত প্ৰকৃতি আৰু তাৰ বিকাৰ বিলাকক নাশ কৰিব পৰা ক্ষমতা প্ৰাপ্ত হয়; সেইকাৰণে যুদ্ধ ইয়াৰ পৰাই আৰম্ভ হয়। ক্ৰমশঃ সাধন কৰি কৰি সাধক ব্ৰাহ্মণত্বৰ শেণীত সলনী হয়। এই সময়ত মনৰ শমন ইন্দ্ৰিয়ৰ দমন, খাৰাবাহী চিন্তা, সৰলতা, অনুভৱ, জ্ঞান ইত্যাদি লক্ষণ সাধকৰ গাত স্বাভাৱিক ভাবে প্ৰবাহিত হব ধৰে। এই বিলাকৰ দ্বাৰাই গৈ গৈ ক্ৰমশঃ তেওঁ ব্ৰহ্মত প্ৰবেশ কৰে; যেতিয়া তেওঁ ব্ৰাহ্মণও হৈ নাথাকে।

বিদেহৰ ৰজা জনকৰ ৰাজ সভাত মহৰ্ষি যাজ্ঞবল্ক্যই চাক্ৰায়ন উপস্থি, কহোল, আৰুণি, উদালক আৰু গাৰ্গীৰ প্ৰশ্নৰ সমাধান কৰি কলে যে- আত্মা সাক্ষাৎকাৰ পূৰ্ণ ভাবে সম্পাদন কৰা জনেই ব্ৰাহ্মণ হয়। এই আত্মাই লোক, পৰলোক আৰু সমস্ত প্ৰাণীৰ ভিতৰত নিয়মিত কৰে। সূৰ্য্য, চন্দ্ৰ, পৃথিৱী, জল, বায়ু, অগ্নি, তৰাগণ, অন্তৰিক্ষ, আকাশ অথবা প্ৰত্যেক ক্ষন এই আত্মাৰে প্ৰশাসনত আছে। এই তোমাৰ আত্মাই অন্তৰ্য্যামী অমৃত হয়। আত্মা অক্ষৰ, ইয়াৰ ভিন্ন সকলো নাশশীল। যি জনে এই লোকত থাকি এই অক্ষৰক নজনাকৈ হৰন কৰে, তপ কৰে, হাজাৰ বছৰলৈকে যজ্ঞই কৰি থাকক, তেওঁৰ এই সকলো কৰ্ম নাশৱান। যি জনে এই অক্ষৰক নজনাকৈ এই লোকত মৰে, তেওঁ বেচোৰা, কৃপণ আৰু যি জনে জানে এই অক্ষৰক জানি এই লোকত মৰে তেওঁ ব্ৰাহ্মণ। (বৃহদাৰণ্যকোপনিষদ (৩/৪-৫-৭-৮)

অৰ্জুন হ'ল ক্ষত্ৰিয় শ্ৰেণীৰ সাধক। শ্ৰীকৃষ্ণই কয় যে ক্ষত্ৰিয় শ্ৰেণীৰ সাধকৰ বাবে যুদ্ধৰ অতিৰিক্ত কোনো কল্যাণকাৰী ৰাস্তাই নাই। প্ৰশ্ন হয় যে এই ক্ষত্ৰিয় কি? প্ৰায় মানুহ বিলাকে ইয়াৰ অৰ্থ সমাজত জন্মা ব্ৰাহ্মণ, ক্ষত্ৰিয়, বৈশ্য, শূদ্ৰ বুলি জানে। এই বিলাককে চাৰি বৰ্ণ বুলি ভাবে। কিন্তু নহয়, শাস্ত্ৰকাৰে স্বয়ং কৈছে যে ক্ষত্ৰিয় কি, বৰ্ণ কি? ইয়াত তেওঁ মাত্ৰ ক্ষত্ৰিয়ৰ নাম লৈছে, আৰু আগলৈ ওঠৰ আধ্যাত এই প্ৰশ্নৰ সমাধান প্ৰস্তুত কৰিছে যে বস্তুত;

এই বৰ্ণ কি? আৰু কেনেকৈ ই পৰিবৰ্তন হয়।

শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছে ‘চাতুৰ্বৰ্ণ্যং ময়াসৃষ্টং’(গীতা ৪/১৩) চাৰি বৰ্ণৰ সৃষ্টি ময়ে কৰিছো। তেতিয়া হলে মানুহক ভাগ কৰিলে নে? শ্ৰীকৃষ্ণই কয়-নহয়, ‘**গুণ কৰ্ম বিভাগশঃ**’ গুণৰ মাধ্যমেৰে কৰ্মক চাৰি ভাগত ভাগ কৰা হৈছে। এইটো চৰ লাগিব যে সেই কৰ্মটো কি যাক ভাগ কৰা হ’ল? গুণ পৰিবৰ্তনশীল। সাধনাৰ উচিত প্ৰক্ৰিয়াৰ দ্বাৰা তামসীৰ পৰা ৰাজসী আৰু ৰাজসীৰ পৰা সাত্বিক গুণলৈ পৰিবৰ্তন হয়। অন্ততঃ ব্ৰাহ্মণ স্বভাৱ আহি পৰে। সেই সময়ত ব্ৰাহ্মণ প্ৰৱেশ কৰাৰ পৰা সকলো যোগ্যতা সেই সাধকৰ হয়। বৰ্ণ সম্বন্ধীয় প্ৰশ্ন ইয়াৰ পৰা আৰম্ভ হৈ ওঠৰ আধ্যাত পূৰ্ণ হয়।

শ্ৰীকৃষ্ণই এইটোত মান্যতা দিছে-

‘শ্ৰেয়ান্ধৰ্মো বিগুণঃ পৰধৰ্মাত্ স্বনুষ্ঠিতাত্’

স্বভাৱতে উৎপন্ন হোৱা ধৰ্মত প্ৰবৃত্ত হব পৰা ক্ষমতা যিটো স্তৰৰ পৰা হয়, যদিও তেওঁ গুণৰহিত শুদ্ৰ শ্ৰেণীৰে থাকক, তেতিয়াও পৰম কল্যাণ হয়, কিয়নো আপুনি তাৰ পৰাই উদ্ধৰমুখী হব ধৰে। তাতকৈ ওপৰত থকা সকলৰ যদি নকল কৰিব বিচাৰে তেতিয়া নষ্ট হৈ যাব। অৰ্জুন ক্ষত্ৰিয় শ্ৰেণীৰ সাধক আছিল, সেই কাৰণে শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছিল যে অৰ্জুনৰ নিজৰ স্বভাৱৰ পৰা উৎপন্ন এই যুদ্ধত প্ৰবৃত্তি হবৰ কাৰণে নিজৰ ক্ষমতা দেখিও তুমি ভয় কৰা উচিত নহয়। ইয়াতকৈ অধিক কল্যাণকাৰী কাৰ্য্য ক্ষত্ৰিয়ৰ অন্য নায়েই। এই সম্পৰ্কত স্পষ্ট কৰি যোগেশ্বৰে পূণৰ কৈছে -

যদৃচ্ছয়া চোপপন্নং স্বৰ্গদ্বাৰমপাবৃতম্ ।

সুখিনঃ ক্ষত্ৰিয়াঃ পাৰ্থ লভন্তে যুদ্ধমীদৃশম্ ॥ ৩২ ॥

পাৰ্থিৱ শৰীৰৰ বথ সাজি অচ্যুৎ লক্ষ্য ভেদিব পৰা হৈ অৰ্জুন। নিজেই প্ৰাপ্ত হোৱা, স্বৰ্গৰ খোলা দুৱাৰ ৰূপী এই যুদ্ধক ভাগ্যৱান ক্ষত্ৰিয়হে প্ৰাপ্ত কৰিব পাৰে। ক্ষত্ৰিয় শ্ৰেণী সাধকত তিনিও গুণক কাটিব পৰা ক্ষমতা থাকে। তাৰ কাৰণে স্বৰ্গৰ দুৱাৰ আছে, কিয়নো তাৰ ওচৰত দৈৱ সম্পদ পূৰ্ণত অৰ্জিত থাকে, স্বৰত বিচৰণ কৰিব পৰা ক্ষমতা তেওঁৰ থাকে। এয়ে স্বৰ্গৰ খোলা দুৱাৰ।

ক্ষেত্র-ক্ষেত্রজ্ঞৰ এই যুদ্ধক ভাগ্যবান ক্ষত্ৰিয়েহে পায়, তেওঁত হে এই সংঘৰ্ষৰ ক্ষমতা আছে। পৃথিৱীত যুদ্ধ হৈয়ে থাকে। বিশ্ব যুদ্ধ হয়, প্ৰত্যেক জাতিয়ে যুদ্ধ কৰে, কিন্তু শাস্তৰ বিজয় জীকা জনেও নাপায়। যিয়ে লোকক যিমান হেচিব, শেষত তেওঁ সিমানেই হেচা খাব। এইটো কেনেকুৱা বিজয় য'ত ইন্দ্ৰিয় সমূহক শোক গ্ৰস্ত কৰি পেলায়। অন্তত দেহও নাথাকে। বাস্তৱিক সংঘৰ্ষতো ক্ষেত্র-ক্ষেত্রজ্ঞৰহে, য'ত এবাৰ বিজয় প্ৰাপ্ত কৰিলেই প্ৰকৃতিৰ সদাৰ কাৰণে নিৰোধ হয় আৰু পৰম পুৰুষ পৰমাত্মাৰ প্ৰাপ্তী হয়। এইটো এনেকুৱা বিজয়, য'ত পৰাজয় নাই।

অথ চেত্ৰমিমং ধৰ্ম্যাং সঙ্গ্ৰামং ন কৰিষ্যসি।

ততঃ স্বধৰ্মং কীৰ্তিৎ চ হিত্বা পাপমবাস্প্যসি ॥ ৩৩ ॥

আৰু যদি তুমি এই 'ধৰ্মযুক্ত সংগ্ৰাম' অৰ্থাৎ শাস্তৰ সনাতন পৰমধৰ্ম পৰমাত্মাত প্ৰৱেশ কৰাব পৰা ধৰ্ম যুদ্ধ নকৰা তেতিয়া হলে 'স্বধৰ্ম' অৰ্থাৎ স্বভাৱৰ পৰাই উৎপন্ন সংঘৰ্ষ কৰিব পৰা ক্ষমতা, ক্ৰিয়াত প্ৰবৃত্ত হব পৰা ক্ষমতা হেৰুৱাবা আৱগমন আৰু অপকীৰ্ত্তিহে প্ৰাপ্ত কৰিবা। অপকীৰ্ত্তি সম্পৰ্কত প্ৰকাশ কৰি কয়- -

অকীৰ্তিৎ চাপি ভূতানি কথয়িষ্যন্তি তেহব্যয়াম্।

সস্তাৰিতস্য চাকীৰ্তিৰ্ৰণাদতিৰিচ্যতে ॥ ৩৪ ॥

সকলোৱে বহুকাললৈকে তোমাৰ অপকীৰ্ত্তি গাই থাকিব। আজিও পদচ্যুত হোৱা মহাত্মা সকলৰ ভিতৰত বিশ্বামিত্ৰ, পাৰাশৰ, নিমি, শৃঙ্গী ইত্যাদিক গণনা কৰা হয়। বহুতো সাধকে নিজৰ ধৰ্মৰ লৈ ভাৱে যে লোকে আমাক কি কয়? এনেকুৱা ভাৱও সাধনাত সহায়ক হয়। ইয়াৰ ফলত লাগি থাকিবলৈ প্ৰেৰণা পায়। আগলৈকে এই ভাৱে লগ দিয়ে। মান্যজনৰ কাৰণে অপকীৰ্ত্তি মৰনতকৈও অধিক হয়।

ভয়াদ্ৰণাদুপৰতং মংস্যন্তে ত্বাং মহাৰথাঃ।

যেষাং চ ত্বং ৰহ্মমতো ভূত্বা যাস্যসি লাঘবম্ ॥ ৩৫ ॥

যি সকল মহাৰথিৰ দৃষ্টিত তুমি মান্যজন বুলি অভিহিত আছিল,

এতিয়া তেওঁলোকে তুচ্ছ বুলি ভাবিব, সেই সকলে তোমাক ভয়তে পলাল বুলি কব। মহাৰথী কোন? এই ৰাস্তাত মহান পৰিশ্ৰমৰ দ্বাৰা আগবাঢ়া সাধক সকলেই হ'ল মহাৰথী। এইদৰে ইমান পৰিশ্ৰমৰ পিছতো অবিদ্যাৰ ফালে টানিব পৰা কাম, ক্ৰোধ, লোভ, মোহ আদিও মহাৰথীয়ে হয়। তেওঁলোকৰ দৃষ্টিত নিচ হৈ পৰিবা। ইমানেই নহয়, আনকি -

অবাচ্যবাদাংশ্চ বহ্নবদ্যন্তি তৰাহিতাঃ।

নিন্দন্তুস্তৰ সামৰ্থ্যং ততো দুঃখতৰং নু কিম্ ॥ ৩৬ ॥

শত্ৰু সকলে তোমাৰ পৰাক্ৰমৰ নিন্দা কৰি বহুতো নকবলগীয়া বাক্য কব। এটা দোষ আহিলেই চাৰিও ফালৰ পৰা নিন্দা আৰু সমালোচনাৰে বেৰি থাকিব - নোকোৱা কথাও কব। ইয়াতকৈ ডাঙৰ দুখ কি থাকিব পাৰে?

সেয়ে—

হতো বা প্ৰাপ্যসি স্বৰ্গংজিত্বা বা ভোক্ষ্যসে মহীম্।

তস্মাদুক্তিষ্ঠ কৌন্তেয় যুদ্ধায় কৃতনিশ্চয়ঃ ॥ ৩৭ ॥

এই যুদ্ধত মৰিলে স্বৰ্গ প্ৰাপ্তী কৰিবা, স্বৰত বিচৰণৰ ক্ষমতা হব। শ্বাসৰ বাহিৰে প্ৰকৃতিত বিচৰণ কৰাৰ প্ৰবাহ নিৰুদ্ধ হৈ যাব। পৰমদেৱ পৰমাত্মাত প্ৰবেশ কৰাৰ পৰা দৈৱি সম্পদ হৃদয়ত পূৰ্ণতঃ প্ৰবাহিত হব। অথবা এই যুদ্ধত জিকিলে মহামহিম স্থিতিত প্ৰাপ্ত হবা। সেইকাৰণে অৰ্জুনঙ্গ উঠা, যুদ্ধৰ কাৰণে সাজু হোৱা।

প্ৰায়ে মানুহে এই শ্লোকৰ অৰ্থ এনেভাবে বুজে যে এই যুদ্ধত মৰিলে স্বৰ্গলৈ যাবা, আৰু জিকিলেতো পৃথিৱীত ভোগ কৰিব পাৰিবা; কিন্তু আপোনাৰ মনত নিশ্চয় আছে, অৰ্জুনে কৈছিলে -“ভগৱানঙ্গ পৃথিৱীয়েই নহয়, এই তিনিও লোকৰ সাম্ৰাজ্য আৰু দেবতাৰ স্বামীত্ব অৰ্থাৎ ইন্দ্ৰপদ প্ৰাপ্ত হলেও, মই সেই উপায় বিচাৰি পোৱা নাই, যিটোৱে মোৰ শোক দূৰ কৰিব। যদি ইমানেই মাত্ৰ পাম্ তেতিয়া হলে হে গোবিন্দ মই কেতিয়াও যুদ্ধ নকৰো।” যদি শ্ৰীকৃষ্ণই ইমানতো কয় যে - অৰ্জুন? যুঁজা, জিকিলে পৃথিৱীৰ অধিপতি হবা, হাৰিলে স্বৰ্গৰ নাগৰিক হবা। তেতিয়া হলে শ্ৰীকৃষ্ণই কি দিব? অৰ্জুন ইয়াতকৈ

আগলৈ সত্য, শ্ৰেয় (পৰম কল্যাণ) ৰ কামনা ৰখা শিষ্য আছিল, যিটো সদগুৰুদেৱ শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছিল যে ক্ষেত্ৰ-ক্ষেত্ৰজ্ঞৰ এই সংঘৰ্ষত যদি শৰীৰৰ সময় পূৰা হৈ যায় আৰু লক্ষ্যত উপনিত হব পৰা নহ'ল, তথাপিতো স্বৰ্গ প্ৰাপ্তী হবা; অৰ্থাৎ স্বৰত বিচৰণ কৰিব পৰা ক্ষমতা প্ৰাপ্ত হবা। দৈৱি সম্পদ হৃদয়ত ভৰি পৰিব, আৰু এই শৰীৰ থকাতই যদি সংঘৰ্ষত সফল হৈ যায়, তেতিয়াহলে 'মহিম' সকলোতকৈ মহান ব্ৰহ্মাৰ মহিমা উপভোগ কৰিবা, মহামহিমৰ স্থিতি প্ৰাপ্ত কৰি লব পাৰিবা। জিকিলেও সৰ্বস্ব অৰ্থাৎ মহামহিমত্ব পাবা আৰু হাৰিলেও দেৱত্ব পাবা দুইটাই দুহাতত লাড়ু হৈ থাকিব। লাভতো লাভ লোকচানতো লাভ। পুনৰ ইয়াত জেৰ দি কয় -

সুখ দুঃখে সমে কৃত্বা লাভালাভৌ জয়াজয়ে।

ততো যুদ্ধায় যুজ্যস্ব নৈৰং পাপমৰাণ্যসি।। ৩৮।।

এই ধৰণে সুখ-দুখ, লাভ-হানী, জয়-পৰাজয় সমান ভাবি তুমি যুদ্ধৰ কাৰণে সাজু হোৱা। যুদ্ধ কৰিলে তুমি পাপত প্ৰাপ্ত নহবা। অৰ্থাৎ সুখতো সৰ্বস্ব আৰু দুখতো দেৱত্ব। লাভত মহিমৰ স্থিতি অৰ্থাৎ সৰ্বস্ব আৰু হানীতো দেৱত্ব। জয়ত মহামহিমৰ স্থিতি আৰু পৰাজয়তো দৈৱি সম্পদৰ অধিকাৰ। এই ধৰণে নিজৰ লাভ-লোকচানৰ ভালদৰে নিজে বুজি লৈ তুমি যুদ্ধৰ বাবে সাজু হোৱা। যুদ্ধ কৰিলেহে দুইটা বস্তুৱেই পাবা। যুদ্ধ কৰিলে পাপ অৰ্থাৎ অহা-যোৱা কৰিব নালাগিব। সেইয়ে তুমি যুদ্ধৰ কাৰণে সাজু হোৱা।

এষা তেভিহিতা সাঙ্খ্যে বুদ্ধিৰ্যোগে ত্বিমাং শৃণু।

বুদ্ধ্যা যুক্তো যয়া পাৰ্থ কৰ্মবন্ধং প্ৰহাস্যসি।। ৩৯।।

হে পাৰ্থ! এই বুদ্ধি তোমাৰ কাৰণে জ্ঞানযোগ বিষয়ত কোৱা হৈছে। কোন বুদ্ধি? এইটোয়েই যে যুদ্ধ কৰা। জ্ঞানযোগত ইমানেই যে কোৱা হৈছে, নিজক চাই, লাভ-লোকচানক ভালদৰে চাইচিতি জিকিলেতো মহামহিম স্থিতি আৰু হাৰিলেতো দেৱত্ব, জয়তো সৰ্বস্ব আৰু পৰাজয়তো দেৱত্ব দুই ফালেই লাভ। যুদ্ধ নকৰিলে সকলোৱে আমাক বেয়া কব, ভয়ত পলাল বুলি কব, অপকীৰ্ত্তি হব; এই ধৰণে নিজৰ অস্তিত্বক সন্মুখত ৰাখি স্বয়ং বিচাৰ কৰি যুদ্ধত অগ্ৰসৰ হোৱাই হ'ল জ্ঞানযোগ।

প্ৰায় মানুহত এই ভুল ধাৰণা আছে যে জ্ঞানমাৰ্গত কৰ্ম (যুদ্ধ) কৰিব নালাগে। তেওঁলোকে কয় জ্ঞানমাৰ্গত কৰ্ম নাই। মইতো ‘শুদ্ধ’, ‘বুদ্ধ’, ‘চৈতন্য’, ‘অহং ব্ৰহ্মাস্মি’ গুণেৰে পৰিপূৰ্ণ এনেকুৱা বুলি বহি থাকে। যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণৰ অনুসৰি এইটো জ্ঞানযোগ নহয়। জ্ঞানযোগতো সেই কৰ্ম কৰিব লাগিব, যি নিষ্কাম কৰ্মযোগত কৰা হয়। দুটাতেই মাত্ৰ বুদ্ধিৰ দৃষ্টিকোণ বেলেগ। জ্ঞানমাৰ্গী সকলে নিজৰ সামৰ্থ্য বুদ্ধি, নিজৰ ওপৰত নিৰ্ভৰ কৰি কৰ্ম কৰে আনকি নিষ্কাম কৰ্মযোগীয়ে ইষ্টত অশ্ৰিতহৈ কৰ্ম কৰে। কৰ্ম কৰা দুটা মাৰ্গতেই আছে আৰু সেই কৰ্মও এক, য’ত দুটা মাৰ্গতে কৰা হয়। মাত্ৰ কৰ্ম কৰাৰ দৃষ্টিকোণ দুটা।

অৰ্জুন! এই বুদ্ধিক এতিয়া তুমি নিষ্কাম কৰ্ম যোগৰ বিষয়ত শুনা যত যুক্ত হলে তোমাৰ কৰ্মৰ বন্ধন সম্পূৰ্ণ নাশ হৈ যাব। ইয়াত শ্ৰীকৃষ্ণই কৰ্মৰ নাম প্ৰথমে লৈ আছে, কিন্তু এইটো নকলে যে কৰ্ম কি? কৰ্মৰ বিষয়ে নকৈ প্ৰথমে কৰ্মৰ বিশেষতাৰ ওপৰত প্ৰকাশ কৰি কয় -

নেহাভিক্ৰমনাশোহস্তি প্ৰত্যবায়ো ন বিদ্যতে।

স্বল্পমপ্যস্য ধৰ্মস্য ত্ৰায়তে মহতো ভয়াৎ।। ৪০।।

এই নিষ্কাম কৰ্ম যোগত আৰম্ভনীৰ অৰ্থাৎ বীজৰ নাশ নহয়। সীমিত ফলৰ দোষও নাই। সেই কাৰণে এই নিষ্কাম কৰ্মৰ, এই কৰ্মৰে সম্পাদিত ধৰ্মৰ অলপমানো সাধনে জন্ম-মৃত্যু ৰূপী মহান ভয়ৰ পৰা উদ্ধাৰ কৰে। আপুনি এই কৰ্মক বুজক আৰু সেই ৰাস্তাত দুখোজ দিয়ক (যি সদৃ গৃহস্থ আশ্ৰমত থাকিও চলি আছে, সাধকতো চলিহে) বীজ মাত্ৰ পেলাই দিয়ক, তেতিয়াহলে অৰ্জুন! বীজৰ নাশ নহয়। প্ৰকৃতিত কোনো ক্ষমতাই নাই, এনে কোনো অস্ত্ৰই নাই এই সত্যক নাশ কৰিব। প্ৰকৃতিয়ে ঢাকি পেলাব পাৰে, দেৰি কৰি দিব পাৰে, কিন্তু সাধনাৰ আৰম্ভ কেতিয়াও মচিব নোৱাৰে।

আগলৈ শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছে যে সকলো পাপীতকৈ মহাপাপী নহওক কিয়, জ্ঞানৰূপী নৌকাৰ দ্বাৰা নিঃসন্দেহে পাৰ হব। সেই একে কথাকে ইয়াত কৈছে যে অৰ্জুন! নিষ্কাম কৰ্মযোগৰ বীজাৰোপণ কৰাচোন, তেতিয়া সেই বীজৰ কেতিয়াও নাশ নহয়। বিপৰীত ফলৰূপী দোষো ইয়াত নাই যে আপোনাক স্বৰ্গ, বিদ্ধি-সিদ্ধিলৈকে লৈ গৈ এৰি দিয়ক। আপুনি লাগিলে এই

সাধনা এৰি দিয়ক, কিন্তু এই সাধনাই আপোনাৰ উদ্ধাৰ কৰিহে এৰিব। এই নিষ্কাম কৰ্মযোগৰ অলপো সাধনাই জন্ম-মৃত্যুৰ মহান ভয়ৰ পৰা উদ্ধাৰ কৰে। “অনেক জন্ম সংসিদ্ধস্তত্তে যাতি পৰাং গতিম্।” কৰ্মৰ এই বীজাৰোপণে বহুতো জন্মৰ পিছতো তাতে ঠিয় কৰাই দিয়ে য’ত পৰমধাম পৰমগতি আছে। এই প্ৰসংগত তেখেতে কয়-

ব্যবসায়াত্মিকা বুদ্ধিৰেকেহ কুৰ্ণনন্দন।

বহুশাখা হ্যনস্তাশ্চ বুদ্ধয়োহব্যবসায়িনাম্ ॥ ৪১ ॥

অৰ্জুন! এই নিষ্কাম কৰ্মযোগত ক্ৰিয়াত্মক বুদ্ধি একেই থাকে। ক্ৰিয়াও একেই পৰিণামও একেই। আত্মিক সম্পত্তিহে স্থিৰ সম্পত্তি। এই সম্পত্তিক প্ৰকৃতিৰ দ্বন্দ্বত লাহে লাহে আৰ্জণ কৰাই হ’ল ব্যৱসায়। এই ব্যৱসায় অথবা নিশ্চয়াত্মক ক্ৰিয়াও একেই। তেতিয়াহলে যি বিলাকে বহুতো ক্ৰিয়াৰ কথা কয়, তেওঁলোকে কি ভজন নকৰেনে? শ্ৰীকৃষ্ণই কয়- হয়, তেওঁলোকে ভজন নকৰে। তেনে পুৰুষৰ বুদ্ধি অনন্ত শাখায়ুক্ত হয়, সেয়ে অনন্ত ক্ৰিয়াৰ বিস্তাৰ কৰে।

যামিমাং পুষ্পিতাং ৰাচং প্ৰবদন্ত্যৰিপশ্চিতঃ।

বেদবাদৰতাঃ পাৰ্থ নান্যদস্তীতি ৰাদিনঃ ॥ ৪২ ॥

কামাত্মানঃ স্বৰ্গপৰা জন্মকৰ্ম ফল প্ৰদাম্।

ক্ৰিয়াবিশেষ বহুলাং ভোগৈশ্বৰ্যগতিং প্ৰতি ॥ ৪৩ ॥

পাৰ্থ! তেওঁলোক ‘কামাত্মানঃ’ কামনাৰে যুক্ত ‘বেদবাদৰতা’ বেদৰ বাক্যত অনুৰক্ত ‘স্বৰ্গপৰা’ স্বৰ্গকেই পৰম লক্ষ্য বুলি ভাবে যত তাৰ আগলৈ একোৱেই নাই, এনেকুৱা অবিবেকীজন জন্ম-মৃত্যুৰ ফল দিব পৰা ভোগ আৰু যশস্যৰ প্ৰাপ্তীৰ বাবে বহুতো ক্ৰিয়া বিস্তাৰ আৰু দেখুৱাবৰ বাবে অতি সুন্দৰ বাণীত ব্যক্ত কৰে। অৰ্থাৎ অবিবেকী সকলৰ বুদ্ধি অনন্ত ভেদেৰে পৰিপূৰ্ণ হয়। তেওঁলোক ফল দিব পৰা বাক্যতে অনুৰক্ত থাকে, বেদৰ বাক্যকে প্ৰমাণ ভাবি স্বৰ্গকেই শ্ৰেষ্ঠ বুলি ভাবে। তেওঁলোকৰ বুদ্ধি বহু ভেদেৰে পৰিপূৰ্ণ, সেইকাৰণে অনন্ত ক্ৰিয়াৰ ৰচনা কৰিব পাৰে। তেওঁলোকে নামতো পৰমতত্ব পৰমাত্মাৰেই লয়, কিন্তু তাৰ অন্তৰালত অনন্ত ক্ৰিয়াৰ বিস্তাৰ কৰে। তেতিয়া

হ'লে অনন্ত ক্ৰিয়া কি কৰ্ম নহয়নে? শ্ৰীকৃষ্ণই কয়- নহয়, অনন্ত ক্ৰিয়া কৰ্ম নহয়, তেতিয়া নিশ্চিত ক্ৰিয়া হয় নেকি? শ্ৰীকৃষ্ণই এতিয়ালৈকে কোৱা নাই। এতিয়া ইমানেই কৈছে যে অবিবেকী সকলৰ বুদ্ধি অনন্ত প্ৰশাখায়ুক্ত হয়, সেইয়ে তেওঁলোকৰ ক্ৰিয়াও অনন্ত। তেওঁলোকে অকল বিজ্ঞাৰেই নকৰে আনকি অলংকাৰীক ভাৱত তাক ব্যক্তও কৰে। তাৰ প্ৰভাৱ কি হয়?

ভোগৈশ্বৰ্য প্ৰসক্তানাং তয়াপহতচেতসাম্।

ব্যৱসায়াত্মিকা বুদ্ধিঃ সমাধৌ ন বিধীয়তে ॥ ৪৪ ॥

তেওঁলোকৰ বাণীৰ চাপ যাৰ অন্তৰত সোমাই পৰে, অৰ্জুন! তেওঁলোকৰো বুদ্ধি নষ্ট হয় যদিও তেওঁলোকে একো নাপায়। সেই বাণীৰ দ্বাৰা হৰণ কৰা চিত্তক আৰু ভোগ-ঐশ্বৰ্য্যত আসক্তি থকা পুৰুষৰ অন্তঃকৰণত ক্ৰিয়াত্মক বুদ্ধি নাথাকে, ইষ্টত সমাধিস্থ কৰিব পৰা নিশ্চয়াত্মক ক্ৰিয়াও তাত নাথাকে।

এনে অবিবেকীৰ বাণী শুনে কোনে? ভোগ আৰু ঐশ্বৰ্য্যত আসক্তি থকা লোকেহে শুনে; অধিকাৰ বিশিষ্ট লোকে নুশুনে। এনে পুৰুষত সম আৰু আদি তত্বত প্ৰৱেশ কৰাব পৰা নিশ্চয়াত্মক ক্ৰিয়াত সংযুক্ত বুদ্ধিও নাথাকে।

এইখিনিতে প্ৰশ্ন এটা হয়, 'বেদবাৰতাঃ' যি বেদৰ বচনত অনুৰক্ত, তেওঁ ভুল কৰে নে? ইয়াত শ্ৰীকৃষ্ণই কয়-

ত্ৰৈগুণ্যবিষয়া বেদা নিশ্চৈগুণ্যো ভবাজুন।

নির্দ্বন্দ্বো নিত্যসত্ত্বস্থো নির্যোগক্ষেম আত্মবান্ ॥ ৪৫ ॥

অৰ্জুন! 'ত্ৰৈগুণ্যবিষয়া বেদা' বেদে তিনি গুণলৈকেহে প্ৰকাশ কৰে। তাৰ আগলৈ কি হ'ব তেওঁ নাজানে। সেয়ে 'নিশ্চৈগুণ্যো ভবাজুন' অৰ্জুন! তুমি তিনিও গুণতকৈ ওপৰ উঠা অৰ্থাৎ বেদৰ কাৰ্য্যক্ষেত্ৰতকৈও আগ বাঢ়া। কেনেকৈ আগবাঢ়ে? ইয়াত শ্ৰীকৃষ্ণই কয়- 'নির্দ্বন্দ্বঃ' সুখ দুখৰ দ্বন্দ্বৰ পৰা ৰহিত, নিত্য সত্য বস্তুত স্থিত, যোগক্ষেমক নিবিচাৰিও আত্মপৰায়ণ হোৱা। এই ধৰণে ওপৰলৈ উঠা। প্ৰশ্ন হয়- আমিয়ে উঠিম নে আৰু বেদতকৈ ওপৰত উঠিছে? শ্ৰীকৃষ্ণই কয় যে যিয়ে উঠে তেওঁ ব্ৰহ্মক জানে আৰু যি ব্ৰহ্মক

জানে তেওঁৱেই বিপ্ৰ।

যাৱানৰ্থ উদপানে সৰ্বতঃ সম্প্লতোদকে।

তাবান্‌সৰ্বেষু বেদেষু ব্ৰাহ্মণস্য বিজানতঃ।। ৪৬।।

চাৰিওফালে পৰিপূৰ্ণ জলাশয় বোৰ প্ৰাপ্ত কৰাৰ পিছত মানুহক সৰু জলাশয় বোৰৰ যি প্ৰয়োজন হয়, উন্নত ভাৱে ব্ৰহ্মক জানিলোৱা ব্ৰাহ্মণকো বেদৰো সিমানেই প্ৰয়োজন হয়। তাৰ অৰ্থ হ'ল যি বেদতকৈ ওপৰত উঠিব পাৰে সি ব্ৰহ্মকো জানে আৰু তেওঁৱেই ব্ৰাহ্মণ। অৰ্থাৎ তুমি বেদতকৈ ওপৰ উঠা, ব্ৰাহ্মণ হোৱা।

অৰ্জুন ক্ষত্ৰিয় আছিল। শ্ৰীকৃষ্ণই কয় যে ব্ৰাহ্মণ হোৱা। ব্ৰাহ্মণ, ক্ষত্ৰিয় ইত্যাদি বৰ্ণ স্বভাৱৰ ক্ষমতাৰ নাম। এইটো কৰ্ম প্ৰধান, ইয়াক জন্মৰ পৰা পাব নোৱাৰি। যি জনে গংগা প্ৰাপ্ত কৰিলে তেওঁৰ সৰু জলাশয়ৰ কি প্ৰয়োজন? কোনোৱাই শৌচ চাফা কৰে, কোনোৱাই আকৌ গৰুক গা ধুৱায়, ইয়াৰ বাদে কি উপযোগীতা আছে। এই দৰে সাক্ষাৎ ব্ৰহ্মক জনা সেই বিপ্ৰ মহাপুৰুষ জনাক, সেই ব্ৰাহ্মণৰ বেদক সিমানেই প্ৰয়োজন হয়। প্ৰয়োজনো আছে বেদও আছে, পিছৰ জনক তাৰ উপযোগীতা আছে। তাৰপৰাই আলোচনা আৰম্ভ হয়। তাৰ ওপৰিও যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কৰ্ম কৰাৰ সময়ত মানিব লগীয়া সাবধানতা সম্পৰ্কে প্ৰতিপাদণ কৰে।-

কৰ্মণ্যেবাধিকাৰস্তে মা ফলেষু কদাচন।

মা কৰ্মফলহেতুৰ্ভূৰ্মা তে সঙ্গোহস্তুকৰ্মণি।। ৪৭।।

কৰ্ম কৰাৰ হে তোমাৰ অধিকাৰ আছে, ফলত কেতিয়াও নাই। এনেকৈ ভাৱা যে ফল নায়েই। ফলৰ কামনাও নকৰিবা আৰু কৰ্ম কৰাতো তোমাৰ অশ্ৰদ্ধা নহওক।

এতিয়ালৈকে যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই ওনচল্লিশ শ্লোকত প্ৰথমবাৰ কৰ্মৰ নাম লৈছে, কিন্তু এইটো কোৱা নাই যে কৰ্ম কি আৰু তাক কেনেকৈ কৰা যায়? সেই কৰ্মৰ বিশেষতাৰ ওপৰত প্ৰকাশ কৰি কয়-

১. অৰ্জুন! এই কৰ্মৰ দ্বাৰা তোমাৰ কৰ্মবন্ধন নাথাকিব।
২. অৰ্জুন! ইয়াত আৰম্ভণীৰ অৰ্থাৎ বীজৰ নাশ নাই। আৰম্ভ কৰি দিয়া, প্ৰকৃতিৰ ওচৰত কোনো উপায় নাই যে তাক নষ্ট কৰিব পাৰে।
৩. অৰ্জুন! ইয়াত সীমিত ফলৰূপী দোষ নাই যে তোমাক অকল স্বৰ্গ দিব।
৪. অৰ্জুন! এই কৰ্মৰ অলপমানো সাধনাই জন্ম-মৰণৰ এই ভয়ৰ পৰা উদ্ধাৰ কৰিব। কিন্তু এতিয়ালৈকে তেওঁ এইটো কোৱা নাই যে সেই কৰ্ম কি? কেনেকৈ কৰিব লাগিব? এই আধ্যায়ৰে একচল্লিশ শ্লোকত তেওঁ কৈছে-
 ৫. অৰ্জুন! ইয়াত নিশ্চয়াত্মক বুদ্ধি আৰু ক্ৰিয়াও একেই। তেতিয়াহলে বহুত ক্ৰিয়া কৰা বিলাকে ভজন নকৰে নে? শ্ৰীকৃষ্ণই কয়- তেওঁলোকে কৰ্ম নকৰে। ইয়াৰ কাৰণ বিশ্লেষণ কৰি তেও কয় যে অবিবেকী সকলৰ বুদ্ধি অনন্ত শাখায়ুক্ত হয়, সেইকাৰণে তেওঁলোকে অনন্ত ক্ৰিয়াৰ বিস্তাৰ কৰিব পাৰে। তেওঁলোকে দেখুৱাবলৈ শোভায়ুক্ত বাণীও এই ক্ৰিয়াত ব্যক্ত কৰে। এই বাণীবোৰৰ চাপ যাৰ হৃদয়ত বহি যায় তেওঁৰো বুদ্ধি নষ্ট হৈ যায়। সেয়ে নিশ্চয়াত্মক ক্ৰিয়া একেই তথাপিও সেইটো নকলে যে সেইটো ক্ৰিয়া কি?

সাতচল্লিশ শ্লোকত তেওঁ কৈছে- অৰ্জুন! কৰ্ম কৰাত হে তোমাৰ অধিকাৰ আছে, ফলত কেতিয়াও নাই। ফলৰ কামনাও নকৰিবা, কৰ্ম কৰাতো অশ্ৰদ্ধা নাইক, অৰ্থাৎ নিৰন্তৰ তাতে লাগি থাকা, কিন্তু এইটো নকলে যে সেই কৰ্ম কি? প্ৰায়ে এই শ্লোকৰ উদাহৰণ দি মানুহ বিলাকে কয় যে যিকোনো কৰ্ম, ফলৰ কামনা বাদ দি কৰা, হৈ গ'ল নিষ্কাম কৰ্মযোগ; কিন্তু এতিয়ালৈকে শ্ৰীকৃষ্ণই কোৱা নাই যে কৰ্ম কি যাক কৰিবা? ইয়াত মাত্ৰ কৰ্মৰ বিশেষতাৰ ওপৰত হে কোৱা হৈছে যে কৰ্মই কি দিয়ে আৰু কৰ্ম কৰাৰ সময়ত কি সাবধানতা লব লাগে? প্ৰশ্ন তেনে ভাৱেই থাকি গ'ল। যোগেশ্বৰে তিনি আৰু চাৰি আধ্যায়ত এইটো স্পষ্ট কৰিছে। আকৌ ইয়াত জেৰ দি কয়-

যোগস্থঃ কুৰু কৰ্মাণি সঙ্গং ত্যক্ত্বা ধনঞ্জয়।

সিদ্ধ্যসিদ্ধ্যাঃ সমো ভূত্বা সমত্বং যোগ উচ্যতে ॥ ৪৮ ॥

ধনঞ্জয়! আসক্তি আৰু সংগদোষ ত্যাগ কৰি সিদ্ধি আৰু অসিদ্ধিত সমান ভাৱ ৰাখি যোগত স্থিত হোৱা কৰ্ম কৰা। কোন কৰ্ম? নিষ্কাম কৰ্ম কৰা। **‘সমত্বং যোগ উচ্যতে’** এই সমত্ব ভাৱেই যোগ হয়। বিষমতা য’ত নাই, এনেকুৱা ভাৱেই সমত্ব ভাৱ। ঋদ্ধি-সিদ্ধিয়ে বিষম বনায়, আসক্তিয়ে আমাক বিষম বনায়, ফলৰ ইচ্ছাই বিষমতা সৃষ্টি কৰে, সেইকাৰণে ফলৰ কামনা নাথাকক, তথাপিও কৰ্ম কৰাত অশ্রদ্ধা নহওক। দেখা-শুনা সকলো বস্তুৰ আসক্তি ত্যাগ কৰি, প্ৰাপ্তী আৰু অপ্ৰাপ্তীৰ বিষয়ত নভৱাকৈ মাত্ৰ যোগত স্থিত হৈ কৰ্ম কৰা। যোগেৰে চিত্ত স্থিৰ থাকক।

যোগ এক পৰাকাষ্ঠাৰ স্থিতি হয় আৰু আৰম্ভণীৰো স্থিতি হয়। আৰম্ভণীত আমাৰ দৃষ্টি লক্ষ্যৰ ওপৰতে থকা উচিত। সেয়ে যোগৰ ওপৰত দৃষ্টি ৰাখি কৰ্মৰ আচৰণ কৰা উচিত। সমত্ব ভাৱ অৰ্থাৎ সিদ্ধি আৰু অসিদ্ধিত সমভাৱকে যোগ কোৱা হয়। যাক সিদ্ধি আৰু অসিদ্ধিয়ে বিচলিত কৰিব নোৱাৰে, বিষমতা য’ত উৎপন্নই নহয়, এনে ভাৱৰ কাৰণে ইয়াক সমত্ব যোগ বোলা হয়। এইটোৱে ইষ্টৰ প্ৰতি সমত্ব প্ৰদান কৰে, সেইকাৰণে ইয়াক সমত্ব যোগ বুলি কোৱা হয়। কামনাৰ সম্পূৰ্ণ ত্যাগ, সেইকাৰণে ইয়াক নিষ্কাম কৰ্মযোগ বুলি কয়। কৰ্ম কৰিব লাগে, সেইকাৰণে ইয়াক কৰ্মযোগো বুলি কয়। পৰমাত্মাৰ লগত মিলন কৰায়, সেইকাৰণে ইয়াৰ নাম যোগ অৰ্থাৎ মিলন। ইয়াত বৌদ্ধিক স্তৰক ধ্যানত ৰাখিব লাগে যাতে সিদ্ধি আৰু অসিদ্ধি সমভাৱত থাকক, আসক্তি নাথাকক, ফলৰ কামনাও আহিব নালাগে, সেইকাৰণে এই নিষ্কাম কৰ্মযোগক বুদ্ধিযোগো কোৱা হয়।

দূৰেণ হ্যবৰং কৰ্ম বুদ্ধিযোগাদ্ধনঞ্জয়।

বুদ্ধৌ শৰণমঘিচ্ছ কৃপণাঃ ফলহেতবঃ।। ৪৯।।

ধনঞ্জয়! **‘অবৰ কৰ্ম’** নিকৃষ্ট কৰ্ম, বাসনা থকা কৰ্ম, বুদ্ধিযোগতকৈ বহুত দূৰত আছে। ফলৰ কামনা কৰাজন কৃপণ। তেওঁ আত্মাৰ প্ৰতি উদাৰতা ৰখা নাই; সেয়ে সমত্ব বুদ্ধিযোগৰ আশ্ৰয় গ্ৰহণ কৰা। যেনে কামনা, তেনেকৈ পোৱা যাব, তাক ভোগ কৰিবৰ কাৰণে শৰীৰ ধাৰণ কৰিব লাগিব। অহা-যোৱা চলিয়েই থাকিব যেতিয়া কল্যাণ কেনেকৈ হব? সাধকেতো মোক্ষৰ

কামনাও ৰাখিব নালাগে, কিয়নো বাসনাৰ পৰা মুক্ত হোৱাইতো মোক্ষ। ফল প্ৰাপ্তীৰ চিন্তা কৰিলেই সাধকৰ সময় অৰাবত নষ্ট হৈ যায় আৰু ফল প্ৰাপ্তী হোৱাৰ পিছত সেই ফলতে তেওঁ ওলমি পৰে। তাৰ সাধনা সমাপ্ত হৈ যায়। আগলৈ তেওঁ ভজন কিয় কৰিব? তাৰ পৰাই তেওঁ বিচলিত হৈ যায়। সেইকাৰণে সমত্ব বুদ্ধিৰে যোগৰ আচৰণ কৰিব লাগে। জ্ঞানমार्গকো শ্ৰীকৃষ্ণই বুদ্ধিযোগ কৈছিল যে অৰ্জুন! এই বুদ্ধি তোমাৰ কাৰণে জ্ঞানযোগৰ বিষয়ত কোৱা হৈছে, আৰু ইয়াত নিষ্কাম কৰ্মযোগকো বুদ্ধিযোগ বুলি কোৱা হৈছে। বস্তুতঃ দুইটাতে বুদ্ধিৰ, দৃষ্টিকোণৰ পাৰ্থক্য আছে। তাত লাভ-লোকচানৰ হিচাব ৰাখি তাক চাই চলিব লাগিব। ইয়াত বৌদ্ধিক স্তৰত সমত্ব ৰাখিব লাগিব, সেইবাবে ইয়াক সমত্ব বুদ্ধিযোগ বুলি কোৱা হয়। সেইকাৰণে ধনঞ্জয়ঙ্গ তুমি সমত্ব বুদ্ধিযোগৰ আশ্ৰয় গ্ৰহণ কৰা; কিয়নো ফলৰ কামনা কৰা অত্যন্ত কুপণালী হয়।

বুদ্ধিযুক্তো জহাতিহ উভে সুকৃতদুষ্কৃতে।

তস্মাদ্যোগায় যুজ্যস্ব যোগঃ কৰ্মসু কৌশলম্ ॥ ৫০ ॥

সমত্ব বুদ্ধিযুক্ত পুৰুষ পুণ্য-পাপ দুইটাকেই এই লোকতেই ত্যাগ কৰি দিয়ে, সেইটোত লেপা খাই নাথাকে। সেই কাৰণে সমত্ব বুদ্ধি যোগৰ চেষ্টা কৰা। ‘যোগঃ কৰ্মসু কৌশলম্’ সমত্ব বুদ্ধিৰ লগত কৰ্মৰ আচৰণ কৌশলেই হ’ল যোগ।

সংসাৰত কৰ্ম কৰাৰ দুটা দৃষ্টিকোণ আছে। মানুহে কৰ্ম কৰিলে তাৰ ফল নিশ্চয় বিচাৰে অথবা ফল নাপালে কৰ্ম কৰিবই নিবিচাৰে; কিন্তু যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই এই কৰ্মক বন্ধনকাৰী বুলি কৈ ‘আৰাধনাক’ একমাত্ৰ কৰ্ম বুলি কৈছে। এই আধ্যাত তেওঁ কৰ্মৰ নাম মাত্ৰ লৈছে। আধ্যায়ু, ৰ জ্ঞা শ্লোকত তাৰ সংজ্ঞা দিছে আৰু চতুৰ্থ আধ্যাত কৰ্মৰ স্বৰূপৰ ওপৰত বিতংকৈ প্ৰকাশ কৰিছে। প্ৰস্তুত শ্লোকত শ্ৰীকৃষ্ণই সাংসাৰিক পৰম্পৰাৰ পৰা পৃথক হৈ কৰ্ম কৰাৰ কৌশল কৈছে যে কৰ্ম কৰা! শ্ৰদ্ধাভাৱে কৰা, কিন্তু ফলৰ অধিকাৰ স্বেচ্ছাই এৰি দিয়া। ফললৈ নাযাব? এয়েই কৰ্ম কৰাৰ কৌশল। নিষ্কাম সাধকৰ সমগ্ৰ

শক্তি এইদৰে কৰ্মত লাগি থাকিব। আৰাধনাৰ কাৰণেইতো শৰীৰ। আকৌ
প্ৰশ্ন হোৱাটো স্বাভাৱিকেই যে কি সদায় কাম কৰিয়েই থাকিব লাগিব নে, নে
ইয়াৰ কিবা পৰিণাম ওলাব? এইটো চাওক -

কৰ্মজং বুদ্ধিযুক্তা হি ফলং ত্যক্তা মনীষিণঃ।

জন্ম বন্ধবিনিমুক্তাঃ পদং গচ্ছন্ত্যনাময়ম্ ॥ ৫১ ॥

বুদ্ধিযোগ যুক্ত জ্ঞানীজনে কৰ্মৰ পৰা উৎপন্ন হোৱা ফলক ত্যাগ কৰি
জন্ম-মৃত্যু বন্ধনৰ পৰা পাৰ হৈ যায়। তেওঁ নিৰ্দোষ অমৃতময় পৰমপদ প্ৰাপ্ত
কৰে।

ইয়াত তিনিটা বুদ্ধিৰ চিত্ৰণ আছে। (শ্লোক ৩১-৩৯) সাংখ্য বুদ্ধিত
দুটা ফল-স্বৰ্গ আৰু কল্যাণ। (শ্লোক ৩৯-৫১) কৰ্মযোগত প্ৰবৃত্ত বুদ্ধিৰ এটাই
ফল জন্ম-মৃত্যুৰ পৰা মুক্তি, নিৰ্মল অবিনাশী পদৰ প্ৰাপ্তি। মাত্ৰ এই দুইটাই
যোগক্ৰিয়া। ইয়াৰ অতিৰিক্ত বুদ্ধি অবিবেক জনিত, অনন্ত শাখা থকা, যাৰ
ফলৰ কৰ্মভোগৰ বাবে বাৰে বাৰে জন্ম-মৃত্যু হব লগা হয়।

অৰ্জুনৰ দৃষ্টি তিনিলোকৰ সাম্ৰাজ্য তথা দেৱতাৰ স্বামীত্ব অৰ্থাৎ
ইন্দ্ৰপদ লৈকে সীমিত আছিল। ইমানৰ বাবেই তেওঁ যুদ্ধত প্ৰবৃত্ত হব
নিবিচাৰিছিল। ইয়াত শ্ৰীকৃষ্ণই নতুন তথ্য উদঘাটন কৰি কৈছিল যে
আসক্তিৰহিত কৰ্মৰ দ্বাৰা নিৰ্বান পদৰ প্ৰাপ্তি হব। নিষ্কাম কৰ্মযোগে পৰমপদ
দিয়ে, য'ত মৃত্যুৰ প্ৰৱেশ নাই। এই কৰ্মত প্ৰবৃত্তি কেতিয়া হব?

যদা তে মোহকলিলং বুদ্ধিৰ্ব্যতীতৰিষ্যতি।

তদা গন্তাসি নিৰ্বেদং শ্ৰোতব্যস্যশ্ৰুতস্য চ ॥ ৫২ ॥

যি কালত তোমাৰ (প্ৰত্যেক সাধনাক) বুদ্ধি মোহ ৰূপী গহৱৰৰ পৰা
পূৰ্ণ ভাৱে যেতিয়া পাৰ হব, অলপো মোহ নাথাকি, পুত্ৰ, ধন, প্ৰতিষ্ঠাৰ আকৰ্ষণ
একেবাৰে নাইকিয়া হৈ যাব, সেই সময়ত যি শুনা উচিত, তুমি শুনিব পাৰিবা,
আৰু শুনাৰ দৰে বৈৰাগ্য প্ৰাপ্ত হব অৰ্থাৎ তাক আচৰণত পেলাব পাৰিবা।
এতিয়া যি শুনাৰ উপযোগী, তাক তুমি শুনিব নোৱাৰিবা আৰু আচৰণৰ
কথাৰতো প্ৰশ্নই নাহিব। ইয়াৰ যোগ্যতাৰ ওপৰত পুনঃ প্ৰকাশ কৰি কয় -

শ্ৰুতিবিপ্ৰতিপত্তা তে যদা স্থাস্যতি নিশ্চলা ।

সমাধাবচলা বুদ্ধিস্তদা যোগমবান্ধস্যসি ॥ ৫৩ ॥

বিভিন্ন প্ৰকাৰৰ বেদৰ বাক্য শুনি বিচলিত হোৱা তোমাৰ বুদ্ধি যেতিয়া পৰমাত্মা স্বৰূপত সমাধিস্থ হৈ অচল, স্থিৰ হৈ থাকিব, তেতিয়া তুমি সমত্ৰযোগত প্ৰাপ্ত হবা। পূৰ্ণ সম স্থিতি প্ৰাপ্ত কৰিবা, যাক ‘অনাময় পৰমপদ’ বুলি কোৱা হয়। এইয়েই যোগৰ পূৰ্ণতা আৰু এয়েই অপ্ৰাপ্যৰ প্ৰাপ্তী। বেদৰ পৰাতো শিক্ষাহে পোৱা যায়, শ্ৰীকৃষ্ণই কয় - ‘শ্ৰুতিবিপ্ৰকিপত্তা’ শ্ৰুতিৰ বহুতো সিদ্ধান্ত শুনাৰ পাছত বুদ্ধি বিচলিত হয়। সিদ্ধান্ত বহুতো শুনা হয়, কিন্তু যি শুনাৰ যোগ্য, মানুহ তাৰপৰা দূৰতে থাকে।

এই বিচলিত বুদ্ধি যি সময়ত সমাধিত স্থিৰ হৈ যাব, তেতিয়া তুমি যোগৰ চৰম পৰ্যায় অমৃত পদক প্ৰাপ্ত কৰিবা। ইয়াত অৰ্জুনৰ উৎকণ্ঠা স্বাভাৱিক আছিল যে তেওঁলোক মহাপুৰুষ কেনেকৈ হয়, যি অনাময় পৰমপদত স্থিত থাকে, সমাধিত যাৰ বুদ্ধি স্থিৰ হয়। তেওঁ প্ৰশ্ন কৰিলে -

অৰ্জুন উবাচ

স্থিতপ্ৰজ্ঞস্য কা ভাষা সমাধিস্থস্য কেশব।

স্থিতধীঃ কিং প্ৰভাষেত কিমাসীত ব্ৰজেত কিম ॥ ৫৪ ॥

“সমাধীয়তে চিন্তম্ যস্মিন্ স আত্মা এব সমাধিঃ” যাৰ চিন্তক সমাধান কৰা হৈছে, সেই আত্মাই সমাধি। অনাদি তত্ত্ব যি সমত্ৰ প্ৰাপ্ত কৰিছে, তেওঁকে সমাধিস্থ বুলি কোৱা হয়। অৰ্জুনে সুধিলে - হে কেশৱজ্ঞ সমাধিস্থ স্থিৰ বুদ্ধিৱান মহাপুৰুষৰ কি লক্ষণ হয়? স্থিতপ্ৰজ্ঞ পুৰুষে কেনেকৈ মাতে? তেওঁ কেনেকৈ বহে? তেওঁকেনেকৈ চলে? এই চাৰিটা প্ৰশ্ন অৰ্জুনে কৰিলে। এই ক্ষেত্ৰত ভগৱান শ্ৰীকৃষ্ণই স্থিতপ্ৰজ্ঞৰ লক্ষণ এনেদৰে কলে -

শ্ৰীভগবানুবাচ

প্ৰজহাতি যদা কামান্ সৰ্বান্ পাৰ্থ মনোগতান্ ।

আত্মন্যেবাত্মনা তুষ্টঃ স্থিতপ্ৰজ্ঞস্তদোচ্যতে ॥ ৫৫ ॥

পাৰ্থ! যেতিয়া মানুহে মনত থকা সম্পূৰ্ণ কামনা ত্যাগ কৰি দিব,

তেতিয়া তেওঁ আত্মাৰ পৰা আত্মাতেই সন্তুষ্ট হৈ স্থিৰ বুদ্ধিৰালা বুলি কোৱা হয়। কামনাৰ ত্যাগতে আত্মাৰ দিক্‌দৰ্শন হয়। এনেকুৱা আত্মাৰাম, আত্মাতৃপ্ত মহাপুৰুষক **স্থিতপ্ৰজ্ঞ** কোৱা হয়।

দুঃখেযনুদ্বিগ্নমনাঃ সুখেযু বিগতস্পৃহঃ।

বীতৰাগভয়ক্ৰোধঃ স্থিতধীমূনিৰুচ্যতে।। ৫৬।।

দৈহিক, দৈৱিক তথা ভৌতিক দুখত যাৰ মন উদ্বিগ্ন নহয়, সুখৰ প্ৰাপ্তিৰ বাবে যাৰ স্পৃহা দূৰ হৈ গৈছে, যাৰ ৰাগ, ভয় আৰু ক্ৰোধ নষ্ট হৈ গৈছে, মন যাৰ চৰম শান্তি হৈছে তেনে মুনিক স্থিতপ্ৰজ্ঞ বুলি কোৱা হৈছে। তাৰ অন্য লক্ষণ সম্পৰ্কত কোৱা হৈছে -

যঃ সৰ্বত্ৰানভিন্নেহস্তত্ত্ৰাপ্য শুভাশুভম্।

নাভিনন্দতি ন দ্বেষ্টি তস্য প্ৰজ্ঞা প্ৰতিষ্ঠিতা।। ৫৭।।

যি পুৰুষ সৰ্বপ্ৰকাৰে স্নেহৰহিত হৈ, শুভ অথবা অশুভ প্ৰাপ্ত হলেও প্ৰসন্নও নহয় আৰু অসন্তুষ্টও নাথাকে, তাৰ বুদ্ধি স্থিৰ হয়। শুভ হ'ল সেইটো, যিটোৱে পৰমাত্মা স্বৰূপলৈ নিয়ে! অশুভ সেইটো যি প্ৰকৃতিৰ ফাললৈ নিয়ে। কিন্তু স্থিতপ্ৰজ্ঞ পুৰুষ অনুকূল পৰিবেশ পালেও প্ৰসন্ন নহয়, আৰু প্ৰতিকূল পৰিবেশতো অপ্ৰসন্ন নহয় কিয়নো প্ৰাপ্ত হবৰ যোগ্য বস্তু তেওঁৰ পৰা ভিন্ন নহয় আৰু সেইটোৱে বিকাৰ হিচাবে পতিত কৰিবও নোৱাৰে, অৰ্থাৎ এতিয়া তেওঁক কোনো বস্তুৰ প্ৰয়োজন নাই। এনে ব্যক্তিক স্থিতপ্ৰজ্ঞ বুলি কোৱা হয়।

যদা সংহৰতে চায়ং কূৰ্মোহঙ্গানীৰ সৰ্বশঃ।

ইন্দ্ৰিয়াণীন্দ্ৰিয়াৰ্থেভ্যস্তস্য প্ৰজ্ঞা প্ৰতিষ্ঠিতা।। ৫৮।।

যি ধৰণে কাছই নিজৰ অঙ্গক সংকুচিত কৰি লয়, ঠিক তেনে ধৰণে এই পুৰুষে চাৰিও ফালৰ পৰা নিজৰ ইন্দ্ৰিয় বিলাকক সংকুচিত কৰি লয় যেতিয়া, তেতিয়া তেওঁৰ বুদ্ধি স্থিৰ হৈ থাকে। বিপদৰ গম পালেই কাছই নিজৰ হাত-ভৰি আৰু মূৰ নিজৰ গাৰ ভিতৰত সুমাই দিয়ে, ঠিক এনে দৰেই যি পুৰুষে বিষয়ত সিঁচৰিত হৈ থকা ইন্দ্ৰিয় বিলাককো চাৰিওফালৰ পৰা টানি আনি নিজৰ হৃদয় দেশত নিৰোধ কৰি লয়, সেই সময়তে সেই পুৰুষৰ

বুদ্ধি স্থিৰ হৈ থাকে, কিন্তু এইটো এটা উদাহৰণ হে। বিপদৰ সময় পাৰ হলেই কাছই নিজৰ অংগ আকৌ প্ৰসাৰ ঘটায়, কি এই দৰে স্থিতপ্ৰজ্ঞ মহাপুৰুষেও বিষয়ৰ ৰস লব ধৰেনে? এই ক্ষেত্ৰত কয় -

বিষয়া বিনিৰ্ভৰন্তে নিৰাহাৰস্য দেহিনঃ।

ৰসবৰ্জং ৰসোহপ্যস্য পৰং দৃষ্ট্বা নিৰ্ভৰতে।। ৫৯।।

ইন্দ্ৰিয়ৰ দ্বাৰা বিষয় গ্ৰহণ নকৰা পুৰুষৰ বিষয়তো নিবৃত্ত হয়, কিয়নো তেওঁ গ্ৰহণেই নকৰে; কিন্তু তেওঁৰ বাগৰ নিবৃত্তি নহয়, আসক্তি লাগি থাকে। সম্পূৰ্ণ ইন্দ্ৰিয়ক বিষয়ৰ পৰা সংকুচিত কৰিব পৰা নিষ্কামকৰ্মীৰ বাগত ‘**পৰং দৃষ্ট্বা**’ - পৰমতত্ত্ব পৰমাত্মাক সাক্ষাৎ কৰি নিবৃত্ত হৈ যায়।

মহাপুৰুষে কাছৰ নিচিনাকৈ নিজৰ ইন্দ্ৰিয়ক বিষয়ত বৃত্তিত নকৰে। এবাৰ যেতিয়া ইন্দ্ৰিয় বিলাক দমন হৈ যায় সংস্কাৰ হেৰাই যায়। পুণৰ সেইটো উলাই নপৰে। নিষ্কাম কৰ্মযোগৰ আচৰণৰ দ্বাৰা পৰমাত্মাৰ প্ৰত্যক্ষ দৰ্শনৰ লগতে সেই পুৰুষৰ বিষয়ৰ বাগও নিবৃত্ত হৈ যায়। প্ৰায়ে চিন্তনৰ সময়ত জোৰ কৰে। জোৰ কৰি ইন্দ্ৰিয়ক ৰাখিব পাৰি বিষয়ৰ পৰা নিবৃত্ততো হয়, কিন্তু মনত চিন্তন, বাগ লাগিয়ে থাকে। এই আসক্তি ‘পৰং দৃষ্ট্বা’ পৰমাত্মাৰ সাক্ষাৎকাৰ কৰাৰ পিছত হে নিবৃত্ত হয়, তাৰ আগত নহয়।

পূজ্য মহাৰাজজীয়ে এই সন্দেহত নিজৰ এটা ঘটনাৰ কথা প্ৰায়ে কয়। গৃহ-ত্যাগৰ আগতে তেওঁক তিনিবাৰ আকাশবানী হৈছিল। আমি সুধিলে - “মহাৰাজ জী! আপোনাক আকাশবানী কিয় হ’ল? আমালোকক তো হোৱা নাই।” তেতিয়া মহাৰাজে কৈছিল - ‘হো, ই শঙ্কা মোহঁকে ভই ৰহী’ অৰ্থাৎ এই সন্দেহ মোৰ আছিল। তেতিয়া মোৰ অনুভৱ হ’ল যে মই সাত জন্মলৈকে একেৰাহে সাধুহৈ আছিলো। চাৰি জন্মলৈকেতো মাত্ৰ সাধুৰ বেশ বনাই, তিলক লগাই, শৰীৰত কৰবাত বিভূতি ঘাঁহি, কৰবাত কমণ্ডলুলৈ বিচৰণ কৰি আছিলো। যোগ-ক্ৰিয়াৰ সম্পৰ্কে জনাই নাছিলো। কিন্তু পিছৰ তিনি জন্মৰ পৰা ভাল সাধু হলোঁ, যেনে হব লাগিছিল। মোৰ যোগক্ৰিয়া জাগৃত আছিল। আগৰ জন্মতেই পাৰ হৈ যাব লগা আছিল, নিবৃত্তি হৈ গৈছিল, কিন্তু দুটা ইচ্ছা বাকী থাকিছিল - এক স্ত্ৰী আৰু দ্বিতীয় গাঁজা। মনৰ ভিতৰত ইচ্ছা আছিল, কিন্তু বাহিৰ ফালৰ পৰা শৰীৰক দৃঢ়ভাৱে ৰাখিছিলো। মনত বাসনা আছিলেই,

সেইকাৰণে এই জন্ম লব লগা হ'ল। জন্ম লোৱাৰ পিছতেই ভগৱানে অলপ সময়ৰ ভিতৰতেই সকলো দেখাই-শুনাই নিবৃত্তি দি দিলে, আৰু সাধু বনাই দিলে।

ঠিক এই কথাই শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছিলে - ইন্দ্ৰিয়ৰ দ্বাৰা বিষয়ক গ্ৰহণ নকৰা পুৰুষৰ বিষয়তো নিবৃত্ত হয়; কিন্তু সাধনাৰ দ্বাৰা পৰমপুৰুষ পৰমাত্মাৰ সাক্ষাৎ কৰাৰ পিছত সেই বিষয়ৰ বাগও নিবৃত্ত হৈ যায়। সেয়ে যেতিয়ালৈকে সাক্ষাৎকাৰ নহয়, কৰ্ম কৰি থাকিব লাগিব।

“উৰু কছু প্ৰথম বাসনা ৰহি। প্ৰভুপদ প্ৰীতি সৰিত সো বহী”

(ৰামচৰিতমানস৬/৪৮/৬)

ইন্দ্ৰিয় বিলাকক বিষয়ৰ পৰা টানি অনা বৰ কঠিন। এই ক্ষেত্ৰত প্ৰকাশ কৰে -

যততো হ্যপি কৌন্তেয় পুৰুষস্য বিপশ্চিতঃ।

ইন্দ্ৰিয়াণি প্ৰমাথীনি হৰন্তি প্ৰসভং মনঃ।। ৬০।।

কৌন্তেয়! প্ৰয়াত্ন কৰিব পৰা মেধাৰী পুৰুষৰ প্ৰমথনকাৰী ইন্দ্ৰিয় সকলে তেওঁৰ মনক জোৰেৰে হৰণ কৰি লয়। বিচলিত কৰি দিয়ে। সেই কাৰণে-

তানি সৰ্বাণি সংযম্য যুক্ত আসীত মৎপৰঃ।

বশে হি যস্যেন্দ্ৰিয়াণি তস্য প্ৰজ্ঞা প্ৰতিষ্ঠিতা।। ৬১।।

সেই ইন্দ্ৰিয় সমূহক সংযত কৰি যোগত যুক্ত হৈ আৰু সমৰ্পণৰ সৈতে মোৰ আশ্ৰিত হোৱা; কিয়নো যি পুৰুষৰ ইন্দ্ৰিয় বিলাক বশত থাকে, তাৰ বুদ্ধি স্থিৰ হয়। ইয়াত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই সাধনৰ নিষেধাত্মক দিশৰ লগতে তাৰ বিধেয়াত্মক দিশতো জোৰ দিয়ে। মাত্ৰ সংযম আৰু নিৰোধেৰে ইন্দ্ৰিয়সকলক বশত আনিব নোৱাৰি। সমৰ্পণৰ সৈতে ইষ্টৰ চিত্ৰণ অনিবাৰ্য্য আছে। ইষ্ট চিন্তনৰ অভাৱত বিষয়ৰ হে চিন্তন হয়, যাৰ কুপৰিণাম শ্ৰীকৃষ্ণেৰে শব্দত চাওক -

ধ্যায়তো বিষয়ান্‌পুংসঃ সঙ্গস্তেমুপজায়তে।

সঙ্গাৎসঞ্জায়তে কামঃ কামাৎক্ৰোধোহভিজায়তে।। ৬২।।

বিষয়ৰ চিন্তন কৰা পুৰুষৰ সেই বিষয়ত আসক্তি জন্মে। আসক্তিৰ পৰা কামনা উৎপন্ন হয়। কামনা পূৰ্ত্তিত বাধা আহিলে ক্ৰোধৰ উৎপন্ন হয়। ক্ৰোধ কোনে জন্ম দিয়ে ?

ক্ৰোধাড্ভবতি সম্মোহঃ সম্মোহাৎস্মৃতিরিভ্রমঃ।

স্মৃতিভ্ৰংশাদ্ বুদ্ধিনাশো বুদ্ধিনাশাৎপ্রণশ্যতি ॥ ৬৩ ॥

ক্ৰোধৰ পৰা মুঢ়তা অৰ্থাৎ অবিবেকৰ উৎপন্ন হয়। নিত্য-অনিত্য বস্তুৰ বিচাৰ নাথাকে। অবিবেকৰ পৰা স্মৰণ শক্তি ভ্ৰমিত হয় (যেনেকৈ অৰ্জুনক হৈছিল -‘ভ্ৰমতীৰ চ মে মনঃ।’ গীতাৰ শেষত তেওঁ কৈছে - ‘নষ্টো মোহ স্মৃতিৰ্লক্ষা’। কি কৰিম, কি নকৰিম, একো নিৰ্ণয় কৰিব নোৱাৰা) স্মৃতি ভ্ৰমিত হলে যোগ পৰায়ণ বুদ্ধি নষ্ট হৈ যায় আৰু বুদ্ধি নাশ হলে এনে পুৰুষ নিজৰ শ্ৰেয় সাধনৰ পৰা চ্যুত হৈ যায়।

ইয়াত শ্ৰীকৃষ্ণই জেৰ দিছে যে বিষয়ৰ চিন্তন কৰিব নালাগে। সাধকক নাম, ৰূপ, লীলা আৰু ধাম এই বিলাকৰ কৰৰাত লাগি থাকিব লাগে। ভজনত টিলা কৰিলেই মন বিষয়লৈ গুচি যায়। বিষয়ৰ চিন্তনত আসক্তি আহে। আসক্তিৰ ফলত বিষয়ৰ কামনা সাধকৰ অন্তৰ্মনত হবলৈ ধৰে। কামনাৰ পূৰ্ত্তিত বাধা আহিলেই ক্ৰোধ আহে, ক্ৰোধৰ পৰা অবিবেকৰ সৃষ্টি হয়, অবিবেকৰ পৰাই স্মৃতি বিভ্ৰম হয়, স্মৃতিভ্ৰম হলেই বুদ্ধি নষ্ট হৈ যায়। নিষ্কাম কৰ্ম যোগক বুদ্ধিযোগও কোৱা হৈছে, কিয়নো বুদ্ধিৰ স্তৰত এইটো মনত ৰাখিব লাগিব যাতে কামনাৰ সৃষ্টি নহয়, ফলেই নাই। কামনা জাগৃত হলেই বুদ্ধি যোগ নষ্ট হৈযায় - ‘সাধন কৰিয় বিচাৰহীন মন শুদ্ধ হোয় নহী তৈসে’(বিনয় পত্ৰিকা, পদ সংখ্যা ১১৫/৩) বিচাৰৰ আৱশ্যক আছে। বিচাৰ বিবেক গুণ্য পুৰুষ শ্ৰেয়-সাধনৰ পৰা তললৈ পৰি যায়। সাধনৰ বিধি ছিঙি যায়, সকলো নষ্ট হৈ যায়। ভোগৰ পাছত সাধন পুনঃ তাৰ পৰাই আৰম্ভ হয়, য’ত অবৰুদ্ধ হৈ আছিল।

এইটো হ’ল বিষয় অভিমুখে যোৱা সাধকৰ গতি। স্বাধীন অন্তঃকৰণৰ সাধক কেনে গতিৰ প্ৰাপ্ত হব ? এই বিষয়ত শ্ৰীকৃষ্ণই কয় -

বাগদেঘবিযুক্তৈস্ত বিষয়ানিদ্ৰিয়ৈশ্চৰন।

আত্মবশৈৰ্যবিধেয়াত্মা প্ৰসাদমধিগচ্ছতি।। ৬৪।।

আত্মাৰ বিধি প্ৰাপ্ত প্ৰত্যক্ষদৰ্শী মহাপুৰুষৰ বাগ-দেঘৰ পৰা বেলেগ হৈ, বশত ৰাখিব পৰা ইন্দ্ৰিয়ৰ দ্বাৰা **‘বিষয়ান্ চৰণ’** বিষয়ত বিচৰণ কৰিও **‘প্ৰসাদমধিগচ্ছতি’** অন্তঃকৰণৰ নিৰ্মলতা প্ৰাপ্ত কৰে। তেওঁ নিজৰ ভাৱ দৃষ্টিত ৰাখে। মহাপুৰুষৰ বাবে বিধি-নিষেধ নাথাকে। তেওঁলোকৰ কাৰণে কতো অশুভ বুলি নাথাকে, যাক তেওঁলোকে ৰক্ষা কৰিব লাগে, তেওঁলোকৰ কাৰণে কোনো শুভও নাথাকে, যাৰ তেওঁলোকে কামনা কৰে।

প্ৰসাদে সৰ্বদুঃখানাং হানিৰস্যোপজায়তে।

প্ৰসন্ন চেতসো হ্যাশু বুদ্ধিঃ পৰ্যবতিষ্ঠতে।। ৬৫।।

ভগৱানৰ পূৰ্ণ কৃপাপ্ৰসাদ ‘ভগৱন্তাৰ লগত সংযুক্ত হলে তেওঁৰ সম্পূৰ্ণ দুখৰ অভাৱ হয় **‘দুঃখালয়ম্ অশাশ্বতম্’** সংসাৰৰ অভাৱ হয় আৰু সেই প্ৰসন্ন চিত্তহোৱা পুৰুষৰ বুদ্ধি সোনকালেই স্থিৰ হৈ যায়। কিন্তু যি যোগযুক্ত নহয়, তাৰ দুৰ্দৰ্শাৰ প্ৰতি প্ৰকাশ কৰি কয় -

নাস্তি বুদ্ধিৰযুক্তস্য ন চাযুক্তস্য ভাবনা।

ন চাভাৱয়তঃ শান্তিৰশান্তস্য কুতঃ সুখম্।। ৬৬।।

যোগ সাধনাৰহিত পুৰুষৰ অন্তঃকৰণত নিষ্কাম কৰ্মযুক্ত বুদ্ধি নাথাকে। সেই অযুক্তৰ অন্তঃকৰণত ভাৱও নাথাকে। ভাৱনাৰহিত পুৰুষৰ শান্তি ক’ত? আৰু অশান্ত পুৰুষৰ সুখ ক’ত? যোগ ক্ৰিয়া কৰিলে কিবা দেখাপালেও ভাৱনা হৈ থাকে - **‘জানে বিনু ন হোই পৰতীতি’** ভাৱনা নহলে শান্তি পোৱা নাযায় আৰু শান্তিৰহিত পুৰুষক সুখ অৰ্থাৎ শাস্ত, সনাতনৰ প্ৰাপ্তী নহয়।

ইন্দ্ৰিয়াণাং হি চৰতাং যন্মনোহনু বিধীয়তে।

তদস্য হৰতি প্ৰজ্ঞাং বায়ুৰ্ণাৰমিবাস্তসি।। ৬৭।।

পানীত নাওঁক যেনেদৰে বায়ুৱে উটুৱাই গম্ভব্যৰ পৰা বহুত দূৰলৈ লৈ যায়, ঠিক তেনেদৰে বিষয়ত বিচৰণ কৰা ইন্দ্ৰিয় সমূহে, যি ইন্দ্ৰিয়ৰ লগত মন থাকে, সেই এক মাত্ৰ ইন্দ্ৰিয়ই সেই অযুক্ত পুৰুষৰ বুদ্ধি উটুৱাই লৈ যায়। সেয়ে

যোগৰ আচৰণ অনিবাৰ্য্য হয়। ত্ৰিষ্ণাত্মক শ্ৰীকৃষ্ণই পূৰ্ণৰ জোৰদি কৈছে -

তস্মাদ্যস্য মহাবাহো নিগৃহীতানি সৰ্বশঃ।

ইন্দ্ৰিয়াণীন্দ্ৰিয়াৰ্থেভ্যস্তস্য পত্ত্বা প্ৰতিষ্ঠিতা।। ৬৮।।

সেইকাৰণে হে মহাবাহু! যি পুৰুষৰ ইন্দ্ৰিয় বোৰ ইন্দ্ৰিয়ৰ বিষয়েৰে বশত ৰাখিছে, তেওঁৰ বুদ্ধি স্থিৰ হৈছে। ‘বাহু’ কাৰ্য্যক্ষেত্ৰৰ প্ৰতীক। ভগৱানক ‘মহাবাহু’ বা ‘আজানুবাহু’ বুলি কোৱা হয়। তেওঁ হাত-ভৰি নথকাকৈ সকলোতে কাৰ্য্য কৰিব পাৰে। তেওঁত যি জনে প্ৰবেশ কৰে বা যিজন সেই ভগৱত্তৰ ফালে অগ্ৰসৰ হয় তেৱো মহাবাহু। শ্ৰীকৃষ্ণ আৰু অৰ্জুন দুজনকেই মহাবাহু কোৱা হৈছে।

যা নিশা সৰ্বভূতানাং তস্য্যাং জাগৰ্তি সংযমী।

যস্য্যাং জাগ্ৰতি ভূতানি সা নিশা পশ্যতো মুনোঃ।। ৬৯।।

সম্পূৰ্ণ ভূত প্ৰাণীৰ বাবে সেই পৰমাত্মা ৰাত্ৰি সদৃশ; কিয়নো দেখা পোৱা নাযায়, যিমান অনুভৱ কৰিলেও কামত নাহে - সেইকাৰণে ৰাতিৰ দৰে। সেই ৰাত্ৰিত পৰমাত্মাত সংযমী পুৰুষ উত্তম প্ৰকাৰে দেখে, চলে, জাগৃত হৈ থাকে কিয়নো তেওঁৰ ধৰি থাকিবলৈ আছে। যোগীয়ে ইন্দ্ৰিয় সমূহৰ সংযমৰ দ্বাৰা তেওঁত প্ৰবেশ কৰে। যি নাশশীল সাংসাৰিক সুখ-ভোগৰ কাৰণে সম্পূৰ্ণ প্ৰাণীয়ে ৰাতিয়ে দিনে প্ৰিশ্ৰম কৰে, যোগীৰ বাবে সেয়াই নিশা।

“ৰমা বিলাসু ৰাম অনুৰাগী। তজত বমন জিমি জন বড়ভাগী।

(ৰামচৰিতমানস, ২/৩২৩/৮)

যি যোগী পৰমার্থ পথত নিৰন্তৰ সজাগ আৰু ভৌতিক আকাংক্ষাৰ পৰা সম্পূৰ্ণ নিঃস্পৃহ হয়, তেৱেই ইষ্টত প্ৰবেশ পাব পাৰে। তেওঁ সংসাৰত থাকিলেও সংসাৰে তেওঁৰ ওপৰত প্ৰভাৱ পেলাব নোৱাৰে। মহাপুৰুষ থকাৰ এই চিত্ৰণ চাওক -

আপূৰ্ণমাগমচলপ্ৰতিষ্ঠং

সমুদ্ৰমাপঃ প্ৰবিশন্তি যদ্বৎ।

তদ্বৎকামা যং প্ৰবিশন্তি সৰ্বে

স শান্তিমাণ্নোতি ন কামকামী ॥ ৭০ ॥

যেনেদৰে চাৰিওফালৰ পৰা পৰিপূৰ্ণ অচল জলবাৰিৰ সমুদ্ৰত নদী সমূহৰ জলে একোলৰচৰ কৰিব নোৱাৰি অতি বেগেৰে সমুদ্ৰত সমাহিত হৈ যায় - ঠিক তেনেদৰে পৰমাত্মাত স্থিত, স্থিতপ্ৰজ্ঞ পুৰুষত সম্পূৰ্ণ ভোগৰ বিকাৰ উৎপন্ন নকৰাকৈ সমাহিত হৈ যায়। এনে পুৰুষে পৰম শান্তি প্ৰাপ্ত কৰে, ভোগীয়ে পাব নোৱাৰে।

ভয়ংকৰ বেগেৰে বৈ যোৱা সহস্ৰ নদীৰ স্ৰোতে খেতি-বাতিৰ নষ্ট কৰি, হত্যা কৰি, গাৰুঁ নগৰক বুৰাই, ত্ৰাসৰ সৃষ্টি কৰি বহুতো জোৰেৰে সমুদ্ৰত গৈ পৰে, কিন্তু সমুদ্ৰক এক(ইঞ্চিও) ওপৰলৈ উঠাব নোৱাৰে আৰু গিৰাবও নোৱাৰে। আনকি তাতে সমাহিত হৈ যায় ঠিক এই দৰে স্থিত প্ৰজ্ঞ মহাপুৰুষৰ প্ৰতিও সম্পূৰ্ণ ভোগ সিমান বেগেৰেই আছে, কিন্তু তেওঁতেই সমাহিত হৈ যায়। সেই সকল মহাপুৰুষক শুভয়েও একো কৰিব নোৱাৰে আৰু অশুভ বুলিও একো নাই। যোগীৰ কৰ্ম 'অশুক্ল' আৰু 'অকৃষ্ণ' হয়, কিয়নো যি চিন্তত সংস্কাৰ আছে তাৰ নিৰোধ হ'ল। এতিয়া সংস্কাৰ ক'ত থাকিল? এই এটা শ্লোকতে শ্ৰীকৃষ্ণই অৰ্জুনৰ কেবাটাও প্ৰশ্নৰ সমাধান দিলে। তেওঁৰ প্ৰশ্ন আছিল, যে স্থিতপ্ৰজ্ঞ মহাপুৰুষৰ লক্ষণ কি? তেওঁ কেনেদৰে কথা পাতে, কেনেকৈ থাকে, কেনেকৈ চলে? শ্ৰীকৃষ্ণই একেই শব্দত উত্তৰ দিলে যে তেওঁ সমুদ্ৰৰ দৰে থাকে, তেওঁৰ বাবে বিধি নিষেধ নাথাকে যে এইদৰে বহক বা ওঠক। তেওঁ পৰম শান্তি প্ৰাপ্ত কৰে, কিয়নো তেওঁ সংযমী। ভোগৰ কামনা কৰা জনে শান্তি নাপায়। এই ক্ষেত্ৰত আকৌ জোৰ দি কয় -

বিহায় কামান্যঃ সৰ্বান্‌পুমাংশ্চৰতি নিঃস্পৃহঃ।

নিৰ্মমো নিৰহঙ্কাৰঃ স শান্তিমধিগচ্ছতি ॥ ৭১ ॥

যি পুৰুষ সম্পূৰ্ণ কামনাক ত্যাগ কৰি 'নিৰ্মমঃ' মই আৰু মোৰ ভাৱ তথা অহংকাৰ আৰু স্পৃহাৰ পৰা বহিত হৈ থাকে, তেওঁ পৰম শান্তি প্ৰাপ্ত কৰে, যাৰ পিছত পাবলৈ একো নাথাকে।

এষা ব্ৰাহ্মী স্থিতিঃ পাৰ্থ নৈনাং প্ৰাপ্য বিমুহ্যতি ।

স্থিত্বাস্যামন্তকালেহপি ব্ৰহ্মনিৰ্বাণম্চ্ছতি ॥ ৭২ ॥

পাৰ্থ! উপৰোক্ত স্থিতি ব্ৰহ্মক প্ৰাপ্ত কৰা পুৰুষৰ স্থিতি হয়। সমুদ্ৰৰ দৰে মহাপুৰুষত বিষয় সমূহ নদীৰ দৰে সমাহিত হৈ যায়। তেওঁ পূৰ্ণ সংযমী আৰু প্ৰত্যক্ষ পৰমাত্মা দৰ্শী। মাত্ৰ ‘অহংব্ৰহ্মাশ্চি’ বুলি পঢ়িলে বা জপ কৰিলেই তেওঁ এই স্থিতিত প্ৰাপ্ত নহয়। সাধনাৰ দ্বাৰা হে ব্ৰহ্মৰ এই স্থিতি পাব পাৰি। এনে মহাপুৰুষ ব্ৰহ্মনিষ্ঠাত স্থিত হৈ শৰীৰৰ শেষতো ব্ৰহ্মানন্দকেই প্ৰাপ্ত কৰে।

নিষ্কৰ্মঃ

প্ৰায়ে কিছুলোকে কয় যে দ্বিতীয় আধ্যায়ত গীতা পূৰ্ণ হৈ গ’ল; কিন্তু যদি কৰ্মৰ নামকে মাত্ৰ লৈ থাকিলে কৰ্ম পূৰা হৈ গ’ল হেঁতেন তেতিয়া গীতাৰ সমাপ্ত হোৱাৰ কথা মানিব পৰা গ’ল হেঁতেন। এই আধ্যায়ত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই এইটো কৈছে যে - অৰ্জুন! নিষ্কাম কৰ্মযোগৰ বিষয়ে শুনা যাক শুনিলে তুমি সংসাৰ বন্ধনৰ পৰা মুক্ত হবা। কৰ্ম কৰাত তোমাৰ অশ্ৰদ্ধাও নহওক, নিৰন্তৰ লাগি থাকিবলৈ সাজু থাকা। ইয়াৰ পৰিণামত তুমি ‘পৰংদৃষ্ট্বা’ পৰম পুৰুষৰ দৰ্শন লাভ কৰি স্থিতপ্ৰজ্ঞ হবা। পৰম শাস্তি পাবা; কিন্তু এইটো নকলে যে ‘কৰ্ম কি হয়?’

এইটো সাংখ্যযোগ নামৰ আধ্যায় নহয়। এইটো নাম শাস্ত্ৰকাৰৰ নহয়; এইটো টিকাকাৰৰ অবিহণা। তেওঁলোকে নিজৰ বুদ্ধি অনুসৰি গ্ৰহণ কৰে যেতিয়া আচৰিত হোৱা কি কথা আছে?

এই আধ্যায়ত কৰ্মৰ মহানতা, তাক কৰাত লব লগীয়া সাৱধানতা আৰু স্থিতপ্ৰজ্ঞৰ লক্ষণ কৈ শ্ৰীকৃষ্ণই অৰ্জুনৰ মনত কৰ্ম কৰাৰ প্ৰতি উৎকণ্ঠা জাগৃত কৰিছে, তেওঁক কিছু প্ৰশ্ন জাগৃত কৰি দিয়া হৈছে। আত্মা শাস্ত্ৰত, সনাতন, তাক জানি তুমি তত্ত্বদৰ্শী হোৱা। ইয়াৰ প্ৰাপ্তীৰ দুটা সাধন আছে - জ্ঞানযোগ আৰু নিষ্কাম কৰ্মযোগ।

নিজৰ শক্তিক বুজি লাভ-লোকচানক নিজে নিৰ্ণয় কৰি কৰ্মত প্ৰবৃত্ত হোৱাটো হ’ল জ্ঞানমार्গ, তথা ইষ্টৰ প্ৰতি নিৰ্ভৰ কৰি সমৰ্পণৰ সৈতে কৰ্মত

প্ৰবৃত্ত হোৱাটো হ'ল নিষ্কাম কৰ্মমার্গ বা ভক্তিমাৰ্গ। গোস্বামী তুলসীদাসে দুইটাৰে চিত্ৰণ এই প্ৰকাৰে কৰিছে -

মোৰে প্ৰৌঢ় তনয় সম গ্যানী।

বালক সুত সম দাস অমানী।।

জনহিঁ মোৰ বল নিজ বল তাহী।

দুহুঁ কহুঁ কাম ক্ৰোধ ৰিপু আহী।।

(ৰামচৰিতমানস, ৩/৪২/৮-৯)

মোক দুই প্ৰকাৰে ভজন কৰা লোক আছে এজন জ্ঞানমাৰ্গী আৰু অন্যটো ভক্তিমাৰ্গী। নিষ্কাম কৰ্মমাৰ্গী বা ভক্তিমাৰ্গীয়ে শৰণাগত হৈ মোৰ আশ্ৰয় লৈ চলে, জ্ঞানযোগীয়ে নিজৰ শক্তি লগত লৈ, নিজৰ লাভ লোকচানৰ বিচাৰ কৰি নিজৰ ভৰসাত চলে, দুইটাৰ শত্ৰু কিন্তু একেটাই। জ্ঞানমাৰ্গী সকলেও কাম-ক্ৰোধ আদিক বিজয় পাব লাগিব আৰু নিষ্কাম কৰ্মযোগীয়েও ইহঁতৰ লগতে যুদ্ধ কৰিব লাগিব। কামনাৰ ত্যাগ দুইটাই কৰে আৰু দুইটা মাৰ্গতে কৰিব লগীয়া কৰ্মও একে। “এই কৰ্মৰ পৰিণামত পৰমশান্তি প্ৰাপ্ত হব।” এইটো নকলে যে কৰ্ম কি? অৰ্জুনৰ মনতো কৰ্মৰ প্ৰতি জিজ্ঞাসুভাৱ থাকিল। তৃতীয় আধ্যায়ৰ আৰম্ভনীতেই তেওঁ কৰ্ম বিষয়ক প্ৰশ্ন প্ৰস্তুত কৰিলে। সেয়ে -

ওঁ তৎসৎইতি শ্ৰীমদ্ভগৱত গীতা সুপনিষৎসু ব্ৰহ্মবিদ্যায়াং যোগশাস্ত্ৰে
বিষয়ক শ্ৰীকৃষ্ণ আৰু অৰ্জুনৰ সংবাদ ‘কৰ্ম-জিজ্ঞাসা’ নামৰ দ্বিতীয় আধ্যায়
পূৰ্ণ হ’ল।

ইতি শ্ৰীমৎপৰমহংস পৰমানন্দস্য শিষ্য স্বামী অড়গড়ানন্দ কৃতে
শ্ৰীমদ্ভাগৱত গীতায়ঃ ‘ষথার্থ গীতা’ ভাষ্য ‘কৰ্ম-জিজ্ঞাসা’ নাম
দ্বিতীয়োহধ্যায়।।২।।

।। হৰি ওঁ তৎসৎ।।

ওঁ

শ্ৰীপৰমাত্মনে নমঃ

অথ তৃতীয়োহধ্যায়ঃ

দ্বিতীয় আধ্যায়ত ভগৱান শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছিল যে এই বুদ্ধি তোমাৰ কাৰণে জ্ঞানমার্গ বিষয়ত কোৱা হৈছে। কোন বুদ্ধিৰ কথা কৈছিল? যুদ্ধ কৰিবলৈ কৈছিল নে? জিকিলে ৰাজ্য প্ৰাপ্ত কৰিবা আৰু হাৰিলেও দেৱত্ব পাবা, কিছূতো পাবাই। সেয়ে এই দৃষ্টিত লাভ-লোকচান দুটাতে কিবা এটা পাবই, অকনো ক্ষতি নাই। আকৌ কলে- এতিয়া এইটোকেই তুমি নিষ্কাম কৰ্মযোগ বিষয়ত শুনা, যি বুদ্ধিৰে যুক্ত হলে তুমি কৰ্ম বন্ধনৰ পৰা মুক্ত হবা। আকৌ তাৰ বিশেষতাৰ ওপৰত প্ৰকাশ কৰিলে। কৰ্ম কৰাৰ সময়ত আৱশ্যক সাৱধানতাৰ ওপৰত জোৰ দি ফলৰ কামনা নকৰিবলৈ, কামনা ৰহিত হৈ কৰ্মত প্ৰবৃত্ত হবলৈ আৰু কৰ্ম কৰাত অশ্ৰদ্ধা যাতে নাহে সেইটো কৰিবলৈ কৈ কৰ্ম বন্ধনৰ পৰা মুক্ত হোৱা কথা কলে। মুক্ততো হব, কিন্তু ৰাস্তাত নিজৰ স্থিতি বুজি নাপাব।

সেয়ে অৰ্জুনে নিষ্কাম কৰ্মযোগতকৈ জ্ঞান মাৰ্গেই সৰল বুলি ভাবিলে। তেওঁ প্ৰশ্ন কৰিলে- জনাৰ্দন! নিষ্কাম কৰ্মৰ অপেক্ষা জ্ঞানমাৰ্গ আপোনাৰ দৃষ্টিত শ্ৰেষ্ঠ হলে মোক এই ভয়ংকৰ কৰ্মত কিয় লগাইছে? প্ৰশ্ন স্বাভাৱিক আছিল। ধৰিলেও এটা স্থানলৈ যোৱা দুটা ৰাস্তা আছে। যদি প্ৰকৃততে আপোনাৰ যাব লগীয়া আছে, তেতিয়া আপুনি প্ৰশ্ন কৰিব যে উত্তম ৰাস্তা কোনটো? যদি আপুনি নোসোধে তেতিয়া আপুনি পথিক নহয়। ঠিক এই প্ৰকাৰে অৰ্জুনেও প্ৰশ্ন কৰিলে-

অৰ্জুন উবাচ

জ্যায়সী চেৎকৰ্মণস্তে মতা বুদ্ধিৰ্জনাদন।

তত্কিং কৰ্মণি ভোৰে মাং নিয়োজয়সি কেশব।। ১।।

জনসাধাৰণৰ ওপৰত দয়া কৰিব পৰা হে জনাৰ্দন! যদি নিষ্কাম কৰ্মযোগৰ অপেক্ষা জ্ঞানমাৰ্গেই আপুনি শ্ৰেষ্ঠ বুলি মানে, তেতিয়াহলে হে কেশৱ! আপুনি মোক এই ভয়ংকৰ কৰ্মযোগত কিয় লগাইছে? নিষ্কাম কৰ্মযোগ অৰ্জুনে ভয়ংকৰ দেখিলে, কিয়নো ইয়াত কৰ্ম কৰাৰ হে অধিকাৰ আছে, ফলত কেতিয়াও নাই। কৰ্ম কৰাত অশ্ৰদ্ধাও হব নালাগে আৰু নিৰন্তৰ সমৰ্পনৰ ভাৱত যোগৰ ওপৰত দৃষ্টি ৰাখি কামত লাগি থাকিব লাগে।

যেতিয়া জ্ঞানমাৰ্গত হাৰিবা তেতিয়া দেৱত্ব পাবা, জিকিলে মহামহিম স্থিতি পাবা। নিজৰ লাভ-লোকচান নিজেই চাই আগ বাঢ়িব লাগিব। এই প্ৰকাৰে অৰ্জুনক নিষ্কাম কৰ্মযোগৰ অপেক্ষাতকৈ জ্ঞানমাৰ্গ সৰল লাগিল। সেই কাৰণে তেওঁ নিবেদন কৰিলে-

ব্যামিশ্ৰেণেব বাক্যেন বুদ্ধিং মোহয়সীৰ মে।

তদেকং বদ নিশ্চিত্য যেন শ্ৰেয়োহহমাপ্নুয়াম্ ॥ ২ ॥

আপুনি এই মিলি থকা বচনৰ দ্বাৰা মোৰ বুদ্ধি মোহিত কৰি পেলাইছে। আপুনি মোৰ বুদ্ধিৰ মোহ দূৰ কৰিবলৈ প্ৰবৃত্ত হৈছে। সেয়ে ইয়াৰ ভিতৰত এটা নিশ্চয় কৰি কওক যাৰ দ্বাৰা মই 'শ্ৰেয়' পৰম কল্যাণ মোক্ষ প্ৰাপ্ত কৰোঁ। এই ক্ষেত্ৰত শ্ৰীকৃষ্ণই কয়-

শ্ৰীভগবানুবাচ

লোকেহস্মিন্ দ্বিবিঘ্না নিষ্ঠা পুৰা প্ৰোক্তা ময়ানথ।

জ্ঞানযোগেন সাঙ্খ্যানাং কৰ্মযোগেন যোগিনাম্ ॥ ৩ ॥

হে নিস্পাপ অৰ্জুন! এই সংসাৰত সত্য অন্বেষণৰ দুটা ধাৰা মোৰ দ্বাৰা প্ৰথমতই কোৱা হৈছে। প্ৰথমৰ তাৎপৰ্য্য সত্যযুগ বা ত্ৰেতা যুগত কেতিয়াও নাছিল, যিটো এতিয়া দ্বিতীয় আধ্যাত কোৱা হ'ল। জ্ঞানী জনৰ কাৰণে জ্ঞানমাৰ্গ আৰু যোগীৰ কাৰণে নিষ্কাম কৰ্মযোগ বা কৰ্মমাৰ্গ কোৱা হৈছে। দুইটা মাৰ্গ অনুসৰি কৰ্মতো কৰিবই লাগিব। কৰ্ম অনিবাৰ্য্য।

ন কৰ্মগামনাৰন্তান্নৈক্ষম্যং নুৰুযোহশ্নুতে।

ন চ সন্ন্যসনাদেব সিদ্ধিং সমধিগচ্ছতি ॥ ৪ ॥

অৰ্জুন! কৰ্ম আৰম্ভ নকৰাকৈ কোনো মানুহ নিষ্কৰ্মতাৰ অন্তিম স্তিতিত
প্ৰাপ্ত হব নোৱাৰে আৰু আৰম্ভ কৰা কৰ্মক বা ত্ৰিঃয়াক ত্যাগ কৰিলেও
ভগৱৎপ্ৰাপ্তীৰূপী পৰমসিদ্ধি প্ৰাপ্ত হব নোৱাৰি। এতিয়া তোমাক জ্ঞানমাৰ্গ
ভাল লাগিব নে নিষ্কাম কৰ্ম মাৰ্গ, দুইটাতে কৰ্ম কিন্তু কৰিবই লাগিব।

প্ৰায়ে এনে স্থলত, মানুহে ভগৱৎপথত সংক্ষিপ্ত মাৰ্গ আৰু নিজক
বচাৰ বিচাৰে। “কৰ্ম আৰম্ভই কৰা নাই হৈ গ’ল নিষ্কৰ্মা” এনেকুৱা ভুলো থাকি
যায়, সেইকাৰণে শ্ৰীকৃষ্ণই জোৰ দি কৈছে যে কৰ্ম আৰম্ভ নকৰাকৈ কোনোৱেই
নিষ্কৰ্মা ভৱত প্ৰাপ্ত হব নোৱাৰে। এনে ধৰনে বহুতো লোকে কয় “মইতো
জ্ঞানমাৰ্গী জ্ঞানমাৰ্গত কৰ্মই নাই।” এনেকুৱা ভাবি কৰ্মক ত্যাগ কৰা জন জ্ঞানী
নহয়। আৰম্ভ কৰা ত্ৰিঃয়াক ত্যাগ মাত্ৰ কৰি দিলেই কোনোৱে
ভগৱৎসাক্ষাতকাৰৰূপী পৰমসিদ্ধি প্ৰাপ্ত কৰিব নোৱাৰে। কিয়নো-

ন হি কশ্চিৎক্ষণমপি জাতু তিষ্ঠত্যকৰ্মকৃৎ।

কাৰ্যতে হ্যৱশঃ কৰ্ম সৰ্বঃ প্ৰকৃতিজৈষ্ঠুণৈঃ।। ৫।।

কোনো পুৰুষে কোনো কালতে এক্ষণ্তেকো কৰ্ম নকৰাকৈ থাকিব
নোৱাৰে, কিয়নো সকলো পুৰুষে প্ৰকৃতিৰ পৰা উৎপন্ন হোৱা গুণৰ দ্বাৰা বিবশ
হৈ কৰ্ম কৰে। প্ৰকৃতি আৰু প্ৰকৃতিৰ পৰা উৎপন্ন গুণ যেতিয়ালৈকে জীৱিত
থাকে, তেতিয়ালৈকে কোনো পুৰুষে কৰ্ম নকৰাকৈ থাকিব নোৱাৰে।

চাৰি আধ্যায়ৰ তেত্ৰিশ আৰু সাতত্ৰিশ শ্লোকত শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছেযে
যেতিয়া মাত্ৰ কৰ্ম জ্ঞানত সমাপ্ত হৈ যায়। জ্ঞানৰূপী অগ্নীয়ে সম্পূৰ্ণ কৰ্মক
ভষ্ম কৰি দিয়ে। ইয়াত তেওঁ কয় যে কৰ্ম নকৰাকৈ কোনো থাকিব নোৱাৰে।
অন্ততঃ সেই মহাপুৰুষ সকলে কি কয়? তেওঁলোকে এইটো কব বিচাৰিছে
যে যজ্ঞ কৰি থাকোতে তিনিও গুণৰ পৰা অতিত হৈ যায়। মনৰ বিলয় আৰু
সাক্ষাৎকাৰৰ সৈতে যজ্ঞৰ পৰিণাম ওলাই যায়, কৰ্ম শেষ হৈ যায়। সেই
নিৰ্ধাৰিত ত্ৰিঃয়াৰ পূৰ্ণতাৰ প্ৰথমই কৰ্ম শেষ নহয়, প্ৰকৃতিয়ে নেৰে।

কৰ্মেদ্ৰিয়াণি সংযম্য য আস্তে মনসা স্মৰণ্।

ইন্দ্ৰিয়াৰ্থান্ৰিমূঢ়াত্মা মিথ্যাচাৰঃ স উচ্যতে।। ৬।।

ইমানতো বিশেষ মুঢ় লোক, যি কমেদ্ৰিয়ক জোৰেৰে ৰাখি ইন্দ্ৰিয়ৰ ভোগক মনেৰে স্মৰণ কৰি থাকে, তেওঁলোক মিছলীয়া, কপটি, তেওঁলোক জ্ঞাণী নহয়। কৃষ্ণৰ সময়তো তেনে ধৰণৰ লোক আছিল। তেনে অন্ধ পৰম্পৰা আছিল। মানুহ বিলাকে কৰিব লগীয়া ত্ৰিণ্যা বাদ দি, ইন্দ্ৰিয়ক জোৰেৰে নিৰোধ কৰি বহিছিল আৰু কৈছিল যে মই জ্ঞাণী, মই পূৰ্ণ। কিন্তু শ্ৰীকৃষ্ণই কয় যে তেওঁলোক ধূৰ্ত্ত। জ্ঞানমার্গ ভাল লাগক বা নিষ্কাম কৰ্মযোগ, দুইটা মার্গতে কাম কিন্তু কৰিবই লাগিব।

যস্ত্বিন্দ্ৰিয়াণি মনসা নিয়ম্যাৰভতেহৰ্জুন।

কমেদ্ৰিয়ৈঃ কৰ্মযোগমসক্তঃ স বিশিষ্যতে ॥ ৭ ॥

অৰ্জুন! যি পুৰুষৰ মনে ইন্দ্ৰিয়ক বশ কৰি যেতিয়া মনত বাসনাৰ স্মৃষ্ণনো নাথাকে, সৰ্বথা অনাসক্ত হৈ কমেদ্ৰিয়ৰ দ্বাৰা কৰ্মযোগৰ আচৰণ কৰে, সেইজন শ্ৰেষ্ঠ। ঠিক আছে, বুজা গ'ল যে কৰ্মৰ আচৰণ কৰিব লাগে, কিন্তু এই প্ৰশ্ন উঠে, যে কেনে কৰ্ম কৰা হয়? ইয়াত কৈছে-

নিয়তং কুৰু কৰ্ম ত্বং কৰ্ম জ্যায়ো হ্যকৰ্মণঃ।

শৰীৰযাত্ৰাপি চ তে ন প্ৰসিদ্ধোদকৰ্মণঃ ॥ ৮ ॥

অৰ্জুন! তুমি নিৰ্ধাৰিত কৰা কৰ্মকে কৰা। অৰ্থাৎ কৰ্মতো বহুত আছে তাৰ ভিতৰত নিৰ্বাচিত কৰ্ম কৰা। সেই নিয়ত কৰ্মকে কৰা। কৰ্ম নকৰাতকৈ কৰ্ম কৰাই শ্ৰেষ্ঠ; সেই কাৰণে কৰিয়েই থাকা, অলপো যদি আগবাঢ়া, তেতিয়াও আগতে কোৱাৰ দৰে মহান জন্ম-মৰণৰ ভয়ৰ পৰা উদ্ধাৰ পাবা সেইকাৰণে শ্ৰেষ্ঠ। কৰ্ম নকৰিলে তোমাৰ শৰীৰ যাত্ৰাও সিদ্ধ নহব। শৰীৰ যাত্ৰাৰ অৰ্থ মানুহে কয় - 'শৰীৰ নিৰ্বাহ' তেনেকৈ শৰীৰ নিৰ্বাহ? কি আপুনি শৰীৰ নে? এই পুৰুষে জন্ম-জন্মান্তৰৰ পৰা, যুগ-যুগান্তৰৰ পৰা শৰীৰ যাত্ৰাইতো কৰি আহি আছে। যেনেকৈ কাপোৰ পুৰণা হ'ল - বেলেগ এটা আৰু এটা সলালে, এই ধৰণে কীট-পতঙ্গৰ পৰা মানৱলৈকে, ব্ৰহ্মাৰ পৰা সকলো খিনি জগত পৰিবৰ্ত্তন হৈয়ে আছে। ওপৰলৈ তললৈ সকলো যোণিত সমানভাৱে এই জীৱই শৰীৰৰ যাত্ৰাইতো কৰি আছে। কৰ্ম এনেকুৱা এটা বস্তু যি এই যাত্ৰাক সিদ্ধ কৰি দিয়ে, পূৰ্ণ কৰি দিয়ে। ধৰি লোৱা হওঁক, একমাত্ৰ জন্ম লব

লগা হলে যাত্ৰা হৈয়ে থাকিব, এতিয়াও পথিক গৈয়ে আছে। তেওঁ দ্বিতীয় শৰীৰৰ কাৰণে যাত্ৰা কৰি আছে। যাত্ৰা তেতিয়াহে পূৰ্ণ হব, যেতিয়া গন্তব্য পাব। পৰমাত্মাত স্থিত হোৱা পাছত এই আত্মাক শৰীৰৰ যাত্ৰা কৰিব নালাগে, অৰ্থাৎ শৰীৰ ধাৰণ আৰু ত্যাগ এই ক্ৰম সমাপ্ত হৈ যায়। সেয়ে কৰ্ম এনে এটা বস্তু যে ই পুৰুষক পুনৰ শৰীৰৰ যাত্ৰালৈ নানে 'মোক্ষসেহশুভাত' অৰ্জুনঙ্গ তুমি এই কৰ্মক কৰিয়েই সংসাৰ বন্ধন 'অশুভ' ৰ পৰা মুক্ত হবা। কৰ্ম এনে এটা বস্তু, যি সংসাৰ বন্ধনৰ পৰা মুক্তি দিয়ে। এতিয়া প্ৰশ্ন হয় সেই নিৰ্দ্ধাৰিত কৰ্ম কি? ইয়াত কোৱা হৈছে-

যজ্ঞাৰ্থাৎকৰ্মণোহন্যত্ৰ লোকোহয়ং কৰ্মবন্ধনঃ।

তদৰ্থং কৰ্ম কৌন্তেয় মুক্তসঙ্গঃ সমাচৰ ॥ ৯।।

অৰ্জুন! যজ্ঞৰ প্ৰক্ৰিয়াই হ'ল কৰ্ম। সেইটোৱে কৰ্ম যাৰ দ্বাৰা যজ্ঞ পুৰা হয়। এইটো আমি জানো যে কৰ্ম এটা নিৰ্দ্ধাৰিত প্ৰক্ৰিয়া ইয়াৰ অতিৰিক্ত যি কৰ্ম কৰা হয়, সেইবোৰ কি কৰ্ম নহয় নে? শ্ৰীকৃষ্ণই কয় - নহয়, সেইবোৰ কৰ্ম নহয়। 'অনত্ৰ লোকোহয়ং কৰ্মবন্ধনঃ' - এই যজ্ঞৰ প্ৰক্ৰিয়াৰ অতিৰিক্ত সংসাৰত যি কোনো কৰ্ম কৰা হয়, সমগ্ৰ বিশ্ব যাৰ বাবে ৰাতি দিনে ব্যস্ত আছে, সেইটো এইলোকৰেই এটা বন্ধন মাত্ৰ, কৰ্ম নহয়। কৰ্মতো 'মোক্ষসেহশুভাত' অশুভ অৰ্থাৎ সংসাৰ বন্ধনৰ পৰা মুক্ত কৰি দিয়ে। মাত্ৰ যজ্ঞৰ প্ৰক্ৰিয়াই হ'ল কৰ্ম। সেয়াই কৰ্ম যিয়ে যজ্ঞ পূৰ্ণ কৰে। সেয়ে অৰ্জুনঙ্গ সেই যজ্ঞৰ পূৰ্ত্তিৰ কাৰণে সংগ দোষৰ পৰা বেলেগে থাকি উত্তম আচৰণেৰে কৰ্ম কৰা। সংগদোষৰ পৰা বেলেগ নহ'লে এই কৰ্ম কৰা নহয়।

এতিয়া আমি বুজি পালো যে যজ্ঞৰ প্ৰক্ৰিয়াই হ'ল কৰ্ম। কিন্তু ইয়াত আকৌ এটা নতুন প্ৰশ্ন উৎপন্ন হয় যে সেই যজ্ঞ কি যাক কৰিব লাগে? এই ক্ষেত্ৰত শ্ৰীকৃষ্ণই প্ৰথমে যজ্ঞ বিষয়ে নকৈ এইটো কৈছে যে যজ্ঞ আহিল কৰ পৰা? সিয়ে দিয়ে কি? ইয়াৰ বিশেষতাৰ ওপৰত প্ৰকাশ কৰিছে আৰু চতুৰ্থ আধায়ত গৈ স্পষ্ট কৰিছে যে যজ্ঞ কি যাক আমি কাৰ্য্যৰূপ দিও আৰু আমাৰ দ্বাৰা কৰ্ম হবলৈ ধৰে। যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণৰ পদ্ধতিৰ পৰা স্পষ্ট হব পাৰিছো যে যি বস্তুৰ চিত্ৰণ প্ৰস্তুত কৰিব, তেখেতে প্ৰথমে তাৰ বিশেষতাৰ ওপৰত

চিত্ৰণ দাঙি ধৰে যাৰ ফলত শ্ৰদ্ধা জাগি উঠে। তাৰ পিছত লব লগীয়া সারধানতাৰ ওপৰত প্ৰকাশ কৰি আৰু শেষত মূল সিদ্ধান্ত প্ৰতিপাদন কৰে।

স্মৰণ থাকক যে ইয়াত শ্ৰীকৃষ্ণই কৰ্মৰ অন্য অংগৰ ওপৰত প্ৰকাশ কৰিছে যে, কৰ্মহ'ল এক নিৰ্দ্দাৰিত ক্ৰিয়া। যি কৰা হয়, সেইটো কৰ্ম হ'ব নোৱাৰে।

আধ্যায় দুইত প্ৰথম বাৰৰ বাবে কৰ্মৰ নাম ললে, তাৰ বিশেষতাৰ ওপৰত জোৰ দিলে, তাত লব লগা সারধানতা সম্পৰ্কে কলে, কিন্তু এইটো নকলে যে কৰ্ম কি? ইয়াত আহি তিনি আধ্যায়ত কলে যে কোনো লোকেই কৰ্ম নকৰাকৈ থাকিব নোৱাৰে। প্ৰকৃতিৰ লগত পৰাধীন হৈ মানুহে কৰ্ম কৰে। ইয়াৰ বাদেও যি সকললোকে ইন্দ্ৰিয়ক জোৰেৰে ৰোধ কৰি মনেৰে বিষয়ক চিন্তন কৰি থাকে, তেওঁলোক দস্তী, তেওঁলোকে দস্তৰ আচৰণ কৰে। সেইকাৰণে অৰ্জুনঙ্গ মনেৰে ইন্দ্ৰিয়ক একগোট কৰি তুমি কৰ্ম কৰা। কিন্তু প্ৰশ্ন একেই থাকিল যে কি কৰ্ম কৰা হয়? ইয়াত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছে - অৰ্জুনঙ্গ তুমি নিৰ্দ্দাৰিত কৰা কৰ্মহে কৰা।

এতিয়া প্ৰশ্ন হয় যে নিৰ্দ্দাৰিত কৰ্ম কি? যাক আমি কৰিব লাগে। তেতিয়া কলে যে যজ্ঞক কাৰ্য্যৰূপ দিয়াই হ'ল কৰ্ম। এতিয়া প্ৰশ্ন হয় যে সেই যজ্ঞ কি? ইয়াত যজ্ঞৰ উৎপত্তি, বিশেষতা কৈয়ে বৈ যায়, আধ্যায় চাৰিত গৈ তেখেতে যজ্ঞৰ সম্পূৰ্ণ ৰূপ প্ৰকাশ কৰে, যাক কৰাই হ'ল কৰ্ম।

কৰ্মৰ এই পৰিভাষা হ'ল গীতা বুজিব পৰা চাবিকাঠি যজ্ঞৰ বাহিৰেও সংসাৰত মানুহে কিবা এটা কৰিয়ে থাকে। কোনোবাই খেতি কৰে, কোনোবাই ব্যাপাৰ কৰে। কোনোৱা বিষয়া কোনোবা সেৱক। কোনোবাই নিজক বুদ্ধিজীৱি বুলি কয়, আন কিছুমানে কয় শ্ৰমজীৱি। কোনোৱে সমাজ সেৱাক কৰ্ম বুলি ধৰে, কোনোবাই দেশ সেৱাক আৰু এই কৰ্মত লাগিয়েই সকাম আৰু নিষ্কাম কৰ্ম বুলি ভাবিলয়। কিন্তু শ্ৰীকৃষ্ণই কয় - এইবোৰ কৰ্ম নহয়। 'অ ন্য ত্ৰ লোকোহয়ং কৰ্মবন্ধনঃ' যজ্ঞৰ প্ৰক্ৰিয়াৰ বাদে যিয়েই কৰা হয়, সেইটো

এই লোকৰেই বন্ধনকাৰী কৰ্ম হয়, মোক্ষৰ কাৰণে নহয়। বস্তুতঃ যজ্ঞৰ প্ৰক্ৰিয়াই কৰ্ম। এতিয়া যজ্ঞৰ কথা নকৈ প্ৰথমে এইটো কলে যে যজ্ঞ আহিল ক'ৰ পৰা -

সহযজ্ঞা প্ৰজাঃ সৃষ্টা পুৰোৰাচ প্ৰজাপতিঃ।

অনেন প্ৰসবিষ্যধ্বমেঘ বোহস্তিষ্টকামধুক্ ॥ ১০ ॥

প্ৰজাপতি ব্ৰহ্মাই কল্পৰ আদিত যজ্ঞৰ সৈতে প্ৰজাৰ সৃষ্টি কৰি কলে যে এই যজ্ঞৰ দ্বাৰা বুদ্ধি প্ৰাপ্ত কৰা। এই যজ্ঞ তোমালোকৰ **'ইষ্টকামধুক্'** - য'ত অনিষ্ট নহয়, বিনাশৰহিত ইষ্ট সম্বন্ধি কামনা পূৰ্ণ কৰে।

যজ্ঞৰ সৈতে প্ৰজাৰ কোনে সৃষ্টি কৰিলে? প্ৰজাপতি ব্ৰহ্মাই। ব্ৰহ্মা কোন? চাৰিটা মুখ আৰু আঠটা চকু থকা দেৱতা নেকি? যি প্ৰচলিত হৈ আছে? নহয়, শ্ৰীকৃষ্ণৰ অনুসৰি দেৱতা নামৰ কোনো বেলেগ সত্তা এটা নহয়। আকৌ প্ৰজাপতি কোন? মূলতঃ যিয়ে প্ৰজাৰ মূল উৎপত্তি স্থান পৰমাত্মাত প্ৰবেশ পাইছে, সেই মহাপুৰুষজনেই প্ৰজাপতি। বুদ্ধিয়েই ব্ৰহ্মা - অহংকাৰ শিব, বুদ্ধি অজ, মন শশি, চিত্ত মহান্'(ৰামচৰিতমানস) সেই সময়ত বুদ্ধি যন্ত্ৰ মাত্ৰ হয়। সেইজন পুৰুষৰ বানীত পৰমাত্মাৰেই বাণী থাকে।

ভজনৰ বাস্তৱিক ক্ৰিয়া আৰম্ভ হোৱাৰ লগে লগে বুদ্ধিৰ উত্তৰোত্তৰ বিকাশ হব ধৰে। আৰম্ভনীত সেই বুদ্ধি ব্ৰহ্মবিদ্যাৰ লগত সংযুক্ত হোৱাৰ কাৰণে **'ব্ৰহ্মবিদ'** বুলি কোৱা হয়। ক্ৰমশঃ বিকাৰবোৰৰ শমন হব ধৰাত ব্ৰহ্মবিদ্যাত শ্ৰেষ্ঠ হোৱাত তেওঁক **'ব্ৰহ্মবিদ্বৰ'** কোৱা হয়। বিকাশ আৰু ক্ষুণ্ণতাৰ হোৱাৰ কাৰণে বুদ্ধিৰ অৱস্থা আৰু বিকসিত হয়। তেওঁক **'ব্ৰহ্মবিদ্বৰীয়ান'** কবলৈ ধৰা হয়। সেই অৱস্থাত ব্ৰহ্মবিদ পুৰুষ আনকো বিকাশৰ মাৰ্গলৈ লৈ যোৱাৰ অধিকাৰ প্ৰাপ্ত কৰি লয়। বুদ্ধিৰ শেষ পৰ্য্যায় হ'ল **'ব্ৰহ্মবিদ্বৰিষ্ট'** অৰ্থাৎ ব্ৰহ্মবিদ্বৰ সেই অৱস্থা য'ত ইষ্ট প্ৰবাহিত হৈ থাকে। এনে স্থিতিত থকা মহাপুৰুষে প্ৰজাগনৰ মূল উৎপন্ন স্থল পৰমাত্মাত প্ৰবিষ্ট হয় আৰু তাতেই স্থিত হৈ থাকে। এনে মহাপুৰুষৰ বুদ্ধি মাত্ৰ যন্ত্ৰৰ দৰে হয়। তেওঁকেই প্ৰজাপতি বোলা হয়। তেওঁ প্ৰকৃতিৰ দ্বন্দ্বৰ বিশ্লেষণ কৰি 'আৰাধনা

ক্রিয়াৰ' ৰচনা কৰে। যজ্ঞৰ অনুৰূপ সংস্কাৰৰ দেন হ'ল প্ৰজা ৰচনা। ইয়াৰ পূৰ্বে সমাজ অচেতন অব্যৱস্থিত হৈ থাকে। সৃষ্টি হ'ল অনাদি কালৰ। সংস্কাৰ সমূহো প্ৰথমৰ পৰাই আছে, কিন্তু অস্ত-ব্যস্ত বিকৃত হৈ আছে। যজ্ঞৰ অনুৰূপে তাক ৰূপান্তৰ কৰাই হ'ল ৰচনা বা সজোৱা। এনে মহাপুৰুষে কল্পৰ। আদিতে যজ্ঞৰ সৈতে প্ৰজাৰ ৰচনা কৰিছিল। কল্পই নিৰোগ বনায়। বৈদ্য সকলে কল্প সৃষ্টি কৰে, কোনোবাই কাযাকল্প ৰচনা কৰে। এইটো ক্ষন্তেকিয়া শৰীৰৰ কল্প। বাস্তৱিক কল্প তেতিয়াই হয়, যেতিয়া ভবৰোগৰ পৰা মুক্তি পোৱা যায়। আৰাধনাৰ আৰম্ভনী হ'ল কল্পৰ আৰম্ভনী। আৰাধনা পূৰ্ণ হ'ল তেতিয়া আপোনাৰ কল্পও পূৰা হ'ল।

এইধৰণে পৰমাত্মা স্বৰূপস্থিত মহাপুৰুষে ভজনৰ আৰম্ভনীতে যজ্ঞৰ সৈতে সংস্কাৰক সুসংগঠিত কৰি কৈছে যে এই যজ্ঞৰ দ্বাৰা তোমালোক বৃদ্ধি প্ৰাপ্ত হোৱা। কেনেধৰণৰ বৃদ্ধি? কেচা ঘৰ আছিল বৃদ্ধি হব ধৰিব এনে বৃদ্ধি নেকি? নহয়, যজ্ঞ, **'ইষ্টকামধুক'** ইষ্ট সম্বন্ধীয় কামনা পূৰ্ণ কৰিব। ইষ্ট হ'ল পৰমাত্মা। সেই পৰমাত্মা সম্বন্ধীয় কামনা পূৰ্ণ হব। এতিয়া প্ৰশ্ন এটা স্বাভাৱিকতে হয় যে যজ্ঞই পোনে পোনে সেই পৰমাত্মাৰ প্ৰাপ্তী কৰি দিব অথবা ক্ৰমে গৈ গৈ প্ৰাপ্ত হব।

দেবান্ ভৱয়তানেন তে দেৱা ভৱয়ন্তু ৰঃ।

পৰম্পৰং ভৱয়ন্তুয়ঃ শ্ৰেয়ঃ পৰমবাস্ত্যথ ॥ ১১ ॥

এই যজ্ঞৰ দ্বাৰা দেৱতাৰ উন্নতি কৰা, অৰ্থাৎ দৈবী সম্পদৰ বৃদ্ধি কৰা। সেই দেৱতা সকলে তোমালোকৰ উন্নতি কৰিব। এনে ধৰণে নিজৰ ভিতৰত বৃদ্ধি হৈ পৰম শ্ৰেয়, যাৰ পিছত পাবলৈ আৰু একো বাকী নাথাকে, এনে পৰম কল্যাণৰ প্ৰাপ্ত কৰিবা। যেতিয়াই আমি যজ্ঞ প্ৰক্ৰিয়াত সোমাই যাম (আগলৈ যজ্ঞৰ অৰ্থ হব আৰাধনাৰ বিধি) তেতিয়াই আমাৰ হৃদয় দেশত দৈবী সম্পদ অৰ্জন হব ধৰিব। পৰমদেৱতা একমাত্ৰ পৰমাত্মা, সেই পৰমাত্মাত প্ৰবেশ দিয়াৰ পৰা যি সম্পদ, অন্তঃকৰণৰ সজাতীয় প্ৰবৃত্তি যি, তাকে দৈবী সম্পদ কোৱা হয়, সেই পৰমদেৱত পোৱাৰ সম্ভৱ কৰি দিয়ে, সেইকাৰণে

দৈবী সম্পদ বুলি কোৱা হয়। বাহিৰত যেনে শিল-পানী-দেৱতা আদি মানুহে কল্পনা কৰে ঠিক সেইদৰে নহয়। যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণৰ শব্দত ইয়াৰ কোনো অস্তিত্বই নাই। তেওঁ কৈছে -

ইষ্টান্ভোগান্‌হি বো দেবা দাস্যন্তে যজ্ঞভাৰিতাঃ।

তৈৰ্দ্ভানপ্ৰদায়ৈভ্যো যো ভুঙক্তে স্তেন এৰ সঃ ॥ ১২ ॥

যজ্ঞৰ দ্বাৰা সম্বৰ্দ্ধিত দেৱতা (দৈবী সম্পদ) আপোনাক **‘ইষ্টান ভোগান্‌ হি দাস্যন্তে’** ইষ্ট অৰ্থাৎ আৰাধ্য সম্বন্ধি ভোগক হে দিয়ে, আৰু একো নিদিয়। **‘তেঃ দত্তান্‌’** তেওঁৱেই একমাত্ৰ দিব পৰাজন। ইষ্ট পাবলৈ অন্য কোনো বিকল্পই নাই। এই দৈবী গুণৰ বৃদ্ধি নকৰাকৈ যি জনে ভোগ কৰে তেওঁ নিশ্চয় চোৰ হয়। যেতিয়া তেওঁ নেপালেইতো ভোগ কৰিব কি? কিন্তু অৱশ্যে কয় যে - মই পূৰ্ণ হৈ আছো, মই তত্বদৰ্শী। এনে ফিতাহি মৰাজন এই পথত নাথাকেই। তেওঁ নিশ্চয় চোৰ, তেওঁ প্ৰাপ্তীৱান হবই নোৱাৰে। কিন্তু যি সকলে পায়, তেওঁলোকে কি পায়?

যজ্ঞশিষ্টাশিনঃ সন্তো মুচ্যন্তে সৰ্বকিল্বিষৈঃ।

ভুঞ্জতে তে ত্বমং পাপা য়ে পচন্ত্যাত্মকাৰণাৎ ॥ ১৩ ॥

যজ্ঞৰ পৰা বাহি হোৱা অন্ন খোৱাজন সন্তজন সকলো পাপৰ পৰা মুক্ত হয়। দৈবী সম্পদৰ বৃদ্ধি কৰি পৰিণামত প্ৰাপ্তীকালো পূৰ্ত্তীকাল হৈ পৰে। যেতিয়া যজ্ঞ পূৰ্ণ হৈ গ’ল, বাহি থকা ব্ৰহ্মাই অন্ন। ইয়াকে শ্ৰীকৃষ্ণই অন্য শব্দত কৈছে **‘যজ্ঞ শিষ্টামৃতভূজো যান্তি ব্ৰহ্ম সনাতনম্’** যজ্ঞই যাৰ সৃষ্টি কৰে সেই অন্নক পান কৰাজন ব্ৰহ্মত প্ৰবিষ্ট হয়। ইয়াত তেখেতে কয় যে যজ্ঞৰ পৰা বাহি হোৱা অশন (ব্ৰহ্ম-পিয়ুষক) ক পান কৰাজন সকলো পাপৰ পৰা ত্ৰান পায়। সন্তজনতো পাব হৈ গুচি যায়, কিন্তু পাপীলোকে মোহৰ মাধ্যমেৰে উৎপন্ন শৰীৰৰ কাৰণে বৰ্ত্তী থাকে। তেওঁলোকে পাপ খায়। তেওঁলোকে ভজনো কৰে, আৰাধনাক বুজিও পায়, আগও বাঢ়ে, কিন্তু তাৰ পৰিবৰ্ত্তে এটা মধুৰ ইচ্ছা জাগ্ৰত হ’ল যে **‘আত্মকাৰণাত’** শৰীৰৰ কাৰণে, শৰীৰ সম্বন্ধীয় কিছু প্ৰাপ্ত হওক। তেওঁ পাবও কিন্তু ইমান ভোগৰ পিছতো

একেঠাইতে পায় নিজকে, যৰপৰা আৰম্ভ কৰিছিল। ইয়াতকৈ ডাঙৰ ক্ষতি কি হ'ব পাৰে? যেতিয়া শৰীৰেই নশ্বৰ, তেতিয়া এই সুখ ভোগ কিমান দিন থাকিব? তেওঁ আৰাধনাতো কৰে, কিন্তু সলনীত পাপকে খায় - **‘পলটি সুখতে সঠি বিষ লেহী।’** তেওঁ নষ্টতো নহয়, কিন্তু আগ বাঢ়িব নোৱাৰিব। সেইকাৰণে শ্ৰীকৃষ্ণই নিষ্কাম ভাৱেৰে কৰ্ম (ভজন) কৰিবলৈ জোৰ দিছে। এতিয়ালৈকে শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছে যে - যজ্ঞই পৰমশ্ৰেয় প্ৰদান কৰে আৰু তাৰ ৰচনা মহাপুৰুষ সকলৰ পৰা হয়, সেই মহাপুৰুষ প্ৰজাৰ ৰচনা কৰিবলৈ কিয় প্ৰবৃত্ত হয়? এই ক্ষেত্ৰত কৈছে -

অন্নাদ্ভবন্তি ভূতানি পৰ্জন্যাদন্নসম্ভবঃ।১৪

যজ্ঞাদ্ভবতি পৰ্জন্যো যজ্ঞঃ কৰ্মসমুদ্ভবঃ।।

কৰ্ম ব্ৰহ্মোদ্ভবং বিদ্ধি ব্ৰহ্মাক্ষৰসমুদ্ভবম্।

তস্মাৎসৰ্বগতং ব্ৰহ্ম নিত্যং যজ্ঞে প্ৰতিষ্ঠিতম্।। ১৫।।

সম্পূৰ্ণ প্ৰাণী অন্নৰ পৰা উৎপন্ন হয়। ‘অন্ন ব্ৰহ্মেতি ব্যজানাত’ অন্নই পৰমাত্মা। সেই ব্ৰহ্ম পিপাসাক উদ্দেশ্য কৰিয়েই প্ৰাণী যজ্ঞৰ পিনে অগ্ৰসৰ হয়। অন্নৰ উৎপত্তি বৃষ্টিৰ পৰা হয়। ডাৱৰৰ পৰা হোৱা বৰ্ষা নহয়, এইটো কৃপাবৃষ্টি। পূৰ্ব সঞ্চিত যজ্ঞ কৰ্মই এই জন্মত, যৰ পৰা সাধন এৰা খাইছিল, তাৰ পৰাই ইষ্টৰ কৃপা ৰূপত বৰষিবলৈ ধৰে। আজিৰ আৰাধনা কালিলৈ কৃপা ৰূপত পোৱা যায়। সেইকাৰণে বৃষ্টি যজ্ঞৰ পৰাই হয়। স্বাহা কলেই আৰু ঘি-তিল জলালেই যদি বৃষ্টি হ’ল হেতেন, তেতিয়া হলে বিশ্বৰ অধিকাংশ মৰুভূমি অনুৰ্বৰ কিয় হৈছে। উৰ্বৰ হলহেঁতেন। ইয়াত কৃপাবৃষ্টি যজ্ঞৰেই দেন। এই যজ্ঞ কৰ্মৰ দ্বাৰাই উৎপন্ন হয়, কৰ্মৰেই যজ্ঞ পূৰ্ণ হয়।

সেই কৰ্ম বেদৰ পৰা উৎপন্ন হোৱা বুলি জানা। বেদ ব্ৰহ্মস্থিত মহাপুৰুষৰ বানী হয়। যি তত্ত্ব জনা নাজায় সেই প্ৰত্যক্ষ অনুভূতিৰ নামেই বেদ। এইটো কোনো শ্লোক সংগ্ৰহ নহয়। বেদ অবিনাশী পৰমাত্মাৰ পৰা উৎপন্ন হোৱা বুলি জনা। প্ৰকাশতো কৰিছে মহাপুৰুষ সকলে, কিন্তু তেওঁ পৰমাত্মা সদৃশ হৈ গৈছে, তেওঁৰ মাধ্যমেদি অবিনাশী পৰব্ৰহ্ম ই কয়,

সেইকাৰণে বেদক অপৌৰুষেয় বুলি কোৱা হয়। মহাপুৰুষ সকলে বেদ কৰ পৰা পালে? সেইয়ে বেদ অবিনাশী পৰমাত্মাৰ পৰাই উৎপন্ন হ'ল। সেই মহাপুৰুষ, মৰমপুৰুষেই, তেওঁ এটা যন্ত্ৰ যেনেই সেইয়ে তেওঁৰ দ্বাৰা কোৱা হয়। কিয়নো যজ্ঞৰ দ্বাৰা মনৰ নিৰোধাৱস্থাত সেইটো বিদিত হয়। সেইকাৰণে সৰ্বব্যাপি পৰম অক্ষৰ পৰমাত্মা সকলো সময়তে যজ্ঞতেই প্ৰতিষ্ঠিত হয়। যজ্ঞই হ'ল তেওঁক প্ৰাপ্ত কৰাৰ একমাত্ৰ উপায়। ইয়াত জোৰ দি কৈছে -

এবং প্ৰবৰ্তিতং চক্ৰং নানুবৰ্তয়তীহ যঃ।

অঘায়ুৰিन्द्रিয়াৰামো মোঘং পাৰ্থ স জীবতি ॥ ১৬ ॥

হে পাৰ্থ! যি পুৰুষে এই লোকত মনুষ্যশৰীৰ প্ৰাপ্ত কৰিও এই প্ৰকাৰে চলোৱা সাধন প্ৰক্ৰিয়া অনুসৰি নচলে অৰ্থাৎ দৈবী সম্পদৰ উৎকৰ্ষ, দেৱতাৰ বৃদ্ধি আৰু পৰম্পৰ বৃদ্ধিৰ দ্বাৰা অক্ষয়ধামৰ প্ৰাপ্ত কৰা, এই ক্ৰম অনুসৰি যি নচলে, ইন্দ্ৰিয়ৰ সুখৰ কাৰণে ইচ্ছা কৰে তেওঁৰেই 'পাপায়ু পুৰুষ' তেওঁৰ জীয়াই থকাটো মিছা।

বন্ধু সকল! যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণেই দ্বিতীয় আধ্যাত কৰ্মৰ নাম লৈছিল আৰু এই আধ্যাত তেখেতে নিৰ্দিষ্ট কৰ্মৰ আচৰণ কৰিবলৈ কৈছে। যজ্ঞৰ প্ৰক্ৰিয়াই হ'ল কৰ্ম। ইয়াৰ বাদে যি কাম কৰা যায়, তাক এই লোকৰ বন্ধন বুলি কৈছে। সেইকাৰণে সংগদোষ পৰিহাৰ কৰি সেই যজ্ঞৰ পূৰণৰ কাৰণে কৰ্মৰ আচৰণ কৰা। তেখেতে যজ্ঞৰ বিশেষতাৰ ওপৰত প্ৰকাশ কৰি কৈছে যে যজ্ঞৰ উৎপত্তি ব্ৰহ্মাৰ পৰা প্ৰজাই অন্নক উদ্দেশ্য কৰি সেই যজ্ঞত প্ৰবৃত্ত হয়। যজ্ঞ কৰ্মৰ পৰা আৰু কৰ্ম অপৌৰুষেয় বেদৰ পৰা উৎপন্ন হয়, অৱশ্য বেদৰ মন্ত্ৰ দ্ৰষ্টা মহাপুৰুষেই আছিল। তেওঁ পুৰুষত্ব বিলীন হৈ গৈছিল। প্ৰাপ্তীৰ পিছত অবিনাশী পৰমাত্মাই তেওঁৰ শেষ আছিল, সেয়ে বেদ পৰমাত্মাৰ পৰা উৎপন্ন। সৰ্বব্যাপি পৰমাত্মা যজ্ঞত সৰ্বদাই প্ৰতিষ্ঠিত হয়। এই সাধন চক্ৰ অনুসৰি যি জন নচলে, তেওঁ পাপায়ু পুৰুষ, অকল ইন্দ্ৰিয়ৰ আৰাম নাই, অৱশ্য অক্ষয় সুখ আছে। ইন্দ্ৰিয়ক সংযম কৰি তাৰ লগতে লাগি থকা যি বিধান। ইন্দ্ৰিয়ৰ সুখ বিচৰাজন পাপায়ু। এতিয়ালৈকে শ্ৰীকৃষ্ণেই কোৱা নাই যজ্ঞ কি? কি যজ্ঞ কৰিয়েই থাকিবা, ইয়াৰ অন্ত নাই নে? শ্ৰীকৃষ্ণেই কয় -

যজ্ঞাত্মৰতিৰেৰ স্যাদাত্মতৃপ্তশ্চ মানবঃ ।

আত্মন্যেৰ চ সন্তুষ্টস্তস্য কাৰ্যং ন বিদ্যাতে ॥ ১৭ ॥

কিন্তু যি মনুষ্য আত্মাতেই সদায় ৰত হৈ থাকে, আত্মতৃপ্ত, আৰু আত্মাতেই সন্তুষ্ট হৈ থাকে, তেওঁৰ কাৰণে কোনো কৰ্ত্তব্যই বাকী নাথাকে। এয়েইতো আছিল লক্ষ্যস্থান। যেতিয়া অব্যক্ত, সনাতন, অবিনাশী আত্মতত্ত্ব প্ৰাপ্ত হৈ গ'ল, তেতিয়া কাক বিচাৰিব? এনে পুৰুষৰ বাবে কৰ্মৰ আৱশ্যকতা নাই, আৰাধনাৰো আৱশ্যকতা নাই। আত্মা আৰু পৰমাত্মা ইটো আনটোৰ সমপৰ্য্যায়। এই ক্ষেত্ৰত পুনৰ চিত্ৰণ কৰিছে যে -

নৈব তস্য কৃতেনাৰ্থো নাকৃতেনেহ কশ্চন।

ন চাস্য সৰ্বভূতেষু কশ্চিদৰ্থব্যাপাশ্ৰয়ঃ ॥ ১৮ ॥

এই সংসাৰত সেই পুৰুষে কোনো কৰ্ম কৰিলেও লাভ নাই আৰু নকৰিলেও লোকচান নাই, প্ৰথম অৱস্থাত নিশ্চয় আৱশ্যক আছিল। তেওঁৰ সম্পূৰ্ণ প্ৰাণীত কোনো স্বাৰ্থ সম্পন্ন নাথাকে। আত্মাইতো শাস্ত্ৰত সনাতন, অব্যক্ত, অপৰিবৰ্ত্তনশীল আৰু অক্ষয়। যেতিয়া তাক প্ৰাপ্ত কৰিলে, তাতেই তেওঁ তৃপ্ত, তাতেই তেওঁ ওত-প্ৰোত ভাৱে স্থিত, আগলৈ কোনো সন্তাই নাই যাক বিচাৰিব। পাবনো বা কি? সেই পুৰুষৰ কাৰণে কৰ্ম এৰি দিলেও কোনোহানী নাই, যত বিকাৰ অংকণ হৈ আছিল, সেই চিন্তাই নাই। তেওঁৰ সম্পূৰ্ণ ভূতজগত, বাহ্যিক জগত, আন্তৰিক সংকল্প একোৱেই নাথাকিল। সকলোতকৈ ডাঙৰ অৰ্থ আছিল পৰমাত্মা। সেইটো যেতিয়া পালে, তেতিয়া অন্যৰ কি প্ৰয়োজন?

তস্মাদসক্তঃ সততং কাৰ্যং কৰ্ম সমাচৰ।

অসক্তো হ্যচৰনকৰ্ম পৰমাপ্নোতি পুৰুষঃ ॥ ১৯ ॥

স্থিতি প্ৰাপ্ত কৰিবলৈ হলে তুমি অনাসক্ত হোৱা, নিৰন্তৰ 'কাৰ্য্যকৰ্ম'- যি কৰাৰ যোগ্য কৰ্ম, সেই কৰ্ম ভাল ধৰণে কৰা। কিয়নো অনাসক্ত পুৰুষ কৰ্মৰ আচৰণৰ পৰাই পৰমাত্মাক প্ৰাপ্ত কৰে। 'নিয়ত কৰ্ম' "কাৰ্য্যকৰ্ম" একেই। কৰ্মৰ প্ৰেৰণা দি তেওঁ পুনৰ কৈছে -

কৰ্মণেৰ হি সংসিদ্ধিমাঙ্খিতা জনকাদয়ঃ।

লোকসঙ্গ্ৰহমেবাপি সম্পশ্যনকৰ্তুমহঁসি।। ২০।।

জনক মানে বজা জনক নহয়। জনক জন্মদাতা জনক কোৱা হয়। যোগেই জনক যি আপোনাৰ স্বৰূপক জন্ম দিয়ে, প্ৰকট কৰে। যোগত সংযুক্ত প্ৰত্যেক মহাপুৰুষেই জনক। এনে যোগ সংযুক্ত বহুতো ঋষি সকল **‘জনকাদয়ঃ’** জনক ইত্যাদি জ্ঞানী জন মহাপুৰুষো **‘কৰ্মণা** এবং হি সংসিদ্ধিম্’ কৰ্মৰ দ্বাৰা পৰম সিদ্ধি প্ৰাপ্ত কৰিছে। পৰমসিদ্ধি মানে পৰমতত্ত্ব পৰমাত্মাৰ প্ৰাপ্তী। জনক আদি যিমানবোৰ আগত মহৰ্ষি হৈছিল - এই **‘কাৰ্য্যং কৰ্ম’** ৰ দ্বাৰাই; যি যজ্ঞৰ প্ৰক্ৰিয়া আছিল, এই কৰ্ম কৰিয়েই **‘সংসিদ্ধিম্’** পৰমসিদ্ধি প্ৰাপ্ত কৰিছিল। কিন্তু প্ৰাপ্তীৰ পাছতো তেওঁলোকেও লোক সংগ্ৰহৰ নিমিত্তে কৰ্ম কৰিছিল, লোকহিতাৰ্থে কৰ্ম কৰিছিল। সেয়ে তুমিও প্ৰাপ্তীৰ বাবে, প্ৰাপ্তীৰ পাছত লোক নায়ক হবৰ কাৰণে **‘কাৰ্য্যং কৰ্ম’** কৰাই যোগ্য। কিয়?

এতিয়া শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছিল যে প্ৰাপ্তীৰ পাছত মহাপুৰুষে কৰ্ম কৰিলেও লাভ নাই আৰু এৰিলেও লোকচান নাই, তথাপিও লোক সংগ্ৰহ, লোকহিত ব্যৱস্থাৰ কাৰণে তেওঁলোকে উত্তম প্ৰকাৰে নিয়ত কৰ্মৰেই আচৰণ কৰে।

যদ্যদাচৰতি শ্ৰেষ্ঠস্তত্তদেবেতৰো জনঃ।

স যৎপ্ৰমাণং কুৰতে লোকস্তদনুবৰ্ততে।। ২১।।

শ্ৰেষ্ঠ পুৰুষে যি যি আচৰণ কৰে, অন্যপুৰুষেও তেওঁলোকৰ অনুসৰণ কৰে। সেই মহাপুৰুষে কিছুপ্ৰমাণ কৰি দিয়ে, সংসাৰৰ লোকেও সেইটো অনুসৰণ কৰে। প্ৰথমে শ্ৰীকৃষ্ণই স্বৰূপত স্থিত, আত্মতৃপ্ত মহাপুৰুষৰ স্বভাৱৰ ওপৰত প্ৰকাশ কৰিছিল যে তেওঁলোকৰ কৰ্ম কৰিলেও লাভ নাই নকৰিলেও হানী নাই, তথাপিও জনক আদি কৰ্মত উত্তম প্ৰকাৰে লাগিছিল। ইয়াত সেই মহাপুৰুষ সকলৰ ভিতৰত শ্ৰীকৃষ্ণইও লাহেকৈ নিজৰ তুলনা কৰিছে যে তেওঁ এজন মহাপুৰুষ।

ন মে পাৰ্থাস্তি কৰ্তব্যং ত্ৰিশু লোকেষু কিঞ্চন।

নানবাপ্তমবাপ্তব্যং বৰ্ত এব চ কৰ্মণি।। ২২।।

হে পাৰ্থ! মোৰ তিনিও লোকত কোনো কৰ্তব্য নাই। আগত কৈছিলো যে সেই মহাপুৰুষৰ সমস্তভৌতিক জগতত কোনো কৰ্তব্য নাথাকে। ইয়াত কৈছে যে তিনিওলোকত মোৰ কোনো কৰ্তব্য বাকী থকা নাই তথা অকনমান মাত্ৰ প্ৰাপ্ত হব লগীয়া যোগ্য বস্তু অপ্রাপ্য হৈ থকা নাই, তথাপিও মই উত্তম প্ৰকাৰে কৰ্ম কৰিয়েই আছোঁ। কিয় ?

যদি হুহংনবৰ্তেয়ং জাতু কৰ্মণ্যতদ্ভিতঃ।

মম বৰ্ত্মানুৰ্তন্তে মনুষ্যাঃ পাৰ্থ সৰ্বশঃ ॥ ২৩ ॥

কিয়নো যদি মই সাৰধান হৈ কোনো কৰ্ম নকৰো, তেতিয়া মানুহে মোৰ অনুসৰণ কৰিবলৈ আৰম্ভ কৰিব। তেতিয়াহলে কি আপোনাৰ অনুকৰণ কৰা বেয়া নেকি? শ্ৰীকৃষ্ণই কয় - হয়!

উৎসীদেয়ুৰিমে লোকা ন কুৰ্যাৎ কৰ্ম চেদহম্।

সঙ্কৰস্য চ কৰ্তা স্যামুপহন্যামিমাঃ প্ৰজাঃ ॥ ২৪ ॥

যদি মই সাৰধান হৈ কৰ্ম নকৰোঁ তেতিয়াহলে এই সকলো লোক ভ্ৰষ্ট হৈ যাব আৰু মই 'সঙ্কৰস্য' বৰ্ণ সংকৰৰ সৃষ্টি কৰোতা হৈ পৰিম আৰু এই সকলো প্ৰজাক হননকৰোতা মাৰোতা হৈ যাম। স্বৰূপত স্থিত মহাপুৰুষ সকলে সতৰ্ক হৈ যদি আৰাধনা ক্ৰমত লাগি নাথাকে তেতিয়া সমাজে তেওঁৰ নকল কৰি ভ্ৰষ্ট হৈ যাব। মহাপুৰুষেতো আৰাধনা পূৰ্ণ কৰি পৰম নৈষ্কৰ্মৰ স্থিতি প্ৰাপ্ত কৰিছে। তেওঁ নকৰিলেও তেওঁৰ কাৰণে হানী নহয়, কিন্তু সমাজেতো এতিয়া আৰাধনা আৰম্ভই কৰা নাই পাছৰ সকলৰ মার্গ-দৰ্শনৰ কাৰণেই মহাপুৰুষ সকলে কৰ্ম কৰে, মইও কৰোঁ অৰ্থাৎ শ্ৰীকৃষ্ণ এজন মহাপুৰুষ আছিল, তেওঁ কৈছে যে মহাপুৰুষে লোক সংগ্ৰহৰ কাৰণে কৰ্ম কৰে, মইও কৰোঁ যদি নকৰোঁ তেতিয়াহলে লোকৰ পতন হৈ যাব, সকলোৰে কৰ্ম এৰি দিব।

মন বৰ চঞ্চল। এইটো সকলো বিচাৰে, মাত্ৰ ভজনহে নিবিচাৰে। যদি স্বৰূপস্থিত মহাপুৰুষে কৰ্ম নকৰে, তেতিয়া হলে দেখা-দেখিয়েই পাছৰ বিলাকে তৎমুহূৰ্ততেই কৰ্ম এৰি দিব। তেওঁলোকে চল পাই যাব, যে কব

তেওঁলোকে ভজন নকৰে, পান খায়, সুগন্ধি ঘঁহে, সাধাৰণ কথা পাতে তথাপিও মহাপুৰুষ হৈ পৰে, এনেকুৱা ভাৱি আৰাধনাৰ পৰা আতঁৰি যায়, পতিত হৈ যায়। শ্ৰীকৃষ্ণই কয় যে যদি মই কৰ্ম নকৰোঁ, তেতিয়া সকলো ভ্ৰষ্ট হৈ যাব আৰু মই বৰ্ণসংকৰৰ স্ৰষ্টা হৈ পৰিম।

স্ত্ৰী সকল দুষিত হলে বৰ্ণসংকৰ হোৱাতো শুনা গৈছে। অৰ্জুনো এই ভয়তে বিহুল হৈ আছিল যে স্ত্ৰী সকল দুষিত হলে বৰ্ণ সংকৰৰ উৎপন্ন হব; কিন্তু শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছে - যদি মই সাৰধান হৈ আৰাধনাৰ কামত লাগি নাথাকে তেতিয়াহলে বৰ্ণসংকৰৰ কৰ্ত্তা হৈ যাম। বস্তুতঃ আত্মাৰ শুদ্ধ বৰ্ণ হ'ল পৰমাত্মা। নিজৰ শাস্ত্ৰত স্বৰূপৰ পথৰ পৰা আতঁৰি যোৱা হ'ল বৰ্ণসংকৰতা। যদি স্বৰূপস্থ মহাপুৰুষ ত্ৰিণ্যাত লাগি নাথাকে, তেতিয়া লোকে তেওঁৰ অনুসৰণ কৰিব আৰু ত্ৰিণ্যা নকৰিব, আত্মপথৰ পৰা আতঁৰি যাব, বৰ্ণসংকৰ হৈ যাব। তেওঁলোক প্ৰকৃতিত হেৰাই যাব।

স্ত্ৰী সকলৰ সতীত্ব আৰু শুদ্ধতা এটা সামাজিক ব্যৱস্থা হয়, অধিকাৰৰ প্ৰশ্ন হয়। সমাজত তাৰ উপযোগীতাও আছে, কিন্তু মাক-দেউতাকৰ ভুলত সন্তানৰ সাধনাৰ ক্ষেত্ৰত কোনো প্ৰভাৱ নপৰে।

‘আপন কৰনী পাৰ উতৰনী’ হনুমান, ব্যাস, বশিষ্ঠ, নাৰদ, শুকদেৱ, কবীৰ, যিশু ইত্যাদি ভাল মহাপুৰুষ আছিল, যদিও সামাজিক কুলীনতাৰ লগত এওঁলোকৰ সম্বন্ধ নাই। আত্মা নিজৰ পূৰ্ব জন্মৰ গুণ-ধৰ্ম লৈয়ে আহে। শ্ৰীকৃষ্ণই কয় -‘মনঃ ষষ্ঠানীন্দ্ৰিয়াণি প্ৰকৃতিস্থানি কৰ্ষতি’(১৫/৭) মনেৰে ইন্দ্ৰিয়ৰ দ্বাৰা যি কৰ্ম বা কাৰ্য্য এই জন্মত হয়, তাৰ সংস্কাৰ লৈ জীৱাত্মা পুৰণা শৰীৰক ত্যাগ কৰি নবীন শৰীৰত প্ৰবেশ কৰে। ইয়াত জন্ম দাতাৰ একো নাই। তাৰ বিকাশত কোনো বিভেদ নাহে। সেয়ে স্ত্ৰীসকল দুষিত হলে বৰ্ণসংকৰ নহয়। স্ত্ৰী সকল দুষিত হোৱা আৰু বৰ্ণ সংকৰ সৃষ্টি হোৱাৰ লগত কোনো সম্বন্ধ নাই। শুদ্ধ স্বৰূপৰ ফালে অগ্ৰসৰ নহৈ প্ৰকৃতিত সিঁচৰিত হোৱাটোৱেই হ'ল বৰ্ণসংকৰ।

যদি মহাপুৰুষ সকলে সাৰধান হৈ ত্ৰিণ্যাত (নিয়ত কৰ্ম) লাগি নাথাকে আৰু লোকক ত্ৰিণ্যা নকৰায়, তেতিয়া সকলো প্ৰজাক হনন কৰা মাৰোতা হৈ

পৰিব। সাধনা ক্ৰমত চলি গৈ সেই মূল অবিনাশীৰ প্ৰাপ্তীয়েই জীৱন আৰু প্ৰকৃতিত সিঁচৰিত হৈ থকা, পথ ভ্ৰষ্ট হৈ যোৱাটো হ'ল মৃত্যু; কিন্তু সেই জন মহাপুৰুষে এই সমূহ প্ৰজা বৰ্গক ক্ৰিয়া-পথত যদি নচলায়, সেই সকলো প্ৰজাক সিঁচৰিত হোৱাৰ পৰা আনি সৎপথত নচলায়, তেতিয়া তেওঁ সকলো প্ৰজাৰ-হনন কৰোঁতা, হত্যাৰা, হিংস্ৰক হব আৰু ক্ৰমশঃ চলি গৈ যি জনে সকলোকে চলাই নিয়ে তেওঁহে শুদ্ধ, অহিংসক হয়। গীতাৰ অনুসৰি শৰীৰৰ নিধন, নশ্চৰ কলেবৰৰ নিধন মাত্ৰ পৰিবৰ্ত্তন হৈ হিংসা নহয়।

সক্তাঃ কৰ্মণ্যৱিদ্ধাংসো যথা কুৰ্বন্তি ভাৰত।

কুৰ্যাদ্বিদ্ধাংস্তুথাসক্তশ্চিকীৰ্ঘ্লোলোকসঙ্গ্ৰহম্।। ২৫।।

হে ভাৰত! কৰ্মত আসক্ত হোৱা অজ্ঞানীজনে যেনে কৰ্ম কৰে, অনাসক্ত হোৱা পূৰ্ণজ্ঞাতায়েও লোক হৃদয়ত প্ৰেৰণা আৰু কল্যাণ সংগ্ৰহৰ ইচ্ছা কৰি তেনেকৈ কৰ্ম কৰে। যজ্ঞৰ বিধি জানিও আৰু কৰিও আমি অজ্ঞানী। জ্ঞানৰ অৰ্থ হ'ল প্ৰত্যক্ষ জনা। যেতিয়ালৈকে আমি অকনো তেওঁৰ সৈতে লগা নাই, আৰাধ্যৰ পৰা বেলেগে আছো তেতিয়ালৈকে আমি অজ্ঞানীয়েই হৈ থাকিম। যেতিয়ালৈকে অজ্ঞানীয়ে যিমান আসক্তিতে আৰাধনা কৰে, অনাসক্তইও তেনেকৈ কৰে। যাৰ কৰ্মৰ প্ৰতি প্ৰয়োজন বোধ নহয়, তথাপি আসক্তি কিয়? এনে পূৰ্ণ জ্ঞাতা মহাপুৰুষো লোক হিতৰ কাৰণে কৰ্ম কৰে, দৈবী সম্পদৰ উৎকৰ্ষ সাধন কৰে, যাৰ ফলত সমাজ তাক লৈ চলিব পাৰে।

ন বুদ্ধিভেদং জনয়েদজ্ঞানাং কৰ্মসঙ্গিনাম্।

জোষয়েৎসৰ্বকৰ্মাণি বিদ্বান্য়ুক্তঃ সমাচৰন্।। ২৬।।

জ্ঞানী পুৰুষে আসক্তি থকা অজ্ঞানী পুৰুষৰ ভ্ৰম সৃষ্টি নকৰাকৈ কৰ্ম কৰা উচিত, অৰ্থাৎ স্বৰূপস্থ মহাপুৰুষ সকলে মন কৰিব লাগিব যে তেওঁ লোকৰ কোনো আচৰণে পাছত থকা জনৰ কৰ্মৰ প্ৰতি অশ্ৰদ্ধা যেন নাহে। পৰামাত্মা তহু সংযুক্ত মহাপুৰুষকো নিজে উত্তম প্ৰকাৰে নিয়ত কৰ্ম কৰি তেওঁলোকৰ দ্বাৰাও কৰোৱা উচিত।

সেই কাৰণে 'পূজ্য মহাৰাজজী' বৃদ্ধাৱস্থাতো ৰাতি দুটা বজাতে উঠিছিল, ধ্যানত বহিছিল আৰু কাহিবলৈ ধৰিছিল। তিনি বাজিলেই কব ধৰিছিল -

উঠা, অ' মাটিৰ পুতলা বিলাক! সকলো উঠি চিন্তনত লাগি যায়, তেতিয়া নিজে অলপ বাগৰ মাৰে। আকৌ অলপ সময়ৰ পাছত উঠি বহে। কৈছিলে “তোমালোকে ভাৰা মহাৰাজ শুই আছে। কিন্তু মই শূৰা নাই, শ্বাসত লাগি আছোঁ। বৃদ্ধ শৰীৰ, বহাত কষ্ট হয়, সেয়ে অলপ পৰি থাকো; কিন্তু তোমালোকে স্থিৰ হৈ পোনভাবে বহি চিন্তনত লগা উচিত। যেতিয়া লৈকে তেলৰ ধাৰাৰ দৰে ৰচি নালাগে, ক্ৰম ছিঙিব নালাগে, অন্য সংকল্পই মাজতে ব্যৱধান নানে তেতিয়ালৈকে সততে লাগি থকা হ'ল সাধকৰ ধৰ্ম। মোৰ শ্বাস বাঁহৰ দৰে স্থিৰ ভাৱে ঠিয় হৈ আছে।” এইদৰে অনুগামী সকলক কৰ্ম কৰাবৰ বাবে মহাপুৰুষ সকলেও উত্তম প্ৰকাৰে কৰ্মত লাগি থাকিব লাগে। “উদাহৰণতকৈ আৰ্হি শ্ৰেষ্ঠ।” জিস গুণকো শিখাৱৈ, উসে কৰকে দিখাৱৈ অৰ্থাৎ আপনি আচৰি ধৰ্ম জীৱেৰে শিখায়।।

এই ধৰণে স্বৰূপস্থিত মহাপুৰুষকো নিজে কৰ্ম কৰি সাধককো আৰাধনাত লগাই থকা উচিত। সাধকো শ্ৰদ্ধাভাবে আৰাধনাত লাগি থকা

যে মে মতমিদং নিত্যমনুতিষ্ঠন্তি মানবাঃ।

শ্ৰদ্ধাবন্তোহনসূয়ন্তো মুচ্যন্তে ত্যেহপি কৰ্মভিঃ।। ৩১।।

অৰ্জুন! যি জন মনুষ্যই দোষ দৃষ্টিৰ পৰা আতঁৰত থাকি শ্ৰদ্ধাভাৱেৰে সমৰ্পণ সংযুক্ত হৈ মোৰ এই মত অনুসৰি চলে ‘যুদ্ধ কৰা’ সেই জন পুৰুষ সম্পূৰ্ণ কৰ্মৰ পৰা মুক্ত হব। যোগেশ্বৰৰ এই আশ্বাসন অকল হিন্দু-মুচলমান অথবা খৃষ্টান সকলকেই নহয় আনকি মানৱ মাত্ৰৰ কাৰণেই হয়। তেওঁৰ মতত আছে যে যুদ্ধ কৰা, এইটোৰ পৰা এনে প্ৰমাণ হয় যে এই উপদেশ যুদ্ধ কৰা জনৰ কাৰণেহে আছিল। অৰ্জুনৰ সন্মুখত সৌভাগ্যেৰে বিশ্বযুদ্ধৰ সংৰচনা আছিল, আপোনাৰ ওচৰততো তেনে যুদ্ধ নাই। আপুনি গীতাৰ পিছত কিয় লাগিছে? কিয়নো কৰ্ম বন্ধনৰ পৰা মুক্তি বিচৰাজনৰ এই যুদ্ধৰ আৱশ্যকতা আছে। বাস্তৱত এনেকুৱা একো নহয়। মূলতঃ এইটো যুদ্ধ হ'ল অন্তৰাত্মাৰ যুদ্ধ। ক্ষেত্ৰ-ক্ষেত্ৰজ্ঞৰ, বিদ্যা আৰু অবিদ্যাৰ, ধৰ্মক্ষেত্ৰ আৰু কুৰুক্ষেত্ৰৰ যুদ্ধ হয়। আপুনি যেতিয়াই ধ্যানত বহি চিত্তক নিৰোধ কৰিব বিচাৰিব, বিজাতীয় প্ৰবৃত্তিবোৰে প্ৰত্যক্ষ বাধা দিব, ভয়ংকৰ আক্ৰমণ কৰিব। তাকে শমন কৰি

চিত্তক নিৰোধ কৰি যোৱাটোৱে হ'ল যুদ্ধ। যি জনে দোষ দৃষ্টিৰে আতঁৰত থাকি শ্ৰদ্ধাৰ সৈতে এই যুদ্ধত লাগি থাকে, তেওঁ কৰ্ম বন্ধনৰ পৰা, অহা-যোৱাৰ পৰা সম্পূৰ্ণ ভাৱে পৰিত্ৰাণ পায়। যি জনে এই যুদ্ধত অৱলীণ নহয় তেওঁৰ কি গতি হয়? এই বিষয়ে কৈছে-

যে ত্বেতদভ্যসূয়ন্তো নানুতিষ্ঠন্তি মে মতম্।

সৰ্বজ্ঞানবিমূঢ়াংস্তান্‌বিদ্ধি নস্তানচেতসঃ।। ৩২।।

দোষ-দৃষ্টি থকাজন 'অচেতসঃ' মোহ নিচাত অচেতন হোৱা সকলে মোৰ মত অনুসৰি নচলে; অর্থাৎ ধ্যানস্থ হৈ আশা, মমতা, সন্তাপবিহীন হৈ সমপৰ্ণৰ সৈতে যুদ্ধ নকৰে, 'সৰ্বজ্ঞানবিমূঢ়াং' জ্ঞান পথৰ পৰা সকলো সময়তে মোহীত হৈ থকা তেনে লোকক তুমি ভ্ৰষ্ট হোৱা বুলিয়ে জানা। যদি এইটোৱে শুদ্ধ তেতিয়া হলে মানুহে নকৰে কিয়? ইয়াত কৈছে-

সদৃশং চেষ্টতে স্বস্যাঃ প্রকৃতেজ্ঞানবানপি।

প্রকৃতিং যান্তি ভূতানিনিগ্রহঃ কিং কৰিষ্যতি।। ৩৩।।

সকলো প্ৰাণী নিজৰ প্ৰকৃতিৰ মতেই থাকে, নিজৰ স্বভাৱ অনুসৰিয়ে কৰ্মত ভাগ লয়। প্ৰত্যক্ষদৰ্শী জ্ঞানীয়েও নিজৰ প্ৰকৃতি অনুসৰিয়ে চেষ্টা কৰি থাকে। প্ৰাণীয়ে নিজৰ কৰ্মত চলি থাকে আৰু জ্ঞানীয়ে নিজৰ স্বৰূপত। যাৰ যেনে প্ৰকৃতিৰ তাড়না, সি তেনেকৈ কাৰ্য্য কৰি থাকে। এই স্বয়ং সিদ্ধ কথা।

ইয়াৰ নিৰাকৰণৰ উপায় কিবা আছেনে? এটাই কাৰণ সকলো লোক মোৰ মত অনুসৰি কৰ্মত প্ৰবৃত্ত নহয়। তেওঁলোকে আশা, মমতা, সন্তাপক অন্যশব্দত ৰাগ-দ্বেষক ত্যাগ কৰিব নোৱাৰে, যাৰ ফলত কৰ্মৰ অলপো আচৰণ নহয়। ইয়াকে আৰু স্পষ্ট কৰি অন্য এক কাৰণ দৰ্শায়-

ইन्द्रियस्येन्द्रियस्यार्थे ৰাগদ্বेषৌ ব্যবস্থিতৌ।

তয়োৰ্ন ৰশমাগচ্ছেত্তৌ হস্য পৰিপস্থিনৌ।। ৩৪।।

ইন্দ্রিয় আৰু ইন্দ্রিয়ৰ ভোগত ৰাগ আৰু দ্বেষ আছে। এই দুটাৰ বশত থকা উচিত নহয়; কিয়নো এই কল্যাণ মাৰ্গত কৰ্মৰ পৰা মুক্ত হব পৰা প্ৰণালীৰ

এই ৰাগ আৰু দ্বেষ দুৰ্ধৰ্ষ শত্ৰু, আৰাধনাক অপহৰণ কৰি লৈ যায়। যেতিয়া শত্ৰু ভিতৰত আছে, তেতিয়া বাহিৰত কোন কাৰ লগত যুজিব? শত্ৰু ইন্দ্ৰিয়আৰু ভোগত আছে, অন্তঃকৰণত আছে। সেয়ে এই যুদ্ধও অন্তঃকৰণৰ যুদ্ধ, কিয়নো শৰীৰেই ক্ষেত্ৰ, যত সজাতীয়, বিজাতীয় দুটা প্ৰবৃত্তিৰ, বিদ্যা আৰু অবিদ্যা থাকে, যিটো মায়াৰ দুটা অংগ। এই প্ৰবৃত্তিৰ পৰা পাৰ পোৱা, সজাতীয় প্ৰবৃত্তিক সাধনা কৰি বিজাতীয় প্ৰবৃত্তিৰ অন্ত কৰাই হ'ল যুদ্ধ। বিজাতীয় সমাপ্ত হলে সজাতীয়ৰ উপযোগও সমাপ্ত হৈ যায়। স্বৰূপক স্পৰ্শ কৰি সজাতীয়ৰো তাৰ অন্তৰালতে বিলয় হৈ যোৱা, এই দৰে প্ৰকৃতিৰ পৰা পাৰ পোৱাই হ'ল যুদ্ধ, যিটো ধ্যানৰ দ্বাৰাহে সম্ভৱ।

ৰাগ-দ্বেষৰ শমনত সময় লাগেঙ্গ সেই কাৰণে বহুতো সাধক ক্ৰিয়াক এৰি সততে মহাপুৰুষৰ নকল কৰিব ধৰে। শ্ৰীকৃষ্ণই সাৱধান কৰি কয় -

শ্ৰেয়ান্ স্বধৰ্মো বিগুণঃ পৰধৰ্মাৎস্বনুষ্ঠিতাৎ।

স্বধৰ্মে নিধনং শ্ৰেয়ঃ পৰধৰ্মো ভয়াবহঃ ॥ ৩৫ ॥

এজন সাধক দহ বছৰ ধৰি সাধনাত লাগি আছে আৰু অন্যজন মাত্ৰ আজি প্ৰবেশ কৰিছে। দুই জনৰ ক্ষমতা একেই নহব। প্ৰাথমিক পৰ্য্যায়ৰ সাধকে যদি তেওঁৰ নকল কৰে -তেতিয়া নষ্ট হৈ যাব। এই ক্ষেত্ৰত শ্ৰীকৃষ্ণই কয় যে উত্তম প্ৰকাৰৰ আচৰণৰ অন্যৰ ধৰ্মতকৈ গুণহীন নিজৰ ধৰ্মই শ্ৰেয়। স্বভাৱেৰে উৎপন্ন কৰ্মত প্ৰবৃত্ত হব পৰা ক্ষমতা নিজৰ ধৰ্ম। নিজৰ ক্ষমতা অনুসৰি কৰ্মত প্ৰবৃত্ত হব পৰা সাধকে এদিন নহয় এদিন পাৰ হবই। অতঃ স্বধৰ্ম আচৰণত মৰাও পৰম কল্যাণকাৰক। য'ৰ পৰা সাধনা ছিঙি যাব, শৰীৰ প্ৰাপ্ত হলে পূনৰ তাৰ পৰাই আৰম্ভ হব। আত্মাতো নমৰে। শৰীৰ (বস্ত্ৰ) সলনী হলেই আপোনাৰ বিচাৰ-বুদ্ধি সলনী নহয়। আগৰ জনৰ দৰে নকল কৰিলে সাধকৰ ভয় হব। ভয় প্ৰকৃতিত হৈ থাকে পৰমাত্মাত নাই। প্ৰকৃতিৰ পৰ্দা আৰু ডাঠ হৈ যাব। এই ভগৱৎপথত নকল বহুত হয়। পূজ্য মহাৰাজ জীৰ এবাৰ আকাশ বাণী হৈছিল যে অনুসুইয়া গৈ থাকা, “তেতিয়া জন্মৰ পৰা চিত্ৰকুটলৈ আহিলো আৰু অনুসুইয়াৰ অৰণ্যত থাকিবলৈ ললোঁ।” বহুতো মহাত্মাসকল সেই ফালেদি অহা যোৱা কৰিছিল। এজনে দেখিলে যে পৰমহংস

জী দিগম্বৰ হৈ আছে, উলংগ ভাৱে আছে, তথাপিও তেওঁৰ সন্মান আছে। তেওঁ কৌপীন পেলাই দিলে, দণ্ড-কমণ্ডলু অন্য এজন মহাত্মাক দি দিলে আৰু তেওঁ নিজে দিগম্বৰ হৈ গ'ল। কিছু দিনৰ পাছত আহি দেখিলে যে পৰমহংসই মানুহৰ লগত কথাও পাতে গালিও দিয়ে। মহাৰাজজীক আদেশ হৈছিল যে ভক্তৰ কল্যাণৰ কাৰণে কিছু তাড়নাও দিব। এই পথৰ পথিকক অলপ চোৱা-চিতা কৰিব। মহাৰাজ জীৰ নকল কৰি সেই মহাত্মা জনেও গালি পাৰিবলৈ ধৰিলে, কিন্তু ওভতাই মানুহে তেওঁক কিবা এটা কয়েই। মহাত্মাই কব ধৰিলে-তাততো কোনো নামাতে, ইয়াততো আকৌ উত্তৰ দিয়ে।

আকৌ দুবছৰৰ পাছত আহি দেখিলে যে পৰমহংস জীতো গাদিৰ ওপৰত বহি আছে, মানুহে বিছি আছে, চোঁৱৰ চলাই আছে। তেৱো হাবিৰ এটুকুৰাত তক্তা অনালে, গাদি পাৰিলে, দুজনক চোঁৱৰ লৰাবলৈও লগাই দিলে। প্ৰত্যেক সোমবাৰে মানুহৰ ভীড়ৰ বন্দবস্ত কৰিলে লৰা লাগিলে পঞ্চাশ টকা আৰু ছোৱালী লাগিলে পচিশ টকা! কিন্তু

‘উঘৰ অন্ত ন হোই নিবাহু’ এমাহতে মূল্যহীন হৈ যাবে লগা হ’ল। এই ভগৱৎ পথত নকল নাখাটে। সাধকক নিজৰ ধৰ্মৰ আচৰণহে কৰা উচিত।

স্বধৰ্ম মানে নো কি? আধ্যায় দুইত শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছিল স্বধৰ্মক চাই তুমি যুদ্ধ কৰা যোগ্য। ক্ষেত্ৰীয়ৰ কাৰণে ইয়াতকৈ অধিক কল্যাণকাৰী ৰাস্তা আৰু নাই। স্বধৰ্ম মতে অৰ্জুন ক্ষেত্ৰীয় আছিল। ইয়াত এটা ইঙ্গিত দিছে যে অৰ্জুন! যি জন ব্ৰাহ্মণ, তেওঁৰ কাৰণে বেদৰ উপদেশ ক্ষুদ্ৰ জলাশয়ৰ সমান। তুমি বেদতকৈ ওপৰলৈ উঠা আৰু ব্ৰাহ্মণ হোৱা, অৰ্থাৎ স্বধৰ্মত পৰিবৰ্তন সম্ভৱ হয়। তাত আকৌ কৈছে যে ৰাগ-দ্বেষৰ বশত নাথাকিবা, ইহঁতক কাটি পেলোৱা স্বধৰ্ম লাভজনক এইটোৰ অৰ্থ এনে নহয় যে অৰ্জুনে কোনো ব্ৰাহ্মণৰ নকল কৰি তেওঁৰ দৰে হওক।

একেটা কৰ্মপথক মহাপুৰুষে চাৰিটা শ্ৰেণীৰ সাধকক ক্ৰমশঃ শূদ্ৰ, বৈশ্য, ক্ষেত্ৰীয় আৰু ব্ৰাহ্মণৰ সংজ্ঞা দিছে। ক্ষুদ্ৰ ক্ষমতাৰ পৰা কৰ্মৰ আৰম্ভ

হয় আৰু সাধনা ক্ৰমত সেই সাধকেই ব্ৰাহ্মণ হৈ যায়। ইয়াতকৈ আগলৈগৈ যেতিয়া তেওঁ পৰমাত্মাত প্ৰবেশ হব, তেতিয়া - 'ন ব্ৰাহ্মণো ন ক্ষত্ৰিয়ঃ ন বৈশ্যো ন শূদ্ৰ চিদানন্দৰূপঃ শিব কেবলোহ হম'। তেওঁ বৰ্ণতকৈ ওপৰত হৈ যায়। ইয়াত শ্ৰীকৃষ্ণইও কৈছে যে 'চাতুৰ্বৰ্ণ্যং ময়া সৃষ্টং' চাৰি বৰ্ণৰ ৰচনা ময়েই কৰিলো। তেতিয়া হলে জন্মৰ আধাৰতে মানুহক ভাগ কৰিলে নেকি? নহয়, 'গুণ কৰ্ম বিভাগশঃ' গুণৰ আধাৰত কৰ্মক ভাগ কৰিলে। কেনেকুৱা কৰ্ম? কি সাংসাৰিক কৰ্মনে? শ্ৰীকৃষ্ণই কয়-নহয়, নিয়ত কৰ্মঙ্গ নিয়ত কৰ্ম কি? সেইটো হ'ল যজ্ঞৰ প্ৰক্ৰিয়া যত শ্বাস-প্ৰশ্বাসৰ হৰন হয়, ইন্দ্ৰিয় সংযম হয়, যাৰ শুদ্ধ অৰ্থ হ'ল - যোগ সাধনা, আৰাধনা। আৰাধ্য দেৱৰ ওচৰলৈ নিয়া বিধি বিশেষ হ'ল আৰাধনা। এই আৰাধনা কৰ্মক চাৰিটা ভাগত বিভক্ত কৰা হৈছে। যি যেনে ক্ষমতা থকা পুৰুষ তেওঁ সেই শ্ৰেণীৰ পৰাই আৰম্ভ কৰি যাব লাগে, এয়াই হ'ল সকলোৰে নিজৰ নিজৰ স্বধৰ্ম। যদি তেওঁ আগৰজনৰ নকল কৰিব ধৰে, তেতিয়া হলে তেওঁ ভয় খাব। সম্পূৰ্ণ নষ্ট হৈ যাবতো নোৱাৰে, কিয়নো ইয়াত বীজৰ নাশ নহয়। হয় তেওঁ প্ৰকৃতিৰ তাড়নাত পৰি ভয়াক্ৰান্ত দীন-হীন অৱস্থা হৈ যাব পাৰে। প্ৰাইমাৰি স্তৰৰ শিক্ষাৰ্থী এজন স্নাতক শ্ৰেণীত পঢ়িবলৈ বহিলে স্নাতক হব পাৰিব জানো? তেওঁ প্ৰাথমিক পৰ্যায়ৰ বৰ্ণমালাৰ পৰাই বঞ্চিত হব। অৰ্জুনে প্ৰশ্ন কৰে যে মানুহে স্বধৰ্মৰ আচৰণ কিয় নকৰে?

অৰ্জুন উবাচ

অথ কেন প্ৰযুক্তোহয়ং পাপং চৰতি পুৰুষঃ।

অনিচ্ছন্নপি বাৰ্ষেয় বলাদিৰ নিয়োজিতঃ ॥ ৩৬ ॥

হে কৃষ্ণ! আকৌ এই পুৰুষ কোনোবাই তেওঁক জোৰকৰি টানি আনি লগাই দিয়াৰ দৰে কাৰ প্ৰেৰণাত পাপৰ আচৰণ কৰে? আপোনাৰ মতানুসাৰে কিয় নচলে? ইয়াত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কয় -

শ্ৰীভগবানুবাচ

কাম এষ ক্ৰোধ এষ ৰজোগুণসমুদ্ভ বঃ।

মহাশনো মহাপাপমা বিদ্বেনমিহ বৈৰিণম্ ॥ ৩৭ ॥

অৰ্জুন ! বজোগুণেৰে উৎপন্ন এই কাম আৰু ক্ৰোধ আগ্নিৰ সমান ভোগ, ভোগ কৰিলেও তৃপ্ত নোহোৱা মহান পাপী। কাম-ক্ৰোধ, বাগ-দেব ইত্যাদিৰে পৰিপূৰক, এতিয়ালৈকে মই যিবোৰ আলোচনা কৰিলো, এই বিষয়ত তেওঁলোক শত্ৰু বুলিয়ে জানা। এতিয়া ইয়াৰ প্ৰভাব সম্পৰ্কে কয় -

ধূমেনাৰিয়তে ৰহিৰ্যথাদৰ্শো মলেন চ।

যথোল্বেনাবৃতো গৰ্ভস্তথা তেনেদমাবৃতম্ ॥ ৩৮ ॥

যেনেকৈ ধূৰাত জুই আৰু মলিৰে আইনা ঢাক খাই থাকে, যেনেকৈ গৰ্ভ আৱৰণৰ মাজত ঢাক খাই থাকে, ঠিক তেনেকৈ কাম-ক্ৰোধাদি বিকাৰ বিলাকে জ্ঞানক ঢাকি ৰাখে। তিতা খৰি জলালে অকল ধূৰাই বাহিৰ হয়, অগ্নি থাকিও শিখা উঠিব নোৱাৰে। মলিৰে ঢাক খাই থকা আইনাত যেনেকৈ প্ৰতিবিম্ব অস্পষ্ট হয়, গৰ্ভাশয়ৰে গৰ্ভ ঢাক খাই থকাৰ দৰে - এই বিকাৰ বোৰ থাকিলে পৰমাত্মাৰ প্ৰত্যক্ষ জ্ঞান হব নোৱাৰে।

আবৃতং জ্ঞানমেতেন জ্ঞানিনো নিত্যবৈৰিণা।

কামৰূপেণ কৌন্তেয় দুস্পূৰেণানলেন চ ॥ ৩৯ ॥

হে কৌন্তেয় ! জুইৰ সমান ভোগত তৃপ্ত নোহোৱা জ্ঞানী বিলাকৰ পৰম শত্ৰু এই কামেৰে জ্ঞান ঢাক খাই থাকে। এতিয়া শ্ৰীকৃষ্ণই কাম আৰু ক্ৰোধ এই দুটাক শত্ৰু বুলি কলে। প্ৰস্তুত শ্লোকত মাত্ৰ এটা হে শত্ৰু কাম বুলি কোৱা হৈছে। মূলতঃ কামতেই ক্ৰোধৰ অন্তৰ্ভাৱ সুমাই আছে। কাৰ্য পূৰা হৈ গলে ক্ৰোধ সমাপ্ত হৈ যায়। কিন্তু বাসনাৰ শেষ নহয়। বাসনা পূৰণত বাধা আহিলেই ক্ৰোধ জাগৃত হয়। কামৰ অন্তৰালতে ক্ৰোধ আছে। এই শত্ৰু বিলাক থাকে ক'ত? ইহঁতক ক'ত বিচৰা যায়? থকা ঠাই জানি থলে ইহঁতক সমূলে নষ্ট কৰিবলৈ সুবিধা হয়। ইয়াত শ্ৰীকৃষ্ণই কয় -

ইন্দ্ৰিয়াণি মনো বুদ্ধিৰস্যধিষ্ঠানমুচ্যতে।

এতৈৰ্বিমোহয়তোষ জ্ঞানমাবৃত্য দেহিনম্ ॥ ৪০ ॥

ইন্দ্ৰিয় বিলাক, মন আৰু বুদ্ধি ইয়াৰ বাসস্থান বুলি কোৱা হয়। এই কামে, এই মন, বুদ্ধি আৰু ইন্দ্ৰিয়ৰ দ্বাৰা জ্ঞানক ঢাকি পেলায় আৰু জীবাত্মাক মোহত পেলাই দিয়ে।

তস্মাদ্ধিমিদ্ৰিয়াগ্যাদৌ নিয়ম্য ভৰতৰ্ষভ ।

পাপ্ৰ্মানং প্ৰজহি হেনং জ্ঞানবিজ্ঞাননাশনম্ ॥ ৪১ ॥

সেই কাৰণে হে অৰ্জুন ! তুমি প্ৰথমে ইন্দ্ৰিয় বিলাকক 'নিয়ম্য' সংযত কৰিলোৱা, কিয়নো শত্ৰু ইয়াৰ ভিতৰতে আছে। সেইটো তোমাৰ শৰীৰৰ ভিতৰতে আছে। বাহিৰত বিচাৰিলে তাক কতো পোৱা নাযাব। এইটো অন্তৰ জগতৰ হৃদয়-দেশৰ যুদ্ধ। ইন্দ্ৰিয়ক নিজৰ বশত ৰাখি জ্ঞান আৰু বিজ্ঞানক নাশ কৰিবপৰা এই পাপীকামক মাৰি পোলোৱা। কাম চিধাই দূৰ কৰিব নোৱাৰে, সেয়ে বিকাৰ বিলাকৰ নিবাস স্থলক চাৰিও ফালৰ পৰা বেৰি লোৱা, ইন্দ্ৰিয়ক সংযত কৰা।

কিন্তু ইন্দ্ৰিয় বিলাক আৰু মনক সংযত কৰাতো বৰ কঠিন। আমি এইটো কৰিব পাৰিম নে? এই ক্ষেত্ৰত শ্ৰীকৃষ্ণই আপোনাৰ সামৰ্থ্যৰ কথা কৈ উৎসাহ দি কৈছে-

ইন্দ্ৰিয়াণি পৰাণ্যাছ্ৰিদ্ৰিয়েভ্যঃ পৰং মনঃ ।

মনসস্ত পৰা বুদ্ধিৰ্যো বুদ্ধেঃ পৰতস্ত সং ॥ ৪২ ॥

অৰ্জুন ! এই শৰীৰতকৈ ইন্দ্ৰিয়বোৰেই শ্ৰেষ্ঠ অৰ্থাৎ সুক্ষ্ম আৰু শক্তি শালী বুলি জানা। ইন্দ্ৰিয়তকৈ দূৰত মন আৰু শক্তিশালীও। মনতকৈ বুদ্ধি আৰু দূৰ, যি বুদ্ধিতকৈও অত্যন্ত দূৰত আছে, সেইটো হ'ল তোমাৰ আত্মা। সেইটোৱে তুমি। সেইকাৰণে ইন্দ্ৰিয়বোৰ, মন আৰু বুদ্ধিক নিৰোধ কৰাত তুমি সক্ষম। পাৰিবা।

এবং বুদ্ধেঃ পৰং বুদ্ধধা সংস্তভ্যাআনমাআননা ।

জহি শত্ৰুং মহাবাহো কামৰূপং দুৰাসদম্ ॥ ৪৩ ॥

এই ধৰণে বুদ্ধিতকৈও দূৰত থকা অৰ্থাৎ সুক্ষ্ম আৰু শক্তিশালী নিজৰ আত্মাক চিনি পাই, আত্মাবলক বুজি, বুদ্ধিৰ দ্বাৰা নিজৰ মনত বশত ৰাখে, অৰ্জুন ! এই কামৰূপী দুৰ্জয় শত্ৰুক মাৰি পেলোৱা। নিজৰ শক্তি বুজিলে এই দুৰ্জয় শত্ৰুক মাৰা; কাম হ'ল এটা দুৰ্জয় শত্ৰু। ইন্দ্ৰিয়ৰ দ্বাৰা ই আত্মাক

মোহিত কৰি পেলায়, নিজৰ শক্তিক বুজি লৈ, আত্মক বলৱান বুলি জানি কামৰূপী শত্ৰুক মাৰা। কবৰ প্ৰয়োজনেই নাথাকিল যে এই শত্ৰু আন্তৰিক শত্ৰু, আৰু যুদ্ধও হ'ল অন্তৰ্দেশৰ।

নিষ্কৰ্ষঃ

বহুতো গীতা প্ৰেমী ব্যাখ্যাকাৰ সকলে এই আধ্যায়ক 'কৰ্মযোগ' নাম দিছে; কিন্তু এইটো যুক্তি সংগত হোৱা নাই। দ্বিতীয় আধ্যায়ত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কৰ্মৰ নাম লৈছে। তেৱে কৰ্মৰ মহিমাৰ প্ৰতিপাদন কৰি তাত কৰ্মজিঞ্জাসা জাগৃত কৰিছে, আৰু এই আধ্যায়ত কৰ্মৰ সংজ্ঞা দি কলে যে যজ্ঞৰ প্ৰক্ৰিয়াই হ'ল কৰ্ম। প্ৰমাণ হৈ গল যে যজ্ঞ হ'ল কোনো নিদ্ধাৰিত দিশ। ইয়াৰ অতিৰিক্ত যি কৰা হয়, সেইটো এই লোকৰেই বন্ধন মাত্ৰ। শ্ৰীকৃষ্ণই যি কৈ আছে সেইটো কৰ্ম- 'মোক্ষসেহশুভাত' সংসাৰ বন্ধনৰ পৰা মুক্তি দিব পৰা কৰ্ম।

শ্ৰীকৃষ্ণই যজ্ঞৰ উৎপত্তিৰ কথা কলে। এইটোৱে কি দিয়ে? তাৰ বিশেষতাৰ ওপৰত চিত্ৰণ কৰিলে। যজ্ঞ কৰিবৰ কাৰণে জোৰ দিলে। তেওঁ কৈছে - এই যজ্ঞৰ প্ৰক্ৰিয়াই কৰ্ম। যি জনে নকৰে, তেওঁ পাপায়ু, আৰাম বিচাৰি এনেয়ে জীয়াই আছে। আগৰ ঋষি সকলেও ইয়াক কৰিয়েই পৰম নৈৰ্ৰম সিদ্ধি প্ৰাপ্ত কৰিছিল। তেওঁলোকে মাৰ্গদৰ্শনৰ কাৰণে কৰ্মত উত্তম প্ৰকাৰে লাগি ফুৰিছিল, যদিও তেওঁলোক আত্মতৃপ্ত আছিল, তেওঁলোকৰ কৰ্মৰ আৱশ্যক নাছিল। সেই মহাপুৰুষ সকলৰ লগত শ্ৰীকৃষ্ণই নিজৰ তুলনা কৰি কৈছিল যে মোৰো এতিয়া কৰ্ম কৰাৰ কোনো প্ৰয়োজন নাই; কিন্তু মোৰ পিছৰ বিলাকৰ কাৰণেই কৰ্মত প্ৰবৃত্ত হৈ থাকোঁ। শ্ৰীকৃষ্ণই স্পষ্টকৈ নিজক এজন যোগী হিচাবে পৰিচয় দিছে।

তেৱে কৰ্মত প্ৰবৃত্ত সাধক সকলক ন চলিবলৈ কৈছে; কিয়নো কৰ্ম কৰিয়েই সেই সাধকৰ স্থিতি প্ৰাপ্ত কৰিব লাগিব। যদি নকৰে তেতিয়া নষ্ট হৈ যাব। এই কৰ্মৰ বাবে ধ্যানস্থ হৈ যুদ্ধ কৰিব লাগিব। চকু মুদা আছে, ইন্দ্ৰিয় সকলক একগোট কৰি চিন্তক নিৰোধ কৰা আছে তেতিয়া যুদ্ধ কেনেকৈ?

সেইসময়ত কাম-ক্রোধ, বাগ-দ্বেষ বাধা পোৱাৰ বাবে কৰাই হ'ল যুদ্ধ। আসুৰি সম্পদ কুৰুক্ষেত্ৰ, বিজাতীয় প্ৰবৃত্তিক লাহে-লাহে এৰি ধ্যানস্থ হৈ যোৱাই হ'ল যুদ্ধ। বস্তুতঃ ধ্যানতে যুদ্ধ হয়। এইটো হ'ল এই আধ্যায়ৰ সাৰাংশ, য'ত কৰ্মকো কোৱা নাই যজ্ঞকো কোৱা নাই। যদি যজ্ঞৰ কথা বুজি পায় তেতিয়াহলে কৰ্মও বুজি পাব। এতিয়া কৰ্ম সম্পৰ্কে কোৱাই নাই।

এই আধ্যায়ত মাত্ৰ স্থিত প্ৰজ্ঞ মহাপুৰুষৰ প্ৰশিক্ষনমূলক সুত্ৰৰ ওপৰত জোৰ দিছে। এইটো গুৰুজনৰ কাৰণেই নিৰ্দেশ। তেওঁলোকে নকৰিলেও কোনো ক্ষতি নাই, কৰিলেও কোনো লাভ নাই, কিন্তু যি সকল সাধকক পৰমগতি অভিষ্ট হৈ আছে তেওঁলোককো বিশেষ একো কোৱা হোৱা নাই যেতিয়া এইটো কৰ্মযোগ কেনেকৈ হব? কৰ্মৰ স্বৰূপো স্পষ্ট হোৱা নাই, যাক কৰিব লাগে, কিয়নো যজ্ঞৰ প্ৰক্ৰিয়াই কৰ্ম, এতিয়ালৈকে ইমানেই কোৱা হৈছে। যজ্ঞৰ বিষয়তো কোৱাই নাইঙ্গ কৰ্ম স্বৰূপ ক'ত স্পষ্ট হ'ল? হয়, যুদ্ধৰ যথার্থ চিত্ৰণ গীতাৰ ইয়াত পোৱা গৈছে।

সম্পূৰ্ণ গীতাত দৃষ্টিপাত কৰিলে দুই আধ্যায়ত কৈছে যে শৰীৰ নাশশীল হয়, সেয়ে যুদ্ধ কৰা। গীতাত যুদ্ধৰ এইয়ে মূল কাৰণ। জ্ঞানযোগৰ সন্দৰ্ভত ক্ষত্ৰিয়ৰ কাৰণে এই যুদ্ধই হ'ল কল্যাণৰ একমাত্ৰ সাধন, আৰু কৈছে যে এই বুদ্ধি তোমাৰ জ্ঞানযোগৰ বিষয়ত কোৱা হৈছে কেনে বুদ্ধি? এয়াই যে হৰা-জিকা দুইটাতে লাভ আছে, এনে বুজি যুদ্ধ কৰা। আকৌ চাৰি আধ্যায়ত কৈছে যে যোগত স্থিত হৈ হৃদয়ত থকা নিজৰ সংশয়ক জ্ঞানৰূপী তৰোৱালে কাটি পেলোৱা। সেই তৰোৱাল যোগত আছে। পঞ্চম আধ্যায়ৰ পৰা দশম আধ্যায়লৈ যুদ্ধৰ কতো আলোচনা নাই। এঘাৰ আধ্যায়ত ইমানেই কৈছে যে এই শত্ৰুবোৰ মোৰ দ্বাৰা প্ৰথমেই মাৰি পেলোৱা হৈছে, তুমি অকল নিমিত্তক হৈ ঠিয় হোৱা। যশস্যা প্ৰাপ্ত কৰা। এই বিলাক তুমি নামাৰোতেই মৰি আছে, তুমি এই মৃত বিলাককে মাৰা।

আধ্যায় পোন্ধৰত এই সংসাৰখন, বহুতো মূলযুক্ত আহঁতৰ বৃক্ষ বুলি কৈছে, যাক অসংগতৰূপী শস্ত্ৰৰ দ্বাৰা কাটি সেই পৰমপদক বিচাৰিবলৈ

নিদ্দেশ্য দিয়া আছে। আগলৈ আধ্যায় বিলাকত যুদ্ধৰ কোনো উল্লেখ নাই। অৱশ্য যোদ্ধা আধ্যায়ত অসুৰৰ চিত্ৰণ আছে যি বিলাক নৰকগামী আধ্যায় তিনিত যুদ্ধৰ বিশদ বিবৰণ আছে, যি নং শ্লোকৰ পৰা ছয় লৈকে যুদ্ধৰ স্বৰূপ তাৰ অনিবাৰ্যতা যুদ্ধ নকৰিলে বিনাশ, যুদ্ধত মাৰিবলগীয়া শত্ৰুৰ নাম, সিহঁতক মাৰিবৰ কাৰণে নিজৰ শক্তিৰ আহ্বান আৰু নিশ্চয়ে সিহঁতক কাটি পেলাব পৰা জোৰ দিছে। এই আধ্যায়ত শত্ৰু আৰু শত্ৰুৰ আন্তৰিক স্বৰূপ স্পষ্ট কৰিছে, যাৰ বিনাশৰ কাৰণে প্ৰেৰণা দিয়া হৈছে।

ওঁ তৎসৎ ইতি শ্ৰীমদ্ভাগৱত গীতা সুপনিষৎসু ব্ৰহ্মবিদ্যায়াং যোগশাস্ত্ৰে শ্ৰীকৃষ্ণাৰ্জুন সংবাদে “শত্ৰু বিনাশ-প্ৰেৰণা” নাম তৃতীয়োধ্যায় ॥ ২ ॥

এইদৰে শ্ৰীমদ্ভাগৱত গীতাৰূপী উপনিষদ এবং ব্ৰহ্মবিদ্যা তথা যোগশাস্ত্ৰ বিষয়ক শ্ৰীকৃষ্ণ আৰু অৰ্জুনৰ সংবাদৰ “শত্ৰু বিনাশ-প্ৰেৰণা” নামৰ তৃতীয় আধ্যায় পূৰ্ণ হ'ল।

ইতি শ্ৰীমৎপৰমহংস পৰমানন্দস্য শিষ্য স্বামী অড়গড়ানন্দকৃতে শ্ৰীমদ্ভাগৱতগীতায় “যথার্থ গীতা” ভাষ্য “শত্ৰু-বিনাশ-প্ৰেৰণা” নাম তৃতীয়োধ্যায় ॥ ৩ ॥

॥ হৰি ওঁ তৎসৎ ॥

ওঁ

শ্ৰী পৰমাত্মনে নমঃ

অথ চতুৰ্থোহধ্যায়ঃ

তিনি আধ্যায়ত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই আশ্বাসন দি কৈছিল যে দোষ দৃষ্টিৰ পৰা আঁতৰত থাকি যি মানৱেই শ্ৰদ্ধায়ুক্ত হৈ মোৰ মত অনুসৰি চলে তেওঁ কৰ্ম বন্ধনৰ পৰা মুক্ত হৈ থাকিব। কৰ্ম বন্ধনৰ পৰা মুক্তি দিব পৰা ক্ষমতা যোগ (জ্ঞানযোগ বা কৰ্মযোগ) দুটাতেই আছে। যোগতেই যুদ্ধৰ সঞ্চাৰ নিহিত হৈ আছে। প্ৰস্তুত আধ্যায়ত তেওঁ কৈছে যে এই যোগৰ প্ৰণেতা কোন? ইয়াৰ ক্ৰমিক বিকাশ কেনেকৈ হয়?

শ্ৰী ভগৱানুবাচ

ইমং বিৱস্বতে যোগং প্ৰোক্তৱানহমৱ্যয়ম্।

বিৱস্বান্মনৰে প্ৰাহ মনুৰিষ্ণ্বাকবেহৱৰীৎ॥ ১ ॥

অৰ্জুন! মইয়ে এই অবিনাশী যোগৰ বিষয়ে কল্পৰ আদিত **বিৱস্বান্** (সূৰ্য্য) ৰ প্ৰতি কৈছিলো, বিৱস্বানে মনুক আৰু মনুৱে **ইষ্ণাকুক** কৈছিল। কোনে কৈছিল? মইয়ে। শ্ৰীকৃষ্ণ কোন আছিল? এজন যোগী। তত্ত্বস্থিত মহাপুৰুষেই এই অবিনাশী যোগক কল্পৰ আৰম্ভনীত অৰ্থাৎ ভজনৰ আৰম্ভনীত বিৱস্বান অৰ্থাৎ যি বিবশ হৈ আছে এনে প্ৰাণীক কোৱা হয়। সুৰত আনি দিয়ে। ইয়াত সূৰ্য্য এটা প্ৰতীক, কিয়নো সুৰতত তেওঁ পৰম প্ৰকাশ স্বৰূপ আৰু তাতেই তেওঁক (সূৰ্য্য) পোৱা যায়।

এই যোগ অবিনাশী। শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছিল যে ইয়াৰ আৰম্ভনীৰ বিনাশ নাই। এই যোগৰ আৰম্ভ মাত্ৰ কৰি দিলেই ই পূৰ্ণত্ব দিহে শাস্ত হব। শৰীৰৰ শুশ্ৰৱা ঔষধৰ পৰা হয়, কিন্তু আত্মাৰ শুশ্ৰৱা ভজনৰ পৰা। এই সাধন-ভজনো কোনো মহাপুৰুষৰেই অৱদান। মোহৰ নিচাত অচেতন হৈ থকা আদিম মানৱ য'ত ভজনৰ কোনো সংস্কাৰেই নাছিল, যোগৰ বিষয়ত যি জনে কেতিয়াও ভৱাই নাছিল, এনেকুৱা মানুহে কোনো মহাপুৰুষক দেখিলে, তেতিয়া তেওঁৰ

দৰ্শন মাত্ৰই, তেওঁৰ বাণীয়ে, এৰা ধৰাৰ ভাৱৰ সেৱা আৰু সান্নিধ্যই যোগৰ সংস্কাৰ তেওঁত সঞ্চাৰিত হয়। গোস্বামী তুলসীদাসে ইয়াকে কৈছে -

‘জে চিতয়ে প্ৰভু জিনহ প্ৰভু হেৰে, তে সব ভয়ে পৰমপদ জোণ্ড’।
(ৰামচৰিতমানস)

শ্ৰীকৃষ্ণই কয় যে এই যোগ মই আদিত সূৰ্য্যক কৈছিলো। ‘সূৰ্য্যো অজায়ত’ মহাপুৰুষে দৃষ্টি নিষ্ক্ষেপ কৰা মাত্ৰকে যোগৰ সংস্কাৰ সুৰতত প্ৰসাৰিত হব ধৰে। স্বয়ং প্ৰকাশ, নিজৰ বশত থকা পৰমেশ্বৰৰ নিবাস সকলোৰে হৃদয়ত আছে, সুৰা (শ্বাস)ৰ নিৰোধেই তাৰ-প্ৰাপ্তীৰ বিধান। মানে সুৰতত সংস্কাৰৰ সৃজনেই সূৰ্য্যৰ প্ৰতি কোৱা হৈছে। সময়ত এই সংস্কাৰ খনত স্ফুৰিত হলে মহাপুৰুষৰ সেই বাক্যৰ প্ৰতি ইচ্ছা জাগ্ৰত হলে মহাপুৰুষৰ সেই কথা থাকে তাক পাবৰ কাৰণে হয়। মনত যদি কোনো কথা থাকে তাক পাবৰ কাৰণে ইচ্ছা অৱশ্য হয়, এই টোৱেই হ’ল মনুৱে ইক্ষাকুক কোৱা। মনত এনে কুৰা এটা লালচা হয় যে সেই নিয়ত কৰ্ম কৰা হওক, যি অবিনাশী, যি কৰ্ম বন্ধনৰ পৰা মোক্ষ দিয়ে, এনেকুৱা হ’লে কৰা হওক বুলি কৰাত, অৰাধনাৰ গতি ধৰি লয়। গতি ধৰি লোৱাৰ পিছত এই যোগে ক’ত পোৱাব গৈ? এই সম্পৰ্কে কয় -

এৱং পৰম্পৰাপ্ৰাপ্তমিমং ৰাজৰ্ষয়ো ৱিদুঃ।

স কালেনেহ মহতা যোগো নষ্টঃ পৰন্তপ।। ২।।

এই প্ৰকাৰে কোনো মহাপুৰুষৰ দ্বাৰা সংস্কাৰবিহীন পুৰুষক সুৰাত (শ্বাসত), সুৰাৰ পৰা মনত, মনৰ পৰা ইচ্ছাত আৰু ইচ্ছা প্ৰবল হলে ত্ৰিন্যাত্মক আচৰণত পেলাই এই যোগে ক্ৰমশঃ উন্নতি কৰি কৰি ৰাজৰ্ষি শ্ৰেণীলৈকে পাই যায়, সেই আৱস্থা পালেহে ই বিদিত হব ধৰে। এই স্তৰৰ সাধকত ঋদ্ধি-সিদ্ধিৰ সঞ্চাৰ হব ধৰে। সেই যোগ এই মহত্বপূৰ্ণ কালত এই লোকতেই (শৰীৰতেই) প্ৰায়ে নষ্ট হৈ যায়। এই সীমাক কেনেকৈ পাৰ কৰা যায়? কি এই বিশেষ ঠাইত পাই সকলো নষ্ট হয়? শ্ৰীকৃষ্ণই কয়-নহয়, যি জন মোৰ আশ্ৰিত, মোৰ প্ৰিয় ভক্ত, অনন্য সখ। তেওঁ নষ্ট নহয় -

স এৰায়ং ময়া তেহদ্য যোগ ঃ প্রোক্ত ঃ পুৰাতন ঃ।

ভক্তোহসি মে সখা চেতি বহস্যহ্যতদুত্তমম্ ॥ ৩।।

সেইটো পুৰাতন যোগেই এতিয়া মই তোমাক বৰ্ণনা কৰিছো, কিয়নো তুমি মোৰ ভক্ত আৰু সখা আৰু এই যোগ উত্তম, বহস্যপূৰ্ণ। অৰ্জুন ক্ষেত্ৰীয় শ্ৰেণীৰ সাধক আছিল, ৰাজৰ্ষি অৱস্থা পাব পৰা আছিল, য'ত ঋদ্ধি-সিদ্ধিয়ে সাধকক নষ্ট কৰি পেলায়। এই কালতো যোগ কল্যাণকাৰক হৈ আছে, কিন্তু প্ৰায়ে সাধক তালৈকে পাই বিভ্ৰান্ত হৈ পৰে। এনে অবিনাশী কিন্তু বহস্যময় যোগ শ্ৰীকৃষ্ণই অৰ্জুনক কৈছিল; কিয়নো অৰ্জুন নষ্ট হোৱা অৱস্থাত আছিল। কিয় কলে? এই কাৰণেই যে তুমি মোৰ ভক্ত, অনন্য ভাৱেৰে মোৰ আশ্ৰিত, মোৰ প্ৰিয়, সখা।

আধ্যায়ৰ প্ৰাৰম্ভনীতেই ভগৱানে কৈছিল যে এই অবিনাশী যোগক কল্পৰ আদিত ময়েই সূৰ্য্যক কৈছিলো। সূৰ্য্যৰ পৰা মনুক এই গীতা প্ৰাপ্ত হ'ল। মনুৱে ইয়াক নিজৰ মনত (স্মৃতিত) ৰাখিলে। মনুৰ পৰাই এই স্মৃতি ইক্ষাকুৱে পালে, যাক ৰাজৰ্ষি বিলাকে জানিলে, কিন্তু সেই মহত্ব পূৰ্ণ সময়তেই এই যোগ লুপ্ত হৈ গ'ল। সেই পুৰণা স্মৃতি-জ্ঞান ভগৱানে অৰ্জুনক কলে। সাৰাংশত কবলৈ হলে মনুৱে যি জ্ঞান প্ৰাপ্ত কৰিছিল সেয়াই এই গীতা। মনুৱে সেইটোবেই পৰম্পৰা ভাৱে পাইছিল। ইয়াৰ অতিৰিক্ত কি স্মৃতিনো ধাৰণ কৰিব? গীতা-জ্ঞান শ্ৰৱণৰ পাচত ওঠৰ আধ্যায়ৰ শেষত অৰ্জুনে কৈছে যে মোৰ স্মৃতি প্ৰাপ্ত হ'ল, যেনেদৰে মনুক প্ৰাপ্ত হৈছিল। হয়, এই শ্ৰীমৎভাগৱৎ গীতাই হ'ল বিশুদ্ধ মনুস্মৃতি।

যি পৰমাত্মা পাবৰ মোৰ ইচ্ছা আছে, সেই (সদগুৰু) পৰমাত্মা আত্মাতকৈ অভিন্ন হৈ যেতিয়া নিৰ্দেশ দিব ধৰে, তেতিয়াই বাস্তৱিক ভজন আৰম্ভ হয়। ইয়াত প্ৰেৰকৰ অৱস্থাত পৰমাত্মা আৰু সদগুৰু একে পৰ্য্যায় হয়। যি ঠাইত আমি ঠিয় হৈ আছো, সেই স্তৰতে যেতিয়া স্বয়ং প্ৰভু হৃদয়ত থাকিবলৈ ধৰে, বেয়াৰ পৰা ৰক্ষা কৰে, ধৈৰ্য্য ধৰিবলৈ প্ৰেৰণা যোগায়, তেতিয়াই মন বশত হৈ যায়, **“মন বশ হোই তবহি জব্ প্ৰেৰক প্ৰভু বৰজে”**। যেতিয়া লৈকে ইষ্টদেৱ সাৰথী হৈ আত্মাৰ পৰা অভিন্ন হৈ প্ৰেৰকৰ

ৰূপত ঠিয় নহয়, তেতিয়ালৈকে প্ৰবেশ কৰায়েই নহয়। সেই সাধকজন আশাধাৰী যদিও, ভজন তেওঁৰ ওচৰত নায়েই।

পূজ্য গুৰুদেৱ ভগৱানে কৈছিল-শুনা। মই কেবাবাৰো নষ্ট হোৱাৰ পৰা ৰক্ষা পাইছো। ভগৱানেহে ৰক্ষা কৰিলে। ভগৱানে এনেকৈ বুজালে যে মই সুধিলো “মহাৰাজ। কি ভগৱানেও কথা পাতে নে?” কলে-“হয় ভগৱানে এনেদৰে কথা পাতে, যেনেদৰে তুমি আৰু মই, ঘণ্টা ঘণ্টা ধৰি কথা পাতে” মই বৰ আচৰিত হৈ গলো যে ভগৱানে নো কেনেকৈ কথা পাতে? অলপ সময়ৰ পাছত আকৌ কলে- “ কি ভাবিচা, তোমাৰ লগতো কথা পাতিব”। আখৰে আখৰে সত্য আছিল তেওঁৰ কথা আৰু এয়াই সখ্য ভাৱ। সখাৰ নিচিনাকৈ তেওঁ বেয়াৰ পৰা ৰক্ষা কৰে, তেতিয়াহে এই নষ্ট হোৱা স্থিতিৰ পৰা সাধকে পাৰ পায়।

এতিয়ালৈকে যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কোনো মহাপুৰুষৰ দ্বাৰা যোগৰ আৰম্ভ, তাত আহিব পাৰা সাৱধানতাৰ ব্যৱধান, তাৰ পৰা পাৰ হব পৰা ৰাস্তা সম্পৰ্কে ক’লে। এই ক্ষেত্ৰত অৰ্জুনে প্ৰশ্ন কৰিলে।

অৰ্জুন উৱাচ

অপৰং ভৱতো জন্ম পৰং জন্ম বিৱস্বতঃ।

কথমেতদ্বিজানীয়াং ত্বমাদৌ প্ৰোক্তৱানিতি ॥৪ ॥

ভগৱান! আপোনাৰ জন্মতো ‘অপৰম্’ এতিয়া হে হোৱা আৰু মোৰ ভিতৰৰ সুৰতৰ সঞ্চাৰতো বহুত পুৰণা, তেতিয়াহলে মই কেনেকৈ মানি লম যে এই যোগৰ বিষয়ে ভজনৰ আদিতো আপুনিয়ে কৈছিলে? ইয়াত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কয়-

শ্ৰীভগৱানুৱাচ

বহুনি মে ব্যতীতানি জন্মানি তৱ চাৰ্জুন।

তান্যহং ৱেদ সৱাণি ন ত্বং ৱেথপৰন্তপ ॥৫ ॥

অৰ্জুন! তোমাৰে মোৰে বহুতো জন্ম এই জন্মৰ আগতো পাৰ হৈ গ’ল। হে পৰন্তপ! সেই সকলোবোৰ তুমি নাজানা, কিন্তু মই জানো। সাধকে

নেজানে স্বৰূপ স্থিত মহাপুৰুষে জানে, অব্যক্ত স্থিতি প্ৰাপ্তকৰা জনে জানে। কি আপুনি সকলোৰ দৰে জন্ম লয়নে? শ্ৰীকৃষ্ণই কয়-নহয়, স্বৰূপ প্ৰাপ্তী শৰীৰ প্ৰাপ্তীতকৈ ভিন্ন। মোৰ জন্ম এই চকুৰে দেখা পোৱা নাজায়। মই অজন্মা, অব্যক্ত, শাস্ত হৈও শৰীৰক আধাৰ হিচাবে লৈছোঁ।

“অবধু,জীবত মেঁ কৰ আসা।

মুএ মুক্তি গুৰু কহে স্বাৰ্থী, বুঠা দে বিশ্বাসা”

শৰীৰ থাকিলেহে সেই পৰমতত্বত প্ৰবেশ কৰিব পাৰি। অলপো যদি কমি যায় পুনৰ জন্ম লব লাগিব। এতিয়ালৈকে অৰ্জুনে শ্ৰীকৃষ্ণক নিজৰে দৰে দেহধাৰী বুলিয়ে ভাবিছিল। তেওঁ অন্তৰংগ প্ৰশ্ন কৰে কি আপোনাৰো জন্ম সকলোৰে দৰেনে? কি আপুনিও শৰীৰতে জন্ম ধাৰণ কৰেনে? শ্ৰীকৃষ্ণই কয়-

অজোহপি সন্নব্যয়াত্মা ভূতানামীশ্বৰোহপি সন্।

প্ৰকৃতিং স্বামধিষ্ঠায় সম্ভৱাম্যাত্মমায়য়া।। ৬।।

মই অবিনাশী, অজন্মা আৰু সমস্ত প্ৰাণীৰ সুৰত সঞ্চাৰিত হৈও নিজক প্ৰকৃতিৰ অধীন কৰি আত্ম-মায়াত প্ৰকট হ'ও। এটা মায়া হ'ল অবিদ্যা যি প্ৰকৃতিতেই বিশ্বাস কৰায়, নীচ অথবা অধম যোনিৰ কাৰণ হয়। দ্বিতীয় মায়া হ'ল-আত্ম-মায়া, যি আত্মাত প্ৰবেশ কৰায়, স্বৰূপৰ জন্মৰ কাৰণ হৈ পৰে। ইয়াকে যোগমায়াও বুলি কোৱা হয়। যিহত মই বেলেগ হৈ আছোঁ, সেই শাস্ত্ৰত স্বৰূপত সংযোগ কৰি দিয়ে, মিলন কৰাই দিয়ে। সেই আত্মিক প্ৰক্ৰিয়াৰ দ্বাৰা মই নিজৰ ত্ৰিগুণিময়ী প্ৰকৃতিক অধীন কৰিয়েই প্ৰকট হওঁ।

প্ৰায় মানুহে কয় ভগৱানৰ অৱতাৰ হলে দৰ্শন কৰিম। শ্ৰীকৃষ্ণই কয় যে এনেকুৱা একো নহয় যি আনে দেখে। স্বৰূপৰ জন্মপিণ্ড ৰূপত নহয়। শ্ৰীকৃষ্ণই কয় যোগ সাধনাৰ দ্বাৰা, আত্মমায়াৰ দ্বাৰা নিজৰ ত্ৰিগুণিময়ী প্ৰকৃতিক নিজৰ বশত ৰাখি ক্ৰমশঃ প্ৰকট হওঁ। কিন্তু কোন পৰিস্থিতিত?

যদা যদা হি ধৰ্মস্য গ্লানিৰ্ভৱতি ভাৰত।

অভ্যুত্থানমধৰ্মস্য তদাত্মানং সৃজাম্যহম্।।৭।।

হে অৰ্জুন! যেতিয়া যেতিয়া পৰমধৰ্ম পৰামাত্মাৰ কাৰনে হৃদয় গ্লানিৰে ভৰি পৰে, যেতিয়া অধৰ্মৰ বৃদ্ধিত ভাবুকে পাৰ নাপায়, তেতিয়াই মই আত্মাক বচনা কৰিব ধৰো। এনে গ্লানি মনুকো হৈছিল-

“হৃদয় বহুত দুখ লাগ, জনম গয়উ হৰি ভগতি বিনু”

(ৰামচৰিতমানস)

যেতিয়া আপোনাৰ হৃদয় অনুৰাগে ভৰি পৰিব, সেই শাস্ত্ৰত ধৰ্মৰ কাৰণে **“গদগদ গিৰা নয়ন বহ নীৰা”** এই স্থিতি যেতিয়া আহিব, যেতিয়া চেপ্টা কৰিও অনুৰাগী অধৰ্মৰ পাৰ নাপায়, এনে পৰিস্থিতিত মই নিজৰ স্বৰূপক বচনা কৰোঁ। অৰ্থাৎ ভগৱানৰ আবিৰ্ভাৱ মাত্ৰ অনুৰাগীৰ বাবেহে।

‘সো কেবল ভগতন হিত লাগী’

(ৰামচৰিতমানস ১/১২/৫)

এই অৱতাৰ কোনো ভাগ্যৱান সাধকৰ অন্তৰালত হয়। আপুনি প্ৰকট হৈ কি কৰেনো?

পৰিত্ৰা গায় সাধুনাং বিনাশায় চ দুষ্কৃতাম্।

ধৰ্ম সংস্থাপনাৰ্থায় সন্তুৰামি যুগে যুগে ॥ ৮ ॥

অৰ্জুন! **‘সাধুনাং পৰিত্ৰাণায়’** পৰম সাধ্য একমাত্ৰ পৰমাত্মাই আছে। যাক সাধিলে কোনো সাধকেই পিছ পৰি নাথাকে। সেই সাধ্যত প্ৰৱেশ কৰাৰ পৰা বিবেক, বৈৰাগ্য, শম-দম ইত্যাদি দৈবী সম্পদক কোনো বাধা নোহোৱাকৈ প্ৰবাহিত কৰি তথা **“দুষ্কৃতাম্”** যি য়ে দুষিত কাৰ্য্যৰূপ লয়। সেই কাম-ক্ৰোধ, ৰাগ-দ্বেষ বিজাতীয় প্ৰবৃত্তি মসুহক সমূলি নষ্ট কৰি ধৰ্মক উত্তম প্ৰকাৰে স্থিৰ কৰিবৰ কাৰণেই মই যুগে যুগে প্ৰকট হওঁ।

যুগৰ অৰ্থ সত্যযুগ, ত্ৰেতা, দ্বাপৰ নহয়, যুগধৰ্মৰ উঠা-নমা মানুহৰ স্বভাৱৰ ওপৰত আছে। যুগধৰ্ম সদায়েই আছে। মানসে সংকেত কৰিছে-

‘নিত যুগধৰ্ম হোইঁ সবকেৰে। হৃদয় ৰামমায়া কে প্ৰেৰে ॥

(ৰামচৰিতমানস, ৭/১০/১)

যুগ ধৰ্ম সকলোৰে হৃদয়ত সদায়েই থাকে। অবিদ্যাৰে নহয় বিদ্যাৰে, বামমায়াৰ প্ৰেৰণাৰে হৃদয়তে থাকে। যিটো প্ৰস্তুত শ্লোকত আত্মমায়া কোৱা হৈছে, সেয়াই বাম মায়া। হৃদয়ত বামৰ স্থিতি দিব পৰা বামৰ দ্বাৰা প্ৰেৰিত হয় সেই বিদ্যা। এতিয়া কোন যুগ চলি আছে কেনেকৈ বুজা যাব? তেতিয়া হলে-

‘সুদ্ধ সত্ত্বা সমতা বিগ্যানা। কৃত প্ৰভাব প্ৰসন্ন মন জানা।

(মানস, ৭/১০৩/২)

যেতিয়া হৃদয়ত শুদ্ধ সত্ত্বগুণ কাৰ্য্য কৰি থাকে ৰাজস আৰু তামস গুণ শান্ত হৈ যায়, বিষমতা সমাপ্ত হৈ যাব, যাৰ কাৰো লগত দ্বেষ নাই, বিজ্ঞান আছে অৰ্থাৎ ইষ্টৰ পৰা নিৰ্দেশ লোৱা, তাত লাগি থকাৰ বাবে ক্ষমতা হোৱা, মনত প্ৰসন্নতাৰ পূৰ্ণ সঞ্চৰ হোৱা যেতিয়া এনে যোগ্যতা হৈ যায়, তেতিয়া সত্য যুগত প্ৰবেশ হ’ল। এই ধৰণে অন্য দুটা যুগৰো বৰ্ণনা কৰিলে আৰু শেষত-

‘তামস বহুত ৰজোগুণ থোৰা। কলি প্ৰভাব বিৰোধ চহঁ ওৰা’।

তামসিক গুণ পৰিপূৰ্ণ হৈ আছে, ৰাজসী গুণ অলপ মাত্ৰ আছে, চাৰিওফালে শত্ৰুতা আৰু বিৰোধ আছে এনে ব্যক্তি কলি যুগৰ হয়। যেতিয়া তমো গুণে কাৰ্য্য কৰে তেতিয়া মানুহ এলাহ, নিদ্ৰা, প্ৰমাদেৰে পৰিপূৰ্ণ হৈ থাকে। সি কৰ্তব্য জানিও তাত প্ৰবৃত্ত হব নোৱাৰে, নিষিদ্ধ কৰ্ম জানিও তাত নিবৃত্ত হব নোৱাৰে। এই দৰে যুগ ধৰ্মৰ উঠা-নমাই মানুহক আন্তৰিক যোগ্যতাত নিৰ্ভৰ কৰায়। কোনোবাই এই যোগ্যতাক চাৰিযুগ বুলি কৈছে, কোনোবাই চাৰি বৰ্ণৰ নাম দিছে, আকৌ কোনোবাই ইয়াক অতি উত্তম, উত্তম, মধ্যম আৰু নিকৃষ্ট এই চাৰি শ্ৰেণীৰ সাধকক সম্বোধন কৰিছে। প্ৰত্যেক যুগত ইষ্টই লগ দিয়ে। হয়, উচ্চ শ্ৰেণীত অনুকূলতাৰ সম্পূৰ্ণতা থাকে, নিম্ন যুগত সহযোগ ক্ষীণ হৈ থাকে।

সংক্ষেপতে শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছে যে লক্ষ্য বস্তু দিব পৰা বিবেক, বৈৰাগ্য ইত্যাদিক বাধা নোহোৱাকৈ প্ৰৱাহিত কৰিবৰ কাৰণে তথা বেয়াকাম কাম-ক্ৰোধ, ৰাগ-দ্বেষ ইত্যাদিক সমূলি নাশ কৰিবৰ কাৰণে, পৰম ধৰ্ম পৰামাত্মাত স্থিত ৰাখিবৰ কাৰণে মই যুগে-যুগে অৰ্থাৎ প্ৰত্যেক পৰিস্থিতিত সকলো শ্ৰেণীত

প্ৰকট হওঁ অৱশ্য ধৰ্মৰ গ্লাণীৰ সময়ত। যেতিয়ালৈকে ইষ্টৰ পৰা সমৰ্থন পোৱা নাযায়, তেতিয়া লৈকে বুজি নেপাম যে আপোনাৰ বিকাৰ বোৰৰ বিনাশ হ'ল বা কিমান বাকী আছে। প্ৰৱেশৰ পৰা শেষলৈকে ইষ্ট প্ৰত্যেক শ্ৰেণীত সকলো যোগ্যতাৰ লগত থাকে। তেওঁৰ প্ৰকট হোৱা অনুভূতি অনুৰাগী সকলৰ হৃদয়ত হয়। ভগৱান প্ৰকট হয় কাৰণেতো সকলোৱে দৰ্শন কৰে। শ্ৰীকৃষ্ণই কয় -

জন্ম কৰ্ম চ মে দিব্যমেৰং যো বেত্তি তত্ত্বতঃ।

তজ্জ্ঞা দেহং পুনৰ্জন্ম নৈতি মামেতি সোহৰ্জুন ॥ ৯ ॥

অৰ্জুন! মোৰ সেই জন্ম অৰ্থাৎ গ্লানিৰ লগত স্বৰূপৰ ৰচনা তথা মোৰ কৰ্ম দুষ্কৃতিৰ কাৰণৰ বিনাশ, সাধ্য বস্তু দিব পৰা ক্ষমতাৰ নিৰ্দোষ সঞ্চাৰ, ধৰ্মৰ স্থিৰতা, এই কৰ্ম আৰু জন্ম দিব্য অৰ্থাৎ অলৌকিক লৌকিক নহয়। এই চৰ্মচক্ষুৰে তাক দেখা পোৱা নাযায়। মন বুদ্ধিৰে তাক জুখিব নোৱাৰি। যদি ইমানেই গুঢ়, তেতিয়াহলে দেখা পাব কোনে? মাত্ৰ 'যো বেত্তি তত্ত্বতঃ' তত্ত্বদৰ্শীয়েই মোৰ এই জন্ম আৰু কৰ্মক দেখে আৰু মোক সাক্ষাৎকৰি তেওঁ পূৰ্ণৰ জন্ম প্ৰাপ্ত নকৰে, আনকি মোতেই প্ৰাপ্ত হয়।

যেতিয়া তত্ত্বদৰ্শীয়েই ভগৱানৰ জন্ম আৰু কাৰ্য্য দেখা পায়, তেতিয়া হ'লে লাখ লাখ মানুহবোৰে ভীড় কৰি অৱতাৰ হব আৰু ভগৱানক দৰ্শন কৰিম বুলি কয় বৈ থাকে? কি আপুনিও তত্ত্বদৰ্শী নে? মহাত্মাৰ বেঘৰ আজিও বিভিন্ন বিধেৰে, মূলতঃ মহাত্মাৰ বেঘৰ ভাওঁলৈ বহুতো লোক প্ৰচাৰ কৰি ফুৰিছে যে অৱতাৰ হ'ল অথবা তেওঁৰ দালাল বোৰেও প্ৰচাৰ কৰে। মানুহ ভেড়াৰ দৰে অৱতাৰ দৰ্শন কৰিবলৈ দৌৰ দিয়ে। কিন্তু শ্ৰীকৃষ্ণই কয় যে মাত্ৰ তত্ত্বদৰ্শীয়েহে দেখে। এতিয়া প্ৰশ্ন হ'ল তত্ত্বদৰ্শী কাক কয়?

দুই আধ্যাত্ম সৎ-অসতৰ নিৰ্ণয় কৰি যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছিল যে অৰ্জুন! অসৎ বস্তুৰ অস্তিত্বই নাই আৰু সত্যৰ তিনিও কালত অভাৱ নাই। তেতিয়া কি আপুনি এনেকৈ কয়নে? তেওঁ কলে, "নহয়, তত্ত্বদৰ্শীয়েহে এওঁক দেখিছে।" কোনো ভাষাবিদ অথবা কোনো সম্বুদ্ধিশালীয়ে দেখা নাই। ইয়াত আকৌ জোৰ দি কৈছে যে মোৰ আবিৰ্ভাৱতো হয় কিন্তু তাক তত্ত্বদৰ্শীয়েহে দেখে। তত্ত্বদৰ্শী এটা প্ৰশ্ন হৈ থাকিল। এনে একো নহয় যে পাঁচ তত্ত্ব আছে বা পচিশ তত্ত্ব আছে ইয়াকে শিকিলে আৰু হৈ গ'ল তত্ত্বদৰ্শী। শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছে

যে আত্মাই পৰম তত্ত্ব। আত্মা পৰমৰ লগত সংযুক্ত হৈ পৰমাত্মা হয়। আত্মা-সাম্ৰাজ্যকাৰ কৰা জনেহে এই আবিৰ্ভাৱক বুজি পায়। প্ৰমাণিত যে অৱতাৰ কোনো বৈৰাগী অনুৰাগীৰ হৃদয়ত হয়। আৰম্ভনীত সি বুজি নাপায় যে মোক কোনে সংকেত দি আছে? কোনে মাৰ্গ দৰ্শন কৰি আছে? কিন্তু পৰম তত্ত্ব পৰমাত্মাৰ দৰ্শনৰ লগে লগে সি দেখা পায়, বুজি পায় আকৌ শৰীৰক ত্যাগ কৰি সি পূৰ্ণৰ জন্ম প্ৰাপ্ত নহয়।

শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছে যে মোৰ জন্ম দিব্য হয়, ইয়াক দেখা জনে মোকেই প্ৰাপ্ত কৰে, তেতিয়া মানুহে তাৰে মুৰ্ত্তী বনাই ললে, পূজা কৰিবলৈ ধৰিলে, আকাশত তাৰ নিবাস কল্পনা কৰিবলৈ ধৰিলে। এনে একো নহয়। সেই মহাপুৰুষ সকলে বুজাব বিচাৰিছে যে যদি আপুনি নিৰ্ধাৰিত কৰ্ম কৰি যায়, তেতিয়া জানিবযে আপুনিও দিব্য। আপুনি যি হব পাৰিছে, সেইটো মইয়ো হৈছো। মই আপোনাৰ সম্ভাৱনা, আপোনাৰ ভবিষ্য। নিজৰ ভিতৰত আপুনি যেতিয়া এনে পূৰ্ণতা প্ৰাপ্ত কৰিব সেইদিনা আপুনিও সেইয়ে হব, যি শ্ৰীকৃষ্ণ হৈছিল। শ্ৰীকৃষ্ণৰ যি স্বৰূপ আছিল, সেইটো আপোনাৰো হব পাৰে। অৱতাৰ কতো বাহিৰত নহয়। যদি অনুৰাগ পূৰ্ণ হৃদয় আপোনাৰো আছে, তেতিয়া হলে আপোনাৰ ভিতৰত অৱতাৰৰ অনুভূতি হব পাৰে। তেওঁ আপোনাক উৎসাহ দি কৈছে যে বহুতো লোক এই মাৰ্গত চলি মোৰ স্বৰূপ প্ৰাপ্ত কৰিছে।

বীতৰাগভয়ক্ৰোধা মন্ময়া মামুপাশ্ৰিতা ৷

বহরো জ্ঞানতপসা পূতা মন্ত্ৰাৱমাগতাঃ ॥ ১০ ॥

ৰাগ আৰু বিৰাগ দুটাৰ পাৰত বীতৰাগ, তথা এই প্ৰকাৰে ভয়-অভয়, ক্ৰোধ-অক্ৰোধ দুটাৰ পাৰত, অনন্য ভাৱেৰে অৰ্থাৎ অহংকাৰ ৰহিত হৈ মোৰ শৰণত আহি বহুতো লোক জ্ঞান-তপেৰে পবিত্ৰ হৈ মোৰ স্বৰূপক প্ৰাপ্ত কৰিছে। এতিয়া এনে হব ধৰিছে, এনে কথা নহয়। এই বিধান সদায় আছে। বহুতো পুৰুষ এই প্ৰকাৰে মোৰ স্বৰূপ প্ৰাপ্ত কৰিছে। কি প্ৰকাৰে? যাৰ হৃদয় অধৰ্মৰ বৃদ্ধি দেখি পৰমাত্মাৰ প্ৰতি গ্লানিৰে ভৰি পৰিছে, সেই স্থিতিত মই নিজৰ স্বৰূপক ৰচনা কৰো। তেওঁলোক মোৰ স্বৰূপক প্ৰাপ্ত হয়। যাক যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই তত্ত্বদৰ্শন বুলি কৈছিল, তাকে এতিয়া জ্ঞান বুলি কোৱা হয়। পৰমতত্ত্বই পৰামাত্মা। তেওঁৰ প্ৰত্যক্ষ দৰ্শনক জনাই হ'ল জ্ঞান। এনেদৰে জনা জ্ঞানীজন

মোৰ স্বৰূপ প্ৰাপ্ত কৰে। ইয়াত এই প্ৰশ্ন পুৰা হ'ল। এতিয়া তেওঁ যোগ্যতাৰ আধাৰত ভজনকৰা জনৰ শ্ৰেণী বিভাজন কৰি আছে।

যে যথা মাং প্ৰপদ্যন্তে তাংস্তথৈৰ ভজাম্যহম্।

মম বৰ্ণানুৰ্ত্তন্তে মনুষ্যাঃ পাৰ্থ সৰ্বশঃ ॥ ১১ ॥

পাৰ্থ! যি জনে মোক যিমান আগ্ৰহেৰে যেনেকৈ ভজে, মইও তেওঁক তেনেকৈ ভজো। সিমানেই সহযোগ দিও। সাধকৰ শ্ৰদ্ধাই কৃপা হৈ তেওঁ পায়। এই বহস্যক জানি জ্ঞানীজনে সম্পূৰ্ণ ভাৱেৰে মোৰ মাৰ্গৰ অনুসৰণ কৰে। যেনে দৰে মই চলো, যি মোৰ প্ৰীয়, তেনেকৈ আচৰণ কৰে। যেনেকৈ মই কৰাব বিচাৰো তেনেকৈ কৰে।

ভগৱানে কেনেকৈ ভজে? তেওঁ সাৰথি হৈ থাকে, লগতে থাকে, এয়াই তেওঁৰ ভজনা। দুষিত যাৰ পৰা উৎপন্ন হয় তাৰ বিনাশৰ কাৰনে সাজু হয়। সত্যত প্ৰৱেশ দিয়াবৰ কাৰণে সদৃশৰ পৰিত্ৰাণ কৰিবলৈ ঠিয় হয়। যেতিয়ালৈকে ইষ্টদেৱ পূৰ্ণভাৱে সাৰথি হৈ হৃদয়ত নাথাকে আৰু প্ৰত্যেক খোজতে সাৱধান নকৰে তেতিয়ালৈকে যিমানেই ভজনানন্দ নহওক, লাখ চকু মুদক, লাখ যত্ন কৰক, তেওঁ এই প্ৰকৃতিৰ দ্বন্দ্বৰ পৰা পাৰ নহব। তেওঁ কেনেকৈ বুজিব? আত্মাৰ অভিন্ন হৈ ৰৈ থাকে আৰু তেওঁৰ মাৰ্গ দৰ্শন কৰাই থাকে যে তুমি ইয়াত আছা, এনে কৰা, এনেকৈ চলা ইত্যাদি। এই ধৰণে প্ৰকৃতিৰ প্ৰবৃত্তিবোৰ কাটি লাহে লাহে আগ বাঢ়ি স্বৰূপত প্ৰবেশ কৰে। ভজনতো সাধকেই কৰিব লাগিব, কিন্তু তাৰ দ্বাৰা এই পথৰ দূৰত্বৰ মাপ ইষ্টৰেই দেন হয়। এনেদৰে সকলো মানুহেই সৰ্বতোভাৱে মোৰ অনুসৰণ কৰে। তেওঁলোক কেনেদৰে চলে?

কাঙ্ক্ষন্তঃ কৰ্মগাং সিদ্ধিং যজন্ত ইহ দেৱতাঃ।

ক্ষিপ্ৰং হি মানুষে লোকে সিদ্ধিৰ্ভৱতি কৰ্মজা ॥ ১২ ॥

সেই পুৰুষে এই শৰীৰতে কৰ্মৰ সিদ্ধিৰ ইচ্ছা কৰি দেৱতাক পূজন কৰে। কোন কৰ্ম? শ্ৰীকৃষ্ণই কয়, “অৰ্জুন। তুমি নিয়ত কৰ্ম কৰা।” নিয়ত কৰ্ম কি? যজ্ঞৰ প্ৰক্ৰিয়াই কৰ্ম। যজ্ঞ কি? সাধনাৰ বিধি বিশেষ, যত শ্বাস প্ৰশ্বাসক হৰন কৰা হয়, ইন্দ্ৰিয়ৰ বহিমুখী প্ৰৱাহক সংযম অগ্নিত হৰন কৰা হয়, যাৰ পৰিণাম পৰমাত্মা। কৰ্মৰ শুদ্ধ অৰ্থ হ'ল আৰাধনা, যাৰ স্বৰূপ এই আধ্যাত

আগত পোৱা যাব। এই আৰাধনাৰ পৰিণাম কি? ‘সংসিদ্ধিম্’ পৰম সিদ্ধি পৰমাত্মা “যান্তি ব্ৰহ্ম সনাতনম্” শাস্ত্ৰত ব্ৰহ্মত প্ৰবেশ, পৰম নৈষ্কৰ্মৰ স্থিতি। শ্ৰীকৃষ্ণই কয় মোৰ অনুসৰি চলা জনে এই মনুষ্যালোকত কৰ্মৰ পৰিণাম পৰম নৈষ্কৰ্মৰ সিদ্ধিৰ কাৰণে দেৱতাক পূজা কৰে অৰ্থাৎ দৈবী সম্পত্তীক অধিক শক্তিশালী বনায়।

তৃতীয় আধ্যায়ত তেওঁকৈছে যে এই যজ্ঞৰ দ্বাৰা তুমি দেৱতাক বৃদ্ধি কৰা, দৈবী সম্পদ শক্তিশালী কৰা। যেতিয়াই হৃদয় দেশত দৈবী সম্পদৰ উন্নতি হয়, তেতিয়াই তোমাৰ উন্নতি হব। এইদৰে পৰস্পৰে উন্নতি কৰি পৰম শ্ৰেয়ৰ প্ৰাপ্ত কৰা। শেষলৈকে উন্নতি কৰি যাবৰ বাবে এই অন্তঃ ক্ৰিয়া। ইয়াত জোৰ দি শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছে যে-মোৰ অনুকূলত চলাজনে এই মনুষ্য শৰীৰতেই কৰ্মৰ সিদ্ধিৰ ইচ্ছা কৰি দৈবী সম্পদক শক্তিশালী কৰে যাৰ ফলত তেওঁ নৈষ্কৰ্ম সিদ্ধি শীঘ্ৰেই লাভ কৰে। তেওঁ অসফল নহয়; সফলেই হয়। শীঘ্ৰৰ অৰ্থ কি? কি, কৰ্মত প্ৰবৃত্ত হলেই তৎক্ষণাৎ এই পৰম সিদ্ধি পাপ্ত হয়নে? শ্ৰীকৃষ্ণই কয়- নহয়, এই লক্ষ্যত ক্ৰমশঃ উঠাৰ বিধান আছে। কোনোবাই একেবাৰে জাপমাৰি ভাৱৰ অতিত হৈ ধ্যানৰ দৰে চমৎকাৰিক নহয়, ইয়াত চাওক।

চাতুৰ্ণ্যং ময়া সৃষ্টং গুণকৰ্মবিভাগশঃ।

তস্য কৰ্তাৰমপি মাং বিদ্যাকৰ্তাৰমব্যয়ম্ ॥ ১৩ ॥

অৰ্জুন। ‘চাতুৰ্ণ্যং ময়া সৃষ্টং’ চাৰি বৰ্ণৰ ৰচনা মইয়ে কৰিছো, তেতিয়া হলে কি মনুষ্যক চাৰি ভাগত ভাগ কৰিলে নে? শ্ৰীকৃষ্ণই কয়- নহয়, ‘গুণ কৰ্ম বিভাগশঃ’ গুণৰ মাধ্যমেৰে কৰ্মক চাৰি ভাগত ভগোৱা হৈছে। গুণ এটা সীমা, মাপদণ্ড। তামসী গুণ থাকিলে, আলস্য, নিদ্ৰা, প্ৰমাদ, কৰ্ম নকৰা প্ৰবৃত্তিৰ স্বভাৱ, জানিও অকৰ্তব্যৰ পৰা নিবৃত্তি নোহোৱাৰ বিৰশতা থাকিব। এনে অৱস্থাত সাধন কেনেকৈ আৰম্ভ কৰিব? দুঘণ্টা যদি আৰাধনাৰ বাবে বহিলে এই কৰ্মৰ বাবে চেপ্টা কৰিব ধৰে, কিন্তু দহ মিনিটো নিজৰ পক্ষত আনিব নোৱাৰে। শৰীৰ অৱশ্য বহি আছে, কিন্তু যি মন বহিব লাগিছিল সি হাৱাত ঘূৰি আছে, বিভিন্ন চিন্তাৰ ৰচনা কৰিছে। ইটো টোৰ পিছত সিটো টো আহিছে, তেতিয়া আপুনি বহি আছে কিয়? সময় নষ্ট কৰি আছে কিয়?

সেই সময়ত 'পৰিচাৰ্য্যকং কৰ্ম সূদ্রস্যাপি স্বভাজম্,' যি মহাপুৰুষ অব্যক্তৰ স্থিতিত আছে অবিনাশী তত্ত্বত স্থিত আছে, তেওঁৰ তথা এই পথত অগ্ৰসৰ হোৱা নিজতকৈ উন্নত লোকৰ সেৱাত লাগি যোৱা। ইয়াৰ ফলত দুষিত সংস্কাৰ-শমন হ'ব ধৰিব, সাধনাত প্ৰৱেশ কৰাব পৰা সংস্কাৰ সবল হ'ব ধৰিব।

ক্ৰমশঃ তামসী গুণ ম্লান হোৱাৰ কাৰণে ৰাজসী গুণৰ প্ৰধানতা তথা সাত্বিক গুণৰ অল্প সঞ্চাৰৰ লগে লগে সাধকৰ ক্ষমতা বৈশ্য শ্ৰেণীলৈ উন্নিত হয়। সেই সময়ত সেই সাধক জন ইন্দ্ৰিয় সংযম, স্বভাৱতেই আত্মিক সম্পত্তিৰ সংগ্ৰহ কৰিব ধৰে। কৰ্ম কৰি গৈ থাকোতে সেইজন সাধকত সত্ৰগুণৰ অধিকতা হ'ব ধৰে, ৰাজসী গুণ কম হৈ যায়, তামসী গুণ শান্ত হৈ থাকিব। সেই সময়ত সেইজন সাধক ক্ষেত্ৰীয় শ্ৰেণীত প্ৰৱেশ কৰে। শৌৰ্য্য, কৰ্মত প্ৰবৃত্ত থাকিব পৰা ক্ষমতা, পিছ নুহকা স্বভাৱত পৰিণত হ'ব। সকলো ভাৱতে স্বামী ভাৱ, প্ৰকৃতিৰ তিনিও গুণ কাটিব পৰা ক্ষমতা স্বভাৱতে আহিব। সেই কৰ্ম আৰু ক্ষুক্ষু হোৱাৰ কাৰণে, মাত্ৰ সাত্বিক গুণ কাৰ্য্যৰত হোৱাত মনৰ সমন, ইন্দ্ৰিয় বিলাকৰ দমন, একাগ্ৰতা, সৰলতা, ধ্যান, সমাধি, ঈশ্বৰীয় নিৰ্দেশ আন্তিকতা ইত্যাদি ব্ৰহ্মত প্ৰৱেশ কৰাব পৰা স্বাভাৱিক ক্ষমতাৰ লগত সেই সাধকক ব্ৰাহ্মণ শ্ৰেণীৰ বুলি কোৱা হয়। এই ব্ৰাহ্মণ শ্ৰেণীৰ কৰ্মই নিম্নতম সীমা। যেতিয়া সাধক ব্ৰহ্মত স্থিত হৈ যায়, সেই অস্তিম সীমাত তেওঁ নিজেই ব্ৰাহ্মণো নাথাকে, ক্ষত্ৰিয়ও নাথাকে, বৈশ্যও নাথাকে, শুদ্ৰও নাথাকে, কিন্তু আনক মাৰ্গ দৰ্শন কৰাবৰ কাৰণে তেওঁৰেই ব্ৰাহ্মণ। কৰ্ম একেই, নিয়ত কৰ্ম; আৰাধনা। অৱস্থা ভেদে এই কৰ্মকে উচ্চ-নিচ চাৰিটা ভাগত ভাগ কৰা হৈছে। কোনে ভাগ কৰিছিল? কোনো যোগেশ্বৰে ভাগ কৰিছিল, অব্যক্ত স্থিতি থকা মহাপুৰুষে ভাগ কৰিছিল। তেওঁৰ কৰ্ত্তা মোক তুমি অবিনাশী অকৰ্ত্তা বুলিয়ে জনা। কিয়?

ন মাং কৰ্মাণি লিম্পন্তি ন মে কৰ্মফলে স্পৃহা।

ইতি মাং যোহভিজানাতি কৰ্মভিন্ৰ স বধ্যতে ॥ ১৪ ॥

কিয়নো কৰ্মৰ ফলত মোৰ স্পৃহা নাই। কৰ্মৰ ফল কি? শ্ৰীকৃষ্ণই আগতে কৈছিল যে যজ্ঞ যাৰ দ্বাৰা পূৰ্ণ হয়, সেই ক্ৰিয়াৰ নামেই কৰ্ম আৰু

শেষত যজ্ঞই যি ৰচনা কৰে, সেই জ্ঞানামৃতকে পান কৰাজন শাস্ত্ৰত, সনাতন ব্ৰহ্মত প্ৰবেশ কৰে। কৰ্মৰ পৰিণাম হ'ল - পৰমাত্মা। সেই পৰমাত্মাৰ প্ৰতিও মোৰ ইচ্ছা নাই, কিয়নো তেওঁ মোতকৈ বেলেগ নহয়। মই অব্যক্ত স্বৰূপ তেওঁৰে স্থিতি ৰূপ হওঁ। এতিয়া আগলৈ কোনো সত্যই নাই যাৰ কাৰণে এই কাৰ্য্যত স্নেহ ৰাখো। সেই কাৰনে কাৰ্য্যই মোক বান্ধি নথয়, আৰু এই স্তৰৰ কথা যি জনে মোক বুজি পায় অৰ্থাৎ যি কৰ্মৰ পৰিণাম পৰমাত্মাক প্ৰাপ্ত কৰি লৈছে তেওঁকো কৰ্মই নাবান্ধে। যেনে শ্ৰীকৃষ্ণ, তেনেকৈ সেই স্তৰত থকা, জ্ঞানী মহাপুৰুষ।

এবং জ্ঞাত্বা কৃতং কৰ্ম পূৰ্বেৰপি মুমুক্ষুভিঃ।

কুৰু কৰ্মৈৰ তস্মাত্ত্বং পূৰ্বে পূৰ্বেতৰং কৃতম্ ॥ ১৫ ॥

অৰ্জুন। প্ৰথমে মোক্ষৰ ইচ্ছা থকা পুৰুষ সকলেও জানি এই কৰ্মকে কৰিছিল। কি জানিছিল? এই টোৱে যে যেতিয়া কৰ্মৰ পৰিণাম পৰমাত্মাৰ বাদে একো নহয়, কৰ্মৰ পৰিণাম পৰমাত্মাতো স্পৃহা নথকাত সেই পুৰুষক কৰ্মই বান্ধিব নোৱাৰে। শ্ৰীকৃষ্ণ এই স্থিতিৰে আছিল। সেই কাৰনে তেওঁক কৰ্মই নাবান্ধে আৰু সেই স্তৰৰ কথা আমি জানি ললে আমাকো কৰ্মই নোবান্ধে। যেনে শ্ৰীকৃষ্ণ ঠিক তেনেদৰে সেইটো স্তৰত যি জনে জানি লব, তেনে পুৰুষো কৰ্ম বন্ধনৰ পৰা মুক্ত হয়। এতিয়া **শ্ৰীকৃষ্ণ**, **'ভগৱান'**, **'মহাত্মা'**, **'অব্যক্ত'**, **যোগেশ্বৰ বা মহাযোগেশ্বৰ** যিয়েই নাথাকক তেওঁৰ স্বৰূপ সকলোৰে কাৰনে। ইয়াকে ভাবি আগৰ মুমুক্ষু পুৰুষ সকলেও, মোক্ষৰ ইচ্ছা থকা পুৰুষ সকলেও কৰ্ম কৰিছিল। সেইকাৰণে অৰ্জুন। তুমিও পূৰ্বজ সকলৰ দ্বাৰা কৰি অহা এই কৰ্ম কৰা। এয়াই কল্যাণৰ একমাত্ৰ মাৰ্গ।

এতিয়ালৈকে যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কৰ্ম কৰাৰ ওপৰত জোৰ দিছে, কিন্তু এইটো স্পষ্ট কৰা নাই যে কৰ্ম কি? দ্বিতীয় অধ্যায়ত তেওঁ কৰ্মৰ নাম মাত্ৰ লৈছে আৰু ইয়াক তুমি নিষ্কাম কৰ্ম বিষয়ত বুলি শুনা। তাৰ বিশেষতাৰ বৰ্ণন কৰি কলে যে ই জন্ম-মৰণ। মহান ভয়ৰ পৰা ৰক্ষা কৰে। কৰ্ম কৰিবৰ সময়ত লব লগা সাৱধানতাৰ বৰ্ণন কৰিলে, কিন্তু এইটো নকলে যে কৰ্ম কি? তৃতীয় অধ্যায়ত তেওঁ কলে যে জ্ঞান-মাৰ্গ ভাল লাগেনে, নিষ্কাম কৰ্মযোগ,

কৰ্মতো কৰিব লাগিবই। কৰ্মক ত্যাগ কৰিলেও কোনো জ্ঞানী হব নোৱাৰে আৰু কৰ্মক আৰম্ভ নকৰিলেও কোনো নিষ্কৰ্মী নহয়। জোৰকৰি কোনোবাই যদি নকৰে তেন্তে তেওঁ দস্তী। সেইকাৰণে মনেৰে ইন্দ্ৰিয়ক বশকৰি কৰ্ম কৰা। কি কৰ্ম? তেতিয়া কলে নিয়ত কৰ্ম কৰা। এতিয়া এই নিয়ত বা নিৰ্ধাৰিত কৰ্ম কি? তেতিয়া কলে- যজ্ঞৰ প্ৰক্ৰিয়াই হ'ল নিৰ্ধাৰিত কৰ্ম। এতিয়া নতুন প্ৰশ্ন হ'ল যে যজ্ঞ কি? যাক কৰিলে কৰ্ম হৈ গ'ল। তাতো যজ্ঞৰ উৎপত্তিৰ বিষয়ে কৈছিল, তাৰ বিশেষতাৰ বৰ্ণন কৰিছিল, কিন্তু যজ্ঞৰ বিষয়ে নকলে যাৰদ্বাৰা কৰ্ম বুজি পোৱা যায়। এতিয়ালৈকে স্পষ্ট হোৱা নাই যে কৰ্ম কি? এতিয়া কৈছে যে অৰ্জুন কৰ্ম কি? অকৰ্ম কি? এই বিষয়ত ডাঙৰ বিদ্বান সকলো মোহিত হৈ গৈছে, তাক ভালকৰি বুজিব লাগিব।

কিং কৰ্ম কিমকৰ্মেতি কৰয়োহপ্যত্র মোহিতা ৷

তত্তে কৰ্ম প্ৰবক্ষ্যামি যজ্জ্ঞাত্বা মোক্ষ্যসেহশুভাৎ ॥ ১৬ ॥

কৰ্ম কি আৰু অকৰ্ম কি? এই বিষয়ত বুদ্ধিমান পুৰুষো মোহিত হৈ গৈছে। সেই কাৰণে মই তোমাৰ কাৰণে সেই কৰ্মই কম, যাক জানি তুমি 'অশুভাত মোক্ষ্যসে' অশুভ অৰ্থাৎ সংসাৰ বন্ধনৰ পৰা ভালেৰে পাৰ হৈ যাব। কৰ্ম এনে এটা বস্তু, যি সংসাৰ বন্ধনৰ পৰা মুক্তি দিয়ে। সেই কৰ্মক জানিবৰ কাৰণে শ্ৰীকৃষ্ণই পুণৰ জোৰ দিছে-

কৰ্মণো হ্যপি বোদ্ধব্যং বোদ্ধব্যং চ বিকৰ্মণ ৷

অকৰ্মণশ্চ বোদ্ধব্যং গহনা কৰ্মণো গতি ৷ ১৭ ॥

কৰ্মৰ স্বৰূপো জানিব লাগিব, অকৰ্মৰ স্বৰূপো বুজিব লাগিব আৰু বিকৰ্ম অৰ্থাৎ বিকল্প শূণ্য বিশেষ কৰ্ম যি আপ্ত পুৰুষ সকলৰ দ্বাৰা হয়, তাকো জানিব লাগিব, কিয়নো কৰ্মৰ গতি অতি গভীৰ। কিছুমান লোকে বিকৰ্মৰ অৰ্থ 'নিষিদ্ধ কৰ্ম' 'মন দি কৰা কৰ্ম' ইত্যাদি কয়। মূলতঃ ইয়াত 'বি' উপসৰ্গ বিশিষ্টতাৰ দ্যোতক হয়। প্ৰাপ্তীৰ পিছত মহাপুৰুষ সকলৰ কৰ্ম বিকল্প শূণ্য হৈ যায়। আত্মস্থিত, আত্মতৃপ্ত, আত্মকাম মহাপুৰুষ সকলক কোনো কৰ্ম কৰিলেও লাভ নাই আৰু কৰ্ম নকৰিলেও লোকচান নহয়; তথাপিও তেওঁলোকে পৰবৰ্ত্তী জনৰ হিতৰ বাবে কৰ্ম কৰে। এনে কৰ্ম বিকল্প শূণ্য হয়,

বিশুদ্ধ হয় আৰু এই কৰ্মক বিকৰ্ম বুলি কোৱা হয়।

উদাহৰণৰ বাবে গীতাত য'ত কোনো কাৰ্য্যৰ ক্ষেত্ৰত 'বি' উপসৰ্গ ব্যৱহাৰ কৰা আছে, তাক বিশেষতাৰ দ্যোতক মনা হৈছে, নিকৃষ্টতাৰ নহয়। যেনে - 'যোগযুক্তো' বিশুদ্ধাত্মা বিজিতাত্মা জিতেन्द्रিয়ঃ (গীতা পুণ্ড্ৰঃ) যি যোগত যুক্ত, তেওঁ বিশেষ ৰূপেৰে শুদ্ধ আত্মা থকা, বিশেষ ৰূপে অন্তঃকৰণক জিকাজন ইত্যাদি বিশেষতাৰে দ্যোতক হয়। এই প্ৰকাৰে গীতাত ঠায়ে-ঠায়ে 'বি' ৰ প্ৰয়োগ কৰা হৈছে যিটো বিশেষ পূৰ্ণতাৰে দ্যোতক হয়। এই ধৰণে "বিকৰ্ম" ও বিশিষ্ট কৰ্মৰে দ্যোতক হয়, যি প্ৰাপ্তিৰ পিছত মহাপুৰুষ সকলৰ দ্বাৰা সম্পাদিত হয়, য'ত শুভাশুভৰ সংস্কাৰ নাথাকে। এতিয়া আপুনি বিকৰ্মৰ বিষয়ে জানিলে। এতিয়া থাকিল কৰ্ম আৰু অকৰ্ম, যাক পিছৰ শ্লোকত বুজাবৰ চেষ্টা কৰা হৈছে। যদি বুজি পোৱা নাযায়, তেতিয়া হলে কেতিয়াও বুজিব নোৱাৰিব।

কৰ্মণ্যকৰ্ম যঃ পশ্যেদকৰ্মণি চ কৰ্ম যঃ।

সবুদ্ধিমান্মনুষ্যেষু স যুক্তঃ কৃৎ স্ককৰ্মকৃৎ ॥ ১৮ ॥

যি পুৰুষে কৰ্মত অকৰ্ম দেখে, কৰ্ম মানে আৰাধনা, আৰাধনা কৰে এইটোও বুজি পায় যে কৰ্ম কৰাজন মই নহয়, আনকি গুণৰ অৱস্থাই চিন্তনত মোক নিযুক্ত কৰে, 'মই ইষ্টৰ দ্বাৰা সঞ্চালিত হৈ আছোঁ' - এনেকুৱা জানে আৰু যেতিয়া এই প্ৰকাৰে অকৰ্ম দেখাৰ ক্ষমতা প্ৰাপ্ত কৰে আৰু ধাৰাবাহিক ৰূপত কৰ্ম হৈ থাকে তেতিয়া বুজিব লাগিব যে কৰ্ম শুদ্ধ দিশেৰে গৈ আছে। সেই পুৰুষেই মনুষ্যৰ ভিতৰত বুদ্ধিমান, মনুষ্যৰ ভিতৰত যোগী, যোগেৰে যুক্ত বুদ্ধিমান আৰু সম্পূৰ্ণ কৰ্ম কৰাজন। তেওঁৰ দ্বাৰা কৰ্ম কৰিলেও অলপো ভুল থাকি নাযায়।

সাৰাংশত আৰাধনাই কৰ্ম। সেই কৰ্মকে কৰা আৰু কৰিয়েই অকৰ্মক দেখা; মই যন্ত্ৰমাত্ৰ, কৰাওতা জন ইষ্ট হৈ, মই গুণৰ পৰা উৎপন্ন অৱস্থা অনুসৰি চেষ্টা কৰোঁ। যেতিয়া অকৰ্মৰ এই ক্ষমতা প্ৰাপ্ত হয়, আৰু ধাৰা বাহিক

কৰ্ম হৈ থাকে, তেতিয়াই পৰম কল্যাণৰ স্থিতি দিব পৰা কৰ্ম হয়। পূজ্য মহাৰাজ জীয়ে প্ৰায়ে কৈছিলে - “যেতিয়ালৈকে ইষ্ট সাৰথি নহয়, বেয়া ফালৰ পৰা বক্ষা নকৰে, তেতিয়ালৈকে শুদ্ধ ভাৱে আৰাধনাৰ আৰম্ভই হোৱা নাই।” ইয়াৰ আগতে যি খিনি কৰা যায়, কৰ্মত প্ৰৱেশ কৰিবৰ চেষ্টাৰ বাদে একো নহয়। নাঙলৰ সম্পূৰ্ণ বোজা বলধৰ ওপৰত থাকে, তথাপিও পথাৰত হাল মৰাৰ কাম হালোৱা জনৰ হে অৰিহণ ঠিক এই ধৰণে সাধনাৰ সকলো বোজা সাধকৰ ওপৰতে থাকে, কিন্তু বাস্তৱিক সাধকতো ইষ্টই যি তেওঁৰ পাছত থাকি তেওঁৰ মাৰ্গ দৰ্শন কৰি থাকে। যেতিয়ালৈকে ইষ্টই নিৰ্ণয় নিদিয়ে তেতিয়ালৈকে আপুনি বুজিব নোৱাৰিব যে মোৰ দ্বাৰা কি হৈ আছে? মই প্ৰকৃতিতে বিচৰণ কৰি আছো নে পৰামাত্মাত? এই ধৰণে ইষ্টৰ নিৰ্দেশত যি সাধক এই আত্মিক পথত অগ্ৰসৰ হৈ আছে নিজক অকৰ্তা ভাৱি ধাৰাবাহিক কৰ্ম কৰি আছে, তেৱেই বুদ্ধিমান, তেওঁৰ জনাটো যথার্থ হৈছে, তেৱেই যোগী। কেতিয়াবা কৰ্মৰ পৰা পৰিত্ৰাণ পাবনে? এই বিষয়ে যোগেশ্বৰে কয় -

শ্ৰীকৃষ্ণঃ ৰ অনুসৰি যিয়েই কৰা নহওক কিয় সি কৰ্ম হ'ব নোৱাৰে। কৰ্ম হ'ল এক নিৰ্দ্ধাৰিত ক্ৰিয়া **‘নিয়ত কুৰু কৰ্ম কৰ্ম ত্বং-অৰ্জুন।** তুমি নিৰ্দ্ধাৰিত কৰ্মই কৰা। নিৰ্দ্ধাৰিত কৰ্ম কি? তেতিয়া কলে **‘যজ্ঞার্থিত কৰ্মগোহন্যত্ৰ লোকোহয়ং কৰ্মবন্ধনঃ’** যজ্ঞক কাৰ্য্যৰূপ দিয়াই হ'ল কৰ্ম। ইয়াৰ অতিৰিক্ত যি কৰা হয় সেইবোৰ কৰ্ম নহয়নে? শ্ৰীকৃষ্ণই কয়-অন্যত্ৰ **‘লোকোহয়ং কৰ্মবন্ধনঃ’** এই যজ্ঞক কাৰ্য্যৰূপ দিয়াৰ বাহিৰে যি কৰা হয় সেইটো এইটো লোকৰেই বন্ধন, কোনো কৰ্ম নহয়, **‘তদৰ্থ কৰ্ম’- অৰ্জুন।** সেই যজ্ঞৰ পূৰণৰ কাৰণে উত্তম প্ৰকাৰৰ আচৰণ কৰা আৰু যেতিয়া যজ্ঞৰ স্বৰূপ কলে, তেতিয়া সিটো শুদ্ধ ৰূপৰ আৰাধনাৰ এটা বিধি বিশেষ, যিয়ে আৰাধ্য দেৱৰ ওচৰলৈ নি তাতেই বিলয় কৰি দিয়ে।

এই যজ্ঞত ইন্দ্ৰিয়ৰ দমন, মনৰ শমন দৈবী সম্পত্তিৰ অৰ্জন ইত্যাদি কৈ শেষত কলে যে- বহুতো যোগীয়ে প্ৰাণ আৰু অপানৰ গতি নিৰোধ কৰি প্ৰাণায়ামত পৰায়ণ হয়, য'ত ভিতৰৰ পৰাও কোনো সংকল্প নুঠে আৰু বাহিৰৰ বাতাবৰনেও কোনো সংকল্প মনৰ ভিতৰলৈ সোমাব নিদিয়ে। এনে স্থিতিত চিন্ত সৰ্বদা নিৰোধ হয় আৰু নিৰুদ্ধ চিন্তবো বিলয় কালত সেই পুৰুষ **‘যান্তি**

ব্রহ্ম সনাতনম্’ শাস্ত্ৰত সনাতন ব্ৰহ্মত প্ৰৱেশ পায়। এই কেইটাই যজ্ঞ, যাৰ কাৰ্য্যৰূপ দিয়াৰ নামেই কৰ্ম। অত; কৰ্মৰ শুদ্ধ অৰ্থ হ’ল ‘আৰাধনা’ কৰ্মৰ অৰ্থ হ’ল ‘ভজন’ কৰ্মৰ অৰ্থ হ’ল যোগ সাধনাক উত্তম প্ৰকাৰে সম্পাদিত কৰা যাৰ বিশদ বৰ্ণন এই আধ্যাত্মিক আৰ্গলৈ দিয়া আছে। ইয়াত কৰ্ম আৰু অকৰ্মক মাত্ৰ বিভাজন কৰা হৈছে, যাক কৰ্ম কৰিবৰ সময়ত তাক শুদ্ধ দিশ দিব পৰা যায় আৰু সেই ৰাস্তায়েদি যাব পাৰে।

যস্য সৰ্বৈ সমাৰম্ভাঃ কামসঙ্কল্পবৰ্জিতাঃ।

জ্ঞানান্দিদম্ভকৰ্মাণং তমাহঃ পশুতং বুধাঃ।।১৯

অৰ্জুন। ‘যস্য সৰ্বৈ সমাৰম্ভাঃ’ যি পুৰুষৰ দ্বাৰা সম্পূৰ্ণ ফালৰ পৰা আৰম্ভ কৰা ক্ৰিয়া (য’ত আগৰ শ্লোকত কৈছে যে অকৰ্ম দেখাৰ ক্ষমতা আহিলেই কৰ্মত প্ৰবৃত্ত থকা পুৰুষ সম্পূৰ্ণ কৰ্ম কৰাজন হয়। যি জনে কৰিলে অলপো ক্ৰটি নহয়) ‘কামসঙ্কল্পবৰ্জিতা’ ক্ৰমশঃ উৎথান হৈ হৈ ইমান সুক্ষ্ম হৈ যায় যে কামনা-বাসনা আৰু মনৰ সংকল্পৰ বিকল্পৰ পৰা ওপৰলৈ উঠি যায় (কামনা আৰু সংকল্পৰ নিৰোধ হোৱা মনৰ বিজিতাৱস্থা হয়; অত; কৰ্ম এনে এটি বস্তু যি এই মনৰ কামনা আৰু সংকল্প-বিকল্পৰ ওপৰলৈ উঠাই দিয়ে), সেই সময়ত ‘জ্ঞানান্দিদম্ভকৰ্মাণং’-অস্তিম সংকল্পৰো শমনৰ লগতে, যাক আমি নাজানো, যাক জানিবৰ বাবে ৰৈ আছে, সেই পৰমেশ্বৰ পৰমাত্মাৰ প্ৰত্যক্ষ হৈ যায়। ক্ৰিয়াত্মক পথত চলি গৈ পৰমাত্মাৰ প্ৰত্যক্ষ পৰিচয়েই হ’ল ‘জ্ঞান’। সেই জ্ঞানৰ লগত, ‘দম্ভকৰ্মাণং’-কৰ্ম সৰ্বকালৰ বাবে দম্ভ হৈ যায়। যাক পাব লগীয়া আছিলে পাই গ’ল, আগলৈ কোনো সন্তাই নাথাকিল যাক বিচাৰিম। সেই কাৰণে কৰ্ম কৰি বিচাৰিম কাক? সেই জ্ঞানৰ লগে লগে কৰ্মৰ আৱশ্যকতা সমাপ্ত হৈ যায়। এনে স্থিতিত থকাজনক বোধৰূপ মহাপুৰুষ সকলে ‘পশুত’ বুলি সম্বোধন কৰিছে। তেওঁৰ জনাটো পূৰ্ণ হ’ল। এনে স্থিতিত থকা মহাপুৰুষে কৰে কি? থাকে কেনেকৈ? তাৰ থকা-মেলাৰ ওপৰত প্ৰকাশ কৰি কয় -

ত্যাঙ্কা কৰ্মফলাসঙ্গং নিত্যতৃপ্তো নিৰাশ্ৰয়ঃ।

কৰ্মণ্যভিপ্ৰবৃত্তোহপি নৈৰ কিঞ্চিৎকৰোতি সঃ।। ২০।।

অৰ্জুন । সেই পুৰুষ সাংসাৰিক আশ্ৰয়ৰ পৰা ৰহিত হৈ নিত্যবস্তু
পৰমাত্মাতে তৃপ্ত থাকি কৰ্মৰ ফল পৰমাত্মাৰ আসক্তিকো ত্যাগ কৰি (কিয়নো
পৰমাত্মা এতিয়া বেলেগ নহয়) কৰ্মত উত্তম প্ৰকাৰে লাগি থাকিলেও একোৰেই
নকৰে

নিৰাশীৰ্ষতচিত্তাত্মা ত্যক্তসৰ্বপৰিগ্ৰহ ৷

শাৰীৰং কেৱলং কৰ্ম কুৰ্বন্নাশ্নোতি কিল্বিষম্ ॥ ২১ ॥

যি জনে অন্তঃকৰণ আৰু শৰীৰক বিজয়কৰিছে, ভোগৰ সম্পূৰ্ণ সামগ্ৰী
যি জনে ত্যাগ কৰিছে, এনে আশাৰহিত পুৰুষৰ শৰীৰ মাত্ৰ কৰ্ম কৰিবলৈ
দেখুৱায়। মূলতঃ; তেওঁৰ কৰা-ধৰা একো নহয়, সেই কাৰণে পাপেও নধৰে।
তেওঁ পূৰ্ণত্ব পাপ্ত কৰি লৈছে সেই কাৰণে তেওঁৰ আৱাগমনো নাথাকে।

যদৃচ্ছালাভসম্বুটো দ্বন্দ্বাতীতো বিমৎসৰ ৷

সমঃ সিদ্ধাৱসিদ্ধৌ চ কৃত্বাপি ন নিবধ্যতে ॥ ২২ ॥

নিজে যি প্ৰাপ্ত হয় তাতে সন্তুষ্ট থাকা, সুখ-দুখ , ৰাগ-দ্বेष আৰু
হৰ্ষ-বিষাদৰ দ্বন্দ্বৰ পাৰত থকা **‘বিমতসৰ’** ইৰ্ষাৰহিত তথা সিদ্ধি আৰু
অসিদ্ধিত সম-ভাৱ ৰাখিব পৰা পুৰুষ কৰ্ম কৰিও বন্ধনত নপৰে। সিদ্ধি অৰ্থাৎ
যাক পাব লগা আছিল, সেইটো এতিয়া বেলেগ নহয়, আৰু সি কেতিয়াও
বেলেগ হব নোৱাৰে, সেইকাৰণে অসিদ্ধিৰো ভয় নাই। এই দৰে সিদ্ধি আৰু
অসিদ্ধিত সমভাৱ ৰখা পুৰুষ কৰ্ম কৰিও বান্ধ নাখায়। তেওঁ কেনে কৰ্ম কৰে?
সেই নিৰ্দিষ্ট কৰ্ম, যজ্ঞৰ প্ৰক্ৰিয়া। ইয়াকে পূৰণ কৈছে-

গতসঙ্গস্য মুক্তস্য জ্ঞানারস্থিতচেতস ৷

যজ্ঞয়াচৰত্ৰ কৰ্ম সমগ্ৰং প্ৰবিলীয়তে ॥ ২৩ ॥

অৰ্জুন! ‘যজ্ঞয়াচৰত কৰ্ম’ -যজ্ঞৰ আচৰণেই কৰ্ম আৰু সাক্ষাৎকাৰৰ
নামেই জ্ঞান। এই যজ্ঞৰ আচৰণেই কৰ্ম আৰু সাক্ষাৎ কাৰৰ নামেই জ্ঞান।
এই যজ্ঞৰ আচৰণ কৰি সাক্ষাৎকাৰৰ লগে লগে জ্ঞানত স্থিত হৈ সংগ-দোষ
আৰু আসক্তিৰ পৰা ৰহিত মুক্ত পুৰুষৰ সম্পূৰ্ণ কৰ্ম উত্তম প্ৰকাৰে বিলীন হৈ
যায়। সেই কৰ্মই কোনো পৰিণাম নুলিয়ায়, কিয়নো কৰ্মৰ ফল পৰমাত্মা তেওঁৰ

পৰা বেলেগ নহয়। এতিয়া ফলতনো কি ফল ধৰিব? সেই কাৰণে এই মুক্ত পুৰুষৰ নিজৰ বাবে কৰ্মৰ আৱশ্যকতা সমাপ্ত হৈ যায়। তথাপিও লোক সংগ্ৰহৰ কাৰণে তেওঁলোকে কৰ্ম কৰে যদিও কৰ্মত লিপ্ত নহয়। যেতিয়া কৰ্ম কৰে, তেনেহলে লিপ্ত নহয় কিয়? ইয়াত কৈছে -

ব্ৰহ্মাৰ্পণং ব্ৰহ্মহৰিৰ্ৰক্ষাণৌ ব্ৰহ্মণা হৃতম্।

ব্ৰহ্মৈৱ তেন গন্তব্যং ব্ৰহ্মকৰ্মসমাধিনা ॥ ২৪ ॥

এনে মুক্ত পুৰুষৰ সমৰ্পন ব্ৰহ্ম; হৰি মানে হৰন কৰা সামগ্ৰী ব্ৰহ্ম, অগ্নিও 'ব্ৰহ্ম' অৰ্থাৎ ব্ৰহ্মৰূপ অগ্নিতে ব্ৰহ্মৰূপী কৰ্ত্তাৰদ্বাৰা যি হৰন কৰা হয় সেয়াও ব্ৰহ্ম। 'ব্ৰহ্ম কৰ্ম সমাধিনা' - যাৰ কৰ্ম ব্ৰহ্মক স্পৰ্শ কৰি সমাধিস্থ হৈ গৈছে, তাতে বিলয় হৈ গৈছে, এনে মহাপুৰুষৰ কাৰণে যি পাবলগীয়া আছিল সেইটোও ব্ৰহ্মই। তেওঁএকো নকৰে তথাপিও লোক সংগ্ৰহৰ বাবে কৰ্ম কৰে।

এইটো হ'ল প্ৰাপ্তৱান মহাপুৰুষৰ লক্ষণ, কিন্তু কৰ্মত প্ৰৱেশ কৰা প্ৰাৰম্ভিক সাধকে কি যজ্ঞ কৰে?

আগৰ আধ্যায়ত শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছে যে অৰ্জুন। কৰ্ম কৰা। কোন কৰ্ম? তেওঁ কলে, নিয়ত কৰ্ম- নিদ্ধাৰিত কৰ্ম। নিদ্ধাৰিত কৰ্ম কি? তেতিয়া কৈছে - 'নিয়ত কৰ্ম' অৰ্জুন। যজ্ঞৰ প্ৰক্ৰিয়াই হ'ল কৰ্ম। এই যজ্ঞৰ অতিৰিক্ত অন্য যি কোনো কৰ্মই কৰা হয় সেই এই লোকৰে বন্ধন মাত্ৰ। কৰ্ম নহয়। কৰ্মই সংসাৰ বন্ধনৰ পৰা মোক্ষ দিয়ে। অতঃ 'তদৰ্থং কৰ্ম কৌন্তেয় মুক্তসংগ সমাচৰঃ' সেই যজ্ঞৰ পূৰণৰ কাৰণে সংগদোষৰ পৰা বেলেগে থাকি উত্তম প্ৰকাৰে সংগদোষৰ পৰা বেলেগে থাকি উত্তম প্ৰকাৰে যজ্ঞৰ আচৰণ কৰা। ইয়াত এটা নতুন প্ৰশ্ন যোগেশ্বৰে দিলে যে সেইটো কি কৰ্ম যাক কৰিলে কৰ্ম কৰাৰ পৰাও পাৰ পায়? তেওঁ কৰ্মৰ বিশেষতাৰ ওপৰত জোৰ দি কলে যে যজ্ঞ আহিল কৰ পৰা? যজ্ঞই দিয়ে কি? তাৰ বিশেষতাৰ চিত্ৰণ কৰিলে; কিন্তু এতিয়া লৈকে নকলে যে যজ্ঞ কি?

এতিয়া ইয়াত সেই যজ্ঞকে স্পষ্ট কৰিছে-

দৈবমেবাপৰে যজ্ঞং যোগিনঃ পৰ্যুপাসতে।

ব্রহ্মাণ্ডাৰপৰে যজ্ঞং যজ্ঞেনৈবোপজুহুতি ॥ ২৫ ॥

আগৰ শ্লোকত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই পৰামাত্মাস্থিত মহাপুৰুষৰ যজ্ঞৰ নিৰূপণ কৰিছিল, কিন্তু অন্য যোগী যি জন এতিয়াও সেই তত্বত স্থিত হোৱা নাই, ত্ৰিন্যাত কৰিবপৰা আৰম্ভ কৰ পৰা কৰিব? ইয়াত কৈছে যে অন্য যোগী সকল 'দৈৱম যজ্ঞম', অৰ্থাৎ দৈবী সম্পদক নিজৰ হৃদয়ত শক্তিশালী বনাই লয়, যাৰ কাৰণে ব্ৰহ্মাৰ নিৰ্দেশ আছিল যে এই যজ্ঞৰ দ্বাৰা তোমালোকে দেৱতাৰ উন্নতি কৰা, যেতিয়াই হৃদয় দেশত দৈবী সম্পদ আৰ্জিত হব, তেতিয়াই তোমাৰ প্ৰগতি হব আৰু ক্ৰমশঃ পৰম্পৰ উন্নতি কৰি পৰম শ্ৰেয়ৰ প্ৰাপ্ত কৰা। দৈবী সম্পদৰ হৃদয় দেশত শক্তিশালী বনালে প্ৰৱেশীকা শ্ৰেণীৰ যোগীৰ যজ্ঞ হয়।

সেই দৈবী সম্পদ বহু আধ্যায়ৰ আৰম্ভনী তিনি শ্লোকত বৰ্ণনা কৰিছে, যি আছে সকলোতে মাত্ৰ মহত্ব পূৰ্ণ কৰ্তব্য ভাবি তাকে জাগৃত কৰা, তাতে লাগা। ইয়াকে ইঙ্গিত কৰি যোগেশ্বৰে কৈছে যে অৰ্জুন। তুমি বেজাৰ নকৰিবা, কিয়নো তোমাৰ দৈবী সম্পদ প্ৰাপ্ত হৈছে, তুমি মোৰ লগতে থাকা, মোৰেই শাস্বত স্বৰূপক প্ৰাপ্ত কৰিবা, কিয়নো দৈবী সম্পদ পৰম কল্যাণৰ কাৰণে হয় আৰু ইয়াৰ বিপৰীত আসুৰি সম্পদ নীচ আৰু অধম যোনিৰ কাৰণ হয়। এই আসুৰি সম্পদৰ হৰন হব ধৰে, সেইকাৰণে এই যজ্ঞ, আৰু ইয়াৰ পৰাই যজ্ঞৰ আৰম্ভ।

অন্য যোগী সকল 'দৈৱম যজ্ঞম.' পৰব্ৰহ্ম পৰমাত্মাৰূপ অগ্নিত যজ্ঞৰ দ্বাৰাই যজ্ঞৰ অনুষ্ঠান কৰে। শ্ৰীকৃষ্ণই আগত কৈছে যে এই শৰীৰৰ অধিযজ্ঞ মইয়ে। যজ্ঞৰ অধিষ্ঠাতা অৰ্থাৎ যজ্ঞ যত বিলয় হয় সেই পুৰুষো মইয়ে। শ্ৰীকৃষ্ণ এজন যোগী আছিল, সদগুৰু আছিল। এই ধৰণে অন্যান্য যোগীজন ব্ৰহ্ম ৰূপী অগ্নিত যজ্ঞ অৰ্থাৎ যজ্ঞ স্বৰূপ সদগুৰুক উদ্দেশ্য কৰি যজ্ঞৰ অনুষ্ঠান কৰে, সাৰাংশত সদগুৰুৰ স্বৰূপৰ ধ্যান কৰে।

শ্ৰোত্ৰাদীনীন্দ্ৰিয়ান্যে সংযমাগ্নিশু জুহবতি।

শব্দাদীষিয়ান্য ইন্দ্ৰিয়ানিশু জুহবতি ॥ ২৬ ॥

অন্য যোগী সকলে শ্ৰোত্ৰাদি (কান, চকু, ছাল, জিভা, নাক) সকলো ইন্দ্ৰিয়ক সংযম ৰূপী অগ্নিত হৰন কৰে অৰ্থাৎ ইন্দ্ৰিয় সমূহৰ বিষয়বোৰক

একত্রিত কৰি সংযত কৰি লয়। ইয়াত জুই নজলে। যেনেকৈ জুইত দিলে সকলো বস্তু পুৰি ছাই হয় ঠিক তেনেকৈ সংযমো এটা অগ্নিয়ে, যিয়ে ইন্দ্ৰিয় বিলাকত সম্পূৰ্ণ বহিমুখী সোঁতক জলাই দিয়ে। অন্য কিছু যোগীয়ে শব্দ আদি (শব্দ, স্পৰ্শ, ৰূপ, ৰস আৰু গন্ধ) বিষয়বোৰক ইন্দ্ৰিয়ৰূপী অগ্নিত হৰন কৰি দিয়ে অৰ্থাৎ তাৰ ভাৱনাবিলাক সলনি কৰি সাধনা যোগ্য বনাই লয়।

সাধকক সংসাৰত থাকিয়েই ভজন কৰিব লাগিব। সাংসাৰিক জনৰ ভাল-বেয়া শব্দ তেওঁ পাব। বিষয় উত্তেজক এনে শব্দবোৰ শুনাৰ লগে লগে সাধকে তাৰ অৰ্থক যোগ, বৈৰাগ্য সহায়ক, বৈৰাগ্য উত্তেজক ভাৱত পৰিবৰ্তিত কৰি ইন্দ্ৰিয়ৰূপী অগ্নিত হৰন কৰে। যেনে-এবাৰ অৰ্জুন নিজৰ চিন্তন কাৰ্য্যত লাগি আছিল। অকস্মাৎ তেওঁৰ কৰ্ণ-কুহৰত সংগীতৰ সূৰ ধ্বনিত হ'ল। তেওঁ মূৰ দাঙি চালে যে উৰ্ৱশী ঠিয় হৈ আছে, যি এজনী বেশ্যা আছিল। সকলো তেওঁৰ ৰূপত মুগ্ধ হৈ নাচি আছিল, কিন্তু অৰ্জুনে তেওঁক মাৰ দৃষ্টিৰে স্নেহেৰে চালে। সেই শব্দৰ ৰূপৰ পৰা পাব পৰা বিকাৰ বিলীন হৈ গ'ল। ইন্দ্ৰিয়ৰ অন্তৰালতে সমাহিত হৈ গ'ল।

ইয়াত ইন্দ্ৰিয়ই অগ্নি হ'ল। অগ্নিত দিয়া বস্তু যেনেকৈ ছাইলৈ পৰিবৰ্তন হয়, সেই প্ৰকাৰে তাৰ ভাৱ সলনী কৰি ইষ্টৰ অনুকূলত পেলালেই বিষয় উত্তেজক ৰূপ, ৰস, গন্ধ, স্পৰ্শ আৰু শব্দত ছাই হৈ যায়, সাধকৰ ওপৰত কুপ্ৰভাৱ নপৰে। সাধক এই শব্দবোৰত ৰুচি নাৰাখে, ইয়াক গ্ৰহণ নকৰে।

এই শ্লোকত 'অপৰে', 'অন্য', শব্দ একেই সাধকৰ উচ্চ-নীচ অৱস্থাৰ পৰিচায়ক। একেই যজ্ঞ কৰ্ত্তাজনৰ উচ্চ-নীচ স্তৰ, অপৰে শব্দই বেলেগ যজ্ঞৰ কথা নুসুচায়।

সৰ্বাণীন্দ্ৰিয়কৰ্মাণি প্ৰাণকৰ্মাণি চাপৰে।

আত্মসংযমযোগাগ্নৌ জুহ্বতি জ্ঞানদীপিতে।। ২৭।।

এতিয়ালৈকে যোগেশ্বৰে যি যজ্ঞৰ আলোচনা কৰিলে, তাত ক্ৰমশঃ দৈবী সম্পদৰ অৰ্জন কৰা হয়, ইন্দ্ৰিয়ৰ সম্পূৰ্ণ চেষ্টাক সংযম কৰা হয়,

শক্তিশালী বিষয়, উত্তেজক শব্দ আদিকো তাৰ ভাৱ সলনী কৰি ৰক্ষা পাব পাৰি। ইয়াতকৈ উন্নত অৱস্থা প্ৰাপ্ত হলে অন্য যোগীজন সম্পূৰ্ণ ইন্দ্ৰিয়ৰ চেষ্টক তথা প্ৰাণৰ কাৰ্য্যক সাক্ষাৎকৰাৰ সহিতে জ্ঞানেৰে প্ৰকাশিত পৰমাত্মা-স্থিতিকৰ্মী যোগাঙ্গিত আহুতি দিয়ে। যেতিয়া সংযমক ধৰাটো আত্মাৰ লগত একেই হৈ যায়, প্ৰাণ আৰু ইন্দ্ৰিয় শান্ত হৈ পৰে, সেই সময়ত বিষয়ক উদ্দিপ্ত কৰোৱা আৰু ইষ্টত প্ৰবৃত্তি দিব পৰা দুইটা সোঁতেই আত্মসাৎ হৈ যায়। পৰমাত্মাতে স্থিতি প্ৰাপ্ত হয়। যজ্ঞৰ পৰিণাম ওলাই আহে। এইটো যজ্ঞৰ অন্তিম পৰ্য্যায়। যি পৰমাত্মাক পাব লগীয়া আছিলে তাতেই স্থিতি প্ৰাপ্ত হ'ল যেতিয়া আৰু কি বাকী থাকিব? পূণৰ যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই যজ্ঞ সম্পৰ্কে বুজায় -

দ্রব্যযজ্ঞাস্তপোযজ্ঞা যোগযজ্ঞাস্তথাপৰে।

স্বাধ্যায়জ্ঞানযজ্ঞাশ্চ যতয়ঃ সংশিতৱতাঃ।। ২৮।।

বহুতো লোকে দ্ৰব্যযজ্ঞকৰে, অৰ্থাৎ আত্মপথত, মহাপুৰুষৰ সেৱাত দ্ৰব্য ব্যৱহাৰ কৰে। শ্ৰীকৃষ্ণই আগলৈ কৈছে যে ভক্তি ভাৱেৰে পত্ৰ পুষ্প, ফল-জল যিয়েই মোক অৰ্পণ কৰা মই তাকে খাওঁ আৰু তেওঁৰ পৰম কল্যাণ সৃজন কৰিব পৰা হওঁ, এইটো এটা যজ্ঞ। প্ৰত্যেক আত্মাৰে সেৱা কৰা, পাহৰি যোৱা বিলাকক আত্মপথত অনা দ্ৰব্য-যজ্ঞ হয়। কিয়নো প্ৰকৃতিয়ে সংস্কাৰক জ্বলাই দিব পাৰে।

এই ধৰণে বহুতো পুৰুষ 'তপোযজ্ঞ' স্বধৰ্ম-পালন কৰি ইন্দ্ৰিয় বিলাকক তাপ দিয়া অৰ্থাৎ স্বভাৱৰ পৰা উৎপন্ন ক্ষমতা অনুসৰি যজ্ঞৰ বাবে নিম্ন আৰু উন্নত অৱস্থাৰ মাজতে তপস্যা কৰে। এই পথৰ কম দূৰত প্ৰথম শ্ৰেণীৰ সাধক শূদ্ৰ পৰিচাৰ্য্যাৰ দ্বাৰা বৈশ্য দৈবী সম্পদ সংগ্ৰহৰ দ্বাৰা, ক্ষত্ৰিয়ই কাম-ক্ৰোধ ইত্যাদি উন্মুলন কৰি আৰু ব্ৰাহ্মণে ব্ৰহ্মত প্ৰবেশ কৰিব পৰা যোগ্যতাৰ স্তৰত ইন্দ্ৰিয়ত তাপ দিয়ে। সকলোকে একে বিধৰ প্ৰিশ্ৰম কৰিব লগা হয়। বাস্তৱত যজ্ঞ একেটাই। অৱস্থা অনুসৰি উচ্চ-নীচ শ্ৰেণীৰে পাৰ হব লাগিব।

পূজ্য মহাৰাজজীয়ে কৈছিলে - মনৰ সৈতে ইন্দ্ৰিয় সমূহ আৰু

শৰীৰক লক্ষ্যৰ অনুৰূপত সংযম কৰাকে তপস্যা বুলি কোৱা হয়। ইহঁত লক্ষ্যতকৈ বহু দূৰত পলায়ন কৰিব, সিহঁতক একগোট কৰি এফালে লগোৱা।

বহুতো পুৰুষে যোগ-যজ্ঞ আচৰণ কৰে। প্ৰকৃতিত বিচৰণ কৰি থকা আত্মাক প্ৰকৃতিৰ সিপাৰৰ পৰামাত্মাত মিলনৰ নামেই “যোগ”। যোগৰ পৰিভাষা ছয়টু আখ্যায়ত দ্ৰষ্টব্য। সামান্যত দুটা বস্তৰ মিলনক যোগ বুলি কোৱা হয়। কাগজে কলমে পাই গলোঁ, কাঁহী-মেজ পালোঁ, এইটো যোগ নহল। এই বোৰ পঞ্চভূতেৰে নিৰ্মিত পদাৰ্থ। ইহঁত একেটাই দুটা নহয়। দুটা হ’ল প্ৰকৃতি আৰু পুৰুষ। প্ৰকৃতিত স্থিত আত্মা নিজেই শাস্ত্ৰত ৰূপ পৰমাত্মাত প্ৰৱেশ পায়, তেতিয়া প্ৰকৃতি পুৰুষত বিলীন হৈ যায়, এয়াই যোগ। সেয়ে অনেক পুৰুষে এই মিলনৰ সহায়ক শম,দম ইত্যাদি নিয়মৰ উত্তম প্ৰকাৰে আচৰণ কৰে। যোগ-যজ্ঞ কৰাজন তথা অহিংসা আদি তীক্ষ্ণ ব্ৰতযুক্ত যত্নশীল পুৰুষ ‘স্বধ্যায় জ্ঞানযজ্ঞাশ্চ’ নিজকে অধ্যয়ন কৰি, নিজৰ ৰূপৰ অধ্যয়ন কৰাজন জ্ঞানযজ্ঞৰে কৰ্তা হয়। ইয়াত যোগৰ অংগবোৰ (যম, নিয়ম, আসন, প্ৰাণায়াম, প্ৰত্যাহাৰ, ধাৰণা, ধ্যান আৰু সমাধি) অহিংসাদি তীক্ষ্ণ ব্ৰতেৰে নিৰ্দিষ্ট কৰা হয়। বহুতো লোক স্বাধায় কৰে। কিতাপ পঢ়াতো স্বাধায়ৰে প্ৰাৰম্ভিক স্তৰ মাত্ৰ। বিশুদ্ধ স্বাধ্যায় হ’ল- নিজক অধ্যয়ন কৰা, যাৰ ফলত স্বৰূপৰ উপলব্ধি হয়, যাৰ পৰিণাম জ্ঞান অৰ্থাৎ সাক্ষাৎকাৰ।

অপানে জুহবতি প্ৰাণং প্ৰাণেহপানং তথাপৰে।

প্ৰাণাপানগতী ৰুদ্ৰাপ্ৰাণায়াম পৰায়ণাঃ ॥ ২৯ ॥

বহুতো যোগীয়ে অপান বায়ুত প্ৰাণবায়ুক হৰন কৰে, আৰু সেই ধৰণে প্ৰাণবায়ুক অপান বায়ুত হৰন কৰে। ইয়াতকৈ সুক্ষ্ম অৱস্থা প্ৰাপ্ত হলে অন্য যোগী সকলে প্ৰাণ আৰু অপান দুইটা গतिकে বোধ কৰি প্ৰাণায়াম পৰায়ণ হয়।

যাক শ্ৰীকৃষ্ণই প্ৰাণ-অপান বুলি কৈছে তাক মহাত্মা বুদ্ধই ‘অনাপান’ বুলি কৈছিল। ইয়াকে তেওঁ শ্বাস-প্ৰশ্বাস বুলিও কৈছে। প্ৰাণ সেই শ্বাস যাক আপুনি বাহিৰলৈ এৰি দিয়ে। যোগী সকলৰ অনুভূতিয়ে কয় যে আপুনি শ্বাসৰ লগে লগে বাহ্যিক বায়ুমণ্ডলৰ সংকল্পও গ্ৰহণ কৰে আৰু প্ৰশ্বাসত ঠিক এই

দৰে আন্তৰিক ভাল-বেয়া চিন্তণৰ দৌত খেলি থাকে। বাহ্যিক কোনো সংকল্পক গ্ৰহণ নকৰাই হ'ল প্ৰাণৰ হৰন তথা ভিতৰৰ সংকল্পক উঠিবলৈ নিদিয়া হ'ল অপানৰ হৰন। ভিতৰৰ কোনো সংকল্পইয়ো স্ফুৰিত নহয় আৰু বাহ্যিক দুনিয়াৰ চিন্তনো ভিতৰত কোনো ক্ষোভ উৎপন্ন কৰিব নোৱাৰে। এইদৰে প্ৰাণ আৰু অপান দুইটাৰে গতি সম হলে প্ৰাণৰ যাম অৰ্থাৎ নিৰোধ হৈ যায়, ইয়াকে প্ৰাণায়াম বুলি কোৱা হয়। এইটোৱে মনৰ বিজিতাৱস্থা। প্ৰাণৰ ৰোধ হোৱা আৰু মনৰ ৰোধ হোৱা একে কথা।

প্ৰত্যেক মহাপুৰুষে এই প্ৰকৰণকে লৈছে। বেদত ইয়াৰ উল্লেখ আছে- **‘চত্বাৰি বাক্ পাৰমিতা পদানি’**(ঋগ্বেদ ৰযৰছ্ছ্ৰ্য্যচ্ছ্ৰপ্ত অথৰ্ববেদ জ্বায়ৰজ্ব্যযচ্ছ্ৰ ইয়াকে পূজ্য মহাৰাজ জী কৈছিলে “হয়, একেই নাম চাৰি শ্ৰেণীৰে জপ কৰা হয়, বৈখৰি, মধ্যমা, পশ্চ্যন্তী আৰু পৰা। নামৰ এনে ধৰণে উচ্চাৰণ হৈ আছে যে আপুনিও শুনি আছে বাহিৰত থকা জনেও শুনি আছে। এনে ব্যক্ত নামক বৈখৰি বুলি কোৱা হয়। মধ্যমা অৰ্থাৎ মধ্যম সূৰত জপ কৰা, যাক মাত্ৰ আপুনিহে শুনিছে, ওচৰত থকা ব্যক্তিয়ে উচ্চাৰণ শুনা নাই। এই উচ্চাৰণ কণ্ঠৰ পৰা হয়। লাহে লাহে নামৰ ধ্বনী বৈ যায়, সোঁত বৈ যাব ধৰে। সাধনা আৰু সুক্ষ্ম হলে পশ্চ্যন্তী অৰ্থাৎ নাম দেখাৰ অৱস্থা প্ৰাপ্ত হয়, তেতিয়া নামৰ জপ কৰিব লগীয়া নহয়। এই নামেই শ্বাসত সোমাই পৰে। মনক দ্ৰষ্টা ৰূপত সজাই দিয়া হয়, দেখি থাকে যে এই শ্বাসে কি কয়? শ্বাস কেতিয়া হয় প্ৰশ্বাস কেতিয়া হয়? কি কয়?” মহাপুৰুষ সকলে কয় যে এই শ্বাস-প্ৰশ্বাসে নামৰ বাহিৰে আৰু একো নকয়। সাধকে নামৰ জপ নকৰে, মাত্ৰ শ্বাস-প্ৰশ্বাসৰ লগত উঠা ধ্বনীহে শুনে, শ্বাসক দেখি পায়, সেই কাৰণে ইয়াক পশ্চ্যন্তী বুলি কোৱা হয়।

পশ্চ্যন্তীত মনক দ্ৰষ্টা ৰূপে সাজি ঠিয় কৰিব লগীয়া হয়, কিন্তু সাধনা আৰু উন্নত হলে শুনিবও নালাগে। এবাৰ সূৰতত পেলাই দিলেই নিজেই শুনি পাব। জপক নজপক নিজেই জপা হয়, না নিজেই জপে, না মনক শুনাবলৈ বাধ্য কৰায়, এনেকুৱা নহয় যে জপৰ আৰম্ভই কৰাইনাই আৰু হৈ গল অজপা। যদি কোনোবাই জপৰ আৰম্ভ কৰাই নাই, তেতিয়াহলে অজপা নামৰ কোনো বস্তুৱেই তেওঁৰ ওচৰত নাই অজপাৰ অৰ্থ হ'ল, মই জপা নাই কিন্তু জপে

মোক এৰা নাই। এবাৰ মাত্ৰ সুৰতত নাম লগাই দিয়া তেতিয়া জপ বৈ থাকিব আৰু অনবৰত চলি থাকিব। এই স্বাভাৱিক জপৰ নামেই হ'ল অজপা আৰু এইটোৱে হ'ল 'পৰাবানীৰ জপ' এইটোৱে প্ৰকৃতিক তত্বৰ সিপাৰৰ পৰমাত্মাত প্ৰৱেশ কৰায়। ইয়াৰ আগত বানীত কোনো পৰিবৰ্ত্তন নথাকে। পৰমৰ দিকদৰ্শন কৰাই তাতেই বিলীন হৈ যায়, সেই কাৰণে ইয়াক পৰা বুলি কোৱা হয়।

প্ৰস্তুত শ্লোকত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই মাত্ৰ শ্বাসৰ ওপৰত ধ্যান দিবলৈ কৈছে, আগলৈ গৈ স্বয়ং ওঁ জপৰ ওপৰত জোৰ দিছে। গৌতম বুদ্ধইও অনাপন সতীত শ্বাস-প্ৰশ্বাসৰ আলোচনা কৰিছিল। মূলতঃ সেই মহাপুৰুষ সকলে কি কব বিচাৰিছে? মূলতঃ আৰম্ভনীত বৈখৰি, তাৰ পিছত মধ্যমা আৰু তাতকৈ উন্নত হ'লে জপৰ পশ্চ্যস্তী অৱস্থাত শ্বাসক ধৰিব পৰা যায়। সেই সময়ত জপ শ্বাসত মিলি যায়, আকৌ জপ কি? তেতিয়াতো মাত্ৰ শ্বাসকে দেখা যায়। সেই কাৰণ প্ৰাণ-অপান মাত্ৰ কৈ 'নাম জপা' এনেকৈ কোৱাই নাই, কাৰণে যে কবলৈ কোনো অৱশ্যকতা নাই। যদি কয় তেতিয়া ৰাস্তা হেৰাই তলৰ শ্ৰেণীলৈ অৱনমিত হব। মহাত্মা বুদ্ধ 'গুৰুদেৱ ভগৱান' তথা প্ৰত্যেক মহাপুৰুষ যি বোৰ এই ৰাস্তাযেদি পাৰ হৈ গ'ল সকলোৱে একেটা কথাকে কলে। বৈখৰি আৰু মধ্যমা নাম-জপৰ প্ৰৱেশ দ্বাৰ হয়। পশ্চ্যস্তীৰ পৰাই নামত প্ৰৱেশ হয়। পৰাত নাম ধাৰাবাহিক হৈ যায়, য'ত জপেও লগ নেৰে।

মন শ্বাসৰ লগত সংযুক্ত আছে। যেতিয়া শ্বাসত দৃষ্টি পৰিব, শ্বাসত নাম লয় হব, ভিতৰৰ পৰা কোনো সংকল্পৰ উত্থানও নহয় আৰু বাহিৰৰ বায়ু মণ্ডলৰ সংকল্পও ভিতৰলৈ প্ৰৱেশ নকৰে। এইটোৱে হ'ল মনৰ বিজয় অৱস্থা। ইয়াৰ লগতে যজ্ঞৰ পৰিণাম ওলাই আহে।

অপৰে নিয়তাহাৰাঃ প্ৰাণান্‌প্ৰাণেষু জুহবতি।

সৰ্বেহপ্যেতে যজ্ঞবিদো যজ্ঞক্ষপিতকল্পমা।। ৩০।।

দ্বিতীয়ত নিয়মিত আহাৰ কৰাজনে প্ৰাণক প্ৰাণতে হৰন কৰে। 'পূজ্য মহাৰাজজীয়ে কৈছিল "যোগীৰ আহাৰ দৃঢ়, আসন দৃঢ় আৰু নিদ্ৰা দৃঢ় হোৱা উচিত।" আহাৰ বিহাৰত নিয়ন্ত্ৰণ অতি আৱশ্যক। এনে বহুতো যোগী প্ৰাণক হৰন কৰি দিয়ে অৰ্থাৎ শ্বাস ললেও ধ্যান কেন্দ্ৰিত কৰি ৰাখে, প্ৰশ্বাসত ধ্যান

নিদিয়ে। শ্বাস আহিল তেতিয়া শুনিলে ‘ওঁ’, পূণৰ শ্বাস হ’ল শুনিলে ‘ওঁ’। এইদৰে যজ্ঞৰ দ্বাৰা পাপ নষ্ট কৰাজন এই সকলো পুৰুষেই যজ্ঞক জনা সকল। এই নিৰ্দিষ্ট বিধিৰ দ্বাৰা যৰ পৰাই যজ্ঞ কৰা হওক সকলোৱেই যজ্ঞৰ জ্ঞাত। এতিয়া যজ্ঞৰ পৰিনাম কয়-

যজ্ঞশিষ্টামৃতভূজো যান্তি বন্ধ সনাতনম্।

নায়ং লোকোহস্ত্যযজ্ঞস্য কুতোহন্যঃ কুৰুসত্তম ॥ ৩১ ॥

কুৰুশ্ৰেষ্ঠ অৰ্জুন। ‘**যজ্ঞশিষ্টামৃতভূজো**’ যজ্ঞই যাৰ সৃষ্টি কৰে, যি অৱশেষ এৰি দিয়ে, সেয়া অমৃত। যাক প্রত্যক্ষ ভাৱে জনাই হ’ল জ্ঞান। সেই জ্ঞানামৃতক ভোগ কৰাজন অৰ্থাৎ প্ৰাপ্তকৰা জন যোগীজন ‘**যান্তি বন্ধ সনাতনম্**’ শাস্বত সনাতন পৰব্ৰহ্মক প্ৰাপ্ত কৰে। যজ্ঞ এনে এটা বস্তু, যি পূৰ্ণ হলেই সনাতন পৰব্ৰহ্মত প্ৰবেশ কৰাই দিয়ে। যজ্ঞ নকৰিলে কি আপত্তি আছে? শ্ৰীকৃষ্ণই কয় যে যজ্ঞৰহিত পুৰুষক পূণৰ এই মনুষ্যলোকত অৰ্থাৎ মানৱশৰীৰ পৰ্য্যন্ত সুলভ নহয়, আকৌ অন্য লোক কেনেকৈ সুখদায়ী হব? তেওঁলোকৰ কাৰণে নিম্ন যোনী বিলাক সুৰক্ষিত হৈ থাকে, তাৰ বাদে একো নাপায়। সেয়ে যজ্ঞ কৰাটো মনুষ্য মাত্ৰৰ কাৰণে নিতান্তই আৱশ্যক।

এবং বহুৱিধা যজ্ঞা বিততা স্নাগো মুখে।

কৰ্মজাষিদ্ধি তান্‌সৰ্বানৱেং জ্ঞাত্বা বিমোক্ষ্যসে ॥ ৩২ ॥

এই ধৰণে উপৰোক্ত বহু প্ৰকাৰৰ যজ্ঞ বেদৰ বাণীত উল্লেখ আছে, ব্ৰহ্মৰ মুখেৰে বিস্তাৰিত হৈ আছে। প্ৰাপ্তীৰ পশ্চাত মহাপুৰুষ সকলৰ শৰীৰক পৰব্ৰহ্ম ধাৰণ কৰি লয়। ব্ৰহ্মৰ পৰা অভিন্ন থকা সেই মহাপুৰুষ সকলৰ বুদ্ধি মাত্ৰ যন্ত্ৰৰ দৰে হৈ থাকে। তেওঁৰ দ্বাৰা ব্ৰহ্মাই কয়। তেওঁলোকৰ বাণীত এই যজ্ঞবোৰৰ বিস্তাৰ কৰা হৈছে। এই সকলো যজ্ঞকেই তুমি কৰ্মৰ পৰা উৎপন্ন হোৱা বুলি জানা। ইয়াকেই আগতো কৈছিলো, তেওঁলোক এই প্ৰকাৰে ক্ৰিয়াত্মক ভাৱে চলিছে বুলি জানিলে (এতিয়া কোৱা হৈছিল যে যজ্ঞ কৰি যাৰ পাপ নষ্ট হৈ গৈছে, তেওঁৰে যজ্ঞৰ যথার্থ জ্ঞাতা) অৰ্জুন। তুমি সংসাৰ বন্ধনৰ পৰা মুক্ত হৈ যাবা। ইয়াত যোগেশ্বৰে স্পষ্ট কৰি দিলে কৰ্ম, যাৰদ্বাৰা উপৰোক্ত যজ্ঞ পূৰ্ণ হয়।

এতিয়া যদি দৈবী সম্পদৰ আৰ্জন, সদৃগুৰুৰ ধ্যান, ইন্দ্ৰিয়ৰ সংযম, শ্বাসক প্ৰশ্বাসত হৰন, প্ৰশ্বাসক শ্বাসত হৰন প্ৰাণ-অপানৰ গতিৰ নিৰোধ খেতি কৰিলেহে হয়, বেপাৰ-চাকৰী অথবা ৰাজনীতি কৰিলে যদি হয় তেতিয়া হলে আপুনি কৰক। যজ্ঞ এনেকুৱা এটা ক্ৰিয়া যাৰ পূৰ্ণ হলেই তৎক্ষণাৎ পৰব্ৰহ্মত প্ৰৱেশ কৰাই দিয়ে। বাহ্যিক কোনো কাৰ্য্যৰ দ্বাৰা আপুনি যদি তৎক্ষণাৎ ব্ৰহ্মত প্ৰৱেশ কৰিব পাৰে তেতিয়া হলে কৰক।

মূলতঃ এই সকলোখিনি যজ্ঞই চিন্তনৰ অন্তঃক্ৰিয়া হয়, **আৰাধনাৰে চিত্ৰণ**, যাৰ দ্বাৰা আৰাধ্য দেৱ বিদিত হৈ যায়। যজ্ঞ সেই আৰাধ্যৰ ওচৰলৈ নিয়া নিৰ্ধাৰিত প্ৰক্ৰিয়া বিশেষ। এই যজ্ঞ শ্বাস-প্ৰশ্বাস, প্ৰাণায়াম ইত্যাদি যি ক্ৰিয়াৰ দ্বাৰা সম্পন্ন হয়, সেই কাৰ্য্য প্ৰণালীৰ নামেই কৰ্ম। কৰ্মৰ শুদ্ধ অৰ্থ হ'ল 'আৰাধনা', 'চিন্তন'।

প্ৰায়ে লোকে কয় যে সংসাৰত যি কোনো কাম কৰা হয়, সেয়াই হ'ল 'কৰ্ম'। কামনা ৰহিত হৈ কিবা কৰাই হ'ল নিষ্কাম কৰ্মযোগ। কোনোবাই কয় যে অধিক লাভৰ বাবে বিদেশী বস্ত্ৰ বেচে তেতিয়া আপুনি হ'ল সকামী। দেশ-সেৱাৰ কাৰণে স্বদেশী বেচিলে, তেতিয়া হৈ গ'ল নিষ্কাম কৰ্মযোগ। নিষ্ঠা সহকাৰে চাকৰী কৰিলে, লাভ-লোকচানৰ চিন্তা নকৰাকৈ বেপাৰ কৰিলে তেতিয়া হৈ গ'ল নিষ্কাম কৰ্মযোগ। জয়-পৰাজয়ৰ পৰা মুক্তহৈ যুদ্ধ কৰিলে, নিৰ্বাচন খেলিলে, হৈ গ'ল নিষ্কৰ্মী? মৰিলেতো মুক্তি হৈ যাব। মূলত কিন্তু এনেকুৱা একো নহয়, যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই স্পষ্ট ভাষাত কৈ দিছে যে এই নিষ্কাম কৰ্মত নিৰ্দ্ধাৰিত ক্ৰিয়া একেটাই। অৰ্জুন। তুমি নিৰ্দ্ধাৰিত কৰ্মকে কৰা। যজ্ঞৰ প্ৰক্ৰিয়াই হ'ল কৰ্ম। যজ্ঞ কি? শ্বাস-প্ৰশ্বাসৰ হৰন ইন্দ্ৰিয়বোৰৰ সংযম, যজ্ঞস্বৰূপ মহাপুৰুষৰ ধ্যান, প্ৰাণায়াম, প্ৰাণৰ নিৰোধ। এইটোৱে মনৰ বিজিতাৱস্থা। মনৰ প্ৰসাৰেই জগত। শ্ৰীকৃষ্ণৰ শব্দতেই সেই পুৰুষ সকলৰ দ্বাৰা চৰাচৰ জগত ইয়াতেই জিকি লৈছে, যাৰ মন সমত্বত স্থিত আছে। মনৰ সমত্ব আৰু জগতক জিকাত কি সম্বন্ধ আছে বাৰু? যদি জগতকেই জিকা হ'ল তেতিয়া ৰ'ল ক'ত? তেতিয়া কয় যে সেই ব্ৰহ্ম নিৰ্দোষ আৰু সম আছে, এই ফালে মনও নিৰ্দোষ আৰু সমত্ব স্থিতিপ্ৰাপ্ত হৈ গ'ল, সেয়ে সি ব্ৰহ্মত স্থিত হৈ গ'ল।

সাৰাংশত মনৰ প্ৰসাৰণেই জগত। চৰাচৰ জগত হৰন সামগ্ৰীৰ ৰূপত আছে। মনৰ সম্পূৰ্ণ নিৰোধ হলেই জগতৰ নিৰোধ হৈ যায়। মনৰ নিৰোধৰ লগতে যজ্ঞৰ পৰিণামো ওলাই যায়। যজ্ঞই যাৰ সৃষ্টি কৰে, সেই জ্ঞানামৃত পান কৰোতা জন পুৰুষ সনাতন ব্ৰহ্মত প্ৰবিষ্ট হৈ যায়। এই সকলো যজ্ঞ ব্ৰহ্মস্থিত মহাপুৰুষসকলৰ বাণীৰ দ্বাৰা কোৱা হৈছে। এনে নহয় যে বেলেগে বেলেগে সম্প্ৰদায়ৰ সাধকে বেলেগে বেলেগে যজ্ঞ কৰে আনকি এই সকলো যজ্ঞ একেই সাধকৰ উচ্চ-নীচ অৱস্থাহে। এই যজ্ঞ যাৰ দ্বাৰা হবলৈ ধৰিলে, তাৰ ক্ৰিয়াৰ নামেই কৰ্ম। সম্পূৰ্ণ গীতাত এনেকুৱা এটাও শ্লোক নাই যে যি সাংসাৰিক কাৰ্য্য বেপাৰক সমৰ্থন কৰিছে।

প্ৰায় যজ্ঞৰ নাম ললে মানুহ বিলাকে বাহিৰতে যজ্ঞ-বেদী এটা বনাই, তিল, যৱ ঘি ইত্যাদি লৈ স্বাহা বুলি হৰন আৰম্ভ কৰি দিয়ে। এইটো এটা ফাকিবাজি। দ্ৰব্য-যজ্ঞ বেলেগে আছে, যাক শ্ৰীকৃষ্ণই কেবাবাৰো কৈছে, কিন্তু পশু-বলি, বস্তু-দাহ ইত্যাদিৰ লগত ইয়াৰ কোনো সম্বন্ধ নাই।

শ্ৰেয়ান্দ্ৰব্যময়াদ্যজ্ঞাজ্ঞানযজ্ঞঃ পৰন্তপ।

সৰ্বং কৰ্মাখিলং পাৰ্থ জ্ঞানে পৰিসমাপ্যতে ॥ ৩৩ ॥

অজুন! সাংসাৰিক দ্ৰব্যৰ দ্বাৰা সিদ্ধহোৱা যজ্ঞৰ অপেক্ষা জ্ঞান-যজ্ঞ(যাৰ পৰিণাম জ্ঞান (সাক্ষাৎকাৰ) যজ্ঞই যাৰ সৃষ্টি কৰে, সেই অমৃততত্বক জনাৰ নামেই হ'ল জ্ঞান এনে যজ্ঞ) শ্ৰেয়স্কৰ হয়, পৰম কল্যাণকাৰী হয়। হে পাৰ্থ! সম্পূৰ্ণ কৰ্ম জ্ঞানতে শেষ হৈ যায়। -উত্তম প্ৰকাৰে সমাহিত হৈ যোৱা। জ্ঞান যজ্ঞৰেই অন্তিম কাল। তাৰ পিছত কৰ্ম কৰিলেও কোনো লাভ নাই আৰু কৰ্ম নকৰিলেও সেই মহাপুৰুষৰ কোনো ক্ষতি নহয়।

এই দৰে ভৌতিক দ্ৰব্যৰে হোৱা যজ্ঞও যজ্ঞই হয়, কিন্তু সেই যজ্ঞৰ তুলনাত, যাৰ পৰিণাম সাক্ষাৎকাৰ সেই জ্ঞান-যজ্ঞৰ অপেক্ষা অত্যন্তই কম। আপুনি কোটিৰ হৰন কৰিব পাৰে, শ শ যজ্ঞ বেদী বনাই লৈ, সৎপথত বহুতো দ্ৰব্য লগাব পাৰে, সাধু-সন্ত মহাপুৰুষৰ সেৱাত দ্ৰব্য লগাব পাৰে, কিন্তু এই জ্ঞান-যজ্ঞৰ অপেক্ষা অত্যন্তই কম। মূলতঃ যজ্ঞ হ'ল শ্বাস-প্ৰশ্বাস, ইন্দ্ৰিয়ক সংযম কৰা, মনৰ নিৰোধ কৰা, যেনেদৰে শ্ৰীকৃষ্ণই অলপতে কৈছিল। এই

যজ্ঞৰ প্ৰাপ্ত কত হব? তাৰ বিধি কৰ পৰা শিকিব পাৰি? মন্দিৰ ,মহুজিদ
গিৰ্জাঘৰত পাবনে বা কিতাপত পাব? তীৰ্থ যাত্ৰাত পাবনে বা গা-ধুলে পাব?
শ্ৰীকৃষ্ণই কয়- নহয়, তাৰ এটা সূত্ৰ আছে সেইটো হল, তত্বস্থিত মহাপুৰুষ,
যেনেকৈ -

তদ্বিদ্ধি প্ৰণিপাতেন পৰিপ্ৰশ্নেন সেরয়া ।

উপদেক্ষ্যন্তি তে জ্ঞানং জ্ঞানিনস্তত্বদৰ্শিনঃ ॥ ৩৪ ॥

সেই কাৰণে অৰ্জুন ! তুমি তত্বদৰ্শী মহাপুৰুষৰ ওচৰলৈ গৈ উত্তম
প্ৰকাৰে প্ৰণাম কৰি (দণ্ডবৃত্ত প্ৰণাম কৰি, অহংকাৰ ত্যাগকৰি, শৰণ লৈ) উত্তম
প্ৰকাৰে সেৱা কৰি, নিষ্কপট ভাৱেৰে প্ৰশ্ন কৰি তুমি জ্ঞানক জানি লোৱা । তেওঁ
তত্বজনা জ্ঞানীজনে তোমাৰ বাবে সেই জ্ঞানৰ উপদেশ কৰিব, সাধনা পথত
চলাব । সমৰ্পিত ভাৱেৰে সেৱা কৰিলেহে এই জ্ঞান শিকাৰ ক্ষমতা পাব ।
তত্বদৰ্শী মহাপুৰুষ পৰমতত্ব পৰমাত্মাৰ প্ৰত্যক্ষ দিক্‌দৰ্শন লাভ কৰোঁতা ।
তেওঁ যজ্ঞৰ বিধি বিশেষৰ জ্ঞাতা আৰু তেৱে আপোনাকো শিকাব । যদি অন্য
যজ্ঞ হ'ল হেঁ তেন, তেতিয়া হলে জ্ঞানীতত্বদৰ্শীৰ কি আৱশ্যকতা আছিল ?

স্বয়ং ভগৱানৰ সন্মুখতেই তো অৰ্জুন ঠিয় হৈ আছিল । ভগৱানে
তেওঁক তত্বদৰ্শীৰ ওচৰলৈ কিয় পঠিয়াইছে? বস্তুতঃ শ্ৰীকৃষ্ণ এজন যোগী
আছিল । তেওঁৰ ভাৱ এইটোৱেই যে আজিতো অনুৰাগী অৰ্জুন মোৰ সন্মুখত
উপস্থিত আছে , ভৱিষ্যতত অনুৰাগী সকলৰ যাতে ভুল হৈ নাযাওক যে
শ্ৰীকৃষ্ণতো গলেই, এতিয়া কাৰ শৰণলৈ যোৱা হয়? সেই কাৰণে তেওঁ স্পষ্ট
কৰি দিছে যে তত্বদৰ্শীৰ ওচৰলৈ যোৱা । সেই জ্ঞানীজনে তোমাক উপদেশ
দিব । আৰু -

যজ্ঞজ্ঞাত্বা ন পুনৰ্মোহমেৱং যাস্যসি পাণ্ডৱ ।

যেন ভূতান্যশেষেণ দক্ষ্যস্যাশ্চন্যথো ময়ি ॥ ৩৫ ॥

সেই জ্ঞানক তেওঁৰ পৰা বুজিলে তুমি পূণৰ কেতিয়াও মোহ প্ৰাপ্ত
নহবা । তেওঁ দিয়া জ্ঞানৰ দ্বাৰাই তেওঁৰ লগতে চলি তুমি নিজৰ আত্মাৰ অন্তৰ্গত
সকলো ভূতক দেখিবলৈ পাবা অৰ্থাৎ সকলো প্ৰাণীতেই এই আত্মাৰ প্ৰসাৰ

দেখিবা। যেতিয়া সৰ্ব্বত্ৰত একেই আত্মাৰ প্ৰসাৰ দেখাৰ ক্ষমতা প্ৰাপ্ত কৰিবা, তাৰ পিছত তুমি মোতেই প্ৰৱেশ কৰিবা। সেয়ে সেই পৰমাত্মাক পোৱাৰ সাধনা **‘তত্ত্বস্থিত মহাপুৰুষৰ’** দ্বাৰাই হয়। জ্ঞানৰ সম্বন্ধত, ধৰ্ম আৰু শাস্ত্ৰত সত্যৰ সম্বন্ধত শ্ৰীকৃষ্ণৰ দৰে কোনো তত্ত্বদৰ্শীক সোধাৰ বিধান আছে।

অপি চেদসি পাপেভ্যঃ সৰ্বেভ্যঃ পাপকৃত্তমঃ।

সৰ্বং জ্ঞানপ্লৱেনৈৰ বৃজিনং সন্তুৰিষ্যসি ॥ ৩৬ ॥

যদি তুমি সকলো পাপীতকৈ অধিক পাপী, তথাপিও জ্ঞানৰূপী নৌকাৰ দ্বাৰা সকলো পাপৰ পৰা নিঃসন্দেহে উত্তম প্ৰকাৰে পাৰ হৈ যাবা। ইয়াৰ অৰ্থ আপুনি এনেকৈ নলব যে বহুত পাপ কৰিও কেতিয়াবা পাৰ হৈ যাম। শ্ৰীকৃষ্ণই এইটো বুজাব বিচাৰিছে যে কৰবাত আপুনি ভ্ৰমত নপৰক যে ‘মইতো মহাপাপী, মই পাৰ নহওৱেই’ - এনে ভাৱ যাতে নাহে সেই কাৰণে শ্ৰীকৃষ্ণই উৎসাহ আৰু আশ্বাসন দি কৈছে সকলো পাপীতকৈও অধিক পাপ কৰা জন হলেও তত্ত্বদৰ্শীৰ দ্বাৰা প্ৰাপ্ত জ্ঞানৰূপী নৌকাৰ দ্বাৰা তুমি নিঃসন্দেহে সম্পূৰ্ণ পাপক উত্তম প্ৰকাৰে পাৰ কৰিব পাৰিবা। কেনে প্ৰকাৰে -

যথৈধাৎসি সমিদ্বোহগ্নিৰ্ভস্মসাৎকুৰুতেহজুৰ্ন।

জ্ঞানাগ্নিঃ সৰ্বকৰ্মাণি ভস্মসাৎকুৰুতে তথা ॥ ৩৭ ॥

অজুৰ্ন! যিদৰে জ্বলিথকা জুইয়ে ইন্ধনক ভস্ম কৰি দিয়ে, ঠিক সেইদৰে জ্ঞানৰূপী অগ্নিয়ে সম্পূৰ্ণ কৰ্মক ভস্ম কৰি দিয়ে। এইটো জ্ঞানৰ প্ৰবেশিকা নহয়, যৰ পৰা যজ্ঞত প্ৰৱেশ কৰিব পাৰি বৰঞ্চ এই জ্ঞান অৰ্থাৎ সাক্ষাৎকাৰৰ অন্তিম চিত্ৰণ, যত প্ৰথমে বিজাতীয় কৰ্মবোৰ ভস্ম হৈ যায় আৰু পুণৰ প্ৰাপ্তীৰ লগে লগে চিন্তন কৰ্মও তাতে বিলয় হৈ যায়। যাক পাবলগীয়া আছিলে, পোৱাজনে জ্ঞানীয়ে সম্পূৰ্ণ শুভাশুভ কৰ্মৰ অন্ত কৰি লয়। সেই সাক্ষাৎকাৰ হব কোন ঠাইত? বাহিৰত হবনে ভিতৰত? ইয়াত কৈছে -

ন হি জ্ঞানেন সদৃশং পবিত্ৰমিহ ৰিদ্যতে।

তৎস্বয়ং যোগসংসিদ্ধঃ কালেনাত্মনি ৰিন্দতি ॥ ৩৮ ॥

এই সংসারত জ্ঞানৰ সমান প্ৰিয়ত্ব কৰিব পৰা বস্তু নিঃসন্দেহে একোৱেই নাই। সেই জ্ঞান (সাক্ষাৎকাৰ) তুমি স্বয়ং (অন্য নহয়) যোগৰ পৰিপক্ব অৱস্থাত (আৰম্ভণীত নহয়) নিজৰ আত্মাৰ তন্তুৰ্গত হৃদয়-দেশতে অনুভৱ কৰিবা, বাহিৰত নহয়। সেই জ্ঞানৰ দেশতে অনুভৱ কৰিবা, বাহিৰত নহয়। সেই জ্ঞানৰ কাৰণে কি যোগ্যতা লাগিব? যোগেশ্বৰে কৈছে -

শ্ৰদ্ধাৰাঞ্জলভতে জ্ঞানং তৎপৰঃ সংযতেन्द्रিয়ঃ।

জ্ঞানং লব্ধ্বা পৰাং শান্তিমচিৰেণাধিগচ্ছতি ॥ ৩৯ ॥

শ্ৰদ্ধাৱান, জিজ্ঞাসু তথা সংযত ইन्द्रিয় পুৰুষেহে জ্ঞান প্ৰাপ্ত কৰিব পাৰিব। ভাৱ সহিত জিজ্ঞাসু নাই, তেতিয়া তত্ত্বদৰ্শীৰ শৰণত গলেও জ্ঞান প্ৰাপ্ত নহয়। শ্ৰদ্ধা মাত্ৰ হলে নহব। শ্ৰদ্ধাৱান কম প্ৰয়ত্নশীলও হব পাৰে। সেয়ে মহাপুৰুষৰ দ্বাৰা নিৰ্দিষ্ট পথত তৎপৰতাৰে আগবাঢ়ি যোৱাৰ-একান্ত আৱশ্যক হয়। তাৰ লগতে সম্পূৰ্ণ ইन्द्रিয় সমূহৰ সংযম অনিবাৰ্য্য। যি জন কামনাৰ পৰা বিৰত নাথাকে, তেওঁৰ কাৰণে সাক্ষাৎকাৰ(জ্ঞানপ্ৰাপ্তী) কঠিন। মাত্ৰ শ্ৰদ্ধাৱান, আচৰণৰত, সংযত ইन्द्रিয় পুৰুষেই জ্ঞান প্ৰাপ্ত কৰিব পাৰে। জ্ঞান প্ৰাপ্ত কৰি তেওঁ তৎক্ষণাৎ পৰম শান্তি প্ৰাপ্ত কৰিব পাৰে, যাৰ পাছত পাবলৈ আৰু একো বাকী নাথাকে, এইয়ে হ'ল অস্তিম শান্তি। পুনৰ তেওঁ কেতিয়াও অশান্ত নহব। আৰু যত শ্ৰদ্ধা নাই -

অজ্ঞশ্চাশ্ৰদ্ধখানশ্চ সংশয়াত্মা বিনশ্যতি।

নায়ং লোকোহস্তি ন পৰো ন সুখং সংশয়াত্মনঃ ॥ ৪০ ॥

অজ্ঞানী যি যজ্ঞৰ বিধি বিশেষৰ পৰা অনভিজ্ঞ আৰু শ্ৰদ্ধাহীন তথা সংশয়যুক্ত পুৰুষ এই পৰমার্থ পথৰ পৰা ভ্ৰষ্ট হৈ যায়, তাৰ ভিতৰতো সংশয় মুক্ত পুৰুষেতো সুখো নাপায়, ন পুনৰ মনুষ্য শৰীৰ ন পৰমাত্মাই পায়। সেয়ে তত্ত্বদৰ্শী মহাপুৰুষৰ ওচৰলৈ গৈ এই পথৰ সংশয়ৰ নিবাৰণ কৰিব লাগে নহলে সেই বস্তুৰ পৰিচয় কেতিয়াও পোৱা নাযায়। তেতিয়া হলে কোনে পায়?

যোগসন্যস্তকৰ্মাণং জ্ঞান সপ্ৰিচ্ছন্নসংশয়ম্।

আত্মৱন্তং ন কৰ্মাণি নিৰঞ্জন্তি ধনুঞ্জয় ॥ ৪১ ॥

যাৰ কৰ্ম যোগ দ্বাৰা ভগৱানত সমাহিত হৈ গৈছে যাৰ সম্পূৰ্ণ সংসয় পৰমাত্মাৰ প্ৰত্যক্ষ সাক্ষাৎ কাৰৰ দ্বাৰা নষ্ট হৈ গৈছে, পৰমাত্মাৰ লগত সংযুক্ত এনে পুৰুষক কৰ্মই নেবান্ধে। যোগৰ দ্বাৰাই কৰ্মৰ শমন হৈ গৈছে। জ্ঞানেৰে শংসয় নষ্ট হৈ গৈছে। সেই কাৰণে শ্ৰীকৃষ্ণই কয়-

তস্মাদজ্ঞানসম্ভূতং হৃৎস্থং জ্ঞানাসিনাত্মনঃ।

ছিত্ৰৈনং সংশয়ং যোগমাতিষ্ঠোত্তিষ্ঠ ভাৰত ॥ ৪২ ॥

সেই কাৰণে ভৰতবংশী অৰ্জুন! তুমি যোগত স্থিত হোৱা আৰু অজ্ঞানৰ পৰা উৎপন্ন হোৱা হৃদয়ত থকা নিজৰ সংশয়ক জ্ঞানৰূপী তৰোৱালেৰে কাটা। যুদ্ধৰ কাৰণে ঠিয় হোৱা। যেতিয়া সাক্ষাৎকাৰৰ বাধক সংশয় শত্ৰু মনৰ ভিতৰত থাকে, তেতিয়া বাহিৰত কোনে কাৰ লগত যুদ্ধ কৰিব? বস্তুত : যেতিয়া আপুনি চিন্তন পথত অগ্ৰসৰ হয়, তেতিয়া সংশয়ৰ পৰা উৎপন্ন বাহ্যিক প্ৰবৃত্তিবোৰ বাধাৰ ৰূপত ঠিয় হোৱাটো স্বাভাৱিক। ইহঁতে শত্ৰুৰ ৰূপত ভয়ংকৰ আক্ৰমণ চলায়। সংশয়ৰ লগতে যজ্ঞৰ বিধি বিশেষৰ পৰা আচৰণ কৰি থাকিলেও এই বিকাৰবোৰৰ পৰা পাব পাবলৈ যুদ্ধ কৰিব লাগে, যাৰ পৰিণাম পৰম শান্তি। এয়েই অস্তিম বিজয়, যাৰ পিছত পৰাজয় নাই।

নিষ্কৰ্ষ

এই আধ্যায়ৰ অৰম্ভনীতে যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছিল যে এই যোগৰ আৰম্ভনীত মই সূৰ্য্যৰ প্ৰতি কৈছিলো। সূৰ্য্যই মনুক আৰু মনুৱে ইক্ষাকুৰ প্ৰতি কৈছিল আৰু ৰাজৰ্ষি সকলে জানিলে। মই অথবা অব্যক্ত স্থিতিৱালাই কলোঁ। মহাপুৰুষো অব্যক্ত স্থিতিথকা। শৰীৰতো তেওঁলোকৰ থকা ঘৰহে। এনে মহাপুৰুষৰ বাণীত পৰমাত্মাই প্ৰবাহিত হৈ থাকে। এনে কোনো মহাপুৰুষৰ যোগ সূৰ্য্যৰ দ্বাৰা সঞ্চাৰিত হয়। সেই পৰম প্ৰকাশ ৰূপৰ প্ৰচাৰ সুৰাৰ অন্তৰালতে থাকে, সেই কাৰণে সূৰ্য্যৰ প্ৰতি কলে। শ্বাসত সঞ্চাৰিত হৈ তেওঁ সংস্কাৰ ৰূপত আহিলে। সুৰতত সঞ্চিৎ হৈ থাকিলে সময় হলে সেয়েই মনত সংকল্প হৈ আহে। তাৰ মহত্ব বুজিপালে মনত সেই বাক্যৰ প্ৰতি জাগৃত হয় আৰু যোগে কাৰ্য্যৰূপ লয়। ক্ৰমশঃ উন্নতি কৰি এই যোগ ঋদ্ধি-সিদ্ধীৰ

ৰাজৰ্ষিত্ব শ্ৰেণীলৈকে পাবৰ সময়ত নষ্ট হোৱাৰ স্থিতি প্ৰাপ্ত হয়, কিন্তু যি প্ৰিয় ভক্ত, অনন্য সখা, তেওঁক মহাপুৰুষেই চলাই লৈ যায়। অৰ্জুনে প্ৰশ্ন কৰিছিলে আপোনাৰ জন্মতো এতিয়া হৈছে। যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছিলে যে অব্যক্ত, অবিনাশী, অজন্মা আৰু সম্পূৰ্ণ ভূত জগতত প্ৰবাহিত হৈ থাকিলেও আত্ম-মায়া, যোগ-প্ৰক্ৰিয়াৰ দ্বাৰা নিজৰ ত্ৰিগুণময়ী প্ৰকৃতিৰ বশত মই প্ৰকট হওঁ। প্ৰকট হৈ কৰে কি? সাধ্য বস্ত্ৰৰ পৰিত্ৰাণ দিবলৈ, তথা যাৰ দ্বাৰা দুষিত উৎপন্ন হয় তাক বিনাশ কৰিবলৈ, পৰমধৰ্ম পৰমাত্মাক স্থিৰ কৰিবলৈ মই আৰম্ভনীৰ পৰা শেষলৈকে নিজকে সৃষ্টি কৰোঁ। মোৰ সেই জন্ম আৰু কৰ্ম দিব্য হয়। তাক মাত্ৰ তত্বদৰ্শীয়েহে জানে। ভগৱানৰ অবিৰ্ভাৱতো কলিয়ুগৰ অৱস্থাৰ পৰাই হৈ যায়, যদি প্ৰকৃত মনোযোগেৰে লাগিছে; কিন্তু প্ৰাথমিক অৱস্থাৰ সাধকে সেইটো বুজি নেপাই যে এইটো ভগৱানে কৈ আছে নে এনে সংকেত হৈ আছে। আকাশৰ পৰানো কোনে মাতে? ‘মহাৰাজজীয়ে’ কৈছিলে যে যেতিয়া ভগৱানে কৃপা কৰে; আত্মাৰ সাৰথী হৈ থাকে তেতিয়া খন্দ্ৰৰ পৰা, গছৰ পৰা, পাতৰ পৰা, শূন্যৰ পৰা, সকলো স্থানৰ পৰাই কথা পাতে আৰু পৰিচালনা কৰে, উত্থান হৈ হৈ যেতিয়া পৰমতত্ত্ব পৰমাত্মা বিদিত হৈ যায়, তেতিয়া স্পৰ্শৰ লগতে তেওঁক স্পষ্টকৈ বুজা যায়। সেই কাৰণে অৰ্জুন ! মোৰ সেই স্বৰূপক তত্বদৰ্শী সকলে দেখা পায় আৰু মোক বুজি, পায় তেতিয়াই তেওঁলোক মোতেই প্ৰবিষ্ট হৈ যায় যৰ পৰা পুনৰ অহা যোৱা কৰিব নালাগে।

এই ধৰণে তেওঁ ভগৱানৰ আবিৰ্ভাৱৰ বিধি কলে যে তেওঁ কোনো অনুৰাগীৰ হৃদয়তহে আবিৰ্ভাৱ হয়, বাহিৰত কেতিয়াও নহয়। শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছে যে মোক কৰ্মই বান্ধি নাৰাখে আৰু এই স্তৰৰ বিষয়ে যিয়ে জানে তেওঁকো কৰ্মই নাৰাখে। এইটো বুজি পায়ই মুমুক্শু পুৰুষ সকলে কৰ্মৰ আৰম্ভ কৰিছিল যে এই স্তৰ বুজি পালেতো শ্ৰীকৃষ্ণ নিচিনা, তেনেকৈ সেই স্তৰক জনা মহাপুৰুষ আৰু জানি ললে মুমুক্শু অৰ্জুনৰ নিচিনা। এই উপলব্ধি নিশ্চিত আছে, যদি যজ্ঞ কৰা হয়। যজ্ঞৰ স্বৰূপ কলে, যজ্ঞৰ পৰিণাম পৰম তত্ত্ব, পৰম শাস্তি বুলি কলে। সেই জ্ঞান পালে ক’ত? তাৰ কাৰণে কোনো তত্বদৰ্শী ওচৰলৈ যোৱা আৰু তেওঁৰ বিধি জানি কৰি লোৱা, যাৰ ফলত সেই মহাপুৰুষ অনুকূল হৈ যায়।

যোগেশ্বৰে স্পষ্ট কৰি দিছে যে সেই জ্ঞান তুমি নিজে আচৰণ কৰি

পাবা, অন্যৰ আচৰণত তুমি নাপাবা। তাকো যোগৰ সিদ্ধিৰ কালতহে প্ৰাপ্ত হব, আৰম্ভনীত নহয়। সেই জ্ঞান (সাক্ষাৎকাৰ) হৃদয় দেশতহে হয়, বাহিৰত নহয়। শ্ৰদ্ধাৱান, কৰ্মতৎপৰ, সংযত ইন্দ্ৰিয় আৰু সংশয়ৰহিত পুৰুষ হে ইয়াৰ পাবৰ যোগ্য। সেয়ে হৃদয়ত স্থিত নিজৰ সংশয়ক বৈৰাগ্যৰ তৰোৱালেৰে কাটা। এইটো হৃদয়-দেশৰ যুদ্ধ। বাহ্যিক যুদ্ধৰ লগত গীতাত উল্লেখিত যুদ্ধৰ কোনো প্ৰয়োজন নাই।

এই আধ্যাত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই মুখ্য ৰূপত যজ্ঞৰ স্বৰূপ স্পষ্ট কৰিলে যে যজ্ঞ যাৰ দ্বাৰা পূৰা হয়, সেই কৰাৰ (কাৰ্য্য প্ৰণালী)ৰ নামেই কৰ্ম। কৰ্মক উওম প্ৰকাৰে এই আধ্যাত স্পষ্ট কৰি দিছে, সেয়ে

ওঁ তৎসৎ ইতি শ্ৰীমদ্ভগৱত গীতা সুনিষত্‌সু ব্ৰহ্মবিদ্যায়াং যোগশাস্ত্ৰে শ্ৰীকৃষ্ণৰ্জুন সংবাদে “যজ্ঞকৰ্ম স্পষ্টীকৰণ” নামচতুৰ্থোহধ্যায়ঃ। ছু ॥

এই ধৰনে শ্ৰীমদ্ভগৱত গীতাৰূপী উপনিষদ তথা ব্ৰহ্মবিদ্যা তথা যোগশাস্ত্ৰ বিষয়ক শ্ৰীকৃষ্ণ আৰু অৰ্জুনৰ সংবাদত ‘যজ্ঞকৰ্ম-স্পষ্টীকৰণ’ নামৰ চতুৰ্থ আধ্যায় পূৰ্ণ হ’ল।

ইতি শ্ৰীমৎ পৰমহংস পৰমানন্দস্য শিষ্য স্বামী অড়গড়ানন্দ কুতে শ্ৰীমত্‌ভগৱত্‌ গীতায়ঃ ‘যথার্থ-গীতা’ ভাষ্য ‘যজ্ঞকৰ্ম-স্পষ্টীকৰণ’ নামৰ চতুৰ্থ আধ্যায় ॥ ৪ ॥

॥ হৰি ওঁ তৎসৎ ॥

‘ওঁ’

শ্ৰী পৰমাত্মনে নমঃ

অথ পঞ্চমোহধ্যায়ঃ

তিনি আধ্যায়ত অৰ্জুনে প্ৰশ্ন ৰাখিছিল যে - ভগৱান। যেতিয়া জ্ঞানযোগকেই আপুনি শ্ৰেষ্ঠ বুলি মান্যতা দিছে তেতিয়া আপুনি মোক এই ভয়ংকৰ কৰ্মত কিয় লগাইছে? অৰ্জুনক নিষ্কাম কৰ্মযোগৰ অপেক্ষা জ্ঞানযোগেই কিছু সৰল যেন লাগিছে, কিয়নো জ্ঞান-যোগত হাৰিলেও দেৱত্ব আৰু বিজয়তো মহামহিম স্থিতি দুইফালেই লাভেই লাভ দেখিছে। কিন্তু এতিয়ালৈকে অৰ্জুনে ভালদৰে বুজি পাইছিল যে দুয়োটা মার্গতে কৰ্ম কৰিবই লাগিব (যোগেশ্বৰে তেওঁক সংশয় ৰহিত হৈ তত্বদৰ্শী মহাপুৰুষৰ শৰণ লবলৈ প্ৰেৰিত কৰিছে, কিয়নো বুজিবৰ বাবে সেইটোৱেই স্থান)। অতঃ দুটা মার্গৰ এটা বাছি লোৱাৰ পূৰ্বে তেওঁ নিবেদন কৰিলে-

অৰ্জুন উবাচ

সন্ন্যাসং কৰ্মণাং কৃষ্ণং পুনৰ্যোগং চ শংসসি।

যচ্ছেয় এতয়োৰেকং তন্মে ব্ৰূহি সুনিশ্চিতম্ ॥ ১ ॥

হে শ্ৰীকৃষ্ণ ! আপুনি কেতিয়াবা সন্ন্যাস-মাধ্যমেৰে কৰা কৰ্ম আৰু কেতিয়াবা নিষ্কাম দৃষ্টিৰে কৰা কৰ্মৰ প্ৰশংসা কৰে। এই দুইটাৰ ভিতৰত এটা, যি উওম প্ৰকাৰে আপুনি নিশ্চয় কৰি লৈছে, যি পৰম কল্যাণকাৰী সেইটো মোৰ কাৰণে কওক। কবলৈ আপুনি দুটা মার্গৰ কথা কৈছে, তেতিয়া হ'লে সুবিধাজনক মার্গ নিশ্চয় সুধিব। যদি নোসোধে তেতিয়াহলে আপুনি জানিব বিচৰা নাই। এই ক্ষেত্ৰতশ্ৰীকৃষ্ণই কয়-

শ্ৰীভগবানুবাচ

সন্ন্যাসঃ কৰ্মযোগশ্চ নিঃশ্ৰেয়সকৰাৰুভৌ।

তয়োস্তু কৰ্মসন্ন্যাসাৎকৰ্মযোগো ৰিশিষ্যতে ॥ ২ ॥

অৰ্জুন ! সন্ন্যাস-মাধ্যমেৰে কৰা কৰ্ম অৰ্থাৎ জ্ঞানমাৰ্গেৰে কৰা কৰ্ম

আৰু নিষ্কাম ভাৱনাৰে কৰা কৰ্ম এই দুয়োটাই পৰমশ্ৰেয়, কিন্তু এই দুটা মাৰ্গত সন্যাস অথবা জ্ঞান দৃষ্টিৰে কৰা কৰ্মৰ অপেক্ষা নিষ্কাম কৰ্মযোগেই শ্ৰেষ্ঠ। প্ৰশ্ন স্বাভাৱিকতে উঠে যে শ্ৰেষ্ঠ কেনেদৰে।

জ্ঞেয়ঃ স নিত্যসন্যাসী যো ন দ্বেষ্টি নকাঙ্ক্ষতি।

নির্দ্বন্দ্বো হি মহাবাহো সুখং বন্ধাৎপ্ৰমুচ্যতে।। ৩।।

মহাবাহু অৰ্জুন! যি জনে কাৰো লগত দ্বেষ নকৰে, একোৰে আকাংক্ষা নাৰাখে, তেওঁ সদায়েই সন্যাসী ভৱাৰ যোগ্য। লাগিলে তেওঁ জ্ঞানমাৰ্গী বা নিষ্কাম কৰ্মমাৰ্গীৰে নহওক কিয়। ৰাগ-দ্বেষ দ্বন্দ্বৰ পৰা ৰহিত সেই পুৰুষ সুকলমে ভৱ-বন্ধনৰ পৰা মুক্ত হৈ যায়।

সাঙ্খ্যযোগৌ পৃথগ্খালাঃ প্ৰদত্তি ন পণ্ডিতাঃ।

একমপ্যাস্থিতঃ সম্যগ্ভয়োৰ্বিন্দতে ফলম্।। ৪।।

নিষ্কাম কৰ্মযোগ তথা জ্ঞানযোগ এই দুটাক বেলেগ বেলেগ বুলি কয়, যাৰ এই পথত বুজিবলৈ এতিয়া বহুতো কম হৈ আছে অথবা পূৰ্ণ জ্ঞাতা পণ্ডিতো হোৱা নাই; কিয়নো দুটাৰ ভিতৰত এটাতো যদি উওম প্ৰকাৰে স্থিত হোৱা পুৰুষে দুইটাৰে ফলৰূপে পৰমেশ্বৰত প্ৰাপ্ত হব পাৰে। দুটাৰে ফল একেটাই, সেই কাৰণে দুইটাই এক সমান।

যৎসাঙ্খ্যৈ প্ৰাপ্যতে স্থানং তদ্যোগৈৰপি গম্যতে।

একং সাঙ্খ্যং চ যোগং চ যঃ পশ্যতি স পশ্যতি।। ৫।।

য'ত সাংখ্য-দৃষ্টিৰে কৰ্ম কৰাজন পায়, তাতেই নিষ্কাম মাধ্যমেৰে কৰ্ম কৰাজনো পায়গৈ। সেইকাৰণে যি দুটাৰ ফলক একে দৃষ্টিৰে চায়, তেওঁ যথার্থ জ্ঞাতা। যেতিয়া দুটা একে স্থানতে পায়গৈ তেতিয়াহলে নিষ্কাম কৰ্মযোগ বিশেষভাৱে কিয়? শ্ৰীকৃষ্ণই কয়-

সন্যাসস্ত মহাবাহো দুঃখমাপ্তুমযোগতঃ।

যোগযুক্তো মুনিৰ্ব্ৰহ্ম নচিৰেণাধিগচ্ছতি।। ৬।।

অৰ্জুন! নিষ্কাম কৰ্মযোগৰ আচৰণ নকৰাকৈ - অর্থাৎ সৰ্বস্বৰ ন্যাস প্ৰাপ্ত হোৱা দুখপ্ৰদ হয়। যেতিয়া যোগৰ আচৰণ আৰম্ভনীৰ পৰাই নহ'ল তেতিয়া অসম্ভৱ হৈ পৰিব। সেই কাৰণে ভগৱৎস্বৰূপৰ মনন কৰা মুনিয়ে,

যাৰ মনেৰে সৈতে ইন্দ্ৰিয়বোৰ মৌন হৈ আছে, নিষ্কাম কৰ্মযোগৰ আচৰণ কৰি পৰব্রহ্ম পৰমাত্মাক শীঘ্ৰেই পাপ্ত কৰিব পাৰে। স্পষ্ট হৈ পৰিল যে জ্ঞানযোগতো নিষ্কাম কৰ্মযোগৰেই আচৰণ কৰিবলাগিব; কিয়নো ক্ৰিয়া দুটাতে একেই। সেই যজ্ঞৰে ক্ৰিয়া, যাৰ শুদ্ধ অৰ্থ হ'ল 'আৰাধনা'। দুটা মার্গতেই কৰ্তাৰ দৃষ্টি কোণৰেই অন্তৰ মাত্ৰ। এটাই নিজৰ শক্তি বুজিপাই লাভ-লোকচানক চাই এই কৰ্মত প্ৰবৃত্ত হয়, আৰু আনটো নিষ্কাম কৰ্মযোগী ইষ্টৰ ওপৰত নিৰ্ভৰ হৈ এই ক্ৰিয়াত প্ৰবৃত্ত হয়। উদাহৰণৰ বাবে, ধৰক এজন প্ৰাইভেট পঢ়ে আনটোৱে নিৰ্বাচিত। দুইজনৰে পাঠ্যক্ৰম একেই। পৰীক্ষাও একেই, পৰীক্ষাৰ-নিৰীক্ষকো একেই। ঠিক এই দৰেদুজনৰে সদৃশ তত্ত্ব দৰ্শায়েই, আৰু ডিগ্ৰীও একেই। মাত্ৰ দুটাৰ পঢ়াৰ দৃষ্টিকোণ বেলেগ বেলেগ। অৱশ্য সংস্থাগত ছাত্ৰৰ সুবিধা বেছি থাকে।

আগতে শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছে যে কাম আৰু ত্ৰেণ্ড দুৰ্জয় শত্ৰু। অৰ্জুন। তুমি এওঁলোকক মাৰি পেলোৱা। অৰ্জুনে ভাৰিলে এইটোতো বহুত টান, কিন্তু শ্ৰীকৃষ্ণই কলে - নহয়, শৰীৰতকৈ ইন্দ্ৰিয়বোৰ আতঁৰত আছে, মন ইন্দ্ৰিয়তকৈ আতঁৰত আছে, বুদ্ধি মনতকৈ আতঁৰত আছে, তোমাৰ স্বৰূপ বুদ্ধিতকৈও আতঁৰত আছে। তুমি তাৰ পৰাই প্ৰেৰণা পাইছা। এই ধৰণে নিজৰ ক্ষমতা বুজি, নিজৰ শক্তিক সন্মুখত ৰাখি, স্বাৱলম্বী হৈ কৰ্মত প্ৰবৃত্ত হোৱাই হ'ল জ্ঞানযোগ। শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছিলে চিত্তক ধ্যানস্থ কৰি কৰ্মক মোতেই সমৰ্পণ কৰি, আশা, মমতা আৰু সন্তাপৰ পৰা মুক্ত হৈ যুদ্ধ কৰা। সমৰ্পণ সৈতে ইষ্টৰ ওপৰত নিৰ্ভৰ হৈ সেই কৰ্মত প্ৰবৃত্ত হোৱা হ'ল নিষ্কাম কৰ্মযোগ। দুইটাৰে ক্ৰিয়াও একেটাই, পৰিণামো একেইটা।

ইয়াকে জোৰ দি যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই ইয়াত কৈছে যে যোগৰ আচৰণ নকৰাকৈ সন্যাস অৰ্থাৎ শুগাশুভ কৰ্মৰ শেষৰ স্থিতি প্ৰাপ্ত কৰা অসম্ভৱ। শ্ৰীকৃষ্ণৰ অনুসৰি এনে কোনো যোগ নাই যি ভৰিৰ ওপৰত ভৰি দি বহি কব যে "মই পৰমাত্মা? শুদ্ধ, বুদ্ধ, মোৰ কাৰণে কৰ্মও নাই বন্ধনো নাই। মই ভাল-বেয়া সকলো কৰা যেন দেখিলেও ইন্দ্ৰিয়বোৰ নিজৰ মতে চলিছে।" এনে পাখণ্ডি শ্ৰীকৃষ্ণৰ মতে কেতিয়াও নহব। সাক্ষাৎ যোগেশ্বৰেও নিজৰ অনন্য সখা অৰ্জুনক বিনা কৰ্মেৰে এই স্থিতি দিব নোৱাৰিলে। যদি এইদৰে

কৰিব পাৰিলে হেতেন, তেতিয়া গীতাৰ কি আৱশ্যকতা আছিল? কৰ্মতো কৰিব লাগিবই। কৰ্ম কৰিয়েই সন্যাসৰ স্থিতি পাব পৰা যাব, আৰু যোগযুক্ত পুৰুষ শীঘ্ৰেই পৰমাত্মাক প্ৰাপ্ত কৰিব পাৰিব। যোগযুক্ত পুৰুষৰ লক্ষণ কি? ইয়াত কৈছে -

যোগ যুক্তো বিশুদ্ধাত্মা বিজিতাত্মা জিতেन्द्रিয়ঃ।

সৰ্বভূতান্নভূতাত্মা কুৰ্বন্নপি ন লিপ্যতে ॥ ৭ ॥

‘বিজিতাত্মা’ - বিশেষৰূপে যি জনে শৰীৰক জিকি পেলাইছে, **‘জিতেन्द्रিয়’**- ইन्द्रিয় সমূহক যি জনে জিকিছে আৰু **‘বিশুদ্ধাত্মা’** - বিশেষৰূপে যাৰ অন্তঃকৰণ শুদ্ধ হৈ গৈছে, এনে পুৰুষ **‘সৰ্বভূতান্নভূতাত্মা’**- সম্পূৰ্ণ ভূত- প্ৰাণীৰ আত্মাৰ মূল উদগম পৰামাত্মাৰ লগত যি জন একীভাৱ হৈ যোগযুক্ত হৈছে। তেওঁ কৰ্ম কৰি থাকিলেও তাত লেপা নাখায়। তেতিয়া হলে কি কৰিব? পৰবৰ্তী সকলৰ কাৰণে পৰম কল্যাণকাৰী বীজৰ সংগ্ৰহ কৰি থাকে। লিপ্ত কি নহয়? কিয়নো সম্পূৰ্ণ প্ৰাণীৰ যি মূল উদগম যাৰ নাম পৰম তত্ত্ব সেই তত্ত্বতে তেওঁ স্থিত হৈ থাকে। আগলৈ কোনো বস্তু ৰেইনাই যাৰ অনুসন্ধান কৰিব। আগৰ বস্তুবিলাক তেওঁ কৰ্মত আবৃত্ত নহয়। এইটো হ’ল যোগযুক্তৰ পৰাকাষ্টৰ চিত্ৰণ। পুনৰ যোগযুক্ত পুৰুষৰ স্থিতি স্পষ্ট কৰি কৈছে যে তেও কৰ্ম কৰি থাকিলেও তাত লিপ্ত নহয় কিয়?

নৈব কিঞ্চিৎকৰোমীতি যুক্তো মন্যেত তদ্ববিৎ।

পশ্যৎশুধন্ স্পৃশৎজিঘ্নন্নশন্ গচ্ছন্ স্বপৎ শ্বসন্ ॥ ৮ ॥

প্ৰলপন্‌ব্ৰিসৃজন্ গৃহ্নুন্নিষন্নিমিষন্নিপি।

ইन्द्रিয়াণীन्द्रিয়াৰ্থেষু বৰ্তন্ত ইতি ধাৰয়ন্ ॥ ৯ ॥

পৰমতত্ত্ব পৰমাত্মাক সাক্ষাৎকৰণৰ সৈতে জনা যোগযুক্ত পুৰুষৰ এই মনঃস্থিতি অৰ্থাৎ অনুভূতি হয় যে মই অলপো একোৰে নকৰো। এইটো তেওঁৰ কল্পনা নহয়। বৰঞ্চ এই স্থিতি তেওঁ কৰ্ম কৰিহে প্ৰাপ্ত কৰিছে। যেনে - **‘যুক্তো মন্যেত’** এতিয়া প্ৰাপ্তীৰ পিছত তেওঁ সকলোখিনি দেখি, শুনি, স্পৰ্শ কৰি, সুঙি, খাই, গৈ, শুই, উশাহলৈ, কথাকৈ, ত্যাগ কৰি, গ্ৰহণ কৰি চকু মেলি আৰু জপালেও ইन्द्रিয় বিলাকে নিজৰ নিজৰ কামকে কৰি আছে, এনে ধাৰণা

হৈ যায়। পৰমাত্মাতকৈ অধিক একোৰেই নাই আৰু যেতিয়া তেওঁতেই তেওঁ স্থিত হৈ আছে, তাতকৈ অধিক যদি কোনো শ্ৰেষ্ঠ বস্তু আগলৈ থাকিল হেতেন তেতিয়া আসক্তি নিশ্চয় থাকিল হেতেন। কিন্তু প্ৰাপ্তীৰ পিছত এতিয়া আৰু আগলৈ যাব ক'ত? আৰু এৰিব কি? সেয়ে যোগযুক্ত পুৰুষ লিপ্ত নহয়। ইয়াকে এটা উদাহৰণেৰে প্ৰস্তুত কৰিছে।

ব্ৰহ্মণ্যাধায় কৰ্মাণি সঙ্গং ত্যক্ত্বা কৰোতি যঃ।

লিপ্যতে ন স পাপেন পদ্মপত্ৰমিৰাস্তসা ॥ ১০ ॥

পদুম বোকাত থাকে। তাৰ পাত পানীৰ ওপৰতে থাকে। তাৰ ওপৰত টো ৰাতি-দিনে পাব হৈ যায়। তথাপিও আপুনি পাতক চালে, শুকানে দেখিবলৈ পাব। পানীৰ এটোপালো তাৰ ওপৰত নাথাকে বোকা আৰু পানীত থাকিও পদুম লিপ্ত নহয়। সেইদৰে- যি পুৰুষ সকলো কৰ্ম পৰমাত্মাত বিলয় কৰি (সাম্প্ৰাংকাৰৰ লগতে কৰ্মৰো বিলয় হৈ যায়, ইয়াৰ আগত নহয়) অসক্তিক ত্যাগ কৰি (এতিয়া আগলৈ কোনো বস্তুই নাই, সেয়ে আসক্তি নাথাকে, সেই কাৰণে আসক্তি ত্যাগ কৰি) কৰ্ম কৰি যায়, তেৱো সেইধৰণে লিপ্ত নহয়। তেওঁ আকৌ কৰে কি? আপোনালোকৰ বাবে, সমাজৰ কল্যাণৰ বাবে, পাছৰ বিলাকৰ মার্গ দৰ্শনৰ বাবে কৰ্ম কৰে। ইয়াত জোৰ দি কয় -

কায়েন মনসা বুদ্ধ্যা কেবলৈৰিদ্ভিৰ্যৈৰপি।

যোগিনঃ কৰ্ম কুৰ্বন্তি সঙ্গং ত্যক্ত্বাত্মশুদ্ধয়ে ॥ ১১ ॥

যোগীজনে মাত্ৰ ইন্দ্ৰিয়, মন, বুদ্ধি, শৰীৰ দ্বাৰাও আসক্তি ত্যাগ কৰি আত্মশুদ্ধিৰ কাৰণে কৰ্ম কৰি যায়। যেতিয়া কৰ্ম ব্ৰহ্মতে বিলয় হৈ গৈছে, তেতিয়াহলে আত্মশুদ্ধি কি এতিয়াও হোৱা নাইনে? নহয়, তেওঁলোক 'সৰ্বভূতাত্মভূতাত্মা' - হৈ গৈছে। সম্পূৰ্ণ প্ৰাণীত তেওঁ নিজৰে আত্মাৰে প্ৰসাৰতা অনুভৱ কৰিছে। সেই সমস্ত আত্মাৰ শুদ্ধিৰ কাৰণে, আপোনালোকৰ সকলোৰে মার্গদৰ্শন কৰাবৰ কাৰণে তেওঁলোকে কৰ্ম কৰি যায়। শৰীৰ, মন, বুদ্ধি তথা কেৱল ইন্দ্ৰিয়বিলাকৰ দ্বাৰাহে কৰ্ম কৰে, স্বৰূপতে তেওঁ একো নকৰে, স্থিৰ হৈ আছে। বাহিৰৰ পৰা তেওঁৰ অসীম শান্তি আছে। ৰচিডাল জ্বলি গ'ল মাত্ৰ তাৰ সাঁচহে আছে, যাৰ দ্বাৰা বান্ধিব পৰা নাযায়।

যুক্তঃ কৰ্মফলং ত্যক্ত্বা শান্তিমাশ্নোতি নৈষ্ঠিকীম্ ।

অযুক্তঃ কামকাৰেণ ফলে সন্তো নিবধ্যতে ॥ ১২ ॥

‘যোগযুক্ত’ যোগৰ পৰিণাম প্ৰাপ্ত কৰা পুৰুষ, যি সকলো প্ৰাণীৰ আত্মা মূল পৰামাত্মাত স্থিত আছে, এনে যোগী কৰ্মফলক ত্যাগ কৰি (কৰ্মৰ ফল পৰমাত্মা তেওঁৰ পৰা ভিন্ন নহয়, সেই কাৰণে এতিয়া কৰ্মফলক ত্যাগ কৰি) ‘যোগযুক্ত’ - শান্তিৰ অন্তিম অৱস্থা প্ৰাপ্ত কৰে। যাৰ আগলৈ কোনো শান্তি বাকী থকা নাই, যাৰ পিছত তেওঁ কেতিয়াও অশান্ত নহয়। কিন্তু অযুক্ত পুৰুষ, যি যোগৰ পৰিণামৰ লগত যুক্ত হোৱা নাই। এতিয়াও পথত চলি আছে, এনে পুৰুষ ফলত আসক্ত হৈ (ফল হ’ল পৰমাত্মা, তাত তেওঁৰ আসক্ত হোৱাৰ আৱশ্যক আছে। সেই কাৰণে ফলত আসক্ত হলেও) ‘নৈষ্ঠিকীম শান্তিম আশ্নোতি’ - কামনা কৰি বান্ধ খাই যায় অৰ্থাৎ শেষ পৰ্য্যন্ত কামনা -বাসনা জাগৃত হৈ থাকে, সেয়ে সাধকক শেষ পৰ্য্যন্ত সাৱধান হৈ থকা উচিত।

‘মহাৰাজ জী’য়ে কৈছিলে -“ হেৰা। অলপো আমি যদি বেলেগ হৈ যাম, ভগৱান বেলেগ হয় মানে আতঁৰি থাকে তেতিয়াহলে মায়া বলৱতী হৈ যাব।” কালিলৈ তেওঁৰ প্ৰাপ্তী হলহেতেন কিন্তু আজিতো তেওঁ অজ্ঞানীয়ে হৈ আছে। সেয়ে শেষলৈকে সাধক অসাৱধান হব নালাগে। এইটোতে আগলৈ চাওক -

সৰ্বকৰ্মাণি মনসা সন্ন্যস্যাস্তে সুখং ৰশী।

নবদ্বাৰে পুৰে দেহী নৈৱ কুৰ্বন্ন কাৰয়ন্ ॥ ১৩ ॥

যি সম্পূৰ্ণ ৰূপে নিজৰ বশত আছে, যি শৰীৰ মন, বুদ্ধি আৰু প্ৰকৃতিৰ পাৰত স্বয়ং স্থিত হৈ আছে, এনে বশত থকা পুৰুষে নিঃসন্দেহে কিবা নকৰেও নকৰাইও। পাছৰ বিলাকৰ দ্বাৰা কৰালেও তেওঁৰ আন্তৰিক শান্তিক স্পৰ্শ কৰিব নোৱাৰে। এনে স্বৰূপস্থ পুৰুষ শব্দ আদি বিষয়ৰ উপলব্ধ কৰাব পৰা নদ্বাৰ (দুটা কান, দুটা চকু, দুটা নাকৰ ছিদ্র, এটা মুখ, প্ৰসাৰ দ্বাৰ আৰু পায়ু) থকা শৰীৰ ৰূপী ঘৰত সকলো কৰ্মক মনেৰে ত্যাগ কৰি স্বৰূপানন্দতেই স্থিত হৈ থাকে। যথার্থত তেওঁ একো নকৰেও ন কৰোৱায়।

ইয়াকে পূনৰ শ্ৰীকৃষ্ণই অন্য ধৰণে কৈছে যে সেইজন প্ৰভূৱে নকৰে, ন কৰোৱায়। সদগুৰু, ভগৱান, প্ৰভূ, স্বৰূপস্থ মহাপুৰুষ, যুক্ত ইত্যাদি একে

পর্যায়ৰ হয়। বেলেগ ভগৱান কোনো একো কৰিবলৈ নাহে। তেওঁযেতিয়া কৰায় এই স্বৰূপস্থ ইষ্টৰ মাধ্যমেদি কৰায়। মহাপুৰুষৰ বাবে শৰীৰতো মাত্ৰ এটা ঘৰ। সেয়ে পৰামাত্মাই কৰোৱা আৰু মহাপুৰুষে কৰোৱা একে কথা, কিয়নো তেওঁ তেওঁৰ দ্বাৰা চলে। মূলতঃ সেই পুৰুষে কৰিও একো নকৰে। এই সম্পৰ্কে অন্য এটা শ্লোক চাওক-

ন কৰ্তৃত্বং ন কৰ্মাণি লোকস্য সৃজতি প্ৰভুঃ।

ন কৰ্মফল সংযোগং স্বভাৱস্ত প্ৰৱৰ্ততে ॥ ১৪ ॥

সেই প্ৰভু ন ভূত প্ৰাণীৰ কৰ্ত্তাপণ, ন কৰ্মৰ আৰু ন কৰ্মফলৰ সংযোগ দিয়ে, বৰঞ্চ স্বভাৱত স্থিত প্ৰকৃতিৰ দাবী অনুসৰি সকলো কৰি যায়। যাৰ যেনে প্ৰকৃতি- সাত্বিক, ৰাজসী অথবা তামসী, সেই স্তৰে তেওঁ কৰ্ম কৰে। প্ৰকৃতিৰ কোনো সীমা নাই, কিন্তু আপোনাৰ ওপৰত সিমানে প্ৰভাৱ পেলায়, যেনেকৈ আপোনাৰ স্বভাৱ বিকৃত অথবা বিকসিত হয়।

প্ৰায় মানুহে কয় যে কৰা-কৰোতা জনতো ভগৱানহে, আমিতো যন্ত্ৰমাত্ৰ। আমাৰ দ্বাৰা ভাল কৰাওক বা বেয়া। কিন্তু যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কয় যে সেই প্ৰভূজন নিজে নকৰেও আৰু নকৰায়েও আৰু তেওঁ যোগাৰো কৰি নিদিয়ে। মানুহ বিলাক নিজৰ স্বভাৱত স্থিত প্ৰকৃতিৰ অনুৰূপত চলে। নিজেই কাৰ্য্য কৰে। তেওঁলোকে নিজৰ স্বভাৱত বাধ্য হৈ কৰে, ভগৱানে নকৰে। তেতিয়াহলে মানুহ বিলাকে কিয় কয় যে ভগৱানে কৰে বুলি? ইয়াত যোগেশ্বৰে কয়-

নাদত্তে কস্যচিৎপাপং ন চৈব সুকৃতং ৰিভুঃ।

অজ্ঞানেনাবৃতং জ্ঞানং তেন মুহ্যন্তি জন্তৱঃ ॥ ১৫ ॥

যাক এতিয়া প্ৰভু বুলি কোৱা হৈছে, সেইজনকে ইয়াত বিভূ বুলি কোৱা হৈছে, কিয়নো তেওঁ সকলো বৈভৱেৰে সংযুক্ত। প্ৰভূতা অথবা বৈভৱেৰে সংযুক্ত সেই পৰমাত্মা কাৰো পাপ কৰ্ম বা পুণ্য কৰ্মক গ্ৰহণ নকৰে, তথাপিও মানুহ বিলাকে কিয় কয়? সেইকাৰণেই যে অজ্ঞানেৰে জ্ঞানক ঢাকি ৰাখিছে। তেওঁলোকক এতিয়া সাক্ষাৎকাৰৰ সৈতে জ্ঞান হোৱাই নাই। তেওঁলোক এতিয়া জন্তু হৈ আছে। মোহত পৰি তেওঁলোকে যি কোনো কথা কেই কব পাৰিব। জ্ঞানৰ পৰা কি হয়? ইয়াত স্পষ্ট কৰিছে-

জ্ঞানেন তু তদজ্ঞানং যেষাং নাশিতমাত্মনঃ ।

তেষামাদিত্যৰজ্জ্ঞানং প্ৰকাশয়তি তৎপৰম্ ॥ ১৬ ॥

যাৰ অন্তঃকৰণৰ সেই অজ্ঞান (যিয়ে জ্ঞানক ঢাকি ৰাখিছে) আত্ম-সাক্ষাৎকাৰৰ দ্বাৰা নষ্ট হৈ গৈছে আৰু এইদৰে যি জনে জ্ঞান প্ৰাপ্ত কৰিছে, তেওঁৰ সেই জ্ঞান সূৰ্য্যৰ সদৃশ সেই পৰমতত্ত্ব পৰমাত্মাৰ প্ৰকাশিত কৰে। তেতিয়াহলে পৰমাত্মা কি কোনো অন্ধকাৰৰ নাম নে? নহয়, তেওঁতো স্বয়ং প্ৰকাশ ৰূপ। হলেও, কিন্তু আমাৰ উপভোগৰ কাৰনে নহয়, দেখা পোৱা নাযায়। যেতিয়া জ্ঞানৰ দ্বাৰা অজ্ঞানৰ আবৰণ ফাটি যায়, তেতিয়া তাৰ সেই জ্ঞান সূৰ্য্যৰ সদৃশ পৰমাত্মাক নিজকেই প্ৰবাহিত কৰি লয়। আকৌ সেই পুৰুষৰ কাৰণে কতো অন্ধকাৰ নাথাকে। সেই জ্ঞানৰ স্বৰূপ কি?

তদ্বুদ্ধয়স্তদাত্মানস্তমিষ্ঠাস্তপ্পৰায়ণাঃ ।

গচ্ছন্ত্য পুনৰাবৃত্তিং জ্ঞাননিৰ্ধৃতকল্মষাঃ ॥ ১৭ ॥

যেতিয়া সেই পৰমতত্ত্ব পৰমাত্মাৰ অনুৰূপ বৃদ্ধি হ'ব, তত্ত্বৰ অনুৰূপ চলা মন হয়, পৰমতত্ত্ব পৰমাত্মাত একীভাৱে হৈ থাকিব আৰু তেওঁৰেই পৰায়ণ হয় তাৰ নামেই জ্ঞান। জ্ঞান কোনো প্ৰলাপ বা কথা নহয়। এই জ্ঞানৰ দ্বাৰা পাপৰহিত হোৱা পুৰুষ পুনৰ আগমন ৰহিত পৰমগতি প্ৰাপ্ত কৰে। পৰমগতি প্ৰাপ্ত, পূৰ্ণ জ্ঞানযুক্ত পুৰুষকেই পণ্ডিত বুলি কোৱা হয়। আগলৈ চাওক-

বিদ্যাৰিনয়সম্পন্নে ব্ৰাহ্মণে গৰি হস্তিনি ।

শুনি চৈব শ্বপাকে চ পণ্ডিতাঃ সমদৰ্শিনঃ ॥ ১৮ ॥

জ্ঞানৰ দ্বাৰা যাৰ পাপ শমন হৈ গৈছে, যি প্ৰাপ্ত কৰিছে, এনে জ্ঞানীজন বিনয়যুক্ত ব্ৰাহ্মণ তথা চাণ্ডালত, গৰু আৰু কুকুৰত তথা হাতীত সমান দৃষ্টি থকা হয়। তেওঁৰ দৃষ্টিত বিদ্যা-বিনয়যুক্ত ব্ৰাহ্মণৰ প্ৰতিও কোনো বিশেষতা নৰাখে আৰু চাণ্ডালৰ প্ৰতিও কোনো হীনতা নাৰাখে। গৰুৰ প্ৰতি ধৰ্ম তথা কুকুৰৰ প্ৰতি অধৰ্মও নামানে আৰু হাতীৰ প্ৰতি বিশালতাও চিন্তা নকৰে। এনে পণ্ডিত, জ্ঞাতাজন সমদৰ্শী আৰু সমবৰ্ত্তী হয়। তেওঁৰ দৃষ্টি ছালৰ ওপৰত অৰ্থাৎ বাহ্যিক ৰূপত নপৰে, বৰঞ্চ আত্মাতহে পৰে। প্ৰভেদ মাত্ৰ ইমানেই যে বিদ্যা-বিনয় সম্পন্ন স্বৰূপৰ কাষতে থাকে, আৰু সকলো পিছ পেলাই

দিয়ে। কিছু গম্ভব্য আগলৈ আছে আৰু কিছু পিছত এৰি থৈ আহিল। শৰীৰতো এটা বস্তুক মহত্ব নিদিয়া আনকি তেওঁলোকৰ হৃদয়ত থকা আত্মাৰ ওপৰতহে পৰে। সেইকাৰণে তেওঁ কোনো ভেদ নাৰাখে।

শ্ৰীকৃষ্ণই পৰ্যাপ্ত পৰিমাণে গো-সেৱা কৰিছিল। তেওঁ গো প্ৰতি গৌৰৱপূৰ্ণ শব্দ কব লাগিছিল; কিন্তু তেৱেএনেকুৱা একো নকলে। শ্ৰীকৃষ্ণই গাই ধৰ্মৰ কোনো স্থান দিয়া নাই। তেওঁ মাত্ৰ ইমানেই কব বিচাৰিছে যে অন্য জীৱাত্মাৰ দৰে তাৰো আত্মা আছে। গৰুৰ আৰ্থিক বিশেষত্ব যিয়েই নাথাকক, তাৰ ধাৰ্মিক বৈশিষ্ট্য পৰবৰ্তী লোকৰেই দেন। শ্ৰীকৃষ্ণই আগত কৈছিল যে অবিবেকীসকলৰ বুদ্ধি অনন্ত শাখায়ুক্ত হয় সেই কাৰণে তেওঁলোকে অনন্ত ক্ৰিয়াৰ বিস্তাৰ কৰে। শুনাবৰ কাৰণে সুন্দৰ বাণী তেওঁলোকে ব্যক্ত কৰে। তেওঁলোকৰ কথাৰ প্ৰভাৱ যাৰ চিত্তত পৰে, তেওঁলোকৰো বুদ্ধি নষ্ট হৈ যায়। তেওঁলোকে একো নাপায়েও আৰু নষ্ট হৈ যায়। নিষ্কাম কৰ্মযোগত অৰ্জুন। নিদ্ভাৰিত ক্ৰিয়া একেই থাকে-যজ্ঞৰ প্ৰক্ৰিয়া 'আৰাধনা'। গৰু, কুকুৰ, হাতী, আহঁত নদী এই বোৰৰ ধাৰ্মিক মহত্ব সেই অনন্ত শাখায়ুক্ত সকলৰেই দেন হয়। যদি এই বিলাকৰ কোনো ধাৰ্মিক মহত্ব থাকিলহেঁতেন শ্ৰীকৃষ্ণই অৱশ্যে কলেহেঁতেন। মন্দিৰ, মছজিদ ইত্যাদি পূজাৰ স্থল আৰম্ভনী কালৰ পৰাই আছে, তাত প্ৰেৰণাদায়ক সামূহিক উপদেশ হয়, তাৰো উপযোগীতা আছে আৱশ্য, সেই বোৰ ধৰ্মোপদেশ কেন্দ্ৰ হয়।

প্ৰস্তুত শ্লোকত দুজন পণ্ডিতৰ আলোচনা আছে। এজন পণ্ডিত তেওঁ যি পূৰ্ণ জ্ঞাতা, আৰু দ্বিতীয়জন বিদ্যাবিনয় সম্পন্ন। তেওঁলোক দুবিধ কেনেকৈ হ'ল? মূলতঃ প্ৰত্যেক শ্ৰেণীৰ দুটা সীমা আছে এটা অধিকতম সীমা-পৰাকাষ্টা আৰু দ্বিতীয়বিধ প্ৰবেশিকা অথবা নিম্নতম সীমা। উদাহৰণৰ কাৰণে - ভক্তিৰ নিম্নতম সীমা সেইটো যৰপৰা ভক্তি আৰম্ভ হৈছে, বিবেক বৈৰাগ্যৰে আৰু মনোযোগেৰে যেতিয়া আৰাধনা কৰিছে, আৰু অধিকতম সীমা সেইটো, য'ত ভক্তি নিজৰ পৰিণাম দিয়াৰ স্থিতিত আহি পায়। ঠিক এনেদৰেই ব্ৰাহ্মণ-ক্ষেত্ৰীয়ও। যেতিয়া ব্ৰহ্মত প্ৰৱেশ কৰাৰ ক্ষমতা প্ৰাপ্ত হব সেই সময়ত বিদ্যা হয় বিনয় হয়। মনৰ শমন, ইন্দ্ৰিয় সমূহৰ দমন, অনুভৱৰ সূত্ৰপাতৰ সঞ্চাৰ ধাৰাবাহিক ভাৱে চিন্তন, ধ্যান আৰু সমাধি ইত্যাদি ব্ৰহ্মত প্ৰৱেশ কৰিব পৰা

সকলো যোগ্যতা তেওঁৰ অন্তৰত স্বাভাৱিক ভাৱে কাৰ্য্য কৰিব ধৰে। এইটো হ'ল ব্ৰাহ্মণত্বৰ নিম্নতম সীমা। উচ্চতম সীমা যেতিয়া হয়, তেতিয়া হয়, ক্ৰমশঃ উন্নত হৈ হৈ তেওঁ ব্ৰহ্মৰ দিকদৰ্শন কৰি তাতেই বিলয় হৈ যায়। যাক জানিব লগীয়া আছিলে জানি ললে। তেওঁ পূৰ্ণজ্ঞাতা হৈ গ'ল। অপুনৰাবৃতি থকা মহাপুৰুষ সেই বিদ্যা-বিনয় সম্পন্ন ব্ৰাহ্মান, চাণ্ডাল, কুকুৰ, হাতী আৰু সকলোতে সমান দৃষ্টি ৰাখে, কিয়নো তেওঁৰ দৃষ্টি হৃদয়-স্থিত আত্ম স্বৰূপৰ ওপৰতে পৰে। এনে মহাপুৰুষে পৰম-গতিত কি পালে আৰু কেনেকৈ পালে? এই ক্ষেত্ৰত প্ৰকাশ কৰি যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কয় -

ইহৈৰ তৈৰ্জিতঃ সৰ্গো যেযাং সাম্যে স্থিতং মনঃ।

নিৰ্দোষং হি সমং ব্ৰহ্ম তস্মাদ্ৰহ্মাণি তে স্থিতাঃ ॥ ১৯ ॥

সেই পুৰুষৰ দ্বাৰা জীৱিত অৱস্থাতে সম্পূৰ্ণ সংসাৰ জিকি লয়, যাৰ মন সমত্বতে স্থিত। মনৰ সমত্বত সংসাৰ জিকাৰ কি সম্ভৱ আছে? সংসাৰ খনেই জিকিছে যেতিয়া সেই পুৰুষ জন থাকে ক'ত? শ্ৰীকৃষ্ণই কয়, সেই ব্ৰহ্ম নিৰ্দোষ আৰু সম, এইফালে তেওঁৰ মনও নিৰ্দোষ আৰু সম স্থিতিত হৈ যায়। সেইকাৰণে তেওঁ ব্ৰহ্মতে স্থিত হৈ যায়। তাৰ নামেই অপুনৰাবৃত্তী পৰম গতি। এইটো কেতিয়া পোৱা যায়? যেতিয়া সংসাৰৰূপী শত্ৰুক জিকি পেলোৱা হয়। সংসাৰ কেতিয়া জিকা হয়? যেতিয়া মনৰ নিৰোধ হৈ সেই ব্ৰহ্মত স্থিত হৈ যায় তেতিয়া ব্ৰহ্মবিদৰ লক্ষণ কি? তাৰ কথা স্পষ্ট কৰি কয়।

ন প্ৰহৃষ্যেৎপ্ৰিয়ং প্ৰাপ্য নোদ্বিজ়েৎপ্ৰাপ্য চাপ্ৰিয়ম্।

স্থিৰবুদ্ধিৰসম্মুঢ়ো ব্ৰহ্মবিদ্ৰহ্মাণি স্থিতঃ ॥ ২০ ॥

তেওঁৰ কোনো প্ৰিয়-অপ্ৰিয় নাথাকে। সেইকাৰণে যাক মানুহে প্ৰিয় বুলি ভাৱে তাক পাই তেওঁ হৰ্ষ অনুভৱ কৰে, আৰু যাক মানুহে অপ্ৰিয় বুলি ভাৱে (যেনে ধৰ্মাৱলম্বী চিহ্ন আদি লগায়) তাক পাই তেওঁ উদ্বেগ আদিও প্ৰকাশ নকৰে। এনে স্থিৰ বুদ্ধি - সংশয়ৰহিত, - ব্ৰহ্মৰ লগত সংযুক্ত, ব্ৰহ্মবেত্তা - পৰাৎপৰ ব্ৰহ্মতে সদায় স্থিতহৈ থাকে।

বাহ্যস্পৰ্শেষুসক্তাত্মা বিন্দিত্যত্মনি যৎসুখম্।

স ব্ৰহ্মযোগ যুক্তাত্মা সুখমক্ষয়মশ্নুতে ॥ ২১ ॥

বাহ্যিক সংসাৰৰ বিষয় ভোগত অনাসক্ত পুৰুষে অন্তৰাত্মাত স্থিত যি আছে, সেই সুখকে প্ৰাপ্ত কৰে। সেই পুৰুষ পৰব্ৰহ্ম পৰমাত্মাৰ লগত যুক্তাত্মা হয়, সেই কাৰণে সি অক্ষয় আনন্দৰ অনুভৱ কৰে, যাৰ আনন্দৰ কেতিয়াও ক্ষয় নহয়। এই আনন্দৰ উপভোগ কোনে কৰে? যি বাহ্যিক বিষয়ৰ ভোগত অনাসক্ত। তেতিয়া হলে ভোগ বাধক নে কি? ভগৱান শ্ৰীকৃষ্ণই কয় -

যে হি সংস্পৰ্শজা ভোগা দুঃখযোনয় এব তে।

আদ্যন্তবন্তঃ কৌন্তেয় ন তেষু বমতে বুধঃ ॥ ২২ ॥

মাত্ৰ ছালেই নহয়, সকলো ইন্দ্ৰিয়ই স্পৰ্শ কৰে দেখাত- চকুৰ স্পৰ্শ, শুনাত-কানৰ স্পৰ্শ। এই ধৰণে ইন্দ্ৰিয় আৰু বিষয়ৰ সংযোগত উৎপন্ন হব পৰা সকলো ভোগ যদিও ভোগ কৰাত প্ৰিয় অনুভৱ হয়, কিন্তু নিঃ সন্দেহে সেইবোৰ সকলো দুখত যোনিৰে কাৰণ হয়। এই ভোগেই যোনিৰ কাৰণ। ইমানেই নহয়, সেইবোৰ ভোগ উৎপন্নও হয় হেৰাইও যায়, ই নাশশীল হয়। সেই কাৰণে হে কৌন্তেয়। বিবেকবান পুৰুষ তাত বান্ধ নাখায়। ইন্দ্ৰিয় সমূহৰ এই স্পৰ্শতনো কি থাকে? কাম, ক্ৰোধ, বাগ আৰু দ্বেষ। ইয়াত শ্ৰীকৃষ্ণই কয়-

শক্ৰোতীহৈৰ যঃ সোঢ়ুং প্ৰাক্ষৰীৰ ৰিমোক্ষণাৎ।

কামক্ৰোধোদ্ভৱং বেগং স যুক্তঃ স সুখী নবঃ ॥ ২৩ ॥

সেইকাৰণে যি মনুষ্য শৰীৰৰ নাশ হোৱাৰ আগতেই কাম আৰু ক্ৰোধেৰে উৎপন্ন হোৱা বেগক সহ্য কৰাত (নাইকিয়া কৰাত) সক্ষম হয়, তেৱেই নৰ (ৰমণ ন কৰাত (নাইকিয়া কৰাত) সক্ষম হয়। তেৱে এই লোকত যোগেৰে যুক্ত হৈ আছে, আৰু তেৱেই সুখী। যাৰ পিছলৈ কোনো দুখ নাই, তেওঁ সুখতে অৰ্থাৎ পৰমাত্মাতে স্থিতি থকাজন হয়। জীয়াই থাকোতেই ইয়াৰ প্ৰাপ্তীৰ বিধান আছে মৰিলে নহয়। সন্ত কবীৰ দাসে ইয়াকে স্পষ্ট কৰি কৈছে যে 'অবধু জীবত মে কৰ আশা'- তেতিয়া হলে মৰিলে মুক্তি নহয় নে? তেওঁ কয় -**‘মুএমুক্তি, গুৰু কহে স্বাথী, বুঠা দে বিশ্বাসা’**এইটোৱে যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণৰ কথন যে শৰীৰ থাকোতে, মৰাৰ আগতে যি জনে কাম-ক্ৰোধৰ বেগক শেষ কৰিবলৈ সক্ষম হ'ল, সেই পুৰুষকে এই লোকত যোগী কোৱা হয়, তেৱেই সুখী। কাম-ক্ৰোধ বাহ্যিক স্পৰ্শই শত্ৰু। সেই বিলাকক আপুনি জিকক। এই পুৰুষৰ লক্ষণ পূনৰ কৈছে -

যোহন্তঃ সুখোহন্তুৰাৰামন্তুথান্তুৰ্জ্যোতিৰেৰ যঃ।

স যোগী ব্ৰহ্মনিৰ্ৰাণং ব্ৰহ্মভূতোহধিগচ্ছতি ॥ ২৪ ॥

যি ব্যক্তি অন্তৰাত্মাতেই সুখ থকা অন্তৰাত্মাতেই আৰাম কৰা তথা যি অন্তৰাত্মাতেই প্ৰকাশ থকা (সাক্ষাৎ কাৰ কৰা) হয়, তেৱেই যোগী, ব্ৰহ্মৰ লগত এক হৈ বাণীৰো উপৰত ব্ৰহ্ম, শাস্ত্ৰত ব্ৰহ্মত প্ৰাপ্ত হয়। অৰ্থাৎ প্ৰথমে বিকাৰৰ(কাম-ক্ৰোধ) ৰ অন্ত, আকৌ দৰ্শন, আকৌ প্ৰবেশ। আগত চাওক -

লভন্তে ব্ৰহ্মনিৰ্ৰাণমৃষয়ঃ ক্ষীণকল্মষাঃ।

ছিন্নদ্বৈধা যতাত্মানঃ সৰ্বভূতহিতে ৰতাঃ ॥ ২৫ ॥

পৰমাত্মাৰ সাক্ষাৎ কৰি যাৰ পাপ নষ্ট হৈ গৈছে, যাৰ দ্বৈত ভাৱ নাইকিয়া হৈ গৈছে, সম্পূৰ্ণ প্ৰাণীৰ হিতত যি লাগি আছে (প্ৰাপ্তি কৰাজনহে এনে কৰিব পাৰে যি স্বয়ং খালত পৰিছে সি অন্যক কেনেকৈ ব্ৰহ্ম কৰিব? সেই কাৰণে কৰুণা মহাপুৰুষৰ স্বভাৱিক গুণ হৈ যায়) তথা জিতেন্দ্ৰিয় ব্ৰহ্মবেত্তা পুৰুষ শান্ত পৰব্ৰহ্মকেই প্ৰাপ্ত কৰে। সেই মহাপুৰুষৰ স্থিতিৰ ওপৰত প্ৰকাশ কৰি কয় -

কাম ক্ৰোধধৰিয়ুক্তানাং যতীনাং যতচেতসাম্।

অভিতো ব্ৰহ্মনিৰ্ৰাণং ৰততে বিদিতাত্মনাম্ ॥ ২৬ ॥

কাম আৰু ক্ৰোধেৰে ৰহিত, চিন্তক জিকাজন, পৰমাত্মাৰ সংক্ষাৎকাৰ কৰা জ্ঞানী পুৰুষৰ বাবে সকলো ফালৰ পৰা শান্ত পৰব্ৰহ্মই প্ৰাপ্ত হয়। বাৰে বাৰে যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই সেই পুৰুষৰ থকা মেলা অৰ্থাৎ স্থিতিৰ ওপৰত জোৰ দিছে, যাৰ দ্বাৰা প্ৰেৰণা পোৱা যাওক। প্ৰশ্ন এক ৰকম পূৰ্ণ হ'ল। এতিয়া আকৌ তেওঁ জোৰ দি কৈছে যে এই স্থিতি প্ৰাপ্ত কৰাৰ আৱশ্যক অংগ হ'ল 'শ্বাস-প্ৰশ্বাসৰ চিন্তন'। যজ্ঞৰ প্ৰক্ৰিয়াত প্ৰাণক অপানত হৰন, অপানক প্ৰাণত হৰন, প্ৰাণ-অপান দুইটা গতিকে নিৰোধ কৰাৰ কথা কৈছিলে তেওঁ। তাকে বুজাই কয় -

স্পৰ্শান্ কৃত্বা বহিৰ্বাহ্যাংশ্চক্ষুশ্চৈবাস্তবে ভ্ৰুবোঃ।

প্ৰাণাপানৌ সমৌ কৃত্বা নাসাভ্যন্তৰচাৰিণৌ ॥ ২৭ ॥

যতেন্দ্ৰিয়মনোবুদ্ধিমূৰ্ণিমোক্ষপৰায়ণঃ।

বিগতেচ্ছাভয়ক্ৰোধো যঃ সদা মুক্ত এব সঃ ॥ ২৮ ॥

অৰ্জুন! বাহিৰৰ বিষয়ৰ, দৃশ্যবোৰৰ চিন্তন নকৰি ত্যাগ কৰি, নেত্ৰৰ দৃষ্টি দুটা ভ্ৰম মাজত স্থিৰ কৰি এনেকুৱা অৰ্থ নহয় যে চকুৰ মাজত বা ভ্ৰম মাজত দেখাৰ ভাৱনাৰে দৃষ্টি লগাব। ভ্ৰম মাজৰ শুদ্ধ অৰ্থ ইমানেই যে পোনকৈ বহিলে দৃষ্টি ভ্ৰম মাজেদিয়ে (চিধা) পোনে পোনে আগত পৰে। সোঁৱে বাবে ইফালে সিফালে লৰচৰ নকৰাকৈ চাব লাগে। নাকৰ আগ জোঙায়েদি পোনে পোনে দৃষ্টি ৰাখি (নাকক নোচোৱাকৈ) নাসিকাৰ ভিতৰত বিচৰণ কৰা প্ৰাণ আৰু অপ্ৰাণ বায়ুক সমভাৱে ৰাখি অৰ্থাৎ দৃষ্টিক তাত স্থিৰ কৰা আৰু সুৰতক শ্বাসত লগাই দিয়া, কেতিয়া শ্বাস ভিতৰলৈ গ'ল? কিমান সময় থাকিল? অন্ততঃ আধা চেকেগুলৈকে থাকে, ৰাখিবৰ চেপ্তা কৰিব নালাগে। কেতিয়া শ্বাস বাহিৰলৈ গ'ল? কিমান দেৰিলৈকে বাহিৰত থাকিল? এইটো কোৱাৰ আৱশ্যক নাই যে শ্বাসত উঠা নাম ধৰনী শুনি থাকিব লাগিব। এইদৰে শ্বাস-প্ৰশ্বাসৰ ওপৰত যেতিয়া সুৰত টিকি যাব তেতিয়া লাহে লাহে শ্বাস অচল হৈ যাব, স্থিৰ হৈ যাব, সম হৈ যাব। ভিতৰৰ পৰাও কোনো সংকল্প নুঠে আৰু বাহিৰৰ পৰাও কোনো সংকল্প ভিতৰলৈ গৈ খুন্দা মাৰিব নোৱাৰিব। বাহিৰৰ ভোগৰ চিন্তনতো বাহিৰতে ত্যাগ কৰা আছিলে, ভিতৰতো কোনো সংকল্প জাগৃত নহয়। সুৰত মানে নামধাৰা তেলৰ ধাৰাৰ দৰে একেবাৰে নিচিঙাকৈ থাকিব। তেলৰ ধাৰা পানীৰ নিচিনাকৈ টপ-টপকৈ নপৰে, যেতিয়ালৈকে পৰিব ধাৰাহৈ থাকিব। এই ধৰণে প্ৰাণ আৰু অপানৰ গতি একেবাৰে সম, স্থিৰ কৰি ইন্দ্ৰিয় বিলাক, মন আৰু বুদ্ধিক যি জনে জিকি লৈছে ভয় আৰু ক্ৰোধৰ পৰা ৰহিত হৈ, মনোযোগেৰে সৈতে চৰম সীমালৈ পাইযোৱা মোক্ষপৰাষণ মুনি সদায় 'মুক্ত' হৈ থাকে। মুক্ত হৈ তেওঁ ক'লে যায়? কি পায়? এই বিষয়ে কয়

ভোক্তাৰং যজ্ঞতপসাং সৰ্বলোকমহেশ্বৰম্।

সুহৃদং সৰ্বভূতানাং জ্ঞাত্বা মাং শান্তি ম্চ্ছতি ॥ ২৯ ॥

সেই মুক্ত পুৰুষে মোক যজ্ঞ আৰু তপক ভোগ কৰাজনক সম্পূৰ্ণ লোকৰ ঈশ্বৰৰো ঈশ্বৰ, সম্পূৰ্ণ প্ৰাণীৰ স্বাৰ্থৰহিত হিতৈষী - এনে সাক্ষাৎ জানি শান্তি প্ৰাপ্ত কৰে। শ্ৰীকৃষ্ণই কয় যে সেই পুৰুষৰ শ্বাস-প্ৰশ্বাসৰ যজ্ঞ

আৰু তপৰ ভোক্তা ময়েই। যজ্ঞ আৰু তপৰ অন্তত য'ত বিলয় হয়, সেইটোও ময়েই। তেওঁ মোকে প্ৰাপ্ত কৰিব। যজ্ঞৰ অন্তত যাৰ নাম শান্তি, সেইটো মোৰেই স্বৰূপ। সেই মুক্ত পুৰুষে মোক জানে আৰু জানিয়েই মোক প্ৰাপ্ত কৰে। তাৰ নামেই শান্তি। যেনেকৈ মই ঈশ্বৰৰো ঈশ্বৰ, তেৱো তেনেকৈ।

নিষ্কৰ্ষ :-

এই আধ্যায়ৰ আৰম্ভনীত অৰ্জুনে প্ৰশ্ন কৰিছিলযে কেতিয়াবা আপুনি নিষ্কাম কৰ্মযোগৰ প্ৰশংসা কৰে আৰু কেতিয়াবা আপুনি সন্যাসমৰ্গাৰ কৰ্মৰ প্ৰশংসা কৰে, সেয়ে দুটাৰ ভিতৰৰ এটাক যাক আপুনি সুনিশ্চিত কৰিছে, যি পৰম কল্যাণকাৰী হয়, তাক কওক। শ্ৰীকৃষ্ণই কলে, অৰ্জুন। পৰম কল্যাণতো দুটাতেই আছে। দুটাতেই সেই নিৰ্দ্ধাৰিত যজ্ঞৰেই ক্ৰিয়া কৰিব লাগিব, তথাপিও নিষ্কাম কৰ্মযোগেই বিশেষ হয়। ইয়াক নকৰাকৈ সন্যাস (শুভ-অশুভ কৰ্মৰ শেষ) নহয়। সন্যাস মৰ্গ নহয়, গন্তব্যৰ নামহে। যোগযুক্ত হে সন্যাসী হয়। যোগযুক্তৰ লক্ষণ কলে যে তেওঁৰেই প্ৰভু। তেওঁ নকৰেও, নকৰায়েও বৰঞ্চ স্বভাৱত প্ৰকৃতিৰ দাবী অনুসৰি লোকত ব্যস্ত থাকে। যি সাক্ষাৎ মোক জানি লৈছে তেৱে পণ্ডিত। যজ্ঞৰ পৰিণামত মানুহে মোক জানে। শ্বাস-প্ৰশ্বাসৰ জপ আৰু যজ্ঞ-তপ য'ত বিলয় হয়, সেয়া ময়েই। অৰ্থাৎ শ্ৰীকৃষ্ণ যেনেকুৱা, মহাপুৰুষ যেনে স্বৰূপৰ সেই প্ৰাপ্তী কৰা জনেও সেইটোৱেই পায়। তেৱো ঈশ্বৰৰো ঈশ্বৰ, আত্মাৰো আত্মা স্বৰূপ হৈ যায়, সেই পৰমাত্মাৰ লগতে একীভাৱ হৈ যায় (এক

হবলৈ যিমনেই জন্ম নহওক কিয়)। এই আধ্যায়ত স্পষ্ট কৰা হ'ল যে যজ্ঞ-তপৰ ভোক্তা, মহাপুৰুষৰো ভিতৰত থকা শক্তি মহেশ্বৰ হয়, সেয়ে-

এইদৰে শ্ৰীমৎভগৱত্ গীতাৰূপী উপনিষদ এবং ব্ৰহ্মবিদ্যা তথা যোগশাস্ত্ৰ বিষয়ক শ্ৰীকৃষ্ণ আৰু অৰ্জুনৰ সংবাদৰ “যজ্ঞভোক্তা মহাপুৰুষস্তু মহেশ্বৰঃ” নামৰ পঞ্চম আধ্যায় পূৰ্ণ হ'ল।

ইতি শ্ৰীমৎ পৰমহংস পৰমানন্দস্য শিষ্য স্বামী অড়গড়ানন্দকৃতে শ্ৰীমৎভগৱত্ গীতায়াঃ ‘যথার্থ গীতা’ ভাষ্য “যজ্ঞভোক্তা মহাপুৰুষস্তু মহেশ্বৰঃ” নাম পঞ্চমোহধ্যায়ঃ ॥ ৫ ॥

॥ হৰি ওঁ তৎসৎ ॥

‘ওঁ’

শ্ৰী পৰমাত্মনে নমঃ

অথ ষষ্ঠোহধ্যায়ঃ

সংসাৰত ধৰ্মৰ নামত চলা ৰীতি-নীতি, পূজা-পদ্ধতি, সম্প্ৰদায়ৰ প্ৰসাৰতা হোৱাত দুৰ্নীতিৰ শমন কৰি এক ঈশ্বৰৰ থাপনা আৰু তাৰ প্ৰাপ্তীৰ প্ৰক্ৰিয়াক প্ৰশস্ত কৰিবৰ কাৰণে কোনো মহাপুৰুষৰ আৰ্বিভাৱ হয়। ক্ৰিয়াক এৰি বহি গ’ল আৰু জ্ঞানী বুলি কোনোৱে কবলৈ ধৰিলে এনেকুৱা অনীতি কৃষ্ণ কালত অত্যন্ত ব্যাপক আছিল। সেইকাৰণে এই আধ্যায়ৰ আৰম্ভনীতেই যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই এই প্ৰশ্নক চতুৰ্থ বাৰলৈ নিজেই উঠালে যে জ্ঞানযোগ তথা নিষ্কাম কৰ্মযোগ দুটাৰ অনুসৰিয়েই কৰ্ম কৰিব লাগিব।

দুই আধ্যায়ত তেওঁ কৈছিল- অৰ্জুন! ক্ষত্ৰিয়ৰ কাৰণে যুদ্ধতকৈ অধিক কল্যাণকাৰী ৰাস্তা একোৱে নাই। এই যুদ্ধত হাৰিলে দেৱত্ব প্ৰাপ্ত আৰু জিকিলে মহামহিম স্তিতি প্ৰাপ্ত কৰিবা, এনে ভাবি যুদ্ধকৰা। অৰ্জুন! এইবুদ্ধি তোমাৰ কাৰণে জ্ঞানযোগৰ বিষয়ত কোৱা হ’ল। কোন বুদ্ধি? এইটোৱে যে যুদ্ধ কৰা। জ্ঞানযোগৰ বিষয়ত এনেকুৱা নহয় যে ভৰিত ভৰি তুলি বহি থাকক। জ্ঞানযোগত মাত্ৰ নিজৰ লাভ-লোকচান নিজে নিশ্চয়কৰি নিজৰ শক্তি বৃদ্ধি লৈ কৰ্মত প্ৰবৃত্ত হব লাগে, প্ৰেৰক কিন্তু মহাপুৰুষেই থাকিব। জ্ঞানযোগত কৰ্ম কৰাটো অনিবাৰ্য।

তিনি আধ্যায়ত অৰ্জুনে প্ৰশ্ন কৰিলে যে ভগৱান। নিষ্কাম কৰ্ম যোগৰ অপেক্ষা জ্ঞান। আপুনি শ্ৰেষ্ঠ বুলি কৈছে, তেতিয়াহলে মোক এই ঘোৰ কৰ্মত কিয় লগাইছে? অৰ্জুনক নিষ্কাম কৰ্মযোগ টান যেন লাগিল। ইয়াত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছে যে দুয়োবিধ নিষ্কাম কৰ্মমোৰ দ্বাৰা কোৱা হ’ল; কিন্তু কোনোটো পথতেই কৰ্মক ত্যাগ কৰি চলাৰ বিধান নাই। এনেকুৱা নহয় যে কৰ্ম আৰম্ভ নকৰিলে কোনো পৰম নৈষ্কৰ্মৰ সিদ্ধি পাব, আৰু আৰম্ভ নকৰা ক্ৰিয়াক ত্যাগ কৰিলে কোনোৱে সেই পৰমসিদ্ধি লাভ কৰে। দুইটা মাৰ্গতেই

নিৰ্দিষ্ট কৰ্ম-যজ্ঞৰ প্ৰক্ৰিয়াক কৰিব লাগিবই।

অৰ্জুনে এতিয়া ভালদৰেই বুজি পালে যে জ্ঞানমার্গ ভাল লাগক বা নিষ্কাম কৰ্মযোগ, দুটা দৃষ্টিতেই কৰ্ম কৰিবই লাগিব, আকৌ পঞ্চম আধ্যাত তেওঁ প্ৰশ্ন কৰিলে যে- ফলৰ দৃষ্টিত কোনটো শ্ৰেষ্ঠ? কোনটো সুবিধাজনক? শ্ৰীকৃষ্ণই কলে - অৰ্জুন। দুইটাই পৰম শ্ৰেয় দিব পৰা। একেটা স্থানতে দুইটাই পোৱাই দিয়ে, তথাপিও সাংখ্যৰ অপেক্ষা নিষ্কাম কৰ্মযোগেই শ্ৰেষ্ঠ; কিয়নো নিষ্কাম কৰ্মৰ আচৰণ নকৰাকৈ কোনো সন্যাসী হব নোৱাৰে। দুইটাতে কৰ্ম একেই। সেয়ে স্পষ্ট হয় যে সেই নিৰ্দ্দাৰিত কৰ্ম নকৰাকৈ কোনো সন্যাসী হব নোৱাৰে। মাত্ৰ এই পথত চলা পথিকৰে দৃষ্টি বেলেগ যিটো কোৱা হৈছে।

শ্ৰীভগবানুবাচ

অনাশ্ৰিতঃ কৰ্মফলং কাৰ্যং কৰ্ম কৰোতি যঃ।

স সন্ন্যাসী চ যোগী চ ন নিৰগ্নিৰ্ন চাক্ৰিয়ঃ ॥ ১ ॥

শ্ৰীকৃষ্ণ মহাৰাজে কলে- অৰ্জুন! কৰ্মফলৰ আশ্ৰয়ৰ পৰা বহিত হৈ অৰ্থাৎ কৰ্ম কৰাৰ সময়ত কোনো প্ৰকাৰৰ কামনা নৰখাকৈ যি কৰাৰ যোগ্য প্ৰক্ৰিয়াৰ বিশেষেৰে কৰি যায় তেওঁৰেই সন্যাসী, তেৱে যোগী। মাত্ৰ অগ্নিক ত্যাগ কৰিলেই বা ক্ৰিয়াক ত্যাগ কৰিলেই সন্যাসীও নহব বা যোগীও নহব। ক্ৰিয়া বহুত আছে। তাৰ ভিতৰত কৰাৰ যোগ্য ক্ৰিয়া নিৰ্দ্দাৰিত কৰা কোনো ক্ৰিয়া বিশেষ। সেইটো হ'ল যজ্ঞৰ প্ৰক্ৰিয়া-যাৰ শুদ্ধ অৰ্থ হ'ল আৰাধনা, যি আৰাধ্য দেৱত প্ৰৱেশ দিয়াৰ পৰা বিধি বিশেষ। তাক কাৰ্য্যৰূপ দিয়াই হ'ল কৰ্ম। যি জনে তাক কৰে তেওঁ সন্যাসী, তেৱে যোগীও। মাত্ৰ অগ্নিক ত্যাগ কৰা জন যে বা কৰ্ম ত্যাগ কৰা জন মাত্ৰ এইটোৱে কয় আৰু কৰ্ম আৰম্ভই নকৰে, কৰাৰ যোগ্য ক্ৰিয়া-বিশেষক নকৰে, তেতিয়াহলে তেওঁ সন্যাসীও নহয়, যোগীও নহয়। এই ক্ষেত্ৰত আৰু চাওক-

যং সন্ন্যাসমিতি প্ৰাৰ্থ্যোৰ্গং তং বিদ্ধি পাণ্ডৱ।

ন হ্যসন্ন্যস্তসঙ্কল্পো যোগী ভবতি কশ্চন ॥ ২ ॥

অৰ্জুন! যাক সন্যাস এনেকুৱা কোৱা হয়, তাকে তুমি যোগী বুলি জানা; কিয়নো সংকল্পৰ ত্যাগ নকৰাকৈ কোনো পুৰুষেই যোগী হ'ব নোৱাৰে অৰ্থাৎ কামনাৰ ত্যাগ দুই মাৰ্গীৰ বাবে আৱশ্যক আছে। তেতিয়া কৈ দিলে যে মই সংকল্প নকৰো আৰু সহজতে হৈ গ'ল যোগী-সন্যাসী? শ্ৰীকৃষ্ণেই কয়-এনেকুৱা কেতিয়াও হব নোৱাৰে।

আৰুক্ষোমুনেৰ্যোগং কৰ্ম কাৰণমুচ্যতে।

যোগাৰুঢ়স্য তস্যৈৱ শমঃ কাৰণমুচ্যতে ॥ ৩ ॥

যোগত আৰু ইচ্ছাথকা মননশীল পুৰুষৰ বাবে যোগৰ প্ৰাপ্তিত কৰ্ম কৰাই কাৰণ হয় আৰু যোগৰ অনুষ্ঠান কৰি যেতিয়া তেওঁ পৰিণাম দিবৰ অৱস্থাত আহি যায়, সেই যোগাৰুঢ়তাত সম্পূৰ্ণ সংকল্পৰ অভাৱ কাৰণ হয়। ইয়াৰ আগতে সংকল্পই নেৰেই আৰু-

যদা হি নেদ্ৰিয়ার্থেষু ন কৰ্মস্বনুষজ্জতে।

সৰ্ব সঙ্কল্প সন্যাসী যোগাৰুঢ়স্ত দোচ্যতে ॥ ৪ ॥

যি কালৰ পুৰুষ নতো ইন্দ্ৰিয়ৰ ভোগতেই আসক্ত থাকে আৰু ন কৰ্মতেই আসক্ত থাকে (যোগৰ পৰিপক্ক অৱস্থাত পালে আগলৈ কৰ্ম কৰি কাক বিচাৰিব? সেয়ে নিয়ত কৰ্ম আৰাধনাৰ আৱশ্যকতাই নাথাকে। সেইকাৰনে তেওঁ কৰ্মতো আসক্ত নাথাকে) সেই কালত - সকলো সংকল্পৰ অভাৱ হৈ যায়। সেয়াই সন্যাস, সেয়াই যোগাৰুঢ়তা। ৰাস্তাত সন্যাস নামৰ কোনো বস্তুৱেই নাই। এই যোগাৰুঢ়তাৰ পৰা লাভ কি?

উদ্ধৰেদাত্মনাত্মানং নাত্মানমৱসাদয়েৎ।

আত্মৈৱ হ্যাত্মনো বন্ধুৰাত্মৈৱ ৰিপুৰাত্মনঃ ॥ ৫ ॥

অৰ্জুন! মানুহে নিজৰ দ্বাৰাই নিজক উদ্ধাৰ কৰা উচিত। নিজৰ আত্মক অধোগতিত নিব নালাগে, কিয়নো এই জীৱাত্মা স্বয়ং নিজৰে মিত্ৰ আৰু এই জীৱাত্মা নিজৰেই শত্ৰুও হয়। কেতিয়া ই শত্ৰু হয় আৰু কেতিয়া ই মিত্ৰ হয়? এই ক্ষেত্ৰত কৈছে-

বন্ধুৰাত্মাত্মনস্তস্য যেনাত্মৈৱাত্মনা জিতঃ।

অনাত্মনস্ত শত্ৰুত্বে ৰৱেতৈত্মৈৱ শত্ৰুৱৎ ॥ ৬ ॥

যি জীৱাত্মাৰ দ্বাৰা মন আৰু ইন্দ্ৰিয় সমূহৰ সৈতে শৰীৰক জিকিছে, তেওঁৰ কাৰণে তাৰ জীৱাত্মাই মিত্ৰ আৰু যাৰ দ্বাৰা মন আৰু ইন্দ্ৰীয় সমূহৰ সৈতে শৰীৰক জিকা নাই তেওঁৰ বাবে তেওঁ স্বয়ং শত্ৰু। এই দুটা শ্লোকত শ্ৰীকৃষ্ণই একেটা কথাকেই কৈছেযে নিজৰ দ্বাৰাই নিজৰ আত্মাক উদ্ধাৰ কৰক, তাক অধোগতিলৈ নিনয়ক, কিয়নো আত্মাই মিত্ৰ। সৃষ্টিত বেলেগ কোনো শত্ৰু নাই আৰু কোনো মিত্ৰও নাই। কি ধৰণে? যাৰ দ্বাৰা মনৰ সৈতে ইন্দ্ৰিয় সমূহক জিকিছে তেওঁৰ কাৰণে তেওঁৰ আত্মাই মিত্ৰ হৈ কাম কৰে, পৰম কল্যাণ কৰিব পৰা হয় আৰু যাৰ দ্বাৰা মনৰ সৈতে ইন্দ্ৰিয় বিলাকক জিকা নাই, তেওঁৰ বাবে তেওঁৰ আত্মাই শত্ৰু হৈ শত্ৰুতা কৰে, অনন্ত যোনি আৰু যাতনাৰ ফালে লৈ যায়। প্ৰায়মানুহে কয়-মইতো আত্মা হওঁ। গীতাত লিখা আছে, ইয়াক শস্ত্ৰই কাটিব নোৱাৰে, অগ্নিয়েও জ্বলাব নোৱাৰে, বায়ুৱেও শুকাব নোৱাৰে। ই নিত্য, অমৃত স্বৰূপ, সলাব নোৱাৰা, শাস্ত্ৰত আৰু সেই আত্মাই মোৰ লগত আছে। তেওঁলোকে গীতাৰ এই শাৰীবিলাক মন কৰা নাই যে আত্মা অধোগতিলৈও যাব পাৰে। আত্মাৰ উদ্ধাৰো হয়, যাৰ বাবে - কৰাৰ যোগ্য পত্ৰিকা বিশেষ কৰিহে উপলব্ধী কৰিব পাৰি। এতিয়া অনুকূল আত্মাৰ লক্ষণ চাওক-

জিতাত্মনঃ প্ৰশান্তস্য পৰমাত্মা সমাহিতঃ।

শীতোষ্ণসুখদুঃখেযু তথা মানাপমানয়োঃ ॥ ৭ ॥

শীত-তাপ, সুখ-দুখ আৰু মান-অপমানতো যাৰ অন্তঃকৰণৰ বৃত্তিবোৰ উত্তম প্ৰকাৰে শান্ত হৈছে, এনে স্বাধীন আত্মাৰান পুৰুষত পৰমাত্মা সদায়েই স্থিত হৈ থাকে, কেতিয়াও বেলেগ নহয়। অৰ্থাৎ যিজনে মন সহিত ইন্দ্ৰিয় বিলাকক জিকি লৈছে, বৃত্তি পৰম শান্তিতে প্ৰবাহিত হৈ গৈছে। (এইয়েই আত্মাৰ উদ্ধাৰৰ অৱস্থা) আগলৈ কয়-

জ্ঞান বিজ্ঞানতৃপ্তাত্মা কূটস্থো বিজিতেন্দ্ৰিয়ঃ।

যুক্ত ইত্যুচ্যতে যোগী সমলোপ্তাশ্মাকাধনঃ ॥ ৮ ॥

যাৰ অন্তঃ কৰণ জ্ঞান-বিজ্ঞানেৰে তৃপ্ত হৈ আছে, যাৰ স্থিতি অচল, স্থিৰ আৰু বিকাৰৰহিত, যিজনে ইন্দ্ৰিয়বোৰক বিশেষ ৰূপে জিকিছে, যাৰ

দৃষ্টিত মাটি, শিল আৰু সোন সমান, এনে যোগীক যুক্ত, বুলি কোৱা হয়। 'যুক্ত'ৰ অৰ্থ হ'ল- যোগত সংযুক্ত হোৱা। এইটো হ'ল যোগৰ পৰাকাষ্ঠা, যাক যোগেশ্বৰে পঞ্চম আধ্যায়ত সাত শ্লোকৰ পৰা বাৰ শ্লোকলৈকে চিত্ৰিত কৰিছে। এক ইঞ্চিও ইঞ্চৰ পৰা দূৰত আছে, জানিবৰ ইচ্ছাও আছে, তেতিয়ালৈকে তেওঁ অজ্ঞানী। সেই প্ৰেৰক কেনে সৰ্বব্যাপ্ত? কেনে প্ৰেৰণা দিয়ে? কেনেকৈ বহুতো আত্মাক পথ- পদৰ্শন কৰে? কেনেকৈ তেওঁ ভূত, ভবিষ্য আৰু বৰ্তমানৰ জ্ঞাতা? সেইজন প্ৰেৰক ইষ্টৰ কাৰ্য্যপ্ৰণালীৰ জ্ঞানেই 'বিজ্ঞান'। যি দিনাখনৰ পৰা হৃদয়ত ইষ্টৰ আৰ্হিভাৱ হয়, সেই দিনাৰ পৰাই তেওঁ নিৰ্দেশ দিব ধৰে; কিন্তু আৰম্ভনীত সাধকে বুজি নেপায়। অন্তিম কালতহে যোগীয়ে তেওঁৰ আন্তৰিক কাৰ্য্যপ্ৰণালীক পূৰ্ণভাৱে বুজি পায়। এই বুজিপোৱা হ'ল বিজ্ঞান। যোগৰূঢ় অথবা যুক্তপুৰুষৰ অন্তঃকৰণ জ্ঞান-বিজ্ঞানেৰে তৃপ্ত হৈ থাকে। এইদৰে যোগযুক্ত পুৰুষৰ স্থিতি নিৰূপণ কৰি যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণে পুনৰ কয়-

সুহান্মিত্ৰাৰ্যুদাসীনমধ্যস্থদেয়বন্ধুষু ।

সাধুষ্যপি চ পাপেষু সমবুদ্ধিৰ্বিশিষ্যতে ॥ ৯ ॥

প্ৰাপ্তীৰ পশ্চাত্ মহাপুৰুষ সমদৰ্শী আৰু সমবৰ্তী হয়। যেনেকৈ আগৰ শ্লোকত তেখেতে কলে যে যি পূৰ্ণ জ্ঞাতা বা পণ্ডিত, তেওঁ বিদ্যা-বিনয় সম্পন্ন ব্ৰাহ্মণ, চাণ্ডাল, গৰু-কুকুৰ-হাতীত সমান দৃষ্টিৰান হয়, তাৰে এইটো হ'ল পূৰক শ্লোক। তেওঁ হৃদয়ত সহায় কৰিব পৰা সুহৃদ, মিত্ৰ, শত্ৰু, উদাসীন, দেবী, বন্ধুগণ, ধৰ্মাত্মা তথা পাপীতো সমান দৃষ্টিৰান পুৰুষ যি যোগযুক্ত তেওঁ অতি শ্ৰেষ্ঠ। তেওঁ নিজৰ কাৰ্য্যৰ প্ৰতি দৃষ্টি নিদিয়া বৰঞ্চ তেওঁৰ ভিতৰৰ আত্মাৰ সঞ্চাৰ প্ৰতিহে তেওঁৰ দৃষ্টি পৰে। এই সকলো বিলাকৰ মাত্ৰ ইমানেই প্ৰভে সম্পন্ন কৰিব পাৰে।

তিনি আধ্যায়ত তেৱে যজ্ঞৰ নাম লৈছিল আৰু কৈছিল যে যজ্ঞৰ প্ৰক্ৰিয়াই হ'ল সেই নিয়ত কৰ্ম। চাৰি আধ্যায়ত তেখেতে যজ্ঞৰ স্বৰূপ বিস্তাৰ কৰিছিল, যত প্ৰাণৰ অপানত হৰন, অপানক প্ৰাণত হৰন, প্ৰাণ-অপানৰ গতিনিৰোধ কৰি মনক নিৰোধ কৰিব পৰা যায়। সকলো মিলাই যজ্ঞৰ শুদ্ধ অৰ্থ হ'ল আৰাধনা তথা সেই আৰাধ্য দেৱলৈকে লৈ যাব পৰা প্ৰক্ৰিয়া, যিটো

পঞ্চম আধ্যায়ত কোৱা হ'ল। কিন্তু তাৰ কাৰণে আসন, ভূমি, কৰাৰ বিধি ইত্যাদিৰ চিত্ৰণ বাকী আছিল, তাৰ ওপৰত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই ইয়াত প্ৰকাশ কৰিছে।

যোগী যুঞ্জীত সততমাত্মানং বহসি স্থিতঃ।

একাকী যতচিত্তাত্মা নিৰাশীৰ্পৰিগ্ৰহঃ ॥ ১০ ॥

চিত্তক জিকিব ধৰা যোগীয়ে মন, ইন্দ্ৰিয়বোৰ আৰু শৰীৰক বশত ৰাখি, বাসনা আৰু সংগ্ৰহ ৰহিত হৈ, একান্ত স্থানত অকলে চিত্তক (আত্ম উপলব্ধি কৰাৰ পৰা) যোগ-ক্ৰিয়াত লগাব লাগে। তাৰ কাৰণে স্থান কেনেকুৱা হব? আসন কেনেকুৱা হব?

শুটো দেশে প্ৰতিষ্ঠাপ্য স্থিৰমাসনমাত্মনঃ।

নাত্যচ্ছিতং নাতিনীচং চৈলাজিনকুশোত্তৰম্ ॥ ১১ ॥

শুদ্ধভূমিত কুশ, মৃগছাল, বস্ত্ৰ অথবা ইয়াতকৈ উত্তৰোত্তৰ (ৰেচমী, উনী, তক্তা যি কোনো) বিছাই নিজৰ আসনক বেছি ওখও নহয়, বেছি চাপৰো নহয়, স্থিৰ ভাৱে স্থাপন কৰিব লাগে। শুদ্ধ ভূমি মানে সাৰি-মটি চাফা কৰা। মাটিত কিবা এটা পাৰিব লাগিব, মৃগছাল হওক বা ঢাৰি বা কিবা কাপোৰ, তক্তা যি পোৱা যায় কিবা বিছাব লাগে। আসন লৰচৰ যাতে নকৰে। মাটিৰ পৰা বেছি ওখও নহয় চাপৰো নহয়। 'পূজ্য মহাৰাজজী' প্ৰায়ে পাঁচ ইঞ্চি ওখ আসনত বহিছিল। এবাৰ এজন ভক্তই এক ফুট ওখ সংগমৰমৰৰ এটা আসন অনাই দিলে। মহাৰাজজী এদিন তো বহিলে তাৰ পিছত কলে, "নহয় অ'। বহুত ওখ হৈ গ'ল। ওখত বহিব নাপায়, সাধুক অভিমান আহিব। তলতো বহিব নেপায়, হীন ভাৱনা আহি যায়, নিজৰ প্ৰতি ঘৃণা ভাৱ হৈ যায়।" বচ্ তাক উঠালে হাবিত এটা বাগিচা আছিল, তাতে থৈ দিলে। তালৈ মহাৰাজো কেতিয়াও নগ'ল আৰু এতিয়াও কোনো নাযায়। এইটো আছিল সেই মহাপুৰুষৰ ক্ৰিয়াত্মক শিক্ষণ। এইধৰণে সাধককো বহুত ওখ আসন হব নালাগে, ভজন পূৰ্ণ দেৰি হব। অহংকাৰ প্ৰথমে আহিব। তাৰ পিছত-

তত্রৈকাগ্ৰং মনঃ কৃত্বা যতচিত্তেন্দ্ৰিয়ক্ৰিয়ঃ।

উপবিশ্যাসনে যুঞ্জ্যাদ্যোগমাত্মনিশুদ্ধয়ে ॥ ১২ ॥

সেই আসনত বহি(বহিয়ে ধ্যান কৰাৰ বিধান আছে), মনক একাগ্ৰ কৰি, চিত্ত আৰু ইন্দ্ৰিয়বিলাকৰ ত্ৰিষ্ণাৰবশত ৰাখি অন্তঃকৰণৰ শুদ্ধিৰ কাৰণে যোগাভ্যাস কৰিব লাগে। এতিয়া বহাৰ পদ্ধতি কয়-

সমং কায়শিৰোগ্ৰীৰং ধাৰয়ন্নচলং স্থিৰং।

সম্প্ৰক্ষ্য নাসিকাগ্ৰং স্বংদিশ শ্চানবলোকয়ন্ ॥১৩ ॥

শৰীৰ, ডিঙি আৰু মূৰক পোন কৰি অচল, স্থিৰ কৰি (যেনে কোনোবাই মুৰ্ত্তী এটা ঠিয় কৰি ৰাখি দিছে)। এইদৰে চিধা, দৃঢ় ভাৱে বহক আৰু নিজৰ নাকৰ অগ্ৰভাগক চাই (নাকৰ জোঙা অংশ চাবলৈ নিৰ্দেশ দিয়া নাই, আনকি পোনভাৱে বহিলে নাকৰ পোনে পোনে য'ত দৃষ্টি পৰে, তাতে দৃষ্টি ৰাখিব লাগে। সোঁৱে-বাৱেঁ চাই চঞ্চলতা নাহক) অন্য দিশবোৰক নেচাই স্থিৰ হৈ বহি যাওক আৰু-

প্ৰশান্তাত্মাবিগতভীৰ্দ্ৰম্মাচাৰি ব্ৰতেস্থিতঃ।

মনঃ সংযম্য মচ্চিত্তো যুক্ত আসীত মৎপৰঃ ॥ ১৪ ॥

ব্ৰহ্মাচাৰ্য্য ব্ৰতত স্থিৰ হৈ (প্ৰায় লোকে কয় যে জননেন্দ্ৰিয়ৰ সংযম ব্ৰহ্মাচাৰ্য্য বুলি কয়; কিন্তু মহাপুৰুষৰ অনুভূতিত হয় যে বিষয় বিলাকৰ স্মৰণ কৰি, চকুৰে তেনেকুৱা দৃশ্য দেখি, ছালেৰে স্পৰ্শ কৰি, কানেৰে বিষয় উত্তেজক শব্দ শুনি জননেন্দ্ৰিয় সংযম সম্ভৱ নহয়। ব্ৰহ্মাচাৰীৰ বাস্তৱিক অৰ্থ হ'ল ব্ৰহ্মাৰ আচৰণ হ'ল নিয়ত কৰ্ম, যজ্ঞৰ প্ৰক্ৰিয়া, যাক কৰাজন সনাতন ব্ৰহ্মত প্ৰবেশ কৰে। ইয়াৰ কৰিবৰ সময়ত বাহিৰৰ স্পৰ্শ, মন আৰু সকলো ইন্দ্ৰিয় বিলাকৰ স্পৰ্শ বাহিৰতে ত্যাগ কৰি চিত্তক ব্ৰহ্ম-চিত্তনত, শ্বাস-প্ৰশ্বাসত ধ্যানত লগায়। মন ব্ৰহ্মত আছে যেতিয়া বাহ্য-স্মৰণ হয়, তেতিয়াহলে মন ক'ত লাগিল? বিকাৰ শৰীৰত নাথাকে, মনৰ টোত থাকে। মন ব্ৰহ্মাচৰণত লাগিছে, তেতিয়া জননেন্দ্ৰিয়ৰ সংযম নহয়, সকলো ইন্দ্ৰিয় সংযম কৰিবলৈ স্বাভাৱিক হৈ পৰিব। সেয়ে ব্ৰহ্মাৰ আচৰণত স্থিত থাকি) ভয়ৰহিত আৰু উত্তম প্ৰকাৰে যাৰ অন্তঃকৰণ শান্ত আছে, মনক সংযত কৰি ৰাখিছে মোতেই লাগি থকা চিত্তৰে মোৰ পৰায়ণ হৈ স্থিত হোৱা। এনে কৰাৰ পৰিণাম কি হব?

যুঞ্জন্নেবং সদাঘ্নানং যোগী নিয়তমানসঃ ।

শান্তিং নিৰ্ৰাণপৰমাং মৎসংস্থামধিগচ্ছতি ॥ ১৫ ॥

এই প্ৰকাৰে নিজক নিৰন্তৰ তেওঁৰেই চিন্তনত লাগি থাকি, সংযম মন থকা যোগী মোতেই স্থিতি ৰূপী শেষ শান্তি প্ৰাপ্তী কৰে। সেইকাৰণে নিজক নিৰন্তৰ কৰ্মত লগাওক। ইয়াত এই প্ৰশ্ন শেষ হয়। আগৰ দুটা শ্লোকত তেওঁ কৈছে যে পৰমানন্দ শান্তিৰ বাবে শাৰীৰিক সংযম, যুক্তাহাৰ-বিহাৰৰ আৱশ্যক আছে-

নাত্যশ্নতস্ত যোগোহস্তি ন চৈকান্তমনশ্নতঃ ।

ন চাতি স্বপ্নশীলস্য জাগ্ৰতো নৈব চার্জুন ॥ ১৬ ॥

অৰ্জুন ! এই যোগ বেছিকৈ খোৱা জনৰ সিদ্ধ নহয় আৰু কমকৈ খোৱা জনৰ সিদ্ধ নহয়, অত্যন্ত শুৱা জনৰো আৰু অত্যন্ত জাগৃত থকা জনৰো সিদ্ধ নহয়। তেতিয়া কাৰ সিদ্ধ হয় ?

যুক্তাহাৰবিহাৰস্য যুক্তচেষ্টস্য কৰ্মসু ।

যুক্তস্বপ্নাৰবোধস্য যোগো ভৱতি দুঃখহা ॥ ১৭ ॥

দুখৰ নাশ কৰিব পৰা এই যোগ উচিত আহাৰ-বিহাৰ, কৰ্মত উপযুক্ত চেষ্টা আৰু সম্বলিত শয়ন-জাগৰণ কৰা জনৰেই পূৰ্ণ হয়। অধিক ভোজন কৰিলে, এলাহ, টোপনি আৰু প্ৰমাদেৰে বেৰি ধৰিব, তেতিয়া সাধনা নহয়। ভোজন এৰি দিলেও ইন্দ্ৰিয় বিলাক দুৰ্বল হৈ যাব, অচল ভাৱে, স্থিৰ ভাৱে বহাৰ ক্ষমতাই নাথাকিব। ‘পূজ্য মহাৰাজ জীয়ে কৈছিল নিজৰ খোৰাকতকৈ ডেড়-দুটা ৰুটি কম খাব লাগে। বিহাৰ অৰ্থাৎ-সাধনৰ অনুকূল বিচৰণ, কিছু পৰিশ্ৰমো কৰা উচিত, কিবা এটা কাম কৰিব লাগে, নহলে ৰক্ত সঞ্চাৰ শিথিল হৈ যায়, ৰোগে আক্ৰমণ কৰিব। আয়ু শুৱা-জগা, আহাৰ আৰু অভ্যাসেৰে কম-বেছি হয়। ‘মহাৰাজ জীয়ে কৈছিলে- “যোগীয়ে চাৰিঘণ্টা শুব লাগে, আৰু অনবৰত চিন্তনত লাগি থাকিব লাগে। জোৰ কৰি নুশুৱাজন সোনকালেই পাগল হৈ যায়।” কৰ্মত উপযুক্ত চেষ্টাও থাকক অৰ্থাৎ নিৰ্দিষ্ট কৰ্ম আৰাধনাৰ অনুৰূপ নিৰন্তৰ প্ৰয়ত্নশীল হব লাগে। বাহ্যিক বিষয়ৰ স্মৰণ নকৰি সদায়েই তাতে লাগি থকা জনৰহে যোগ সিদ্ধ হয়। লগতে-

যদা বিনিয়তং চিত্তমাত্মন্যোৰাৱৰ্তিষ্ঠতে।

নিঃস্পৃহঃ সৰ্বকামেভ্যো যুক্ত ইত্যুচ্যতে তদা ॥ ১৮ ॥

এই ধৰণেযোগৰ অভ্যাসেৰে বিশেষ ৰূপেৰে বশত কৰা চিত্ত যি সময়ত পৰমাত্মাত উত্তম প্ৰকাৰে স্থিত হৈ যায়, বিলীন হৈ যায়, সেই সময়ত সম্পূৰ্ণ কামনাৰ ৰহিত হোৱা পুৰুষক যোগযুক্ত বুলি কোৱা হয়। এতিয়া বিশেষ ৰূপেৰে জিকা চিত্তৰ লক্ষণ কি?

যথা দীপো নিৰাতস্বে নেপ্ততে সোপমা স্মৃতা।

যোগিনো যতচিত্তস্য যুঞ্জতো যোগমাত্মনঃ ॥ ১৯ ॥

যি ধৰণে বায়ু নোহোৱা স্থানত ৰখা চাকী লৰচৰ নহয়, শিখা পোনে পোনে ওপৰলৈ যায়, তাত কম্পন নহয়, সেই উদাহৰনে পৰমাত্মাৰ ধ্যানত লগা যোগীৰ জিকা চিত্তৰ কাৰণে দিয়া হৈছে। চাকীতো উদাহৰণ মাত্ৰ। আজিকালি চাকীৰ প্ৰচলন হেৰাই যাব ধৰিছে। ধূপকাঠি জ্বলাই ললে তাৰ ধূৱা পোনে পোনে ওপৰলৈ যায়, যদি বায়ুৰ বেগ নাথাকে। এইটো যোগীৰ জিকা চিত্তৰ এটা উদাহৰণ মাত্ৰ। এতিয়া চিত্ত হবপায় জিকা হৈছে, নিৰোধ হৈ গৈছে, কিন্তু চিত্ততো এতিয়াও আছে। যেতিয়া নিৰুদ্ধ চিত্তৰো বিলয় হৈ যায়, তেতিয়া কি বিভূতি পোৱা হয়? চাওক-

যত্রোপৰমতে চিত্তং নিৰুদ্ধং যোগসেৱয়া।

যত্র চৈৱাত্মনাত্মানং পশ্যন্নাত্মনি তুষ্যতি ॥ ২০ ॥

যি অৱস্থাত যোগৰ অভ্যাসেৰে (অভ্যাস নকৰাকৈ কেতিয়াও নিৰোধ হব নোৱাৰে, সেয়ে যোগ অভ্যাসৰ দ্বাৰা) নিৰুদ্ধ হোৱা চিত্তও উপৰাম হৈ যাৰ, বিলয় হৈ যাব, সেই অৱস্থাত নিজৰ আত্মাৰ দ্বাৰা পৰমাত্মাক দৰ্শন কৰি নিজৰ আত্মাতেই সন্তুষ্ট হৈ থাকে। পৰমাত্মাক দৰ্শন কৰি থাকে কিন্তু সন্তুষ্ট নিজৰ আত্মাতেই হৈ থাকে; কিয়নো প্ৰাপ্তীকালত পৰমাত্মাৰ সাক্ষাৎকাৰতো হয়েই কিন্তু তাৰ পিছতেই তেওঁ নিজৰ আত্মাক সেই শাস্ত্ৰত ঈশ্বৰীয় বিভূতিৰ লগত ওতঃ-প্ৰোতঃ হৈ থকা দেখা পায়। ব্ৰহ্ম অজৰ-অমৰ, শাস্ত্ৰত, অব্যক্ত আৰু অমৃত-স্বৰূপ হয়। হয়তো অচিন্ত্যও, যেতিয়ালৈকে চিত্ত আৰু চিত্তৰ

টো থাকে, তেতিয়ালৈকে সি আপোনাৰ উপভোগৰ বাবে নহয়। চিত্তৰ নিৰোধ আৰু চিত্তৰ বিলয়কালত হে পৰমাত্মাৰ সাক্ষাৎকাৰ হয়, আৰু দৰ্শনৰ ঠিক পিছতেই সেই ঈশ্বৰীয় গুণধৰ্মৰে সংযুক্ত নিজৰ আত্মাক দেখা পায়, সেইকাৰণে তেওঁ নিজৰো আত্মাত সম্ভৃষ্ট হৈ থাকে। এইয়ে তেওঁৰ স্বৰূপ। এইয়ে পৰাকাষ্টা। ইয়াৰ পৰিপূৰক আগৰ শ্লোক চাওক-

সুখমাত্যস্তিকং যত্তদ্বুদ্ধি গ্রাহ্যমতীন্দ্রিয়ম্।

ৰেত্তি যত্র ন চৈৱায়ং স্থিতশ্চলতি তত্ত্বতঃ ॥ ২১ ॥

তথা ইন্দ্রিয় সমূহৰ অতিত, মাত্ৰ শুদ্ধ হোৱা সুক্ষ্ম বুদ্ধিৰ দ্বাৰা গ্ৰহণ কৰাৰ যোগ্য যি অনন্ত আনন্দ আছে তাক যি অৱস্থাত অনুভৱ কৰা হয় আৰু যি অৱস্থাত স্থিত হোৱা যোগী ভগৱৎ স্বৰূপ তত্বক জানি অচল হৈ থাকে, সদায় তেওঁতেই প্ৰতিষ্ঠিত হৈ থাকে, তথা-

যং লব্ধ্বা চাপৰং লাভং মন্যতে নাধিকং ততঃ।

যস্মিন্স্থিতো ন দুঃখেন গুৰুণাপি বিচাল্যতে ॥ ২২ ॥

পৰমেশ্বৰৰ প্ৰাপ্তীৰূপী যি লাভ, পৰাকাষ্টাৰ শান্তি প্ৰাপ্ত কৰি তাতকৈ অধিক লাভ একোৱে নামানে আৰু ভগৱৎপ্ৰাপ্তীৰূপী যি অৱস্থাত স্থিত হোৱা যোগী অত্যন্ত দুখতো চঞ্চল নহয়, দুখ তেওঁৰ অনুভৱেই নহয়; কিয়নো অনুভৱ কৰিব পৰা চিত্ত নিৰোধ হৈ গৈছে, সেই ধৰণে-

তং বিদ্যাৎ দুঃখ সংযোগ বিয়োগং যোগসংগঞ্জিতম্।

স নিশ্চয়েন যোক্তব্যো যোগেহনিৰ্বিঘ্নচেতসা ॥ ২৩ ॥

যি সংসাৰৰ সংযোগ বিয়োগৰ পৰা ৰহিত, তাৰ নামেই যোগ। যি আত্যস্তিক সুখ, তাৰ মিলনৰ নাম যোগ। যাক পৰমতত্ত্ব পৰমাত্মা কোৱা হয়, তাৰ লগত মিলনৰ নামেই যোগ। সেই যোগ উচিতাই দিয়া চিন্তেৰে নিশ্চয়পূৰ্বক কৰা কৰ্ত্তব্যত নপৰে। ধৈৰ্য্য সহকাৰে-লাগি থকা যোগত হে সফলতা লাভ কৰিব পাৰি।

সঙ্কল্পপ্ৰভবান্‌কামাংস্ত্যক্ত্বা সৰ্বানশেষতঃ।

মনসৈৱেन्द्रিয়গ্রামং বিনিয়ম্য সমন্ততঃ ॥ ২৪ ॥

সেইকাৰণে মানুহক লাগিব যে সংকল্পৰ পৰা উৎপন্ন হোৱা সম্পূৰ্ণ কামনা-বাসনা আৰু আসক্তিৰ সৈতে সম্পূৰ্ণ ত্যাগ কৰি, মনৰ দ্বাৰা ইন্দ্ৰিয় সমূহক সকলো ফালৰ পৰা উত্তম প্ৰকাৰে বশ কৰি-

শনৈঃ শনৈৰূপৰমেদ্বুদ্ধ্যা ধৃতিগৃহীতয়া ।

আত্মসংস্থং মনঃ কৃত্বা ন কিঞ্চিৎ দপি চিন্তয়েৎ ॥ ২৫ ॥

ক্ৰমে ক্ৰমে অভ্যাস কৰি উপৰামতা প্ৰাপ্ত হৈ যায়। চিন্তাৰ নিৰোধ আৰু ক্ৰমশঃ বিলয় হৈ যায়। তেতিয়া তেওঁ ধৈৰ্য্যযুক্ত বুদ্ধি দ্বাৰা মনক পৰমাত্মাত স্থিত কৰি অন্য কোনো চিন্তা কৰিব নালাগে। নিৰন্তৰ লাগি থকাৰ বিধান আছে। কিন্তু আৰম্ভনীত মন নবহে, এই ক্ষেত্ৰত যোগেশ্বৰে কয়-

যতো যতো নিশ্চৰতি মনশ্চঞ্চলমস্থিৰম্ ।

ততস্ততো নিয়ম্যৈতদাত্মন্যেৰ বশং নয়েৎ ॥ ২৬ ॥

স্থিৰ থাকিব নোৱাৰা এই চঞ্চল মন যিবোৰ কাৰণত সাংসাৰিক পদাৰ্থত বিচৰণ কৰি থাকে, তাক বাধা কৰি বাৰে-বাৰে অন্তৰাত্মাতেই নিৰোধ কৰিব। প্ৰায়লোকে কয় যে মন য'তেই যাওক যাবলৈ দিয়া, প্ৰকৃতিতেইতো যাব, আৰু প্ৰকৃতিও সেই ব্ৰহ্মৰে অন্তৰ্গত, প্ৰকৃতিত বিচৰণ কৰা ব্ৰহ্মৰ বাহিৰত নহয়; কিন্তু শ্ৰীকৃষ্ণই কব বিচাৰে যে মন য'লৈ যাব, যি মাধ্যমেদি যাব, সেই মাধ্যমবিলাকক বাধা দি পৰমাত্মাতেই লগাওক। মনৰ নিৰোধ সম্ভৱ হয়। এই নিৰোধৰ পৰিণাম কি হব ?

প্ৰশান্তমনসং হ্যেনং যোগিনং সুখমুত্তমম্ ।

উপৈতি শান্তৰজসং ব্ৰহ্মভূতমকল্মষম্ ॥ ২৭ ॥

যাৰ মন পূৰ্ণ ৰূপত শান্ত হৈ আছে, যি পাপ ৰহিত, যাৰ ৰজো গুণ শান্ত হৈ গৈছে, এনে ব্ৰহ্মত একীভূত যোগীয়ে সৰ্বোত্তম আনন্দ প্ৰাপ্ত কৰে, তাতকৈ উত্তম একোৱেই নাই। এয়াতে পুনৰ জোৰ দি কৈছে-

যুঞ্জন্মেরং সদাত্মানং যোগী বিগতকল্মষঃ

সুখেন ব্ৰহ্মসংস্পৰ্শমত্যন্তং সুখমশ্নুতে ॥ ২৮ ॥

পাপৰহিত যোগী এইধৰণে আত্মাক নিৰন্তৰ সেই পৰমাত্মাত লগাই সুখেৰে পৰব্রহ্ম পৰমাত্মাক প্ৰাপ্তিৰ অনন্ত আনন্দৰ অনুভূতি লাভ কৰে। সেই অৰ্থাৎ ব্ৰহ্মক স্পৰ্শ আৰু প্ৰৱেশৰ লগে-লগে অনন্ত আনন্দৰ অনুভৱ কৰে। সেয়ে ভজন অনিবাৰ্য্য। এই ক্ষেত্ৰত আগত কয়-

সৰ্বভূতস্থমাত্মানং সৰ্বভূতানি চাত্মনি ।

ঈক্ষতে যোগযুক্তাত্মা সৰ্বত্র সমদৰ্শনঃ ॥ ২৯ ॥

যোগৰ পৰিণামেৰে যুক্ত আত্মাৱান, সকলোতে সমভাৱে দেখা যোগী, আত্মাক সম্পূৰ্ণ প্ৰাণীত ব্যাপ্ত ভাৱে দেখা আৰু সম্পূৰ্ণ ভূত প্ৰাণীক আত্মাতেই প্ৰৱাহিত দেখে। এই ধৰণে দেখাৰ পৰা লাভ কি?

যো মাং পশ্যতি সৰ্বত্র সৰ্বং চ ময়ি পশ্যতি ।

তস্যাহং ন প্ৰণশ্যামি স চ মে ন প্ৰণশ্যতি ॥ ৩০ ॥

যি পুৰুষে সম্পূৰ্ণ ভৌতিকক মোতে পৰমাত্মাতে দেখে, ব্যাপ্ত ভাৱে সম্পূৰ্ণ ভূতক মোৰ পৰমাত্মাবেই অৰ্ন্তগত দেখে, তাৰ কাৰণে মই অদৃশ্য নহওঁ, আৰু সি মোৰ কাৰণেও অদৃশ্য নহয়। এইটো প্ৰেৰকৰ সন্মুখ মিলন, সখ্য ভাৱ, সামিপ্য মুক্তি।

সৰ্বভূতস্থিতং যো মাং ভজত্যেকত্বমাস্থিতঃ ।

সৰ্বথা বৰ্তমানোহপি স যোগী ময়ি বৰ্ততে ॥ ৩১ ॥

যি পুৰুষ অনেকতাতো উপৰোক্ত একত্ব ভাৱেৰে মোক পৰমাত্মাক ভজন কৰে, সেই যোগী সকলো প্ৰকাৰৰ কাৰ্য্য কৰিও মোতেই লাগি থাকে; কিয়নো মোক এৰি তাৰ কাৰণে একোৱে বাকী নাই। তাৰ সকলো শেষ হৈ গ'ল, সেইকাৰণে সি এতিয়া উঠা-বহা যিয়েই কৰে সকলো মোৰ সংকল্পতেই কৰে।

আত্মোপম্যেন সৰ্বত্র সমং পশ্যতি যোহৰ্জুন ।

সুখং বা যদি বা দুঃখং স যোগী পৰমো মতঃ ॥ ৩২ ॥

হে অৰ্জুন! যি যোগী নিজৰেই সমান সম্পূৰ্ণ ভূতত সমভাৱে দেখে, নিজৰ নিচিনাই দেখে, সুখ আৰু দুখতো সকলোতে সমান দেখে, সেই যোগী

(যাৰ ভেদভাৱ সমাপ্ত হৈ গৈছে) পৰম শ্ৰেষ্ঠ মনা হয়। প্ৰশ্নপূৰ্ণ হ'ল, ইয়াত অৰ্জুনে প্ৰশ্ন কৰিছে-

অৰ্জুন উবাচ

যোহয়ং যোগস্তয়া প্ৰোক্তঃ সাম্যেন মধুসূদন।

এতস্যাং ন পশ্যামি চঞ্চলত্বাৎস্থিতিং স্থিৰাম্ ॥ ৩৩ ॥

হে মধুসূদন! এই যোগ যিটো আপুনি প্ৰথমে কলে, যাৰ ফলত সমত্বভাৱৰ দৃষ্টি হয়, মনৰ চঞ্চলতাৰ কাৰণে বহুত সময় লৈকে ইয়াত স্থিৰ হোৱা স্থিতি মই নিজকে নেদেখো।

চঞ্চলং হি মনঃ কৃষ্ণং প্ৰমাথি বলৱদ্দৃঢ়ম্।

তস্যাহং নিগ্রহং মন্যে ৰায়োৰিৰ সুদুষ্কৰম্ ॥ ৩৪ ॥

হে কৃষ্ণ ! এই মন বৰ চঞ্চল, প্ৰমথন স্বভাৱৰ, (প্ৰমথন অৰ্থাৎ অন্যক মথিব পৰা) জেদি তথা বলৱান আছে, সেইকাৰণে ইয়াক বশত কৰিব পৰাটো মই বায়ুৰ দৰে অতি দুষ্কৰ ভাবিছো। ধুমুহা বতাহ আৰু ইয়াক ৰখা সমানেই। এই ক্ষেত্ৰত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কয়-

শ্ৰীভগৱানুবাচ

অসংশয়ং মহাবাহো মনো দুৰ্নিগ্রহং চলম্।

অভ্যাসেন তু কৌন্তেয় বৈৰাগ্যেণ চ গৃহ্যতে ॥ ৩৫ ॥

মহানকাৰ্য্য কৰিবৰ কাৰণে প্ৰয়ত্নশীল অৰ্থাৎ মহাবাহু অৰ্জুন! নিঃসন্দেহে মন বৰ চঞ্চল, বৰ কষ্টেৰেহে বশত আনিব পৰা হয়, কিন্তু হে কৌন্তেয়! ই অভ্যাস আৰু বৈৰাগ্যৰ দ্বাৰা বশত আনিব পাৰি। য'ত চিন্তক লগাব লগিয়া আছে, তাতে স্থিৰ কৰিবলৈ বাৰে-বাৰে প্ৰয়ত্ন কৰাৰ নামেই অভ্যাস তথা দেখি-শুনি বিষয় বস্তুত (সাংসাৰিক বা স্বৰ্গীয় ভোগত) ৰাগ অৰ্থাৎ আকৰ্ষনক ত্যাগ কৰাই হ'ল বৈৰাগ্য। শ্ৰীকৃষ্ণই কয় যে মনক বশত কৰা বৰ কঠিন; কিন্তু অভ্যাস আৰু বৈৰাগ্যৰ দ্বাৰা ইয়াক বশত আনিব পাৰি।

অসংযতাত্মনা যোগো দুশ্ৰাপ ইতি মে মতিঃ।

ৰশ্যাত্মনা তু যততা শক্যোহৰাপ্তসপায়তঃ ॥ ৩৬ ॥

অৰ্জুন ! মনক বশত কৰিব নোৱাৰা পুৰুষৰ কাৰণে যোগ প্ৰাপ্ত হোৱা কঠিন আছে, কিন্তু নিজৰ বশত মনক ৰখা প্ৰয়ত্নশীল পুৰুষৰ কাৰণে যোগ সহজ আছে, এইটো মোৰ নিজৰ মত হয়। যিমান কঠিন বুলি তুমি ভাবিছা, সিমান কঠিন নহয়। সেয়ে ইয়াক কঠিন বুলি নেভাৱিবা, প্ৰয়ত্নশীল ভাৱে লাগি যোগ প্ৰাপ্ত কৰা; কিয়নো মনক বশ কৰিলেহে যোগ সম্ভৱ হয়। ইয়াত অৰ্জুনে প্ৰশ্ন কৰিলে-

অৰ্জুন উৱাচ

অযতিঃ শ্ৰদ্ধয়োপেতো যোগাচ্চলিতমানসঃ।

অপ্ৰাপ্য যোগসংসিদ্ধিং কাং গতিং কৃষ্ণ গচ্ছতি ॥ ৩৭ ॥

যোগ কৰি থকা সময়ত কাৰোবাৰ মন যদি চঞ্চল হৈ যায়, যদিও এতিয়াও যোগত তেওঁৰ শ্ৰদ্ধা আছে, তেতিয়া এনে পুৰুষ ভগৱৎসিদ্ধি প্ৰাপ্ত নহৈ কি গতি হ'ব?

কচ্চিন্নোভয়ৱিভ্ৰষ্ট শিছ্নাভ্ৰমিৰ নশ্যতি।

অপ্ৰতিষ্ঠো মহাবাহো ৰিমূঢ়ো ব্ৰহ্মণঃ পথি ॥ ৩৮ ॥

মহাবাহু শ্ৰীকৃষ্ণঃ। ভগৱৎপ্ৰাপ্তীৰ পথত বিচলিত হোৱা সেই মোহিত পুৰুষ টুকুৰা-টুকুৰ হোৱা ডাৱৰৰ দৰে নষ্ট-ভ্ৰষ্টতো নহয়? সৰু এটুকুৰা মেঘ আকাশত লাগিল, সি বৰষিবও নোৱাৰে- ঘূৰি গৈ মেঘৰ লগত মিলিবও নোৱাৰে আনকি বতাহৰ কোবত চাই থাকোতেই নষ্ট হৈ গ'ল। সেইদৰে শিথিল প্ৰয়ত্নশীল, অলপ সময়লৈকে সাধন কৰিলে, আকৌ স্থগিত কৰিলে তেওঁ নষ্টতো হৈ নাযায়? তেওঁ আপোনাত প্ৰৱেশ কৰিব নোৱাৰে, আৰু ভোগো ভোগীৰ নোৱাৰিলে তেওঁৰ কি গতি হ'ব?

এতন্মে সংশয়ং কৃষ্ণছেত্ৰুমৰ্হস্যশেষতঃ।

ত্বদন্যঃ সংশয়স্যস্য ছেত্তা ন হ্যুপপদ্যতে ॥ ৩৯ ॥

হে কৃষ্ণ! মোৰ এই সংশয়ক সম্পূৰ্ণ ভাৱে দূৰ কৰিবলৈ আপুনিয়ৈ সক্ষম। আপোনাৰ অতিৰিক্ত অন্য কোনোৱেই এই সংশয়ক দূৰ কৰা সম্ভৱ নহয়। ইয়াত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছে- শ্ৰীভগৱানুবাচ

পাৰ্থ নৈবেহ নামুত্র বিনাশস্তস্য বিদ্যতে।

ন হি কল্যাণকৃৎকশ্চিদ্দুৰ্গতিং তাত গচ্ছতি ॥ ৪০ ॥

পাৰ্থিৰ শৰীৰক বথ বনাই লক্ষ্যৰ ফালে অগ্ৰসৰ হোৱা অৰ্জুন! সেই পুৰুষৰ এই লোকতো আৰু পৰলোকতো নাশ নহয়; কিয়নো হে তাত! সেই পৰমকল্যাণকাৰী নিৰ্দিষ্ট কৰ্ম কৰাজন দুৰ্গতিত প্ৰাপ্ত নহয়। তাৰ কি হয়?

প্ৰাপ্য পুণ্যকৃতাং লোকানুযিত্বাশাস্ত্ৰীঃ সমাঃ।

শুচীনাং শ্ৰীমতাং গেহে যোগভ্ৰষ্টেহভিজায়তে ॥ ৪১ ॥

মন চঞ্চল হোৱা যোগভ্ৰষ্ট হোৱা সেই পুৰুষে পুণ্যৱানৰ লোকত বাসনাৰ ভোগ কৰি (যি বাসনাক লৈ তেওঁৰ যোগভ্ৰষ্ট হৈছিল, ভগৱানে কম বস্ত্ৰৰ ভিতৰতে সকলো দেখাই-শুনাই, তাকে ভোগকৰি) তেওঁ শুদ্ধ আচৰণ থকা শ্ৰীমান পুৰুষৰ ঘৰত জন্ম লয়। (যি শুদ্ধ আচৰণ কৰে, তেৱেই শ্ৰীমান)

অথবা যোগিনামেৰ কুলে ভবতি ধীমতাম্।

এতন্ধি দুৰ্লভতৰং লোকে জন্ম যদিদৃশম্ ॥ ৪২ ॥

অথবা তাত জন্ম নেপালেও যোগী বিলাকৰ কুলত সি প্ৰৱেশ কৰে। শ্ৰীমানৰ ঘৰত পবিত্ৰ সংস্কাৰ লৰালি কালৰ পৰাই পাব ধৰে; কিন্তু তাত জন্ম নেপালে তেওঁ যোগীৰ কুলত (ঘৰত নহয়) শিষ্য-পৰম্পৰাত প্ৰৱেশ কৰে। কবীৰ, তুলসী, বৈদাস, বাম্বীকি ইত্যাদিক শুদ্ধ আচৰণ কৰা শ্ৰীমানৰ ঘৰত নহয়, যোগীৰ কুলত প্ৰৱেশ পালে। সদগুৰুৰ কুলত সংস্কাৰৰ পৰিবৰ্ত্তনও এক জন্ম আৰু এনে জন্ম সংসাৰত নিঃসন্দেহে অতিদুৰ্লভ। যোগীৰ ইয়াত জন্ম হোৱাৰ অৰ্থ তেওঁৰ শৰীৰেৰে পুত্ৰ ৰূপত উৎপন্ন হোৱা নহয়। গৃহত্যাগ কৰাৰ পূৰ্বে জন্ম হোৱা লৰাই মোহবশত মহাপুৰুষক পিতা বুলি মাতিলেও কিন্তু মহাপুৰুষৰ বাবে ঘৰৰ বুলি কোনো নাথাকে। যি শিষ্যই তেওঁ মান-মৰ্যাদা ৰাখি অনুষ্ঠান কৰি থাকে, তেওঁৰ মহত্ব লৰাতকৈ বহু গুণ বেছি হয়। তেৱেই তেওঁৰ প্ৰকৃত পুত্ৰ।

যি যোগৰ সংস্কাৰেৰে যুক্ত নহয়, তেওঁক মহাপুৰুষে নিজৰ কৰি নলয়। যদি সাধু বনালে হেতেন, তেতিয়া হলে সহস্ৰ বিৰক্ত পুৰুষ তেওঁৰ শিষ্য হ'ল হেতেন। কিন্তু তেওঁ বহুতক ভাড়া দি, কাৰোবাক জাননী দি, চিঠি

পঠিয়াই, বুজাই-বঢ়াই সকলোকে তেওঁলোকৰ ঘৰলৈ ঘূৰাই দিলে। বহুতো লোকে জিদ কৰিবলৈ ধৰিলে, তেতিয়া তেওঁলোকে অমংগল দেখিবলৈ ধৰিলে। আন্তৰিক বাধা হবলৈ ধৰিলে যে এওঁৰ সাধু হবৰ বাবে এটাও লক্ষণ নাই। ইয়াক ৰাখিলে উচিত নহব, ই পাৰ নহব। নিৰাশ হৈ দুই-এজনে পাহাৰৰ পৰা জাপ মাৰি নিজৰ প্ৰাণো দিলে, কিন্তু মহাৰাজে তেনেকুৱা বোৰক তাত নাৰাখিলে। পাছত গম পোৱাত কলে “জানিছিলো যে বৰ বিকল, কিন্তু তেওঁলোকে সচাকৈ মৰি যাম বুলি কলে ৰাখি লব। এজন পতিত হৈও থাকিল হেতেন, বাকী বিলাকৰ কি হ’ল হেতেন?” মমতা তেওঁলোকতো প্ৰবল আছিল, তথাপিও নেৰাখিলে। ছয়-সাত জনক আদেশ হৈছিল যে “আজি এটা যোগভ্ৰষ্ট আহি আছে, জন্ম জন্ম ভ্ৰমি থকা আহি আছে, এই নামৰ আৰু এই ৰূপৰ আহি আছে কোনোবা, তাক ৰাখা, ব্ৰহ্মবিদ্যাৰ উপদেশ দিয়া, তেওঁক আগ বঢ়োৱা।” মাত্ৰ তেওঁকহে ৰখা হ’ল। আজিও তেওঁলোকৰ ভিতৰৰ এজন মহাপুৰুষ ধাৰকুণ্ডিত বহি আছে, এজন অনুসুইয়াত, দুই-তিনি জন অন্য ঠাইত আছে। তেওঁলোকৰ সদৃশৰ কুলত প্ৰবেশ কৰিবলৈ দিয়া হ’ল। এনে মহাপুৰুষ পাবলৈ বৰ দুৰ্লভ।

তত্র তৎ বুদ্ধিসংযোগং লভতে পৌৰ্ণদেহিকম্।

যততে চ ততো ভূয়ঃ সংসিদ্ধৌ কুব্জনন্দন ॥ ৪৩ ॥

তাত সেই পুৰুষ প্ৰথম অৰ্থাৎ আগৰ শৰীৰত সাধন কৰা বুদ্ধিৰ সংযোগত অৰ্থাৎ পূৰ্বজন্মৰ সাধন সংস্কাৰক অনায়াসে প্ৰাপ্ত কৰি লয়, আৰু হে কুব্জনন্দন! তাৰ প্ৰভাৱত তেওঁ আকৌ **‘সংসিদ্ধৌ’** ভগৱৎপ্ৰাপ্তীৰূপী পৰমসিদ্ধিৰ বাবে যত্ন কৰিবলৈ ধৰে।

পূৰ্বাভ্যাসেন তেনৈব হয়তে হৰশোহপি সঃ।

জিঞ্জাসুবপি যোগস্য শব্দব্ৰহ্মাতিৰততে ॥ ৪৪ ॥

শ্ৰীমান সকলৰ ঘৰত বিষয়ৰ বশত থাকিলেও তেওঁ পূৰ্বজন্মৰ অভ্যাসেৰে ভগৱৎ পথৰ বাবে আকৰ্ষিত হয় আৰু যোগত শিথিল প্ৰয়ত্ন থকা সেই জিঞ্জাসু বাণীৰ বিষয় পাৰ কৰি নিৰ্বাণ পদ প্ৰাপ্ত কৰে। তাৰ প্ৰাপ্তীৰ এয়েই বিধান। কোনোবাই এক জন্মত নাপাবও পাৰে।

প্রযত্নাদ্যতমানস্ত যোগী সংশুদ্ধকিল্বিষঃ।

অনেক জন্ম সংসিদ্ধস্ততো যাতি পৰাং গতিম্।। ৪৫।।

অনেক জন্মত প্রযত্ন কৰা যোগী পৰমসিদ্ধি প্ৰাপ্ত কৰে। প্রযত্নপূৰ্বক অভ্যাস কৰা যোগী সকলো পাপৰ পৰা শুদ্ধ হৈ পৰমগতি প্ৰাপ্ত কৰে। প্ৰাপ্তীৰ এয়াই ক্ৰম। প্ৰথমে শিথিল প্রযত্নৰে তেওঁ যোগ আৰম্ভ কৰে, মন চঞ্চল হোৱাৰ কাৰণে জন্ম লয়, সদৃগুৰুৰ কুলত প্ৰবেশ পায় আৰু প্ৰত্যেক জন্মত অভ্যাস কৰি তাতে পায়, যাৰ নাম পৰমগতি। শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছিল যে এই যোগত বীজৰ নাশ নহয়। আপুনি যদি দুই খোজও গৈছে, সেই সাধনৰ বিনাশ নাই। যি কোনো পৰিস্থিতিত থাকিও পুৰুষে এইটো কৰিব পাৰে। কাৰণ হ'ল অলপ সাধন তো পৰিস্থিতিত আৱদ্ধ থকা ব্যক্তিয়েও কৰিব পাৰে; কিয়নো তেওঁৰ ওচৰত সময় নাই। আপুনি ক'লা হওক বা বগা হওক, বা যিয়েই হওক, গীতা সকলোৰ কাৰণে। আপোনাৰো কাৰণে, কাৰণ আপুনিতো মানুহ। অধিক যত্নৱান যিয়েই নহওক, কিন্তু কম যত্ন কৰিব পৰা গৃহস্থ লোকেই হয়। কোনোবা 'সাধু' নামৰ বিচিত্ৰ প্ৰাণীৰ কাৰণে মাত্ৰ নহয়। শেষত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই নিৰ্ণয় দিছে-

তপস্বিভ্যোহধিকো যোগী জ্ঞানিভ্যোহপি মতোহধিকঃ।

কৰ্মিভ্যশ্চাধিকো যোগী তস্মাদ্যোগী ভবাজুন।। ৪৬।।

তপস্বীতকৈ যোগী শ্ৰেষ্ঠ, জ্ঞানীতকৈও শ্ৰেষ্ঠ বুলি ধৰা হয়। কৰ্মী বিলাকতকৈও যোগী শ্ৰেষ্ঠ। সেইকাৰণে হে অৰ্জুনস্তু তুমি যোগী হোৱা।

‘তপস্বী’

তপস্বী হ'ল মনেৰে সৈতে ইন্দ্ৰিয় সমূহক সংযম কৰি যোগস্থিতিত পাবলৈ তপস্যা কৰে, এতিয়াও যোগ তেওঁৰ ভিতৰত প্ৰবেশ কৰা নাই।

‘কৰ্মী’

কৰ্মী হ'ল সেই নিৰ্দিষ্ট কৰ্মক জানি তাতেই প্ৰবৃত্ত হয়। তেওঁ নিজৰ শক্তি বুজিও প্ৰবৃত্ত হব পৰা নাই আৰু সমৰ্পণ ভাৱেৰেও প্ৰবৃত্ত হব পৰা নাই। তেওঁ অকল কাম কৰিহে গৈ আছে।

‘জ্ঞানী’

জ্ঞানমাৰ্গী সকলে সেই নিৰ্দিষ্ট কৰ্মক যজ্ঞৰ পৰিক্ৰমা বিশেষক ভালদৰে বুজি নিজৰ শক্তি অনুসৰি তাত প্ৰবৃত্ত হয়। তেওঁৰ লাভ-লোকচানৰ জিন্মা নিজেই বহন কৰে। তাত দৃষ্টি ৰাখি হে চলে।

‘যোগী’

নিষ্কাম কৰ্মযোগী ইষ্টৰ ওপৰত নিৰ্ভৰ হৈ পূৰ্ণ সমৰ্পণৰ সৈতে সেই নিৰ্দিষ্ট কৰ্ম ‘যোগ সাধনা’ ত প্ৰবৃত্ত হয়, যাৰ যোগক্ষেমৰ দায়িত্ব ভগবানে তথা যোগেশ্বৰে বহন কৰে। পতনৰ পৰিস্থিতি হলেও তেওঁৰ পতনৰ ভয় নাই; কিয়নো যি পৰমতত্বক বিচাৰিছিলে, তেৱেই তেওঁক ৰক্ষা কৰাৰ ভাৰ লৈ লয়।

তপস্বীএতিয়া যোগক নিজৰে ভিতৰত প্ৰৱেশ কৰাবলৈ পয়ত্নশীল হৈ আছে। কৰ্মীয়ে মাত্ৰ কৰ্মক বুজি পাই কৰি আছে। তেওঁৰ পতনো হব পাৰে; কিয়নো তেওঁলোক দুয়োতে সমৰ্পণ আৰু নিজৰ লাভ-লোকচান দেখাৰ ক্ষমতা নাই; কিন্তু জ্ঞানীয়ে যোগৰ পৰিস্থিতিক জানে নিজৰ শক্তি বুজি পায়, তাৰ দায়িত্ব নিজৰ ওপৰতে আছে আৰু নিষ্কাম কৰ্মযোগীতো ইষ্টৰ ওপৰতে নিজক সমৰ্পণ কৰিছে, তেওঁক ইষ্টই চলায়। পৰমকল্যাণৰ পথত এই দুজনেই ঠিকেই চলি থাকে; কিন্তু যাক ইষ্টই পৰিচালনা কৰে, তেওঁ এই সকলোবোৰতকৈ শ্ৰেষ্ঠ। কিয়নো প্ৰভূৱে তেওঁক গ্ৰহণ কৰিছে। তেওঁৰ লাভ-লোকচান প্ৰভূৱে চায়। সেইকাৰণে যোগী শ্ৰেষ্ঠ। সেইকাৰণে অৰ্জুন। তুমি যোগী হোৱা। সমৰ্পণেৰে সৈতে যোগৰ আচৰণ কৰা

যোগী শ্ৰেষ্ঠ হয়; কিন্তু তাৰ ভিতৰতো সেই যোগী সৰ্বশ্ৰেষ্ঠ যি অন্তৰাত্মাত লাগি আছে, ইয়াত কৈছে-

যোগিনামপি সৰ্বেষাং মদগতেনান্তৰাত্মনা।

শ্ৰদ্ধাবান্ভজতে যো মাং স মে যুক্ততমো মতঃ।। ৪৭।।

সম্পূৰ্ণ নিষ্কাম কৰ্ম যোগী বিলাকৰ ভিতৰতো যি শ্ৰদ্ধা বিভোৰ হৈ অন্তৰাত্মাতে, অন্তৰ্চিন্তনতে মোক নিৰন্তৰ ভজনা কৰি থাকে, সেই যোগীক

মই পৰম শ্ৰেষ্ঠ বুলি মানো। ভজনা দেখুৱাবৰ বাবে বা প্ৰদৰ্শনৰ বস্তু নহয়। ইয়াৰ ফলত সমাজ অনুকূল হওক; কিন্তু প্ৰভু প্ৰতিকূল হব। ভজন অত্যন্ত গোপনীয় বস্তু আৰু ই অন্তঃকৰণতেহে হয়। তাৰ উঠা-নমা অন্তঃকৰণৰ ওপৰত নিৰ্ভৰ কৰে।

নিষ্কৰ্ষঃ

এই আধ্যায়ৰ আৰম্ভণীত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছিল যে ফলৰ আশা বাদ দি যি ‘কাৰ্য্যম্ কৰ্ম’ অৰ্থাৎ কৰিবৰ যোগ্য প্ৰক্ৰিয়া বিশেষৰ আচৰণ কৰে, তেৱেই সন্যাসী, আৰু সেই কৰ্মক কৰাজন যোগী। মাত্ৰ ক্ৰিয়া বা অগ্নিক ত্যাগ কৰাজন যোগী অথবা সন্যাসী হব নোৱাৰে। সংকল্পৰ ত্যাগ নকৰাকৈ কোনো পুৰুষ সন্যাসী অথবা যোগী হব নোৱাৰে। মই সংকল্প নকৰো- এইটো কলেই সংকল্পই পিছ নেৰে। যোগত আৰু হব ইচ্ছা থকা পুৰুষে ‘কাৰ্য্যম্ কৰ্ম’ কৰ্ম কৰা উচিত। কৰ্ম কৰি গৈ যোগাৰু হৈ গলেই, সম্পূৰ্ণ সংকল্পৰ অভাৱ হৈ যায়, তাৰ আগত নহয়। সৰ্বসংকল্পৰ অভাৱেই হ’ল সন্যাস।

যোগেশ্বৰে পুনৰ কলে যে আত্মা অধোগতিলৈ যায় আৰু তাৰ উদ্ধাৰো হয়। যি পুৰুষৰদ্বাৰা ইন্দ্ৰিয়সমূহৰ সৈতে সকলো ৰিপুকে জিকি লৈছে, তাৰ আত্মা তাৰ কাৰণে মিত্ৰ হৈ মিত্ৰতা কৰে তথা পৰম কল্যাণ কৰিব পৰা হয়। যাৰ দ্বাৰা এইবোৰ জিকা হোৱা নাই, তাৰ আত্মা শত্ৰু হৈ শত্ৰুতা কৰে, যাতনাৰ কাৰণ হৈ যায়। সেয়ে মানুহক নিজৰ আত্মা অধোগতিলৈ নাযায় তাৰ বাবে যেনে কৰিব লাগে তেনে কৰা উচিত, নিজৰ দ্বাৰা নিজৰ আত্মা উদ্ধাৰ কৰিব লাগে। তেখেতে প্ৰাপ্তীৰ পিছত যোগী কেনেকৈ থাকে তাকে কলে। ‘যজ্ঞস্থল’ বহাৰ আসন তথা বহিবৰ পদ্ধতিও তেখেতে কলে যে স্থান একান্ত আৰু পৰিস্কাৰ হোৱা উচিত। কৰ্মৰ অনূৰূপ চেপ্টা, যুক্ত আহাৰ-বিহাৰ শূৱা-জাগৃত হোৱা সম্পৰ্কে জোৰ দিলে। তাৰ আগতে আসনৰ বাবে বস্ত্ৰ, মৃগছাল বা কুশৰ চাৰি ইত্যাদি ব্যৱহাৰ কৰিবলৈ কলে। যোগীৰ নিৰুদ্ধ চিত্তৰ উদাহৰণ তেখেতে বায়ু নচলা ঠাইৰ চাকীৰ লৰচৰ নকৰা শিখাৰ লগত কৰিলে আৰু এইদৰে সেই নিৰুদ্ধ চিত্তৰো যেতিয়া বিলয় হৈ যায়, সেই সময়ত সেই যোগৰ পৰাকাষ্ঠা, অনন্ত আনন্দৰ প্ৰাপ্ত কৰে। সংসাৰৰ সংযোগ-বিয়োগৰ পৰা ৰহিত

অনন্ত সুখৰ নামেই মোক্ষ। যোগৰ অৰ্থ হ'ল তাৰ লগত মিলন। যি যোগী তাত প্ৰৱেশ কৰে, তেওঁ সম্পূৰ্ণ ভূতত সমদৃষ্টি ৰখা হয়। নিজৰ আত্মাৰ দৰেই সকলো আত্মাকে দেখে। তেওঁ পৰম আনন্দ আৰু শান্তি প্ৰাপ্ত কৰে। সেয়ে যোগ আৱশ্যক। মন য'লৈ যায়, তাৰ পৰা টানি আনি বাৰে বাৰে ইয়াৰ নিৰোধ কৰা উচিত। শ্ৰীকৃষ্ণেই স্বীকাৰ কৰিছে যে মন অত্যন্ত কঠিনত হে বশ কৰিব পাৰি, কিন্তু পৰা যায়। ইয়াক অভ্যাস আৰু বৈৰাগ্যৰ দ্বাৰা বশ কৰিব পাৰি। শিথিল প্ৰযত্ন কৰা ব্যক্তিও বহুত জন্মৰ অভ্যাসৰ ফলত তাতেই পায় গৈ, যাৰ নাম পৰম গতি বা পৰমধাম। তপস্বীসকল, জ্ঞানমাৰ্গীসকল তথা মাত্ৰ কৰ্মীবোৰত কৈ যোগীশ্ৰেণীয়ে শ্ৰেষ্ঠ। সেইকাৰণে অৰ্জুন। তুমি যোগীয়ে হোৱা। সমৰ্পণৰ সৈতে অন্তৰ্মনেৰে যোগৰ আচৰণ কৰা। প্ৰস্তুত আধ্যাত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণেই বিশেষ ৰূপত যোগৰ প্ৰাপ্তিৰ বাবে অভ্যাসৰ ওপৰত জোৰ দিলে। সেয়ে -

এই ধৰণে শ্ৰীমৎভগৱৎকৃপী উপনিষদ এবং ব্ৰহ্মবিদ্যা তথা যোগশাস্ত্ৰ বিষয়ক শ্ৰীকৃষ্ণ আৰু অৰ্জুনৰ সংবাদত **‘অভ্যাস যোগ’** নামৰ ষষ্ঠ আধ্যায় পূৰ্ণ হয়।

ইতি শ্ৰীমৎপৰমহংস পৰমানন্দস্য শিষ্য স্বামী অড়গড়ানন্দকৃতে শ্ৰীমদ্ভগবদ্গীতায়ঃ ‘ষথার্থ গীতা’ ভাষ্যে‘অভ্যাস যোগো’ নাম ষষ্ঠোহধ্যায়ঃ ॥৬॥

॥ হৰি ওঁ তৎসৎ ॥

‘ওঁ’

শ্ৰীপৰমাত্মনে নমঃ

অথ সপ্তমোহধ্যায়ঃ

আগৰ আধ্যায়বোৰত গীতাৰ মুখ্যপ্ৰায়ঃ সকলো প্ৰশ্ন খিনিৰে উত্তৰ পূৰ্ণ হৈ গৈছে। নিষ্কাম কৰ্মযোগ, জ্ঞানযোগ, কৰ্ম আৰু যজ্ঞৰ স্বৰূপ আৰু তাৰ বিধি, যোগৰ বাস্তৱিক স্বৰূপ আৰু তাৰ পৰিণাম তথা অৱতাৰ, বৰ্ণসংকৰ, সনাতন, আত্মস্থিত মহাপুৰুষৰ বাবেও লোকহিতাৰ্থে কৰ্ম কৰাৰ ওপৰত জোৰ, যুদ্ধ ইত্যাদি বিষয়ৰ ওপৰত বিশদ আলোচনা কৰা হৈছে। পাছৰ আধ্যায় বিলাকত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই উপৰোক্ত বিষয় সমূহৰ সন্দৰ্ভত বহুতো পৰিপূৰক প্ৰশ্ন লৈছে, যাৰ সমাধান আৰু অনুষ্ঠানে আৰাধনাত সহায়ক সিদ্ধ হব।

ষষ্ঠ আধ্যায়ৰ শেষৰ শ্লোকত যোগেশ্বৰে এইটো কৈ নিজেই প্ৰশ্নৰ বীজাৰোপণ কৰিছে যে যি জন যোগী - মোৰ অন্তৰতেই উত্তম প্ৰকাৰে স্থিত হৈ অন্তঃকৰণ যুক্ত হয়, তেওঁক মই অত্যন্ত শ্ৰেষ্ঠ বুলি মান্যতা দিছোঁ। পৰমাত্মাত উত্তম প্ৰকাৰে স্থিতি লোৱা মানে কি? বহুতো যোগীয়ে পৰমাত্মাক প্ৰাপ্ততো কৰে তথাপিও কৰবাত কিবা কম হৈ থাকে। অকনো ত্ৰুটি নহওক এনে অৱস্থা কেতিয়া হব? সম্পূৰ্ণকৈ পৰমাত্মাক জনাটো কেতিয়া হব? এই বিষয়ত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কয়-

শ্ৰীভগৱানুৱাচ

ময়্যাসক্তমনা : পাৰ্থ যোগং যুঞ্জন্মদাশ্ৰয়ঃ ।

অসংশয়ং সমগ্ৰং মাং যথা জ্ঞাস্যসি তচ্ছৃণু ॥ ১ ॥

পাৰ্থ ! তোমাৰ মন মোৰ লগতে আসক্ত হৈ আছে, বাহিৰত নহয়, যদিও অৰ্থাৎ মোৰ পৰায়ণ হৈ, যোগত লাগিছা (মোক এৰি নহয়) মোক যি প্ৰকাৰে সংশয় ৰহিত হৈ জানিবা, সেই সম্পৰ্কে শুনা, যাক জনাৰ পিছত অকনো সংশয় নাথাকে। বিভূতি সমূহৰ সম্পূৰ্ণ জানকাৰীৰ ওপৰত পূৰ্ণৰ

জোৰ দি কৈছে -

জ্ঞানং তেহহং সৱিজ্ঞানমিদং বক্ষ্যাম্যশেষতঃ।

যজ্জ্ঞাত্বা নেহ ভূয়োহন্যজ্জাতব্যমৱশিষ্যতে ॥ ২ ॥

মই তোমাৰ কাৰণে বিজ্ঞানৰসৈতে জ্ঞানৰ বিষয়ে সম্পূৰ্ণ কম। পূৰ্ণিকালত যজ্জই যাৰ সৃষ্টি কৰে, সেই অমৃতত্ব পাপুৰ লগে লগে জানিব পৰাই হ'ল জ্ঞান। পৰমতত্ব পৰমাত্মাক প্ৰত্যক্ষ ভাবে জনাৰ নামেই হ'ল জ্ঞান। মহাপুৰুষে একেলগে সৰ্বত্ৰত কাৰ্য্য কৰে? কি ধৰণে তেওঁ উঠায়, বহুৱায় আৰু প্ৰাকৃতিৰ দ্বন্দ্বৰ পৰা ওলিয়াই স্বৰূপলৈকে পোৱাই দিয়ে? তেওঁৰ এই কাৰ্য্য প্ৰণালীৰ নামেই বিজ্ঞান। এই বিজ্ঞান সহিত জ্ঞানক সম্পূৰ্ণকৈ কম যাক শুনি বা জানি সংসাৰত আৰু একোৱে জনাৰ যোগ্য নাথাকে। জনালোকৰ সংখ্যা বহুত কম -

মনুয্যাণাং সহস্ৰেষু কশ্চিদ্যততি সিদ্ধয়ে।

যততামপি সিদ্ধানাং কশ্চিগ্নাং বেত্তি তত্ত্বতঃ ॥ ৩ ॥

হাজাৰ জনৰ ভিতৰত কোনো এজনেহে মোক প্ৰাপ্তীৰ কাৰণে যত্ন কৰে আৰু তেনে যত্ন কৰা বিলাকৰ ভিতৰত কোনোবা যোগীয়েহে মোৰ তত্ব সাক্ষাৎকাৰ লাভ কৰে। এতিয়া সম্পূৰ্ণ তত্ব ক'ত আছে? এটা স্থানত পিণ্ড ৰূপে আছে নে সৰ্বত্ৰ ব্যাপ্ত হৈ আছে? এই বিষয়ে যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কয় -

ভূমিৰাপোহনলো বায়ুঃ খং মনো বুদ্ধিৰেৰ চ

অহঙ্কাৰ ইতীয়ং মে ভিন্না প্ৰকৃতিৰষ্টথা ॥ ৪ ॥

অৰ্জুন ! ভূমি, জল, অগ্নি, বায়ু আৰু আকাশ তথা মন, বুদ্ধি আৰু অহংকাৰ এনে বিধৰ আঠপ্ৰকাৰৰ ভেদ থকা মোৰ প্ৰকৃতি আছে। এই অষ্টধা মূল প্ৰকৃতি হয়।

অপৰেয়মিতস্কন্যাং প্ৰকৃতিং বুদ্ধি মে পৰাম্।

জীবভূতাং মহাবাহো যয়েদং ধাৰ্যতে জগৎ ॥ ৫ ॥

অৰ্থাৎ এই আঠ প্ৰকাৰৰ মোৰ 'অপৰা' প্ৰকৃতি আছে মহাবাহু অৰ্জুন ! অন্যৰ জীৱৰূপ- (পৰা) অৰ্থাৎ চেতন প্ৰকৃতি বুলি জানা, যাৰ ফলত সম্পূৰ্ণ জগত ধাৰণ কৰা হৈছে। সেইটো হ'ল জীৱত্বাও প্ৰকৃতিৰ সম্বন্ধত থকাৰ

কাৰণে প্ৰকৃতিয়ে হয়।

এতদ্যোনীনি ভূতানি সৰ্বাণীতুপধাৰয়।

অহং কৃত্‌সস্য জগতঃ প্ৰভৱঃ প্ৰলয়স্তথা।। ৬।।

অৰ্জুন! তুমি এনেভাৱে বুজা য়ে সম্পূৰ্ণ ভূত এই মহাপ্ৰকৃতিৰ দ্বাৰা, পৰা আৰু অপৰা প্ৰকৃতিৰ দ্বাৰাই উৎপন্ন হয়। এই দুইটাই একমাত্ৰ য়োনি হয়। মই সম্পূৰ্ণ জগতৰ উৎপত্তি তথা প্ৰলয়ৰূপ হওঁ অৰ্থা মূল কাৰণ হওঁ। জগতৰ উৎপত্তি মোৰ পৰাই হয় আৰু (প্ৰলয়) বিলয়ও মোতেই হয়। যেতিয়া লৈকে প্ৰকৃতি বিদ্যমান, মইয়ে তেওঁৰ উৎপত্তি হওঁ আৰু যেতিয়া কোনো মহাপুৰুষ প্ৰকৃতিৰ সিপাৰত পায়, তেতিয়া ময়েই মহাপ্ৰলয় হৈ যাওঁ, যি অনুভৱত হৈ পোৱা যায়। সৃষ্টিৰ উৎপত্তি আৰু প্ৰলয়ৰ প্ৰসংগ মানব-সমাজে কৌতুহলেৰে চায়। বিশ্বৰ বহুতো শাস্ত্ৰই ইয়াক বহু প্ৰকাৰে বুজাবৰ চেষ্টা কৰা হৈছে। কোনো-বাই কয় প্ৰলয়ত সংসাৰ ডুবি যায়, আকৌ কাৰোবাৰ মতে সূৰ্য্য ইমান তললৈ আহিব যে পৃথিৱী জ্বলি ছাইহৈ যাব। কোনোবাই ইয়াকে প্ৰলয় বুলি কয় যে সেই দিনাই সকলোৰে বিচাৰ হব আকৌ কোনোবাই নিত্য গণনাত ব্যস্ত আছে। কিন্তু যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণৰ অনুসৰি প্ৰকৃতি অনাদি, হয়, পৰিবৰ্ত্তন হৈ থাকিলেও, নষ্ট কিন্তু কেতিয়াও হোৱা নাই।

ভাৰতীয় ধৰ্মগ্ৰন্থ অনুসৰি মনুৱে প্ৰলয় দেখিছিল। তাৰ লগতে এঘাৰ জন ঋষিয়ে মৎস্যৰ শিঙত নাও বান্ধি হিমালয়ৰ এটা অতি উচ্চ শৃঙ্গত শৰণ লৈছিল। লীলাকাৰ শ্ৰীকৃষ্ণৰ উপদেশ সমূহ এবং জীৱন সম্বন্ধিত তেওঁৰ সমকালীন শাস্ত্ৰ ভাগৱতত মুকণ্ড মুনিৰ পুত্ৰ মাৰ্কণ্ডেয় দ্বাৰাও প্ৰলয়ক তেওঁৰ নিজ চকুৰে দেখা কথা বৰ্ণনা আছে। তেওঁ হিমালয়ৰ উত্তৰত পুষ্পভদ্ৰা নদীৰ পাৰত থাকিছিল।

ভাগৱতৰ দ্বাদশ স্কন্ধৰ আঠ আৰু ন আধ্যায় অনুসৰি শৌনক আদি ঋষি সকলে সূত জীক সুধিছিলে যে মাৰ্কণ্ডেয়জীয়ে মহাপ্ৰলয়ত বট গছৰ পাতত ভগৱান বালমুকুন্দৰ দৰ্শন কৰিছিল, কিন্তু তেওঁতো আমাৰ বংশৰহে আছিল, আমি বিলাকতকৈ কেই বছৰ পূৰ্বে হৈ তেওঁ আছিল। তেওঁৰ জন্মৰ পিছত কোনো প্ৰলয়ও হোৱা নাই আৰু সৃষ্টিও ডুবা নাই। সকলো যেনে আছিল

তেনে আছে, তেতিয়াহলে তেওঁ কেনেকৈ প্ৰলয় দেখিলে ?

সূত জীয়ে কলে যে মাৰ্কণ্ডেয়জীৰ প্ৰাৰ্থনাত প্ৰসন্ন হৈ নৰনাৰায়ণে তেওঁক দৰ্শন দিলে। মাৰ্কণ্ডেয় জীয়ে কলে যে মই আপোনাৰ সেই মায়া চাব বিচাৰো যাৰ দ্বাৰা প্ৰেৰিত হৈ এই আত্মাই অনন্ত যোনীত ভ্ৰমণ কৰে। ভগৱানে স্বীকাৰ কৰিলে আৰু এদিন যেতিয়া মুনি নিজৰ আশ্ৰমত ভগৱানৰ চিন্তনত তন্ময় হৈ আছিল, তেতিয়া তেওঁ দেখিবলৈ পালে যে চাৰিওফালৰ সমুদ্ৰ উত্তাল হৈ তেওঁৰ ফালে আহি আছে। তাত ডাঙৰ ঘৰিয়াল বোৰে জাপ মাৰি আছিল। তেওঁবিলাকৰ মাজত মুনি সোমাই পৰিব ধৰিছিল। মাৰ্কণ্ডেয় বাচিবৰ বাবে ইফালে সিফালে পলাব ধৰিছিল। আকাশ, সূৰ্য্য, পৃথিৱী, চন্দ্ৰ, স্বৰ্গ, জ্যোতিষ্ক মণ্ডল সকলো সেই সমুদ্ৰত ডুবি গৈ আছিল। এনে সময়ত মাৰ্কণ্ডেয় ঋষিয়ে বটগছ আৰু পাতৰ মাজত এটি শিশু দেখিবলৈ পালে; উশাহৰ লগে লগে মাৰ্কণ্ডেয়ও সেই শিশুৰ পেটলৈ সোমাই গল আৰু নিজৰ আশ্ৰম, সূৰ্য্যমণ্ডলৰ সৈতে সৃষ্টিক জীৱিত ৰূপে দেখা পালে আৰু পূৰ্ণৰ নিশাহৰ লগতে সেই শিশুৰ পেটৰ পৰা বাহিৰলৈ ওলাই আহিল। চকু মেলাত মাৰ্কণ্ডেয় ঋষিয়ে নিজক সেই আশ্ৰমতে নিজৰ আসনত বহি থকা পালে।

স্পষ্টকৈ বুজাগল যে কোটি বছৰৰ ভজনৰ পাছত সেই মুনিয়ে ঈশ্বৰীয় দৃশ্যক নিজৰ হৃদয়ত দেখিবলৈ পাইছিল, অনুভৱত দেখিছিল, বাহিৰত সকলো আগৰদৰেই আছিল। সেয়ে প্ৰলয় হ'ল যোগীৰ হৃদয়ত ঈশ্বৰৰ পৰা পোৱা অনুভূতিহে। ভজনৰ অন্ত কালত যোগীৰ হৃদয়ত সংসাৰৰ টো হেৰাই অব্যক্ত পৰমাত্মাহে থাকে, এয়াই প্ৰলয়। বাহিৰত প্ৰলয় নহয়। মহাপ্ৰলয় শৰীৰ থাকোতেই অদ্বৈতৰ অনিৱৰ্চনীয় স্থিতি ই ত্ৰিন্য়াত্মক। অকল বুদ্ধিৰ দ্বাৰা নিৰ্ণয় ললে ভ্ৰমৰ হে সৃষ্টি কৰে, লাগিলে আপুনি থাকক অথবা আমি। এই বিষয়ে আগলৈ চাওক -

মন্তঃ পৰতৰং নান্যৎকিঞ্চিদস্তি ধনঞ্জয়।

মই সৰ্বমিদং প্ৰোতং সূত্ৰে মণিগণা ইৰ ॥ ৭ ॥

হে ধনঞ্জয় ! মোৰ বাদে অলপো বেলেগ বস্তু নাই। এই সম্পূৰ্ণ জগত সুতাত মণি গথাৰ দৰে মোৰ লগত গঁথা আছে। আছে, কিন্তু জানিব কেতিয়া ? যেতিয়া (এই আধ্যায়ৰ প্ৰথম শ্লোক অনুসৰি) অনন্য ভক্তিতে মোৰ পৰায়ণ হৈ যোগত সেই ৰূপেই লাগি থাকে। তাৰ বাদে নহয়। যোগত লাগি থকাৰ ব্যৱস্থা আৱশ্যক।

বসোহহমস্তু কৌন্তেয় প্ৰভাস্মি শশিসূৰ্যয়োঃ ॥
প্ৰণৱঃ সৰ্বৱেদেষু শব্দঃ খে পৌৰুষং ন্যু ॥ ৮ ॥

হে কৌন্তেয় ! জলত ৰস ময়েই। চন্দ্ৰ আৰু সূৰ্য্যৰ প্ৰকাশ মই। সম্পূৰ্ণ বেদত ওঁকাৰ (ও-অহং-কাৰ) মোৰ নিজৰ আকাৰ হওঁ। আকাশত শব্দ আৰু পুৰুষত পুৰুষত্ব মই হওঁ। তথা মই -

পুণ্যো গন্ধঃ পৃথিব্যাং চ তেজশ্চাস্মি ৰিতাৱসৌ।
জীৱনং সৰ্বভূতেশু তপশ্চাস্মি তপস্বিশু ॥ ৯ ॥

পৃথিৱীত পবিত্ৰ গন্ধ আৰু অগ্নিত তেজময়েই। সম্পূৰ্ণ জীৱত মইয়ে জীৱন আৰু তপস্বিত মইয়ে তপ।

বীজং মাং সৰ্বভূতানাং বুদ্ধি পাৰ্থ সনাতনম্।
বুদ্ধিবুদ্ধিমতামস্মি তেজস্তেজস্বিনামহম্ ॥ ১০ ॥

হে পাৰ্থ ! তুমি সম্পূৰ্ণ ভূতৰ সনাতন কাৰণ অৰ্থাৎ বীজ মোকেই জানা। মই বুদ্ধিমানৰ বুদ্ধি আৰু তেজস্বীৰ তেজ হওঁ। এই ক্ৰমত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কয় -

বলং বলবতাং চাহং কামৰাগবিবৰ্জিতম্।
ধৰ্মাবিক্ৰদ্ধো ভূতেশু কামোহস্মি ভৱতৰ্যভ ॥ ১১ ॥

হে ভাৰত শ্ৰেষ্ঠ অৰ্জুন। মই বলৱান সকলৰ কামনা আৰু আসক্তি ৰহিত বল। সংসাৰত সকলোৱেইতো বলৱান হয়, কোনোৱাই লাঠিৰ বল দেখুৱায়, কোনোবাই পৰমাণু একত্ৰিত কৰে, কিন্তু নহয়, শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছে যে কাম আৰু ৰাগৰ পৰা যি পাৰ পাইছে সেই বল ময়েই, সেইটোহে বাস্তৱিক

বল। সকলো ভূতত ধৰ্মৰ অনুকূল কামনা ময়েই। পৰব্রহ্ম পৰমাত্মাহে একমাত্ৰ ধৰ্ম। যি সকলোকে ধাৰণ কৰিছে, যি শাস্ত্ৰত আত্মা সেইটোৱে ধৰ্ম। যি তাত অবিৰোধ কামনা ৰাখে সেইটো মইয়ে। আগতো শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছিলে যে অৰ্জুন। তুমি মোক প্ৰাপ্তীৰ কাৰণে ইচ্ছা কৰা। সকলো কামনা বিলাক বৰ্জিত আছে; কিন্তু সেই পৰমাত্মাক পাবৰ কাৰণে কামনাৰ আৱশ্যক আছে, অন্যথা আপুনি সাধন কৰ্মত প্ৰবৃত্ত হব নোৱাৰে। এনে কামনা মোৰেই দেন।

যে চৈব সাত্বিকঃ ভাৰা ৰাজসাস্ত্ৰামসাশ্চ যে।

মত্ত এবেতি তাস্বিক্ৰি ন ত্বহং তেষু তে ময়ি ॥ ১২ ॥

যি সত্বগুণৰ পৰা উৎপন্ন হোৱা ভাৰ আছে, যি ৰজোগুণ আৰু তমোগুণৰ পৰা উৎপন্ন হোৱা ভাৰ আছে, সেই সকলোবোৰ তুমি মোৰ পৰাই উৎপন্ন হোৱা বুলি জানা। কিন্তু বাস্তৱত সেইবোৰত মই আৰু মোৰ মাজত সেইবোৰ নাই। কিয়নো মই তেওঁ লোকত লাগি থকাও নাই আৰু সেইবিলাক মোৰ মাজত প্ৰৱেশ কৰিব নোৱাৰে; কিয়নো মোৰ কৰ্মৰ স্পৃহা নাই, মই নিলেপ, মোক এই বোৰ একো পাবলৈ নাই। সেই কাৰণে মোৰ মাজত প্ৰৱেশ কৰিব নোৱাৰে এনে হলেও -

যি দৰে আত্মাৰ উপস্থিতিতহে শৰীৰৰ ভোক পিয়াহ লাগে, আত্মাক অন্ন-জলৰ প্ৰয়োজন নাই, ঠিক তেনেদৰে প্ৰকৃতিয়ে পৰমাত্মাৰ উপস্থিতিতহে নিজৰ কাৰ্য্য কৰি থাকে, পৰমাত্মা তাৰ গুণ আৰু কাৰ্য্যত লিপ্ত হৈ নাথাকে।

ত্ৰিভিগুণময়ৈৰ্ভাৱৈৰেভিঃ সৰ্বমিদং জগৎ।

মোহিতং নাভিজনাতি মামেভ্যঃ পৰমব্যয়ম্ ॥ ১৩ ॥

সাত্বিক, ৰজসীক আৰু তামসিক এই তিনি গুণৰ কাৰ্য্যৰূপ ভাৱেৰে এই সম্পূৰ্ণ জগত মোহিত হৈ আছে। সেইকাৰণে মানুহে এই তিনি গুণৰ দূৰত থকা মোক অৰিনাশী তত্বক ভালদৰে নাজানে। মই এই তিনি গুণৰ পৰা দূৰত আছো অৰ্থাৎ যেতিয়ালৈকে অকনমানো গুণৰ আবৰণ থাকে, তেতিয়ালৈকে মোক কোনেও নাজানে। তেওঁ এতিয়া গৈ থাকিব লাগিব, তেওঁ এতিয়া পথিক আৰু-

দৈবী হেমা গুণময়ী মম মায়া দুৰতয়া।

মামেৰ যে প্ৰপদ্যন্তে মায়ামেতাং তৰন্তি তে ॥ ১৪ ॥

এই ত্ৰিগুণময়ী মোৰ অদ্ভুত মায়া বৰ কষ্টকৰ; কিন্তু যি পুৰুষে মোকেই নিৰন্তৰ ভজনা কৰে, তেওঁ এই মায়াৰ সিপাৰ পায়। এই মায়া হয়তো দৈবী, কিন্তু ধুপকাঠি জ্বলাই ইয়াক পূজা কৰিলে নহব; ইয়াৰ পৰা পাৰ হব লাগিব।

ন মাং দুষ্কৃতিনো মূঢ়াঃ প্ৰপদ্যন্তে নৰাধমাঃ।

মায়য়াপহতজ্ঞানা আসুৰং ভাৰমাশ্ৰিতাঃ ॥ ১৫ ॥

যি জনে মোক নিৰন্তৰ ভজনা কৰে, তেওঁ জানে। তথাপিও মানুহে নভজে। মায়াৰ দ্বাৰা যাৰ জ্ঞান অপহৰণ কৰা হৈছে, যি আসুৰী স্বভাৱক ধাৰণ কৰিছে, মনুষ্যৰ ভিতৰত অৰ্ধম, কাম-ক্ৰোধ আদি দুঃকৃতি কৰাজন মুঢ় মানুহ মোৰ ভজনা নকৰে। তেতিয়া ভজে কোনে?

চতুৰ্বিধা ভজন্তে মাং জনাঃ সুকৃতিনোহৰ্জুন।

আতো জিজ্ঞাসুৰথার্থী জ্ঞানী চ ভৰতৰ্ষভ ॥ ১৬ ॥

হে ভৰতশ্ৰেষ্ঠ অৰ্জুন! **সুকৃতিনঃ** উত্তম অৰ্থাৎ নিয়ত কৰ্ম (যাৰ পৰিণামত শ্ৰেয়ৰ প্ৰাপ্তী হয়, তাক) কৰাজন, **‘অৰ্থার্থী’** অৰ্থাৎ সকাম, আৰ্ত অৰ্থাৎ দুখৰ পৰা পৰিত্ৰাণ বিচৰাজন আৰু **‘জিজ্ঞাসু’** অৰ্থাৎ প্ৰত্যক্ষ ৰূপত জানিব বিচৰাজন আৰু **‘জ্ঞানী’** অৰ্থাৎ যি প্ৰৱেশৰ স্থিতিত আছে- এই চাৰি প্ৰকাৰৰ ভক্ত জনে মোৰ ভজনা কৰে।

‘অৰ্থ’ সেই বস্তু, যিয়ে আমাৰ শৰীৰ অথবা সম্বন্ধৰ পূৰণ কৰে। সেই কাৰণে অৰ্থ, কামনা বিলাক সকলো বস্তু প্ৰথমে ভগৱানৰ দ্বাৰাই পূৰ্ণ হয়। শ্ৰীকৃষ্ণই কয় যে মইয়ে পূৰ্ণ কৰো, কিন্তু ইমানতে বাস্তৱিক ‘অৰ্থ’ নহয়। আত্মিক সম্পত্তিহে স্থিৰ সম্পত্তি- এয়াই ‘অৰ্থ’।

সাংসাৰিক ‘অৰ্থ’ পূৰণ কৰি ভগৱানে বাস্তৱিক অৰ্থ আত্মিক সম্পত্তিৰ ফাললৈ বঢ়াই দিয়ে; কিয়নো তেওঁ জানে যে ইমানতে মোৰ ভক্ত সুখী নহয় সেইকাৰণে তেওঁ আত্মিক সম্পত্তিও তেওঁক দিব ধৰে। লোকত লাভ আৰু পৰলোকত নিৰ্বাহ এই দুইটাই ভগৱানৰ বস্তু। নিজৰ ভক্তক খালি নাৰাখে।

‘আৰ্ত’ যি দুখী। ‘জিজ্ঞাসু’ সম্পূৰ্ণকৈ জনাৰ ইচ্ছা থকা, জিজ্ঞাসুৱে মোক ভজনী কৰে। সাধনাৰ পৰিপক্ক অৱস্থাত দিক্‌দৰ্শক (প্ৰত্যক্ষ দৰ্শন)ৰ অৱস্থা থকা জ্ঞানীয়েও মোক ভজনা কৰে। এইদৰে চাৰি প্ৰকাৰৰ ভক্তই মোৰ ভজনা কৰে, যাৰ ভিতৰত জ্ঞানী শ্ৰেষ্ঠ অৰ্থাৎ জ্ঞানীও ভক্ত হয়। এই সকলোৰ ভিতৰত -

তেয়াং জ্ঞানী নিত্যযুক্ত একভক্তিৰিশিষ্যতে।

প্ৰিয়ো হি জ্ঞানিনোহত্যাৰ্থমহং স চ মম প্ৰিয়ঃ ॥ ১৭ ॥

অৰ্জুন! তেওঁলোকৰ ভিতৰতো নিত্য মোতেই একীভাৱেৰে স্থিত হোৱা, অনন্য ভক্তিকৰা জ্ঞানী বিশিষ্ট হয়; কিয়নো সাক্ষাতকাৰৰ সৈতে জনা জ্ঞানীক মই অত্যন্ত প্ৰিয় আৰু সেই জ্ঞানীও মোৰ কাৰণে অত্যন্ত প্ৰিয়। সেই জ্ঞানী মোৰেই স্বৰূপ হয় -

উদাৰাঃ সৰ্ব এবৈতে জ্ঞানী ত্বায়ৈব মে মতম্।

আস্থিতঃ স হি যুক্তাত্মা মামেবানুত্তমাং গতিম্ ॥ ১৮ ॥

যদিও এই চাৰি প্ৰকাৰৰ ভক্তবোৰ উদাৰ হয় (কোন বিধৰ উদাৰতা কি আপুনি ভক্তি কৰিলে ভগৱানে কিবা পায়নে? ভগৱানত কিবা কম আছে নেকি যি আপুনিয়ে পুৰা কৰি দিব? নহয়, বস্তুতঃ তেওঁৰ উদাৰতা আছে, যি জনে আপোনাৰ আত্মাক অধোগতিলৈ নিনিয়ে, যি জন ইয়াৰ উদ্ধাৰৰ কাৰণে অগ্ৰসৰ হয়। এইদৰে তেওঁ উদাৰ হয়।) কিন্তু জ্ঞানীতো সাক্ষাৎ মোৰ স্বৰূপ, এইটোৱে মোৰ মত; কিয়নো সেই স্থিৰবুদ্ধি জ্ঞানী ভক্ত সৰ্বোত্তম গতি স্বৰূপ মোতেই স্থিত হয়। অৰ্থাৎ তেৱেই মই, তেওঁত মই আছোঁ। মই আৰু তেওঁত কোনো প্ৰভেদ নাই। ইয়াকে পুণৰ জোৰ দি কৈছে-

বহুনাং জন্মনামন্তে জ্ঞানবান্মাং প্ৰপদ্যতে।

বাসুদেবঃ সৰ্বমিতি স মহাত্মা সুদূৰ্লভঃ ॥ ১৯ ॥

অভ্যাস কৰি বহুত জন্মৰ অন্তত জনম গ্ৰহণ কৰি, প্ৰাপ্তীহোৱা জন্মত, সাক্ষাৎকাৰ প্ৰাপ্ত কৰা জ্ঞানীয়ে ‘সকলোতে বাসুদেৱ আছে’ - এইদৰে মোক ভজনা কৰে। তেনে মহাত্মা অতি দূৰ্লভ। তেওঁ কোনো বাসুদেৱৰ প্ৰতিমা নগঢ়ে, আনকি নিজৰ অন্তৰতে তেওঁ পৰমদেৱৰ নিবাস পায়। সেই জ্ঞানী

মহাত্মাক শ্ৰীকৃষ্ণই তত্বদৰ্শীবুলিও কৈছে। এই মহাপুৰুষৰ দ্বাৰাই বাহিৰৰ সমাজৰ কল্যাণ সম্ভৱ হয়। এই ধৰণৰ প্ৰত্যক্ষ তত্বদৰ্শী মহাপুৰুষ শ্ৰীকৃষ্ণৰ শব্দত অতি দুৰ্লভ।

যেতিয়া শ্ৰেয় আৰু প্ৰেয়(মুক্তি আৰু ভোগ) দুইটাই ভগৱানৰ পৰা প্ৰাপ্ত হয়, তেতিয়া হলে সকলোৱে একমাত্ৰ ভগৱানক ভজন কৰিব লাগে, তথাপিও মানুহে তেওঁক নভজে। কিয়? শ্ৰীকৃষ্ণই কয় —

কামৈশ্চৈশ্চৈৰ্হাতজ্ঞানাঃ প্ৰপদ্যন্তেহন্যদেবতাঃ ।

তং তং নিয়মমাস্তায় প্ৰকৃত্যা নিয়তাঃ স্বয়া ॥ ২০ ॥

“সেই তত্বদৰ্শী মহাত্মা অথবা পৰমাত্মাই সকলো” মানুহে এনেকৈ নুবুজে, কিয়নো ভোগৰ কামনাৰ দ্বাৰা মানুহৰ বিবেক অপহৰণ কৰি লৈছে, সেই কাৰণে তেওঁ নিজৰ প্ৰকৃতি অৰ্থাৎ জন্ম- জন্মান্তৰৰ পৰা অৰ্জিত সংস্কাৰৰ স্বভাৱেৰে প্ৰেৰিত হৈ মোক পৰমাত্মাৰ ভিন্ন অন্য দেৱতা সকলক আৰু তেওঁলোকৰ বাবে প্ৰচলিত নিয়মৰ শৰণ লয়। ইয়াত অন্য দেৱতাৰ প্ৰসংগ প্ৰথম বাৰৰ কাৰণে আহিছে।

যো যো যাং যাং তনুং ভক্তঃ শ্ৰদ্ধয়াৰ্চিঁতুমিচ্ছতি ।

তস্য তস্যাচলাং শ্ৰদ্ধাং তামেৰ বিদধাম্যহম্ ॥ ২১ ॥

যি বিলাক সকামী ভক্ত বিলাকে যি যি দেৱতাৰ স্বৰূপক শ্ৰদ্ধা কৰি পূজা কৰিব বিচাৰে, মই সেই দেৱতাৰ প্ৰতি তেওঁৰ শ্ৰদ্ধাক স্থিৰ কৰি দিওঁ। মইয়ে স্থিৰ কৰোঁ কিয়নো দেৱতা নামৰ কোনো বস্তু থাকিলেহে তেওঁৰ শ্ৰদ্ধা স্থিৰ কৰিলেহেঁতেন।

স তয়া শ্ৰদ্ধয়াযুক্তস্ত স্যাৰাধনমীহতে ।

লভতে চ ততঃ কামান্ময়ৈৰ ৰিহিতাহি তান্ ॥২২॥

সেই পুৰুষ সেই শ্ৰদ্ধাৰে যুক্ত হোৱা দেৱ বিগ্ৰহক পূজা কৰিবলৈ তৎপৰ হয় আৰু সেই দেৱতাৰ মাধ্যমেৰে মোৰ দ্বাৰা নিৰ্মিত সেই ইচ্ছিত

ভোগ প্ৰাপ্ত কৰে। ভোগ কোনে দিয়ে? ময়েই দিওঁ। তেওঁৰ শ্ৰদ্ধাৰ পৰিণাম হ'ল ভোগ, কোনো দেৱতাই দিয়া নহয়। কিন্তু ফলটো তেওঁ পায়েই, আকৌ ইয়াত কি বেয়া আছে? ইয়াত কয়—

অন্তবতু ফলং তেষাং তদ্ভবত্যান্নমেধসাম্ ।

দেৱান্দেবয়জো যান্তি মদ্ভুক্তযান্তিমামপি ॥২৩ ॥

কিন্তু তেওঁলোক অল্পবুদ্ধি থকা বিলাকৰ সেই ফল নাশৱান হয়। আজি ফল আছে, কালিলৈ ভোগ কৰি থাকোতেই নষ্ট হৈ যাব, সেই কাৰণে ই নাশৱান। দেৱতাক পূজা কৰাজন দেৱতাকে প্ৰাপ্ত কৰে, অর্থাৎ দেৱতাও নাশৱান। দেৱতাৰ পৰা ধৰি সম্পূৰ্ণ জাগতিকবস্তু পৰিবৰ্তনশীল আৰু মৰণশীল। মোৰ ভক্তই মোকে প্ৰাপ্ত কৰে; যি অব্যক্ত তাকে প্ৰাপ্ত কৰে।

তিনি আধ্যাত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছিল যে এই যজ্ঞৰ দ্বাৰা তোমালোক দেৱতা হোৱা অর্থাৎ দৈৱী সম্পদৰ উন্নতি কৰা হয়। যেতিয়াই দৈৱী সম্পদৰ উন্নতি হব, তেতিয়াই তোমাবো উন্নতি হব। ক্ৰমশঃ উন্নতি কৰি পৰমশ্ৰেয় প্ৰাপ্ত কৰিব পাৰিবা। ইয়াত দেৱতা বুলি তাকে কোৱা হৈছে, যি দৈৱী সম্পদে পৰমদেৱ পৰমাত্মাৰ দেৱত্ব অৰ্জিত কৰিব পাৰে। দৈৱী সম্পদ হ'ল মোক্ষৰ কাৰণে, যাৰ ফলত ছাব্বিশটা লক্ষ্যগৰ কথা গীতাৰ যোদ্ধা আধ্যাত কোৱা হৈছে।

‘দেৱতা’ হৃদয়ৰ অন্তৰালত পৰমদেৱ পৰমাত্মাৰ দেৱত্ব অৰ্জিত কৰাব পৰা এটা সদগুণৰ নাম। এই আছিল অৱশ্যে ভিতৰৰ বস্তু; কিন্তু কালান্তৰত মানুহে ভিতৰৰ বস্তু বাহিৰত চাবলৈ আৰম্ভ কৰিলে। মূৰ্ত্তী সাজিলে, কৰ্মকাণ্ড ৰচনা কৰিলে আৰু বাস্তৱিকৰ পৰা আঁতৰিল। শ্ৰীকৃষ্ণই এই ভ্ৰান্তিৰ নিৰাকৰণ উপৰোক্ত চাৰি শ্লোকত কৰিছে। গীতাত প্ৰথম বাৰ অন্য দেৱতাৰ নাম লৈ তেওঁ কৈছে যে দেৱতা নাথাকে। মানুহৰ শ্ৰদ্ধা য'ত বাঢ়ি যায়, তাত ময়েই তেওঁলোকৰ ইঙ্গিত হৈ তেওঁলোকৰ শ্ৰদ্ধাক পুষ্টি সাধন কৰো আৰু ময়েই তাত ফল প্ৰদান কৰো। সেই ফল নশ্বৰ। ফলও নাশ হয়, দেৱতাও নাশ হয় আৰু দেৱতাক পূজা জনো নাশ হয়। যাৰ বিবেক নষ্ট হৈ গ'ল, সি মুঢ়বুদ্ধি সম্পন্ন অন্য দেৱতাক পূজা কৰে শ্ৰীকৃষ্ণইতো এইটো কৈছে যে অন্য দেৱতাক

পূজা কৰা বিধান অযুক্তি সঙ্গত। (আগলৈ ৯/২৩ শ্লোক দৃষ্টব্য)

অব্যক্তং ব্যক্তিমা পন্নং মন্যন্তে মামবুদ্ধয়ঃ।

পৰং ভাৱমজানন্তো মমাব্যয়মনুত্তমম্।।২৪।।

যদিও যেতিয়া দেৱতাবিলাকৰ নামত , দেৱতা নামৰ কোনো বস্তু নাই , যি ফল প্ৰাপ্ত হয় সেয়াও নাশশীল, তথাপিও সকলোৱে মোৰ ভজন নকৰে; কিয়নো বুদ্ধিহীন পুৰুষ (যেনেকৈ আগৰ শ্লোকত কোৱা হৈছিল যে কামনাৰ দ্বাৰা যাৰ-জ্ঞান অপহৰণ হৈ গৈছে) মোৰ সৰ্বেবাওম, অবিনাশী আৰু পৰম প্ৰভাৱক ভালদৰে নেজানে, সেই কাৰণে মই অব্যক্ত পুৰুষক ব্যক্তিভাৱত প্ৰাপ্ত হৈছে বুলি ভাৱে, ‘মানুহ’ বুলি ভাৱে। অৰ্থাত শ্ৰীকৃষ্ণই মনুষ্য শৰীৰধাৰী যোগী আছিল, যোগেশ্বৰ আছিল। যি নিজেই যোগী আৰু অন্যকো যোগী বনাবৰ ক্ষমতা আছে , তেওঁক যোগেশ্বৰ বুলি কোৱা হয়। সাধনাৰ শুদ্ধ পথত ক্ৰমশঃ উন্নতি কৰি তেঁৱো মহাপুৰুষৰ সেই পৰম ভাৱত স্থিত হয়। শৰীৰধাৰী হোৱা স্বত্বে তেওঁ অব্যক্ত স্বৰূপত স্থিত হৈ যায়। তথাপিও কামনাৰে বিবশহোৱা মন্দবুদ্ধিৰ মানুহবিলাকে তেওঁক সাধাৰণ ব্যক্তি বুলিয়ে ভাৱে। তেওঁলোকে ভাৱে যে আমাৰ দৰেই তো তেঁৱো জন্মহৈছে, তেওঁ কেনেকৈ ভগৱান হব পাৰে? সেই বেচেৰা বিলাকৰ নো দোষ কি? চকুৰে চালে শৰীৰেইতো দেখা পায়। তেওঁলোকে মহাপুৰুষৰ বাস্তৱিক স্বৰূপ কিয় নেদেখে? এই বিষয়ত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছে -

নাহং প্ৰকাশঃ সৰ্বস্য যোগমায়াসমাবৃতঃ।

মূঢ়োহয়ং নাভিজানাতি লোকো মামজমব্যয়ম্।।২৫।।

সামান্য লোকৰ কাৰণে মায়া এখন পৰ্দাৰ দৰে, যাৰ দ্বাৰা পৰমাত্মা আঁৰ হৈ আছে। যোগ-সাধনা বুজি পাই তেওঁ তাত প্ৰবৃত্তি হয়। ইয়াৰ পিছত যোগমায়া অৰ্থাৎ যোগক্ৰিয়াও এটা আবৰণ হৈ পৰে। যোগৰ অনুষ্ঠান কৰি থাকি তেওঁৰ শেষ পৰ্য্যায় যোগাৰূঢ়তা যেতিয়া হৈ যায় সেই আৰ্হঁত থকা পৰমাত্মা বিদিত হয়। যোগেশ্বৰে কয় মে মই নিজৰ যোগমায়াৰে ঢাক খাই আছোঁ, মাত্ৰ যোগৰ পৰিপক্ক অৱস্থাত থকা জনহে মোক দেখিবলৈ পায়। মই

সকলোৰে কাৰণে প্ৰত্যক্ষ নহওঁ সেইকাৰণে অজ্ঞানী মনুষ্যই মোক জন্মৰহিত (যাক এতিয়া জন্ম লব নালাগে) অবিনাশী, (যাৰ নাশ নহয়) অব্যক্ত স্বৰূপ (যাক পুনঃ ব্যক্ত হব নালাগে) ক নেজানে। অৰ্জুনেও শ্ৰীকৃষ্ণক নিজৰ দৰে মনুষ্য বুলি ভাবিছিল। তেওঁক যেতিয়া দৃষ্টি দিলে তেতিয়া অৰ্জুনৰ মোহ ভংগ হ'ল, প্ৰাৰ্থনা কৰিবলৈ ধৰিলে। মূল কথা হ'ল অব্যক্ত স্থিত মহাপুৰুষক আমি চিনিব নোৱাৰো, আমি প্ৰায়ঃ অন্ধ হৈ থাকোঁ। আগলৈ কয় -

বেদাহং সমতীতানি বৰ্তমানানি চাৰ্জুন।

ভৱিষ্যাণি চ ভূতানি মাং তু বেদ ন কশ্চন।।২৬।।

অৰ্জুনঙ্গ মই অতিত বৰ্তমান আৰু ভৱিষ্যতত হব লগা সম্পূৰ্ণ প্ৰাণীক জানো, কিন্তু মোক কোনেও নেজানে। কিয় নাজানে?

ইচ্ছা দ্বেষসমুখেন দ্বন্দ্বমোহেন ভাৰত।

সৰ্বভূতানি সন্মোহং সৰ্গে যান্তি পৰন্তপ।।২৭।।

ভৰতবংশী অৰ্জুন! ইচ্ছা আৰু দ্বেষ অৰ্থাৎ ৰাগ-দ্বেষ আদি দ্বন্দ্বৰ মোহেৰে সংসাৰৰ সম্পূৰ্ণ প্ৰাণী অত্যন্ত মোহত প্ৰাপ্ত হৈ আছে, সেই কাৰণে মোক নাজানে। তেতিয়াহলে কোনোৱে নাজানে? যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কয়-

যেষাং ত্বন্তুগতং পাপং জনানাং পুণ্যকৰ্মণাম্।

তে দ্বন্দ্বমোহনিৰ্মুক্তা ভজন্তে মাং দৃঢ়ব্ৰতাঃ।।২৮।।

কিন্তু পুণ্য কৰ্ম (যি সংশয়ক নাশ কৰে, যাৰ নাম কাৰ্য্যম, নিয়ত বা নিৰ্দ্দষ্ট কৰ্ম,যজ্ঞৰ প্ৰক্ৰিয়া বুলি বাৰে বাৰে বুজাব বিচৰা হৈছে, সেই কৰ্ম) কৰা জন, যি ভক্তৰ পাপ নষ্ট হৈ গৈছে, তেওঁ ৰাগ-দ্বেষ-দ্বন্দ্বৰ পৰা মোহৰ পৰা ভালদৰে মুক্ত হৈ, ব্ৰতত দৃঢ় ভাৱে থাকি মোক ভজনা কৰে। কিহৰ কাৰণে ভজনা কৰে?

জৰামৰণ মোক্ষায় মামাশ্ৰিত্য যতন্তি যে।

তে ব্ৰহ্ম তদ্বিদুঃ কৃৎস্নমধ্যাত্নং কৰ্ম চাখিলম্।।২৯।।

যি জনে মোৰ শৰণ লৈ জৰা আৰু মৰণৰ পৰা মুক্তি পাবলৈ যত্ন কৰে

, সেই পুৰুষে সেই ব্ৰহ্মাক, সম্পূৰ্ণ আধ্যাত্মিক আৰু সম্পূৰ্ণ কৰ্মক জানে আৰু সেইদৰে -

সাধিভূতাধিদৈবং মাং সাধিযজ্ঞং চ যে বিদুঃ।

প্ৰয়াণকালেহপি চ মাং তে বিদুৰ্যুক্তচেতসঃ ॥৩০॥

যি পুৰুষ অধিভূত, অধিদৈব তথা অধিযজ্ঞৰ সৈতে মোক জানে , মোতেই চিও সমাহিত কৰা সেই পুৰুষ অনন্ত কাললৈকে মোক জানিব, মোৰ লগতে স্থিত থাকি মোকেই প্ৰাপ্ত কৰিব । চাবিশ, সাতাইশ শ্লোকত তেখেতে কৈছিল যে মোক কোনেও নাজানে; কিয়নো তেওঁ মোহগ্ৰস্ত হৈ আছে। কিন্তু যি জনে সেই মোহৰ পৰা পৰিত্ৰাণৰ চেষ্টা কৰিছে, তেওঁ (ৰ) সম্পূৰ্ণ ব্ৰহ্ম (চ) সম্পূৰ্ণ আধ্যাত্ম () সম্পূৰ্ণ কৰ্ম (ছ) সম্পূৰ্ণ অধিভূত (প্ত) সম্পূৰ্ণ অধিদৈব আৰু (ছ) সম্পূৰ্ণ অধিযজ্ঞৰে সৈতে মোক জানে অর্থাৎ এই সকলোৰে পৰিণাম মই (সদগুৰু) হওঁ। তেওঁহে মোক জানে , এনে নহয় যে কোনেও নেজানে।

নিষ্কৰ্ষ :-

এই সপ্তম আধ্যায়ত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কলে যে অনন্য ভাৱেৰে মোতেই সমপিত হৈ , মোৰ আশ্ৰয় গ্ৰহণ কৰি যি জন যোগত লাগি থাকে তেওঁ সম্পূৰ্ণ ৰূপে মোক জানে । মোক জানিবৰ বাবে হাজাৰ জনৰ ভিতৰত কাত চিৎ কোনোবা জনেহে যত্ন কৰে। আৰু যত্ন কৰা সকলৰ ভিতৰত কোনোবা এজনেহে মোক জানে। তেওঁ মোক পিণ্ডৰূপেৰে একে দেশীয় হিচাবে নেদেখি সমগ্ৰত ব্যাপ্ত ভাবে দেখে। আঠটা প্ৰভেদ থকা মোৰ জড় প্ৰকৃতি আছে আৰু ইয়াৰ অন্তৰালত জীৱৰূপী মোৰ চেতন প্ৰকৃতি আছে। এই দুটাৰ সংযোগতে সম্পূৰ্ণ জগত চলি আছে। তেজ আৰু বল মোৰ দ্বাৰাই হয়। ৰাগ আৰু কাম ৰহিত বল তথা ধৰ্মানুকূল কামনাও ময়ে হওঁ। অৱশ্যে সকলোকামনা বৰ্জিত আছে, কিন্তু মোৰ প্ৰাপ্তীৰ বাবে কামনা কৰা। এনে ইচ্ছাৰ অভ্যুদয় হোৱা মোৰেই প্ৰসাদ। মাত্ৰ পৰমাত্মাক পাবৰ বাবে কৰা কামনাই ‘ধৰ্মানুকূল কামনা’।

শ্ৰীকৃষ্ণই কলে যে মই তিনিও গুণৰ পৰা অতিত আছো। পৰমৰ

স্পৰ্শ কৰি পৰমভাৱত স্থিত আছোঁ; কিন্তু ভোগাসক্ত মুঢ় পুৰুষে পোনে পোনে মোক ভজনা নকৰি অন্য দেৱতাক ভজনা কৰে, অৱশ্যে দেৱতা নামৰ কোনো বস্তুয়েই নাই। শিল- পানী- বৃক্ষ যাকেই পূজন কৰিব বিচাৰে, তাতেই তেওঁলোকৰ শ্ৰদ্ধাক মইয়ে পুষ্ট কৰো। তাৰ আৰঁত থাকি ময়ে ফল দিওঁ;কিয়নো, তাত দেৱতা নামৰ কোনো ভোগেই নাই। মানুহে মোক সাধাৰণমানুহ বুলি ভজনা নকৰে, কিয়নো মই যোগমায়াৰ দ্বাৰা ঢাক খাই আছো। অনুষ্ঠান কৰি যোগমায়াৰ আবৰণ পাৰ কৰা জনেহে মোক শৰীৰধাৰী হোৱাস্বত্বেও অব্যক্ত ৰূপে জানে; অন্য স্থিতিত নাজানে।

মোৰ ভক্ত চাৰি প্ৰকাৰ হয়- **অৰ্থাৰ্থী, আৰ্ত, জিজ্ঞাসু’ আৰু জ্ঞানী**। চিন্তন কৰি থাকি আনক জন্মৰ শেষৰ জন্ম প্ৰাপ্তি কৰা জ্ঞানী মোৰেই স্বৰূপ হয় অৰ্থাৎ অনেক জন্মত চিন্তন কৰি সেই ভগৱতৰূপ প্ৰাপ্ত কৰিব পাৰি। ৰাগ- দ্বেষেৰে মোহেৰে আবৃত মনুষ্যই মোক কদাপিও নাজানে; কিন্তু ৰাগ- দ্বেষ, মোহেৰে ৰহিত হৈ যি জনে নিয়ত কৰ্ম (যাক সংক্ষেপত আৰাধনা বুলি কোৱা হয়)ৰ চিন্তন কৰি জৰা- মৰণৰ পৰা পাৰ হবলৈ যত্নবান, সেই পুৰুষেহে সম্পূৰ্ণ ৰূপে মোক জানে। তেওঁ মোতেই প্ৰৱেশ কৰে আৰু অনন্তকাললৈকে মোকেই জানে অৰ্থাৎ পুনৰ কেতিয়াও তেওঁ বিস্মৃত নহয়।

এই আধ্যাত পৰমাত্মক সম্পূৰ্ণ জানিবৰ বাবে বিবেচনা কৰা হৈছে সেয়ে—

এইদৰে শ্ৰীমৎভাগৱৎ গীতাৰূপী উপনিষদ এৰং ব্ৰহ্মবিদ্যা তথা যোগশাস্ত্ৰ বিষয়ক শ্ৰীকৃষ্ণ আৰু অৰ্জুনৰ সংবাদত ‘সমগ্ৰ জানকাৰি’ নামৰ সপ্তমঅধ্যায় পূৰ্ণ হ’ল ইতি শ্ৰীমৎপৰমহংস পৰমানন্দস্য শিষ্য স্বামী অড়গড়ানন্দকৃতে শ্ৰীমৎভগৱৎগীতয়াঃ ‘যথার্থ গীতা’ ভাষ্য ‘সমগ্ৰ বোধ’ নাম সপ্তমোহধ্যায় ॥ ৭ ॥

॥ হৰি ওঁ তৎসৎ ॥

‘ওঁ’

শ্ৰী পৰমাত্মনে নমঃ

অথ অষ্টমোহধ্যায়ঃ

সপ্তম আধ্যায়ৰ শেষত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছিল যে পুণ্যকৰ্ম(নিয়ত কৰ্ম আৰাধনা) কৰা যোগী সম্পূৰ্ণ পাপৰ পৰা মুক্ত হৈ সেই ব্যাপ্ত ব্ৰহ্মক জানে অথাৎ কৰ্ম এনেকুৱা এটা বস্তু যি ব্ৰহ্মক, সম্পূৰ্ণ কৰ্মক, সম্পূৰ্ণ আধ্যাত্মক, সম্পূৰ্ণ অধিদৈৱ, অধিভূত আৰু অধিযজ্ঞৰ সৈতে মোকো জানে। সেয়ে কৰ্ম এনে কোনো এটা বস্তু যি এই সকলোকে পৰিচয় কৰাই দিয়ে। তেওঁ অনন্ত কাললৈকেও মোক জানি থাকে। তেওঁৰ জনাটো কেতিয়াও বিস্মৃত নহয়।

এই সম্পৰ্কে অজুনে এই আধ্যায়ৰ আৰম্ভণীতে সেই একে শব্দৰে পুনৰায় প্ৰশ্ন কৰিলে।

অৰ্জুন উবাচ

কিং তদ্ব্ৰহ্ম কিমধ্যাত্মং কিং কৰ্ম পুৰুষোত্তম।

অধিভূতং চ কিং প্ৰোক্তমধিদৈৱং কিমুচ্যতে।।।।১।।

হে পুৰুষোত্তম! সেই ব্ৰহ্ম কি? অধ্যাত্ম কি? কৰ্ম কি? অধিভূত তথা অধিদৈৱ কাক কয়?

অধিযজ্ঞঃ কথং কোহত্র দেহেহস্মিন্মধুসূদন।

প্ৰয়াণকালে চ কথং জ্ঞেয়োহসি নিয়তাত্মভিঃ ।।২।।

হে মধুসূদন! ইয়াত অধিযজ্ঞ কোন হয় আৰু সি এই শৰীৰত কেনেকৈ থাকে? আমি জানো যে অধি যজ্ঞ অৰ্থাত যজ্ঞৰ অধিষ্ঠাতা কোনো এনে পুৰুষ, যি মনুষ্য শৰীৰৰ আধাৰ হয়। সমাহিত চিত্ত থকা পুৰুষৰ দ্বাৰা শেষত আপোনাক কেনেকৈ জানে? এই সাতটা প্ৰশ্নৰ ক্ৰমশঃ নিৰ্ণয় দিবৰ বাবে যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কলে—

শ্ৰীভগৱানুবাচ

অক্ষৰং ব্ৰহ্ম পৰমং স্বভাবোহধ্যাত্মমুচ্যতে ।

ভূতভাবোদ্ভৱকৰো বিসৰ্গঃ কৰ্মসঞ্চেদিতঃ ॥৩১॥

যি অক্ষয়, যাৰ ক্ষয় নাই, সেইয়ে পৰমব্ৰহ্ম। স্বয়ং অথাৎ নিজত স্থিৰ ভাৱেই আধ্যাত্ম অৰ্থাৎ আত্মাৰ অধিপত্য। ইয়াৰ আগতে সকলো মায়াৰ আধিপত্যত থাকে; কিন্তু যেতিয়া স্বভাৱে অৰ্থাৎ স্বৰূপত স্থিৰভাৱ (স্বৰত স্থিৰ ভাৱে) মিলি যায়, তেতিয়া আত্মাৰ আধিপত্য তাত প্ৰৱাহিত হয়। এয়ে আধ্যাত্ম, আধ্যাত্মাৰ পৰাকাষ্ঠা। ভূত প্ৰাণীৰ সেই ভাৱ যাৰ দ্বাৰা কিবা এটা উদ্ভৱ হয় অৰ্থাৎ প্ৰাণীবোৰৰ সংকল্প যি ভাল- বেয়া সংস্কাৰ বোৰৰ সংৰচনা কৰে, তাৰেই বিসৰ্গ অৰ্থাৎ বিসৰ্জন, তাৰ নাইকিয়া হোৱাই হ'ল কৰ্মৰ পৰাকাষ্ঠা। এয়ে সম্পূৰ্ণ কৰ্ম, যাক যোগেশ্বৰে কৈছিল 'সি সম্পূৰ্ণ কৰ্মক জানে।' তাত কৰ্ম পূৰ্ণ হৈ গৈছে, আগলৈ কৰ্মৰ আৱশ্যকতা নাই, (নিয়ত কৰ্ম) এই অৱস্থাত ভূতৰ সেই ভাৱ কিবা এটা ৰচনা কৰি থাকে, ভাল- বেয়া সংস্কাৰ বিলাকৰ সংগ্ৰহ কৰি থাকে, কিবা বনাই থাকে, সি যেতিয়া সম্পূৰ্ণ শান্ত হৈ যায়, এইটো হ'ল কৰ্মৰ সম্পূৰ্ণতা, ইয়াৰ পৰা আগলৈ কৰ্ম কৰাৰ আৱশ্যকতা নাথাকে, সেয়ে কৰ্ম এটা এনেকুৱা বস্তু, যি ভূতৰ সম্পূৰ্ণ সংকল্পক, যাৰ দ্বাৰা কিবা এটা সংস্কাৰৰ সৃষ্টি হয়, তাক সম্পূৰ্ণ ভাৱে শমন কৰি পেলায়। কৰ্মৰ অৰ্থ হ'ল (আৰাধনা) চিন্তন যি যজ্ঞত থাকে।

অধিভূতং ক্ষৰো ভাবঃ পুৰুষশ্চাধিদৈবতম্ ।

অধিযজ্ঞোহহমেৱাত্ৰ দেহে দেহভূতাংৱৰ ॥৪॥

যেতিয়ালৈকে অক্ষয় ভাৱ নাপায়, তেতিয়ালৈকে নষ্ট হ'ব পৰা সম্পূৰ্ণ ক্ষয় ভাৱ অধিভূত অৰ্থাৎ ভূতৰ অধিষ্ঠান হৈ থাকে। সেইটো হ'ল ভূতৰ উৎপত্তিৰ কাৰণ। আৰু প্ৰকৃতিৰ সিপাৰত যি পৰম পুৰুষ আছে, সেয়াই অধিদৈৱ অৰ্থাৎ সম্পূৰ্ণ দেৱতাসকলৰ (দৈবী সম্পদৰ) অধিষ্ঠাতা, দৈৱী সম্পদ সেই পৰম দেৱতেই বিলয় হৈ যায়। দেহধাৰী বিলাকৰ ভিতৰৰ শ্ৰেষ্ঠ হৈ অৰ্জুন ! এই মনুষ্য দেহতেই ময়েই 'অধিযজ্ঞ' অৰ্থাত্ যজ্ঞৰ অধিষ্ঠাতা হওঁ। সেয়ে এই শৰীৰত, অব্যক্ত স্বৰূপত স্থিত মহাপুৰুষেই অধিযজ্ঞ। শ্ৰীকৃষ্ণ

এজন যোগী আছিল। যি সম্পূৰ্ণ যজ্ঞৰ ভোক্তা, অন্তত যজ্ঞ তেওঁতেই প্ৰৱেশ
পায়। তেওঁ পৰমস্বৰূপ প্ৰাপ্ত কৰে। এইদৰে অৰ্জুনৰ ছয়টা প্ৰশ্নৰ সমাধান হ'ল।
এতিয়া শেষৰ প্ৰশ্ন যে অন্তকালত আপোনাক কেনেকৈ
জানিব পাৰি? যি কেতিয়াও বিস্মৃত নহয়।

অন্তকালে চ মামেব স্মৰনমুক্ত্বা কলেৱৰম্।

যঃ প্ৰয়াতি স মন্ত্ৰাৱং যাতি নাস্ত্যত্র সংশয়ঃ ॥৫॥

যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কলে যে যি পুৰুষে অন্তকালত অৰ্থাৎ মনৰ নিৰোধ
আৰু বিলয় কালত মোৰেই স্মৰণ কৰি শৰীৰৰ সম্বন্ধক এৰি বেলেগ হৈ যায়,
তেওঁ সাক্ষাৎ মোৰ স্বৰূপত প্ৰাপ্ত, ইয়াত কোনো সংশয় নাই।

শৰীৰৰ নিধন শুদ্ধ অন্তকাল নহয়। মৰাৰ পিছতো শৰীৰৰ ক্ৰমপাছত
লাগি থাকে। সঞ্চিত সংস্কাৰৰ গভীৰতা নাইকিয়া হোৱাৰ লগে লগে মনৰ নিৰোধ
হৈ যায়, আৰু সেই কনো যেতিয়া বিলীন হৈ যায়, তেতিয়া সেইটোৱে অন্তকাল,
তাৰ পিছত শৰীৰ ধাৰণ কৰিব নালাগে।

এইটো ত্ৰিয়াত্মক, মাত্ৰ কলে, কথা পাতিলে বুজিব নোৱাৰি।
যেতিয়ালৈকে কাপোৰ সলোৱাৰ দৰে শৰীৰৰ পৰিবৰ্ত্তন হৈ থাকে,
তেতিয়ালৈকে শৰীৰৰ অন্ত ক'ত হ'ল? মনৰ নিৰোধ আৰু নিৰুদ্ধ মনৰো
অন্তকালত জীয়াই থাকিও শৰীৰৰ সম্বন্ধক বিচ্ছেদ হৈ যায়। যদি মৰাৰ
পিছতহে এই স্থিতি পালে হেঁতেন তেতিয়াহলে শ্ৰীকৃষ্ণও পূৰ্ণ নহলহেঁতেন।
তেওঁ কৈছে যে অনেক জন্মৰ অভ্যাসত প্ৰাপ্তৱান জ্ঞানী সাক্ষাৎ মোৰেই স্বৰূপ।
মই তেওঁ আৰু তেৰো মই। তেওঁ আৰু মোৰ মাজত অলপো অন্তৰ নাই।
এইটো জীয়াই থাকোতেই প্ৰাপ্ত হোৱা। পুনৰ আকৌ কেতিয়াও শৰীৰপ্ৰাপ্ত
নহয়, সেইটোহে শৰীৰৰ অন্ত। এইটো হ'ল বাস্তৱিক শৰীৰৰ অন্তৰ চিত্ৰণ,
যাৰ পিছত জন্ম লব নালাগে। অন্যটো শৰীৰৰ অন্তত মৃত্যু, যি লোক-প্ৰচলিত;
কিন্তু এই শৰীৰ অন্তৰ পাছত পুনৰ জন্ম লব লাগিব।

যং যং ৱাপি স্মৰনভাবং ত্যজত্যন্তে কলেৱৰম্।

তং তমৈৱৈতি কৌন্তেয় সদা তন্ত্ৰাৱভাৱিতঃ ॥৬॥

হে কৌণ্ডেয় ! মৃত্যুৰ সময়ত মনুষ্যই যি ভাৱৰ স্মৰণ কৰি দেহ ত্যাগ কৰে, তাকে তেওঁ প্ৰাপ্ত কৰে। তেতিয়া হলে তো বড় সস্তা মাল। ওৰোটো জীৱন মৌজ- মস্তিত ঘূৰি ফুৰিম, মৰিবৰ বেলিকা স্মৰণ কৰিম, ভগৱানৰ নাম, বচ হৈ গ'ল। কিন্তু শ্ৰীকৃষ্ণই কয়- এনেকুৱা নহয়, সেই ভাৱেৰেহে চিন্তন কৰিব পাৰে, যেনেদৰে জীৱন ভৰ কৰিছিলে। সেই বিচাৰ বা চিন্তা অচিৰেই আহি যায়, যাৰ জীৱন ভৰ অভ্যাস কৰা হৈছে, অন্যথা হব নোৱাৰে। সেয়ে—

তস্মাত্‌সৰ্বেষু কালেষু মামনুস্মৰ যুধ্য চ।

ময়্যৰ্পিতমনোবুদ্ধিৰ্মামে বৈষ্যস্যসংশয়ম্ ॥৭॥

সেই কাৰণে অৰ্জুন ! তুমি সকলো সময়তে মোৰ স্মৰণ আৰু যুদ্ধ কৰা। মোক অৰ্পণ কৰা মন আৰু বুদ্ধিৰে যুক্ত হৈ তুমি নিঃসন্দেহে মোকেই প্ৰাপ্ত কৰিবা। নিৰন্তৰ চিন্তন আৰু যুদ্ধ এই দুইটাই একেলগে সম্ভৱ নে? এনেকুৱাও হব পাৰে যে নিৰন্তৰ চিন্তন আৰু যুদ্ধৰ এই স্বৰূপ হব যে 'জয় কানাইলাল কী', 'জয় ভগৱান কী' কৈ থাকক আৰু বাণ চলাই থাকক। কিন্তু স্মৰণৰ স্বৰূপ পিছৰ শ্লোকত স্পষ্ট কৰি যোগেশ্বৰে কয়—

অভ্যাসযোগযুক্তেন চেতসা নান্যাগামিনা।

পৰমং পুৰুষং দিব্যং যাতি পাৰ্থানুচিন্তয়ন্ ॥৮॥

হে পাৰ্থ ! সেই স্মৰণৰ কাৰণে যোগৰ অভ্যাসেৰে যুক্ত হৈ(মোৰ চিন্তন আৰু যোগৰ অভ্যাস এটা পৰ্য্যায় হয়) মোৰ বাদে অন্যফালে নোযোৱা চিন্তৰ দ্বাৰা নিৰন্তৰ চিন্তন কৰাজনে পৰম প্ৰকাশ স্বৰূপ দিব্যপুৰুষ অৰ্থাত পৰমাত্মাক প্ৰাপ্ত কৰে। ধৰি লওক, এই পেঙ্গিল ডাল হ'ল ভগৱান; তেতিয়া হলে ইয়াৰ বাদে অন্য কোনো বস্তুৰ স্মৰণ হব নালাগে ইয়াৰ ওচৰে- পাজৰে আপুনি কিতাপ আদি দেখিবলৈ পাব বা অন্য বস্তু যদি দেখেতেতিয়াহলে আপোনাৰ স্মৰণ খণ্ডন হৈ গ'ল। স্মৰণ যেতিয়া অত্যন্ত সুক্ষ্ম হৈ যাব যে ইষ্টৰ অতিৰিক্ত অন্য বস্তুৰ স্মৰণ হব নালাগে, মনত বিভিন্ন ধৰণৰ টো যদি আহে তেতিয়াহলে স্মৰণ আৰু যুদ্ধ দুইটাই একেলগে কেনেকৈ হব? মূলতঃ যেতিয়া আপুনি চিন্তক চাৰিওফালৰ পৰা টানি আনি নিজৰ এক আৰাধ্যক স্মৰণ কৰিবলৈ প্ৰবৃত্ত হব, তেতিয়া সেই সময়ত মায়াৰ প্ৰবৃত্তিবোৰ- কাম-

ক্ৰোধ ৰাগ- দ্বেষ বাধাৰ ৰূপত সন্মুখত প্ৰকট হব। আপুনি স্মৰণ কৰিব, কিন্তু সেইবিলাক আপোনাৰ ভিতৰত উদ্বেগ সৃষ্টি কৰিব, আপোনাৰ মন স্মৰণৰ পৰা আতঁৰ কৰিব বিচাৰিব। সেই বাহ্যিক প্ৰবৃত্তিৰ পৰা পাৰ পোৱাটোৱে হ'ল যুদ্ধ। নিৰন্তৰ চিন্তনৰ সৈতে যুদ্ধ সম্ভৱ হয়। গীতাৰ এটাও শ্লোকে বাহ্যিক কটা মৰাৰ বাবে সমৰ্থন কৰা নাই। চিন্তন কাৰ কৰিব? ইয়াত কৈছে—

কৱিৎ পুৰাণমনুশাসিতাৰ
মণোৰণীয়াংসমনুস্মৰেদ্যঃ।

সৰ্বস্য খাতাৰমচিন্ত্যৰূপ—
মাদিত্যৱৰ্ণং তমসঃ পৰন্তাৎ ॥৯ ॥

সেই যুদ্ধৰ লগত সেই পুৰুষে সৰ্বজ্ঞ্য, অনাদি, সকলোৰে নিয়ন্ত্ৰ, সুক্ষ্মতকৈও অতি সুক্ষ্ম, সকলোৰে ধাৰণ- পোষন কৰা, কিন্তু অচিন্ত্য (যেতিয়া লৈকে চিন্ত আৰু চিন্তৰ টো আছে, তেতিয়ালৈকে তেওঁক দেখা পোৱা নাযায়। চিন্তৰ নিৰোধ আৰু বিলয়কালতহে যি বিদিত হয়, নিত্য প্ৰকাশস্বৰূপ আৰু অবিদ্যাৰ পাৰ সেই পৰমাত্মাৰ স্মৰণ কৰে। আগত কৈছিল মোৰ চিন্তন কৰে, ইয়াত কৈছে পৰমাত্মাৰ চিন্তন কৰে। সেয়ে সেই পৰমাত্মাৰ চিন্তন(ধ্যান)ৰমাধ্যম হ'ল তত্ত্বস্থিত মহাপুৰুষ। এই ক্ৰমত—

প্ৰয়াগকালে মনসাচলেন

ভক্ত্যা যুক্তো যোগবলেন চৈব।

ভ্ৰুবোৰ্মধ্যে প্ৰাণমাৰেশ্য সম্যক্

স তৎ পৰং পুৰুষমুপৈতি দিৱ্যম্ ॥১০ ॥

যি জনে নিৰন্তৰ সেই পৰমাত্মাক স্মৰণ কৰে, সেই ভক্তি-যুক্ত পুৰুষ মনৰ বিলীন অৱস্থা কালত যোগবলেৰে অৰ্থাৎ সেই নিয়ত কৰ্মৰ আচৰণ দ্বাৰা আৰ মাজত প্ৰাণক ভালদৰে স্থাপন কৰি (প্ৰাণ-অপানক ভালদৰে সমভাৱে ৰাখি, ভিতৰতো উদ্বেগ উৎপন্ন নহওক আৰু বাহিৰৰ পৰাও কোনো সংকল্পনুষ্ঠক. সত-ৰজ-তমক ভালদৰে শান্ত ৰাখি, সুৰত ক ইষ্টত স্থিত কৰি সেই কালত) সেই অচল মন অৰ্থাৎ স্থিৰ বুদ্ধি থকা পুৰুষ সেই দিব্য পুৰুষ পৰমাত্মাত প্ৰাপ্ত হয়। সতত নিশ্চিত আছে যে সেই এক পৰমাত্মাৰ প্ৰাপ্তীৰ

বিধানেই হ'ল যোগ। তাৰ কাৰণে নিৰ্দিষ্ট ক্ৰিয়াৰ আচৰণেই হ'ল যোগ-ক্ৰিয়া যাৰ বিস্তৃত বৰ্ণন যোগেশ্বৰে চাৰি আৰু ছয় অধ্যায়ত কৰিছে। এতিয়া তেখেতে কৈছে- 'নিৰন্তৰ মোৰেই স্মৰণ কৰা'। কেনেকৈ কৰিব? এই যোগ- ধাৰণাত স্থিৰ হৈ কৰিব। এনে কৰাজন দিব্যপুৰুষত প্ৰাপ্ত হব, যাৰ কেতিয়াও বিস্মৃতি নহয়। ইয়াত এই প্ৰশ্নৰ সামাধান হ'ল যে আপুনি প্ৰয়াণ কালত কেনেকৈ জানিবৰ যোগ্য হব? পাবলগা পদৰ চিত্ৰণ চাওক, যি গীতাৰ স্থানে স্থানে বৰ্ণনা আছে --

যদক্ষৰং বেদৱিদো ৰদন্তি

বিশন্তি যদ্যতয়ো বীতৰাগাঃ।

যদিচ্ছন্তো ব্ৰহ্মচৰ্যং চৰন্তি

তত্তে পদং সংগ্ৰহেণ প্ৰৱক্ষ্যে ॥ ১১ ॥

'বেদবিদ' অৰ্থাৎ অবিদিত তত্ত্বক প্ৰত্যক্ষভাৱে জনালোক যি পৰমপদক 'অক্ষৰম'- অক্ষয় কোৱা হয় ৰাগ- দ্বেষ ৰহিত মহাত্মা য'ত প্ৰৱেশ পাবৰ বাবে যত্নৱান হৈ থাকে, যি পৰমপদক ইচ্ছা কৰি ব্ৰহ্মচৰ্য্যপালন কৰে(ব্ৰহ্মচৰ্য্যঅৰ্থ জনেন্দ্ৰিয়ৰ মাত্ৰ নিৰোধ নহয়, ' আনকি ব্ৰহ্ম আচৰতি স ব্ৰহ্মাচাৰী'বাহ্যিক স্পৰ্শক মনেৰে ত্যাগ কৰি ব্ৰহ্মক নিৰন্তৰ চিন্তন স্মৰণেই হ'ল ব্ৰহ্মচৰ্য্য, যিয়ে ব্ৰহ্মৰ দৰ্শণ কৰাই তাতেই স্থান দি শান্ত হয়। এই আচৰণেৰে ইন্দ্ৰিয় সংযমেই নহয়, আনকি সকলো ইন্দ্ৰিয় সংযম নিজে হৈ যায়। এইদৰে যি ব্ৰহ্মচৰ্য্য আচৰণ কৰে) যি হৃদয়ত সংগ্ৰহ কৰাৰ যোগ্য, ধাৰণ কৰাৰ যোগ্য, সেই পদৰ বিষয়ে মই তোমাক কম। এই পদ কি?কেনেকৈ পোৱা যায়? এই সম্পৰ্কত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কয়--

সৰ্বদ্বাৰাণি সংযম্য মনো হৃদি নিৰুধ্য চ।

মুৰ্গ্যাধায়াত্মনঃ প্ৰাণমাস্থিতো যোগধাৰণাম্ ॥১২ ॥

সকলো ইন্দ্ৰিয়ৰ দুৱাৰ বিলাক বন্ধ কৰি অৰ্থাৎ বাসনা সমূহক আঁতৰাই মনক হৃদয়ত স্থিতকৰি (ধ্যান হৃদয়তহে কৰা হয়, বাহিৰত নহয়, পূজা বাহিৰত নহয়) প্ৰাণ অৰ্থাৎ অন্তঃকৰণৰ ক্ৰিয়াবোৰক মস্তিস্কত নিৰোধ কৰি যোগ- ধাৰণাত স্থিত হৈ (যোগক ধাৰণ কৰি থকা, অন্য বিধেৰে নহয়)এইদৰে স্থিত হৈ-

ওমিত্যেকাম্ৰং ব্ৰহ্ম ব্যাহৰনমামনুস্মৰন্ ।

যঃ প্ৰয়াতি ত্যজন্দেহং স যাতি পৰমাং গতিম্ ॥১৩॥

যি পুৰুষে ‘ওঁ’ ইমানেই, যি অক্ষয় ব্ৰহ্মৰ পৰিচায়ক, তাৰ জপ তথা মোৰ স্মৰণ কৰি শৰীৰ ত্যাগ কৰে, সেই পুৰুষ পৰম গতি প্ৰাপ্ত হয় ।

শ্ৰীকৃষ্ণ এজন যোগেশ্বৰ পৰম তত্ত্ব স্থিত মহাপুৰুষ, সদগুৰু আছিল । যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছিল যে ওঁ অক্ষয় ব্ৰহ্মৰ পৰিচায়ক, তুমি ইয়াৰ জপ কৰা আৰু মোৰ ধ্যান কৰা । প্ৰাপ্তৱান প্ৰত্যেক মহাপুৰুষৰ নাম সেইটোৱে যাক তেওঁ প্ৰাপ্ত কৰে, যত তেওঁ বিলয় হৈ যায়, সেই কাৰণে ‘কৃষ্ণ-কৃষ্ণ জপ কৰিবলৈ নিৰ্দেশ দিয়া নাই । কালক্ৰমত ভাবুক সকলে তেওঁৰ নামো জপ কৰিবলৈ আৰম্ভ কৰি দিলে আৰু নিজৰ শ্ৰদ্ধা অনুসৰি ফলও পালে, যি দৰে মনুষ্যৰ শ্ৰদ্ধা য’ত থাকে তাত ময়েই তেওঁলোকৰ শ্ৰদ্ধাক পুষ্ট কৰো আৰু ফলৰ বিধানো ময়ে কৰোঁ ।

ভগৱান শিৱই ‘ৰাম’ শব্দ জপ কৰিবলৈ জোৰ দিছিল । ‘ৰা’ আৰু ‘ম’ এই দুই আখৰৰ অন্তৰালত কবীৰে নিজৰ মনক নিৰোধ কৰিবলৈ সক্ষম হৈছিল । কৃষ্ণই ওঁ শব্দৰ ওপৰত জোৰ দিছে । ওঁম্ অহং স ওম্ অথাৎ সেই সত্তা মোৰ ভিতৰত আছে, বাহিৰত বিচাৰিলেও পোৱা নাযায় । এই ওঁম্ ও সেই পৰম সত্তাৰ পৰিচয় দি শান্ত হয় । বাস্তৱত সেইটো প্ৰভুৰ অনন্ত নাম, কিন্তু জপৰ বাবে সেই নামেইসাৰ্থক হয় যিটো ছুটি, শ্বাসত সোমাই যায় আৰু এক পৰমাত্মাকেই বোধ কৰায় । তাৰ ভিন্ন বহুতো দেৱ-দেৱীৰ অবিবেকপূৰ্ণ কল্পনাত ওলমি লক্ষ্যৰ পৰা দৃষ্টি নাওঁৰাব ।

পূজ্য মহাৰাজ জীয়ে কৈছিল- মোৰ ৰূপ চোৱা আৰু শ্ৰদ্ধানুসৰি কোনো দুই- আঢ়ৈ আখৰৰ নাম ‘ওঁ’ ‘ৰাম’ ‘শিৱ’ ৰ ভিতৰৰ এটা নাম লোৱা । নামৰ চিন্তন কৰা আৰু তাৰ অৰ্থ স্বৰূপ ইষ্টৰ স্বৰূপক ধ্যান কৰা” ধ্যান সদগুৰুৰ হে কৰা হয় । আপুনি ৰাম, কৃষ্ণ অথবা বীতৰাগ মহাত্মাসকলৰ অথবা (পাতঞ্জল যোগ ১/৩৭,৩৯) কোনোবা এজনৰো স্বৰূপ ধৰক, তেওঁক অনুভৱত আপুনি পাব আৰু আপোনাক সমকালীন কোনোবা সদগুৰুৰ ফালে

আগ বঢ়াই দিয়ে, যাৰ মাৰ্গ দৰ্শনেৰে আপুনি লাহে লাহে প্ৰকৃতিৰ ক্ষেত্ৰৰ পৰা পাৰ হৈ যাব। ময়ো আৰম্ভনীত এক দেৱতা (শ্ৰীকৃষ্ণৰ বিৰাট ৰূপ) ৰ চিত্ৰৰ ধ্যান কৰিছিলো, কিন্তু পূজ্য মহাৰাজৰ অনুভৱী প্ৰৱেশৰ লগতে সেইটো শাস্ত হৈ গ'ল।

প্ৰাথমিক পৰ্য্যায়ৰ সাধকে নামতো জপ কৰে; কিন্তু মহাপুৰুষৰ স্বৰূপক ধ্যান কৰাত ইতস্ততঃ কৰে। তেওঁ নিজৰ অত্মাভিমানক এৰিব নিবিচাৰে। তেওঁ অন্য দেৱতাৰ ধ্যান কৰে, যাক যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই নিষেধ কৰিছিলে। সেয়ে পূৰ্ণ সমৰ্পণৰ সৈতে কোনো অনুভৱী মহাপুৰুষৰ শৰণ লোৱা উচিত। পূন্য-পুৰুষাৰ্থ সবল হলেই কুভাৱনা বিলাকৰ শমন হৈ যায় আৰু যথার্থ ক্ৰিয়াত প্ৰৱেশ লাভ কৰে। যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণৰ অনুসৰি এইদৰে 'ওঁ' জপ আৰু পৰমাত্মা স্বৰূপ সদগুৰুৰ স্বৰূপক নিৰন্তৰ স্মৰণ কৰিলে মনৰ নিৰোধ আৰু বিলয় হৈ যায় আৰু সেই সময়তে শৰীৰৰ সম্বন্ধৰো ত্যাগ হৈ যায়। মাত্ৰ মৰিলেই শৰীৰে পিছ নেৰে।

অনন্যচেতাঃ সততং যো মাং স্মৰতি নিত্যশঃ।

তস্যাহং সুলভঃ পাৰ্থ নিত্যযুক্তস্য যোগিনঃ।। ১৪ ।।

“মোৰ অতিৰিক্ত আৰু কোনো চিন্তিত নায়েই” অন্য কাৰো চিন্তন নকৰি অৰ্থাৎ অনন্য চিন্তেৰে স্থিৰ হৈ যি অনবৰত মোৰেই স্মৰণ কৰে, সেই নিত্য মোতেই যুক্ত যোগীৰ কাৰণে মই সুলভ। আপোনাৰ সুলভ হলে কি পাম?

মামুপেত্য পুনৰ্জন্ম দুঃখালয়মশাস্তম্।

নাপুৰস্তি মহাত্মানঃ সংসিদ্ধিং পৰমাং গতাঃ।। ১৫ ।।

মোক প্ৰাপ্ত কৰি তেও দুখৰ স্থান স্বৰূপ ক্ষণভংগৰ পুনৰ্জন্ম প্ৰাপ্ত নকৰে, আনকি পৰমসিদ্ধি প্ৰাপ্ত কৰে অৰ্থাৎ মোক প্ৰাপ্ত কৰে অথবা পৰমসিদ্ধি প্ৰাপ্ত কৰাও একে কথা। মাত্ৰ ভগৱানেই এনে বস্তু, যাক পাই সেই পুৰুষৰ পুনৰ্জন্ম নহয়। তেতিয়া হলে পুনৰ্জন্মৰ সীমা কলৈকে আছে?

অব্ৰহ্মভুবনাল্লোকাঃ পুনৰাৱৰ্তিনোহৰ্জুন।

মামুপেত্য তু কৌন্তেয় পুনৰ্জন্ম ন বিদ্যাতে ॥১৬॥

অৰ্জুন ! ব্ৰহ্মাৰে পৰা আৰম্ভ কৰি কীট পতঙ্গ আদি সকলোৰে পুনৰাৱৰ্ত্তী হয়, জন্ম লোৱা আৰু মৃত্যু হোৱা পুনঃ পুনঃ এই ক্ৰম চলি থাকে কিন্তু হে কৌন্তেয় ! মোক প্ৰাপ্ত কৰা পুৰুষৰ পুনৰ্জন্ম নহয় ।

ধৰ্মগ্ৰন্থ বোৰত লোক-লোকান্তৰৰ পৰিকল্পনা ঈশ্বৰ- পথৰ বিভূতি সমূহৰ বোধ কৰাবৰ বাবে আন্তৰিক অনুভৱ বা ৰূপক মাত্ৰ হয় । অন্তৰিক্তকোনো এনে গাঁত নাই যে, য'ত পোকে কামোৰে আৰু এনে মহলো নাই যাক স্বৰ্গ বুলি কোৱা হয় । দৈবী সম্পদেৰে যুক্ত পুৰুষ দেৱতা আৰু আসুৰী সম্পদেৰে যুক্ত মনুষ্যই অসুৰ । শ্ৰীকৃষ্ণৰ আত্মীয় সম্বন্ধীয় কংস ৰাক্ষস আৰু বাণাসুৰ দৈত্য আছিল । দেৱ, মানৱ, নিম্ন যোগী সমূহেই হ'ল বিভিন্ন লোক । শ্ৰীকৃষ্ণৰ অনুসৰি এই জীৱাত্মা মনেৰে সৈতে পঞ্চ ইন্দ্ৰিয়ক লৈ জন্ম-জন্মান্তৰৰ সংস্কাৰৰ অনুৰূপ নতুন শৰীৰ ধাৰণ কৰে । অমৰ বুলি কোৱা দেৱতাও মৰণশীল । ইয়াতকৈ ডাঙৰ ক্ষতি কি হব পাৰে ? সেই দেৱ শৰীৰ কি কামৰ বাবে, য'ত সঞ্চিত পূন্য সমাপ্ত হৈ যায় ? দেৱলোক, পশুলোক, কীট- পতঙ্গ আদি লোক ভোগলোক মাত্ৰ হয় । মাত্ৰ মনুষ্যই কৰ্মৰ ৰচয়িতা, যাৰ দ্বাৰা তেওঁ সেই পৰম-ধামকো প্ৰাপ্ত কৰিব পাৰে, য'ৰপৰা পুনৰাৱৰ্ত্তন নহয় । যথার্থ কৰ্মৰ আচৰণ কৰি মনুষ্য দেৱতা হব পাৰে, ব্ৰহ্মাৰ স্থিতি প্ৰাপ্ত কৰি লয়, কিন্তু তেওঁ পূৰ্ণজন্মৰ পৰা তেতিয়া লৈকে ৰক্ষা নাপায়, যেতিয়ালৈকে মনৰ নিৰোধ আৰু বিলয়ৰ সৈতে পৰমাত্মাৰ সাক্ষাৎ কৰি সেই পৰম ভাৱত স্থিত নহয় । উদাহৰণাৰ্থে উপনিষদেও এইসত্যক উদ্ঘাটন কৰে—

যদা সৰ্বে প্ৰমুচ্যন্তে কামা যেহস্য হৃদিস্থিতাঃ

অথ মত্যাৰ্হমৃতো ভবত্যত্র ব্ৰহ্ম সমশ্ৰুতে ॥ কঠো,(২/৩/১৪)

যেতিয়া হৃদয়ত থকা সম্পূৰ্ণ কামনা বিলাক সমূলি নষ্ট হৈ যায়, তেতিয়া মৰণশীল মনুষ্য অমৰ হৈ যায় আৰু ইয়াতে এই সংসাৰতে এই মনুষ্য শৰীৰতে পৰমব্ৰহ্মক উত্তম প্ৰকাৰে সাক্ষাৎ অনুভৱ কৰে ।

এতিয়া প্ৰশ্ন হয় যে কি ব্ৰহ্মাও মৰণশীল নে কি ? তিনি আধ্যাত

যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই প্ৰজাপতি ব্ৰহ্মাৰ প্ৰসঙ্গত কৈছিল যে প্ৰাপ্তীৰ পাছত বুদ্ধি মাত্ৰ যন্ত্ৰৰ দৰে হৈ যায়। তাৰ দ্বাৰা পৰমাত্মাই ব্যক্ত হয়। এনে মহাপুৰুষৰ দ্বাৰাই যজ্ঞৰ সংৰচনা হয় আৰু ইয়াত কয় যে ব্ৰহ্মাৰ স্থিতি প্ৰাপ্ত কৰাজনৰো পুনৰাবৰ্ত্তী হয়। যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কি কব বিচাৰিছে ?

বস্তুতঃ যি মহাপুৰুষৰ দ্বাৰা পৰমাত্মাই ব্যক্ত হয়, সেই মহাপুৰুষৰ বুদ্ধিওব্ৰহ্মা নহয়, কিন্তু মানুহক উপদেশ দিবৰ কাৰণে, কল্যাণৰ সূত্ৰপাত কৰিবৰ কাৰণে তেওঁক ব্ৰহ্মা বুলি কোৱা হয়। স্বয়ং তেওঁ ব্ৰহ্মা নহয়। তেওঁৰ ওচৰত নিজৰ বুদ্ধি নাথাকেই। কিন্তু তাৰ পূৰ্বে সাধনাকালত বুদ্ধিয়েই ব্ৰহ্মা।

‘অহংকাৰ শিৱ বুদ্ধি অজ ,মন শশি চিন্ত মহান।

(মানস, ৬/১৫ ক)

সাধাৰণ মানুহৰ বুদ্ধি ব্ৰহ্মা নহয়। বুদ্ধি যেতিয়া ইষ্টত প্ৰবেশ কৰিবলৈ ধৰে, তেতিয়াৰ পৰাই ব্ৰহ্মাৰ ৰচনা হ’ব ধৰে, যাৰ চাৰিটা সোপান মনিষি সকলে কৈছে। আগত তিনি আধ্যাত কৈছে স্মৰণৰ বাবে পুনৰ চাব পাৰে - ব্ৰহ্মৱিদ্ সেই বুদ্ধি হয়,যি ব্ৰহ্মবিদ্যাৰে সংযুক্ত। ব্ৰহ্মবিদ্বৰ তেওঁ হয় যাৰ ব্ৰহ্মবিদ্যাত শ্ৰেষ্ঠতা প্ৰাপ্ত হৈছে। ব্ৰহ্মবিদ্বৰীয়ান সেই বুদ্ধি হয়, যাৰ সেই ব্ৰহ্মবিদ্যাত দক্ষতাই নহয় বৰঞ্চ তাৰ নিয়ন্ত্ৰক সঞ্চালক হব পাৰে। ব্ৰহ্মবিদ্বৰিষ্ট হ’ল বুদ্ধিৰ সেই শেষ পৰ্য্যায় যত ইষ্ট প্ৰবাহিত হৈ থাকে। ইয়ালৈকে বুদ্ধিৰ অস্তিত্ব আছে ; কিয়নো প্ৰবাহিত হোৱা ইষ্ট এতিয়াও কৰবাত বেলেগে আছে আৰু গ্ৰহণকৰ্ত্তা বুদ্ধিও বেলেগে আছে। এতিয়া সি প্ৰকৃতিৰ সীমাতে আছে। স্বয়ং প্ৰকাশ স্বৰূপত যেতিয়া বুদ্ধি (ব্ৰহ্মা) থাকে জাগৃত থাকিলে সম্পূৰ্ণ ভূত (চিন্তনৰ প্ৰবাহ) জাগৃত থাকে আৰু যেতিয়া অবিদ্যাত থাকে তেতিয়া অচেতনহৈ থাকে। ইয়াকে প্ৰকাশ আৰু অন্ধকাৰ ৰাত্ৰি আৰু দিন বুলি সম্বোধিত কৰা হয়। চাওক -

ব্ৰহ্মা অৰ্থাৎ ব্ৰহ্মবিদ্বৈতাৰ সেই শ্ৰেণী, য’ত ইষ্ট প্ৰবাহিত হয়, তাক প্ৰাপ্ত কৰিও সৰ্বোৎকৃষ্ট বুদ্ধিত বিদ্যা (যি স্বয়ং প্ৰকাশ স্বৰূপ, তেওঁতেই মিলায়) ৰ দিন আৰু অবিদ্যাৰ ৰাত্ৰি, প্ৰকাশ আৰু অন্ধকাৰৰ ক্ৰম লাগি থাকে, ইয়ালৈকে

সাধকত মায়া বলৱতী হয়। প্ৰকাশ কালত অচেতন ভূত সচেতন হৈ যায়, তেওঁ লক্ষ্য স্থান দেখিবলৈ ধৰে, তথা বুদ্ধিৰ অন্তৰালত অবিদ্যাৰ ৰাত্ৰিৰ প্ৰৱেশ কালত সকলো ভূত অচেতন হৈ যায়। বুদ্ধিয়ে নিশ্চয় কৰিব নোৱাৰে। স্বৰূপৰ ফালে আগ বঢ়াটো বন্ধ হৈ যায়। এয়ে ব্ৰহ্মাৰ দিন আৰু ৰাত্ৰি। দিনৰ প্ৰকাশত বুদ্ধিৰ সহস্ৰ প্ৰবৃত্তিবোৰে ঈশ্বৰীয় প্ৰকাশ পায়, আৰু অবিদ্যাৰ ৰাত্ৰিত এইবিলাকেই সহস্ৰ আবৰণত অচেতন অৱস্থাৰ অন্ধকাৰ হয়।

ভাল আৰু বেয়া, বিদ্যা আৰু অবিদ্যা এই দুটা প্ৰবৃত্তিবোৰৰ সৰ্বদা শান্ত হলে অৰ্থাৎ অচেতন আৰু সচেতন, ৰাত্ৰিত বিলীন আৰু দিনত উৎপন্ন দুই প্ৰকাৰৰ ভূত সমূহৰ (সংকল্পৰ টো) মচ খালে সেই অব্যক্ত বুদ্ধিতকৈও অত্যন্ত দূৰত থকা শাস্ত্ৰত, অব্যক্ত ভাৱ প্ৰাপ্ত হয়, যি পুনৰ কেতিয়াও নষ্ট নহয়। ভূত সমূহৰ অচেতন আৰু সচেতন দুটা স্থিতিয়ে নাইকিয়া হলে সেই সনাতন ভাৱ প্ৰাপ্ত হয়। বুদ্ধিৰ উপৰোক্ত চাৰিটা অৱস্থাৰ পাছৰ পুৰুষ হে মহাপুৰুষ। তাৰ অন্তৰালত বুদ্ধি নাই, বুদ্ধি পৰমাত্মাৰ যন্ত্ৰৰ দৰে হৈ গৈছে, কিন্তু মানুহক তেওঁ উপদেশ দিয়ে, নিশ্চয় কৰি প্ৰেৰণা দিয়ে, সেয়ে তাত বুদ্ধি থকা যেন লাগে। কিন্তু তেওঁ বুদ্ধিৰ স্তৰতকৈ বহু দূৰত আছে। তেওঁ পৰম অব্যক্ত ভাৱত স্তিত আছে। তেওঁৰ পূৰ্ণজন্ম নহয়, কিন্তু এই অব্যক্ত স্থিতিৰ পূৰ্বত, যেতিয়ালৈকে তেওঁৰ ওচৰত নিজৰ বুদ্ধি আছিল তেতিয়ালৈকে তেওঁ ব্ৰহ্মা হৈ আছে, তেওঁ পুনৰজন্মৰ পৰিধিতে আছে। এই তথ্যৰ ওপৰত প্ৰকাশ কৰি যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কয়—

সহস্ৰযুগ পৰ্যন্ত মহৰ্য দ্ৰব্ধগো বিদুঃ।

ৰাত্ৰিং যুগ সহস্ৰান্তাং তেহহোৰাত্ৰিৰিদো জনাঃ ॥১৭॥

যিজনে হাজাৰ চাৰিযুগৰ ব্ৰহ্মাৰ ৰাত্ৰি আৰু হাজাৰ চাৰিযুগৰ তাৰ দিনক সাক্ষাৎ জানে, সেই পুৰুষে সময়ৰ তত্বক যথার্থ জানে। প্ৰস্তুত শ্লোকত দিন আৰু ৰাত্ৰি, বিদ্যা আৰু অবিদ্যাৰ ৰূপক হয়। ব্ৰহ্মবিদ্যাৰে সংযুক্ত বুদ্ধি ব্ৰহ্মাত প্ৰৱেশ কৰিবলৈ তথা ব্ৰহ্মবিদ্বিষ্ট বুদ্ধি ব্ৰহ্মাৰ পৰাকাষ্ঠা হয়। বিদ্যাৰে সংযুক্ত বুদ্ধি ব্ৰহ্মাৰ দিন। যেতিয়া বিদ্যা কাৰ্য্যৰত হৈথাকে, সেই সময়ত

যোগী স্বৰূপৰ ফালে অগ্ৰসৰ হয়, অন্তঃকৰণৰ সহস্ৰ প্ৰবৃত্তিবোৰত ঈশ্বৰীয় প্ৰকাশৰ সঞ্চাৰ হয়। এইদৰে অবিদ্যাৰ ৰাত্ৰি হলে অন্তঃকৰণৰ সহস্ৰ প্ৰবৃত্তি বোৰত মায়াৰ দ্বন্দ্ব প্ৰবাহিত হয়। প্ৰকাশ আৰু অন্ধকাৰৰ ইয়ালৈকে সীমা। তাৰ পাছত অবিদ্যাও নাথাকে আৰু বিদ্যাও। সেই যোগীজন কালৰ তত্বক জানিব পাৰে যে কেতিয়া অবিদ্যাৰ ৰাত্ৰি হয়। কেতিয়া বিদ্যাৰ দিন হয়? কালৰ প্ৰভাৱ কলৈকে আছে অথবা সময়ে কলৈকে পিছলয়? প্ৰাৰম্ভিক মনিষি সকলে অন্তঃকৰণক চিন্তা অথবা কেতিয়াবা কেতিয়াবা মাত্ৰ বুদ্ধি বুলি সম্বোধিত কৰিছিল। কালান্তৰত অন্তঃকৰণৰ বিভাজন মন, বুদ্ধি, চিত্ত আৰু অহংকাৰত চাৰিটা প্ৰমুখ বৃত্তি বিলাক ভাগ কৰা হ'ল, তেনেকৈ অন্তঃকৰণৰ প্ৰবৃত্তিবোৰো অনন্ত। বুদ্ধিৰ অন্তৰালতেই অবিদ্যাৰ ৰাত্ৰি হয় আৰু সেই বুদ্ধিতে বিদ্যাৰ দিনো হয়। এইটোৱে ব্ৰহ্মাৰ ৰাত্ৰি আৰু দিন। সংসাৰৰূপী ৰাত্ৰিত সকলো জীৱ অচেতন হৈ থাকে। প্ৰকৃতিত বিচৰণ কৰি থকা তেওঁলোকৰ বুদ্ধিয়ে সেই প্ৰকাশস্বৰূপক দেখা নাপায়; কিন্তু যোগৰ আচৰণ কৰাজন যোগী ইয়াত জাগৃত হয় আৰু স্বৰূপৰ ফালে আগ বাঢ়ে, যেনেকৈ গোস্বামী তুলসী দাসে ৰামচৰিত মানসত লিখিছে—

“কবহুঁ দিবস মহঁ নিবিড়তম্, কবহুঁক প্ৰগট পতঙ্গ।

বিনসই উপজই গ্যান জিমি, পাই কুসঙ্গ-সুসঙ্গ।।

ৰামচৰিতমানস (৪/১৫/খ)

বিদ্যাৰে সংযুক্ত বুদ্ধি কুসংগ পালে অবিদ্যাত পৰিণত হৈ যায়। পুনৰ সুসংগেৰে বিদ্যাৰ সঞ্চাৰ সেই বুদ্ধিতে হয়। এই উঠা-নমা শেষ পৰ্য্যন্ত চলি থাকে। পূৰ্ণতাৰ পাছত বুদ্ধিও নাথাকে, ব্ৰহ্মাও নাথাকে, ন ৰাত থাকে ন দিন। এইটো হ'ল ব্ৰহ্মাৰ দিন-ৰাত্ৰিৰ ৰূপক। হাজাৰ বছৰৰ দীঘলীয়া ৰাত্ৰিও নাথাকে ন হাজাৰ চতুৰ্গৰ দিন থাকে আৰু চাৰিমুখৰ ব্ৰহ্মাও নাথাকে। বুদ্ধিৰ উপৰোক্ত চাৰিটা ক্ৰমিক অৱস্থা হ'ল ব্ৰহ্মাৰ চাৰিমুখ আৰু অন্তঃকৰণৰ চাৰিটা প্ৰমুখ প্ৰবৃত্তিবোৰেই হ'ল চাৰিযুগ। ৰাত্ৰি আৰু দিন এই প্ৰবৃত্তিবোৰতেই হয়। যি পুৰুষে ইয়াৰ ভেদক তত্ব সহকাৰে জানে, সেই যোগীজনে কালৰ ভেদকো জানে যে কালে কলৈকে লৈ যায় আৰু কোন পুৰুষ কালতকৈও অতীত হৈ

যায়? ৰাত্ৰি আৰু দিন, অবিদ্যা আৰু বিদ্যাত হব পৰা কাৰ্য্যক যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই স্পষ্ট কৰি কয়—

অব্যক্তাদব্যক্তয়ঃ সৰ্বাঃপ্রভ বন্ত্যহৰা গমে।

ৰাত্ৰ্যাগমে প্ৰলীয়ন্তে তত্রৈৰাব্যক্তসঙ্জ্ঞকে।।১৮।।

ব্ৰহ্মাৰ দিনৰ প্ৰৱেশ কালত অৰ্থাত বিদ্যা (দৈবী সম্পদ)ৰ প্ৰৱেশ কালত সম্পূৰ্ণ প্ৰাণী অব্যক্ত বুদ্ধিত জাগ্ৰিত হৈ যায় আৰু ৰাত্ৰিৰ প্ৰৱেশ কালত সেই অব্যক্ত অদৃশ্য বুদ্ধিত জাগৃতিৰ সুক্ষ্ম তত্ত্ব অচেতন হৈ যায়। সেই প্ৰাণীয়ে অবিদ্যাৰ ৰাত্ৰিত স্বৰূপক স্পষ্ট ভাৱে দেখা নাপায়, কিন্তু তাৰ অস্তিত্ব থাকে। জাগৃত হোৱা আৰু অচেতন হোৱাৰ মাধ্যম হ'ল এই বুদ্ধি, যি সকলোতে অব্যক্ত থাকে, দেখাপোৱা নাযায়।

ভূতগ্ৰামঃ স এৱায়ং ভূত্বা ভূত্বা প্ৰলীয়তে।

ৰাত্ৰ্যাগমেহৰশঃ পাৰ্থ প্ৰভৱত্যাহৰাগমে।।১৯।।

হে পাৰ্থ ! সকলো প্ৰাণী এইদৰে জাগৃত হৈ প্ৰকৃতিৰে বিবশ হৈ অবিদ্যাৰূপী ৰাত্ৰি অহালৈকে অচেতনত থাকে। তেওঁলোকে দেখা নাপায় আমাৰ লক্ষ্য কি? দিনৰ প্ৰৱেশ কালত সেইবোৰ পুনঃ জাগৃত হৈ যায়। যেতিয়ালৈকে বুদ্ধি আছে, তেতিয়ালৈকে ইয়াৰ অন্তৰালত বিদ্যা আৰু অবিদ্যাৰ ক্ৰম চলি থাকে, তেতিয়ালৈকে তেওঁ সাধক হৈ থাকে, মহাপুৰুষ নহয়।

পৰস্তস্মাত্ত্ব ভাবোহন্যোহব্যক্তোহব্যক্তাৎ সনাতনঃ।

যঃ স সৰ্বেষু ভূতেষু নশ্যৎসু ন বিনশ্যতি।।২০।।

একতো ব্ৰহ্মা অৰ্থাৎ বুদ্ধি অব্যক্ত, ইন্দ্ৰিয় বোৰে দেখা নাপায় আৰু ইয়াতকৈ দূৰত সনাতন অব্যক্ত ভাৱ আছে, যি ভূত প্ৰাণী নষ্ট হলেও সি নষ্ট নহয়, অৰ্থাৎ বিদ্যাত সচেতন আৰু অবিদ্যাত অচেতন হৈ থাকে, দিনত উৎপন্ন হয় আৰু ৰাত্ৰিত বিলীন ভাৱৰালা অব্যক্ত ব্ৰহ্মাৰো বিলয় হলে সেই সনাতন অব্যক্ত ভাৱ প্ৰাপ্ত হয়, যি নষ্ট নহয়। বুদ্ধিত হব পৰা উক্ত দুটা উঠা-নমা যেতিয়া অন্ত হৈ যায় তেতিয়া সনাতন অব্যক্ত ভাৱ প্ৰাপ্ত হয়, যি মোৰ পৰম

ধাম হয়। যেতিয়া সনাতন অব্যক্ত ভাৱ প্ৰাপ্ত হৈ যায় তেতিয়া বুদ্ধিও সেই ভাৱতে মিলি যায়, সেই ভাৱকে ধাৰণ কৰি লয়। সেই কাৰণে সেই বুদ্ধি স্বয়ং নাইকিয়া হৈ যায় আৰু তাৰ স্থানত সনাতন অব্যক্ত ভাৱ শেষ থাকে।

অব্যক্তোহক্ষৰ ইত্যুক্তস্তমাহঃ পৰমাং গতিম্।

যং প্ৰাপ্য ন নিৰতন্তে তদ্ধাম পৰমং মম।। ২১।।

সেই সনাতন অব্যক্ত ভাৱক অক্ষৰ অৰ্থাৎ অবিনাশী বুলি কোৱা হয়। তাকেই পৰমগতি কোৱা হয়। সেয়াই মোৰ পৰম ধাম, যাক প্ৰাপ্ত কৰি মানুহ পিছলৈ নুঘূৰে-তাৰ পুনৰ জন্ম নহয়। এই সনাতন অব্যক্ত ভাৱক প্ৰাপ্ত কৰাৰ বিধি হ'ল, তেওঁ কয়—

পুৰুষঃ স পৰঃ পাৰ্থ ভক্ত্যা লভ্যস্ত্বনন্যয়া।

যস্যান্তঃস্থানি ভূতানি যেন সৰ্দমিদং ততম্।। ২২।।

পাৰ্থ ! যি পৰমাত্মাৰ অন্তৰ্গত সম্পূৰ্ণ ভূত প্ৰাণী আছে, যত সম্পূৰ্ণ জগত ব্যাপ্ত আছে, সনাতন অব্যক্ত ভাৱথকা সেই পৰম পুৰুষ অনন্য ভক্তিৰ দ্বাৰা প্ৰাপ্ত হোৱা যোগ্য। অনন্য ভক্তিৰ অৰ্থ হ'ল যে পৰমাত্মাৰ বাদে অন্য কাৰো স্মৰণ নকৰি তেওঁৰ লগতে লাগি থকা। অনন্য ভাৱেৰে লাগি থকা পুৰুষো কেতিয়ালৈকে পুনৰজন্মৰ ভিতৰত থাকিব আৰু কেতিয়া তেওঁ পুনৰ জন্মক অতিক্ৰম কৰিব? এই বিষয়ে যোগেশ্বৰে কয়—

যত্র কালে ত্বনাবৃত্তিমাবৃত্তিং চৈব যোগিনঃ

প্ৰয়াতা যান্তি তং কালং বক্ষ্যামি ভৱতৰ্ষভ।। ২৩।।

হে অৰ্জুন ! যি সময়ত শৰীৰ ত্যাগ কৰি যোৱা যোগীজনৰ পুনৰজন্ম নহয় আৰু যি কালত শৰীৰ ত্যাগ কৰিলে পুনৰজন্ম পায়, মই এতিয়া সেই কালৰ বৰ্ণনা কৰিম।

অগ্নিজ্যোতিৰহঃ শুল্কঃ ষত্মাসা উত্তৰায়ণম্।

তত্র প্ৰয়াতা গচ্ছন্তি ব্ৰহ্ম ব্ৰহ্মবিদো জনাঃ।। ২৪।।

শৰীৰৰ সম্বন্ধ ত্যাগ কৰা সময়ত যাৰ সন্মুখত অগ্নি জল থাকে, দিনৰ

পোহৰ থাকে, সূৰ্য্য প্ৰকাশময় হৈ থাকে, শুক্লপক্ষৰ চন্দ্ৰ বাঢ়ি আছে, উত্তৰায়ণৰ নিৰ্ভ্ৰ আৰু সুন্দৰ আকাশ আছে, সেই সময়ত প্ৰয়াণ কৰা ব্ৰহ্মবেত্তা যোগীজনব্ৰহ্মকেই প্ৰাপ্ত কৰে। অগ্নি ব্ৰহ্মতেজৰ প্ৰতীক হয়। দিন বিদ্যাৰ প্ৰকাশ। শুক্লপক্ষ নিৰ্মলতাৰ প্ৰতীক। বিবেক, বৈৰাগ্য, শম, দম, তেজ আৰু প্ৰজ্ঞা এই ছয় ঐশ্বৰ্য্য ছয়মাহ হয়। উৰ্দ্ধৰেতা স্থিতিয়েই উত্তৰায়ণ। প্ৰকৃতিৰ সম্পূৰ্ণ সিপাৰৰ এই অৱস্থাত যোৱা ব্ৰহ্মবেত্তা যোগীজন ব্ৰহ্ম প্ৰাপ্ত কৰে, তেওঁৰ পূৰ্ণৰ জন্ম নহয়; কিন্তু অনন্য চিন্তেৰে লাগি থকা যোগীজনে যদি এই প্ৰকাশৰ প্ৰাপ্ত নকৰে, যাৰ সাধনা এতিয়াও পূৰ্ণ হোৱা নাই, তেওঁৰ কি হব ? ইয়াত কয় -

ধূমো ৰাত্ৰিস্তথা কৃষ্ণঃ যন্মাসা দক্ষিণায়নম্।

তত্র চান্দ্ৰমসং জ্যোতি যোগী প্ৰাপ্য নিৰ্বৰ্ততে ॥২৫॥

যাৰ প্ৰয়াণকালত ধোৱা হৈ আছে, যোগাগ্নি (অগ্নি যজ্ঞ প্ৰক্ৰিয়াত পোৱা অগ্নিৰ স্বৰূপ) কিন্তু ধোৱাৰে ঢাক খাই আছে, অবিদ্যাৰ ৰাত্ৰি থাকে, এন্ধাৰ থাকে, কৃষ্ণপক্ষৰ চন্দ্ৰ ক্ষীণ হৈ গৈছে, আন্ধাৰৰ প্ৰধানতা থাকে, ছয়বিকাৰ (কাম, ক্ৰোধ, লোভ, মোহ, মদ আৰু মাৎসৰ্য) ৰে যুক্ত দক্ষিণায়ন অৰ্থাৎ বহিৰ্মুখী থাকে (যি পৰমাত্মাৰ প্ৰবেশৰ পৰা এতিয়াও বাহিৰতে আছে) সেই যোগীক পূৰ্ণৰ জন্ম লব লাগিব; তেতিয়া কি শৰীৰৰ লগতেই সেই যোগীৰ সাধনা নষ্ট হৈ যাবনেকি ? ইয়াত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কয় -

শুক্লকৃষ্ণে গতী হ্যেতে জগতঃ শাস্বতে মতে।

একয়া যাত্যনাবৃত্তিমন্যাবৰ্ততে পুনঃ ॥২৬॥

উপৰোক্ত শুক্ল আৰু কৃষ্ণ দুই প্ৰকাৰৰ গতিয়েই জগতত শাস্বত হৈ আছে অৰ্থাৎ সাধনাৰ কেতিয়াও বিনাশ নহয়। এটা (শুক্ল) অৱস্থাত প্ৰয়াণ কৰাজনে পাছলৈ ঘূৰি নহা পৰম গতি প্ৰাপ্ত কৰে আৰু সিটো অৱস্থাত যত ক্ষীণ প্ৰকাশ তথা কালিমা আছে, এনে অৱস্থাত যোৱা জনে পাছলৈ ঘূৰি আহিব লাগিব, জন্ম লব লাগিব। যেতিয়ালৈকে পূৰ্ণ প্ৰকাশ নাপায়, তেতিয়ালৈকে তেওঁ ভজন কৰিব লাগিব। প্ৰশ্ন পূৰ্ণ হ'ল। এতিয়া ইয়াৰ কাৰণে সাধনাত পূৰ্ণৰ জোৰদি কয় -

নৈতে স্ত্ৰী পাৰ্থ জানন্যোগী মুহুৰ্তি কশ্চন।

তস্মাৎসৰ্বেষু কালেষু যোগযুক্তো ভৰাজুন।।২৭।।

হে পাৰ্থ! এই পথক জানিলে কোনোযোগীয়ে মোহিত নহয়। তেওঁ জানে যে পূৰ্ন প্ৰকাশ পালে হে ব্ৰহ্ম প্ৰাপ্তী হয়, আৰু ক্ষীণ প্ৰকাশত থাকিলেও পূৰ্নৰ জন্মত সাধনাৰ নাশ নহয়। দুটা গতিয়ে শাস্বত। সেয়ে অৰ্জুন! তুমি সকলো সময়তে যোগযুক্ত হোৱা অৰ্থাৎ নিৰন্তৰ সাধনা কৰা।

বেদেষু যজ্ঞেষু তপঃসু চৈব

দানেষু যৎপুণ্যফলং প্ৰদিশ্তম।।

অত্যেতি তৎসৰ্বমিদং বিদিত্বা

যোগী পৰং স্থানমুপৈতি চাদ্যম।।২৮।।

ইয়াক সাক্ষাৎকাৰৰ সৈতে জানি (মানি নহয়) যোগীয়ে বেদ, যজ্ঞ, তপ আৰু দানৰ পূৰ্ণ্যফলক নিঃসন্দেহে অতিক্ৰম কৰি যায় আৰু সনাতন পৰম পদ প্ৰাপ্ত কৰে। অবিদিত পৰমাত্মাৰ সাক্ষাৎ কৰি জনাৰ নামেই হ'ল বেদ। সেই অবিদিত তত্ত্ব যেতিয়া বিদিত হৈ যাব, তেতিয়া আৰু কোনে কাক জানিব লাগে? সেয়ে বিদিত হোৱাৰ পিছত বেদৰো প্ৰয়োজন সমাপ্ত হৈ যায়; জনালোক বেলেগ নহয়। যজ্ঞ অৰ্থাৎ আৰাধনাৰ নিৰ্দিষ্ট ক্ৰিয়াৰ আৱশ্যক আছিল, কিন্তু যেতিয়া এই তত্ত্ব বিদিত হৈ গ'ল তেতিয়া ভজননো কাৰ কৰিব? মনেৰে সৈতে ইন্দ্ৰিয় সমূহৰ লক্ষ্যৰ অনুৰূপ তাপ দিয়াই হ'ল তপ। লক্ষ্য প্ৰাপ্ত কৰাৰ পিছত কাৰ বাবে তপ কৰিব? মন, বচন আৰু কৰ্মেৰে সৰ্বতোভাৱে সমৰ্পণৰ নামেই দান। এই সকলোৰ পূৰ্ণ্যফল হ'ল পৰমাত্মা প্ৰাপ্তী। ফলো এতিয়া আৰু বেলেগে নাই, সেয়ে এই সকলোৰ এতিয়া আৱশ্যকতা নাই। সেইজন যোগী যজ্ঞ, তপ, দান ইত্যাদিৰ ফলো পাব হৈ গৈছে। সেই পৰম পদ প্ৰাপ্ত হৈ গৈছে।

নিষ্কৰ্ষঃ

এই আধ্যায়ত পাৰ্চটা প্ৰমুখ বিষয়ৰ ওপৰত আলোচনা কৰা হ'ল, যত সৰ্ব্ব প্ৰথম সপ্তম আধ্যায়ৰ শেষত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণৰ দ্বাৰা বীজাৰোপিত প্ৰশ্নৰ স্পষ্ট বুজাবৰ মানসেৰে এই আধ্যায়ৰ আৰম্ভনীত অৰ্জুনে সাতটা প্ৰশ্ন কৰিছিল যে ভগৱান ! যাক আপুনি কৈছে, সেইব্ৰহ্ম কি? সেই আধ্যাত্ম কি? সেই সম্পূৰ্ণকৰ্ম কি? অধিদৈৱ- অধিভূত আৰু অধিযজ্ঞ কি আৰু শেষত আপোনাক কেনেকৈ বিস্মৃতি

নোহোঁৰাকৈ জানিব পাৰি?

যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছিল যে যাৰ বিনাশ নহয়, সেয়াই পৰমব্ৰহ্ম। নিজৰ উপলব্ধি কৰিব পৰা পৰম ভাৱেই হ'ল আধ্যাত্ম। যি জীৱমায়াৰ আধিপত্যৰ পৰা ওলাই আহি আত্মাৰ আধিপত্যত হয়, সেয়ে আধ্যাত্ম আৰু ভূতৰ সেই ভাৱ যি শুভ আৰু অশুভ সংস্কাৰক উৎপন্ন কৰে; সেই ভাৱৰ নিৰোধ হোৱা 'বিসৰ্গঃ' নাইকিয়া হোৱাই হ'ল কৰ্মৰ সম্পূৰ্ণতা, আৰু আগলৈ কৰ্ম কৰাৰ আৱশ্যকতা নাথাকে, কৰ্ম কোনো এনে এটা বস্তু, যি সংস্কাৰৰ উদগমক নাইকিয়া কৰি দিয়ে।

এইদৰে ক্ষৰভাৱ হ'ল অধিভূত অৰ্থাৎ নষ্ট হব পৰা ভূতক উৎপন্নকৰাৰ মাধ্যম। তেওঁ হ'ল ভূতৰ অধিষ্ঠাতা। পৰমপুৰুষ হ'ল অধিদেৱ। তাত দৈৱী সম্পদ বিলীন হৈ থাকে। এই শৰীৰত অধিযজ্ঞ ময়েই, অৰ্থাৎ য'ত যজ্ঞ বিলয় হৈ যায়, সেয়ে ময়েই, যজ্ঞৰ অধিষ্ঠাতাও ময়েই। তেওঁ মোৰ স্বৰূপকে প্ৰাপ্ত কৰে, অৰ্থাৎ শ্ৰীকৃষ্ণ এজন যোগী আছিল। অধিযজ্ঞ কোনো এনে পুৰুষ যি এই শৰীৰতে থাকে, বাহিৰত নহয়। শেষত প্ৰশ্ন আছিল যে অন্ত সময়ত আপোনাক কেনেকৈ জানিব পাৰিম? তেখেতে কৈছিল যে মোৰ নিৰন্তৰ স্মৰণ কৰা, মোৰ বাদে অন্য কোনো বিষয় বস্তু চিন্তনত আহিবলৈ নিদিবা আৰু এনেকুৱা কৰিয়েই শৰীৰৰ সম্বন্ধক ত্যাগ কৰা, তেওঁ মোৰ সাক্ষাৎস্বৰূপক প্ৰাপ্ত কৰে, যি শেষতো সেই একেই প্ৰাপ্ত হয়। শৰীৰৰ মৃত্যুৰ লগতে এইটো উপলব্ধি হব এনে কথা নহয়। মৰাৰ পিছত পোৱা হ'লে শ্ৰীকৃষ্ণ পূৰ্ণ নহলহেঁতেন, বহুতো জন্মৰ পিছত জ্ঞানীয়েও তেওঁৰ স্বৰূপ নেপালেহেঁতেন। মনৰ সম্পূৰ্ণ নিৰোধ আৰু নিৰুদ্ধ মনৰো বিলয় কালেই

হ'ল অন্তকাল, য'ত পুনৰ শৰীৰৰ উৎপত্তিৰ মাধ্যম শান্ত হৈ যায়। সেই সময়ত সেই পৰমভাৱত প্ৰৱেশ হয়। তেওঁৰ পুনৰজন্ম নহয়।

এই প্ৰাপ্তিৰ বাবে তেৰে স্মৰণৰ বিধান কলে যে অৰ্জুন! নিৰন্তৰ মোৰ স্মৰণ কৰা আৰু যুদ্ধ কৰা। দুটা কাম একে লগে কেনেকৈ কৰিবা? এনেকুৱা নহয় যে 'জয় গোপাল, হে কৃষ্ণকৈ থাকক আৰু লাঠিও চলাই থাকক। স্মৰণৰ স্বৰূপ স্পষ্ট কৰি কৈছে যে যোগ- ধাৰণাত স্থিত থাকি, মোৰ বাদে

অন্য কোনো বস্তুৰ স্মৰণনকৰাকৈ নিৰন্তৰ স্মৰণ কৰা। যেতিয়া স্মৰণ ইমান সুক্ষ্ম হৈ যায় তেতিয়াহলে যুদ্ধ কোনে কৰিব? ধৰি লওক, এই কিতাপ খনেই হ'ল ভগৱান, ইয়াৰ ওচৰ- পাজৰৰ বস্তু সন্মুখত বহা মানুহ বা অন্য জনা-শুনা কোনো বস্তুৰেই মনত সংকল্প নাহক, দেখা নপৰক, যদি দেখি পায় তেতিয়া হ'লে স্মৰণ হোৱা নাই, এনে স্মৰণত যুদ্ধ কেনেদৰে হব? বস্তুতঃ যেতিয়া আপুনি এইদৰে নিৰন্তৰ স্মৰণত প্ৰবৃত্ত হৈ থাকে, তেতিয়া ই যুদ্ধৰ আচল ৰূপ দেখা পাব। সেই সময়ত মায়াপ্ৰবৃত্তি বাধা ৰূপত প্ৰত্যক্ষ হয়। কাম, ক্ৰোধ, ৰাগ-দ্বেষ এইবোৰ দুৰ্জয় শত্ৰু। এইশত্ৰুবোৰে স্মৰণ কৰিবলৈ নিদিয়। সিহঁতৰ পৰা পৰিত্ৰাণ পোৱাই হ'ল যুদ্ধ। এই শত্ৰু বিলাক নাইকিয়া কৰা ব্যক্তি জনেহে পৰমগতি প্ৰাপ্ত কৰে।

এইপৰমগতি পাবৰ বাবে অৰ্জুন ! তুমি 'ওঁ' জপ কৰা আৰু ধ্যান মোৰ কৰা অৰ্থাৎ শ্ৰীকৃষ্ণ এজন যোগী আছিল। নাম আৰু ধ্যান(ৰূপ) আৰাধনাৰ চাৰি-কাঠি।

যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই এই প্ৰশ্নকো লৈছিল যে পুনৰজন্ম কি হয়? তাত কোন কোন আহে? তেওঁ কলে যে ব্ৰহ্মাৰ পৰা আৰম্ভ কৰি সম্পূৰ্ণ জগত পূৰ্ণৰাৱৰ্তী হয়, আৰু এই সকলোবোৰৰ সমাপ্ত হলেও মোৰ পৰম অব্যয় ভাৱ তাৰ স্থিতি সমাপ্ত নহয়।

এই যোগত প্ৰৱেশ কৰা পুৰুষৰ দুটা গতি আছে। যি জনে পূৰ্ণ প্ৰকাশ প্ৰাপ্ত কৰিছে, ষট্ৰৈশ্বৰ্য্য সম্পন্ন উৰ্দ্ধৰেতা, যাৰ অলপো কম নাই, তেৰে পৰমগতি প্ৰাপ্ত কৰে। যদি সেই যোগকৰ্তাত অলপো কম থাকে, কৃষ্ণপক্ষৰ নিচিনা আন্ধাৰ আছে, এনে অৱস্থাত শৰীৰৰ অন্ত হোৱা যোগীৰ পুনৰ জন্ম লব লগিয়া হয়। তেওঁ সাধাৰণ জীৱৰ দৰে জন্ম-মৃত্যুৰ মাজত নপৰে, বৰঞ্চ জন্ম লৈ এৰি অহা ঠাইৰ পৰা আগলৈ বাকী থকা সাধনা পূৰা কৰে।

এইদৰে পিছৰ জন্মত সেই ক্ৰিয়াৰ দ্বাৰা গৈ তেৱো তাতেই পায়, যাৰনাম পৰম ধাম। আগতো শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছিল যে ইয়াৰ অলপো সাধনে জন্ম-মৃত্যুৰ মহান ভয়ৰ পৰা উদ্ধাৰ কৰিহে এৰে। 'দুইটা ৰাস্তাই শাস্বত, মচিব নোৱাৰা' এই কথা ক বুজি পোৱা কোনো পুৰুষেই যোগৰ দ্বাৰা পৰিচালিত নোহোৱাকৈ নাথাকে। অৰ্জুন ! তুমিও যোগী হোৱা। যোগী বেদ, তপ, যজ্ঞ আৰু দানৰো পূণ্যফলক পাব কৰি যায়, পৰমগতি প্ৰাপ্ত কৰে। এই আধ্যাত স্থানে

স্থানে পৰম্গতিৰ চিত্ৰণ কৰা হৈছে। যাক অব্যক্ত অক্ষয় আৰু অক্ষৰ বুলি
সম্বোধিত কৰা হ'ল, যাৰ কেতিয়াও ক্ষয় অথবা বিনাশ নহয়। সেয়ে—

এইদৰে শ্ৰীমৎভগৱৎগীতাৰূপী উপনিষদ্ আৰু ব্ৰহ্মবিদ্যা তথা যোগ
শাস্ত্ৰ বিষয়ক শ্ৰীকৃষ্ণ- অৰ্জুনৰ সংবাদ 'অক্ষৰ ব্ৰহ্মযোগ' নামৰ অষ্টম আধ্যাপূৰ্ণ
ইল।

ইতি শ্ৰীমৎপৰমহংস পৰমানন্দস্য শিষ্য স্বামী অড়গড়ানন্দ কৃতে
শ্ৰীমৎভগৱৎগীতায়াঃ “যথার্থ গীতা” ভাষ্য 'অক্ষৰ ব্ৰহ্মযোগো' নাম
অষ্টমোহধ্যায়।। ৮।।

॥ হৰি ওঁ তৎসৎ ॥

ওঁ

শ্ৰীপৰমাত্মনে নমঃ

অথ নৰমোহপ্ৰায়াঃ

ছয় আধ্যায়লৈকে যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই যোগৰ ক্ৰমবদ্ধ বিশ্লেষণ কৰিছিল। যাৰ শুদ্ধ অৰ্থ আছিল, যজ্ঞৰ প্ৰক্ৰিয়া। যজ্ঞ সেই পৰমত প্ৰৱেশ দিয়াৰ পৰা আৰাধনাৰ বিধি বিশেষৰ চিত্ৰণ; মনৰ নিৰোধ আৰু নিৰুদ্ধ মনৰ বিলয় কালত সেই অমৃত তত্ত্ব বিদিত হয়। অন্তকালত যজ্ঞই যাৰ সৃষ্টি কৰে, তাক পান কৰাজন যোগী জ্ঞানী আৰু তেওঁ সনাতন ব্ৰহ্মত প্ৰৱেশ পায়। সেই মিলনৰ নামেই যোগ। সেই যজ্ঞক কাৰ্য্যৰূপ দিয়াকেই কৰ্ম বুলি কোৱা হয়। সাত আধ্যায়ত তেখেতে কৈছে যে এই কৰ্মক কৰা জনে ব্যাপ্ত ব্ৰহ্মা, সম্পূৰ্ণ কৰ্ম, সম্পূৰ্ণ আধ্যাত্ম, সম্পূৰ্ণ অধিদৈৱ, অধিভূত আৰু অধিযজ্ঞৰে সৈতে মোক জানে। আঠ আধ্যায়ত তেখেতে কৈছে যে এয়েই পৰমগতি। এয়েই পৰমধাম।

প্ৰস্তুত আধ্যায়ত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই নিজেই আলোচনা কৰিছে যে-যোগযুক্ত পুৰুষৰ ঐশ্বৰ্য্য কেনেকুৱা? সকলোতে ব্যাপ্ত থকা স্বত্বেও তেওঁ কেনেকৈ নিৰ্লেপ হৈ থাকে? কৰ্ম কৰিও কেনেকৈ তেওঁ অকৰ্ত্তা হয়? সেইপুৰুষৰ স্বভাৱ আৰু প্ৰভাৱৰ ওপৰত প্ৰকাশ কৰি, যোগকে আচৰণত পেলাই, আহিব পৰা দেৱতা আদিৰ বিপদৰ পৰা সতৰ্ক কৰিলে আৰু সেই পুৰুষৰ শৰণাপন্ন হবলৈ জোৰ দিয়ে।

শ্ৰীভগবানুবাচ

ইদং তু তে গুহ্যতমং প্ৰৱক্ষ্যাম্যনসূয়ৰে।

জ্ঞানং বিজ্ঞানসহিতং যজ্ঞজ্ঞাত্বা মোক্ষ্যসেহশুভাৎ।।১।।

যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কয়- অৰ্জুন! অসূয়া(ইৰ্ষ্যা) নোহোৱা তোমাৰ কাৰণে মই এই পৰম গোপনীয় জ্ঞানক বিজ্ঞানেৰে সৈতে কম অৰ্থাৎ প্ৰাপ্তীৰ পিছত মহাপুৰুষৰ থকা-মেলাৰ সৈতে কম যে সেই মহাপুৰুষে কেনেকৈ সকলো ঠাইতে একেলগে কৰ্ম কৰে, কেনেকৈ তেওঁ জাগৃতি প্ৰদান কৰে, সাৰথি হৈ আত্মাৰ লগত কেনেকৈ সদায় থাকে? 'যজ্ঞজ্ঞাত্বা' যাক সাক্ষাৎ ভাৱে জানি তুমি দুখৰূপী

সংসাৰৰ পৰা মুক্ত হৈ যাবা। সেই জ্ঞান কেনেকুৱা? ইয়াত কয় –

ৰাজবিদ্যা ৰাজগুহ্যং পবিত্ৰমিদমুত্তমম্।

প্ৰত্যক্ষাবগমং ধৰ্ম্যং সুসুখং কৰ্ত্তমব্যয়ম।।২।।

বিজ্ঞানেৰে সংযুক্ত এই জ্ঞান সকলো বিদ্যাৰেই ৰজা হয়। বিদ্যাৰ অৰ্থ ভাষা- জ্ঞান অথবা শিক্ষা নহয়। **‘বিদ্যা হি কা ব্ৰহ্ম গতিৰ্দ্দায়ী’, সা বিদ্যা যা বিমুক্তয়ে** বিদ্যা তাকেইকোৱা হয় যে যাৰ ওচৰলৈ আহে, তাক উঠাই ব্ৰহ্মপদত চলাই মোক্ষ প্ৰদান কৰে। যদি বাটত বিদ্ধি- সিদ্ধিবোৰ অথবা প্ৰকৃতিত কৰবাত ওলমি পৰে, তেতিয়া এইটো প্ৰমাণ হৈ যাব অবিদ্যা সফল হৈ গল। সেইটো বিদ্যা নহয়। এই ৰাজবিদ্যা এনেকুৱা যে যি নিশ্চিত কল্যাণ কৰিবই। ই সম্পূৰ্ণ গোপনীয়ৰো ৰজা। অবিদ্যা আৰু বিদ্যাৰ ভাৱনাৰ অনাবৰণ হলে, যোগযুক্ততাৰ পাছতহে ইয়াৰ মিলন হয়। ই অতি পবিত্ৰ, উত্তম আৰু প্ৰত্যক্ষ ফল দিব পৰা। ‘এইফালে কৰা, সেইফালে লোৱা’- এনে প্ৰত্যক্ষ ফল দিব পৰা। এইটো অন্ধ- বিশ্বাস নহয় যে এই জন্মত সাধন কৰা, ফল কেতিয়াবা অন্য জন্মত লবা। ই পৰম ধৰ্ম পৰমাত্মাৰ লগত সংযুক্ত হৈ আছে বিজ্ঞানেৰে সৈতে এই জ্ঞান কৰিবলৈও সৰল আৰু অবিনাশী।

দুই আধ্যাত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছিল যে অৰ্জুন! এই যোগত বীজৰ নাশ নহয়। ইয়াৰ অলপো সাধনে জন্ম- মৰণৰ- মহান ভয়ৰ পৰাউদ্ধাৰ কৰি দিয়ে। ষষ্ঠ আধ্যাত অৰ্জুনে সুধিছিল যে- ভগৱান! শিথিল যত্ন কৰা সাধক নষ্ট- ভ্ৰষ্ট নহয়তো? শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছিল যে অৰ্জুন! প্ৰথমতে কৰ্ম বুজি পোৱা আৱশ্যক আৰু কৰ্ম বুজি পোৱাৰ পিছত অলপ মান সাধনত লাগি গলে, তেওঁৰ কোনো জন্মতে কেতিয়াও বিনাশ নহয়, বৰঞ্চ সেই অলপ অভ্যাসৰ প্ৰভাৱত প্ৰত্যেক জন্মত তাকেই কৰে। অনেক জন্মৰ পৰিণামত তাকেই পাই যায়; যাৰ নাম পৰমগতি অৰ্থাৎ পৰমাত্ম। তাকে যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই ইয়াতো কৈছে যে এই সাধনা কৰাত বৰ সুগম আৰু অবিনাশী, কিন্তু ইয়াৰ কাৰণে শ্ৰদ্ধা নিতান্ত আৱশ্যক—

অশ্ৰদ্ধানাঃ পুৰুষা ধৰ্মস্যস্য পৰন্তপ।

অপ্রাপ্য মাং নিরতন্তে মৃত্যুসংসাৰবত্ননি।।৩।।

পৰন্তপ অৰ্জুন! এই ধৰ্মত (যাৰ অলপো সাধন কৰিলে বিনাশ নাই) শ্ৰদ্ধা বহিত পুৰুষ (এক ইষ্টত মনক কেন্দিত নকৰা পুৰুষ) মোক প্ৰাপ্ত নকৰি সংসাৰ ক্ষেত্ৰত ভ্ৰমন কৰি থাকে। সেয়ে শ্ৰদ্ধা অনিবাৰ্য্য। কি আপুনি সংসাৰৰ সিপাৰত আছেনে? ইয়াত কৈছে—

ময়া ততমিদং সৰ্বং জগদব্যক্তমূৰ্তিনা।

মৎস্থানি সৰ্বভূতানি ন চাহং তেষ্ববস্থিতঃ।।৪।।

মোৰঅব্যক্ত স্বৰূপৰ দ্বাৰা এই সকলো জগত ব্যাপ্ত আছে অৰ্থাৎ মই যি স্বৰূপত স্থিত আছো, সেইটো সৰ্বত্ৰ ব্যাপ্ত হৈ আছে। সকলো প্ৰাণী মোতেই স্থান পায়, কিন্তু মই সিহঁতত স্থিত নহওঁ; কিয়নো মই অব্যক্ত স্বৰূপত স্থিত আছো। মহাপুৰুষ যি অব্যক্ত স্বৰূপত স্থিত থাকে, তাৰ পৰাই(শৰীৰ এৰি সেই অব্যক্ত স্তৰৰ পৰাই) কথা পাতে। এই ক্ৰমেৰে আগলৈ কয়—

ন চ মৎস্থানি ভূতানি পশ্য মে যোগমৈশ্বৰম্।

ভূতভ্ৰম্ চ ভূতস্থো মমাত্মা ভূতভাৰনঃ।।৫।।

মূলতঃ সম্পূৰ্ণ ভূত মোত স্থিত নহয়, কিয়নো তেওঁ বিলাক মৰণশীল প্ৰকৃতিৰ আশ্ৰিত; কিন্তু মোৰ যোগমায়াৰ ঐশ্বৰ্য্যক চোৱা যে জীৱধাৰি সকলৰ উৎপন্ন আৰু পোষক কৰা মোৰ আত্মা ভূতত স্থিত নহয়। আত্মা স্বৰূপত আছো সেই কাৰণে সেই ভূত প্ৰাণীত মই স্থিত নহঁওঁ। এয়ে যোগৰ প্ৰভাৱ। ইয়াক স্পষ্ট কৰিবৰ কাৰণে যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই দৃষ্টান্ত দাঙি ধৰে—

যথা কাশস্থিতো নিত্যং বায়ুঃ সৰ্বত্ৰগো মহান্।

তথা সৰ্বাণি ভূতানি মৎস্থানীত্বপথাৰয়।।৬।।

যেনেকৈ আকাশৰ পৰা উৎপন্ন বায়ু সদায় আকাশতে থাকে, কিন্তুতাক মলিন কৰিব নোৱাৰে- ঠিক তেনেকৈ সম্পূৰ্ণ ভূত মোতেই স্থিত আছে, এনেদৰে জানা। ঠিক এই দৰে মই আকাশৰ দৰে নিৰ্লেপ আছো। তেওঁলোকে মোক মলিন কৰিব নোৱাৰে। প্ৰশ্ন পূৰা হ'ল, এয়েই যোগৰ প্ৰভাৱ।

এতিয়া যোগীয়ে কি কৰে? এই বিষয়ে কয় -

সৰ্বভূতানি কৌন্তেয় প্রকৃতিং যান্তি মামিকাম্।
কল্পক্ষয়ে পুনস্তানি কল্পাদৌ বিসৃজাম্যহম্।।৭।।

হে অৰ্জুন! কল্পৰ বিলয়কালত সকলো মোৰ প্ৰকৃতি অৰ্থাৎ মোৰ স্বভাৱক প্ৰাপ্ত কৰে আৰু কল্পৰ আদিত মই তেওঁলোকক বাৰে বাৰে 'বিসৃজামি' বিশেষ ৰূপত স্ৰজন কৰোঁ। থকাতো তেওঁলোক প্ৰথমৰ পৰাই আছিল, কিন্তু বিকৃত হৈ আছিল, তেওঁলোকক ৰচনা কৰোঁ, সজাওঁ। যি অচেতন আছে তেওঁক জগাওঁ। কল্পৰ বাবে প্ৰেৰিত কৰোঁ। কল্পৰ তাৎপৰ্য্য হ'ল উত্থানৰ বাবে পৰিবৰ্ত্তন কৰা। আসুৰী সম্পদৰ পৰা ওলিয়াই যেনেকৈ পুৰুষক দৈৱী সম্পদত প্ৰৱেশ কৰায় তাৰ পৰাই কল্পৰ আৰম্ভ হয় আৰু যেতিয়া ঈশ্বৰ ভাৱত প্ৰাপ্ত হয়, তাতে কল্পৰ ক্ষয় হয়। নিজৰ কৰ্ম পূৰা কৰি কল্পৰ বিলয় হৈ যায়। ভজনৰ আৰম্ভনী কল্পৰ আদি আৰু ভজনৰ শেষ, যত লক্ষ্য বিদিত হৈ যায় তাতে কল্পৰ শেষ। যেতিয়া এই পূৰ্ণৰাবৰ্ত্তী যোনিৰ কাৰণ ৰাগ-দ্বেষ আদিৰ পৰা মুক্তি হৈ নিজৰ শাস্ত্ৰত স্বৰূপত স্থিৰ হৈ যায়, ইয়াকে শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছে যে তেওঁ মোৰ প্ৰকৃতিক প্ৰাপ্ত কৰিছে।

যি মহাপুৰুষে প্ৰকৃতিক বিলয় কৰি স্বৰূপত প্ৰৱেশ পায়, তেওঁৰ প্ৰকৃতি কেনেকুৱা? কি তেওঁত প্ৰকৃতি বাকী থাকেনে? নহয়, তৃতীয় আধ্যায়ৰ ৩৩ শ্লোকত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কৈ আহিছে যে সকলো প্ৰাণীয়ে নিজৰ প্ৰকৃতিক প্ৰাপ্ত কৰে। যেনেকুৱা তেওঁৰ ওপৰত প্ৰকৃতিৰ গুণৰ চাপ, তেনেকৈ তেওঁ কৰ্ম কৰে, আৰু প্ৰত্যক্ষ দৰ্শণৰ সৈতে জনা জ্ঞানী জনেও নিজৰ প্ৰকৃতিৰ দৰেই চেষ্টা কৰে। তেওঁৰ পৰৱৰ্ত্তী বিলাকৰ কল্যাণৰ কাৰণে কাম কৰে। পূৰ্ণ জ্ঞানী তত্বস্থিত মহাপুৰুষৰ থকাও তেওঁৰ প্ৰকৃতিৰ দৰে হয়। তেওঁ নিজৰ এই স্বভাৱতে চলে। কল্পৰ ক্ষয়ত মানুহে মহাপুৰুষৰ এই অৱস্থাকে প্ৰাপ্ত কৰে। মহাপুৰুষৰ এই কৃতিত্বৰ ওপৰত পুনৰ জোৰ দি কয়-

প্ৰকৃতিং স্বামবষ্টভ্য বিসৃজামি পুনঃ পুনঃ।

ভূতগ্রামমিমং কৃৎস্নমবশং প্ৰকৃতেৰ্বশাৎ।।৮।।

নিজৰ প্ৰকৃতি অৰ্থাৎ মহাপুৰুষৰ অৱস্থাৰ স্বীকাৰ কৰি 'প্ৰকৃতেৰ্বশাৎ' নিজৰ নিজৰ স্বভাৱত স্থিত প্ৰকৃতিৰ গুণৰ বশত থাকি এই সম্পূৰ্ণ ভূত সমুদায়ক ময়ে বাৰে বাৰে 'বিসৃজামি' বিশেষ অজ্ঞান কৰোঁ, বিশেষ ৰূপত সজাওঁ। তেওঁলোকক নিজৰ স্বৰূপৰ ফালে অগ্ৰসৰ হবলৈ প্ৰেৰণা দিওঁ। তেতিয়া হলে আপুনি এই কৰ্মত বান্ধ খাই আছে?

ন চ মাং তানি কৰ্মাণি নিবন্ধন্তি ধনঞ্জয়।

উদাসীনবদাসীনমসক্তং তেষু কৰ্মসু।।৯।।

৪ৰ্থ আধ্যায়ৰ নৱম শ্লোকত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছিল যে মহাপুৰুষৰ কাৰ্য্য প্ৰণালীবোৰঅলৌকিক। আধ্যায় ৯-৪ ত কৈছে- মই অব্যক্তৰূপতে কৰোঁ। ইয়াতো তাকে কৈছে যে ধনঞ্জয়!! যিবোৰ কৰ্মক মই অদৃশ্য ৰূপত কৰোঁ, সেইবোৰত মোৰ আসক্তি নাই। উদাসীন ভাৱে স্থিত থকা মোক পৰমাত্মা স্বৰূপক সেই কৰ্মবোৰে নাবান্ধে; কিয়নো কৰ্মৰ পৰিণামত যি লক্ষ্য প্ৰাপ্ত হয়, তাত ময়েই আছোঁ। সেই কাৰণে সেইবোৰ কৰাৰ বাবে মই বিবশ নহওঁ। হয়। নিজৰ কৰ্ম পূৰা কৰি কল্পৰ বিলয় হৈ যায়। ভজনৰ আৰম্ভণী কল্পৰ আদি আৰু ভজনৰ শেষ, যত লক্ষ্য বিদিত হৈ যায় তাত কল্পৰ শেষ। যেতিয়া এই পূৰ্ণৰাত্ৰী যোনিৰ কাৰণ ৰাগ-দ্বেষ আদিৰ পৰা মুক্তি হৈ নিজৰ শাস্ত্ৰত স্বৰূপত স্থিৰ হৈ যায়, ইয়াকে শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছে যে তেওঁ মোৰ প্ৰকৃতিক প্ৰাপ্ত কৰিছে।

যি মহাপুৰুষে প্ৰকৃতিক বিলয় কৰি স্বৰূপত প্ৰৱেশ পায়, তেওঁৰ প্ৰকৃতি কেনেকুৱা? কি তেওঁত প্ৰকৃতি বাকী থাকেনে? নহয়, তৃতীয় আধ্যায়ৰ ৩৩ শ্লোকত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কৈ আহিছে যে সকলো প্ৰাণীয়ে নিজৰ প্ৰকৃতিক প্ৰাপ্ত কৰে। যেনেকুৱা তেওঁৰ ওপৰত প্ৰকৃতিৰ গুণৰ চাপ, তেনেকৈ তেওঁ কৰ্ম কৰে, আৰু প্ৰত্যক্ষ দৰ্শনৰ সৈতে জনা জ্ঞানী জনেও নিজৰ প্ৰকৃতিৰ দৰেই চেষ্টা কৰে। তেওঁৰ পৰৱৰ্তী বিলাকৰ কল্যাণৰ কাৰণে কাম কৰে। পূৰ্ণ জ্ঞানী তত্ত্বস্থিত মহাপুৰুষৰ থকাও তেওঁৰ প্ৰকৃতিৰ দৰে হয়। তেওঁ নিজৰ এই স্বভাৱতে চলে। কল্পৰ ক্ষয়ত মানুহে মহাপুৰুষৰ এই অৱস্থাকে প্ৰাপ্ত

কৰে। মহাপুৰুষৰ এই কৃতিত্বৰ ওপৰত পুনৰ জোৰ দি কয়-

এইটো স্বভাৱৰ লগত যুক্ত প্ৰকৃতিৰ কাৰ্য্যৰ প্ৰশ্ন আছিল, মহাপুৰুষৰ অৱস্থা আছিল, তেওঁৰ ৰচনা আছিল। এতিয়া মোৰ অধ্যক্ষতাত যি মায়া ৰচনা হয়, সি কেনেকুৱা? সিও এটা কল্প।

মায়াধ্যক্ষেন প্ৰকৃতিঃ সূয়তে সচৰাচৰম্।

হেতুনানেন কৌন্তেয় জগদ্বিপৰিবৰ্ততে।।১০।।

অৰ্জুন! মোৰ অধ্যক্ষতাত অৰ্থাৎ মোৰ উপস্থিতিত সৰ্বত্ৰ ব্যাপ্ত মোৰ অধ্যাসেৰে এই মায়া (ত্ৰিগুণময়ী প্ৰকৃতি, অষ্টধা, মূল প্ৰকৃতি আৰু চেতনা) চৰাচৰ সহিতে জগতক ৰচনা কৰে, সি ক্ষুদ্ৰ কল্প আৰু সেইকাৰণেই ই সংসাৰৰ অহা যোৱা চক্ৰত ঘূৰি থাকে। প্ৰকৃতিৰ এই ক্ষুদ্ৰ কল্প য'ত কালৰ পৰিবৰ্তন হয়, মোৰ অধ্যক্ষতাত প্ৰকৃতিয়ে কৰে, মই নকৰোঁ; কিন্তু সপ্তম শ্লোকৰ কল্প মহাপুৰুষে নিজে কৰে। একে স্থানৰ পৰা তেওঁ স্বয়ং কৰ্তা, য'ত তেওঁ বিশেষ ৰূপে স্ৰজন কৰিছে। ইয়াত কৰ্তা প্ৰকৃতি হয়, যি মাত্ৰ মোৰ আভাসেৰে এই ক্ষণিক পৰিবৰ্তন কৰে, য'ত শৰীৰৰ পৰিবৰ্তন, কালৰ পৰিবৰ্তন, যুগৰ পৰিবৰ্তন ইত্যাদি হয়। এনে ব্যাপ্ত প্ৰভাৱ থকা স্বত্বেও মুঢ় মানুহে মোক নাজানে। যেনে-

অবজানন্তি মাং মুঢ়া মানুষীং তনুমাশ্ৰিতম্।

পৰং ভাবমজানন্তো মম ভূতমহেশ্বৰম্।।১১।।

সম্পূৰ্ণ ভূতৰ মহান ঈশ্বৰ ৰূপ মোৰ পৰম ভৱক নজনা মুঢ় মানুহে মোক মনুষ্য শৰীৰত থকা বুলি তুচ্ছ বুলি ভাৱে। সম্পূৰ্ণ প্ৰাণী বোৰৰ ঈশ্বৰৰো যি মহান ঈশ্বৰ, সেই পৰম ভৱত মই স্থিত আছোঁ; কিন্তু মনুষ্য শৰীৰ ধাৰণ কৰিছোঁ। মুঢ়লোকে এইটো নাজানে। তেওঁলোকে মোক মনুষ্য বুলি সম্বোধন কৰে। তেওঁলোকৰ দোষ নো কি? যেতিয়া তেওঁলোকে দৃষ্টিপাত কৰে; তেতিয়া মহাপুৰুষৰ শৰীৰ হে দেখা পায়। কেনেকৈ তেওঁলোকে বুজি পাব যে আপুনি মহান ঈশ্বৰৰ ভৱত আছে বুলি? তেওঁলোকে কি নেদেখেনে? এই বিষয়ত কয়-

মোঘাশা মোঘকৰ্মাণো মোঘজ্ঞানা বিচেতসঃ।

ৰাঙ্কসীমাসূৰীং চৈব প্ৰকৃতিং মোহিনীং শ্ৰিতাঃ।।১২।।

তেওঁলোকে বৃথা আশা (যি কেতিয়াও পূৰ্ণ নহয় এনে আশা) ‘বিচেতসঃ বিশেষ
ৰূপত অচেতন থাকি, ৰাম্ফস তথা অসুৰৰ দৰে মোহিত হোৱা স্বভাৱধাৰণ
কৰি আছে। আসুৰী স্বভাৱ থকা মানুহে বুজি নাপায়। অসুৰ আৰু ৰাম্ফস
মনৰ এটা স্বভাৱ, এইটো কোনো জাতি বা যোনী নহয়। আসুৰী স্বভাৱ
থকাবোৰে মোক নাজানে, কিন্তু মহাত্মাজনে মোক জানে আৰু ভজনা কৰে-

মহাত্মানস্ত মাং পাৰ্থ দৈৱীং প্ৰকৃতিমাশ্ৰিতাঃ।

ভজন্ত্যনন্যমনসো জ্ঞাত্বা ভূতাদিমব্যয়ম্ ॥১৩॥

হে পাৰ্থ! পৰম্পৰা দৈৱী প্ৰকৃতি অৰ্থাৎ দৈৱী সম্পদত আশ্ৰয় লোৱা
মহাত্মাজনে মোক সম্পূৰ্ণ ভূতৰ আদি কাৰণ অব্যক্ত আৰু অক্ষৰ বুলি জানি
অনন্য মনেৰে অৰ্থাৎ মনৰ অন্তৰালত কোনো অন্যক স্থান নি দি মাত্ৰ মোৰ
ওপৰত শ্ৰদ্ধা ৰাখি নিৰন্তৰ মোকেই ভজনা কৰে। কি প্ৰকাৰে ভজনা কৰে?
এই বিষয়ে কয় -

সততং কীৰ্তয়ন্তো মাং যতন্তশ্চ দৃঢ় ব্ৰতাঃ।

নমস্যন্তশ্চ মাং ভক্ত্যা নিত্যযুক্তা উপাসতে ॥১৪॥

তেওঁ নিৰন্তৰ চিন্তনৰ ব্ৰতত অচল থাকি মোৰে গুণৰ চিন্তন কৰে প্ৰাপ্তীৰ
বাবে যত্ন কৰে আৰু মোকে বাৰম্বাৰ নমস্কাৰ কৰি সদায় মোৰ লগতে সংযুক্ত
থাকি অনন্য ভক্তিৰে মোৰ উপাসনা কৰে। অবিৰল লাগি থাকে। কেনেকুৱা
উপাসনা কৰে? কেনেকুৱা এই কীৰ্তিমান, বেলেগ অন্য উপাসনা নহয়, বৰষণ্ড
(মই ‘যজ্ঞ’ যাৰ বৰ্ণনা কৰি আহিছে, সেই আৰাধনাক ইয়াত সংক্ষেপতে
যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই পুনৰ উল্লেখিত কৰিছে -

জ্ঞানযজ্ঞেন চাপ্যন্যে যজন্তো মামুপাসতে।

একত্বেন পৃথকত্বেন বহুধা বিশ্বতোমুখম্ ॥১৫॥

তেওঁলোক ভিতৰৰ কোনোবাই মোক সৰ্বব্যাপ্ত বিৰাট পৰমাত্মা
বুলি জ্ঞান-যজ্ঞৰ দ্বাৰা যজন কৰে অৰ্থাৎ নিজৰ লাভ-লোকচান আৰু শক্তিক
বচাবলৈ সেই নিৰ্দিষ্ট কৰ্মৰ যজ্ঞত প্ৰবৃত্ত হয়। কিছুমান একত্ব ভাৱেৰে মোৰ

উপাসনা কৰে যে মোৰ ইয়াতেই এক হবলগীয়া আছে আৰু অন্য সকলোৰ পৰা মোক বেলেগে ৰাখি, মোকে সমৰ্পণ কৰি নিষ্কাম সেৱা ভাৱেৰে মোৰে উপাসনা কৰে; কিয়নো একেই যজ্ঞৰ এই সকলো উচ্চ-নীচ স্তৰ হয়। যজ্ঞৰ আৰম্ভ সেৱাৰ দ্বাৰাই হয়, কিন্তু তাৰ অনুষ্ঠান কেনেকৈ হয়? যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছে যে যজ্ঞ ময়ে কৰোঁ। যদি মহাপুৰুষ সাৰথী নহলহেঁতেন, তেতিয়া হলে যজ্ঞ পাৰ নাপায়। তেওঁৰে নিৰ্দেশত সাধকে বুজি পায় যে- এতিয়া তেওঁ কোন স্তৰত আছে? ক'লৈকে যাব পাৰিছে? বস্তুতঃ যজ্ঞকৰ্তা কোন হয়? এই বিষয়ত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কয়

অহং ক্ৰতুৰহং যজ্ঞঃ স্বধাহমহমৌষধম্।

মন্ত্ৰোহমহমেবাজ্যমহমগ্নিৰহং হৃতম্।।১৬।।

কৰ্তা ময়েই। বস্তুতঃ কৰ্তাৰ পিছত থাকি প্ৰেৰকৰ ৰূপত সদায় সঞ্চালিত কৰাজন হ'ল ইষ্ট। কৰ্তা দ্বাৰা যি পাৰ হৈ যায়, সেয়া মোৰে অৰিহণা। যজ্ঞ ময়েই। যজ্ঞ আৰাধনাৰ বিধি বিশেষ হয়। প্ৰাপ্তীকাল যজ্ঞই যাৰ অৰ্জন কৰে সেই অমৃতক পান কৰা পুৰুষ জন সনাতন ব্ৰহ্মত প্ৰবেশ কৰে। স্বধা ময়েই, অৰ্থাৎ অতীতৰ অনন্ত সংস্কাৰ বিলীন কৰা, সিহঁতক তৃপ্ত কৰিব পৰা সক্ষম কৰা মোৰেই দেন হয়। ভৱৰোগক নাশ কৰিব পৰা ঔষধ ময়েই। মোক পাই মানুহে এই ৰোগৰ পৰা নিবৃত্তি পায়। মন্ত্ৰ ময়েই। মনক শ্বাসৰ অন্তৰালত নিৰোধ কৰা অৰিহণা মোৰ। এই নিৰোধ ক্ৰিয়াত তিব্ৰতা আনি দিব পৰা বস্তু 'আজ্য' (হবি)ও ময়েই। মোৰেই প্ৰকাশত মনৰ সকলো প্ৰবৃত্তিবোৰ বিলয় হৈ যায়, তথা হৰন অৰ্থাৎ সমৰ্পণো ময়েই।

ইয়াত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই বাৰে বাৰে “মই”বুলি কৈ আছে। ইয়াৰ অৰ্থ ইমানেই যে ময়েই প্ৰেৰকৰ ৰূপত আত্মাৰ অভিন্ন হৈ ঠিয় হওঁ তথা নিৰন্তৰ নিৰ্ণয় দি থাকি যোগ- ক্ৰিয়াক পূৰ্ণ কৰাই দিওঁ। ইয়াৰে নাম বিজ্ঞান হয়। পূজ্য মহাৰাজ জীয়ে কৈছিল—“ যেতিয়ালৈকে ইষ্টদেৱ সাৰথী হৈ শ্বাস- প্ৰশ্বাসক ৰক্ষনাবেক্ষন নকৰে, তেতিয়ালৈকে ভজন আৰম্ভই হোৱা নাই” কোনোৱাই লাখ চকু মুদি থাকক, ভজন কৰি থাকক, শৰীৰক তাপ দিয়ক,

যেতিয়ালৈকে যি পৰমাত্মাক মই ইচ্ছা কৰিছো, তেওঁ মই যি স্তৰত আছো, সেই স্তৰৰ পৰা ওলিয়াই আনি আত্মাৰ অভিন্ন হৈ জাগৃত নকৰে, তেতিয়ালৈকে শুদ্ধ মাত্ৰাত ভজনৰ স্বৰূপ বুজি পোৱা নহয়। সেই কাৰণে মহাৰাজ জীয়ে কৈছিল -“ মোৰ স্বৰূপক ধৰা, মই সকলো দিম।” শ্ৰীকৃষ্ণইও কৈছে— সকলো মোৰ পৰাই হয়।

পিতাহমস্য জগতো মাতা ধাতা পিতামহঃ।

বেদ্যং পবিত্ৰমোঙ্কাৰ ঋক্সাম যজুৰেব চ ॥১৭॥

অৰ্জুন! ময়েই সম্পূৰ্ণ জগতৰ ‘ধাতা’ অৰ্থাৎ ধাৰণ কৰোঁতা, ‘পিতা’ অৰ্থাৎ পালন কৰোঁতা, ‘মাতা’ অৰ্থাৎ উৎপন্ন কৰোঁতা, ‘পিতামহ’ অৰ্থাৎ মূল উদ্‌গমস্থল, য’ত সকলোৰ প্ৰবেশ ঘটে আৰু জানিবৰ যোগ্য পবিত্ৰ ‘ওমকাৰ’ অৰ্থাৎ সেই পৰমাত্মা মোৰ স্বৰূপত হই ইত্যাদি ইটো-সিটোৰ পৰ্যায় হয়, এনে দৰে জনাৰ যোগ্য স্বৰূপ ময়েই। অৰ্থাৎ সম্পূৰ্ণ প্ৰাৰ্থনা, অৰ্থাৎ সমস্ত দিব পৰা প্ৰক্ৰিয়া, মোৰ পৰাই হয়।

গতিৰ্ভৰ্তা প্ৰভুসাক্ষী নিবাসঃ শৰণং সুহৃৎ।

প্ৰভবঃ প্ৰলয়ঃ স্থানং নিধানং বীজমব্যয়ম্ ॥১৮॥

হে অৰ্জুন! ‘গতি’ অৰ্থাৎ প্ৰাপ্ত হোৱা যোগ্য ‘ভৰ্তা’ স্বামী, ‘সাক্ষী’ অৰ্থাৎ দ্ৰষ্টাৰূপত স্থিত থাকি সকলোকে জানোঁতা, সকলোৰে বাসস্থান, শৰণ লোৱাৰ যোগ্য, অকাৰণ প্ৰেমী, মিত্ৰ, উৎপত্তি আৰু প্ৰলয় অৰ্থাৎ শুভাশুভ সংস্কাৰ সমূহৰ বিলয় তথা অবিনাশী কাৰণ ময়েই। অৰ্থাৎ শেষত যত প্ৰৱেশ লাভ হয়, সেই সকলো বিভূতী ময়েই।

তপাম্যহমহং বৰ্ষং নিগৃহ্মাম্যুৎস্জামি চ।

অমৃতং চৈব মৃত্যুশ্চ সদসচ্চাহমৰ্জুন ॥১৯॥

মই সূৰ্য্যৰ ৰূপত তাপ দিওঁ, বৰ্ষাক আকৰ্ষিত কৰো আৰু তাক নমাই আনো। মৃত্যুৰ সিপাৰৰ অমৃততত্ত্ব তথা মৃত্যু, সত্ আৰু অসত্ সকলো ময়েই। অৰ্থাৎ যি পৰম প্ৰকাশ প্ৰদান কৰে, সেই সূৰ্য্য ময়েই। কেতিয়াবা ভজন কৰোঁতাই মোক অসত্ বুলি ভাৱে, তেওঁ মৃত্যু প্ৰাপ্ত কৰে। এইদৰে কয়—

ত্ৰৈবিদ্যা মাং সোমপাঃ পূতপাপা
যজ্ঞৈৰিষ্ট্বা স্বৰ্গতিং প্ৰাৰ্থয়ন্তে ।
তে পুণ্যমাসাদ্য সুৰেন্দ্ৰলাক-
মন্মন্তি দিব্যান্দিবি দেৱভোগান্ ॥২০॥

আৰাধনা বিদ্যাৰ তিনিও অংগ- ঋক্, সাম আৰু যজু অৰ্থাৎ প্ৰাৰ্থনা, সমত্বৰ প্ৰক্ৰিয়া আৰু যজনৰ আচৰণ কৰোঁতা, সোম অৰ্থাৎ চন্দ্ৰৰ ক্ষীণ প্ৰকাশ পাওঁতা পাপৰ পৰা মুক্ত হৈ প্ৰবিত্ৰ হোৱা পুৰুষ, সেই যজ্ঞৰ নিৰ্দ্ধাৰিত প্ৰক্ৰিয়াৰ দ্বাৰা মোক ইষ্টৰূপত পূজা কৰি স্বৰ্গৰ বাবে প্ৰাৰ্থনা কৰে। ই অসত কামনা হয়। ইয়াৰ ফলত তেওঁ মৃত্যু প্ৰাপ্ত কৰে, তেওঁৰ পুনৰ জন্ম হয়, যিদৰে আগৰ শ্লোকত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছিল। তেওঁলোকে পূজা কৰে মোকেই, সেই নিৰ্দ্ধাৰিত বিধিৰেই পূজে; কিন্তু সলনীত স্বৰ্গ বাঞ্ছা কৰে। সেই পুৰুষে নিজৰ পুণ্যৰ ফল স্বৰূপে ইন্দ্ৰলোক প্ৰাপ্ত কৰি স্বৰ্গত দেৱতা সকলৰ দিব্য ভোগ কৰে; অৰ্থাৎ সেই ভোগো ময়েই দিওঁ

তে তং ভুক্ত্বা স্বৰ্গলোকং বিশালং
ক্ষীণে পুণ্যে মৰ্ত্যলোকং বিশন্তি ।
এৰং ব্ৰহ্মীধৰ্মমনুপ্ৰপন্ন
গতগতং কামকামা লভন্তে ॥২১॥

তেওঁলোকে সেই বিশাল স্বৰ্গক ভোগকৰি পুণ্য ক্ষীণ হলে মৃত্যুলোকত অৰ্থাৎ জন্ম-মৃত্যুত প্ৰাপ্ত হয়। এইদৰে প্ৰাৰ্থনা সমত্ব আৰু যজনৰ তিনিটা বিধিৰে একেটা যজ্ঞৰ অনুষ্ঠান কৰোঁতা মোৰ শৰণ পৰিও কামনা থকা পুৰুষ বাৰে বাৰে অহা-যোৱা অৰ্থাৎ পুনৰজন্ম প্ৰাপ্ত হয়। কিন্তু তাৰ মূল নাশ কেতিয়াও নহয়, কিয়নো এই পথত বীজৰ নাশ নহয়। কিন্তু যি জনে কোনো প্ৰকাৰৰ কামনা নকৰে, তেওঁ কি পায়?

অনন্যাশ্চিন্তয়ন্তো মাং যে জনাঃ পৰ্যুপাসতে ।
তেষাং নিত্যভিযুক্তানাং যোগক্ষেমং ব্ৰহ্মমহম্ ॥২২॥

অনন্য ভাৱেৰে মোতেই স্থিত ভক্ত জন মোক পৰমাত্মা স্বৰূপৰ নিৰন্তৰ

চিন্তন কৰি থাকে 'পর্যুপাসতে' অলপো ত্ৰুটি নাৰাখি মোৰে উপাসনা কৰে, তেওঁ নিত্য একীভাৱেৰে সংযুক্ত হোৱা পুৰুষৰ যোগক্ষেম মই নিজেই বহন কৰো। অৰ্থাৎ তেওঁৰ যোগৰ সুৰক্ষাৰ সম্পূৰ্ণ দায়ীত্ব মই নিজৰ হাততে লওঁ। ইমান হোৱাৰ পিছতো মানুহে অন্য দেৱতাক ভজনা কৰে।

যেহপ্যন্য দেৱতা ভক্তা যজন্তে শ্ৰদ্ধয়ায়িতাঃ।

তেহপি মামেৰ কৌন্তেয় যজন্ত্যৱিধিপূৰ্বকম ॥২৩॥

হে কৌন্তেয়! শ্ৰদ্ধাৰে যুক্ত হৈ যি ভক্ত অন্যান্য দেৱতাক পূজা কৰে, তেৱো মোৰে পূজা কৰে; কিয়নো তাত দেৱতা নামৰ কোনো বস্তুৰে নাই; কিন্তু তেওঁৰ সেই পূজন অবিধি পূৰ্বক, মোৰ প্ৰাপ্তীৰ বিধিৰ পৰা ৰহিত।

ইয়াত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই দ্বিতীয়বাৰৰ কাৰণে দেৱতাৰ প্ৰকৰণক লৈছে। সৰ্বপ্ৰথমে সাত আধ্যায়ৰ বিশৰ পৰা তেইশ শ্লোকলৈকে তেওঁ কৈছিল যে, অৰ্জুন! কামনাৰ দ্বাৰা যাৰ জ্ঞানৰ অপহৰণ কৰি লোৱা হৈছে, তেনে মুঢ় বুদ্ধি পুৰুষে অন্য দেৱতাৰ পূজা কৰে আৰু যত পূজা কৰে তাত দেৱতা নামৰ সক্ষম সত্তা একোৱেই নাথাকে। তথাপিও আইত-শিল-ভূত-ভৱানী অথবা অন্যত্ৰ যত তেওঁৰ শ্ৰদ্ধা বাঢ়ি যায়, তাত কোনো দেৱতা নায়েই। ময়েই সৰ্বত্ৰ আছোঁ, সেই স্থানত ময়ে ঠিয় হৈ তেওঁৰ দেৱশ্ৰদ্ধা সেই স্থানতে স্থিৰ কৰোঁ। ময়েই ফলৰ বিধান কৰো, ফল দিওঁ। ফল নিশ্চিত প্ৰাপ্ত হয়, কিন্তু সেই ফল নাশ হয়। আজি আছে, কালিলৈ ভোগ কৰিবলৈ হব, নষ্ট হৈ যাব কিন্তু মোৰ ভক্ত নষ্ট নহয়। সেয়ে তেওঁলোক মুঢ়বুদ্ধি যাৰ জ্ঞান অপহৰণ কৰা হৈছে, তেওঁবিলাকেহে অন্য দেৱতাৰ পূজা কৰে।

প্ৰস্তুত আধ্যায় নৱমৰ তেইশৰ পৰা পচিশ শ্লোকলৈকে যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই পুনৰ দোহাৰিছে যে অৰ্জুন! যি শ্ৰদ্ধাৰে অন্যান্য দেৱতাৰ পূজা হয়, তেওঁলোকে মোৰেই পূজা কৰে; কিন্তু অবিধি ভাৱে। তাত দেৱতা নামৰ সক্ষম বস্তু নায়েই, তাৰ প্ৰাপ্তীৰ বিধিভুল। এতিয়া প্ৰশ্ন হয় যে তেওঁলোকেও প্ৰকাৰত নৰে আপোনাকে পূজা কৰে আৰু ফলও প্ৰাপ্ত কৰে, তেতিয়া দোষ কিহৰ?

অহং হি সৰ্বযজ্ঞানাং ভোক্তা চ প্ৰভুৰেৰ চ।

ন তু মামভিজানন্তি তদ্বেনাতশ্চ্যবন্তি তে।।২৪।।

সম্পূৰ্ণ যজ্ঞৰ ভোক্তা অৰ্থাৎ যজ্ঞ যত বিলয় হয়, যজ্ঞৰ পৰিণামত যি প্ৰাপ্ত হয় সেয়া ময়েই আৰু স্বামীও ময়েই, তথাপিও তেওঁলোকে মোক তহেৰে ভালদৰে নাজানে, সেই কাৰণে ‘চ্যবন্তি’ পৰি যায়। অৰ্থাৎ তেওঁলোক কেতিয়াবা অন্য দেৱতাতো পৰে আৰু তহেৰে যেতিয়া লৈকে নেজানে তেতিয়া তেওঁলোকৰ গতি কি হব?

যান্তি দেৱৱতা দেবান্‌পিতৃন্‌ যান্তি পিতৃৱতাঃ।

ভূতানি যান্তি ভূতেজ্যা যান্তি মদ্যাজিনোহপি মাম্।।২৫।।

হে অৰ্জুন! দেৱতাক পূজোঁতা দেৱতাকে প্ৰাপ্ত কৰে। দেৱতা হ'ল পৰিবৰ্তিত সত্তা। তেওঁলোকে নিজৰ সৎকৰ্ম অনুসৰি জীৱন ব্যতীত কৰে। পিতৃক পূজা কৰে যি পিতৃকে প্ৰাপ্ত কৰে অৰ্থাৎ অতীততে ওলমি থাকে। ভূতক পূজা কৰোঁতা ভূতেই হয়, শৰীৰ ধাৰণ কৰে, মোৰ ভক্ত মোকেই প্ৰাপ্ত কৰে। তেওঁমোৰ সাক্ষাৎ স্বৰূপ প্ৰাপ্ত কৰে। তেওঁৰ পতন নহয়। ইমানেই নহয়, মোৰ পূজাৰ বিধানো সৰল আছে-

পত্ৰং পুষ্পং ফলং তোয়ং যো মে ভক্ত্যা প্ৰয়চ্ছতি।

তদহং ভক্ত্যুপহৃতমশ্লামি প্ৰয়তান্ননঃ।।২৬।।

ভক্তিৰ আৰম্ভনী ইয়াৰ পৰাই হয় যে পত্ৰ- পুষ্প- ফল- জল- ইত্যাদি যিয়েই মোক ভক্তিভাৱে অৰ্পণ কৰে, মনেৰে যত্ন কৰোঁতা সেই ভক্তৰ সেই সকলো খাওঁ অৰ্থাৎ মই স্বীকাৰ কৰোঁ। সেই কাৰণে-

যৎকৰোষি যদশ্লামি যজ্জুহোষি দদাসি যৎ।

যত্তপস্যসি কৌন্তেয় তৎকুৰুৰ্ষ্ব মদৰ্পণম্।।২৭।।

অৰ্জুন! তুমি যি কৰ্ম (যথার্থ কৰ্ম) কৰা, যি খোৱা, যি হৰন কৰা, সমৰ্পণ কৰা, দান কৰা, মনেৰে সৈতে ইন্দ্ৰিয়বোৰক যি মোৰ অনুৰূপ তপ দিয়া, সেই সকলোবোৰ মোক অৰ্পণ কৰা, অৰ্থাৎ মোৰ প্ৰতি সমৰ্পিত হৈ এই সকলো খিনি কৰা। সমৰ্পণ কৰিলে যোগৰ ক্ষেত্ৰৰ দায়ীত্ব মই লৈ লম।

শুভাশুভফলৈৰেৰং মোক্ষ্যসে কৰ্মবন্ধনৈঃ ।

সন্ন্যাস যোগযুক্তাত্মা বিমুক্তো মামুপৈষ্যসি ॥২৮॥

এইদৰে সৰ্বস্বৰ ন্যাস সন্ন্যাস যোগেৰে যুক্ত হোৱা তুমি শুভ- অশুভ ফলদাতা কৰ্মৰ বন্ধনৰ পৰা মুক্ত হৈ মোকেই প্ৰাপ্ত কৰিবা ।

উপৰোক্ত তিনিটা শ্লোকত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই ক্ৰমবদ্ধ সাধনা আৰু তাৰ পৰিণামৰ চিত্ৰণ কৰিছে। প্ৰথমে পত্ৰ- পুষ্প, ফল- জলৰ পূৰ্ণ শ্ৰদ্ধাৰে অৰ্পণ, দ্বিতীয়তে সমৰ্পিত হৈ কৰ্মৰ আচৰণ আৰু তৃতীয়ত পূৰ্ণ সমৰ্থনেৰে সৈতে সৰ্বস্বৰ ত্যাগ। ইয়াৰ দ্বাৰা কৰ্ম বন্ধনৰ পৰা বিমুক্ত হৈ (বিশেষ ৰূপত মুক্ত হোৱা) যাবা। ইয়াত মুক্তি আৰু প্ৰাপ্তি এটা আনটোৰ পৰিপূৰক। আপোনাৰ প্ৰাপ্তিয়ে মুক্তি, তাৰ পৰা লাভ কি? ইয়াত কয়—

সমোহহং সৰ্বভূতেষু ন মে দ্বেষ্যোহস্তি ন প্ৰিয়ঃ ।

যে ভজন্তি তু মাং ভক্ত্যা ময়ি তে তেষু চাপ্যহম্ ॥২৯॥

মই সকলো ভূতত সম দৃষ্টি ৰাখোঁ। সৃষ্টিত কোনো মোৰ প্ৰিয়ও নাই আৰু অপ্ৰিয়ও নাই। কিন্তু যি অনন্য ভক্ত তেওঁ মোৰ হৈ আছে আৰু মই তেওঁত আছোঁ। এইটোৱে মোৰ একমাত্ৰ সম্বন্ধ। তাতেই পৰিপূৰ্ণ হওঁ। তেতিয়া হলে বহুত ভাগ্যৱান বিলাকেহে ভজন কৰে হব পায়? ভজন কৰাৰ অধিকাৰ কাৰ আছে? ইয়াৰ ওপৰত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কয়—

অপি চেৎসুদুৰাচাৰো ভজতে মামনন্যভাক্ ।

সাধুৰেব স মন্তব্যঃ সম্যগ্ভ্যৱসিতো হি সঃ ॥ ৩০ ॥

যদি অত্যন্ত দুৰাচাৰীও অনন্য ভাৱেৰে অৰ্থাৎ (অন্য নহয়) মোৰ বাদে কোনো অন্য বস্তু বা দেৱতাক নভজি মাত্ৰ মোকেই নিৰন্তৰ ভজনা কৰে, তেওঁ সাধু বুলি মানিবৰ যোগ্য। এতিয়া তেওঁ সাধু হোৱা নাই কিন্তু তেওঁৰ সাধু হোৱাৰ সন্দেহ নাই; কিয়নো তেওঁ যথার্থ নিশ্চয়তে লাগি আছে। সেয়ে ভজন আপুনিও কৰিব পাৰে, এইটো কাৰণেই যে আপুনি মানুহ; কিয়নো মনুষ্যই যথার্থতে নিশ্চয় কৰিব পাৰে। গীতাই পাপী সকলক উদ্ধাৰ কৰে

আৰু সেই পথিক—

ক্ষিপ্ৰং ভবতি ধৰ্মাত্মা শশ্বচ্ছান্তিঃ নিগচ্ছতি ।

কৌন্তেয় প্রতি জানীহি ন মে ভক্তঃ প্ৰণশ্যতি ॥৩১॥

এই ভজনৰ প্ৰভাৱত সেই দুৰাচাৰীও শীঘ্ৰেই ধৰ্মাত্মা হৈ যায়, পৰম ধৰ্ম পৰমাত্মাৰে সংযুক্ত হৈ যায় তথা সদায় থাকিব পৰা পৰম শান্তি প্ৰাপ্ত কৰে। হে কৌন্তেয়! তুমি নিশ্চয়ভাৱে সত্য বুলি জানা যে মোৰ ভক্ত কেতিয়াও নষ্ট নহয়। যদি এটা জন্মত পাৰ নহলেও পিছৰ জন্মত সেই সাধনা কৰিয়েই শীঘ্ৰে পৰম শান্তি প্ৰাপ্ত কৰে। সেয়ে সদাচাৰী, দুৰাচাৰী সকলোৰে ভজন কৰাৰ অধিকাৰ আছে, ইমানেই নহয়, আৰু—

মাং হি পাৰ্থ ব্যপাশ্ৰিত্য যেহপি স্যুঃ পাপযোনয়ঃ ।

স্ত্ৰিয়ৌ বৈশ্যাস্তথা শূদ্ৰাস্তেহপি যান্তি পৰাং গতিম্ ॥৩২॥

হে পাৰ্থ! স্ত্ৰী, বৈশ্য, শূদ্ৰ আদি তথা যি কোনো পাপযোনিৰে হওক, তেওলোক মোৰ আশ্ৰিত হৈ পৰম গতি প্ৰাপ্ত হয়। সেয়ে এই গীতা মনুষ্য মাত্ৰৰ বাবে হয়, লাগিলে তেওঁ যিয়েই কৰক, যতেই জন্ম হওক। সকলোৰ কাৰণেই ইয়ে একে সমান কল্যাণৰ উপদেশ কৰে। গীতা সাৰ্বভৌম হয়।

পাপযোনি :- যোল্ল আধ্যায়ৰ সাতৰ পৰা একৈশ শ্লোকৰ ভিতৰত আসুৰী বৃত্তি লক্ষণৰ অন্তৰ্গত ভগৱানে কৈছে যে, যি শাস্ত্ৰ বিধিক ত্যাগ কৰি নামমাত্ৰ যজ্ঞৰ দ্বাৰা অহংকাৰেৰে যজন কৰে, তেওঁ নৰৰ ভিতৰত অধম যজ্ঞই নাই তথাপিও নাম দি থৈছে আৰু দস্তেৰে যজন কৰিছে তেৱেঁ। ত্ৰুৰ কৰ্মী আৰু পাপাচাৰী (পাপযোনি)। যি মোক পৰমাত্মাৰে দ্বেষ কৰে তেৱেঁ পাপী। বৈশ্য- শূদ্ৰ ভগৱৎপথৰ খটখটি। স্ত্ৰী সকলৰ প্রতি কেতিয়াবা সন্মান, কেতিয়াবা হীনতাৰ ভাৱনা সমাজতে আছে, সেইকাৰণে শ্ৰীকৃষ্ণই এওঁলোকৰ নাম লৈছে। যোগ প্ৰক্ৰিয়াত স্ত্ৰী আৰু পুৰুষ দুজনেই সমান ভাৱে প্ৰবেশ পাব পাৰে।

কিং পুনৰ্ভিক্ষণাঃ পুণ্যা ভক্তা ৰাজৰ্ষয়স্তথা ।

অনিত্যমসুখং লোকমিমং প্ৰাপ্য ভজস্ব মাম্ ॥৩৩॥

অকৌ ব্ৰাহ্মণ, ৰাজৰ্ষি তথা ক্ষত্ৰিয় শ্ৰেণী প্ৰাপ্ত ভক্তৰ কাৰণেতো কবলৈনো আছে কি? ব্ৰাহ্মণ এটা অৱস্থা বিশেষ হয়, যত ব্ৰহ্মত প্ৰবেশ দিব পৰা সম্পূৰ্ণ যোগ্যতা আছে। শান্তি, আৰ্জন, অনুভৱী উপলদ্ধি, ধ্যান আৰু ইষ্টৰ নিৰ্দেশনাত যিজনৰ চলাৰ ক্ষমতা আছে, এয়াই ব্ৰাহ্মণৰ অৱস্থা। ৰাজৰ্ষি ক্ষত্ৰিয়ত ঋদ্ধি- সিদ্ধিৰ সঞ্চাৰ, শৌৰ্য্য, স্বামীভাৱ পাছপৰি নথকা স্বভাৱ থাকে। এইযোগান্তৰত পোৱা যোগী পাৰতো হয়েই তেওঁলোকৰ বিষয়ে কবলৈ একো নাই। সেয়ে অৰ্জুন! তুমি সুখ ৰহিত এই ক্ষণভংগৰ মনুষ্য জীৱন প্ৰাপ্ত কৰি মোৰেই ভজন কৰা। এই নশ্বৰ শৰীৰৰ মমত্ব, পোষনত সময় নষ্ট নকৰা।

যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই ইয়াত চতুৰ্থ বাৰৰ বাবে যুদ্ধতকৈ অধিক কল্যাণৰ কোনো ৰাস্তা নাই বুলি কৈছে। তিনি আধ্যাত তেখেতে কৈছিল যে স্বধৰ্মত নিধনেই শ্ৰেয়তৰ। চাৰি আধ্যাত তেখেতে সংক্ষেপতে কৈছিল যে চাৰি বৰ্ণৰ ৰচনা ময়ে কৰিলো। তেতিয়া হলে মনুষ্যৰ চাৰি জাতিত ভাগ কৰিলে নে? ক'লে - নহয়, গুণ অনুসৰি কৰ্ম একমাত্ৰ যজ্ঞৰ প্ৰক্ৰিয়া হে। সেয়ে এই যজ্ঞ কৰা জন চাৰি প্ৰকাৰৰ হয়। প্ৰৱেশৰ সময়ত এই যজ্ঞ কৰ্ত্তা শূদ্ৰ হয়, অল্পজ্ঞ হয়। অলপ কৰাৰ ক্ষমতা আহি গল, আত্মিক সম্পত্তিৰ সংগ্ৰহ হব ধৰিলে, সেই যজ্ঞকৰ্ত্তা বৈশ্য হৈ গ'ল। ইয়াতকৈ উন্নত হলে প্ৰকৃতিৰ তিনিও গুণক কাটিব পৰা ক্ষমতা আহিল, সেই সাধক ক্ষত্ৰিয় শ্ৰেণীৰ হ'ল আৰু যেতিয়া এই সাধকৰ স্বভাৱত ব্ৰহ্মত প্ৰবেশ দিব পৰা যোগ্যতা সোমাল তেতিয়া তেওঁ ব্ৰাহ্মণ হ'ল। বৈশ্য আৰু শূদ্ৰৰ অপেক্ষা ক্ষত্ৰিয় আৰু ব্ৰাহ্মণ শ্ৰেণীৰ সাধক প্ৰাপ্তীৰ অধিক ওচৰত আছে। শূদ্ৰ আৰু বৈশ্যও সেই ব্ৰহ্মত প্ৰৱেশ পাই শান্ত হব, তেতিয়া হলে তাৰ আগৰ অৱস্থা থকা বিলাকৰতো কবলগীয়া নাই। তেওঁলোকৰ কাৰণে নিশ্চিত আছে।

গীতা যি উপনিষদৰ সাৰ-সৰ্বস্ব হয়, তাত ব্ৰহ্ম বিদুষী মহিলাসকলৰো আখ্যান ভৰ্তি হৈ আছে। তথাকথিত ধৰ্মভীৰু, অন্ধ- বিশ্বাসীয়ে বেদ অধ্যয়নৰ অধিকাৰ- অনধিকাৰৰ ব্যৱস্থা কৰিবলৈ মূৰ ঘুৰাই থাকিল, যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই স্পষ্ট ঘোষণা কৰিলে যে যজ্ঞাৰ্থ কৰ্মৰ নিৰ্দ্ধাৰিত ক্ৰিয়াত স্ত্ৰী- পুৰুষ সকলোৰে প্ৰবেশ পাব পাৰে সেয়ে তেখেতে ভজনৰ ধাৰণাত উৎসাহ দি কয়—

মগ্ননা ভৱ মদ্ভক্তো মদ্যাজী মাং নমস্কুৰু।

মামেবৈষ্যসি যুক্তৈবমাত্মানং মৎপৰায়ণঃ।। ৩৪।।

হে অৰ্জুন ! তুমি মোৰে মনৰ দৰে হোৱা। মোৰ বাদে অন্য ভাৱ মনত নাইক। মোৰে অনন্য ভক্ত হোৱা, অনবৰত চিন্তাত লাগি থাকা। শ্ৰদ্ধাৰে সৈতে নিৰন্তৰ মোৰে পূজন কৰা আৰু মোকেই নমস্কাৰ কৰা। এইদৰে মোৰ শৰণলৈ আহা, আত্মা ক মোৰ লগত একীভাৱতে স্থিত কৰা, তুমি মোকেই প্ৰাপ্ত কৰিবাকৰিবা অৰ্থাৎ মোৰ লগত একতা প্ৰাপ্ত কৰিবা।

নিষ্কৰ্ষ :-

এই আধ্যায়ৰ আৰম্ভনীত শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছিল—অৰ্জুন ! তুমি দোষৰহিত ভক্ত হোৱাৰ বাবে মই এই জ্ঞানক বিজ্ঞানেৰে সৈতে কম। যাক জনাৰ পিছত একো জানিবলৈ বাকী নাথাকে। ইয়াক জানি তুমি সংসাৰ বন্ধনৰ পৰা মুক্ত হৈ যাবা। সেই জ্ঞান সম্পূৰ্ণ বিদ্যাৰো ৰজা বিদ্যা সেইটোৱে যি পৰব্ৰহ্মত প্ৰবেশ কৰায়। এই জ্ঞান তাৰো ৰজা অৰ্থাৎ নিশ্চিত কল্যাণ কৰোঁতা। ই সম্পূৰ্ণ গোপনীয়তাৰো ৰজা, গোপনীয়তাক প্ৰত্যক্ষ কৰি দিয়ে। ই প্ৰত্যক্ষ ফল দিওঁতা সাধন কৰিবলৈ সুগম আৰু অবিনাশী। অলপো যদি সাধনা কৰে, আপুনি পাৰ পাবই, ইয়াৰ কেতিয়াও নাশ নহয় বৰঞ্চ ইয়াৰ প্ৰভাৱত সেই পৰমশ্ৰেয়লৈকে পাই যায়, কিন্তু ইয়াত চৰ্ত এটা আছে। শ্ৰদ্ধাবিহীন পুৰুষ পৰম গতি প্ৰাপ্ত নকৰি সংসাৰ চক্ৰত ঘূৰি থাকে।

যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই যোগৰ ঐশ্বৰ্য্যৰ ওপৰতো প্ৰকাশ কৰিছে দুখৰ সংযোগৰ বিয়োগ হল যোগ অৰ্থাৎ যিসংসাৰৰ সংযোগ বিয়োগৰ পৰা সম্পূৰ্ণ ৰহিত হৈ আছে তাৰ নামেই যোগ। পৰমতত্ত্ব পৰমাত্মাৰ লগত মিলনৰ নামেই যোগ। পৰমাত্মাক প্ৰাপ্ত কৰাই হ'ল যোগৰ পৰিকাঠা। যি ইয়াত প্ৰৱেশ পায় সেই যোগীৰ প্ৰভাৱক চোৱা যে সম্পূৰ্ণ ভূতৰ স্বামী আৰু জীৱধাৰী বিলাকৰ পোষন কৰোঁতা হোৱা সত্ত্বেও মোৰ অত্মা সেই ভূত বিলাকত স্থিত নহয়। মই আত্মা স্বৰূপত স্থিত আছে। সেয়াই মই। যেনেকৈ আকাশত উৎপন্ন বায়ু সৰ্বত্র বিচৰণ কৰোঁতা আকাশতে স্থিত আছে, তাক মলিন কৰিব নোৱাৰি,

ঠিক সেইদৰে সম্পূৰ্ণ ভূত মোতেই স্থিত আছে, কিন্তু মই সিহঁতত লিপ্ত নহয়।

অৰ্জুন! কল্পৰ আদিত মই ভূত প্ৰাণীক বিশেষ প্ৰকাৰে ৰচনা কৰো, সজাওঁ আৰু কল্পৰ শেষত সম্পূৰ্ণ ভূত মোৰ প্ৰকৃতিক অৰ্থাৎ যোগাৰুঢ় মহাপুৰুষৰ অৱস্থাক, তেওঁৰ অব্যক্ত ভাৱক প্ৰাপ্ত কৰে। যদিও মহাপুৰুষ প্ৰকৃতিৰ পাৰত থাকে, তথাপিও প্ৰাপ্তীৰ পাছত স্বভাৱ অৰ্থাৎ নিজতে স্থিত হৈ লোক সংগ্ৰহৰ বাবে যি কাৰ্য্য কৰে, সেয়াই তেওঁলোকৰ অৱস্থা। এই অৱস্থাৰ কাৰ্য্য-- কলাপক সেই মহাপুৰুষৰ প্ৰকৃতি বুলি সম্বোধন কৰা হয়। এই ৰচনা কৰোতা ময়েই হওঁ, যি ভূতক কল্পৰ বাবে প্ৰেৰিত কৰোঁ আৰু আনটো ৰচয়িতা ত্ৰিগুণাময়ী প্ৰকৃতি, যি মোৰ অধ্যক্ষতাত চৰাচৰৰ সৈতে ভূতৰ ৰচনা কৰে। এইটোও এটা কল্প, যত শৰীৰ পৰিবৰ্তন, স্বভাৱ পৰিবৰ্তন আৰু কাল পৰিবৰ্তন নিহিত আছে গোস্বামী তুলসী দাস জীও ইয়াকে কয়-

এক দুষ্ট অতিশয় দুঃখৰূপা।

যা বস জীব পৰা ভবকুপা।। (ৰামচৰিতমানস ৩/১৪/৫)

প্ৰকৃতিৰ দুটা ভেদ আছে বিদ্যা আৰু অবিদ্যা। ইয়াত অবিদ্যা দুষ্ট হয়, দুখৰূপ হয়, যাৰ ফলত জীৱ বিলাক বিবশ হৈ ভৱকুপত পৰে, যাৰ দ্বাৰা প্ৰেৰিত হৈ জীৱ কাল, কৰ্ম, স্বভাৱ আৰু গুণৰ মাজত সোমাই পৰে। আনটো হল বিদ্যা মায়া, যাক শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছে যে মই ৰচনা কৰোঁ। গোস্বামী জীৱ অনুসৰি প্ৰভুৱে ৰচনা কৰে--

এক ৰচই জগ গুণ বস জাকে।

প্ৰভু প্ৰেৰিত নাই নিজ বল তাকে।। (৩/১৪/৬)

এই জগতক তেৱে ৰচনা কৰে যাৰ আশ্ৰিত গুণ আছে। কল্যাণকাৰী গুণ একমাত্ৰ ঈশ্বৰত আছে। প্ৰকৃতিত গুণ নায়েই, সেইটোতো নশ্বৰ, কিন্তু বিদ্যাত প্ৰভুৱে প্ৰেৰক হৈ কৰে।

এইদৰে কল্প দুই প্ৰকাৰৰ হয়। এটাতো বস্তুৰ, শৰীৰ আৰু কালৰ পৰিবৰ্তন প্ৰকৃতিয়ে মোৰ অধ্যক্ষতাত কৰে, কিন্তু ইয়াতকৈ মহান কল্প যি

আত্মক নিৰ্মল স্বৰূপ প্ৰদান কৰে, তাৰ অলংকৰণ মহাপুৰুষে কৰে। তেওঁ অচেতন ভূতক সচেতন কৰি তোলে। ভজনৰ আদি কাল এই কল্পৰ আৰম্ভণী আৰু ভজনৰ শেষ কল্পৰো অন্ত। যেতিয়া এই কল্পই ভৰ ৰোগৰ পৰা পূৰ্ণ নিৰোগ কৰি শাস্ত্ৰত ব্ৰহ্মত প্ৰৱেশ(স্থিতি) কৰায়, সেই প্ৰৱেশ কালত যোগী মোৰ অৱস্থা আৰু মোৰ স্বৰূপক প্ৰাপ্ত কৰে। প্ৰাপ্তীৰ পিছত মহা পুৰুষৰ অৱস্থাই তেওঁৰ প্ৰকৃতি হয়।

ধৰ্ম গ্ৰন্থবিলাকত দেখিবলৈ পোৱা যায় যে চাৰি যুগৰ শেষত কল্প পূৰ্ণ হয়, মহাপ্ৰলয় হয়। প্ৰায়ে লোকে ইয়াক যথার্থ বুলি নাভাৰে। যুগৰ দুটা অৰ্থ আপুনি বেলেগে আছে আৰু আৰাধ্য দেৱ বেলেগে আছে, তেতিয়া লৈকে যুগ ধৰ্মই থাকিব। গোস্বামী দেৱে ৰামচৰিত মানসৰ উত্তৰ কাণ্ডত ইয়াৰ আলোচনা কৰিছে। যেতিয়া তামসী গুণে কাৰ্য্যকৰি থাকে ৰজো গুণ অলপ থাকে, চাৰিও ফালৰ বাধা-বিঘিণি বিৰোধ প্ৰতিৰোধ হৈ আছে, এনে ব্যক্তি কলি যুগৰ, তেওঁ ভজন কৰিব নোৱাৰে, কিন্তু সাধনাৰ আৰম্ভণী হলেই যুগৰ পৰিবৰ্তন হৈ যায়। ৰজোগুণ বাঢ়িবলৈ ধৰে, তমোগুণ ক্ষীণ হৈ যায়, কিছু পৰিমাণৰ সত্বগুণ স্বভাৱত আহিব ধৰে, হৰ্ষ আৰু ভয় দুইটাই অনুভৱ কৰে, তেতিয়া সেই সাধক দ্বাপৰৰ অৱস্থাত আহি যায়। ক্ৰমশঃ সত্বগুণৰ প্ৰধানতা কৰ্মত ৰত হব ধৰে, তেনেকৈ ত্ৰেতা যুগত ত্যাগৰ স্থিতি থকা সাধকে বহুতো যজ্ঞ কৰে। যজ্ঞ-শ্ৰেণীবদ্ধ জপ হয়, যাৰ উঠা-নমা শ্বাস-প্ৰশ্বাসৰ উপৰত আছে, তাৰ কৰাৰ ক্ষমতা থাকে। যেতিয়া মাত্ৰ সত্বগুণ বাকী থাকে, বিষমতা নাইকীয়া হৈ যায়, সমতা আহি যায়, এইটো কৃতযুগ অথবা কৃতার্থ-যুগ অথবা সত্যযুগৰ প্ৰভাৱ হয়। সেই সময়ত সকলো যোগীয়ে বিজ্ঞানী হয়, ঈশ্বৰৰ লগত মিলোঁতা হয়, স্বাভাৱিক ধ্যান ধৰাৰ ক্ষমতা তেওঁলোকৰ থাকে।

বিবেকীজনে যুগ-ধৰ্মৰ উঠা-নমা মনতে বুজি পায়। মনৰ নিৰোধৰ বাবে অধৰ্মক পৰিত্যাগ কৰি ধৰ্মত প্ৰবৃত্ত হয় নিৰুদ্ধ মনৰো বিলয় হ'লে যুগৰ লগে লগে কল্পৰো অন্ত হৈ যায়। পূৰ্ণতাত প্ৰবেশ কৰাই কল্পও শান্ত হৈ যায়। এয়াই প্ৰলয়, যেতিয়া প্ৰকৃতি পুৰুষত বিলিন হৈ যায় ইয়াৰ পাছত মহাপুৰুষৰ যি অৱস্থা সেয়াই তেওঁৰ প্ৰকৃতি, তেওঁৰ স্বভাৱ।

যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কয়- হে অৰ্জুন! মুঢ় মানুহে মোক নাজানে, মই ঈশ্বৰৰো ঈশ্বৰক তুচ্ছ বুলি ভাবে, সাধাৰণ মনুষ্য বুলি ভাবে। প্ৰত্যেক মহাপুৰুষৰ লগত এই বিড়ম্বনা আছেই যে তৎকালীন সমাজে তেওঁৰ উপেক্ষা কৰে। তেওঁলোকে বিৰোধ কৰে। শ্ৰীকৃষ্ণও ইয়াৰ অপবাদ নাছিল। তেও কয় যে মই পৰম ভাৰত স্থিত আছো; কিন্তু শৰীৰ মোৰ মানুহৰে সেয়ে মুঢ় পুৰুষে মোক তুচ্ছ বুলি মানুহ বুলি সম্বোধন কৰে। এনে লোক ব্যৰ্থ আশা থকা, ব্যৰ্থ কৰ্ম থকা ব্যৰ্থ জ্ঞান থকা হয়, যিয়েই কৰক কৈ দিলে যে মই কামনা নকৰো, হৈ গল নিষ্কাম কৰ্মযোগী। তেওঁলোক আসুৰী স্বভাৱ থকা, মোক চিনি নাপায়; কিন্তু দৈবী সম্পদ প্ৰাপ্ত কৰাজন অনন্য ভাৱেৰে মোৰ ধ্যান কৰে। মোৰ গুণৰ নিৰন্তৰ চিন্তন কৰে।

অনন্য উপাসনা অৰ্থাৎ যজ্ঞাৰ্থ কৰ্মৰ দুটা মার্গ আছে। প্ৰথম হ'ল জ্ঞান -যজ্ঞ অৰ্থাৎ নিজৰ ভৱসা, নিজৰ শক্তিক বুজি লৈ সেই নিৰ্দিষ্ট কৰ্মত প্ৰবৃত্ত হয় আৰু দ্বিতীয়বিধ স্বামী সৈৱক ভাৱনাৰ, যত সদগুৰুৰ প্ৰতি সমৰ্পিত হৈ সেই কৰ্ম কৰে। এই দৃষ্টিয়েদি মানুহে মোৰ উপাসনা কৰে; কিন্তু তেওঁলোকৰ দ্বাৰা যি পাৰ হৈ যায় সেই যজ্ঞ, সেই হৱন, সেই কৰ্তা, শ্ৰদ্ধা আৰু ঔষধ যাৰ দ্বাৰা ভৱৰোগৰ চিকিৎসা হয়, সেয়া ময়েই। শেষত যি গতি প্ৰাপ্ত হয় সেই গতিও ময়েই। এই যজ্ঞক মানুহে প্ৰাৰ্থনা, ভজন আৰু সমস্ত দিব পৰা বিধিৰে সম্পাদিত কৰে; কিন্তু তাৰ সলনী স্বৰ্গৰ কামনা কৰে, তেতিয়া মই স্বৰ্গও দিওঁ। তাৰ প্ৰভাৱেৰে তেওঁলোকে ইন্দ্ৰপদ প্ৰাপ্ত কৰে, দীৰ্ঘকাল ধৰি সেইটো ভোগ কৰি পূণ্য ক্ষীণ হলে তেওঁলোকে পুনৰ জন্ম প্ৰাপ্ত কৰে। তেওঁলোকৰ ক্ৰিয়া শুদ্ধ আছিল, কিন্তু ভোগৰ কামনা থকা বাবে পুনৰ জন্ম পালে। সেয়ে ভোগৰ কামনা কৰা অনুচিত। যি অনন্য ভাৱেৰে অৰ্থাৎ 'মোৰ বাদে অন্য কোনো নাই' এনে ভাৱেৰে যিজনে নিৰন্তৰ মোৰ চিন্তন কৰে, অলপো ত্ৰুটি নৰখাকৈ যি জনে ভজে, তেওঁৰ যোগৰ ভাৱ বাদায়ীত্ব মই মোৰ নিজৰ হাতত লৈ লওঁ।

ইমান বোৰ হোৱা স্বত্বেও কিছুমান লোকে অন্য দেৱতাৰ পূজা কৰে। তেওঁ লোকেও মোৰে পূজা কৰে; কিন্তু সেইটো মোৰ প্ৰাপ্তীৰ বিধি নহয়। তেওঁ লোকে সম্পূৰ্ণ যজ্ঞৰ ভোক্তা ৰূপে মোক নাজানে অৰ্থাৎ তেওঁলোকৰ

পূজাৰ পৰিণামত মই প্ৰাপ্ত নহওঁ, সেইকাৰণে তেওঁলোকৰ পতন হয়। তেওঁলোক দেৱতা, ভূত অথবা পিতৃৰ কল্পিত ৰূপত নিবাস কৰে, মোৰ ভক্ত যেতিয়া সাক্ষাৎ মোৰ দৰে নিবাস কৰে, মোৰ স্বৰূপ হৈ যায়।

যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই এই যজ্ঞাৰ্থ কৰ্মক অত্যন্ত সৰল বুলি কৈছে যে ফল-ফুল অথবা যি কোনো বস্তুৱেই শ্ৰদ্ধাৰে দিয়ে, তাক মই স্বীকাৰ কৰো। সেয়ে অৰ্জুন! তুমি যিয়েই আৰাধনা কৰা, মোকেই সমৰ্পণ কৰা। যেতিয়া সৰ্বস্বৰ ন্যাস হৈ যাব, তেতিয়া যোগেৰে যুক্ত হৈ তুমি কৰ্ম বন্ধনৰ পৰামুক্ত হৈ যাবা আৰু এই মুক্তিযেই মোৰ স্বৰূপ।

পৃথিৱীত সকলো প্ৰাণীয়ে মোৰ হয়, কোনো প্ৰাণীৰ লগত মোৰ প্ৰেমও নাই। মই সাম্য ৰূপত থাকো; কিন্তু যি মোৰ অনন্য ভক্ত, মই তেওঁত থাকো আৰু তেওঁ মোৰ লগতেই থাকে। অত্যন্ত দূৰাচাৰী, জঘন্য পাপী হৈ থাকক তথাপিও তেও অনন্য শ্ৰদ্ধা-ভক্তিৰে মোৰ ভজনা কৰে, তেতিয়া তেওঁক সাধু কৰৰ যোগ্য হয়। নিশ্চয় তেওঁ স্থিৰ হৈ থাকিলে, তেওঁ অতি সোনকালে পৰমৰ লগত সংযুক্ত হৈ অবিৰল পৰম শাস্তি লাভ কৰে। ইয়াত শ্ৰীকৃষ্ণই স্পষ্ট কৰিছে যে ধাৰ্মিক কোন হয়? অতঃ ধাৰ্মিক তেৱেই যি জনে এক পৰমাত্মাক স্মৰণ কৰে। শেষত আশ্বাসন দি কৈছে যে- অৰ্জুন! মোৰ ভক্ত কেতিয়াও নষ্ট নহয়। কোনোবা শুদ্ধ থাকক, নীচ থাকক, আদিবাসী অথবা অনাদিবাসী থাকক যিয়েই নামৰ থাকক, পুৰুষ অথবা স্ত্ৰী হওক, মোৰ শৰণ লৈ পৰম শ্ৰেয় প্ৰাপ্ত কৰিব। সেইকাৰণে অৰ্জুন! সুখৰহিত, ক্ষণভংগৰ কিন্তু দুৰ্লভ মনুষ্য শৰীৰ প্ৰাপ্ত কৰি মোৰ ভজন কৰা। আৰু তো যি ব্ৰহ্মত প্ৰবেশ কৰোঁতা অৰ্হতাৰে যুক্ত, সেই ব্ৰহ্মণ তথা যি ৰাজৰ্ষিৰ স্তৰে ভজন কৰোঁতা এনে যোগীৰ কাৰণেতো কৰ লগীয়া কি থাকিল? তেওঁলোকতো পাৰ হৈয়ে আছে। অতঃ অৰ্জুন! নিৰন্তৰ মন মোতেই ৰাখা, নিৰন্তৰ নমস্কাৰ কৰা। এইদৰে মোৰ শৰণ লোৱা তুমি মোকেই প্ৰাপ্ত কৰিবা, য'ৰ পৰা পুনৰ ঘূৰি আহিব নালাগে।

প্ৰস্তুত আধ্যাত সেই বিদ্যাৰ ওপৰত প্ৰকাশ কৰা হ'ল, য'ত শ্ৰীকৃষ্ণই নিজেই জাগৃত কৰে। ই ৰাজ বিদ্যা হয়, যি এবাৰ জাগৃত হলেই নিশ্চিত কল্যাণ কৰে। সেয়ে-

এইদৰে শ্ৰীমৎভগৱৎকপী উপনিষদ এবং ব্ৰহ্মবিদ্যা তথা যোগশাস্ত্ৰ বিষয়ক শ্ৰীকৃষ্ণ অৰ্জুনৰ সংবাদত 'ৰাজবিদ্যা জাগৃতি' নামৰ নৱম আধ্যায় পূৰ্ণ হ'ল।

ইতি শ্ৰীমৎপৰমহংস পৰমানন্দস্য শিষ্য স্বামী অড়গড়ানন্দ কৃতে শ্ৰীমৎভগৱৎ গীতায়াম্ 'যথার্থ গীতা' ভাষ্য 'ৰাজবিদ্যা জাগৃতিনামো নৱমোহধ্যায়ঃ ॥৯॥

হৰি ওঁ তৎসৎ ॥

‘ওঁ’

শ্ৰী পৰমাত্মনে নমঃ

অথ দশমোহধ্যায়ঃ

আগৰ অধ্যায়ত যোগেশ্বৰ শ্ৰী কৃষ্ণ গুপ্ত ৰাজবিদ্যা চিত্ৰণ কৰিলে, যি নিশ্চয়ই কল্যাণ কৰে, দশম আধ্যায়ত তেওঁ কৈছে যে, মহাবাহু অৰ্জুন। মোৰ পৰম বহস্যযুক্ত বচনক আকৌ শুনা, ইয়াত তাকে দ্বিতীয় বাৰ কবৰ কি প্ৰয়োজন আছিলে? বস্তুতঃ সাধকক শেষ পৰ্য্যন্ত বিপদ আছে। যেতিয়াই তেওঁ স্বৰূপত সোমাই গৈ থাকে, প্ৰকৃতিৰ আবৰণ সুক্ষ্ম হৈ গৈ থাকে, নতুন দৃশ্য আহি থাকে। তাৰ বিৱৰণ মহাপুৰুষে দি থাকে। সি নেজানে, যদি তেওঁ মাৰ্গদৰ্শন কৰিবলৈ বন্ধ কৰি দিয়ে তেতিয়া সাধক স্বৰূপৰ উপলব্ধিৰ পৰা বঞ্চিত হৈ যাব। যেতিয়ালৈকে তেওঁ স্বৰূপৰ পৰা দূৰত থাকে, তেতিয়া লৈকে এইটো প্ৰমাণ আছে যে প্ৰকৃতিৰ কিবা এটা আবৰণ থাকিবই, পিচল খোৱা, পৰিয়োৱাৰ সম্ভাৱনা থাকেই। অৰ্জুন শৰণাগত শিষ্য। সি কলে - ‘শিষ্যস্তেহহং শাধি মাং ত্বাং প্ৰপন্নম’ ভগৱান! মই আপোনাৰ শিষ্য, আপোনাৰ শৰণ লৈছো, মোক ৰক্ষা কৰক। সেয়ে তেওঁৰ হিতৰ কামনা কৰি যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই পুনৰ কলে -

শ্ৰীভগবানুবাচ

ভূয় এব মহাৱাহো শৃণু মে পৰমং বচঃ।

যত্তেহহং প্ৰীয়মাণায় ৰক্ষ্যামি হিতকাম্যয়া।।১।।

মহাবাহু অৰ্জুন! মোৰ পৰম প্ৰভাৱযুক্ত বচনক পুনৰ শুনা, যি মই তোমাক অতিশয় প্ৰেম ৰখাৰ বাবে হিতৰ ইচ্ছা কৰিয়ে কৈছোঁ -

ন মে বিদুঃ সুৰগণাঃ প্ৰভৱং ন মহৰ্ষয়ঃ।

অহমাদিৰ্হি দেৱানাং মহৰ্ষীণাং চ সৰ্বশঃ।।২।।

অৰ্জুন! মোৰ উৎপত্তিক দেৱতা সকলেও নেজানে আৰু মহৰ্ষীগণেও নাজানে।

শ্রীকৃষ্ণই কৈছিল যে ‘**জন্ম কৰ্ম চ মে দিব্যং**’-মোৰ সেই জন্ম আৰু কৰ্ম অলৌকিক, এই চৰ্ম চক্ষুৰে দেখা পোৱা নাযায়। সেই কাৰণে মোৰ সেই প্ৰকট হোৱাক দেৱ আৰু মহৰ্ষি, স্তৰ লৈকে পোৱা লোকেও নাজানে। মই সকলো প্ৰকাৰৰ দেৱতাসকল আৰু মহৰ্ষি সকলৰো আদি কাৰণ।

**যো মামজমনাদিং চ বেত্তি লোকমহেশ্বৰম।
অসম্ম্যুঃ সমতেষু সৰ্বপাপৈঃ প্ৰমুচ্যতে।।৩।।**

যি জনে মোক জন্ম-মৃত্যু ৰহিত, আদি-অন্ত ৰহিত সকলো লোকৰ মহান ঈশ্বৰক সাক্ষাৎ কাৰেৰে সৈতে বিদিত কৰি লৈছে, সেই পুৰুষ মৰণশীল মনুষ্যৰ ভিতৰত জ্ঞানৱান অৰ্থাৎ অজ, অনাদি আৰু সৰ্বলোক মহেশ্বৰক ভালদৰে জানিলোৱা হ’ল জ্ঞান আৰু এনে জানোতা সম্পূৰ্ণ পাপৰ পৰা মুক্ত হৈ যায়, পুনৰ জন্ম প্ৰাপ্ত নহয়। শ্রীকৃষ্ণই কৈছে যে এই উপলক্ষি মোৰে দেন হয়।

**বুদ্ধিৰ্জ্ঞানমসম্মোহঃ ক্ষমা সত্যং দমঃ শমঃ।
সুখং দুঃখং ভবোহভাবো ভয়ং চাভয়মের চ।।৪।।**

অৰ্জুন! নিশ্চয়াত্মিকা বুদ্ধি, সাক্ষাৎকাৰৰ সৈতে জনা, লক্ষ্যত বিবেকপূৰ্ণ প্ৰবৃত্তি, ক্ষমা, শাস্ত্ৰত সত্য, ইন্দ্ৰিয় সকলৰ দমন, মনৰ শমন, অন্তঃকৰণৰ প্ৰসন্নতা, চিন্তন পথৰ কষ্ট, পৰমাত্মাৰ জাগৃতি, স্বৰূপৰ প্ৰাপ্তীকালত সৰ্বস্বৰ বিলয়, ইষ্টৰ প্ৰতি অনুশাসনাত্মক ভয় আৰু প্ৰকৃতিত নিৰ্ভয়তা তথা-

**অহিংসা সমতা তুষ্টিস্তপো দানং যশোহযশঃ।
ভৱন্তি ভাবা ভূতানাং মত্ত এব পৃথগ্বিধাঃ।।৫।।**

অহিংসা, অৰ্থাৎ নিজৰ আত্মক অধোগতিত নিনিবৰ বাবে আচৰণ, সমতা- য’ত বিষমতা নাই, সন্তোষ, তপ মনেৰে সৈতে ইন্দ্ৰিয় সমূহক লক্ষ্যৰ অনুৰূপ তাপ দিয়া, দান-অৰ্থাৎ সৰ্বস্বৰ সমৰ্পণ, ভগৱৎপথত মান-অপমানৰ সহ্যকৰা, এইদৰে প্ৰাণীবোৰৰ উপৰোক্ত ভাৱ মোৰ পৰাই হয়। এই সকলোভাৱ দৈৱী চিন্তন- পদ্ধতিৰ লক্ষণ। এইবোৰৰ অভাৱেই আসুৰী সম্পদ।

**মহৰ্ষয়ঃ সপ্তপূৰ্বে চত্বাৰো মনবস্তথা।
মত্তাৱা মানসা জাতা যেযাং লোক ইমাঃ প্ৰজাঃ।।৬।।**

সপ্তৰ্ষি অৰ্থাৎ যোগৰ সাতটা ক্ৰমিক ভূমিকা(শুভেচ্ছা,সুবিচাৰ, তনুমানসা, অসংসক্তি পদাৰ্থাভাৱনা আৰু তুৰ্যগা) তথা এইবোৰৰ অনুৰূপ অন্তঃকৰণ চতুষ্টয়(মন, বুদ্ধি,চিত্ত আৰু অহংকাৰ), তাৰ অনুৰূপ মন যি মোৰে ভাৱ থকা এই সকলো মোৰে সংকল্পেৰে (মোৰ প্ৰাপ্তীৰ সংকল্পেৰে তথা যি মোৰে প্ৰেৰণাৰ পৰা হয়। দুটা ইটো আনটোৰ পৰিপূৰক) উৎপন্ন হয়। এই সংসাৰত এইবোৰ সম্পূৰ্ণ দৈৱী সম্পদ এওঁলোকেৰে প্ৰজা হয়। কিয়নো সপ্ত ভূমিকাৰ সঞ্চাৰত 'দৈৱী সম্পদেই' হয়, অন্য নহয়।

এতাং বিভূতিং যোগং চ মম যো বেত্তি তত্ত্বতঃ।

সোহৰিকম্পেন যোগেন যুজ্যতে নাত্ৰ সংশয়ঃ ॥৭॥

যি পুৰুষে যোগৰ আৰু মোৰ উপৰোক্ত বিভূতি বোৰক সাক্ষাৎকাৰেৰে সৈতে জানে, তেওঁ স্থিৰ ধ্যান যোগ দ্বাৰা মোতেই একীভাৱত স্থিত হয়। ইয়াত কোনো সংশয় নাই। যি প্ৰকাৰে বায়ু ৰহিত স্থানত ৰখা চাকিৰ শিখা পোনে পোনে ওপৰলৈ যায়, কঁপনি নাথাকে, যোগীৰো বিজয়ী চিত্তৰ এয়েই পৰিভাষা। সপ্তত শ্লোকত 'অবিকম্পেন' শব্দটোৱে এই আশয়ৰ ফালে সংকেত কৰিছে।

অহং সৰ্বস্য প্ৰভৱো মত্তঃ সৰং প্ৰবৰ্ততে।

ইতি মত্না ভজন্তে মাং বুধা ভাৱসমম্বিতাঃ ॥৮॥

ময়েই সম্পূৰ্ণ জগতৰ উৎপত্তিৰ কাৰণ, মোৰ দ্বাৰাই সম্পূৰ্ণ জগত চলে- এইদৰে মানি শ্ৰদ্ধা আৰু ভক্তিৰে যুক্ত বিবেকী জনে মোৰ নিৰন্তৰ ভজনা কৰে। তাৰ অৰ্থ এইটো যে যোগী দ্বাৰা মোৰ অনুৰূপ যি প্ৰবৃত্তি হয়, তাত ময়ে ক্ৰিয়া কৰোঁ। সেইটো মোৰে প্ৰসাদ। (কেনেকৈ হ'ল, আগতে ঠায়ে ঠায়ে কৈ আহিছে) তেওঁলোকে নিৰন্তৰ ভজন কি দৰে কৰে? এই বিষয়ত কয়—

মচ্চিত্তা মদগতপ্ৰাণা বোধয়ন্তঃ পৰম্পৰম্।

কথয়ন্তশ্চ মাং নিত্যং তুষ্যন্তি চ ৰমন্তি চ ॥৯॥

অন্য কাকো স্থান নিদি মোকেই নিৰন্তৰ চিত্ত লগাওঁতা, মোকেই প্ৰাণ

লগাওঁতা সদায়ে পৰম্পৰ মোৰ প্ৰক্ৰিয়াবোৰৰ বোধ কৰে। মোৰ গুণ- গান কৰি থাকি সম্ভূত হয় তথা নিৰন্তৰ মোৰ লগতেই বৰণ কৰে।

তেমাং সততযুক্তানাং ভজতাং প্ৰীতিপূৰ্বকম্।

দদামি বুদ্ধিযোগং তং যেন মামুপয়ান্তি তে।।১০।।

নিৰন্তৰ মোৰ ধ্যানত লাগি থকা তথা প্ৰেমেৰে ভজন কৰোঁতা সেই ভক্ত বিলাকক মই সেই বুদ্ধিযোগ অৰ্থাৎ যোগত প্ৰবেশ কৰিব পৰা বুদ্ধি দিওঁ যাৰদ্বাৰা তেওঁ মোক প্ৰাপ্ত কৰিব অৰ্থাৎ যোগৰ জাগৃতি ঈশ্বৰৰে দেন হয়। সেই অব্যক্ত পুৰুষ 'মহাপুৰুষে' যোগত প্ৰবেশ কৰাব পৰা বুদ্ধি কেনেকৈ দিয়ে?

তেষামেৰানুকম্পাৰ্থমহমজ্জানজং তমঃ।

নাশয়াম্যাত্মভাবস্তো জ্ঞানদীপেন ভাস্বতা।।১১।।

তেওঁলোকৰ ওপৰত পূৰ্ণ অনুগ্ৰহ কৰিবৰ বাবে মই তেওঁলোকৰ আত্মাৰ অভিন্ন ঠিয় হৈ, সাৰথী হৈ অজ্ঞানেৰে উৎপন্ন হোৱা অন্ধকাৰক জ্ঞান ৰূপী দীপকৰ দ্বাৰা প্ৰকাশিত কৰি নষ্ট কৰি দিওঁ। বস্তুতঃ কোনো স্থিতপ্ৰজ্ঞ যোগীৰ দ্বাৰা যেতিয়ালৈকে সেই পৰমাত্মা আপোনাৰ আত্মাৰ পৰা জাগৃত হৈ পলে পলে সঞ্চালন নকৰে, বক্ষণা-বেক্ষণ নকৰে, এই প্ৰকৃতিৰ দ্বন্দ্বৰ পৰা উলিয়াই স্বয়ং আগ বঢ়াই লৈ নাযায়, তেতিয়ালৈকে বাস্তৱত যথার্থ ভজন আৰম্ভই হোৱা নাই। এনেতে ভগৱানে সৰ্বত্ৰতে কথা পাতে; কিন্তু প্ৰাৰম্ভনীত তেওঁ স্বৰূপস্থ মহাপুৰুষৰ দ্বাৰাহে কথা পাতে। যদি তেনে ধৰণৰ মহাপুৰুষ আপোনাৰ প্ৰাপ্ত হোৱা নাই, তেতিয়া হলে তেওঁ আপোনাৰ লগত স্পষ্ট কথা নাপাতে।

ইষ্ট, সদগুৰু অথবা পৰমাত্মাৰ সাৰথী হোৱা একেই কথা। সাধকৰ আত্মাৰ পৰা জাগৃত হলে তেওঁৰ নিৰ্দ্দেশ চাৰি প্ৰকাৰেৰে পোৱা যায়। প্ৰথমে স্থূল সুৰা- সম্বন্ধী অনুভৱ হয়। আপুনি চিন্তনত বহিছে। কেতিয়া আপোনাৰ মন লাগিব? কিমান সময়লৈকে লাগি থাকিব? কেতিয়া পলাব বিচাৰে আৰু

কেতিয়া পলাই গ'ল? ইয়াক প্ৰতি চেকেণ্ড-মিনিটত ইষ্টে অংগ স্পন্দনৰ দ্বাৰা সংকেত কৰি থাকে। অংগৰ স্পন্দন স্থূল সুৰা সম্বন্ধী অনুভৱ হয়, যি একে সময়তে তিনি চাৰি ঠাইত একে লগে হব পাৰে আৰু আপুনি বিকৃত হলে মিনিটে মিনিটে স্পন্দন হব ধৰিব। এই সংকেত তেতিয়াহে হয়, যেতিয়া ইষ্টৰ স্বৰূপক আপুনি অনন্য ভাৱে ধৰিছে অন্যথা সাধাৰণ জীৱ সমুহত সংস্কাৰৰ আঘাতত অংগ- স্পন্দন হয়, যাৰ ইষ্টৰ লগত কোনো সম্বন্ধ নাই। দ্বিতীয় অনুভৱ স্বপ্ন- সুৰা সম্বন্ধীয় হয়। সাধাৰণ মানুহে নিজৰ বাসনাৰে সম্বন্ধীত স্বপ্নতো দেখেই, কিন্তু যেতিয়া আপুনি ইষ্টক ধৰি লৈছে তেতিয়া এই সপোনো নিৰ্দেশলৈ পৰিবৰ্ত্তন হৈ যায়। যোগীয়ে সপোন নেদেখে, হব লগা ঘটনাবোৰ দেখে।

উপৰোক্ত দুটা অনুভৱেই প্ৰাথমিক অৱস্থাৰ হয়, কোনো তত্বস্থিত মহাপুৰুষৰ সান্নিধ্যৰ দ্বাৰা, তেওঁৰ প্ৰতি শ্ৰদ্ধা ৰাখিলে, তেওঁৰ ভঙা-টুটা সেৱাৰ দ্বাৰা জাগৃত হৈ যায়; কিন্তু এই দুটাতকৈও সূক্ষ্ম বাকী দুটা অনুভৱ ক্ৰিয়াত্মক হয়, যাক ক্ৰিয়াত্মক ভাৱে চলিলেহে চাব পাৰি।

তৃতীয় অনুভৱ সুষুপ্তি সুৰা- সম্বন্ধী হয়। সংসাৰত সকলো শুয়েই তো থাকে। মোহৰ নিচাত সকলো অচেতন হৈ পৰি আছে। ৰাতিয়ে দিনে যি কৰে সপোনেই হয়। ইয়াত সুষুপ্তিৰ শুদ্ধ অৰ্থ হ'ল, যেতিয়া পৰমাত্মাৰ চিন্তনৰ এনে ধাৰা লাগি যায় যে সুৰাত (ভাৱ) একে বাৰে স্থিৰ হৈ যায়, শৰীৰ জাগৃত হৈ থাকে, আৰু মন সুপ্ত হৈ যায়। এনে অৱস্থাতে সেই ইষ্টদেৱে পূৰ্ণৰ নিজৰ সংকেত দিয়ে। যোগৰ অৱস্থাৰ অনুৰূপ এটা ৰূপক(দৃশ্য) আহে যি শুদ্ধ দিশ প্ৰদান কৰিছিল, ভূত-ভবিষ্যতক অৱগত কৰাইছিল। 'পূজ্য মহাৰাজ জীয়ে' কৈছিল যে ডাক্তৰে যেনে দৰে বেছ কৰা ঔষধ দি, উচিত উপচাৰ কৰাৰ পিছত আকৌ হুচলৈ আনে এনেদৰে ভগৱানে কৈ দিয়ে।

চতুৰ্থ আৰু শেষ অনুভৱ হল সমসুৰা-সম্বন্ধী। যত আপুনি ধ্যান লগাইছিল, সেই পৰমাত্মাৰ লগত সমত্ব প্ৰাপ্ত হৈ গল, তাৰ পিছত, উঠা-বহা, চলা-ফুৰা সৰ্বত্ৰতে তেওঁৰ অনুভূতি হব ধৰে। এই যোগী ত্ৰিকালজ্ঞ হয়। এই অনুভৱ তিনিও কালৰ পাৰত অব্যক্ত স্থিতি থকা মহাপুৰুষে আত্মাৰ

পৰা জাগৃত হৈ অঞ্জলনজনিত অন্ধকাৰক জ্ঞান-দীপেৰে পোহৰ কৰি দিয়ে।
এই সম্পৰ্কত অৰ্জুনে প্ৰশ্ন কৰিলে।

অৰ্জুন উবাচ

পৰং ব্ৰহ্ম পৰং ধাম পবিত্ৰং পৰমং ভৱান্।

পুৰুষং শাস্বতং দিব্যমাদিদেবমজং বিভূম্ ॥১২॥

আহুস্ত্ৰামৃষয়ঃ সৰ্বে দেৱৰ্ষিৰ্নাৰদস্তথা।

অসিতো দেবলোব্যাসঃ স্বয়ং চৈৱ ব্ৰবীষি মে ॥১৩॥

ভগৱান! আপুনি পৰম ব্ৰহ্ম, পৰমধাম, তথা পৰম পবিত্ৰ; কিয়নো আপোনাক সকলো ঋষিগণে সনাতন, দিব্য পুৰুষ, দেৱতাৰো অদি দেৱ, অজন্মা আৰু সৰ্বব্যাপি বুলি কয়। পৰমপুৰুষ, পৰমধাম পৰ্য্যায়ৰেই শব্দ দিব্য পুৰুষ, অজন্মা আদি। দেৱৰ্ষি নাৰদ, অসিত, দেৱল, ব্যাস তথা স্বয়ং আপুনিও মোক সেইটোকে কৈছে। অৰ্থাৎ প্ৰথমে আগৰ মহৰ্ষি সকলে কৈছিল, এতিয়া বৰ্ত্তমানতয়াৰ সংগত উপলব্ধ আছে; নাৰদ, দেৱল, অসিত আৰু ব্যাসৰ নাম লৈছে, যিবোৰ অৰ্জুনৰ সমকালীন আছিল, (সৎপুৰুষ সকলৰ সংগত অৰ্জুনক প্ৰাপ্ত হৈছিল) আপুনিও তাকে কৈ আছে।

সৰ্বমেতদৃতং মন্যে যন্মাং ৰদসি কেশৱ।

ন হি তে ভগবনব্যক্তিং ৰিদুৰ্দ্বেবা ন দানবাঃ ॥১৪॥

হে কেশৱ! যি কোনো আপুনি মোৰ বাবে কৈ আছে, সেই সকলো সত্য বুলি মই মানি লৈছো। আপোনাৰ ব্যক্তিত্বক দেৱতা আৰু দানৱ কোনোও নাজানে।

স্বয়মেৱাত্মনাত্মানং বেথং ত্বং পুৰুষোত্তম।

ভূতভাৱন ভূতেশ দেৱদেৱ জগৎপতে ॥১৫॥

হে ভূত সকলক উৎপন্ন কৰোতা! হে ভূতসমূহৰ ঈশ্বৰ! হে দেৱ-দেৱ! হে জগতৰ স্বামী! হে পুৰুষোত্তম! স্বয়ং আপুনিহে আপোনাক জানে অথবা যাৰ আত্মাত জাগৃত হৈ আপুনি নিজেই দিয়ে, তেৰে জানে। সেইটোও আপোনাৰ দ্বাৰাই আপোনাক জনা হ'ল। সেই কাৰণে –

ৰক্তমহস্যশেষেণ দিব্যা হ্যাভুবিভূতয়ঃ।
যাভিৰ্ভূতিভিলোকানিমাংস্ত্বং ব্যাপ্য তিষ্ঠসি।।১৬।।

আপুনিয়েই আপোনাৰ সেই বিভূতি সমূহক সম্পূৰ্ণ ৰূপেৰে অলপো বাকী নৰখাকৈ কবলৈ সক্ষম, যি বিভূতি সমূহৰ দ্বাৰা আপুনি এই সকলো লোকক ব্যাপ্ত কৰি স্থিত হৈ আছে।

কথং ৰিদ্যামহং যোগিংস্ত্বাং সদা পৰিচিন্তয়ন্।
কেষু কেষু চ ভাবেষু চিন্ত্যোহসি ভগবন্ময়া।।১৭।।

হে যোগীন! (শ্ৰীকৃষ্ণ এজন যোগী আছিল) মই কি দৰে নিৰন্তৰ চিন্তন কৰি আপোনাক জানি লওঁ, আৰু হে ভগৱান! মই কি ভাৱৰ দ্বাৰা আপোনাক স্মৰণ কৰোঁ?

বিস্তৰেণাত্মনো যোগং ৰিভূতিং চ জনাৰ্দন।
ভূয়ঃ কথয় তৃপ্তিৰ্হি শৃণ্বতো নাস্তি মেহমৃতম্।।১৮।।

হে জনাৰ্দন! নিজৰ যোগ শক্তিক আৰু যোগৰ বিভূতিক আকৌ বিস্তাৰ ভাৱে কওক। সংক্ষেপত তো এই আধ্যায়ৰ আৰম্ভনীত কৈছিলে পুনৰ কওক; কিয়নো অমৃত তত্বক দিব পৰা এই বচন শুনি থকিলে মোৰ তৃপ্তিয়ে নহয়।

ৰাম চৰিত জে সুনত অঘাইঁ। ৰস ৰিশেষ জানা তিন্হ নাই।।
(ৰামচৰিত মানস, ৭/৫২/১)

যেতিয়ালৈকে প্ৰবেশ নহয় তেতিয়ালৈকে সেই অমৃত তত্বক জানিবৰ পিয়াস লাগি থাকে। প্ৰবেশৰ পূৰ্বে কোনোবাই ৰাস্তাতেই এইটোভাবিবিহি গল আৰু কলে- বহুত জানিলো, তেতিয়া সি একো জনা নাই। প্ৰমাণ হৈছে যে তাৰ মাৰ্গ অৱৰুদ্ধ হব বিচাৰিছে। সেই কাৰণে সাধকক শেষ পৰ্যন্ত ইষ্টৰ নিৰ্দেশক ধৰি চলিব লাগে আৰু তাক আচৰণত পেলাব লাগে। অৰ্জুৰ উক্ত প্ৰশ্ন বোৰৰ ওপৰত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কয়—

শ্ৰীভগবানুবাচ

হস্ত তে কথয়িষ্যামি দিব্যা হ্যাত্মবিভূতয়ঃ।

প্রাধান্যতঃ কুরু শ্রেষ্ঠ নাস্ত্যন্তো বিস্তৰস্য মে।।১৯।।

কুরুশ্রেষ্ঠ অৰ্জুন! এতিয়া মই নিজৰ দিব্য বিভূতি সমূহৰ, প্ৰমুখ বিভূতিবোৰক তোমাক কম। কিয়নো মোৰ বিভূতিৰ বিস্তাৰৰ অন্ত নাই।

অহমাত্মা গুড়াকেশ সৰ্বভূতাশয়স্থিতঃ।

অহমাদিশ্চ মধ্যং চ ভূতানামন্ত এৰ চ।।২০।।

অৰ্জুন! মই সকলো ভূত প্ৰাণীৰ হৃদয়ত থকা সকলোৰে আত্মা হওঁ তথা সম্পূৰ্ণ ভূতৰ আদি, মধ্য আৰু জীৱনও ময়েই।

আদিত্যানামহং বিষুঃজ্যোতিষাং বৰিৰংশুমান্।

মৰীচিৰ্মৰুতামস্মি নক্ষত্ৰাণামহং শশী।।২১।।

মই অদিতিৰ বাৰ পুত্ৰৰ ভিতৰত বিষুঃ আৰু জ্যোতি বিলাকৰ ভিতৰত প্ৰবেশমান সূৰ্য্যহওঁ। বায়ু বিলাকৰ ভিতৰত মই মৰিচি নামৰ বায়ু আৰু নক্ষত্ৰৰ ভিতৰত চন্দ্ৰ হওঁ।

বেদানাং সামবেদোহস্মি দেবানামস্মি ৱাসৱঃ।

ইন্দ্ৰিয়াণাং মনশ্চাস্মি ভূতানামস্মি চেতনা।।২২।।

বেদৰ ভিতৰত মই সামবেদ অৰ্থাৎ পূৰ্ণ সমস্ত দিব পৰা গায়ন হওঁ। দেৱতাৰ ভিতৰত মই ইন্দ্ৰ, আৰু ইন্দ্ৰিয়ৰ ভিতৰত মন হওঁ; কিয়নো মনৰ নিগ্ৰহৰ দ্বাৰাই মোক জনা যায় তথা প্ৰাণী বিলাকৰ ভিতৰত মই তেওঁলোকৰ চেতনা হওঁ।

ৰুদ্ৰাণাং শঙ্কৰশ্চাস্মি ৱিত্তেশো যক্ষৰক্ষসাম্।

ৱসুনাং পাৰকশ্চাস্মি মেৰুঃ শিখৰিণামহম্।।২৩।।

একাদশ ৰুদ্ৰৰ ভিতৰত মই শঙ্কৰ হওঁ। শংক্ অৰ স শংকৰ অৰ্থাৎ শংকাৰ পৰা নাইকিয়া অৱস্থা ময়েই। যক্ষ আৰু ৰাক্ষসৰ ভিতৰত মই ধনৰ স্বামী কুবেৰ হওঁ। আঠ ৱসুবিলাকৰ ভিতৰত মই অগ্নি আৰু শিখৰ বিলাকৰ ভিতৰত মই সুমেৰু অৰ্থাৎ শুভৰ মিলন ময়েই। সেইয়ে সৰ্ব উচ্চ শিখৰ,

কোনো পাহাৰ নহয়। মূলতঃ এই সকলো বিলাক যোগ-সাধনাৰ প্ৰতীক, যৌগীক শব্দ।

পুৰোধসাং চ মুখ্যং মাং ৱিদ্ধি পাৰ্থ বৃহস্পতিম্।

সেনানীনামহং স্কন্দঃ সবসামস্মি সাগৰঃ।।২৪।।

পুনৰ বক্ষা কৰোতা পুৰুহিতৰ ভিতৰত বৃহস্পতি বুলি তুমি মোকে জানা, য'ত দৈবী সম্পদৰ সঞ্চাৰ হয় আৰু হে পাথ! সেনাপতি বিলাকৰ ভিতৰত মোক স্বামী কাৰ্ত্তীক বুলি জানা। কৰ্মৰ ত্যাগ হ'ল কাৰ্ত্তীক, যাৰ দ্বাৰা চৰাচৰৰ সংহাৰ, প্ৰলয়, আৰু ইষ্টৰ প্ৰাপ্তি হয়। জলাশয়ৰ ভিতৰত মই সমুদ্ৰ হওঁ।

মহৰ্ষীগাং ভৃগুৰহং গিৰামশ্চোকমক্ষৰম্।

যজ্ঞানাং জপযজ্ঞোহস্মি স্থাৰবাণাং হিমালয়ঃ।।২৫।।

মহৰ্ষিৰ ভিতৰত মই ভৃগু আৰু বাণীৰ ভিতৰত মই এক অক্ষৰ 'ওঁ' কাৰ হওঁ, যি সেই ব্ৰহ্মৰ পৰিচায়ক। সকলো প্ৰকাৰৰ যজ্ঞৰ ভিতৰত মই জপ-যজ্ঞ হওঁ। যজ্ঞ পৰমত প্ৰবেশ কৰাব পৰা আৰাধনাৰে বিধি বিশেষৰ চিত্ৰণ হয়। তাৰ সাৰাংশ হ'ল- স্বৰূপৰ স্মৰণ আৰু নামৰ জপ। দুটা বাণীৰূপৰ পাৰ হৈ গলে নাম যেতিয়া যজ্ঞৰ শ্ৰেণীত পৰে তেতিয়া বাণীৰে জপ নহয়, চিন্তনেৰেও নহয়, কঠেৰেও নহয়, বৰঞ্চ সি শ্বাসত জাগৃত হৈ যায়। মাত্ৰ ধ্যানক শ্বাসত লগাই মনেৰে অবিৰল চলি থাকিব। যজ্ঞৰ শ্ৰেণীৰ নামৰউঠা-নমা শ্বাসৰ ওপৰত নিৰ্ভৰ কৰে। এইটো ত্ৰিণাত্মক। স্থিৰ খাঁকোতাৰ ভিতৰত হিমালয় হওঁ। শীতল, সম আৰু অচল একমাত্ৰ পৰমাত্মাৰ যেতিয়া প্ৰলয় হৈছিল, তেতিয়া মনু সেই শিখৰতে বান্ধ খাইছিলে। অচল, সম আৰুশান্ত ব্ৰহ্মৰ প্ৰলয় নহয়। সেই ব্ৰহ্মক ধৰা মানে মোকে ধৰা।

অশ্বত্থঃ সৰ্ববৃক্ষাণাং দেবৰ্ষীগাং চ নাৰদঃ।

গন্ধৰ্বাণাং চিত্ৰৰথঃ সিদ্ধানাং কপিলো মুনিঃ।।২৬।।

সকলো বৃক্ষৰ ভিতৰত মইঅশ্বত্থ। **অশ্বত্থঃ** - কালিলৈকে থকাৰ যাৰ কোনো গেৰাণ্টি দিব নোৱাৰি, এনে ওপৰত পৰমাত্মা যাৰ মূল, তলত প্ৰকৃতি যাৰ ডাল, এনে সংসাৰ এটা বৃক্ষ, যাক আঁহতৰ সংজ্ঞা দিয়া হয়- সাধাৰণ

আঁহতৰ বৃক্ষ নহয় যে পূজা কৰিবলৈ ধৰিলে। ইয়াৰ বাবে কয় যে-সেয়াই
ময়েই আৰু দেৱৰ্ষিৰ ভিতৰত ময়েই নাৰদ। **নাদ ৰংধঃ স- নাৰদ।**

দৈৱী সম্পদ ইমান সুক্ষ্ম হৈ যায় যে স্বৰত উঠা ধনী (নাদ) ধৰিব
পৰা যায়। তেনে জাগৃত ময়েই। গন্ধৰ্বৰ ভিতৰত মই চিত্ৰৰথ অৰ্থাৎ গায়ন
(চিন্তন) কৰোতে প্ৰকৃতিত যেতিয়া স্বৰূপ চিত্ৰিত হৈ যায়, সেই অৱস্থা বিশেষ
ময়েই। কায়া হ'ল কপিল। তাত যেতিয়া স্বভাৱ আহি যায়, সেই ঈশ্বৰীয়
সঞ্চাৰৰ অৱস্থা ময়েই।

উচ্চৈঃশ্ৰৱসম্পানাং ৱিক্ৰি মামমৃতোদ্ভৱম্।

ঐৰাৱতং গজেদ্ৰাগাং নৰাগাং চ নৰাধিপম্।।২৭।।

ঘোঁৰাৰ ভিতৰত মই অমৃতৰ পৰা উৎপন্ন হোৱা উচ্চৈঃশ্ৰৱা নামৰ
ঘোঁৰা হওঁ। পৃতিবীত সকলো বস্তুৱেই নাশৱান। আত্মাই অজৰ-অমৰ, অমৃত
স্বৰূপ। এই অমৃত স্বৰূপেৰে যাৰ সঞ্চাৰ হৈছে, সেই ঘোঁৰাই মই। ঘোঁৰা
জাতিৰ প্ৰতীক। আত্মাতত্বক গ্ৰহন কৰিবলৈ মনে যেতিয়া সেই ফালে গতি
কৰে- সেয়াই ঘোঁৰা। এনে গতি ময়েই। হাতী বিলাকৰ ভিতৰত ঐৰাৱত
নামৰ হাতী মই। মানুহৰ ভিতৰত ৰজা মোকে জানা। বস্তুতঃ মহাপুৰুষেই
ৰজা, যাৰ কোনো অভাৱ নাই।

আয়ুধানামহং ৰজ্জং ধেনুনামস্মি কামধুক্।

প্ৰজনশচাস্মি কন্দৰ্পঃ সৰ্পাণামস্মি বাসুকিঃ।।২৮।।

শস্ত্ৰৰ ভিতৰত মই ৰজ্জ। গাইগৰুৰ ভিতৰত মই কামধেনু। কামধেনু
কোনো এনেকুৱা গাই নহয় যি গাখীৰৰ ঠাইত মন ইপ্সিত বস্তু দিয়ে। ঋষি
বিলাকৰ ভিতৰত বশিষ্ঠৰ লগত কামধেনু আছিল। মূলতঃ ইন্দ্ৰিয় সমূহক
কোৱা হয়। ইন্দ্ৰিয়ক সংযম ত ৰখা হ'ল ইষ্টক বশত ৰাখোঁতা। যাৰ ইন্দ্ৰিয়
সমূহ ঈশ্বৰৰ অনুৰূপ স্থিৰ হৈ গৈছে, তেওঁৰ কাৰণে তেওঁৰ ইন্দ্ৰিয়বোৰ
“কামধেনু” হৈ যায়। তাৰ বাবেতো।

“জো ইচ্ছা কৰিহউ মনমাহী, হৰি প্ৰসাদ কছু দুৰ্লভ নাহী।।”

(ৰামচৰিত মানস ৭/১১৩/৪)

তেওঁৰ কাৰণে একোৱে দুৰ্লভ নহয়। প্ৰজনন কৰোঁতাৰ ভিতৰত নবীন স্ত্ৰী বিলাকক প্ৰকট ময়ে কৰাওঁ। ‘প্ৰজনন’ লৰাৰ জন্ম দিয়া হয়। চৰাচৰ জগতত ৰাতিয়ে দিনে জন্ম হৈয়ে আছে, এন্দুৰ- নিগনি, পৰুৱা- পোক ৰাতিয়ে দিনে জন্ম হয়, এনে নহয়, বৰঞ্চ এটা স্থিতিৰ পৰা আন এটা স্থিতি, এইদৰে বৃত্তিবোৰৰ পৰিবৰ্ত্তন হৈ থাকে, সেই পৰিৱৰ্ত্তিত স্বৰূপ ময়েই। সৰ্প বিলাকৰ ভিতৰত মই বাসুকি।

অনন্তশচাম্ভি নাগানাং বৰুণোযাদসামহম্
পিতৃণামৰ্যমা চাম্ভি যমঃ সংযমতামহম্ ॥২৯॥

নাগ বিলাকৰ ভিতৰত মই অনন্ত অৰ্থাৎ শেষনাগ। তেনেকৈ এইটো কোনো সৰ্প নহয়। গীতাৰ সমকালীন গ্ৰন্থ শ্ৰীমদ্ভাগৱতত ইয়াৰ ৰূপৰ আলোচনা কৰি কৈছে যে এই পৃথিৱীৰ ত্ৰিশ হাজাৰ যোজনৰ দূৰত পৰমাত্মাৰ বৈষ্ণৱী শক্তি আছে, যাৰ মূৰত এই পৃথিৱী সৰিয়হৰ গুটিৰ দৰে ভাৰ নোলোৱাকৈ ৰৈ আছে; সেই যুগত যোজনৰ হিচাব যদিও আছিল, তথাপিও ই যথেষ্ট দূৰত আছিল। বস্তুতঃ ই আকৰ্ষণ শক্তিৰ চিত্ৰণ। বৈজ্ঞানিক সকলেও যাক ঈশ্বৰ বুলি মানিছে। গ্ৰহ- উপগ্ৰহ সকলো সেই শক্তিৰ আধাৰত চলি আছে। সেই গুণ্যত গ্ৰহ বিলাকৰ কোনো ভাৰ নাই। সেই শক্তি সৰ্পৰ কুণ্ডলীৰ দৰে সকলো গ্ৰহক ধৰি আছে। এয়াই অনন্ত যত পৃথিৱীক ধৰি আছে। শ্ৰীকৃষ্ণই কয়— এনে ঈশ্বৰীয় শক্তি ময়েই। জলাচৰৰ ভিতৰৰ অধিপতি ‘বৰুণ’ আৰু পিতৃৰ ভিতৰত ‘অৰ্যমা’ ময়েই হওঁ। অহিংসা, সত্য, আন্তেয়, ব্ৰহ্মচৰ্য্য আৰু অপৰিগ্ৰহ এই পাঁচক যম বুলি কোৱা হয়। ইহঁতক পালন কৰোঁতা বিকাৰ সমূহক কাটি দিয়াতো ‘অৰঃ’ হয়। বিকাৰক শমন কৰিলে পিতৃ অৰ্থাৎ ভূত-সংস্কাৰ তৃপ্ত হয়, নিবৃত্তি প্ৰদান কৰে। শাসন কৰোঁতাৰ ভিতৰত যমৰাজ ময়েই অৰ্থাৎ উপৰোক্ত যমঃৰ নিয়ামক ময়েই।

প্ৰহ্লাদশচাম্ভি দৈত্যানাং কালঃ কলয়তামহম্।
মৃগাণাং চ মৃগেন্দ্রোহহং বৈনজ্যৈশ্চ পক্ষিণাম্ ॥৩০॥

দৈত্যৰ ভিতৰত ময়েই প্ৰহ্লাদ (পৰৰ বাবে আহলাদ) প্ৰেমেই প্ৰহ্লাদ। আসুৰী সম্পদ থকা সময়তে ঈশ্বৰৰ বাবে আকৰ্ষণ- ৰিকলতা আৰম্ভ হয়,

যাৰ ফলত পৰম প্ৰভূৰ দিক দৰ্শণ হয়। এনে প্ৰেমোন্মত্ত ময়েই। গণনা কৰাৰ ভিতৰত ময়েই সময়। এক, দুই, তিনি, চাৰি এনে গণনা বা ক্ষণ, ঘণ্টা, দিন, মাহ, পক্ষ ইত্যাদি নহয়, বৰঞ্চ ঈশ্বৰৰ চিন্তনত লাগি থকা সময় ময়েই। ইয়ালৈকে- জাগত মে সুমিৰন কৰে, সোৱত মে লৱ লায়। যে অনবৰত চিন্তনত সময় ময়েই। পশুৰ ভিতৰত মৃগৰাজ (যোগীও মৃগ অৰ্থাৎ যোগকৰ্পী বনত গমন কৰা জন) তথা পক্ষীৰ ভিতৰত গৰুড় ময়েই। জ্ঞানেই গৰুড়। যেতিয়া ঈশ্বৰীয় অনুভূতি আহিব ধৰে, তেতিয়া এই মন নিজৰ আৰাধ্যৰ বাহন হৈ যায় আৰু যেতিয়া এই মন সংশয় যুক্ত হয় তেতিয়া সৰ্প হয়, খুটি থাকে, যোনী বিলাকত পেলাই দিয়ে। গৰুড় বিষুণ্ডৰ বাহন। যি সত্তা বিশ্বত অনুৰূপে সঞ্চারিত আছে, জ্ঞান- সংযুক্ত মন তাক নিজৰ ভিতৰত ধাৰণ কৰে, তাৰ বাহক হৈ যায়। শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছে— ইষ্টক ধাৰণ কৰোতা মন ময়েই।

পৰনঃ পৰতামস্মি বামঃ শস্ত্ৰভূতামহম্।

ৰাযাণাং মকৰশ্চাস্মি শ্ৰোতসামস্মি জাহুৰী ॥ ৩১ ॥

পবিত্ৰ কৰোতাৰ ভিতৰত মই বায়ু হওঁ, শস্ত্ৰধাৰিৰ ভিতৰত মই বাম হওঁ। যোগী কাৰ লগত ৰমণকৰে? অনুভৱত। ঈশ্বৰ ইষ্ট ৰূপত যি নিৰ্দেশ দিয়ে, যোগী তাতে ৰমণ কৰে। সেই জাগৃতিৰ নামেই বাম আৰু সেই জাগৃতি ময়েই। মাছৰ ভিতৰত মগৰ (ঘৰিয়াল) তথা নদীৰ ভিতৰত মই গংগা হওঁ।

সৰ্গাণামাদিৰন্ত্ৰশ্চ মধ্যং চৈবাহমৰ্জুন।

অধ্যাত্মবিদ্যা বিদ্যানাং ৰাদঃ প্ৰৱদতামহম্ ॥ ৩২ ॥

হে অৰ্জুন! সৃষ্টিৰ আদি, অন্ত অৰু মধ্য ময়েই হওঁ। বিদ্যাৰ ভিতৰত অধ্যাত্ম বিদ্যা ময়েই। যি আত্মাৰ আধিপত্য দিয়ে, সেই বিদ্যা ময়েই হওঁ। সংসাৰত অধিকাংশ প্ৰাণী মায়াৰ আধিপত্যত থাকে; ৰাগ -দ্বেষ, কাল, কৰ্ম, স্বভাৱ আৰু গুণেৰে প্ৰেৰিত হয়। তেওঁলোকৰ আধিপত্যৰ পৰা ওলিয়াই আত্মাৰ আধিপত্যত লৈ যোৱা বিদ্যা ময়েই, যাক অধ্যাত্ম বিদ্যা বোলা হয়। পৰস্পৰে হব পৰা তৰ্কত ব্ৰহ্ম- আলোচনাত যি নিৰ্ণায়ক হয়, সেই বাৰ্তা ময়েই হওঁ। বাকী নিৰ্ণয় তো অনিৰ্ণিত হয়।

অক্ষৰাণামকাৰোহস্মি দ্বন্দ্বঃ সামাসিকস্য চ ।

অহমেরাক্ষয়ঃ কালো ধাতাহং বিশ্বতোমুখঃ ॥৩৩॥

মই আখৰৰ ভিতৰত ‘অ’ কাৰ- ওম্কাৰ তথা সমাসৰ ভিতৰত দ্বন্দ্ব সমাস হওঁ। অক্ষয়কাল ময়েই হওঁ। কাল সদায়েই পৰিবৰ্ত্তণশীল হয়, কিন্তু সেই সময় যি অক্ষয়, অজৰ-অমৰ পৰমাত্মাত প্ৰবেশ কৰায়, সেই অৱস্থা ময়েই হওঁ। বিৰাট স্বৰূপ অৰ্থাৎ সৰ্বত্ৰ ব্যাপ্ত, সকলোৰে ধাৰণ-পোষন কৰোতাও ময়েই হওঁ।

মৃত্যুঃ সৰ্বহৰশ্চাহমুদ্ভবশ্চ ভৱিষ্যতাম্ ।

কীৰ্তিঃ শ্ৰীৰাক্চ নাবীণাং স্মৃতিৰ্মেধা ধৃতিঃ ক্ষমা ॥৩৪॥

মই সকলোকে নাশ কৰোতা মৃত্যু আৰু আগলৈ হব লগীয়া উৎপত্তিৰো কাৰণ হওঁ। স্ত্ৰী সকলৰ ভিতৰত মই যশ, শক্তি, বাকপটুতা, স্মৃতি, মেধা অৰ্থাৎ বুদ্ধি, ধৈৰ্য্য আৰু ক্ষমা ময়েই হওঁ।

যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণৰ অনুসৰি ‘দ্বাবিমৌ পুৰুষৌ লোকে ক্ষৰশ্চাক্ষৰ এব চ’ (আধ্যায় ১৫ শ্লোক ১৬) পুৰুষদুই প্ৰকাৰৰ হয় ক্ষৰ আৰু অক্ষৰ। সম্পূৰ্ণ ভূত আদিক উৎপত্তি আৰু বিনাশ কৰোতা এই শৰীৰ ক্ষৰ পুৰুষ হয়। তেওঁলোক নৰ, মতা, পুৰুষ অথবা স্ত্ৰী যিয়েই নহওক, শ্ৰীকৃষ্ণৰ মতে এওঁলোক পুৰুষ। দ্বিতীয়ত অক্ষৰ পুৰুষ যি স্থিৰ চিত্ত থকা স্থিৰ কালত দেখিবলৈ পোৱা যাব। এই কাৰণে যে এই যোগৰ পথত স্ত্ৰী পুৰুষ সকলো সমান স্থিতিৰ মহাপুৰুষ হৈছে। কিন্তু ইয়াত স্মৃতি শক্তি, বুদ্ধি ইত্যাদি স্ত্ৰী সকলৰহে গুণ বুলি কোৱা হৈছে। কি এই সদ্ গুণৰ আৱশ্যকতা পুৰুষৰ বাবে নাইনে? কোন এনে পুৰুষ আছে যি শ্ৰীমান, কীৰ্ত্তিৱান, বক্তা স্মৰণশক্তি সম্পন্ন, মেধাবি ধৈৰ্য্যৱান আৰু ক্ষমাৱান হব নিবিচাৰে? বৌদ্ধিক স্তৰত কমজোৰ হৈ থকা লৰাক এই গুণৰ বিকাশৰ কাৰণে মাক দেউতাকে পঢ়া শুনাৰ ওপৰঞ্চি ব্যৱস্থা কৰে। ইয়াত কোৱা হৈছে যে এই লক্ষণ সমূহ মাত্ৰ স্ত্ৰীতহে পোৱা যায়। সেয়ে আপুনি বিচাৰ কৰি চাওকচোন স্ত্ৰীনো কোন? বস্তুতঃ আপোনাৰ হৃদয়ৰ প্ৰবৃত্তিয়ে হ’ল ‘নাবী’। তেওঁৰ এই গুণৰ সঞ্চাৰ হোৱা উচিত। এই গুণ সমূহৰ ধাৰণ কৰাটো স্ত্ৰীলিংগ পুলিংগ সকলোৰে বাবে উপযোগী। যি মোৰ পৰাই হয়।

বৃহৎসাম তথা সাম্নাং গায়ত্ৰী ছন্দসামহম্ ।

মাসানাং মাৰ্গশীৰ্ষোহহমৃতুনাং কুসুমাৰবঃ ॥ ৩৫ ॥

গান কৰাৰ যোগ্য শ্ৰুতিবোৰৰ ভিতৰত মই বৃহৎসাম্ অৰ্থাৎ বৃহতেৰে সংযুক্ত, সমত্ৰ দিব পৰা গান হওঁ অৰ্থাৎ এনে জাগৃতি ময়েই হওঁ। ছন্দৰ ভিতৰত গায়ত্ৰী ছন্দ মইয়ে। গায়ত্ৰী কোনো মন্ত্ৰ নহয়, যাক পঢ়িলে মুক্তি পোৱা যায়, বৰঞ্চ এটা সমৰ্পণাত্মক ছন্দ হয়। তিনি বাৰ বিচলিত হোৱাৰ পিছত ঋষি বিশ্বামিত্ৰই নিজক ইষ্টৰ প্ৰতি সমৰ্পিত কৰি কৈছিল “ওঁ ভূৰ্ভুবস্বঃ তৎসবিতুৰ্বৰেণ্যং ভৰ্গো দেবস্য ধীমহি ধियो যোনঃ প্ৰচোদয়াৎ” স্বঃ অৰ্থাৎ ভূঃ,ভুবঃ অৰু স্বঃ তিনিও লোকত তত্বস্থিত ভাৱে ব্যাপ্ত হে দেৱঃ আপুনিয়েই বৰেণ্য। আমাক এনে বুদ্ধি দিয়ক, এনে প্ৰেৰণা প্ৰদান কৰক আমি লক্ষ্যক প্ৰাপ্ত কৰিব পাৰোঁ। এইটো মাত্ৰ এটা প্ৰাৰ্থনা। সাধকে নিজৰ বুদ্ধিৰে যথার্থ নিৰ্ণয় লব নোৱাৰে যে মই কেতিয়া শুদ্ধ কৰি আছোঁ আৰু কেতিয়া ভুল কৰি আছোঁ ? তেওঁৰ এই সমৰ্পিত প্ৰাৰ্থনা ময়েই হওঁ। যত নিশ্চিত কল্যাণ আছে ; কিয়নো তেওঁ মোৰ আশ্ৰয় লৈ আছে। মাহৰ ভিতৰত আহোন মাহ বা মাৰ্গশীৰ্ষ শিৰ্ষ মাহ ময়েই আৰু য'ত সদায়েই আনন্দ স্ফুৰ্তি আছে, এনে ঋতু হৃদয়ৰ এনে অৱস্থা ময়েই হওঁ।

দ্যুতং ছলয়তামস্মি তেজস্তেজস্বিনামহম্ ।

জয়োহস্মি ব্যৱসায়োহস্মি সত্ত্বং সত্ত্বৱতামহম্ ॥৩৬॥

তেজস্বী পুৰুষৰ তেজ ময়েই। জুৰাত ছল কৰোতা ময়েই। তেতিয়া তো ভালেই। জুৰা খুব খেলিব লাগিব আৰু ছলে- বলে জিকিব লাগিব, সেয়েই ভগৱান। নহয়, এনে একো নহয়। এই প্ৰকৃতিয়ে এটা জুৰা। এয়ে ঠগায়। এই প্ৰকৃতিৰ দ্বন্দ্বৰ পৰা ওলাবৰ বাবে কাৰোবাক দেখুৱাই নহয় লুকাই লুকাই গুপ্ত ৰূপেৰে ভজন কৰাই হ'ল ছল। ছলতো নহয় বাৰু কিন্তু নিজৰ ৰক্ষাৰ বাবে আৱশ্যক। জড় ভৰতৰ নিচিনা উন্মত্ত, কনা- কলাৰ দৰে আৰু বোবাৰ দৰে হৃদয়েৰে জানিও, বাহিৰত এনে ভাৱে থাকে যে তেওঁ একো জনাই নাই, শুনিও শুনাই নাই, দেখিও যেন দেখাই নাই। লুকাই লুকাই কৰা ভজনৰ নিয়ম, তেতিয়াহে সাধক প্ৰকৃতি পুৰুষৰ জুৰা খেলত পাৰ হৈ যাব। জিকা

জনৰ বিজয়ী ময়েই আৰু ব্যৱসায়ী বিলাকৰ নিশ্চয় (যাক দুই আধ্যায়ৰ একচল্লিশ শ্লোকত কোৱা হৈছে, এই যোগত নিশ্চয়াত্মক ক্ৰিয়া এটা, বুদ্ধি একেই আৰু দিশাও একেই এনে) ক্ৰিয়াত্মক বুদ্ধি ময়েই। সাত্ত্বিক পুৰুষৰ তেজ আৰু ওজস্বিতা ময়েই।

বৃষ্ণীনাং বাসুদেবোহস্মি পাণ্ডবানাং ধনঞ্জয়ঃ।

মুনীনামপ্যহং ব্যাসঃ কৰীনামুশনা কৰিঃ।। ৩৭।।

বৃষ্টি বংশত ময়েই বাসুদেৱ অৰ্থাৎ সৰ্বত্ৰ বাস কৰা দেৱ। পাণ্ডৱৰ ভিতৰত মই ধনঞ্জয়। পূণ্যই পাণ্ডু আৰু আত্মিক সম্পত্তিয়েই স্থিৰ সম্পত্তি। পূণ্যৰে প্ৰেৰিত হৈ আত্মিক সম্পত্তিক অৰ্জন কৰাজন হ'ল ধনঞ্জয়। সেয়া ময়েই হওঁ। মুনি বিলাকৰ ভিতৰত মই ব্যাস। পৰমতত্বক ব্যক্ত কৰিবৰ যাৰক্ষমতা আছে, সেই মুনি ময়েই। কবিৰ ভিতৰত 'উশনা' অৰ্থাৎ তেওঁত প্ৰবেশ দিব পৰা কাব্যকাৰ ময়েই।

দশো দময়তামস্মি নীতিৰস্মি জিগীষতাম্।

মৌনং চৈবাস্মি গুহ্যানাং জ্ঞানং জ্ঞানবতামহম্।। ৩৮।।

দমন কৰোতাৰ ভিতৰত দমনৰ শক্তি ময়েই। বিজয়ী ইচ্ছা থকা বিলাকৰ মই নীতি হওঁ। গুপ্ত ৰখা যোগ্য ভাৱত মই মৌন হওঁ অৰু জ্ঞানৱানৰ ভিতৰত সাক্ষ্যাতৰ সৈতে মিলন কৰাই দিব পৰা, পূৰ্ণ জ্ঞান ময়েই।

যচ্চাপি সৰ্বভূতানাং বীজং তদহমৰ্জুন।

ন তদস্তি বিনা যৎস্যান্ময়া ভূতং চৰাচৰম্।। ৩৯।।

অৰ্জুন! সকলো ভূতৰ উৎপত্তিৰ কাৰণো ময়েই। কিয়নো চৰ আৰু অচৰ এনে কোনো ভূত নাই যি মোৰ পৰা বাদ হৈ আছে। মই সৰ্বত্ৰ ব্যাপ্ত হৈ আঁছো। সকলো মোৰে লগত মিলি আছে।

নান্তোহস্তি মম দিব্যানাং বিভূতীনাং পৰন্তপ।

এষ তূদ্দেশতঃ প্ৰোক্তো বিভূতেৰ্বিস্তৰো ময়া।। ৪০।।

হে পৰন্তপ অৰ্জুন! মোৰ দিব্য বিভূতি সমূহৰ অন্তই নাই। নিজৰ

বিভূতি সমূহৰ বৰ্ণনাতো মই সংক্ষেপতে কলো, বস্তুতঃ সেইবোৰ অনন্ত আছে। এই আধ্যাত কেইটামানহে বিভূতিৰ স্পষ্টিকৰণ কৰা হৈছে, কিয়নো ইয়াৰ পিছৰ আধ্যাত অৰ্জুনে এই সকলোবোৰ চাবলৈ ইচ্ছা কৰিছে; কিয়নো প্ৰত্যক্ষ দৰ্শণৰ দ্বাৰাহে বিভূতি সমূহক বুজিব পৰা যাব। বিচাৰ ধাৰা বুজিবৰ বাবে ইয়াত অলপ অৰ্থ দিয়া হ'ল।

যদ্যদ্বিভূতিমৎসত্ত্বং শ্ৰীমদূৰ্জিতমেৰ বা।

তত্তদেৰাৰগচ্ছ ত্বং মম তোজোহশসম্ভবম্।।৪১।।

যিমান বিলাক ঐশ্বৰ্য্যযুক্ত, কান্তিযুক্ত অৰু শক্তিযুক্ত বস্তু আছে, সেই সকলোকে মোৰ তেজৰ এটা মাত্ৰ অংশৰে উৎপন্ন হোৱা বুলি জানা।

অথবা বহ্ননৈতেন কিং জ্ঞাতেন তৰাৰ্জুন।

বিস্তৃত্যহমিদং কৃৎস্নমেকাংশেন স্থিতো জগৎ।।৪২।।

অথবা অৰ্জুন! এইবোৰ অধিক জানিবৰ তোমাৰ কি প্ৰয়োজন আছে? মই এই সম্পূৰ্ণ জগতক এক অংশ মাত্ৰৰে ধাৰণ কৰি স্থিত আছো।

উপৰোক্ত বিভূতি সমূহৰ বৰ্ণনৰ তাৎপৰ্য্য এইটো নহয় যে আপুনি বা অৰ্জুনে এই সকলোবোৰ বস্তুক পূজা কৰিবলৈ ধৰক, বৰঞ্চ শ্ৰীকৃষ্ণই এইটো বুজাব বিচাৰিছে যে এইবোৰক সকলো ফালৰ পৰা শ্ৰদ্ধা লৈ মাত্ৰ সেই অবিনাশী পৰমাত্মাত লগাওক। ইমানতে তেওঁৰ কন্ঠব্য পূৰা হৈ যাব।

নিষ্কৰ্ষঃ—

এই আধ্যাত শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছে যে, অৰ্জুন! মই তোমাক পূনৰ উপদেশ কৰিম, কিয়নো তুমি মোৰ অতি প্ৰিয়। আগতো কৈছিলে, আকৌ কবলৈ গৈছে; কিয়নো শেষ পৰ্য্যন্ত সদগুৰুৰ পৰা শূনাৰ আৱশ্যকতা আছে। মোৰ উৎপত্তিক দেৱতা সকলেও নাজানে আৰু মহৰ্ষি গণেও নাজানে, কিয়নো মই তেওঁলোকৰো আদি কাৰণ হওঁ; কিয়নো অব্যক্ত স্থিতিৰ পাছত সাৰ্বভৌম অৱস্থাক তেৰে জানে, যি পূৰ্ণ হৈ গৈছে। যি জনে মোক অজন্মা, অনাদি আৰু সম্পূৰ্ণ লোকৰ মহান ঈশ্বৰক সাক্ষাৎকাৰেৰে সৈতে জানে, তেৰেই জ্ঞানী।

বুদ্ধি, জ্ঞান, অসংমুচতা, ব্যৱহাৰ, ইন্দ্ৰিয়ৰ দমন, মনৰ শমন, সন্তোষ,

তপ, দান, আৰু কীৰ্তিৰ ভাৱ অৰ্থাৎ দৈৱী সম্পদৰ উক্ত লক্ষণ মোৰেই দেন হয়। সাত মহৰ্ষিগণ অৰ্থাৎ যোগৰ সাত ভূমিকা, তাৰো আগতে হব পৰা তদনুৰূপ অন্তঃকৰণ চতুষ্টয় আৰু এওঁলোকৰ অনুকূল মন যি স্বয়ংভূ, স্বয়ং ৰচয়িতা হয়- এই সকলো বোৰে মোকে ভাৱে, মন লগায়, আৰু শ্ৰদ্ধাৱান হয়, যাৰ সংসাৰত সম্পূৰ্ণ প্ৰজা আছে, এই সকলোবোৰ মোৰ পৰাই উৎপন্ন হোৱা অৰ্থাৎ সাধনাময়ী প্ৰবৃত্তি বোৰ মোৰ প্ৰজা হয়। এওঁলোকৰ উৎপত্তি নিজেই নহয়। গুৰুৰ পৰা হয়। যি জনে উপৰোক্ত মোৰ বিভূতি সমূহক সাক্ষাৎভাৱে জানিছে, তেওঁ নিসন্দেহে মোৰ লগত একীভাৱ হৈ প্ৰবেশ কৰাৰ যোগ্য হয়।

অৰ্জুন! মইয়ে সকলো উৎপত্তিৰ কাৰণ হওঁ, এনে ভাৱে যি শ্ৰদ্ধা সহকাৰে জানি লয়, তেওঁ অনন্য ভাৱেৰে মোৰ চিন্তন কৰে; নিৰন্তৰ মোতেই মন, বুদ্ধি আৰু প্ৰাণ লগায়, নিজৰ ভিতৰত মোৰ গুণ-গান চিন্তন কৰে আৰু মোৰ লগতেই ৰমণ কৰি থাকে। সেই নিৰন্তৰ মোৰ লগতেই সংযুক্ত হোৱা পুৰুষক মই যোগত প্ৰবেশ কৰাৰ বুদ্ধি প্ৰদান কৰো। এইটো মোৰে দেন হয়। কিদৰে বুদ্ধি যোগ দিয়ে? অৰ্জুন! তাৰ অত্মাত জাগৃত হৈ ঠিয় হৈ তাৰ হৃদয়ৰ অজ্ঞানতাৰ পৰা উৎপন্ন হোৱা অন্ধকাৰক জ্ঞানৰূপী দীপকেৰে নষ্ট কৰি দিওঁ।

অৰ্জুনে প্ৰশ্ন কৰিলে যে ভগৱান! আপুনি পৰম পবিত্ৰ, সনাতন, দিব্য, অনাদি আৰু সৰ্বত্ৰ ব্যাপ্ত হৈ আছে- এনেদৰে মহৰ্ষি সকলেও কৈছে তথা বৰ্তমানত দেৱৰ্ষি নাৰদ, দেবল, ব্যাস আৰু আপুনিও তাকে কৈছে। এইটো সত্য যে আপোনাক দেৱতা তথা দানৱেও নাজানে। স্বয়ং আপুনি যাক জানিবলৈ দিয়ে, তেওঁহে জানে। আপুনি হৈ নিজৰ বিভূতি সমূহ কোৱাৰ সমৰ্থৱান হয়। সেয়ে হে জনাৰ্দন! আপুনি নিজৰ বিভূতি সমূহক বিস্তাৰেৰে বৰ্ণনা কৰক। শেষ পৰ্য্যন্ত ইষ্টৰ পৰা শুনি থাকিবৰ উৎকণ্ঠা জাগি থাকে। আগলৈ ইষ্টৰ অন্তৰালত আছে কি? তাক সাধকে কেনেকৈ জানিব?

এই বিষয়ত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই এটাএটা কৰি একাশীটা বিভূতিৰ লক্ষণ সংক্ষেপতে কলে- যি বিলাকৰ ভিতৰত কিছুমান যোগ- সাধনত কৰাত

মিলিব পৰা অন্তৰংগ বিভূতিৰ চিত্ৰণ কৰিলে আৰু বাকী কিছুমান সমাজত ঋদ্ধি- সিদ্ধিৰ সৈতে পাব পৰা বিভূতিৰ ওপৰত প্ৰকাশ কৰি শেষত তেখেতে জোৰ দি কৈছে- অৰ্জুন! বহুতো জনাৰ তোমাৰ প্ৰয়োজননো কি আছে? এইসংসাৰত যিমানবোৰ তেজ আৰু ঐশ্বৰ্য্যযুক্ত বস্তু আছে, সেই সকলো মোৰ তেজৰ অংশ মাত্ৰত স্থিত আছে। মূলতঃ মোৰ বিভূতিবোৰ অপাৰ। এনেদৰে কৈয়ে যোগেশ্বৰে এই আধ্যায়ৰ পৰ্দা পেলালে।

এই আধ্যায়ত শ্ৰীকৃষ্ণই নিজৰ বিভূতি সমূহৰ মাত্ৰ বৌদ্ধিক ভাৱে জনালে যাৰ ফলত অৰ্জুনৰ শ্ৰদ্ধা চাৰিওফালৰ পৰা একগোট হৈ ইষ্টত লাগক; কিন্তু বন্ধু সকল। সকলো শুনি লোৱাৰ আৰু আঁতিগুৰি মাৰি বুজি পোৱাৰ পিছতোসেই পথত চলি জানিবলৈ বাকীয়ে থাকে। এইটো হ'ল ত্ৰিনয়াত্মক পথ। সম্পূৰ্ণ আধ্যায়তে যোগেশ্বৰৰ বিভূতিৰ হে বৰ্ণন আছে। সেয়ে-

এইদৰে শ্ৰীমৎভগৱৎ গীতা ৰূপী উপনিষদ অৰু ব্ৰহ্মবিদ্যা তথা যোগশাস্ত্ৰ বিষয়ক শ্ৰীকৃষ্ণ আৰু অৰ্জুনৰ সম্বাদত “বিভূতি বৰ্ণন” নামৰ দহ আধ্যায় সম্পূৰ্ণ হল।

ইতি শ্ৰীমৎপৰমহংস পৰমানন্দস্য শিষ্য স্বামী অড্‌গড়ানন্দ কৃতে শ্ৰীমৎভগৱৎ গীতায় “যথার্থ গীতা” ভাষ্য “বিভূতি বৰ্ণন” নাম দশমোহধ্যায়ঃ

॥১০॥

॥ হৰি ওঁ তৎসৎ ॥

‘ওঁ’

শ্ৰীপৰমাত্মনে নমঃ

অথ একাদশোহধ্যায়ঃ

যোৱা আধ্যাত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই নিজৰ প্ৰধান-প্ৰধান বিভূতি সমূহৰ সংক্ষিপ্ত বিৱৰণ প্ৰস্তুত কৰিছিল; কিন্তু অৰ্জুনে এনে ভাবিছিল যে তেওঁ যেন সম্পূৰ্ণ শুনিছে। তেওঁ কলে যে আপোনাৰ বাণী শুনি মোৰ সম্পূৰ্ণ মোহ নষ্ট হৈ গ’ল; কিন্তু আপুনি যি কলে, তাক মই প্ৰত্যক্ষ ভাৱে চাব বিচাৰো। শুনা আৰু দেখাত পূৰ্ব আৰু পশ্চিমৰ প্ৰভেদ আছে। প্ৰত্যক্ষ ভাবে চলি গৈ চালে বস্তু-স্থিতি বেলেগে হয়। অৰ্জুনে সেই ৰূপ দেখি কাঁপিবলৈ ধৰিলে, ক্ষমা ভিক্ষা খুজিলে, কি জ্ঞানী ভয়াতুৰ হয়? তাৰ কোনো প্ৰশ্ন থাকি যায়? নহয়, বৌদ্ধিক সুৰেৰে জনাটো প্ৰায় অস্পষ্ট থাকি যায়। অৱশ্য যথার্থ জানিবৰ বাবে প্ৰেৰণা নিশ্চয় দিয়ে। সেই কাৰণে অৰ্জুনে নিবেদন কৰিলে -

অৰ্জুন উবাচ

মদনুগ্ৰহায় পৰমং গুহ্যমধ্যাত্মসংগ্ৰহিতম্।

যত্নয়োক্তং বচন্তেন মোহোহয়ং বিগতো মম।।১।।

ভগৱান ! মোৰ ওপৰত অনুগ্ৰহ কৰি, যি আপোনাৰ দ্বাৰা গোপনীয় অধ্যাত্মত প্ৰৱেশ কৰাব পৰা উপদেশ দিলে, মোৰ অজ্ঞানতা নষ্ট হৈ গ’ল।

ভবাপ্যয়ৌ হি ভূতানাং শ্ৰুতো বিস্তৰশো ময়া।

ত্বত্তঃ কমলপত্ৰাঙ্ক মাহাত্ম্যমপি চাব্যয়ম্।।২।।

কিয়নো হে কমলনেত্ৰ ! মই ভূত সকলৰ উৎপত্তি আৰু প্ৰলয় আপোনাৰ পৰা সবিস্তাৰ শুনিলো তথা আপোনাৰ অবিনাশী প্ৰভাৱো শুনিলো।

এবমেতদ্যথাখ ত্বমাত্মানং পৰমেশ্বৰ।

द्रष्टुमिच्छामि ते रूपमैश्वरं पुरुषोत्तम ॥ ३ ॥

হে পৰমেশ্বৰ ! আপুনি নিজকে যেনেকুৱা কৈছে, ঠিক তেনেকুৱাই, তাত কোনো সন্দেহ নাই, কিন্তু মই তাক মাত্ৰ শুনিছো। সেয়ে হে পুৰুষোত্তম ! সেই ঐশ্বৰ্য্যযুক্ত স্বৰূপক মই প্ৰত্যক্ষ ভাৱে চাব বিচাৰিছোঁ।

মন্যসে যদি তচ্ছক্যং ময়া দ্ৰষ্টুমিতি প্ৰভো।

যোগেশ্বৰ ততো মে ত্বং দৰ্শয়াত্মানমব্যয়ম্ ॥৪ ॥

হে প্ৰভু ! মোৰ দ্বাৰা আপোনাৰ সেই ৰূপ চাবৰ সম্ভৱ হয়, যদি আপুনি এনে বুলি ভাবে, তেতিয়া হলে হে যোগেশ্বৰ ! আপুনি নিজৰ অবিনাশী স্বৰূপকমোক দৰ্শন দিয়ক, ইয়াত যোগেশ্বৰে কোনো প্ৰতিবাদ নকৰিলে; কিয়নো আগতেওঁ ঠায়ে ঠায়ে তেওঁ কৈ আহিছে যে তুমি অনন্য ভক্ত আৰু প্ৰিয় সখা। সেয়ে অতি প্ৰসন্নতাৰে তেওঁৰ নিজৰ স্বৰূপৰ দৰ্শন দিলে—

শ্ৰীভগবানুবাচ

পশ্য মে পাৰ্থ ৰূপাণি শতশোহথ সহস্ৰশঃ।

নানাবিধানি দিব্যানি নানার্বণাকৃতীনি চ ॥৫ ॥

হে পাৰ্থ ! মোৰ শ শ হাজাৰ হাজাৰ নানা প্ৰকাৰৰ আৰু নানা বৰ্ণৰ আৰু আকৃতিৰ দিব্য স্বৰূপক চোৱা।

পশ্যাदित्यान्‌रसून्‌रुद्रान्‌श्विनौ मरुतस्तथा।

বহুনাদ্‌ষ্টপূৰ্ণাণি পশ্যাশ্চৰ্য্যাণি ভাৰত ॥৬ ॥

হে ভাৰত ! অদিতিৰ বাৰ পুত্ৰ, আঠ বসু, একাদশ ৰুদ্ৰ, দুই অশ্বিনী কুমাৰ আৰু ওনপঞ্চাশ মৰুৎগণক চোৱা তথা অন্য বহুতো আগত তুমি কেতিয়াও নেদেখা, আশ্চৰ্য্যময় ৰূপক চোৱা।

ইহৈকস্থং জগৎকৃৎস্নং পশ্যাद्य সচৰাচৰম্।

মম দেহে গুড়াকেশ যচ্চান্যদ্‌দ্ৰষ্টুমিচ্ছসি ॥ ৭ ॥

অৰ্জুন ! এতিয়া মোৰ এই শৰীৰত একে স্থানতে স্থিত হোৱা চৰাচৰৰ সৈতে সম্পূৰ্ণ জগতক চোৱা তথা আৰু যি চাবলৈ বিচৰা সেই বোৰ চোৱা।

এইদৰে তিনিও শ্লোকলৈকে ভগৱানে একেৰাহে দেখুৱাই গৈ থাকিল,
কিন্তু অৰ্জুনে একো দেখা নাপালে,(তেওঁ চকু মোহাৰিয়ে থাকিল)
সেয়ে ৰৈ গৈ ভগৱানে কবলৈ ধৰিলে—

ন তু মাং শক্যসে দ্ৰষ্টুমনেনৈৰ স্বচক্ষুযা ।

দিব্যং দদামি তে চক্ষুঃ পশ্য মে যোগমৈশ্বৰম্ ॥৮॥

অৰ্জুন ! তুমি নিজৰ চকুৰ দ্বাৰা অৰ্থাৎ বৌদ্ধিক দৃষ্টি দ্বাৰা দেখাত
সমৰ্থ নহবা; সেই কাৰণে মই তোমাক দিব্য অৰ্থাৎ অলৌকিক দৃষ্টি প্ৰদান
কৰিম, যাৰ দ্বাৰা তুমি মোৰ প্ৰভাৱ আৰু যোগশক্তি চাব পাৰিবা।

এইফালে যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণৰ কৃপা- প্ৰসাদে অৰ্জুনে সেই দৃষ্টি প্ৰাপ্ত
কৰিলে, তেওঁ সকলো দেখিলে আৰু আনফালে যোগেশ্বৰ ব্যাসৰ কৃপা-
প্ৰসাদেৰে, সেই দৃষ্টিয়ে সঞ্জয়ক প্ৰাপ্ত হ'ল। যি বোৰ অৰ্জুনে দেখিলে আখৰে
আখৰে সঞ্জয়েও তাকে দেখিলে আৰু নিজক তাৰ প্ৰভাৱত কল্যাণৰ ভাগি
বনালে। স্পষ্ট হৈ পৰিল যে শ্ৰীকৃষ্ণ এজন যোগীৰ সমকক্ষ আছিল।

সঞ্জয় উবাচ

এৰমুক্ত্বা ততো ৰাজনমহাযোগেশ্বৰো হৰিঃ ।

দৰ্শয়ামাস পাৰ্থীয় পৰমং ৰূপমৈশ্বৰম্ ॥৯॥

সঞ্জয়ে কলে- হে ৰাজন ! যোগেশ্বৰ হৰিয়ে এইদৰে কোৱাৰ পিছত
নিজৰ ঐশ্বৰ্য্যযুক্ত দিব্য স্বৰূপক দেখুৱালে। যি স্বয়ং যোগী হয়, আৰু আনকো
যোগ প্ৰদান কৰিব পাৰে অৰ্থাৎ প্ৰদান কৰাৰ যাৰ ক্ষমতা আছে, যি যোগৰ
স্বামী, তেওঁক যোগেশ্বৰ বুলি কোৱা হয়। এইদৰে সৰ্বস্বৰ হৰণ কৰোঁতা জন
হৰি। যদি অকল দুখকেই হৰণ কৰে আৰু সুখ এৰি দিয়ে, তেতিয়া হলে দুখ
আহিবই। সেয়ে সকলোপাপৰ নাশৰ লগতে সৰ্বস্বৰ হৰণ কৰি নিজৰ স্বৰূপ
দিয়াত যি সক্ষম, তেৰে হৰি। তেখেতে পাৰ্থক নিজৰ দিব্য স্বৰূপ দেখুৱালে।
সন্মুখত ঠিয় তো হৈয়ে আছিল।

অনেক ৰুক্ৰনয়নমনেকাঙ্কিতদৰ্শনমঃ

অনেক দিব্যাভৰণং দিব্যানেকোদ্যত্যুধম্ ॥১০॥

বহুতো মুখ আৰু চকুযুক্ত, অনেক অদ্ভূত দৃশ্য থকা, বহুতো দিব্য
আভূষনেৰে যুক্ত আৰু বহুতো দিব্য শস্ত্ৰ হাতত লৈ আছে আৰু –

দিব্যমালাস্বৰধৰং দিব্যগন্ধানুলেপনম্।

সৰ্বাশ্চৰ্যময়ং দেবমনন্তং বিশ্বতোমুখম্।।১১।।

দিব্য মালা আৰু বস্ত্ৰ ধাৰণ কৰা, দিব্য গন্ধ গাত অনুলেপন কৰা, সকলো
প্ৰকাৰৰ আশ্চৰ্য্যৰেযুক্ত অসীম বিৰাট স্বৰূপ পৰমদেৱক দৃষ্টি প্ৰাপ্ত
কৰাৰ পিছত অৰ্জুনে দেখিবলৈ পালে।

দিবি সূৰ্য্যসহশ্ৰস্য ভবেদ্যুগপদুখিতা।

যদি ভাঃ সদৃশী সা স্যাভ্ৰাসস্তস্য মহাত্মনঃ।।১২।।

(অঞ্জলি ৰূপী ধৃতৰাষ্ট্ৰ, সংযমৰূপী সঞ্জয়- যেনেদৰে আগতে কোৱা
হৈছে) সঞ্জয়ে কলে- হে ৰাজন আকাশত একেলগে হাজাৰ সূৰ্য্য উদয় হলে
যিমান প্ৰকাশ হ'ব তাতকৈও অধিক প্ৰকাশ সেই বিশ্বৰূপ মহাত্মাত আছিল।
ইয়াত শ্ৰীকৃষ্ণ মহাত্মাহে আছিল, যোগেশ্বৰ আছিল।

তত্রৈকম্ভুং জগৎকৃৎস্মং প্ৰবিভক্তমনেকথা।

অপশ্যাদ্বেদেবস্য শৰীৰে পাণ্ডৱস্তদা।।১৩।।

পাণ্ডুপুত্ৰ অৰ্জুনে (পূণ্যই পাণ্ডু। পূণ্যই অনুৰাগক জন্ম দিয়ে) সেই
সময়ত বহুতো প্ৰকাৰেৰে বিভক্ত সম্পূৰ্ণ জগতক সেই পৰমদেৱৰ শৰীৰত
একে ঠাইতে স্থিত হোৱা দেখিলে।

ততঃ স বিশ্বয়াবিষ্টো হৃষ্টৰোমা ধনঞ্জয়ঃ

প্ৰণম্য শিৰসা দেৱং কৃতাঞ্জলিভাষত।।১৪।।

ইয়াৰ পিছত আশ্চৰ্য্যৰে যুক্ত হৰ্ষিত আৰু ৰোমাঞ্চিত হোৱা অৰ্জুনে
পৰমাত্ম দেৱক মূৰ দোৱাই প্ৰণাম কৰিলে (আগতেওঁ প্ৰণাম কৰিছিলে, কিন্তু
এতিয়া প্ৰভাৱ দেখি শ্ৰদ্ধাৰে সৈতে সাদৰ প্ৰণাম কৰিলে) আৰু হাতজোৰ
কৰি ক'লে। ইয়াত অৰ্জুনে অন্তঃকৰণেৰে নমস্কাৰ কৰিছিল আৰু কৈছিল-

অৰ্জুন উবাচ

পশ্যামি দেৱাংস্তব দেব দেহে

সৰ্বাংস্তথা ভূতবিশেষসঙ্ঘান্।

ব্ৰহ্মাণমীশং কমলাসনস্থ-

মৃষীংশ্চ সৰ্বানুৰগাংশ্চ দিব্যান্ ॥১৫॥

হে দেৱ ! আপোনাৰ শৰীৰত মই সম্পূৰ্ণ দেৱতা সকলক, আৰু অনেক ভূত সমুদায়ক, কমলৰ আসন কৰি বহা ব্ৰহ্মাক, মহাদেৱক, সম্পূৰ্ণ ঋষি সকলক তথা দিব্য সৰ্প বিলাকক দেখিবলৈ পাইছোঁ। এইটো প্ৰত্যক্ষ দৰ্শণ আছিল, কল্পনা নাছিল; কিন্তু এনেকুৱা তেতিয়াহে সম্ভৱ হয় যেতিয়া যোগেশ্বৰে, পূৰ্ণত্ব প্ৰাপ্ত মহাপুৰুষে হৃদয় দ্বাৰা দৃষ্টি প্ৰদান কৰে। ই সাধনাৰ দ্বাৰা জানিব পাৰি।

অনেকবাহুদৰৰক্ৰনেত্ৰং

পশ্যামি ত্বাং সৰ্বতোহনন্তৰূপম্।

নান্তং ন মধ্যং ন পুনস্তবাদিৎ

পশ্যামি বিশ্বেশ্বৰ বিশ্বৰূপ ॥১৬॥

হে বিশ্বৰ স্বামী ! মই আপোনাক বহুতো হাত-পেট-মুখ আৰু নেত্ৰেৰে সংযুক্ত তথা সকলো ফালৰ পৰা অনন্ত ৰূপৰ দেখিবলৈ পাইছোঁ। হে বিশ্ব ৰূপ ! মই আপোনাৰ ন আদি ন মধ্য ন অন্তকে দেখিছোঁ, অৰ্থাৎ আপোনাৰ আদি মধ্য আৰু অন্তৰ নিৰ্ণয় কৰিব পৰা নাই।

কিৰীটিনং গদিনং চক্ৰিণং চ

তেজোৰাশিৎ সৰ্বতো দীপ্তিমন্তম্।

পশ্যামি ত্বাং দুৰ্নিৰীক্ষ্যৎ সমন্তা

দীপ্তানলার্কদ্যুতিমপ্ৰমেয়ম্ ॥১৭॥

মই আপোনাক মুকুটযুক্ত, গদাযুক্ত, চক্ৰযুক্ত সকলো ফালৰ পৰা তেজপুঞ্জ স্বৰূপ, জ্বলি থকা অগ্নি আৰু সূৰ্য্যৰ দৰে চাবলৈ অতি দুষ্কৰ অৰ্থাৎ বহুত কষ্টেৰেহে চাব পৰা আৰু চাৰিওফালৰ পৰা বুদ্ধিৰেও গ্ৰহণ কৰিব নোৱাৰা অপ্ৰমেয় দেখিবলৈ পাইছোঁ। এই দৰে সম্পূৰ্ণ ইন্দ্ৰিয়ৰ দ্বাৰা সমৰ্পিত হৈ যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণক এই ৰূপত দেখিবলৈ পাই অৰ্জুনে তেওঁৰ স্তুতি কৰিবলৈ ধৰিলে—

ভ্ৰমক্ষৰং পৰমং বেদিতব্যং

ভ্ৰমস্য বিশ্বস্য পৰং নিধানম্।

তুমব্যয়ঃ শাস্ততৰ্ধমগোপ্তা

সনাতনস্ত্বং পুৰুষো মতো মে।।১৮।।

হে ভগৱান ! আপুনি জানিবৰ যোগ্য পৰম অক্ষৰ অৰ্থাৎ অক্ষয় পৰমাত্মা। আপুনি এই জগতৰ পৰম আশ্ৰয়, আপুনি শাস্তত ধৰ্ম ৰক্ষক তথা আপুনি অবিনাশী সনাতন পুৰুষ- এইটো মোৰ মত। আত্মাৰ স্বৰূপ কি? শাস্তত, সনাতন, অব্যক্ত ৰূপ আৰু অবিনাশী। ইয়াত শ্ৰীকৃষ্ণৰ কি স্বৰূপ? সেয়াই, শাস্তত, সনাতন অব্যয় আৰু অবিনাশী! অৰ্থাৎ প্ৰাপ্তীৰ পিছত মহাপুৰুষো সেই আত্ম-ভাৱতে স্থিত হয়, তেতিয়াইতো ভগৱান আৰু আত্মা একেই লক্ষণযুক্ত হয়।

অনাদিমধ্যান্তমনস্তবীৰ্য-

মনস্তবাল্হং শশিসূৰ্যনেত্ৰম্।

পশ্যামি ত্বাং দীপ্তত্ৰতাশবক্ৰং

স্বতেজসা বিশ্বমিদং তপস্তম্।।১৯।।

হে পৰমাত্মন ! মই আপোনাক আদি,মধ্য আৰু অন্তৰে ৰহিত, অনন্ত সামৰ্থ্যৰে যুক্ত, অনন্ত হাত থকা (আগতে হাজাৰ হাত আছিল,এতিয়া অনন্ত হৈ গ'ল) চন্দ্ৰ আৰু সূৰ্য্য ৰূপী নেত্ৰ থকা (তেতিয়া হলে ভগৱান কনা হ'ল,এটা চন্দ্ৰৰ নিচিনা ক্ষীণ প্ৰকাশ থকা আৰু সিটো চকু সূৰ্য্যৰ দৰে তেজ থকা, এনে একো নহয়। সূৰ্য্যৰ সমান প্ৰকাশ কৰোঁতা আৰু চন্দ্ৰৰ দৰে শীতলতা প্ৰদান কৰিব পৰা গুণ ভগৱানত থাকে। শশী- সূৰ্য্য এটা প্ৰতীক মাত্ৰ। অৰ্থাৎ চন্দ্ৰ আৰু সূৰ্য্যৰ দৃষ্টি থকা) তথা প্ৰজ্বলিত অগ্নিৰূপী মুখ থকা তথা নিজৰ তেজেৰে এই জগতক তাপ দি থকা দেখিবলৈ পাইছোঁ।

দ্যাৱাপৃথিব্যোৰিদমন্তৰং হি

ব্যাপ্তং ত্বয়ৈকেন দিশশ্চ সৰ্বাঃ।

দৃষ্ট্বাভুতং ৰূপমুগ্ৰং তবেদং

লোকত্ৰয়ং প্ৰব্যথিতং মহাত্মন।।২০।।

হে মহাত্মন! অন্তৰিক্ষ আৰু পৃথিবীৰ মাজৰ সম্পূৰ্ণ আকাশ তথা

সম্পূৰ্ণ দিশ একমাত্ৰ আপোনাৰে পৰিপূৰ্ণ হৈ আছে। আপোনাৰ এই
অলৌকিক, ভয়ংকৰ ৰূপ দেখি তিনিও লোক অত্যন্ত বেদনা অনুভৱ কৰিছে।

অমী হি ত্বাং সুৰসঙ্ঘা বিশন্তি
কেচিন্তীতাঃ প্ৰাঞ্জলয়ো গুণন্তি।
স্বস্তীত্ব্যজ্জ্বা মহৰ্ষিসিদ্ধসঙ্ঘাঃ
স্তবন্তিত্বাং স্ততিভিঃ পুঙ্কলাভিঃ ॥২১॥

সেই দেৱতা সমূহে আপোনাতে প্ৰৱেশ কৰি আছে আৰু ভয়ভীত
হৈ হাত যোৰ কৰি আপোনাৰ গুণ-গান গাই আছে। মহৰ্ষি আৰু
সিদ্ধগণেশ্বস্তিবাচন অৰ্থাৎ ‘কল্যান হওক’ এনে দৰে কৈ সম্পূৰ্ণ স্তোত্ৰৰ দ্বাৰা
আপোনাৰ স্ততি কৰি আছে।

ৰুদ্ৰাদিত্যা ৰসৰো যে চ সাধ্যা
ৰিশ্বেৎশ্বিনৌ মৰুতশ্চোত্মপাশ্চ।
গন্ধৰ্বযক্ষাসুৰসিদ্ধসঙ্ঘা
ৰীক্ষন্তে ত্বাং ৰিস্মিতাশ্চৈৰ সৰ্বে ॥২২॥

ৰুদ্ৰ, আদিত্য, বসু, সাধ্য, বিশ্বদেৱ, অশ্বিনী কমাৰ, বায়ুদেৱ আৰু
‘উত্মপাঃ’ ঈশ্বৰীয় উত্ম গ্ৰহন কৰোঁতা তথা গন্ধৰ্ব, যক্ষ, ৰাক্ষস আৰু সিদ্ধগনে
সকলোৱে আচৰিত হৈ আপোনালৈ চাই আছে অৰ্থাৎ দেখিও বুজি পোৱা
নাই, কিয়নো তেওঁলোকৰ ওচৰত বুজিব পৰা সেই দৃষ্টি নাই। শ্ৰীকৃষ্ণই আগতে
কৈছিলে যে আসুৰী স্বভাৱ থকা মানুহে মোক তুচ্ছ বুলি সম্বোধন কৰে, সামান্য
মানুহৰ দৰে ভাৱে, অৱশ্যে মই পৰম ভাৱত পৰমেশ্বৰ ৰূপত স্থিত আছোঁ
যদিও শৰীৰৰ আধাৰ হ’ল মানুহৰ। তাকে ইয়াত বৰ্ণনা কৰা হৈছে যে
তেওঁলোকে আশ্চৰ্য্য হৈ চাই আছে; যথার্থত তেওঁলোকে বুজিও পোৱা নাই
আৰু দেখাও পোৱা নাই।

ৰূপং মহন্তে বহুব্ৰহ্মনেত্ৰং
মহাবাহু বহুবাহুৰূপাদম্।
বহুদৰং বহুদংষ্ট্ৰীকৰালং
দৃষ্টী লোকাঃ প্ৰব্যথিতাস্তথাহম্ ॥২৩॥

হে মহাবাহু! (শ্রীকৃষ্ণ মহাবাহু আৰু অৰ্জুন। প্রকৃতিৰ পাৰত মহান সত্তাত যাৰ কাৰ্য্যক্ষেত্ৰ আছে, তেৰেই মহাবাহু। শ্রীকৃষ্ণ মহানতাৰ ক্ষেত্ৰত পূৰ্ণ আছে, অধিকতম সীমাত আছে, অৰ্জুন সেই দৰে প্ৰবেশ দ্বাৰত আছে, মাৰ্গত আছে, লক্ষ্যস্থান হ'ল পথৰ অন্তিম বিন্দু) মহাবাহু যোগেশ্বৰঙ্গ আপোনাৰ বহুতো মুখ আৰু চকু, বহুতো হাত-বাহু, আৰু ভৰি, বহুতো পেট, অনেক বিকৰাল শিং থকা মহান ৰূপক দেখি সকলো লোক ব্যাকুল হৈ উঠিছে আৰু মইও ব্যাকুল হৈ আছোঁ। এতিয়া অৰ্জুনক কিছু ভয় হৈছে যে শ্রীকৃষ্ণ ইমান মহান!

নভঃস্পৃশং দীপ্তমনেকৰণং

ব্যাত্তাননং দীপ্তৱিশালনেত্ৰম্।

দৃষ্টা হি ত্বাং প্ৰব্যথিতান্তৰাত্মা

ধৃতিং ন বিন্দামি শমং চ বিবেগে ॥২৪॥

বিশ্বৰ সকলোতে অনু ৰূপেৰে ব্যাপ্ত হৈ থকা হে বিষ্ণু! আকাশক স্পৰ্শ কৰা প্ৰকাশমান, বহুৰূপযুক্ত মেলি দিয়া মুখ আৰু প্ৰকাশিত হৈ থকা বিশাল চকুযুৰি দেখি বিশেষ ৰূপে অন্তকৰণত ভয়ভীত হোৱা মই ধৈৰ্য্য আৰু মনৰ সমাধানৰূপী শান্তি পাব পৰা নাই।

দংষ্ট্ৰাকৰালানি চ তে মুখানি

দৃষ্টৈব কালানলসন্নিভানি।

দিশো ন জানে ন লভে চ শৰ্ম

প্ৰসীদ দেবেশ জগন্নিৱাস ॥২৫॥

আপোনাৰ বিকৰাল দীঘল-দীঘল দাঁত আৰু কালাগ্নিৰ(কালৰ কাৰণেও অগ্নি আছে, পৰমাত্মা) সমান জ্বলিথকা মুখ দেখি মই দিশৰ নিৰ্ণয় কৰিব পৰা নাই। ছাৰিও ফালে প্ৰকাশ দেখি দিশৰ ভ্ৰম হৈ গৈছে। আপোনাৰ এই ৰূপ দেখি মোৰ সুখ হোৱা নাই। হে দেবেশ! হে জগন্নিৱাস, আপুনি প্ৰসন্ন হওক।

অমী চ ত্বাং ধৃতৰাষ্ট্ৰস্য পুত্ৰাঃ

সৰ্বে সত্ৰৈবানিপালসঙ্গঃ ।
ভীষ্মো দ্রোণঃ সূতপুত্রস্তথা সৌ
সহাস্মদীয়েৰপি যোধমুখ্যৈঃ ॥২৬॥

ধৃতৰাষ্ট্ৰৰ সকলো পুত্ৰবিলাক বজা বিলাকৰ সৈতে আপোনাৰ মুখত
প্ৰবেশ কৰি আছে আৰু ভীষ্ম পিতামহ, দ্ৰোণাৰ্চাৰ্য্য তথা সেই কৰ্ণ (যাক লৈ
অৰ্জুন ভয়ভীত হৈ আছে, সেই কৰ্ণ) আৰু আমাৰ ফালৰো প্ৰধান যোদ্ধা সকলৰ
সৈতে সকলোবোৰ—

ৰাক্ষাণি তে ত্বৰমানা বিশন্তি
দংষ্ট্ৰাকৰালানি ভয়ানকানি ।
কেচিদ্ধিলাগ্না দশনান্তৰেষু
সন্দৃশ্যন্তে চূৰ্ণিতেকৃতমাস্তৈ ॥২৭॥

অতি বেগেৰে আপোনাৰ বিকৰাল দীঘল দাঁত থকা মুখত প্ৰবেশ
কৰি আছে তথা তাৰ ভিতৰত বহুতক গুৰি হোৱা মুৰেৰে সৈতে আপোনাৰ
দাঁতত লাগি থকা দেখিবলৈ পাইছো। তেওঁবিলাক কিমান বেগেৰে সোমাই
আছে? এতিয়া তেওঁলোকৰ বেগ চাওক —

যথা নদীনাং রহবোহনুববেগাঃ
সমুদ্রমেৰাভিমুখা দ্রবন্তি ।
তথা তবামী নৰলোকরীৰা
বিশন্তি বজ্ৰাণ্যভিৰিজ্জলন্তি ॥২৮॥

যেনে দৰে নদী সমূহ বহুত জললৈ (নিজৰ বিকৰাল ৰূপেৰে) সমুদ্ৰৰ
ফালে দৌৰি যায়, সমুদ্ৰত প্ৰবেশ কৰে, ঠিক তেনেদৰে বীৰ মনুষ্যৰ দল,
আপোনাৰ জ্বলি থকা মুখত প্ৰবেশ কৰি আছে। অৰ্থাৎ তেওঁলোক নিজে যদিও
বীৰ, আপুনি সমুদ্ৰৰ দৰে হোৱা বাবে তেওঁলোকৰ বল সামান্য হৈ পৰিছে।
তেওঁলোক কিহৰ কাৰণে আৰু কি প্ৰকাৰে প্ৰবেশ কৰিছে? তাৰ বাবে উদাহৰণ
দিছে—

যথা প্ৰদীপ্তং জ্বলনং পতঙ্গা
বিশন্তি নাশায় সমুদ্ৰবেগা ।

তথৈব নাশায় বিশন্তি লোকা-

স্তবাপি বজ্জ্ৰাণি সমুদ্ভবেগাঃ।।২৯।।

যেনেকৈ পতঙ্গ ! নষ্ট হবৰ বাবে জ্বলি থকা অগ্নিত অতি বেগেৰে আহি প্ৰৱেশ কৰে, তেনে দৰেই সকলো প্ৰাণীও নিজক নাশ কৰিবৰ বাবে আপোনাৰ মুখত অত্যন্ত প্ৰবল বেগেৰে প্ৰৱেশ কৰি আছে।

লেলিহ্যসে গ্ৰসমানঃ সমন্তা-

ল্লোকান্‌সমগ্ৰান্‌ৱদনৈৰ্জ্বলন্তিঃ।

তেজোভিৰাপূৰ্য্ জগৎসমগ্ৰং

ভাসন্তুরোগাঃ প্ৰতপন্তি বিষেগাঃ।।৩০।।

আপুনি তেওঁলোক সমস্ত লোকক জ্বলি থকা মুখৰ দ্বাৰা সকলো ফালৰ পৰা গিলি আছে, চেলেকিছে, তেওঁলোকৰ সোৱাদ লৈছে। হে ব্যাপনশীল পৰমাত্মন ! আপোনাৰ উগ্ৰ প্ৰভাই সম্পূৰ্ণ জগতক নিজৰ তেজেৰে ব্যাপ্ত কৰি তাপ দি আছে। ইয়াৰ অৰ্থ এইয়ে যে প্ৰথমে আসুৰী সম্পদ পৰমতত্বত বিলীন হৈ যায়, তাৰ পিছত দৈৱী সম্পদৰ কোনো প্ৰয়োজন নহয়। সেইকাৰণে সেইটোও সেই স্বৰূপত বিলীন হৈ যায়। অৰ্জুনে দেখিলে যে কৌৰৱ পক্ষৰ, তাৰ পিছত তেওঁৰ নিজৰ পক্ষৰ যোদ্ধা সকল শ্ৰীকৃষ্ণৰ মুখত বিলীণ হৈ গৈ আছিল। তেওঁ সুধিলে--

আখ্যাহি মে কো ভবানুগ্ৰহপো

নমোহস্ততে দেৱৰৰ প্ৰসীদ।

বিজ্ঞাতুমিচ্ছামি ভৱন্তুমাদ্যং

ন হি প্ৰজানামি তৰ প্ৰবৃত্তিম্।। ৩১।।

মোক কওঁকচোন ভয়ংকৰ আকাৰ থকা আপুনি কোন হয়? হে দেৱৰ ভিতৰত শ্ৰেষ্ঠ! আপোনাক নমস্কাৰ কৰিছো, আপুনি প্ৰসন্ন হওঁক আদি স্বৰূপ! মই আপোনাক ভালদৰে জানিব বিচাৰো, (যেনে আপুনি কোন? কি কৰিব বিচাৰিছে?) কিয়নো আপোনাৰ প্ৰবৃত্তি অৰ্থাৎ আপোনাৰ চেষ্টাক মই বুজিব নোৱাৰিছো। এই ক্ষেত্ৰত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কলে-

শ্ৰীভগবানুবাচ

কালোহশ্মি লোকক্ষয়কৃত্ৰব্দোল

লোকান্‌সমাহৰ্তুমিহ প্ৰবৃত্তঃ।

ঋতেহপি ত্বাং ন ভৱিষ্যন্তি সৰ্বে

যেহবস্থিতাঃ প্ৰত্যনীকেষু যোথাঃ।।৩২।।

অৰ্জুন ! মই লোক সকলক নাশ কৰোঁতা বাঢ়ি অহা কাল হওঁ আৰু এই সময়ত এই লোক সকলক নষ্ট কৰিবৰ কাৰণে প্ৰবৃত্ত হৈছো। প্ৰতি পক্ষৰ সৈন্যত থকা যিমানবোৰ যোদ্ধা আছে তেওঁবিলাক তুমি নহলেও নেথাকিব, তেওঁবিলাক বাচি নাথাকিব। সেই কাৰণে প্ৰবৃত্ত হৈছোঁ।

তস্মাত্ত্বমুক্তিষ্ঠ যশো লভস্ব

জিত্বাশক্ৰান্‌ভুঙ্ক্ষ্বৰাজ্যং সমৃদ্ধম্।

ময়ৈৰৈতে নিহতাঃ পূৰ্বমেব

নিমিত্তমাত্ৰং ভব সব্যসাচিন্‌।।৩৩।।

সেই কাৰণে অৰ্জুন ! তুমি যুদ্ধৰ কাৰণে ঠিয় হোৱা, যশ প্ৰাপ্ত কৰা। শত্ৰুক জিকা আৰু সমৃদ্ধি সম্পন্ন ৰাজ্য ভোগ কৰা। এই সকলো বীৰ সমূহক মোৰ দ্বাৰা আগতেই মৰা হৈছে। হে সব্যসাচী ! তুমি নিমিত্ত মাত্ৰ হোৱা।

প্ৰায়সকলো ঠাইতে শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছে যে সেই পৰমাত্মা নিজেও একো নকৰে, আনকো নকৰায় আৰু সংযুক্তও নকৰে, কিন্তু ইয়াত তেওঁ নিজেই সন্মুখত ঠিয় হৈ কৈছে, অৰ্জুন ! কৰ্তা- ধৰ্তা ময়েই। মোৰ দ্বাৰা এওঁলোকক আগতেই মাৰি লোৱা আছে। তুমি মাত্ৰ ঠিয় হোৱা, 'সো কেবল ভগতহু হিতলাগী' যশ লোৱা। এইটো সেইকাৰণে হৈছে- অৰ্জুনে সেই অৱস্থা প্ৰাপ্ত কৰিছিলে যে ভগৱান নিজেই তেওঁৰ সন্মুখত ঠিয় হৈ গৈছিল।

অনুৰাগেই অৰ্জুন। অনুৰাগীৰ বাবে ভগৱান সদায় তেওঁৰ সন্মুখত ঠিয় হৈ থাকে, তেওঁৰ কৰ্তা হৈ, সাৰথী হৈ।

ইয়াত গীতাত তৃতীয় বাৰৰ বাবে সাম্ৰাজ্য নামৰ প্ৰসংগ উঠিছে। আগতে অৰ্জুনে যুদ্ধ কৰিব বিচৰা নাছিল। তেওঁ কৈছিল যে পৃথিৱীৰ ধন-সোনেৰে সমৃদ্ধ অকণ্টক সাম্ৰাজ্য তথা দেৱতা সকলৰ স্বামীত্ব অথবা তিনিও লোকৰ ৰাজ্য পালেও মই সেই উপায় দেখা নাই যি ইন্দ্ৰিয়ক শূকাই দিয়া

মোৰ এনে শোক দূৰ কৰিব পাৰে। যেতিয়ালৈকে উৎকৰ্ণা চলি থাকিব, তেতিয়ালৈকে আমাক একো নালাগে। যোগেশ্বৰে কলে এই যুদ্ধত হাৰিলে দেৱত্ব পাবা আৰু জিকিলে মহামহিমৰ স্থিতি প্ৰাপ্ত কৰিবা আৰু ইয়াত এঘাৰ অধ্যায়ত কৈছে যে এই শত্ৰু বিলাক মোৰ দ্বাৰা মৰা হৈছে, তুমি মাত্ৰ নিমিত্তৰ বাবে ঠিয় হোৱা, যশ প্ৰাপ্ত কৰা আৰু সমৃদ্ধ ৰাজ্য ভোগ কৰা। আকৌ সেই একেই কথা। যি কথাত অৰ্জুন চমকি উঠিছিল, যাৰ বাবে তেওঁ শোক মিটাব পৰা নাছিল, শ্ৰীকৃষ্ণই আকৌ সেই একে ৰাজ্য দিবনে? নহয়, বস্তুতঃ বিকাৰৰ অন্তৰ লগে লগে পৰমাত্মাস্বৰূপৰ স্থিতি বাস্তবিকতে সমৃদ্ধ হ'ব। যি হ'ল স্থিৰ সমাপ্তি। যাৰ কেতিয়াও বিনাশ নাই- ৰাজযোগৰ পৰিণাম এয়াই।

দ্রোণং চ ভীষ্মং চ জয়দ্রথং চ

কৰ্ণং তথান্যানপি যোধৰীবান্।

ময়া হতাংস্ত্বং জহি মা ব্যথিস্তা

যুধ্যস্ব জেতাসি ৰণে সপত্নান্।।৩৪।।

এই বিলাক দ্ৰোন, ভীষ্ম, জয়দ্রথ আৰু কৰ্ণ তথা অন্যান্য বহুত মোৰ দ্বাৰা মৰা বীৰ যোদ্ধাক তুমি মাৰা, ভয় নকৰিবা। সংগ্ৰামত শত্ৰুক তুমি নিশ্চয় জিনিবাই, সেই কাৰণে যুদ্ধ কৰা। ইয়াতো যোগেশ্বৰে কৈছে যে- মোৰ দ্বাৰা মৰা। এই মৰা বিলাককে তুমি মাৰা। স্পষ্টকৈ কৈছে যে মই কৰ্তা, ইফালে পঞ্চম অধ্যায়ৰ ১৩, ১৪ আৰু ১৫ শ্লোকত তেওঁ কৈছিল যে ভগৱান অকৰ্তা হয়। ওঠৰ অধ্যায়ত তেওঁ কৈছে- শুভ অথবা অশুভ প্ৰত্যেক কাৰ্য্য হবৰ বাবে পাঁচটা মাধ্যম থাকে- অধিষ্ঠান, কৰ্তা কৰণ, চেষ্টা আৰু দৈৱ। যি বিলাকে কয় কৈৱল্য স্বৰূপ পৰমাত্মাই কৰে; তেওঁলোক অবিবেকী, তেওঁলোকে যথার্থতে নাজানে অৰ্থাৎ ভগৱান নহয়। এনে বিৰুদ্ধি কিয়?

মূলতঃ প্ৰকৃতি আৰু সেই পৰমাত্ম পুৰুষৰ মাজত এটা সীমা আছে। যেতিয়ালৈকে প্ৰকৃতিৰ পৰমাণুৰ মাত্ৰা অধিক থাকে, তেতিয়ালৈকে মায়াই প্ৰেৰণা দিয়ে আৰু যেতিয়া সাধক তাতকৈ ওপৰত উঠি যায়, ঈশ্বৰ, ইষ্ট অথবা সদগুৰুৰ কাৰ্য্যক্ষেত্ৰত প্ৰবেশ কৰে, তাৰ পিছত সদগুৰু ইষ্ট(ধৰি লওক প্ৰেৰকৰ স্থানত সদগুৰু, আত্মা, পৰমাত্মা, ইষ্ট, ভগৱান এইবোৰ পৰ্য্যায়বাচী

হয়। যিয়েই নকণক ভগৱানেই হয়।) হৃদয়ৰ সাৰথী হৈ যায়, আত্মাৰ পৰা জাগৃত হৈ সেই অনুৰাগী সাধকৰ পথ স্বয়ং সঞ্চালন কৰিবলৈ আৰম্ভ কৰে।

পূজ্য মহাৰাজ জীয়ে কৈছিল—“শুনা যি পৰমাত্মাৰ প্ৰতি আমাৰ আগ্ৰহ আছে, যি ঠাইত আমি ঠিয় হৈ আছো, সেই ঠাইৰ পৰা স্বয়ং আহি যেতিয়ালৈকে আত্মাৰ পৰা জাগৃত হৈ উঠাই লৈ নাযায়, তেতিয়ালৈকে শুদ্ধ ভাৱে সাধনাৰ কাম আৰম্ভই হোৱা নাই। তাৰ পিছত সাধকে যি কৰি অলপ হলেও আগ বাঢ়ে সেইটো তেওঁৰে অৰিহণা। সাধক মাত্ৰ নিমিত্ত হৈ তেওঁৰ সংকেতত আৰু আদেশত চলে। সাধকৰ বিজয় তেওঁৰে অৱদান। এনে অনুৰাগীৰ বাবে ঈশ্বৰে নিজ দৃষ্টিৰে চায়, দেখুৱায় আৰু নিজৰ স্বৰূপলৈকে পোৱাই দিয়ে।” ইয়াকে শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছে যে মোৰ দ্বাৰা মৰা এই শত্ৰুবিলাকক মাৰা। নিশ্চয় তোমাৰ বিজয় হব, মই আছো নহয়।

সঞ্জয় উবাচ

এতচ্ছুত্বা ৰচনং কেশৱস্য

কৃতাঞ্জলিৰেপমানঃ কিৰীটী।

নমস্কৃত্বা ভূয় এবাহ কৃষ্ণং

সগদগদং ভীতভীতঃ প্ৰণম্য।।৩৫।।

সঞ্জয়ে ক’লে- (যিবোৰ অৰ্জুনে দেখিছিল, ঠিক তেনেকৈ সঞ্জয়েও দেখিছিল। অঞ্জ্ঞানেৰে ঢাকি থকা মনৰ ধৃতৰাষ্ট্ৰ, কিন্তু এনে মনো সংযমৰ মাধ্যমেদি ভালদৰে দেখিব শুনিব আৰু বুজিব পাৰি।) কেশৱৰ উপৰোক্ত কথা বিলাক শূনি কিৰীটধাৰী অৰ্জুনে ভয়ভীত হৈ, কাঁপি কাঁপি হাত যোৰ কৰি, নমস্কাৰ কৰি আকৌ শ্ৰীকৃষ্ণক গদগদ কৰ্ত্তেৰে এই দৰে কলে—

অৰ্জুন উবাচ

স্থানে হৃষিকেশ তব প্ৰকীৰ্ত্যা

জগৎপ্ৰহৃষ্যত্যানুৰজ্যতে চ।

ৰক্ষাংসি ভীতানি দিশো দ্ৰবন্তি

সৰ্বে নমস্যন্তি চ সিদ্ধসঙ্ঘাং।।৩৬।।

হে অন্তৰ্য্যামি হৃষীকেশ! এইটো উচিত আছিল যে আপোনাৰ কীৰ্তিৰে সংসাৰ হৰ্ষিত হৈ আছে আৰু অনুৰাগ প্ৰাপ্ত হয়। আপোনাৰ মহিমাৰে ভয়ভীত হৈ ৰাক্ষসবোৰ চাৰিও দিশত পলায়ন কৰিছে আৰু সকলো সিদ্ধগণ আপোনাৰ মহিমা দেখি নমস্কাৰ কৰি আছে।

কস্মাচ্চ তে ন নমেৰণ্ মহাত্মন
গৰীয়সে ব্ৰহ্মনোহপ্যাদিকত্ৰে।

অনন্ত দেবেশ জগন্নিবাস

ত্বমক্ষৰং সদসত্তৎপৰং যৎ।।৩৭।।

হে মহাত্মন! ব্ৰহ্মাৰো আদি কৰ্তা আৰু সকলোতকৈ মহান আপোনাক তেওঁলোকে কিয় নমস্কাৰ নকৰক; কিয়নো হে অনন্ত, হে দেবেশ, জগন্নিবাস! সত অসত আৰু তাতকৈয়ো দূৰত থকা অক্ষৰ অৰ্থাৎ অক্ষয় স্বৰূপ আপুনিয়েই। অৰ্জুনে অক্ষয় স্বৰূপৰ প্ৰত্যক্ষ দৰ্শন কৰিছিল। অকল বৌদ্ধিক স্তৰত কল্পনা কৰিলে বা মানি ললেই মাত্ৰ কোনোৱে এনে স্থিতি প্ৰাপ্ত, নকৰে, যি অক্ষয় হয়। অৰ্জুনেৰ প্ৰত্যক্ষ দৰ্শন তেওঁৰ আন্তৰিক অনুভূতি আছিল। তেওঁ সবিনয়ে কলে—

ত্বাদিদেবঃ পুৰুষঃ পুৰাণ—

স্বমস্য বিশ্বস্য পৰং নিধানম্।

বেত্তাসি বেদ্যং চ পৰং চ ধাম

ত্বয়া ততং বিশ্বমনন্তৰূপ।।৩৮।।

আপুনি আদিদেৱ আৰু সনাতন পুৰুষ হয়। আপুনি এই জগতৰ পৰম আশ্ৰয় আৰু জানোতা হয়, জনাৰ যোগ্য আৰু পৰমধাম হয়। হে অনন্ত স্বৰূপ! আপোনাৰ দ্বাৰা এই সম্পূৰ্ণ জগত ব্যাপ্ত হৈ আছে। আপুনি সৰ্বত্ৰত আছে।

ৰায়ুৰ্যমোহগ্নিৰ্ৰৰুণঃ শশাঙ্ক :

প্ৰজাপতিস্ত্বং প্ৰপিতামহশ্চ।

নমো নমস্তেহস্ত সহস্ৰকৃত্তঃ

পুনশ্চ ভূয়োৎপি নমো নমস্তে ॥৩৯॥

আপুনিয়েই বায়ু, যমৰাজ, অগ্নি, বৰুণ, চন্দ্ৰ তথা প্ৰজাৰ স্বামী ব্ৰহ্মা, আৰু ব্ৰহ্মাৰো পিতা। আপোনাক সহস্ৰবাৰ নমস্কাৰ। আকৌ বাৰে বাৰে নমস্কাৰ। অতিশয় শ্ৰদ্ধা আৰু ভক্তিৰ কাৰণে বাৰে বাৰে নমস্কাৰ কৰিও অৰ্জুন তৃপ্ত হোৱা নাই। তেওঁ কৈছে—

নমঃ পুৰস্তাদতথ পৃষ্ঠতস্তে

নমোহস্ত তে সৰ্বত এব সৰ্ব।

অনন্তবীৰ্যামিতবিক্ৰমস্তুং

সৰ্বং সমাপ্নোষি ততোহসি সৰ্বঃ ॥ ৪০ ॥

হে অনন্ত সামৰ্থ্যৱানঙ্গ আপোনাক আগফালৰ পৰা আৰু পাছ ফালৰ পৰাও নমস্কাৰ কৰিছোঁ। হে সবাৰ্ত্ত্বনঙ্গ আপুনি সকলো ফালৰ পৰাই নমস্য আছে; কিয়নো হে অত্যন্ত পৰাক্ৰমশালীঙ্গ আপুনি সকলো ফালৰ পৰা সংসাৰক ব্যাপ্ত কৰি আছে, সেইকাৰণে আপুনিয়েই সৰ্বৰূপ আৰু সৰ্বত্ৰ। এইদৰে বাৰে-বাৰে নমস্কাৰ কৰি ভয়ভীত অৰ্জুনে নিজৰ ভুলৰ বাবে ক্ষমাভীক্ষা কৰিলে -

সখেতি সত্বা প্ৰমভং যদুক্তং

হে কৃষ্ণ হে যাদব হে সখেতি।

অজানতা মহিমানং তবেদং

ময়া প্ৰমাদাৎপ্ৰণয়েন ৰাপি ॥ ৪১ ॥

আপোনাৰ এই প্ৰভাৱক নাজানি আপোনাক সখা মিত্ৰ ভাৱি মোৰ দ্বাৰা প্ৰেম অথবা প্ৰমাদেৰে হওক হে কৃষ্ণ হে সখা এইদৰে জেদ ভাৱত যিবোৰ কলো। তথা -

যচ্চাৰহাসাৰ্থমসৎকৃতোহসি

ৰিহাৰশয্যাসন ভোজনেষু

একোহথবাপ্যচ্যুত তৎসমক্ষং

তৎক্ষময়ে ত্বামহমপ্ৰমেযম্ ॥ ৪২ ॥

হে অচ্যুত! আপোনাক হৰ্ষৰাবৰ বাবে ভ্ৰমণ, শয়ন, আসন আৰু ভোজন আদিত, মই অকলে বা তেওঁলোকৰ সন্মুখত যি অপমান কৰিছিলো,

সেই সকলো অপৰাধ অচিন্ত্য প্ৰভাৱশীল আপোনাৰ পৰা মই ক্ষমা বিচাৰিছোঁ।
কি দৰে ক্ষমা কৰিব ?

পিতাসি লোকস্য চৰাচৰস্য

ত্বমস্য পূজ্যশ্চ গুৰুগৰীয়ান্।

ন ত্বৎসমোহস্ত্যভ্যধিকঃ কুতোহন্যো

লোকত্রষেহ্য্যপ্রতিমপ্ৰভাৱ।। ৪৩।।

আপুনিয়েই এই চৰাচৰ জগতৰ পিতা, গুৰুতকৈও মহান গুৰু আৰু
অতি পূৰ্জনীয়। যাৰ কোনো প্ৰতিমাই নাই, এনে অপ্ৰতিম প্ৰভাৱ থকাঙ্গ
আপোনাৰ সমান তিনিও লোকত কোনো নাই। তাতকৈ অধিক কি হব ? আপুনি
সখাও নহয়, সখাতো সমকক্ষহে হয়।

তস্মাৎপ্ৰণম্য প্ৰণিধায় কায়ং

প্ৰসাদয়ে ত্বামহমীশমীড্যম্।

পিত্বেৰ পুত্ৰস্য সখ্বেৰ সখ্যুঃ

প্ৰিয়ঃ প্ৰিয়ায়াহঁসি দেৰ সোচুম্।। ৪৪।।

আপুনি চৰাচৰৰ পিতা, সেইকাৰণে মই নিজৰ শৰীৰক ভালদৰে
আপোনাৰ চৰণত ৰাখি, প্ৰণাম কৰি স্তুতি কৰাৰ যোগ্য আপুনি ঈশ্বৰক প্ৰসন্ন
হবৰ বাবে প্ৰাৰ্থনা কৰিছোঁ। হে দেৱঙ্গ পিতাই পুত্ৰক, সখীয়ে সখীক, আৰু পতিয়ে
প্ৰিয় স্ত্ৰীৰ অপৰাধক যেনেকৈ ক্ষমা কৰে, তেনেদৰে আপুনিও মোৰ অপৰাধক
ক্ষমা কৰিবৰ যোগ্য হয়। অপৰাধ কি আছিল ? আমিওতো কেতিয়াবা হে যাদৱ,
হে সখা, হে কৃষ্ণ বুলি কৈছিলো। সমাজৰ মাজত অথবা একান্ত স্থানত কৈছিলো।
কৃষ্ণ কোৱাটো কি অপৰাধ নে ? ক'লাইতো আছিল বগা কেনেকৈ কব ? যাদৱ
কোৱাটোতো অপৰাধ নাছিল, কিয়নো যদুকুলতেই তো জন্ম হৈছিল। সখা
কোৱাটো তো অপৰাধ নাছিল, কিয়নো যেতিয়া কৃষ্ণ কোৱাটোৱে অপৰাধ হয়,
তেতিয়া হলে অৰ্জুনে কৃষ্ণ বুলি হাজাৰবাৰ ক্ষমা ভীক্ষা বিচাৰিছিল, তেতিয়া
জপ কাৰ কৰিব ? নাম কাৰ লব ? মূলতঃ চিন্তনৰ যেনে বিধান স্বয়ং যোগেশ্বৰ
শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছিল, আপুনি তেনেকৈ কৰক। তেখেতে আগতে কৈছিলে - অৰ্জুনঙ্গ
'ওঁ' বচ ইমানেই অক্ষয় ব্ৰহ্মাৰ পৰিচায়ক হয়। ইয়াৰে তুমি জপ কৰা আৰু ধ্যান

মোৰ কৰা; কিয়নো সেই পৰম ভাৰত প্ৰৱেশ পোৱাৰ পিছত সেই মহাপুৰুষৰো এই নামেই হয়, যি সেই অব্যক্তৰে পৰিচায়ক। প্ৰভাৱ দেখি অৰ্জুনে গম পালে যে তেওঁ ক'লাও নহয়, বগাও নহয়, সখাও নহয়, যাদবো নহয়; এওঁতো অক্ষয় ব্ৰহ্মৰ স্থিতি থকা মহাত্মা হে।

সম্পূৰ্ণ গীতাত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই পঞ্চম বাৰৰ বাবে ওঁ ৰ উচ্চাৰণৰ ওপৰত জোৰ দিলে। এতিয়া যদি আপুনি জপ কৰিব বিচাৰে, তেতিয়া হলে কৃষ্ণ-কৃষ্ণ নকৈ 'ওম' ৰ জপ কৰক। প্ৰায় ভাবুক লোকে কিবা এটা ৰাস্তা ওলিয়াই লয়। কোনোবা 'ওম' জপ কৰাৰ অধিকাৰ আৰু অনাধিকাৰৰ আলোচনাতো ভয়কৰে, কোনোবাই মহাত্মাৰ নামত ধৰে, আকৌ কোনোবাই শ্ৰীকৃষ্ণই নহয়, তেওঁতকৈ আগৰ ৰাধা আৰু গোপীৰ নামো তেওঁলোকৰ শীঘ্ৰে প্ৰসন্ন হব বুলি লোভত জপ কৰে; পুৰুষ শ্ৰদ্ধাময়, সেইকাৰণে তেওঁলোকে এনেকৈ জপ কৰাটো এটা ভাবুকতা মাত্ৰ। যদি আপুনি সঁচাকৈ ভাবুক, তেতিয়াহলে তেওঁলোকৰ আদেশকে পালন কৰক। তেওঁলোক অব্যক্ত স্থিতিত থাকিও আজি আপোনাৰ সন্মুখত নাই, কিন্তু তেওঁলোকৰ বানী আপোনাৰ সন্মুখত আছে। তেওঁৰ আজ্ঞা পালন কৰক নহলে আপুনি কওকচোন গীতাত আপোনাৰ কি স্থান আছে? হয়, ইমান অৱশ্যে আছে যে - যি জনে অধ্যয়ন কৰে, শুনে, তেওঁ জ্ঞান তথা যজ্ঞক জানি লয়, শুভলোক পায়। সেয়ে অধ্যয়ন অৱশ্যে কৰক।

প্ৰাণ-অপ্ৰাণৰ চিন্তনত 'কৃষ্ণ' নামৰ ক্ৰম ধৰিব নোৱাৰি। বহুতো লোকে একেবাৰে ভাবুকতাত মাত্ৰ 'ৰাধে-ৰাধে' কব ধৰিছে। আজিকালি বিষয়াৰ পৰা কাম নোহোৱাৰ কাৰণে তেওঁলোক অঙহি-বঙহি, প্ৰেমী বা পত্নীৰ লগত 'চোৰ্চ' লগাই কাম কৰাৰ পৰম্পৰা হৈছে। মানুহে ভাৱে ভগৱানৰ ঘৰতো এনেকুৱা চলেনেকি; সেয়েহে তেওঁলোকে 'কৃষ্ণ' কবলৈ বন্ধ কৰি 'ৰাধে-ৰাধে' কবলৈ আৰম্ভ কৰি দিছে। তেওঁলোকে 'ৰাধে-ৰাধে' শ্যামক ধৰাই দিয়া বুলি কয়। ৰাধা এবাৰ শ্যামৰ পৰা আতঁৰ হৈ গ'ল আৰু নিজেই শ্যামক নাপালে। তেওঁ আপোনাক কেনেকৈ মিলাই দিব? সেয়েই অন্য কাৰো নুশুনি শ্ৰীকৃষ্ণৰ আদেশক আপুনি আখৰে-আখৰে মানি লওক আৰু ওমৰ জপ কৰক। হয়,

এইটো উচিত যে বাধাও আমাৰ আদৰ্শ হয়, তেওঁৰ সমানেই অনুৰাগেৰে লাগিব লাগে। যদি পাব বিচাৰে, তেতিয়াহলে বাধাৰ দৰে প্ৰেমী হব লাগিব।

আগতো অৰ্জুনে ‘কৃষ্ণ’ কৈছিল। ‘কৃষ্ণ’ তেওঁৰ প্ৰচলিত নাম আছিল। এনে বহুত নাম আছিল, যেনে ‘গোপাল’। বহুতো সাধকে গুৰু-গুৰু বা গুৰুৰ প্ৰচলিত নাম ভাবুকতাত জপ কৰিব বিচাৰে, কিন্তু প্ৰাপ্তীৰ পিছত প্ৰত্যেক মহাপুৰুষৰ সেই নামেই হয়, যি অব্যক্তত তেওঁ স্থিত হৈ আছে। বহুতো শিষ্যই প্ৰশ্ন কৰে - “গুৰুদেৱ! যেতিয়া ধ্যান আপোনাৰ কৰা হয়, তেতিয়াহলে পুৰণা নাম ‘ওম’ ইত্যাদি কি জপ কৰিম, ‘গুৰু-গুৰু’ অথবা ‘কৃষ্ণ-কৃষ্ণ’ কিয় নকঁও? কিন্তু ইয়াত যোগেশ্বৰে স্পষ্ট কৰি কৈছে যে অব্যক্ত স্বৰূপত বিলয়ৰ লগতে মহাপুৰুষৰো এই নাম হয়, যত তেওঁ স্থিত আছে। ‘কৃষ্ণ’ সম্বোধন হৈ আছিল জপৰ নাম নাছিল।

যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণৰ ওচৰত অৰ্জুনে নিজৰ অপৰাধৰ বাবে ক্ষমাভীক্ষা কৰিলে, তেওঁক স্বাভাৱিক ৰূপলৈ আহিবলৈ ক’লে, প্ৰাৰ্থনা কৰিলে। শ্ৰীকৃষ্ণই মানি ললে, সহজ হৈ গ’ল অৰ্থাৎ তেওঁক ক্ষমাও দিলে। তেওঁ নিবেদন কৰিলে -

অদৃষ্টপূৰ্বং হৃষিতোহস্মি দৃষ্ট্বা

ভয়েন চ প্ৰৰ্যথিতং মনো মে।

তদেব মে দৰ্শয় দেবৰূপং

প্ৰসীদ দেবেশ জগন্নিবাস।। ৪৫।।

এতিয়ালৈকে অৰ্জুনৰ সন্মুখত যোগেশ্বৰ বিশ্বৰূপতেই আছিল। সেয়ে তেওঁ কৈছে যে মই আগতে নেদেখা আপোনাৰ এই আশ্চৰ্য্যময় ৰূপ দেখি হৰ্ষিত হৈ আছোঁ তথা মোৰ মন ভয়ত অতি ব্যাকুলো হৈ আছে। আগতেতো সখা বুলি ভাবিছিল, ধনুবিদ্যাত নিজকে আগৰণুৱা বুলি ভাবিছিল, কিন্তু এতিয়া প্ৰভাৱ দেখি ভয়ভীত হৈ আছে। আগৰ আধ্যাত প্ৰভাৱ শুনি নিজকে জ্ঞানী বুলি ভাবিছিল। জ্ঞানীৰ কতো ভয় নাই। মূলত প্ৰত্যেক দৰ্শণৰ প্ৰভাৱেই বিলক্ষন। সকলো খিনি শুনি আৰু মানি লোৱাৰ পিছতো বাকী খিনি কৰিলেহে পাব পাৰি। তেওঁ কৈছে - আগতে নেদেখা আপোনাৰ এই ৰূপক দেখি মই হৰ্ষিত হৈ আছোঁ। মোৰ মন ভয়ত ব্যাকুল হৈ আছে। সেয়ে হে দেৱৰূপ আপুনি

প্ৰসন্ন হওক। হে দেৱেশ, হে জগন্নিবাস আপুনি নিজৰ সেই ৰূপক মোক
দেখুৱাওক। কোন ৰূপ?

কিৰীটিনং গদিনং চক্ৰহস্ত

মিচ্ছামি ত্বাং দ্ৰষ্টুমহং তথৈব।

তেনৈৰ ৰূপেণ চতুৰ্ভূজেন

সহস্ৰবাহো ভব বিশ্বমূৰ্তে ॥ ৪৬ ॥

মই আপোনাক আগৰ দৰেই অৰ্থাৎ শিৰত মুকুট ধাৰণ কৰা, হাতত
গদা আৰু চক্ৰ ধাৰণ কৰা, সেই ৰূপতে চাবলৈ ইচ্ছা কৰিছো। সেই কাৰণে হে
বিশ্বৰূপেঙ্গ হে সহস্ৰবাহুঙ্গ আপুনি নিজৰ সেই চতুৰ্ভূজ স্বৰূপত আহক। কি
ৰূপ চাবলৈ বিচাৰিছে? চতুৰ্ভূজ ৰূপেঙ্গ এতিয়া চোৱা যাওক চতুৰ্ভূজ ৰূপ কি?

শ্ৰীভগৱানুৱাচ

ময়া প্ৰসন্নেন তবাজুনেদং

ৰূপং পৰং দৰ্শিতমাত্মযোগাৎ।

তেজোময়ং বিশ্বমনন্তমাদ্যং

যন্মে ত্বদন্যেন ন দৃষ্টপূৰ্বম্ ॥ ৪৭ ॥

এইদৰে অৰ্জুনৰ প্ৰাৰ্থনা শুনি শ্ৰীকৃষ্ণই কলে - অৰ্জুনঙ্গ মই অনুগ্ৰহ
কৰি নিজৰ যোগবলৰ প্ৰভাৱেৰে নিজৰ পৰম তেজোময়, সকলোৰে আদি
আৰু সীমাহীন বিশ্বৰূপ তোমাক দেখুৱালো, যাক তোমাৰ বাদে দ্বিতীয়
কোনোৰে আগতে কেতিয়াও দেখা নাই।

ন বেদযজ্ঞাধ্যয়নৈর্ন দানৈ -

র্ন চ ক্ৰিয়াভির্ন তপোভিৰু গ্ৰৈঃ।

এৱংৰূপঃ শক্য অহং নুলোকে

দ্ৰষ্টুং ত্বদন্যেন কুৰুপ্ৰবীৰ ॥ ৪৮ ॥

অৰ্জুন! এই মনুষ্যালোকত এইদৰে বিশ্বৰূপ মোক ন বেদেৰে, ন
যজ্ঞেৰে, ন অধ্যয়নেৰে, ন দানেৰে, ন ক্ৰিয়াৰে, ন উগ্ৰ তপেৰে আৰু ন তোমাৰ
বাদে কোনো অন্য লোকৰ দ্বাৰা দেখা পোৱাৰ সম্ভৱ হওঁ অৰ্থাৎ তোমাৰ বাদে
এই ৰূপ অন্য কোনোৰে দেখা নাপায়। তেতিয়া হলে গীতা আপোনাৰ বাবে

অনাৰশ্যক। ভগৱৎদৰ্শনৰ যোগ্যতা অৰ্জুন লৈকেহে সীমিত আছিল, আকৌ আগত কৈছিলে যে অৰ্জুন! ৰাগ, ভয় আৰু ক্ৰোধহীনহৈ অনন্য মনেৰে মোৰ শৰণ লোৱা বহুতো লোকে জ্ঞানৰূপী তপেৰে পবিত্ৰ হৈ সাক্ষাৎ মোৰ স্বৰূপত প্ৰাপ্ত হৈছে। ইয়াত কৈছে - তোমাৰ বাদে কোনেও দেখাও নাই আৰু ভবিষ্যতে কোনেও নেদেখিব। সেয়ে অৰ্জুন নো কোন? কিবাৰ পিণ্ডনে? নে কোনো শৰীৰধাৰী বস্তু? নহয়, মূলত অনুৰাগেই অৰ্জুন। অনুৰাগবিহীন পুৰুষে কেতিয়াও দেখা নেপায়, আৰু ভবিষ্যতেও কেতিয়াও দেখা নাপাব। সকলো ফালৰ পৰা চিত্তক একত্ৰিত কৰি একমাত্ৰ ইষ্টৰ অনুৰূপ ৰাগেই (আকৰ্ষণ) অনুৰাগীৰ বাবেহে প্ৰাপ্তীৰ বিধান আছে।

মা তে ব্যথা মা চ বিমূঢ়ভাবো

দৃষ্ট্বা ৰূপং ঘোৰমীদৃঙমমেদম্।

ব্যপেতভীঃ প্ৰীতমনাঃ পুনস্ত্বং

তদেব মে ৰূপমিদং প্ৰপশ্য ॥ ৪৯ ॥

এইদৰে মোৰ এই বিকৰাল ৰূপক দেখি তুমি ব্যাকুল নহবা আৰু মুঢ় ভাবো নানিবা যাতে হতাশ হৈ মোৰ পৰা আতঁৰি যাবা। এতিয়া তুমি ভয়হীন আৰু স্নেহ-যুক্ত মনেৰে সেই মোৰ আগৰ ৰূপক অৰ্থাৎ চতুৰ্ভূজ ৰূপ পুনৰ চোৱা।

সঞ্জয় উবাচ

ইত্যৰ্জুনং বাসুদেৱস্তথোক্ত্বা

স্বকং ৰূপং দৰ্শায়ামাস ভূয়ঃ।

আশ্বাসয়ামাস চ ভীতমেনং

ভূত্বা পুনঃ সৌম্যৰপূৰ্মহাত্মা ॥ ৫০ ॥

সঞ্জয়ে কলে - সৰ্বত্ৰ বাস কৰোতা দেৱ সেইজন বাসুদেৱে অৰ্জুনক এইদৰে কৈ পুনৰ আগৰ ৰূপ দেখুৱালে। পুনৰ মহাত্মা শ্ৰীকৃষ্ণই “সৌম্যবপুঃ” অৰ্থাৎ প্ৰসন্ন হৈ ভয়াতুৰ অৰ্জুনক ধৈৰ্য্য দিলে। অৰ্জুনে কলে -

অৰ্জুন উবাচ

दृष्ट्वेदं मानुषं रूपं तव सौम्यं जनार्दन ।

इदानीमस्मि संवृत्तः सचेताः प्रकृतिं गतः ॥ ५१ ॥

हे जनार्दन! आपোनाৰ এই অত্যন্ত শান্ত মনুষ্য ৰূপ দেখি এতিয়া মই প্ৰসন্নচিত্ত হৈ নিজৰ স্বাভাৱিক অৱস্থা ঘূৰাই পাইছো। অৰ্জুনে কৈছিলে যে - ভগৱান! এতিয়া আপুনি মোক সেই চতুৰ্ভুজ স্বৰূপৰ দৰ্শন দিয়ক। যোগেশ্বৰে দৰ্শন দিলে; কিন্তু অৰ্জুনে যেতিয়া দেখিলে, তেতিয়া মনুষ্যৰ ৰূপত দেখিলে। মূলতঃ প্ৰাপ্তীৰ পিছত মহাপুৰুষক চতুৰ্ভুজ আৰু অনন্তভুজ বোলা হয়। দুই ভুজ থকা মহাপুৰুষতো অনুৰাগীৰ সন্মুখত থাকেই; কিন্তু অন্যত্ৰ কৰবাৰ পৰা কোনোবাই স্মৰণ কৰিলে তেতিয়া সেই মহাপুৰুষেই সেই স্মৰণ কৰ্তাৰ দ্বাৰা জাগৃত (সাৰথী) হৈ তেওঁৰো মাৰ্গ দৰ্শন কৰাই থাকে। 'ভুজা' কাৰ্য্যৰ প্ৰতীক। তেওঁ ভিতৰতো কাৰ্য্য কৰে বাহিৰতো, এয়াই চতুৰ্ভুজ স্বৰূপ। তেওঁৰ হাতত থকা শংখ, চক্ৰ গদা আৰু পদ্ম ক্ৰমশঃ বাস্তৱিক লক্ষ্যৰ ঘোষণা, সাধনচক্ৰৰ প্ৰৱৰ্ত্তন, ইন্দ্ৰিয় সমূহৰ দমন আৰু নিৰ্মল-নিৰ্লেপ কাৰ্য্য-ক্ষমতাৰ প্ৰতীক হয়। সেইকাৰণে চতুৰ্ভুজ ৰূপত তেওঁ থাকিলেও অৰ্জুনে তেওঁক মনুষ্য ৰূপতহে পালে। চতুৰ্ভুজ মহাপুৰুষৰ শৰীৰ আৰু স্বৰূপৰ দ্বাৰা কাৰ্য্য কৰাৰ বিধি বিশেষৰ নাম হৈ, চাৰিখন হাত থকা কোনো শ্ৰীকৃষ্ণ নহয়।

শ্ৰীভগৱানুৱাচ

सुदुर्दर्शमिदं रूपं दृष्ट्वानसि यन्मम ।

देवा अप्यास्य रूपस्य नित्यं दर्शनकाङ्क्षणः ॥ ५२ ॥

মহাত্মা শ্ৰীকৃষ্ণই কলে - অৰ্জুন! মোৰ এই ৰূপ দেখাত অতি দুৰ্লভ কিয়নো দেৱতা বিলাকেও সদায় এই ৰূপ দৰ্শনৰ ইচ্ছা কৰে। বস্তুতঃ সকলো লোকে সন্তুক চিনিয়ে নেপায়। “পূজ্য সংসঙ্গী মহাৰাজ” অন্তঃপ্ৰেৰণাদিগুণত পূৰ্ণ মহাপুৰুষ আছিল, কিন্তু মানুহে তেওঁক পাগল বুলি ভাবিছিল। কোনো-কোনো পুণ্যাত্মাক এইটো আকাশবানী হয় যে এওৱেই সদগুৰু। মাত্ৰ তেওঁলোকে তেওঁক হৃদয়ৰ পৰাই ধৰিলে, তেওঁক স্বৰূপত পালে আৰু নিজৰ গতিও পালে। ইয়াকে শ্ৰীকৃষ্ণই কয় যে যাৰ হৃদয়ত দৈৱী সম্পদ জাগৃত হৈ আছে, সেই দেৱতাইও সদায় এই ৰূপ দৰ্শন পাবলৈ আকাংক্ষা কৰে।

তেতিয়াহলে কি যজ্ঞ, দান অথবা বেদ অধ্যয়নৰ দ্বাৰা আপোনাক দেখা পোৱা নাযাবনে? সেই মহাত্মাই কয় -

নাহং বেদৈর্ন তপসা ন দানেন ন চেজ্যয়া।

শক্য এরংবিধো দ্ৰষ্টুং দৃষ্টবানসি মাং যথা।। ৫৩।।

ন বেদেৰে, ন তপোৰে, ন দানেৰে আৰু ন যজ্ঞেৰে মই এইদৰে দেখাপোৱাৰ সুলভ হওঁ, যি দৰে তুমি দেখিলা, তেতিয়া হলে আপোনাক দেখা পোৱাৰ কোনো উপায় নাই নে? সেইজন মহাত্মাই কয়- উপায় এটা আছে-

ভক্ত্যা ত্বন্যয়া শক্য অহমেবংবিধোহৰ্জুন।

জ্ঞাতুং দ্ৰষ্টুং চ তত্ত্বেন প্ৰবেষ্টুং চ পৰন্তপ।।৫৪।।

হে শ্ৰেষ্ঠ তপ কৰোতা অৰ্জুন অনন্য ভক্তি দ্বাৰা অৰ্থাত মোৰ বাদে অন্য কোনো দেবতাৰেই স্মৰণ নকৰি, অনন্য শ্ৰদ্ধাৰ দ্বাৰা মই এইদৰে প্ৰত্যক্ষ দেখিবৰ বাবে, তত্ত্বৰ দ্বাৰা সাক্ষাৎ কৰি জানিবৰ বাবে তথা প্ৰবেশ কৰিবৰ বাবে সুলভ আছে অৰ্থাত তেওঁৰ প্ৰাপ্তিৰ এক মাত্ৰ সৰল মাধ্যম হল অনন্য ভক্তি। শেষত জ্ঞানও অনন্য ভক্তিত পৰিণত হৈ যায়, যিটো সাত আধ্যাত চাব পাৰে। আগতে তেখেতে কৈছিল যে- তোমাৰ বাদে কোনেও দেখা নাই আৰু দেখা নাপাব। ইয়াত আকৌ কৈছে যে অনন্য ভক্তিৰ দ্বাৰা অকল মোক দেখাই নহয়, আন কি সাক্ষাৎ ভাবে জানিব পাৰিব আৰু মোত প্ৰবেশ প্ৰাপ্ত কৰিব পাৰিব। অৰ্থাৎ অৰ্জুন অনন্য ভক্তৰ নাম, এটা অৱস্থাৰ নাম। অনুৰাগেই অৰ্জুন। শেষত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কয়-

মৎকৰ্মকৃন্মৎপৰমো মদ্ভক্তঃ সঙ্গবৰ্জিতঃ।

নিৰ্বেৰঃ সৰ্বভূতেষু যঃ স মামেতি পাণ্ডব।।৫৫।।

হে অৰ্জুন ! যি পুৰুষে মোৰ দ্বাৰা প্ৰদত্ত নিৰ্দিষ্ট কৰ্ম যজ্ঞাৰ্থে কৰ্ম কৰে, মোৰ পৰায়ন হৈ কৰে, যি মোৰ অনন্য ভক্ত কিন্তু সংগ-দোষত থাকিলে সেই কৰ্ম নহয়। সংগ-দোষৰ পৰা বহিত হৈ সম্পূৰ্ণ ভূত প্ৰাণীত শত্ৰুতা বহিত হৈ থাকে, তেওঁ মোকে প্ৰাপ্ত কৰে। তেতিয়া হলে কি অৰ্জুন যুদ্ধ

কৰিলেনে ? প্ৰতিজ্ঞা কৰি তেওঁ জয়দ্ৰথ আদিক মাৰিলে নে ? তেওঁলোকক মৰা কাৰ্য্য কৰিলেহেঁতেন, তেতিয়াহলে ভগৱানক নেদেখিলেহেঁতেন, আকৌ অৰ্জুনে দেখিলে যে, ইয়াৰ পৰা প্ৰমাণ হ'ল যে গীতাত এনে এটিও শ্লোক নাই, যি বাহ্যিক কটা-মৰা বাবে সমৰ্থন কৰিছে। যি জনে নিৰ্দিষ্ট কৰ্ম যজ্ঞৰ প্ৰক্ৰিয়াৰ আচৰণ কৰে, যি জনে অনন্য ভাৱেৰে তেওঁৰ বাদে কাৰো স্মৰণো নকৰে যিজনে সংগ-দোষৰ পৰা আতঁৰত থাকে তেওঁ কেনেকৈ যুদ্ধ কৰিব ? যেতিয়া আপোনাৰ ওচৰত কোনো নায়েই, তেতিয়া আপুনি কাৰ লগত যুদ্ধ কৰিব ? সম্পূৰ্ণ ভূত-প্ৰাণীৰ লগত যাৰ শত্ৰুতাই নাই, মনেৰেও কাৰো কোনো অন্যায়ৰ কল্পনাও নকৰে, তেৱে মোক প্ৰাপ্ত কৰিব, তেতিয়াহলে অৰ্জুনে কি যুদ্ধই কৰিলে নে ? কেতিয়াও নহয়।

মূলতঃ সংগ-দোষৰ পৰা আতঁৰত থাকি যেতিয়া আপুনি অনন্য চিন্তাত থাকে, সেই সময়ত বিৰোধ পত্নী ৰাগ-দ্বেষ, কাম-ক্ৰোধ ইত্যাদি দুৰ্জেয় শত্ৰু বাধা ৰূপত প্ৰত্যক্ষ হয়। তাৰ পৰা পৰিত্ৰান লাভ কৰাই হ'ল যুদ্ধ।

নিষ্কৰ্ষ :-

এই আধ্যায়ৰ আৰম্ভনীত অৰ্জুনে কৈছিল - ভগৱান! আপোনাৰ বিভূতি সম্পৰ্কে মই বহলভাৱে শুনিলো, যাৰ দ্বাৰা মোৰ মোহ নষ্ট হৈ গ'ল, অজ্ঞানতা নাশ হৈছে; কিন্তু আপুনি কৈছিল যে মই সবত্ৰত আছোঁ, তাক মই প্ৰত্যক্ষ ভাৱে চাব বিচাৰিছোঁ। যদি মোৰ দ্বাৰা চাব পৰা সম্ভৱ হয়, তেতিয়া হলে অনুগ্ৰহ কৰি সেই স্বৰূপ দেখাওক! অৰ্জুন প্ৰিয় সখা আছিল, সেয়ে যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কোনো প্ৰতিবাদ নকৰাকৈ তৎক্ষণাত দেখুৱাৰলৈ আৰম্ভ কৰি ক'লে যে এতিয়া মোৰ ভিতৰতে থকা সপ্তৰ্ষি আৰু তেওঁলোকতকৈও আগৰ ঋষি সকলক চোৱা, ব্ৰহ্মা, বিষ্ণুক চোৱা। সকলো ফালে বৃত্তিত হৈ থকা মোৰ তেজ ৰাশিক চোৱা। মোৰ শৰীৰত তুমি একেঠাইত ঠিয় হৈ চৰাচৰ জগতক চোৱা; কিন্তু অৰ্জুনে চকু মোহাৰিয়ে থাকিল। এইদৰে যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই দুই-তিনি শ্লোকলৈকে অনবৰত দেখুৱাই গ'ল, কিন্তু অৰ্জুনে একো দেখি নাপালে। সমস্ত বিভূতি সমূহ যোগেশ্বৰত সেই সময়তো আছিল, কিন্তু

অৰ্জুনে তেওঁক সামান্য মনুষ্যৰ দৰেই দেখিছিল। তেতিয়া এইদৰে দেখুৱাই থাকোতে যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণ হঠাৎ বৈ যায় আৰু কয়-অৰ্জুন! এই চকুৰে তুমি মোক নেদেখিবা নিজৰ বুদ্ধিৰে তুমি নেদেখিবা। লোৱা, এতিয়া তোমাক মই এনে দৃষ্টি দিম, যাৰ দ্বাৰা তুমি মোক চাব পাৰিবা! ভগৱানতো সন্মুখত ঠিয় হৈ আছিলেই। অৰ্জুনে চালে, বাস্তৱতে দেখিলে। দেখাৰ পাছত ক্ষুদ্ৰ ত্ৰুটিবোৰৰ বাবে ক্ষমা-ভীক্ষা খুজিলে, যি বাস্তৱত ভুল নাছিল। উদাহৰণৰ বাবে ভগৱান! কেতিয়াবা মই আপোনাক কৃষ্ণ, যাদৱ আৰু কেতিয়াবা সখা বুলি কৈছিলো। তাৰ বাবে আপুনি মোক ক্ষমা কৰক। শ্ৰীকৃষ্ণই ক্ষমাও কৰিলে; কিয়নো অৰ্জুনৰ প্ৰাৰ্থনা স্বীকাৰ কৰি তেওঁ সৌম্যৰূপ ধাৰণ কৰিলে, ধৈৰ্য্য বন্ধালে।

বস্তুতঃ কৃষ্ণ কোৱাতো অপৰাধ নাছিল। তেওঁতো ক'লাই আছিল বগাতো নাছিল। যদুবংশত জন্ম হৈছিল। শ্ৰীকৃষ্ণই নিজেও সখা বুলি কৈছিল। বাস্তৱত প্ৰত্যক সাধকে মহাপুৰুষক প্ৰথমে এনেকৈয়ে ভাৱে। কিছুমানে তেওঁৰ ৰূপ আৰু আকাৰেৰে সন্মোখিত কৰে, কিছুমানে তেওঁৰ বৃত্তিক লৈ মাতে আৰু কিছুমানে তেওঁক নিজৰ সমকক্ষ বুলি ভাৱে, তেওঁলোকৰ যথার্থ স্বৰূপক বুজি নাপায়। তেওঁৰ অচিন্ত্য স্বৰূপক অৰ্জুনে বুজি পালে যেতিয়া, তেওঁ দেখিলে তেওঁ ক'লাও নহয়, বগাও নহয়, তেওঁৰ কোনো কুলও নাই আৰু তেওঁ কোনো সখাও নহয়। তেওঁৰ সমান কোনো নায়েই, গতিকে সখা কেনেকৈ হব? সমান জানো হব? এইটো তো অচিন্ত্য স্বৰূপ। যাক এওঁ দেখায়, তেওঁ হে দেখি পায়। সেয়ে অৰ্জুনে নিজৰ প্ৰাথমিক ভুলৰ বাবে ক্ষমা-ভীক্ষা খুজিলে।

প্ৰশ্ন এটা জাগে যে যেতিয়া “কৃষ্ণ” কোৱাটোৱে অপৰাধ, তেতিয়া হলে তেওঁৰ নাম জপ কৰিব কেনেকৈ? তেতিয়া যাক যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই জপ কৰিবৰ বাবে নিজেই জোৰ দিছে, জপ কৰিবৰ বিধি কলে, সেই বিধিৰে আপুনি চিন্তন-স্মৰণ কৰক। সেইটো হ'ল - ‘ওম’

অক্ষয় ব্ৰহ্মৰ পৰ্য্যায় হয়। - যি ব্যাপ্ত, সেই সত্তা মোতেই সোমাই আছে, এয়েই ‘ওম’ ৰ অৰ্থ। আপুনি ইয়াক জপ কৰক আৰু ধ্যান মোৰ কৰক। ৰূপ নিজৰ, নামটো ‘ওম’ কলে।

অৰ্জুনে প্ৰাৰ্থনা কৰিলে যে চতুৰ্ভুজ ৰূপত দৰ্শন দিয়ক। শ্ৰীকৃষ্ণই তেওঁৰ সাধাৰণ স্বৰূপ ধাৰণ কৰিলে। অৰ্জুনে কলে - ভগৱান! আপোনাৰ এই সৌম্য মানৱ স্বৰূপ দেখি, এতিয়া মই প্ৰকৃতিস্থ হ'লো। বিচাৰিছিল চতুৰ্ভুজ ৰূপ, দেখুৱালে 'মানৱ ৰূপ'। বাস্তৱত শাস্ত্ৰত প্ৰৱেশ কৰা যোগী শৰীৰেৰে ইয়াতে বহি থাকে, বাহিৰত দুই হাতেৰে কাম কৰি থাকে আৰু লগতে অন্তৰাত্মাত জাগৃত হৈ, য'ৰ পৰাই হওক যি ভক্তই স্মৰণ কৰে, একে লগে সকলো ঠাইতে তেওঁৰ হৃদয়ত জাগৃত হৈ প্ৰেৰকৰ ৰূপত কাৰ্য্য কৰে। হাত তেওঁৰ কাৰ্য্যৰ প্ৰতীক এয়াই চতুৰ্ভুজ।

শ্ৰীকৃষ্ণই ক'লে- অৰ্জুন! তোমাৰ বাদে মোৰ এই ৰূপ কোনেও দেখাও নাই আৰু ভৱিষ্যতেও নেদেখিব। তেতিয়াহলে গীতা আমাৰ বাবে ব্যৰ্থ হ'ল। কিন্তু নহয়, যোগেশ্বৰে কৈছে - এটা উপায় আছে। যি মোৰ অনন্য ভক্ত, মোৰ বাদে যি জনে অন্য কাৰো স্মৰণ নকৰে; নিৰন্তন মোৰে চিন্তন কৰোতা; তেওঁৰ অনন্য ভক্তিৰ দ্বাৰা মই দেখা পোৱা যাওঁ (যেনেকৈ তুমি দেখিলা), তত্ৰে জানিলে আৰু প্ৰৱেশ কৰিবলৈ সুলভ হওঁ। অৰ্থাৎ অৰ্জুন অনন্য ভক্ত আছিল। ভক্তিৰ পৰিমৰ্জিত ৰূপ হ'ল অনুৰাগ, ইষ্টৰ অনুৰূপ আকৰ্ষণ। অনুৰাগবিহীন পুৰুষে কেতিয়াও পোৱাও নাই আৰু নাপায়ও। অনুৰাগ নাথাকিলে কোনোবাই লাখ যোগ কৰক, জপ কৰক, তপ কৰক বা দান কৰক 'তেওঁক নাপায়। সেয়ে ইষ্টৰ অনুৰূপ ৰাগ অথবা অনন্য ভক্তি নিতান্তই আৱশ্যকীয়।

শেষত শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছে- অৰ্জুন! মোৰ দ্বাৰা নিৰ্দিষ্ট কৰা কৰ্ম কৰা। মোৰ অনন্য ভক্ত হৈ মোৰ শৰণ লৈ, কিন্তু সংগ-দোষৰ পৰা বেলেগে থাকা। সংগ-দোষত এইটো কৰ্ম হব নোৱাৰে। সেয়ে সংগ-দোষ এই কৰ্মৰ সম্পাদিত হোৱাত বাধা হয়। যি শত্ৰু-ভাৱৰ পৰা ৰহিত আছে, তেৱে মোক প্ৰাপ্ত কৰিব পাৰিব। যেতিয়া সংগ-দোষেই নাই, য'ত মোক এৰি অন্য কোনো নাই, শত্ৰুতাৰ মানসিক সংকল্পও নাই, তেতিয়াহলে যুদ্ধ কিহৰ? বাহিৰি দুনিয়াত কাজিয়া-

পেচালহৈয়ে থাকে, কিন্তু বিজয় জিকা জনৰো প্ৰাপ্ত নহয়। দুৰ্জয় সংসাৰৰূপী শত্ৰুক অসংজতাৰূপী শস্ত্ৰৰে কাটি পৰমত প্ৰবেশ কৰাই হ'ল বাস্তৱিক বিজয়, যাৰ পাছত কোনো পৰাজয় নাই।

এই আধ্যাত প্ৰথমে যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই অৰ্জুনক দৃষ্টি প্ৰদান কৰিলে, আকৌ নিজৰ বিশ্বৰূপৰ দৰ্শন কৰালে। সেয়ে-

এইদৰে শ্ৰীমৎভাগৱৎ গীতাৰূপী উপনিষদ এবং ব্ৰহ্মবিদ্যা তথা যোগশাস্ত্ৰ বিষয়ক শ্ৰীকৃষ্ণাৰ্জুনৰ সন্বাদৰ 'বিশ্বৰূপ দৰ্শনযোগ' নামৰ এঘাৰ আধ্যায় পূৰ্ণ হ'ল।

এইদৰে শ্ৰীমৎভাগৱৎ গীতাৰূপী উপনিষদ এবং ব্ৰহ্মবিদ্যা তথা যোগশাস্ত্ৰ বিষয়ক শ্ৰীকৃষ্ণাৰ্জুনৰ সন্বাদৰ 'বিশ্বৰূপ দৰ্শনযোগ' নামৰ এঘাৰ আধ্যায় পূৰ্ণ হ'ল।

ইতি শ্ৰীমৎ পৰমহংস পৰমানন্দস্য শিষ্য স্বামী অড়গড়ানন্দ কৃতে শ্ৰীমৎভাগৱৎ গীতায়ঃ 'ষথাথ গীতা' ভাষ্য 'বিশ্বৰূপ দৰ্শন যোগো' নামৈকাদশোহধ্যায় ॥ ১১ ॥

।।হৰি ওঁ তৎসৎ।।

ওঁ

শ্ৰীপৰমাত্মনে নমঃ

অথ দ্বাদশোহধ্যায়ঃ

এঘাৰ আধ্যায়ৰ অন্তত শ্ৰীকৃষ্ণই বাৰে বাৰে জোৰ দি কৈছিল যে, অৰ্জুন! মোৰ এই স্বৰূপ যাক তুমি দেখিলা, তোমাৰ বাদে আগতে কোনেও দেখা নছিল আৰু ভৱিষ্যতেও দেখা নাপাব। মই ন তপেৰে, ন যজ্ঞৰে আৰু ন দানেৰে চাবৰ সুলভ হওঁ; কিন্তু অনন্য ভক্তিৰ দ্বাৰা অৰ্থাৎ মোৰ অতিৰিক্ত অন্য কাৰো শ্ৰদ্ধা নাৰাখি, নিৰন্তৰ তেলৰ ধাৰাৰ দৰে মোৰ চিন্তনৰ দ্বাৰা ঠিক তুমি যেনেদৰে মোক দেখিলা, মই প্ৰত্যক্ষ ভাবে দেখাৰ বাবে, তত্বৰে সাক্ষাৎভাৱে জানিবৰ বাবে আৰু প্ৰৱেশ লাভ কৰিবৰ বাবে সুলভ আছোঁ। সেয়ে অৰ্জুন! মোৰ নিৰন্তৰ চিন্তন কৰা, ভক্ত হোৱা! আধ্যায়ৰ শেষত তেখেতে কৈছে অৰ্জুন! তুমি মোৰে দ্বাৰা নিৰ্ধাৰিত কৰা কৰ্ম কৰা। মোৰ পৰায়ণ হৈ। অনন্য ভক্তিয়েই তেওঁৰ প্ৰাপ্যৰ মাধ্যম। ইয়াত অৰ্জুনৰ প্ৰশ্ন স্বাভাৱিক আছিল যে যি অব্যক্ত অক্ষৰৰ উপাসনা কৰে আৰু সগুণ আপোনাৰ উপাসনা কৰে এই দুটাৰ ভিতৰত কোনটো শ্ৰেষ্ঠ?

ইয়াত এই প্ৰশ্নক অৰ্জুনে তৃতীয়বাৰৰ বাবে উত্থাপন কৰিছে। তিনি আধ্যায়ত তেওঁ কৈছিল যে ভগৱান? যদি নিষ্কাম কৰ্মযোগৰ অপেক্ষা সাংখ্যযোগে আপুনি শ্ৰেষ্ঠ বুলি ভাবে, তেতিয়াহলে আপুনি মোক ভয়ংকৰ কৰ্মত পঠিয়াইছে কিয়? ইয়াত শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছে যে অৰ্জুন! নিষ্কাম কৰ্ম মাৰ্গ ভাল লাগক অথবা জ্ঞানমাৰ্গ, দুইটাতে কৰ্ম হলে কৰিব লাগিবই। ইয়াৰ পিছতো কোনোবাই যদি জেদত ইন্দ্ৰিয়ক দমন কৰিব বিচাৰে আৰু মনেৰে বিষয়ক স্মৰণ কৰি থাকে, তেওঁ দণ্ডাচাৰী, তেওঁ জ্ঞানী নহয়; সেয়ে অৰ্জুন! তুমি কৰ্ম কৰা। কোন কৰ্ম? - নিৰ্ধাৰিত কৰা কৰ্ম কৰা। নিৰ্ধাৰিত কৰ্ম কি? তেতিয়া ক'লে - যজ্ঞৰ প্ৰক্ৰিয়াই হ'ল একমাত্ৰ কৰ্ম। যজ্ঞৰ বিধি কলে - যিটো হ'ল আৰাধনা-চিন্তনৰ বিধি বিশেষ পৰমত প্ৰৱেশ কৰাব পৰা প্ৰক্ৰিয়া। যেতিয়া

নিষ্কাম কৰ্ম-মাৰ্গ আৰু জ্ঞান মাৰ্গ দুটাতে কৰ্ম কৰিব লাগিব, যজ্ঞাৰ্থ কৰ্ম কৰিব লাগিব, ত্ৰিণ্যাও একেই, তেতিয়াহলে প্ৰাৰ্থক্য কিহৰ? ভক্তই কৰ্ম সমৰ্পন কৰি, ইষ্টত আশ্ৰিত হৈ যজ্ঞাৰ্থ কৰ্মত প্ৰবৃত্ত হয়, দ্বিতীয় সাংখ্যযোগীয়ে, নিজৰ শক্তিৰ ওপৰত নিৰ্ভৰ কৰি কৰ্মত প্ৰবৃত্ত হয়। সম্পূৰ্ণ শ্ৰম কৰে।

পঞ্চম আধ্যাত অৰ্জুনে পুনৰ প্ৰশ্ন কৰিলে - ভগৱান! আপুনি কেতিয়াবা সাংখ্য-মাধ্যমেৰে আৰু কেতিয়াবা সমৰ্পণ-মাধ্যমেৰে নিষ্কাম কৰ্মযোগৰ প্ৰশংসা কৰে - এই দুটাৰ ভিতৰত শ্ৰেষ্ঠ কোন? ইয়ালৈকে অৰ্জুনে বুজি পাইছিল যে কৰ্ম দুইটা দৃষ্টিতেই কৰিব লাগিব, তথাপিও দুটাৰ ভিতৰত শ্ৰেষ্ঠ মাৰ্গটো তেওঁ বাছিবি বিচাৰিছে। শ্ৰীকৃষ্ণই কলে - অৰ্জুন! দুইফালৰ পৰাই কৰ্মত প্ৰবৃত্ত হোৱা জন মোকেই প্ৰাপ্ত কৰে; কিন্তু সাংখ্য মাৰ্গৰ অপেক্ষা নিষ্কাম কৰ্মযোগেই শ্ৰেষ্ঠ। নিষ্কাম কৰ্মযোগৰ অনুষ্ঠান নকৰাকৈ কোনো যোগীও অথবা জ্ঞানীও হব নোৱাৰিব। সাংখ্যযোগ অতি দুষ্কৰ সি অতি কঠিন।

ইয়াত তৃতীয় বাৰৰ বাবে অৰ্জুনে এই প্ৰশ্ন ৰাখিলে যে ভগৱান। আপোনাত অনন্য ভক্তিয়ে লগাজন আৰু অব্যক্ত অক্ষৰৰ উপসনাত (সাংখ্যমাৰ্গত) লগাজন, এই দুটাৰ ভিতৰত কোনটো শ্ৰেষ্ঠ?

অৰ্জুন উবাচ

এবং সততযুক্তা যে ভক্তাস্ত্বাং পৰ্যুপাসতে।

যে চাপ্যক্ষৰমব্যক্তং তেষাং কে যোগবিত্তমাঃ ॥ ১ ॥

‘এবং’ - অৰ্থাৎ এইদৰে যি এতিয়া আপুনি বিধি ক’লে, ঠিক সেই বিধিৰ অনুসৰি অনন্য ভক্তিয়ে আপোনাৰ শৰণলৈ আপোনাৰ লগত নিৰন্তৰ সংযুক্ত থাকি আপোনাক ভালদৰে উপসনা কৰে আৰু অন্য এজনে আপোনাৰ শৰণ নোলোৱাকৈ স্বতন্ত্ৰ ৰূপেৰে নিজতে ভৰসা ৰাখি সেই অব্যক্ত অক্ষয় স্বৰূপক উপাসনা কৰে, যত আপুনিও আছে, এই দুই প্ৰকাৰৰ ভক্তত অধিক উত্তম যোগী কোন হয়? এই ক্ষেত্ৰত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কয় -

শ্ৰীভগবানুবাচ

ময্যাবেশ্য মনো যে মাং নিত্যযুক্তা উপাসতে।

শ্ৰদ্ধয়া পৰয়োপেতাস্তে মে যুক্ততমা মতাঃ।। ২ ।।

অৰ্জুন! মোতেই মন একাগ্ৰ কৰি নিৰন্তৰ মোৰ লগত সংযুক্ত হৈ, যি ভক্তজনে, পৰমৰ লগত সম্বন্ধ ৰাখোতা শ্ৰেষ্ঠ শ্ৰদ্ধাৰে যুক্ত হৈ, মোকে ভজনা কৰে, তেওঁক মই যোগী বিলাকৰ ভিতৰত অতি উত্তম যোগী বুলি মানো।

যে ত্বক্ষৰমনির্দেশ্যমব্যক্তং পৰ্যুপাসতে।

সর্বত্রগমচিন্ত্যং চ কূটস্থমচলং ধ্ৰুৱম্।। ৩।।

সন্নিয়ম্যেन्द्रিয়গ্রামং সর্বত্র সমবুদ্ধয়ঃ।

তে প্রাপ্নুবন্তি মামেব সর্বভূতহিতে ৰতাঃ।। ৪।।

যি পুৰুষে ইন্দ্ৰিয় সমূহক ভালদৰে সংযম কৰি মন বুদ্ধিৰ চিন্তনেৰে অত্যন্ত দূৰত থকা সৰ্বব্যাপি, অবৰ্ণনী স্বৰূপ সদা একবসৱালা, নিত্য অচল, অব্যক্ত, আকাৰহীন আৰু অবিনাশী ব্ৰহ্মক উপাসনা কৰে; সম্পূৰ্ণ ভূতৰ হিতত লগা আৰু সকলোতে সমভাৱ থকা, সেই যোগীয়ে মোকে প্ৰাপ্ত কৰে। ব্ৰহ্মৰ উপৰোক্ত বিশেষণ মোৰ পৰা বেলেগে নহয়। কিন্তু -

ক্লেশোহধিকতৰস্তেষামব্যক্তাসক্তচেতসাম্।

অব্যক্তা হি গতির্দুঃখং দেহবদ্ভিৰৱাপ্যতে।। ৫।।

সেই অব্যক্ত পৰমাত্মাত আসক্ত চিত্ত থকা পুৰুষৰ সাধনাত ক্লেশ (দুখ) বিশেষ ভাৱে আছে; কিয়নো দেহভিমানেী সকলৰ দ্বাৰা অব্যক্ত বিষয়ৰ গতি দুখেৰে প্ৰাপ্ত হয়। যেতিয়ালৈকে দেহৰ অভিমান আছে তেতিয়ালৈকে অব্যক্তৰ প্ৰাপ্তি অতি দুষ্কৰ।

যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণ সদৃগুৰু আছিল। অব্যক্ত পৰমাত্মা তেওঁত ব্যক্ত আছিল। তেওঁ কৈছে যে মহাপুৰুষৰ শৰণ নোলোৱাকৈ যি সাধকে নিজৰ শক্তি সামৰ্থ্যক লৈ আগবাঢ়ি কয় - মই এই অৱস্থাত আছোঁ, আগলৈ এই অৱস্থালৈ যাম, মই নিজৰ অব্যক্ত পুৰুষ শৰীৰক প্ৰাপ্ত কৰিম, এনেকৈ ক'বলৈ ধৰে। এইটোৱে হ'ল এই মাৰ্গৰ আটাইতকৈ ডাঙৰ বাধা। তেওঁ ইয়াতেই ঘূৰি-ঘূৰি থাকিব লগীয়া হয়। কিন্তু যি জনে মোৰ শৰণ লৈ চলে, তেওঁ -

যে তু সৰ্বাণি কৰ্মাণি ময়ি সন্যস্য মৎপৰাঃ
অনন্যেনৈব যোগেন মাং ধ্যায়ন্ত উপাসতে ॥ ৬ ॥

যি জনে মোৰ পৰায়ণ হৈ সম্পূৰ্ণ কৰ্ম অৰ্থাৎ আৰাধনাক মোকেই
অৰ্পণ কৰি অনন্য ভাৱেৰে যোগ অৰ্থাৎ আৰাধনা প্ৰক্ৰিয়াৰ দ্বাৰা নিৰন্তৰ চিন্তন
কৰি ভজনা কৰে -

তেষামহং সমুদ্ধৰ্তা মৃত্যুসংসাৰসাগৰাৎ ।
ভৱামি নচিৰাৎপাৰ্থ ময্যাবেশিতচেতসাম ॥ ৭ ॥

অকল মোকেই চিত্ত লগাওঁতা ভক্তক মই শীঘ্ৰেই মৃত্যুৰূপ সংসাৰৰ
পৰা উদ্ধাৰ কৰো। এইদৰে চিত্ত লগাবৰ বাবে প্ৰেৰণা দি বিধিৰ ওপৰত
যোগেশ্বৰে প্ৰকাশ কৰে -

ময়েৰ মন আখ্ৰস্ব ময়ি বুদ্ধিং নিবেশয় ।
নিবসিষ্যসি ময়েৰ অত উধ্বং ন সংশয় ॥ ৮ ॥

সেইকাৰণে হে অৰ্জুনঙ্গ তুমি মোতেই মন লগোৱা, বুদ্ধি লগোৱা।
তাৰপিছত তুমি মোতেই নিবাস কৰিবা, ইয়াত একো সংশয় নাই। মন আৰু
বুদ্ধিও লগাব নোৱৰিলে। তেতিয়া (অৰ্জুনে আগতে কৈছিল যে মনক নিৰোধ
কৰাটো বায়ুক ৰোধ কৰাৰ দৰে দুক্ষৰ বুলি বুজি পাইছো) ইয়াত যোগেশ্বৰ
শ্ৰীকৃষ্ণই কয় -

অথ চিত্তং সমাধাতুং ন শক্লোষি ময়ি স্থিৰম্ ।
অভ্যাসযোগেন ততো মামিচ্ছাপ্তুং ধনঞ্জয় ॥ ৯ ॥

যদি তুমি মনক মোত অচল ভাৱে স্থাপিত কৰিবলৈ অসমৰ্থ হোৱা,
তেতিয়া হ'লে হে অৰ্জুনঙ্গ যোগৰ অভ্যাসৰ দ্বাৰা মোক প্ৰাপ্ত কৰিবৰ ইচ্ছা
কৰা। (চিত্ত মলৈ যায়, তাৰ পৰা টানি আনি তাক আৰাধনা চিন্তনৰ ক্ৰিয়াত
লগোৱাৰ নামেই হ'ল অভ্যাস) যদি এইটোও কৰিব নোৱাৰা তেতিয়া হলে -

অভ্যাসেহপ্যসমর্থোৎসি মৎকৰ্মপৰমো ভৱ ।
মদৰ্থমপি কৰ্মাণি কুৰ্ব্ন্সিদ্ধিমৰাপ্যসি ॥ ১০ ॥

যদি তুমি অভ্যাসেৰেও অসমৰ্থ হোৱা তেতিয়াহলে মাত্ৰ মোৰ বাবে কৰ্ম কৰি যোৱা অৰ্থাৎ আৰাধনা কৰিবলৈ তৎপৰ হোৱা। এইদৰে মোৰ প্ৰাপ্তীৰ কাৰণে কৰ্ম কৰি তুমি মোৰ প্ৰাপ্তীৰূপী সিদ্ধিকেই প্ৰাপ্ত কৰিবা, অৰ্থাৎ অভ্যাসেৰেও পাৰ হব নোৱাৰিলে অনন্ত সাধনা পথত লাগি থাকা।

অঐতদপ্যশক্তোহসি কৰ্তুং মদযোগমাশ্ৰিতঃ।

সৰ্বকৰ্মফলত্যাগং ততঃ কুৰু যতাত্মৱান্ ॥ ১১ ॥

যদি ইয়াকো কৰিবলৈ অসমৰ্থ হোৱা, তেতিয়াহলে সম্পূৰ্ণ ফলক ত্যাগ কৰি অৰ্থাৎ লাভ-লোকচানৰ চিন্তা বাদ দি ‘মদ্যোগ’ ৰ আশ্ৰিত হৈ অৰ্থাৎ সমৰ্পণৰ সৈতে আত্মৱান মহাপুৰুষৰ শৰণলৈ যোৱা। তেওঁৰ পৰা প্ৰেৰণা পাই কৰ্ম নিজেই হব ধৰিব। সমৰ্পণৰ সৈতে কৰ্মফলৰ ত্যাগৰ মহত্ব যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কয় -

শ্ৰেয়ো হি জ্ঞানমভ্যাসাজ্ঞানাদ্ভ্যানং বিশিষ্যতে।

ধ্যানাৎকৰ্মফলত্যাগ স্ত্যাগাচ্ছান্তিৰনন্তৰম্ ॥ ১২ ॥

মাত্ৰ চিন্তক ৰোধ কৰাৰ অভ্যাসেৰে জ্ঞান-মাৰ্গৰ দ্বাৰা কৰ্মত প্ৰবৃত্ত হোৱাটো শ্ৰেষ্ঠ। জ্ঞান-মাধ্যমেৰে কৰ্মক কাৰ্য্যৰূপ দিয়াৰ অপেক্ষা ধ্যান শ্ৰেষ্ঠ। কিয়নো ধ্যানত ইষ্ট থাকে। ধ্যানতকৈও সম্পূৰ্ণ কৰ্মফলক ত্যাগ কৰাটো শ্ৰেষ্ঠ ; কিয়নো ইষ্টৰ প্ৰতি সমৰ্পণৰ সৈতে যোগৰ ওপৰত দৃষ্টি ৰাখি কৰ্মফলক ত্যাগ কৰিলে তাৰ যোগক্ষেমৰ দায়িত্ব ইষ্টৰ হয়। সেইকাৰণে এই ত্যাগৰ দ্বাৰা তেওঁ তৎকালেই পৰম শান্তি প্ৰাপ্ত কৰে।

এতিয়ালৈকে যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কলে যে অব্যক্তৰ উপাসনা কৰোঁতা জ্ঞানমাৰ্গীতকৈ সমৰ্পণৰ সৈতে কৰ্ম কৰোঁতা নিষ্কাম কৰ্মযোগী শ্ৰেষ্ঠ। দুজনেই একেই কৰ্ম কৰে, কিন্তু জ্ঞান-মাৰ্গীৰ পথত ব্যৱধান অধিক, তাৰ লাভ-লোকচানৰ দায়িত্ব নিজৰ ওপৰত থাকে, আনকি সমৰ্পণ কাৰী ভক্তৰ দায়িত্ব মহাপুৰুষৰ ওপৰত থাকে, সেইকাৰণে তেওঁ কৰ্মফলৰ ত্যাগৰ দ্বাৰা সোনকালেই শান্তি প্ৰাপ্ত কৰে। এতিয়া শান্তি প্ৰাপ্ত পুৰুষৰ লক্ষণ কয় -

অদ্বৈস্তা সৰ্বভূতানাং মৈত্ৰঃ কৰোণ এৰ চ।

নিৰ্মমো নিৰহংকাৰঃ সমদুঃখ সুখঃ ক্ষমী ॥ ১৩ ॥

এইদৰে শান্তি প্ৰাপ্ত কৰা যি পুৰুষ, সকলোভূতত দ্বেষভাৱহীন, সকলোৰে প্ৰেমী আৰু পৰমদয়ালু হয় আৰু মমতাৰহিত, অহংকাৰৰহিত, সুখত-দুখত সমভাৱ বখা আৰু ক্ষমাশীল হয়;

সন্তুষ্টঃ সততং যোগী যতাত্মা দৃঢ়নিশ্চয়ঃ ।

মৰ্য্যাপিতমনোবুদ্ধিৰ্যো মন্ত্ৰুক্তঃ স মে প্ৰিয়ঃ ॥ ১৪ ॥

যি জন নিৰন্তৰ যোগৰ পৰাকাষ্ঠাৰে সংযুক্ত লাভ-লোকচানত সন্তুষ্ট, মন তথা ইন্দ্ৰিয়ৰে সৈতে শৰীৰক বশত ৰাখিছে, দৃঢ় সংকল্পযুক্ত, তেওঁ মোকেই মন বুদ্ধি অৰ্পন কৰোঁতা মোৰ ভক্ত মোৰ প্ৰিয়।

যস্মান্নোদ্ধিজতে লোকো লোকান্নোদ্ধিজতে চ যঃ ।

হৰ্ষাৰ্মৰ্ষভয়োদ্বৈগৈৰ্মুক্তো যঃ স চ মে প্ৰিয়ঃ ॥ ১৫ ॥

যাৰদ্বাৰা কোনো জীৱই উদ্বিগ্ন প্ৰাপ্ত নকৰে, আৰু যি স্বয়ং কোনো জীৱৰ লগত উদ্বিগ্ন নহয়, হৰ্ষ, সন্তাপ-ভয় আৰু সমস্ত বিক্ষোভৰ পৰা মুক্ত, সেই ভক্ত মোৰ প্ৰিয়।

সাধক সকলৰ বাবে এই শ্লোকটো অত্যন্ত উপযোগী। তেওঁলোক এই বিধেৰে থাকিব লাগিব যে মনে আঘাত নাপাওক। ইমানতো সাধকে কৰিব পাৰে, কিন্তু আনলোক এই আচৰণেৰে নচলে। তেওঁলোক সংসাৰীতো, তেওঁলোকে জুই ওলায়, সকলো কথা কয়; কিন্তু সাধকক লাগে যে নিজৰ হৃদয়ত তেওঁলোকৰ দ্বাৰা আঘাততো যাতে বিচ্ছিন্নতা নাহে, চিন্তনত সুৰত লাগি থাকক, ক্ৰম যাতে ভাঙি নাযায়। উদাহৰণৰ বাবে, ধৰক আপুনি নিজেই ৰাস্তাত নিয়ম অনুসৰি বাওঁফালে গৈ আছে, কোনোবাই মদ পান কৰি ঢলংপলং কৈ আহি আছে, তেতিয়া তাৰ পৰা ৰক্ষা পোৱাটো আপোনাৰ দায়িত্বও আছে।

অনপেক্ষঃ শুচিৰ্দক্ষ উদাসীনো গতব্যথঃ ।

সৰ্বাৰন্তপৰিত্যাগী যো মন্ত্ৰুক্তঃ স মে প্ৰিয়ঃ ॥ ১৬ ॥

যি পুৰুষে আকাংক্ষাৰ ৰহিত হৈ, সকলো সময়ত পবিত্ৰ হৈ অৰ্থাৎ আৰাধনাৰ বিশেষজ্ঞ হৈ, (এনে নহয় যে চুৰি কৰাত দক্ষ আছে। শ্ৰীকৃষ্ণৰ অনুসৰি কৰ্ম একেই নিৰ্দিষ্ট কৰ্ম - আৰাধনা চিন্তন, তাত যি দক্ষ) যি পক্ষ-বিপক্ষত দূৰ থাকে, দুখৰ পৰা মুক্ত, সকলো আৰম্ভনিক ত্যাগ কৰা তেওঁমোৰ ভক্ত মোৰ প্ৰিয় হয়। কৰাৰ যোগ্য কোনো ক্ৰিয়াই তেওঁৰ দ্বাৰা আৰম্ভ হ'বলৈ বাকী নাথাকে।

যো ন হৃষ্যতি ন দ্বেষ্টি ন শোচতি ন কাঙ্ক্ষতি।

শুভাশুভপৰিত্যাগী ভক্তিমান্যঃ স মে প্ৰিয়ঃ।। ১৭।।

যি কেতিয়াও হৰ্ষিতো নহয়, দ্বেষো নকৰে, শোকে নকৰে, কামনাও নকৰে, যি শুভ আৰু অশুভ সম্পূৰ্ণ কৰ্ম ফলক ত্যাগ কৰে, যাৰ কোনো শুভ বেলেগে নাই, অশুভও বাকী নাই, ভক্তিৰ এই পৰাকাষ্ঠাৰে যুক্ত সেই পুৰুষ মোৰ প্ৰিয়।

সমঃ শত্রৌ চ মিত্ৰে চ তথা মানাপমানয়োঃ।

শীতোষ্ণঃসুখদুঃখেষু সমঃ সঙ্গবিরজিতঃ।। ১৮।।

যি পুৰুষে শত্ৰু আৰু মিত্ৰতা, মান আৰু অপমানত সমভাৱ ৰাখে, যাৰ অন্তঃ কৰণৰ বৃত্তিবোৰ সৰ্বপ্ৰকাৰে শান্ত হৈ গৈছে, যি জনে শীত-তাপ-সুখ-দুখ আদি দ্বন্দ্বৰ মাজতো সমভাৱ ৰাখে আৰু আসক্তি ৰহিত হৈ আছে -

তুল্যানিন্দাস্তুতিমৌনী সন্তুষ্টো যেন কেনচিৎ।

অনিকেতঃ স্থিৰমতিৰ্ভক্তিমান্নে প্ৰিয়ো নৰঃ।। ১৯।।

যি জনে নিন্দা আৰু প্ৰশংসাক সমান বুলি ভাৱে, মননশীলতাৰে চৰম সীমা পাই যাৰ মনেৰে সৈতে ইন্দ্ৰিয় সমূহ শান্ত হৈ গৈছে, যি জনে কোনো প্ৰকাৰেই জীৱন নিৰ্বাহত সদায় সন্তুষ্ট, যি জন নিজৰ নিবাস স্থলত প্ৰতি মমতা ৰহিত হৈ আছে, ভক্তিৰ পৰাকাষ্ঠালৈ পোৱা সেই স্থিৰ বুদ্ধি সম্পন্ন পুৰুষ মোৰ প্ৰিয়।

যেতুধৰ্ম্যামৃতমিদং যথোক্তং পৰ্যুপাসতে।

শ্ৰদ্ধানা মৎপৰমা ভক্তান্তেহতীৰ মে প্ৰিয়ঃ।। ২০।।

যি জনে মোৰ পৰায়ণ হৈ হাৰ্দিক শ্ৰদ্ধায়ুক্তৰে উপৰোক্ত ধৰ্মময়
অমৃতক ভালদৰে সেৱন কৰে, সেই মুক্ত মোৰ অত্যন্ত প্ৰিয়।

নিষ্কৰ্ষ :-

যোৱা আধ্যায়ৰ শেষত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছিল যে, অৰ্জুন!
তোমাৰ বাদে কোনেও নেদেখিছিল আৰু কোনেও দেখা নাপাব - যি দৰে
তুমি দেখিলা। কিন্তু অনন্য ভক্তি বা অনুৰাগেৰে সৈতে যি জনে ভজে, তেওঁ
এইদৰেই মোক দেখিব পাৰিব, তত্বৰে সৈতে মোক জানিব পাৰিব আৰু মোত
প্ৰৱেশ প্ৰাপ্ত কৰিব। অৰ্থাৎ পৰমাত্মা এনে এটি সত্তা, যাক পাব পাৰি। সেয়ে
অৰ্জুনঙ্গ ভক্ত হোৱা।

অৰ্জুনে এই আধ্যায়ত প্ৰশ্ন কৰিলে যে ভগৱান! অনন্য ভাৱেৰে যি
আপোনাৰ চিন্তন কৰে, আৰু অন্য সেইজন যি জনে অক্ষৰ অব্যক্তক উপাসনা
কৰে, এই দুটাৰ ভিতৰত উত্তম যোগবেত্তা কোন হয়? যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই
কলে যে দুইজনেই মোকে প্ৰাপ্ত কৰে, কিয়নো ময়েই অব্যক্ত স্বৰূপ। কিন্তু
যি জনে ইন্দ্ৰিয়ক বশত ৰাখি মনক চাৰিওফালৰ পৰা একগোট কৰি অব্যক্ত
পৰমাত্মাত আসক্ত হয়, তেওঁৰ পথত বিশেষ ক্লেশ আছে। যেতিয়ালৈকে
দেহাভিমান থাকিব, তেতিয়ালৈকে অব্যক্তস্বৰূপৰ প্ৰাপ্তী দুখপূৰ্ণ; কিয়নো
অব্যক্ত স্বৰূপতো চিন্তৰ নিৰোধ আৰু বিলয়কালত হে প্ৰাপ্ত হয়। তাৰ পূৰ্বে
তাৰ শৰীৰেই মাজত বাধাহৈ যায়।

‘মই হওঁ’, ‘মই হওঁ’, ‘মোক পাব লগা আছে’ - এনে দৰে কৈ
থাকোঁতেই শৰীৰৰ ফালে ঢাল খায়। তাৰ পৰিযোৱাৰ অধিক সম্ভাৱনা থাকে।
সেয়ে অৰ্জুন! তুমি সম্পূৰ্ণ কৰ্মক মোক অপণ কৰা অনন্য ভক্তিৰে মোৰ চিন্তন
কৰা। যি মোৰ পৰায়ণ ভক্তজন সম্পূৰ্ণ কৰ্মক মোকেই অপৰ্ন কৰি মানৱ
শৰীৰধাৰী মোক - “সগুণ যোগীৰ ৰূপৰ ধ্যানৰ দ্বাৰা তেলৰ ধাৰাৰ দৰে নিৰন্তৰ
চিন্তন কৰি থাকে, তাক মই শীঘ্ৰেই সংসাৰ সাগৰৰ পৰা উদ্ধাৰ কৰোঁতা হওঁ।
সেয়ে ভক্তিমাৰ্গ শ্ৰেষ্ঠ।

অৰ্জুন! মোত মন লগোৱা। মন নালাগিলে ও লগাবৰ অভ্যাস কৰা।

চিত্ত য'লৈ যায় তাক টানি আনি নিৰোধ কৰা। এইটোও কৰিবলৈ অসমৰ্থ হ'লে তুমি কৰ্ম কৰা। কৰ্ম একেটাই, যজ্ঞাৰ্থ কৰ্ম। তুমি “কাৰ্য্যাম্ কৰ্ম” কৰ্ম কৰি যোৱা, অন্য নহয়। সিমানেই কৰা পাৰ হওক বা নহওক। যদি এইটোও কৰিবলৈ সমৰ্থ নহয় তেতিয়াহলে, স্থিতপ্ৰজ্ঞ, আত্মৱান, তত্ত্বজ্ঞ মহাপুৰুষৰ শৰণ লৈ সম্পূৰ্ণ কৰ্মফলক ত্যাগ কৰা। এনেদৰে ত্যাগ কৰিলে তুমি পৰম শান্তি প্ৰাপ্ত কৰিবা।

তাৰ পিছত পৰমশান্তি প্ৰাপ্ত হোৱা ভক্তৰ লক্ষণ যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কয় - যি সম্পূৰ্ণ ভূত-প্ৰানীত দ্বেষভাৱ নাৰাখে, যি কৰুণাৰে যুক্ত আৰু দয়ালু, মমতা আৰু অহংকাৰ ৰহিত, সেই ভক্ত মোৰ প্ৰিয়। যি ধ্যান-যোগত নিৰন্তৰ তৎপৰ আৰু আত্মৱান, আত্মস্থিত সেই ভক্ত মোৰ প্ৰিয়। যিয়ে কাকো উদ্বেগীত নবনায় আৰু স্বয়ং যি জন উদ্বেগহীন এনে ভক্ত মোৰ প্ৰিয়। যি শুদ্ধ, দক্ষ, দুখভাবহীন, সকলো কৰ্ম আৰম্ভক ত্যাগ কৰি যি জন পাৰ হৈছে, এনে ভক্ত মোৰ প্ৰিয়। সম্পূৰ্ণ কামনাৰ ত্যাগ কৰোঁতা আৰু শুভ-অশুভৰ দূৰত থকাজন মোৰ প্ৰিয়। যি নিন্দা আৰু স্তুতিত সমান আৰু মৌনী, মনেৰে সৈতে যাৰ ইন্দ্ৰিয়সমূহ শান্ত হৈ গৈছে, যি জন যি কোনো প্ৰকাৰেৰে জীৱন নিৰ্বাহত সন্তুষ্ট, আৰু থকা ঠাইৰ প্ৰতিও মমতা নাই, শৰীৰ ৰক্ষাৰ বাবে যাৰ কোনো আসক্তি নাই, এনে স্থিতপ্ৰজ্ঞ ভক্তিবান পুৰুষ মোৰ অত্যন্ত প্ৰিয়।

এইদৰে এঘাৰ শ্লোকৰ পৰা উন্নৈশ শ্লোকলৈকে যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই শান্তি প্ৰাপ্ত যোগযুক্ত ভক্তৰ অৱস্থাৰ ওপৰত প্ৰকাশ কৰিলে, যি সাধকৰ কাৰণে অত্যন্ত উপযোগী। শেষত নিৰ্ণয় দি তেখেতে ক'লে - অৰ্জুন! যি মোৰ পৰাষণ হৈ, শ্ৰদ্ধায়ুক্ত হৈ উপৰোক্ত ধৰ্মময় অমৃতক নিষ্কাম ভাৱেৰে উত্তম প্ৰকাৰে আচৰণত পেলায়, সেই ভক্ত মোৰ অতিশয় প্ৰিয়। সেয়ে সমৰ্পনেৰে সৈতে এই কৰ্মত প্ৰবৃত্ত হোৱাই শ্ৰেয়তৰ, কিয়নো তাৰ লাভ লোকচানৰ দায়িত্ব সেই জন ইষ্ট সদ্গুৰুৱে নিজৰ ওপৰত লয়। ইয়াত শ্ৰীকৃষ্ণই স্বৰূপস্থ মহাপুৰুষৰ লক্ষণ কৈছে আৰু তেওঁৰ শৰণত যাবলৈ কৈছে আৰু শেষত নিজৰ শৰণত আহিবৰ বাবে প্ৰেৰণা দি সেই মহাপুৰুষৰ সমকক্ষ বুলি নিজক ঘোষণা কৰিছে। শ্ৰীকৃষ্ণ এজন যোগী, মহাপুৰুষ, মহাত্মা আছিল।

এই আধ্যাত ভক্তিক শ্ৰেষ্ঠ বুলি কোৱা হৈছে, সেয়ে এই আধ্যাতৰ নামাকৰণ 'ভক্তিয়োগ' যুক্তি সংগত হৈছে।

এইদৰে শ্ৰীমৎভাগৱৎগীতাৰূপী উপনিষদ এবং ব্ৰহ্মবিদ্যা তথা যোগশাস্ত্ৰ বিষয়ক শ্ৰীকৃষ্ণ আৰু অৰ্জুনৰ সম্বাদত 'ভক্তিয়োগ' নামৰ বাৰ আধ্যাত পূৰ্ণ হ'ল।

ইতি শ্ৰীমৎপৰমহংস পৰমানন্দস্য শিষ্য স্বামী অড়গড়ানন্দ কৃতে শ্ৰীমৎভাগৱৎগীতায়ঃ 'যথার্থ গীতা' ভাষ্য 'ভক্তিয়োগো' নাম দ্বাদশোহধ্যায় ॥ ১২ ॥

॥ হৰি ওঁ তৎসৎ ॥

‘ওঁ’

শ্ৰীপৰমাত্মনে নমঃ

অথ ব্ৰয়োদশোহধ্যায়ঃ

গীতাৰ আৰম্ভনীতেই ধৃতৰাষ্ট্ৰৰ প্ৰশ্ন আছিল যে, সঞ্জয়! ধৰ্মক্ষেত্ৰ তথা কুৰুক্ষেত্ৰত যুদ্ধৰ অভিনায লৈ একত্ৰিত হোৱা মোৰ আৰু পাণ্ডু পুত্ৰ সকলে কি কৰিলে? এতিয়ালৈকে এইটো কোৱা নাই যে সেই ক্ষেত্ৰতো ক’ত? কিন্তু যি মহাপুৰুষে যি ক্ষেত্ৰত যুদ্ধৰ কথা কৈছিল, স্বয়ং তেখেতেই সেইক্ষেত্ৰৰ বিষয়ে প্ৰস্তুত আধ্যাত নিৰ্ণয় দি কৈছে যে সেই ক্ষেত্ৰ বস্তুতঃ ক’ত?

শ্ৰীভগবানুবাচ

ইদং শৰীৰং কৌন্তেয় ক্ষেত্ৰমিত্যভিধীয়তে।

এতদ্যো বেত্তি তং প্ৰাৰুঃ ক্ষেত্ৰজ্ঞ ইতি তদ্বিদঃ ॥ ১ ॥

হে কৌন্তেয়! এই শৰীৰেই এটা ক্ষেত্ৰ হয় আৰু যি জনে ইয়াক ভালদৰে জানে তেৱে ক্ষেত্ৰজ্ঞ। তেওঁ ইয়াত বান্ধ নাখাই আনকি তাৰ সঞ্চালন হে কৰে। এনেকৈ সেই তত্ত্বক বিদিত কৰোঁতা মহাপুৰুষে কৈছে।

শৰীৰতো একেটাই, তাতে ধৰ্মক্ষেত্ৰ আৰু কুৰুক্ষেত্ৰ - এইদুটা ক্ষেত্ৰ কেনেকৈ হ’ল? বস্তুতঃ এই একেই শৰীৰৰ অন্তৰালত অন্তঃকৰণৰ দুটা প্ৰবৃত্তি বহুত পুৰাতন হয়, এটা হ’ল পৰমধৰ্ম পৰমাত্মাত প্ৰৱেশ দিব পৰা পূণ্যময়ী প্ৰবৃত্তি দৈৱী সম্পদ আৰু সিটো হ’ল - আসুৰী সম্পদ, দুষিত দৃষ্টিকোণেৰে যাৰ গঠন হৈছে, যি নশ্বৰ সংসাৰত বিশ্বাস আনে। যেতিয়া আসুৰী সম্পদৰ বাহুল্যতা হয়, তেতিয়া এই শৰীৰ ‘কুৰুক্ষেত্ৰ’ হৈ যায় আৰু যেতিয়া এই শৰীৰৰ অন্তৰালত দৈৱী সম্পদৰ বাহুল্যতা হয়, তেতিয়া এই শৰীৰক ‘ধৰ্মক্ষেত্ৰ’ বোলা হয়। এই উঠা-নমা-সমানে থাকে; কিন্তু তত্বদৰ্শী মহাপুৰুষৰ

সান্নিধ্যলৈ গৈ যেতিয়া কোনোবাই অনন্য ভক্তিৰ দ্বাৰা আৰাধনাত প্ৰবৃত্ত হয়, তেতিয়া দুটা প্ৰবৃত্তিৰ নিৰ্ণায়ক যুদ্ধৰ সুত্ৰপাত হয়। ক্ৰমশঃ দৈৱী সম্পদৰ উত্থান হব ধৰে আৰু আসুৰী সম্পদৰ শমন হয়। আসুৰী সম্পদৰ পূৰ্ণ শমনৰ পিছত পৰমৰ দিক্‌দৰ্শনৰ অৱস্থা প্ৰাপ্ত হয়। দৰ্শনৰ লগে-লগে দৈৱী সম্পদৰো আৱশ্যকতা নাইকিয়া হৈ যায়। সেইটো পৰমাত্মাত নিজেই বিলয় হৈ যায়। ভজন কৰোঁতা পুৰুষ পৰমাত্মাত প্ৰৱেশ প্ৰাপ্ত কৰে। এঘাৰ আধায়ত অৰ্জুনে দেখিছিল যে কৌৰৱ-পক্ষৰ লগতে পাণ্ডৱ-পক্ষৰ যোদ্ধা বিলাকো যোগেশ্বৰত বিলীন হৈ গৈ আছিল। এই বিলয়ৰ পাছত পুৰুষৰ যি স্বৰূপ হয়, সেয়াই ক্ষেত্ৰজ্ঞ। আগলৈ চাওক -

ক্ষেত্ৰজ্ঞং চাপি মাং বিদ্ধি সৰ্বক্ষেত্ৰেষু ভাৰত।

ক্ষেত্ৰক্ষেত্ৰজ্ঞয়োজ্ঞানং যত্তজ্ঞানং মতং মম ॥ ২ ॥

হে অৰ্জুন! তুমি সকলো ক্ষেত্ৰত ক্ষেত্ৰজ্ঞ বুলি মোকেই জানা অৰ্থাৎ মইও ক্ষেত্ৰজ্ঞ। ‘ যি এই ক্ষেত্ৰক জানে তেৱে ক্ষেত্ৰজ্ঞ? এনেদৰে তেওঁক সাক্ষ্যাৎ জানোতা মহাপুৰুষ সকলে কৈছে আৰু শ্ৰীকৃষ্ণই কয় মইয়ো ক্ষেত্ৰজ্ঞ অৰ্থাৎ শ্ৰীকৃষ্ণও এজন যোগেশ্বৰ আছিল। ক্ষেত্ৰ আৰু ক্ষেত্ৰজ্ঞ অৰ্থাৎ বিকাৰেৰে সৈতে প্ৰকৃতি আৰু পুৰুষৰ তত্বক জনাই হ’ল জ্ঞান। মোৰ মতে এই সকলোখিনি সাক্ষাৎকাৰৰ সৈতে জনাটোৱেই হ’ল জ্ঞান। কোনো তৰ্কৰ নাম জ্ঞান নহয়।

তৎক্ষেত্ৰং যচ্চ যাদৃক্চ যদ্বিকাৰি যতশ্চ যৎ।

স চ যো যৎপ্ৰভাৱশ্চতৎসমাসেন মে শৃণু ॥ ৩ ॥

সেই ক্ষেত্ৰ যেনেকুৱা, আৰু যি বিকাৰ থকা তথা যি কাৰণে হয় তথা সেই ক্ষেত্ৰজ্ঞও যি আৰু যি প্ৰভাৱ থকা হয়, সেই সকলোবোৰ মোৰ পৰা সংক্ষেপতে শুনা। সেই ক্ষেত্ৰ বিকাৰ থকা হয়, কোনো কাৰণতে হয়, অথবা ক্ষেত্ৰজ্ঞ মাত্ৰ প্ৰভাৱযুক্ত হয়। মই কওঁ- এনে দৰে নহয়। ঋষিয়েও কৈছিলে-

ঋষিভিৰ্বহুধা গীতং ছন্দোভিৰিৰিধৈঃ পৃথক্।

ব্ৰহ্মসূত্ৰপদৈশ্চৈৰ হেতু মন্ত্ৰিৰ্বিনিশ্চিতৈঃ ॥ ৪ ॥

এই ক্ষেত্ৰ আৰু ক্ষেত্ৰজ্ঞৰ তত্ত্ব ঋষিসকলৰ দ্বাৰা বহুত প্ৰকাৰে গাইছে তথা নানা প্ৰকাৰৰ বেদৰ মন্ত্ৰনাৰ দ্বাৰা বিভাজিত কৰিও কোৱা হৈছে তথা বিশেষ ৰূপেৰে নিশ্চিত কৰি ব্ৰহ্মসূত্ৰৰ বাক্যৰ দ্বাৰাও তাকেই কোৱা হৈছে। অৰ্থাৎ বেদান্ত, মহৰ্ষি, ব্ৰহ্মসূত্ৰ আৰু আমি একেই কথা কবলৈ গৈছো। শ্ৰীকৃষ্ণই তাকে কৈছে, যি এওঁলোকে কৈছিলে। কি শৰীৰ (ক্ষেত্ৰ) ইমানেই নে যিমান দেখা গৈছে? ইয়াত শ্ৰীকৃষ্ণই কয়-

মহাত্তান্যহঙ্কাৰ বুদ্ধিব্যক্তমেৰ চ।

ইন্দ্ৰিয়াণি দশৈকং চ পঞ্চ চেন্দ্ৰিয়গোচৰাঃ ॥ ৫ ॥

অৰ্জুন! পঞ্চ মহাত্ত (ক্ষিতি, জল, পাৰক, গগন, সমীৰ) অহংকাৰ, বুদ্ধি আৰু চিত্ত (চিত্তৰ নাম নলৈ তাক অব্যক্ত পৰা প্ৰকৃতি কোৱা হৈছে। অৰ্থাৎ মূল প্ৰকৃতিৰ ওপৰত প্ৰকাশ কৰা হৈছে, য'ত পৰা প্ৰকৃতিও সন্মিলিত আছে, উপৰোক্ত আঠোটা অষ্টধা মূল প্ৰকৃতি হয়) তথা দহ ইন্দ্ৰিয় সমূহ (চকু, কান, নাক, ত্বচা, জীভা, বসনা, হাত, ভৰি, লিংগ, গুদা) এটা মন আৰু এই পাঁচ ইন্দ্ৰিয়ৰ বিষয় সমূহ (ৰূপ, বস, গন্ধ, শব্দ আৰু স্পৰ্শ) আৰু

ইচ্ছা দ্বেষঃ সুখং দুঃখং সঙ্ঘাতশ্চেতনা ধৃতিঃ।

এতৎক্ষেত্ৰং সমাসেন সৰিকাৰমুদাহতম্ ॥ ৬ ॥

ইচ্ছা, দ্বেষ, সুখ-দুখ আৰু সকলোৰ মূল দেহ এই পিণ্ড, চেতনা আৰু ধৈৰ্য্য, এই দৰে বিকাৰেৰে সৈতে এয়াই ক্ষেত্ৰ, তোমাক সংক্ষেপতে ক'লো। সংক্ষেপত এয়াই ক্ষেত্ৰৰ স্বৰূপ, য'ত সীচাঁ ভাল-বেয়া বীজ সংস্কাৰৰ ৰূপত অংকুৰিত হয়। শৰীৰেই হ'ল ক্ষেত্ৰ। শৰীৰনো কিহেৰে গঠিত? এই পাঁচ তত্ত্ব, দহ ইন্দ্ৰিয় আৰু এটা মন ইত্যাদি ওপৰত দিয়া লক্ষণৰ দৰে লেখা হয়। এই সকলোৰ সামূহিক সংঘাতৰ পিণ্ডই হ'ল শৰীৰ। যেতিয়ালৈকে এই বিকাৰ থাকিব তেতিয়ালৈকে এই পিণ্ডও থাকিব। এইকাৰণেই যে ই বিকাৰৰ পৰা তৈয়াৰি। এতিয়া সেই ক্ষেত্ৰজ্ঞৰ স্বৰূপ চাওক, যি এই ক্ষেত্ৰত লিপ্ত নহয়, বৰঞ্চ তাৰ পৰা নিবৃত্ত হে-

অমানিত্বমদন্তিত্বমহিংসা ক্ষান্তিৰাজৰম্ ।

আচাৰ্যোপাসনং শৌচং স্তৈৰ্যমাত্মনিগ্রহঃ ॥ ৭ ॥

হে অৰ্জুন ! মান-অপমানৰ অভাৱ, দন্ত-আচৰণৰ অভাৱ অহিংসা (অৰ্থাৎ নিজৰ আৰু আনৰ কাৰো আত্মাক কষ্ট নিদিয়া হ'ল অহিংসা। অহিংসাৰ অৰ্থ এনে নহয় যে পৰৱৰ্তী নামাৰিবা। শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছিল যে নিজৰ আত্মাক অধোগতিলৈ নিনিবা। আত্মাক অধোগতিলৈ লৈ যোৱাই হ'ল হিংসা আৰু তাৰ উদ্ধৰগতি হ'ল অহিংসা। এনে পুৰুষ অন্যৰ আত্মাক উদ্ধৰমুখী কৰিবলৈ প্ৰয়ত্নশীল হয়। অৱশ্য ইয়াৰ আৰম্ভনী কাকো আঘাত নিদিয়াকৈ হৈ যায়। এইটো তাৰে অংগ-প্ৰত্যঙ্গ) সেয়ে অহিংসা, ক্ষমা, মন-বচনৰ সৰলতা, আচাৰ্যক উপাসনা অৰ্থাৎ শ্ৰদ্ধা-ভক্তি যুক্ত হৈ সদগুৰুৰ উপাসনা, সেৱা কৰা, পৱিত্ৰতা অস্তঃকৰণৰ স্থিৰতা, মন আৰু ইন্দ্ৰিয়েৰে সৈতে শৰীৰ নিগ্রহ আৰু-

ইন্দ্ৰিয়াৰ্থেষু বৈৰাগ্যমনহংকাৰ এব চ ।

জন্মমৃত্যুজৰাৰ্যাদিদুঃখদোষানুদৰ্শনম্ ॥ ৮ ॥

এই লোক আৰু পৰলোকক দেখি-শুনি ভোগত আসক্তিৰ অভাৱ, অহংকাৰৰ অভাৱ, জন্ম-মৃত্যু, বৃদ্ধাৱস্থা, ৰোগ আৰু ভোগ আদিত দুখ আছে বুলি দেখি বাৰে বাৰে চিন্তন কৰা-

অসক্তিবনভিষ্বঙ্গঃ পুত্ৰদাৰগৃহাদিষু ।

নিত্যং চ সমচিত্ত্ব মিস্টৌ নিষ্টৌপপত্তিষু ॥ ৯ ॥

পুত্ৰ, পত্নী, ধন আৰু গৃহ আদিত আসক্তিৰ অভাৱ, প্ৰিয় আৰু অপ্ৰিয়ৰ প্ৰাপ্তিত চিত্তৰ সদায় সম ভাৱ থকা (ক্ষেত্ৰজ্ঞৰ সাধনা স্ত্ৰী-পুত্ৰ, গৃহ আদিতেই আৰম্ভ হয়। যি-

ময়ি চানন্যযোগেন ভক্তিৰব্যভিচাৰিণী ।

ৱিৱিক্ত দেশসেবিত্বমৰতিৰ্জনসংসদি ॥ ১০ ॥

মোৰ (শ্ৰীকৃষ্ণ এজন যোগী আছিল অৰ্থাৎ এনে কোনো মহাপুৰুষত) অনন্য যোগেৰে অৰ্থাৎ যোগৰ অতিৰিক্ত একো স্মৰণ নকৰাকৈ, অব্যভিচাৰিণী ভক্তিৰে (ইষ্টৰ অতিৰিক্ত কাৰো চিন্তন নকৰা) একান্ত স্থানত থাকি, মানুহৰ মাজত থকাৰ আসক্তি যাৰ নাই, তথা

অধ্যাত্মজ্ঞাননিত্যত্বংতত্ত্ব জ্ঞানার্থদৰ্শনম্।

এতজ্জ্ঞানমিতি প্রোক্তমজ্ঞানং যদতোহন্যথা ॥ ১১ ॥

আত্মাৰ আধিপত্য থকা জ্ঞানত একৰস স্থিতি আৰু তত্ত্বজ্ঞানৰ অৰ্থস্বৰূপ পৰমাত্মাক সাক্ষাৎকাৰ কৰা - এই সকলো হ'ল জ্ঞান আৰু ইয়াৰ যি বিপৰীত, সেইবোৰ অজ্ঞানতা - এনেকৈ কোৱা হৈছে। সেই পৰমতত্ত্ব পৰমাত্মাক সাক্ষাৎকাৰেৰে সৈতে জানি লোৱাটোৱে হ'ল জ্ঞান। (চাৰি আধ্যাত্ম তেখেতে কৈছিল যে যজ্ঞৰ শেষত যজ্ঞই যি বাকী ৰাখে, সেই জ্ঞানামৃতক পান কৰোতা সনাতন ব্ৰহ্মত প্ৰবেশ পায়। ইয়াতো তাকেই কোৱা হৈছে যে তত্ত্ব স্বৰূপ পৰমাত্মাক সাক্ষাৎকাৰ কৰাৰ নামেই হ'ল জ্ঞান। তাৰ বিপৰীত সকলোৱে অজ্ঞান। অমানিত্ব ইত্যাদি উপৰোক্ত লক্ষনেই এই জ্ঞানৰ পূৰক। এই প্ৰশ্ন পূৰ্ণ হ'ল।

জ্ঞেয়ং যত্ত্বৎপ্ৰৰক্ষ্যামি যজ্জ্জাত্বামৃতমশ্বতে।

অনাদিমৎপৰং ব্ৰহ্ম ন সত্ত্বনাসদুচ্যতে ॥ ১২ ॥

অৰ্জুন ! যি জনাৰ যোগ্য আৰু যাক জানি মৰনশীল মনুষ্য অমৃত তত্ত্ব প্ৰাপ্ত কৰে, তাক মই ভালদৰে কম। সেই আদিৰহিত পৰম ব্ৰহ্মক সতও কোৱা নাযায় আৰু অসতো কোৱা নাযায়; কিয়নো যেতিয়ালৈকে সি বেলেগে থাকে তেতিয়ালৈকে সত আৰু যেতিয়া মনুষ্য তাতেই সোমাই পৰে তেতিয়াতো কিনো কব? এক হে থাকে, আনৰ ভাৱনাই নাথাকে। এনে স্থিতিত সেই ব্ৰহ্ম সতো নহয় অসতো নহয়, বৰঞ্চ যি স্বয়ং সহজ, সেয়াই হয়।

সৰ্বতঃপাণিপাদং তৎসৰ্বতোহক্ষিশিৰোমুখম্।

সৰ্বতঃশ্ৰুতিমল্লোকে সৰ্বমাবৃত্য তিষ্ঠতি ॥ ১৩ ॥

সেই ব্ৰহ্ম সকলো ফালৰ পৰা হাত ভৰি থকা, সকলো ফালৰ পৰা চকু-মূৰ থকা, মুখ থকা, তথা সকলো ফালৰ পৰা কান থকা শুনিবপৰা হয়, কিয়নো তেওঁ সংসাৰত সকলোতে ব্যাপ্ত হৈ আছে -

সৰ্বেন্দ্ৰিয়গুণাভাসং সৰ্বেন্দ্ৰিয়বিৰ্জিতম্ ।

অসক্তং সৰ্বভ্ৰূচৈৰ নিৰ্গুণং গুণভোক্তৃ চ ॥ ১৪ ॥

তেওঁ সম্পূৰ্ণ ইন্দ্ৰিয়ৰ বিষয়ক জানিছে, তথাপিও সমূহ ইন্দ্ৰিয়ৰ পৰা বহিত হৈ আছে। তেওঁ আসক্তি বহিত, গুণৰ অতিত হলেও সকলোকে ধাৰণ আৰু পোষণ কৰোঁতা আৰু সকলো গুণৰ ভোগ কৰোঁতা, অৰ্থাৎ একে-একে কৰি সকলো গুণক নিজতে লয় কৰি লৈছে। যেনেকৈ শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছে যে যজ্ঞৰ আৰু তপৰ ভোগ কৰোঁতা ময়েই। শেষত সম্পূৰ্ণ গুণ মোতেই বিলয় হৈ যায়।

বহিৰন্তশ্চ ভূতানাচৰং চৰমের চ ।

সুম্ভ্ৰাত্ত্বাদরিঞ্জয়ং দূৰস্থং চান্তিকে চ তৎ ॥ ১৫ ॥

সেই ব্ৰহ্ম সকলো জীৱধাৰী সকলৰ বাহিৰে ভিতৰে পৰিপূৰ্ণ হৈ আছে। চৰাচৰ ৰূপত তেওঁ আছে। সুম্ভ্ৰ হোৱাৰ বাবে তেওঁক দেখা নেপায়, বিজ্ঞয়, মন-ইন্দ্ৰিয়তকৈ দূৰত আছে তথা বহুত ওচৰত আছে আৰু অতি দূৰতো আছে।

অৰিভক্তং চ ভূতেশু ৰিভক্তমিৰ চ স্থিতম্ ।

ভূতভৰ্তৃ চ তজ্জ্ঞেয়ং গ্ৰসিষ্ণুঃ প্ৰভবিষ্ণু চ ॥ ১৬ ॥

অবিভাজ্য হৈও তেওঁ সম্পূৰ্ণ চৰাচৰ ভূত প্ৰাণীত বেলেগে বেলেগে হৈও একেই প্ৰতীত হয়। তেওঁ জনাৰ যোগ্য পৰমাত্মা সমস্ত ভূতক উৎপন্ন কৰোঁতা, ভৰণ-পোষণ কৰোঁতা আৰু শেষত সংহাৰ কৰোঁতাও হয়। ইয়াত বাহ্যিক আৰু আন্তৰিক দুই ভাৱকে সংকেত কৰা হৈছে। যেনে বাহিৰত জন্ম আৰু ভিতৰত জাগৃতি, বাহিৰত পালন আৰু ভিতৰত যোগক্ষেমৰ নিৰ্বাহ, বাহিৰত শৰীৰৰ পৰিবৰ্ত্তন আৰু ভিতৰত সৰ্বস্বৰ বিলয় অৰ্থাৎ ভূতৰ উৎপত্তিৰ কাৰণৰ লয় আৰু সেই লয়ৰ লগে-লগে নিজৰ স্বৰূপ প্ৰাপ্ত কৰা। এই সকলো সেই ব্ৰহ্মাৰে লক্ষণ হয়।

জ্যোতিষামপি তজ্জ্যোতিস্তমসঃ পৰমুচ্চতে ।

জ্ঞানং জ্ঞেয়ং জ্ঞানগম্যং হৃদি সৰ্বস্য বিষ্ঠিতম্ ॥ ১৭ ॥

সেই জ্ঞেয় ব্ৰহ্ম জ্যোতিৰো জ্যোতি, তমতকৈও অতি দুৰত বুলি কোৱা হয়। তেওঁ পূৰ্ণ জ্ঞান স্বৰূপ, পূৰ্ণ জ্ঞাতা, জানিবৰ যোগ্য আৰু জ্ঞান দ্বাৰা প্ৰাপ্ত হওঁতা। সাক্ষাৎকাৰৰ সৈতে জনাৰ নামেই হ'ল জ্ঞান। এনে জ্ঞানৰ দ্বাৰাহে সেই ব্ৰহ্ম প্ৰাপ্ত হোৱা সম্ভৱ। তেওঁ সকলোৰ হৃদয়ত স্থিত আছে, তেওঁৰ নিবাস স্থান হ'ল হৃদয়। অন্যত বিচাৰিলে তেওঁক পোৱা নাযায়। সেয়ে হৃদয়ত ধ্যান আৰু যোগাচৰণৰ দ্বাৰাহে সেই ব্ৰহ্ম প্ৰাপ্তীৰ বিধান আছে।

ইতি ক্ষেত্ৰং তথা জ্ঞানং জ্ঞেয়ং চোক্তং সমাসতঃ ।

মদ্ভক্ত এতদ্বিজ্ঞায় মন্ত্ৰায়াপদ্যতে ॥ ১৮ ॥

হে অৰ্জুন! মাত্ৰ ইমানেই ক্ষেত্ৰ, জ্ঞান তথা জানিবৰ যোগ্য পৰমাত্মাৰ স্বৰূপ সংক্ষেপতে কলোঁ। ইয়াক জানি মোৰ ভক্ত মোৰ সাক্ষাৎ স্বৰূপ প্ৰাপ্ত কৰে।

এতিয়ালৈকে যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই যাকক্ষেত্ৰ বুলি কৈছিল তাক প্ৰকৃতি আৰু যাক ক্ষেত্ৰজ্ঞ বুলি কৈছিল তাক এতিয়াৰ পৰা পুৰুষ শব্দেৰে ইংগিত কৰিছে -

প্ৰকৃতিং পুৰুষং চৈব ৰিদ্ধ্যানাদী উভাব্পি ।

বিকৰাংশ্চ গুণাংশ্চৈব বিদ্ধি প্ৰকৃতিসম্ভবান্ ॥ ১৯ ॥

এই প্ৰকৃতি আৰু পুৰুষ দুটাকেই অনাদি বুদ্ধি লোৱা, তথা সম্পূৰ্ণ বিকাৰ ত্ৰিগুণীময়ী প্ৰকৃতিৰ পৰাই উৎপন্ন হোৱা বুলি জানা।

কাৰ্যকৰণকৰ্হেতু হেতুঃ প্ৰকৃতিৰুচ্যতে ।

পুৰুষঃ সুখদুঃখ নাং ভোক্ত্বৈ হেতুৰুচ্যতে ॥ ২০ ॥

কাৰ্য্য আৰু কৰণ (যাৰ দ্বাৰা কাৰ্য্য কৰা হয়, বিবেক,বৈবাগ্য ইত্যাদি

তথা অশুভ কাৰ্য্য হোৱাৰ বাবে কাম, ক্ৰোধ ইত্যাদি কৰণ) ক উৎপন্ন কৰা হেতুকেই প্ৰকৃতি বুলি কোৱা হয় আৰু এই পুৰুষ সুখ-দুখ ভোগত কাৰণ হৈ পৰে। প্ৰশ্ন এটা আহে যে কি তেওঁ ভোগেই কৰি থাকিবনে তাৰ পৰা কেতিয়াবা বিচ্ছিন্নও হব? যেতিয়া প্ৰকৃতি পুৰুষ দুটাই অনাদি, তেতিয়াকোন ইয়াৰ পৰা বিচ্ছিন্ন হব? ইয়াত কয় -

পুৰুষঃ প্ৰকৃতিস্থো হি ভুঙ্তে প্ৰকৃতিজান্‌গুণান্।

কাৰণং গুণসঙ্গোহস্য সদসদ্যোনিজন্মসু।। ২১।।

প্ৰকৃতিৰ মাজত থকা পুৰুষেই প্ৰকৃতিৰ পৰা উৎপন্ন হোৱা গুণৰ কাৰ্য্যৰূপ পদাৰ্থৰ ভোগ কৰে আৰু এই গুণৰ সংগতেই এই জীৱাত্মাই ভাল আৰু বেয়া যোনীত জন্ম লোৱাৰ কাৰণ হৈ পৰে। এই কাৰণ অৰ্থাৎ প্ৰকৃতিৰ গুণৰ সংগ সমাপ্ত হলেহে জন্ম-মৃত্যুৰ পৰা হাত সাৰিব পাৰিব। এতিয়া সেই পুৰুষৰ ওপৰত প্ৰকাশ কৰি কয় যে তেওঁ কি দৰে প্ৰকৃতিৰ মাজত সোমায়?

উপদ্ৰষ্টানুমন্তা চ ভৰ্তা ভোক্তা মহেশ্বৰঃ।

পৰমাত্মেতি চাপ্যক্তো দেহেহস্মিন্‌পুৰুষঃ পৰঃ।। ২২।।

সেই পুৰুষ উপদ্ৰষ্টা, হৃদয়-দেশত বহুত ওচৰত, হাত-ভৰি-মন যিমান ওচৰত আছে, তাকৈ বহুত ওচৰত আপোনাৰ দ্ৰষ্টা ৰূপে স্থিত আছে। তেওঁৰ প্ৰকাশত আপোনাৰ ভাল-বেয়া তেওঁ প্ৰয়োজন নাভাৰে। তেওঁ সাক্ষীৰ ৰূপত ঠিয় হৈ আছে। সাধনাৰ শুদ্ধ ৰাস্তা ধৰি সাধক ওপৰলৈ উঠিলে, তেওঁৰ ফালে অগ্ৰসৰ হলে তেতিয়া দ্ৰষ্টা পুৰুষৰ ক্ৰম সলনী হৈ যায়, তেওঁ **অনুমন্তা** অনুমতি প্ৰদান কৰিবলৈ ধৰে, অনুভৱ দিবলৈ ধৰে। সাধনাৰ দ্বাৰা আৰু ওচৰ চাপিলে সেই পুৰুষ 'ভৰ্তা' হৈ ভৰণ-পোষণ কৰিবলৈ ধৰে, যত আপোনাৰ যোগক্ষেমৰো ব্যৱস্থা কৰি দিয়ে। সাধনা আৰু সুক্ষ্মতৰ হলে তেৱেঁ 'ভোক্তাৰং যজ্ঞ তপসাং' হৈ যায়। - যজ্ঞ, তপ যিয়েই হয়, সকলো সেই পুৰুষেই গ্ৰহণ কৰে; আৰু যেতিয়া গ্ৰহণ কৰি লয়, তাৰ পিছৰ অৱস্থাত মহান ঈশ্বৰৰ ৰূপত পৰিণত হৈ যায়। তেওঁ প্ৰকৃতিৰ স্বামী হৈ যায়; কিন্তু এতিয়া কৰবাত প্ৰকৃতি জীৱিত থাকিলেহে তাৰ মালিক হব। ইয়াতকৈও উন্নত অৱস্থাত সেই পুৰুষ যেতিয়া পৰমৰ লগত সংযুক্ত হৈ যায়, তেতিয়া তেওঁক পৰমাত্মা কোৱা

হয়। এইদৰে শৰীৰত থাকিও এই পুৰুষ আত্মা তেই থাকে, সম্পূৰ্ণ প্ৰকৃতিৰ পাৰত হয়। প্ৰাৰ্থক্য ইমানেই যে প্ৰথমে ই দৃষ্টা ৰূপত আছিল, ক্ৰমে ওপৰলৈ গৈ পৰমক স্পৰ্শ কৰি পৰমাত্মাৰ ৰূপত পৰিণত হৈ গ'ল।

য এৰং বেত্তি পুৰুষং প্ৰকৃতিং চ গুণৈঃ সহ।

সৰ্বথা বৰ্তমানোহপি ন স ভূয়োহভিজায়তে।। ২৩।।

এইদৰে পুৰুষক আৰু গুণেৰে সৈতে প্ৰকৃতিক যি মনুষ্যই সাক্ষাৎকাৰৰ সৈতে বিদিত কৰি লয়, তেওঁ সকলো প্ৰকাৰেৰে থাকিও নজন্মে অৰ্থাৎ পুনৰ জন্ম নহয়। এয়াই মুক্তি। এতিয়ালৈকে যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই ব্ৰহ্ম আৰু প্ৰকৃতিক প্ৰত্যক্ষ জনাৰ লগতে পাব পৰা পৰম গতি অৰ্থাৎ তাৰ পুনৰ জন্মৰ পৰা নিবৃত্তিৰ ওপৰত প্ৰকাশ কৰে আৰু এতিয়া তেওঁ সেই যোগৰ ওপৰত জোৰ দিছে যাৰ প্ৰক্ৰিয়াই হ'ল আৰাধনা। কিয়নো এই কৰ্মক কাৰ্য্যৰূপ নিদিয়াকৈ পাব নোৱাৰে।

ধ্যানেনাত্মনি পশ্যন্তি কেচিদাত্মানমাত্মনা।

অন্যে সাঙেখ্যন যোগেন কৰ্মযোগেন চাপৰে।। ২৪।।

হে অৰ্জুন! সেই পৰমাত্মাক বহুতো লোকে নিজৰ অন্তৰচিন্তনৰ দ্বাৰা ধ্যানৰ দ্বাৰাহৃদয়-দেশতে দেখে। বহুতেই সাংখ্য-যোগৰ দ্বাৰা (অৰ্থাৎ নিজৰ শাস্তিক নিৰ্ভৰ কৰি সেই কৰ্মত প্ৰবৃত্ত হয়) আৰু বহুতেই তাক নিষ্কাম কৰ্মযোগৰ দ্বাৰা দেখে। সমৰ্পণেৰে সৈতে সেই নিয়ত কৰ্মত প্ৰবৃত্ত হয়। প্ৰস্তুত শ্লোকত মুখ্য সাধনা হ'ল ধ্যান। সেই ধ্যানত প্ৰবৃত্ত হবৰ বাবে সাংখ্য যোগ আৰু নিষ্কাম কৰ্মযোগ দুটা বিধান আছে।

অন্যে ত্বেৰমজানন্তুঃ শ্ৰুত্বান্যেভ্য উপাসতে।

তেহপি চাতিতৰন্ত্যেব মৃত্যুং শ্ৰুতিপৰায়ণাঃ।। ২৫।।

কিন্তু অন্যবোৰ, যাৰ সাধনাৰ কোনো জ্ঞান নাই, তেওঁলোকে এইদৰে নেজানিও - তত্ত্বজ্ঞানী মহাপুৰুষৰ দ্বাৰা কোৱা শুনি উপাসনা কৰে আৰু শ্ৰৱণ-পৰায়ণ হোৱা পুৰুষো মৃত্যু-ৰূপী সংসাৰ সাগৰৰ পৰা নিঃসন্দেহে পাব হৈ

যায়। সেয়ে একো নহলেও সংসঙ্গ কৰা উচিত।

যাৰৎসঞ্জায়তে কিঞ্চিৎসত্ৰং স্থাৰৰজঙ্গমম্।
ক্ষেত্রক্ষেত্রঙ্গসংযোগাত্তদ্বিদ্ধি ভৰতৰ্ষভ ॥ ২৬ ॥

হে অৰ্জুন! যাবৎ যি কিছু স্থাৰৰ-জংগম বস্তু বিলাক উৎপন্ন হয়। সেই সম্পূৰ্ণকৈ তুমি ক্ষেত্র আৰু ক্ষেত্রঙ্গৰ সংযোগৰ পৰা উৎপন্ন হোৱা বুলি জানা।

প্ৰাপ্তী কেতিয়া হয়? এই বিষয়ত কয় -

সমং সৰ্বেষু ভূতেশু তিষ্ঠন্তং পৰমেশ্বৰম্।
বিনশ্যৎস্ববিনশ্যন্তং যঃ পশ্যতি স পশ্যতি ॥ ২৭ ॥

যি পুৰুষে বিশেষ ৰূপে নষ্ট হৈ থকা এই চৰাচৰৰ সকলো ভূতত অনাশৱান পৰমেশ্বৰক সমভাৱে স্থিত হৈ থকা দেখে, তেওঁহে যথার্থতে দেখিছে। অৰ্থাৎ সেই প্ৰকৃতিৰ বিশেষ ৰূপেৰে নষ্ট হলেহে তেওঁ পৰমাত্মস্বৰূপ হয়, তাৰ আগত নহয়। এই বিষয়ত আগত আঠ আধ্যায়তো কৈছিলে, - ভূতৰ সেই ভাৱ, যি (ভালবা বেয়া) যি কোনো (সংস্কাৰ) সংৰচনা কৰে, তাৰ নাই কিয়া হোৱাই হ'ল কৰ্মৰ পৰাকাষ্ঠা (শেষ)। সেই সময়ত কৰ্মপূৰ্ণ হয়। তাকে ইয়াতো কোৱা হৈছে যে যিয়ে চৰাচৰ ভূত-প্ৰাণীক নষ্ট হৈ থকা আৰু পৰমেশ্বৰক সমভাৱে থকা দেখে, তেওঁহে শুদ্ধ দেখিছে।

সমং পশ্যান্‌হি সৰ্বত্র সমৱস্থিতমীশ্বৰম্।
ন হিনস্ত্যাত্মনাত্মানং ততো যাতি পৰাং গতিম্ ॥ ২৮ ॥

কিয়নো সেই পুৰুষে সৰ্বত্র সমভাৱে স্থিত হৈ থকা পৰমেশ্বৰক সমানে (যেনে আছিল তেনে ভাৱে) দেখি নিজৰ দ্বাৰা নিজকে নষ্ট নকৰে। কিয়নো যেনে আছিল তেনেকৈ তেওঁ দেখিলে, সেইকাৰণে তেওঁ পৰমগতি প্ৰাপ্ত কৰে প্ৰাপ্তীৱান পুৰুষৰ লক্ষণ কয়-

প্রকৃতিৰ চ কৰ্মাণি ত্ৰিণ্যমাণানি সৰ্বশঃ।

যঃ পশ্যতি তথাহ্মানমকৰ্তাৰং স পশ্যতি ॥ ২৯ ॥

যি পুৰুষে সকলো কৰ্মক সকলো প্ৰকাৰেৰে প্ৰকৃতিৰ দ্বাৰাই কৰা হৈছে বুলি দেখে অৰ্থাৎ যেতিয়া লৈকে প্ৰকৃতি আছে তেতিয়া লৈকে কৰ্ম হোৱাও দেখে তথা আত্মাক অকৰ্তা হিচাপে দেখে, তেওঁহে যথার্থতে দেখে।

যদা ভূতপৃথগ্ভাৱসেকস্মনুপশ্যতি।

তত এব চ বিস্তাৰং ব্ৰহ্ম সম্পদ্যতে তদা ॥ ৩০ ॥

যি সময়ত মনুষ্যই ভূত বিলাকত বিভিন্ন ভাৱতো একেই পৰমাত্মা প্ৰবাহিত হৈ থকা দেখে তথা সেই পৰমাত্মাৰেই সম্পূৰ্ণ ভূতৰ বিস্তাৰ হোৱা দেখে, সেই সময়ত তেওঁ ব্ৰহ্ম প্ৰাপ্ত কৰে। যি সময়ত এই অৱস্থা হয়, সেই সময়তে তেওঁ ব্ৰহ্ম প্ৰাপ্ত কৰে। এই লক্ষণ স্থিতপ্ৰজ্ঞ মহাপুৰুষৰো হয়।

অনাদিত্বান্নিগুণত্বাপ্ৰমাত্মায়মব্যয়ঃ।

শৰীৰস্থেহপি কৌণ্ডেয় ন কৰোতি ন লিপ্যতে ॥ ৩১ ॥

হে কৌণ্ডেয়! অনাদি হোৱাৰ বাবে আৰু গুণাতীত হোৱাৰ বাবে এই অবিনাশী পৰমাত্মা শৰীৰত স্থিত হৈও বাস্তৱত নকৰেও আৰু ন লিপ্ত হৈ থাকে। কি দৰে?

যথা সৰ্বগতং সৌক্ষ্ম্যাদাকাশং নোপলিপ্যতে।

সৰ্বত্ৰাবস্থিতো দেহে তথাহ্মা নোপলিপ্যতে ॥ ৩২ ॥

যিদৰে সৰ্বত্ৰ ব্যাপ্ত হৈও আকাশ সুক্ষ্ম হোৱাৰ বাবে লিপ্ত নহয়, ঠিক তেনেদৰেই সৰ্বত্ৰ দেহত স্থিত হৈও আত্মা গুণাতীত হোৱাৰ কাৰণে দেহৰ গুণেৰে লিপ্ত নহয়। আগলৈ কয় -

যথা প্ৰকাশয়ত্যেকঃ কৃৎস্নং লোকমিমং ৰৰিঃ।

ক্ষেত্ৰং ক্ষেত্ৰী তথা কৃতস্নং প্ৰকাশয়তি ভাৰত ॥ ৩৩ ॥

হে অৰ্জুন! যিদৰে একে সূৰ্য্যই সম্পূৰ্ণ ব্ৰহ্মাণ্ডক প্ৰকাশিত কৰে,

সেইদৰে একে আত্মাই সম্পূৰ্ণ ক্ষেত্ৰক প্ৰকাশিত কৰে। শেষত নিৰ্ণয় দিয়ে -

ক্ষেত্ৰক্ষেত্ৰজ্ঞয়োৰেবমন্তুৰং জ্ঞানচক্ষুষা।

ভূতপ্ৰকৃতিমোক্ষং চ যে বিদুৰ্যাস্তি তে পৰম্।। ৩৪।।

এইদৰে ক্ষেত্ৰ আৰু ক্ষেত্ৰজ্ঞৰ প্ৰভেদক তথা বিকাৰেৰে সৈতে প্ৰকৃতিৰ পৰা মুক্ত হোৱা উপায় যি জনে জ্ঞানৰূপী নেত্ৰৰ দ্বাৰা চাইছে, সেই মহাত্মাজনে পৰব্ৰহ্ম পৰমাত্মাক প্ৰাপ্ত কৰে। অৰ্থাৎ ক্ষেত্ৰ-ক্ষেত্ৰজ্ঞক দেখাৰ চকু হ'ল জ্ঞান আৰু জ্ঞান হ'ল সাক্ষাৎ কাৰৰ পৰ্যায়।

নিষ্কৰ্ষ :-

গীতাৰ আৰম্ভনীত ধৰ্মক্ষেত্ৰ, কুৰুক্ষেত্ৰ নামতো লোৱা হৈছিল, কিন্তু সেই ক্ষেত্ৰ ক'ত আছে? সেই ঠাই কবলৈ বাকী আছিল, যিটো স্বয়ং শাস্ত্ৰকাৰে প্ৰস্তুত আধাৰত স্পষ্ট কৰি কৈছে যে হে কৌন্তেয়ঙ্গ এই শৰীৰেই হ'ল এটা ক্ষেত্ৰ। যি জনে ইয়াক জানে, তেওঁ ক্ষেত্ৰজ্ঞ। তেওঁ ইয়াত বান্ধ নাখায়, আনকি নিৰ্লেপ হৈ থাকে। ইয়াৰ সঞ্চালক হয়। অৰ্জুন! 'সম্পূৰ্ণ ক্ষেত্ৰত মইয়ো ক্ষেত্ৰজ্ঞ হওঁ' অন্য মহাপুৰুষৰ লগত নিজৰ তুলনা কৰিলে। তাৰ পৰা স্পষ্ট হ'ল যে শ্ৰীকৃষ্ণও এজন যোগী আছিল; কিয়নো যি জনে জানে, তেওঁ ক্ষেত্ৰজ্ঞ, এইদৰে

মহাপুৰুষে কৈছে। মইও ক্ষেত্ৰজ্ঞ অৰ্থাৎ অন্য মহাপুৰুষৰ দৰে ময়ো। তেখেতে ক্ষেত্ৰ যেনেকুৱা যি বিকাৰেৰে পৰিপূৰ্ণ, ক্ষেত্ৰজ্ঞ যি প্ৰভাৱ থকা তাৰ ওপৰত ক'লে। ময়ে যে কৈছো এনে নহয়, মহৰ্ষি সকলেও কৈছে এইদৰে। বেদৰ ছন্দতো তাকে বিভাজিত কৰি দেখুৱা আছে। ব্ৰহ্মসূত্ৰতো সেয়ে পোৱা যায়। শৰীৰ (যি ক্ষেত্ৰ) কি ইমানেই নে, যিমান দেখা যায়? এই দেহা হোৱাত ডাঙৰ হাত আছে, তাকে লেখি কয় যে অষ্টধা মূল প্ৰকৃতি, অব্যক্ত প্ৰকৃতি, দহ ইন্দ্ৰিয় সমূহৰ সৈতে মন, ইন্দ্ৰিয় সমূহৰ পাচোঁটা বিষয় আশা, তৃষ্ণা, বাসনা, এইদৰে এই বিকাৰ সমূহৰ মিশ্ৰণ হ'ল শৰীৰ। যেতিয়ালৈকে এইবোৰ থাকে, তেতিয়ালৈকে শৰীৰ কোনোবা ৰূপত থাকেই। এয়েই ক্ষেত্ৰ, য'ত সিঁচা ভাল-বেয়া বীজ সংস্কাৰ ৰূপত উৎপন্ন হয়। যি জনে

ইয়াৰ পৰা পাৰ পায়, তেওঁ ক্ষেত্ৰজ্ঞ। ক্ষেত্ৰজ্ঞৰ স্বৰূপ কৈ তেখেতে ঈশ্বৰীয় গুণ ধৰ্মৰ ওপৰত প্ৰকাশ কৰিলে আৰু কলে যে ক্ষেত্ৰজ্ঞ এই ক্ষেত্ৰৰ প্ৰকাশক।

তেখেতে কলে যে সাধনাৰ শেষত পৰমতত্ত্ব পৰমাত্মাৰ প্ৰত্যক্ষ দৰ্শনই হ'ল জ্ঞান। জ্ঞানৰ অৰ্থ হ'ল সাক্ষাৎকাৰ তাৰ অতিৰিক্ত যি কিছুৱে অজ্ঞানতা। জনাৰ যোগ্য বস্তু হ'ল পৰাৎপৰ ব্ৰহ্ম। তেওঁ ন সত্ ন অসত। এই দুটাৰ পাৰত। তাক জানিবৰ বাবে লোকে হৃদয়ত ধ্যান কৰে, বাহিৰত মুৰ্ত্তী ৰাখি নহয়। বহুতো লোক আছে তেওঁলোকে সাংখ্য মাধ্যমেৰে ধ্যান কৰে, কিছুমানে নিৰ্ৰাম কৰ্মযোগ, সমৰ্পণেৰে সৈতে তাৰ প্ৰাপ্তীৰ বাবে সেই নিৰ্দ্ৰাৰিত কৰ্ম আৰাধনাৰ আচৰণ কৰে। যি বিলাকে তাৰ বিধি নাজানে, তেওঁলোকে তত্ত্বস্থিত মহাপুৰুষৰ দ্বাৰা কোৱা শুনি আচৰণ কৰে। তেওঁলোকেও পৰম কল্যাণ প্ৰাপ্ত কৰে। সেয়ে একো বুজি নাপালেও, তাৰ জ্ঞাতা মহাপুৰুষৰ সংসঙ্গৰ আৱশ্যক আছে।

স্থিতপ্ৰজ্ঞ মহাপুৰুষৰ লক্ষণ কৈ যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কয় যে যেনেকৈ আকাশ সৰ্বত্ৰ সমভাৱে থাকিও নিৰ্লেপ হৈ আছে যেনেদৰে সূৰ্য্য সৰ্বত্ৰ প্ৰকাশ দিও নিৰ্লেপ হৈ আছে, ঠিক সেইদৰে স্থিতপ্ৰজ্ঞ পুৰুষ সৰ্বত্ৰ সম ঈশ্বৰৰ দৰে, তেনেদৰে দেখাৰ ক্ষমতাৱান পুৰুষ ক্ষেত্ৰৰে অথবা প্ৰকৃতিৰে সৰ্বদা নিৰ্লেপ আছে। শেষত তেখেতে নিৰ্ণয় দিলে যে ক্ষেত্ৰ আৰু ক্ষেত্ৰজ্ঞক জনাটো জ্ঞানৰূপী নেত্ৰৰ দ্বাৰাহে সম্ভৱ। জ্ঞান, যেনেকৈ আগতে কোৱা হৈছে, সেই পৰমাত্মাক প্ৰত্যক্ষ দৰ্শনৰ সহিতে জানিব পৰা জানকাৰী। বহুশাস্ত্ৰ ঘূৰাই ঘূৰাই পঢ়িলে জ্ঞান নহয়, বৰঞ্চ অধ্যয়ন তথামহাপুৰুষৰ সেই কৰ্মক বুজি লৈ সেই কৰ্মৰ ওপৰত চলি, মনেৰে সৈতে ইন্দ্ৰিয় সমূহক নিৰোধ কৰি আৰু সেই নিৰোধৰো বিলয়কালত পৰম তত্ত্বক দেখাৰ লগে লগে যি অনুভূতি হয়, সেই অনুভূতিৰ নামেই জ্ঞান। ক্ৰিয়াৰ আৱশ্যক। এই আধ্যাত মুখ্যতঃ ক্ষেত্ৰজ্ঞৰ বিস্তাৰেৰে বৰ্ণন কৰা হ'ল। বস্তুতঃ ক্ষেত্ৰৰ স্বৰূপ ব্যাপক; শৰীৰ কবলৈতো সহজ কিন্তু শৰীৰৰ সম্বন্ধ কলৈকে আছে? সমগ্ৰ ব্ৰহ্মাণ্ডৰমূল প্ৰকৃতিৰ বিস্তাৰ

হ'ল শৰীৰ। অনন্ত অন্তৰীক্ষ লৈকে আপোনাৰ শৰীৰৰ বিস্তাৰ আছে।
তেওঁলোকৰ দ্বাৰা আপোনাৰ জীৱন ইন্ধন যুক্ত হৈ আছে, সেই বিলাকৰ
অবিহনে আপুনি জীয়াই থাকিব নোৱাৰিব। এই ভূমণ্ডল, বিশ্বজগত দেশ-
প্ৰদেশ আৰু আপোনাৰ এই দেখি থকা শৰীৰ সেই প্ৰকৃতিৰ এটুকুৰাও নহয়।
এইদৰে ক্ষেত্ৰেই বিস্তাৰ এই আধ্যাত বৰ্ণন কৰা হ'ল। সেয়ে

এইদৰে শ্ৰীমৎভাগৱৎগীতৰূপী উপনিষদ এবং ব্ৰহ্মবিদ্যা তথা
যোগশাস্ত্ৰ বিষয়ক শ্ৰীকৃষ্ণ আৰু অৰ্জুনৰ সম্বাদৰ “ক্ষেত্ৰ-ক্ষেত্ৰজ্ঞ বিভাগ যোগ”
নামৰ তেৰ আধ্যায় পূৰ্ণ হ'ল।

ইতি শ্ৰীমৎপৰমহংস পৰমানন্দস্য শিষ্য স্বামী অড়গড়ানন্দকৃতে
শ্ৰীমৎভাগৱৎগীতয়াঃ ‘যথার্থ গীতা’ ভাষ্য ‘ক্ষেত্ৰ-ক্ষেত্ৰজ্ঞ বিভাগযোগো’ নাম
ত্ৰয়োদশোহধ্যায় ॥১৩॥

॥ হৰি ওঁ তৎসৎ ॥

‘ওঁ’

শ্ৰীপৰমাত্মনে নমঃ

অথ চতুৰ্দশোহধ্যায়ঃ

আগৰ বহুতো আধ্যায় বিলাকত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই জ্ঞানৰ স্বৰূপ স্পষ্ট কৰিছে। ৪/১৯ আধ্যায়ত তেখেতে কৈছে যে যি পুৰুষৰ দ্বাৰা সম্পূৰ্ণতাৰে আৰম্ভ কৰা নিৰ্দিষ্ট কৰ্মৰ আচৰণে ক্ৰমশঃ উত্থান হৈ ইমান সুক্ষ্ম হৈ যায় যে কামনা আৰু সংকল্পৰ সম্পূৰ্ণ শমন হৈ যায়, সেই সময়ত যাক তেওঁ জানিব বিচাৰিছে তেওঁৰ প্ৰত্যক্ষ অনুভূতি হৈ যায়, সেই অনুভূতিৰ নামেই হ’ল জ্ঞান। তেৰ আধ্যায়ত জ্ঞানৰ পৰিভাষা দি কৈছে ‘অধ্যাত্মজ্ঞান নিত্যত্বং তত্ত্বজ্ঞানার্থ দৰ্শনম্’ আত্মজ্ঞানত একবস স্থিতি আৰু তত্বৰ অৰ্থ স্বৰূপ পৰমাত্মাৰ প্ৰত্যক্ষ দৰ্শনেই জ্ঞান। ক্ষেত্ৰ-ক্ষেত্ৰজ্ঞৰ ভেদক বিদিত কৰি লোৱাটোৱে হ’ল জ্ঞান। জ্ঞানৰ অৰ্থ শাস্ত্ৰাৰ্থ নহয়। শাস্ত্ৰ মনত বখাটো জ্ঞান নহয়। অভ্যাসৰ সেই অৱস্থাই জ্ঞান, যত সেই তত্ব বিদিত হয় পৰমাত্মাৰ সাক্ষাৎকাৰৰ লগতে পাব পৰা অনুভূতিৰ নামেই জ্ঞান, তাৰ বিপৰীত সকলো খিনি অজ্ঞানতা।

এইদৰে সকলো খিনি কোৱাৰ পিছতো চৈধ্য আধ্যায়ত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছে যে অৰ্জুন! সেই জ্ঞানতকৈও পৰম উত্তম জ্ঞান মই আকৌ তোমাৰ বাবে কম। যোগেশ্বৰে তাকে পুনৰাবৃত্তি কৰিব বিচাৰিছে; কিয়নো ‘শাস্ত্ৰ সুচিন্তিত পুনি পুনি দেখিয়’ ভালদৰে চিন্তন কৰা শাস্ত্ৰও বাৰে বাৰে চাব লাগে। ইমানেই নহয়, যেতিয়াই আপুনি সাধন পথত অগ্ৰসৰ হব, যেতিয়াই সেই ইষ্টত প্ৰৱেশ কৰিব, তেতিয়াই ব্ৰহ্মৰ পৰা নতুন অনুভূতি প্ৰাপ্ত হব। এই

জাননীটো সদগুৰু মহাপুৰুষেইদিয়ে সেই কাৰণে শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছে যে মই আকৌ কম।

স্মৃতি এনে এটা লিপি য'ত সংস্কাৰ সমূহৰ অংকন সদায়েই হৈ থাকে। যদি সাধকৰ ইষ্টত প্ৰৱেশ কৰাব পৰা জাননীসমূহ ধূসৰিত হৈ যায়, তেতিয়া সেই স্মৃতি লিপিত প্ৰকৃতি অংকিত হ'ব ধৰে যি বিনাশৰ কাৰণ হ'ব পাৰে। সূচনা বিলাক পুনৰাবৃত্তি হৈ থকা উচিত। আজি স্মৃতি জীৱন্ত হৈ আছে, কিন্তু আগবাঢ়ি গৈ থকা অৱস্থাত প্ৰৱেশ পোৱাৰ পিছত এই অৱস্থা নেথাকে। সেই কাৰণে পূজ্য মহাৰাজজীয়ে কৈছিল যে ব্ৰহ্মবিদ্যাৰ চিন্তন সদায়েই কৰিবা, এক মালা জপ কৰা, যি চিন্তনৰ মালা ঘূৰোৱা হয়, বাহিৰৰ মা লা নহয়।

এইটো হ'ল সাধকৰ বাবে, কিন্তু বাস্তৱিক সদগুৰু যি সকল, তেওঁ সদায়েই সেই পথিকৰ পাছত লাগিয়েই থাকে, ভিতৰত তেওঁৰ আত্মাত জাগ্ৰত হৈ আৰু বাহিৰত নিজৰ ক্ৰিয়া-কলাপৰ দ্বাৰা অভিনৱ পৰিস্থিতিৰে অৱগত কৰাই চলাই নিয়ে। যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণও মহাপুৰুষ আছিল। অৰ্জুন শিষ্য আছিল, তেওঁ ৰক্ষা কৰি চলাই নিবৰ বাবে ভগৱানক প্ৰাৰ্থনা কৰিছিল। সেইকাৰণে যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছে যে জ্ঞানতকৈও অতি উত্তম জ্ঞান মই তোমাক আকৌ কম।

শ্ৰীভগবানুবাচ

পৰং ভূযঃ প্ৰবক্ষ্যামি জ্ঞানানাং জ্ঞানমুত্তমম্।

যজ্জ্ঞাত্বা মনয়ঃ সৰ্বে পৰাং সিদ্ধিমিতো গতাঃ।। ১।।

অৰ্জুন ! জ্ঞানতকৈও অতি উত্তম জ্ঞান পৰম জ্ঞান মই আকৌ তোমাৰ কাৰণে কৈছোঁ (যাক আগতো কৈছিলো) যাক জানি সকলো মুনি জন এই সংসাৰৰ পৰা মুক্ত হৈ পৰম সিদ্ধি প্ৰাপ্ত কৰিছে। (যাৰ পিছত জানিবলৈ বাকী নাথাকে)

ইদং জ্ঞানমুপাশ্ৰিত্য মম সাধৰ্ম্যমাগতাঃ।

সৰ্গেৰ্থপি নোপজায়ন্তে প্ৰলয়ে ন ব্যথন্তি চ।। ২।।

এই জ্ঞানক একেবাৰেই আশ্ৰয় গ্ৰহণ কৰি, ত্ৰিফাৰ দ্বাৰা চলি গৈ মোৰ স্বৰূপ প্ৰাপ্ত কৰালোক সৃষ্টিৰ আদিত পূনৰ জন্ম নলয় আৰু প্ৰলয়কালতো অৰ্থাৎ শৰীৰৰ অন্তৰ সময়তো ব্যাকুল নহয়; কিয়নো মহাপুৰুষৰ শৰীৰৰ অন্ততো সেই দিনাই হয়, যেতিয়া তেওঁ স্বৰূপ প্ৰাপ্ত কৰে। তাৰ পাছত শৰীৰ থকাৰ বাবে এটি আশ্ৰয় স্থল মাত্ৰ হৈ পৰে। পূনৰ জন্মৰনো স্থান ক'ত, য'ত মানুহে জন্ম লয়? এই বিষয়ত শ্ৰীকৃষ্ণই কয় -

মম যোনিৰ্মহদব্ৰহ্ম তস্মিন্গৰ্ভং দধাম্যহম্।

সম্ভৱঃ সৰ্বভূতানাং ততো ভৱতি ভাৰত।। ৩।।

হে অৰ্জুন! মোৰ 'মহদব্ৰহ্ম' - অৰ্থাৎ অষ্টধা মূল প্ৰকৃতি সম্পূৰ্ণ ভূত সমূহৰ যোনি হয়, তাত মই চেতনাৰ বীজৰ স্থাপন কৰো, সেই জড়-চেতনৰ সংযোগতেই সকলো ভূতপ্ৰাণীৰ উৎপত্তি হয়।

সৰ্বযোনিষু কৌন্তেয় মূৰ্তয়ঃ সম্ভৱন্তি যাঃ।

তাসাং ব্ৰহ্ম মহদ্যোনিৰহং বীজপ্ৰদঃ পিতা।। ৪।।

হে কৌন্তেয়! সকলো যোনি সমূহত যিমান শৰীৰ উৎপন্ন হয়, সেই সকলোৰে 'যোনিঃ' গৰ্ভধাৰণ কৰোতা মাতৃ আঠ ভেদযুক্ত মূলপ্ৰকৃতি হয় আৰু ময়েই পিতা ৰূপে তাত বীজ স্থাপন কৰো। অন্যকোনো মাতৃও নহয় পিতৃও নহয়। যেতিয়ালৈকে জড়-চেতনৰ সংযোগ থাকে, জন্ম হৈ থাকিব, নিমিও কিবা এটা থাকিবই। চেতন আত্মা জড় প্ৰকৃতিত কিয় বান্ধ খায়? ইয়াত কয় -

সত্বং ৰজস্তম ইতি গুণাঃ প্ৰকৃতিসম্ভবাঃ।

নিৰধ্বঞ্জিমহাবাহো দেহে দেহিনমব্যয়ম্।। ৫।।

হে মহাবাহু অৰ্জুন! সত্বগুণ, ৰজগুণ আৰু তমঃগুণ প্ৰকৃতিৰ পৰা উৎপন্ন হোৱা তিনিটা গুণেই অবিনাশী জীৱাত্মাক শৰীৰত বান্ধে। কি দৰে?

তত্র সত্বং নিৰ্মলত্বাৎপ্ৰকাশকমনাময়ম্।

সুখসঙ্গেন বপ্লাতি জ্ঞানসঙ্গেন চানঘ।। ৬।।

হে নিষ্পাপ অৰ্জুন! এই তিনিও গুণত প্ৰকাশ কৰিব পৰা নিৰ্বিকাৰ সত্ৰুগুণেইতো - নিৰ্মল হোৱাৰ কাৰণে সুখ আৰু জ্ঞানৰ আসক্তিতে আত্মাক শৰীৰত বান্ধে। সত্ৰুগুণো বন্ধনেই হয়। প্ৰভেদ ইমানেই যে সুখ অকল পৰমাত্মাতেই আছে আৰু জ্ঞান হ'ল সাক্ষাৎকাৰৰ নাম। সত্ৰুগুণ তেতিয়ালৈকে বান্ধ খাই থাকে, যেতিয়ালৈকে পৰমাত্মাৰ সাক্ষাৎকাৰ নহয়।

ৰজো বাগাত্মকং বিদ্ধি তৃষ্ণাসঙ্গসমুদ্ভবম্।

তন্নিবধ্ৰাতি কৌণ্ঠেয় কৰ্মসঙ্গেন দেহিনম্ ॥ ৭ ॥

হে অৰ্জুন! বাগৰ জীৱন্ত স্বৰূপেই হ'ল ৰজোগুণ। ইয়াক তুমি কামনা আৰু আসক্তিৰ দ্বাৰা উৎপন্ন হোৱা বুলি জানা। সেই জীৱত্মাক কৰ্ম আৰু তাৰ ফলৰ আসক্তিত বান্ধে। সি কৰ্মত প্ৰবৃত্ত হয়।

তমস্ত্বজ্ঞানজং বিদ্ধি মোহনং সৰ্বদেহিনাম্।

প্ৰমাদালস্যনিদ্ৰাভিস্তুগ্নিধ্ৰাতি ভাৰত ॥ ৮ ॥

অৰ্জুন! সমস্ত দেহধাৰী সকলক মোহিতকৰি ৰাখিব পৰা তমগুণক তুমি অজ্ঞানৰ পৰা উৎপন্ন হোৱা বুলি জানা। সিয়ে এই আত্মাক প্ৰমাদ অৰ্থাৎ ব্যৰ্থচেষ্টা, এলাহ, (কাইলৈহে কৰিম) আৰু নিদ্ৰাৰ দ্বাৰা মানুহ বেছিকৈ শুয়ে। শৰীৰেৰে শুই থাকে এনে নহয়। এই জগত খনেই ৰাতি। তমগুণ সম্পন্ন ব্যক্তি এই জগতৰূপী নিশাত ৰাতিয়ে-দিনে ব্যস্ত হৈ থাকে, প্ৰকাশ স্বৰূপৰ ফালে অচেতন হৈ থাকে। এয়েই হ'ল তমগুণী নিদ্ৰা। যি ইয়াত বান্ধখাইছে, তেওঁ শোৱে। এতিয়া তিনিও গুণৰ বান্ধনৰ সামূহিক স্বৰূপৰ বিষয়ে কয় -

সত্ৰুং সুখে সঞ্জয়তি ৰজঃ কৰ্মণি ভাৰত।

জ্ঞানমাবৃত্য তু তমঃ প্ৰমাদে সঞ্জয়ত্যত ॥ ৯ ॥

অৰ্জুন! সত্ৰুগুণে সুখত লগায়, শাস্তত পৰম সুখৰ ধাৰাত লগায়, ৰজগুণে কৰ্মত প্ৰবৃত্ত কৰায় আৰু তমগুণে জ্ঞানক ঢাকি ৰাখি প্ৰমাদত অৰ্থাৎ অন্তঃকৰণৰ ব্যৰ্থ-চেষ্টাত লগায়। গুণ সমূহ যেতিয়া একে স্থানতে একে হৃদয়তে থাকে তথাপিও বেলেগে-বেলেগে কেনেকৈ বিভক্ত হয়? এই বিষয়ে যোগেশ্বৰ

শ্ৰীকৃষ্ণই কয় -

ৰজস্তুমশ্চাভিভূয় সত্ৰং ভৱতি ভাৰত ।

ৰজঃ সত্ৰং তমশ্চৈব তমঃ সত্ৰং ৰজস্তুথা ॥ ১০ ॥

হে অৰ্জুন! ৰজগুণ আৰু তমগুণক হেঁচি সত্ৰগুণ আগবাঢ়ে, তেনেকৈ সত্ৰগুণ আৰু তমগুণক তলপেলাই ৰজগুণ আগবাঢ়ে তথা এইদৰে ৰজগুণ আৰু সত্ৰগুণক হেঁচাদি তমগুণ আগবাঢ়ে। এইটো কেনেদৰে জনা যাব যে কেতিয়া আৰু কোন গুণে কাৰ্য্য কৰি আছে?

সৰ্বদ্বাৰেষু দেহেহস্মিন্‌প্রকাশ উপজায়তে ।

জ্ঞানং যদা তদা বিদ্যাঙ্গিবৃদ্ধং সত্ৰমিত্যুত ॥ ১১ ॥

যি সময়ত এই শৰীৰ তথা অন্তঃকৰণ আৰু সম্পূৰ্ণ ইন্দ্ৰিয় সমুহত ঈশ্বৰীয় প্ৰকাশ আৰু বোধশক্তি উৎপন্ন হৈছে, সেই সময়ক এনে বুলি জানিব লাগিব যে সত্ৰগুণ বিশেষ বৃদ্ধি হৈছে। তথা -

লোভঃ প্ৰবৃত্তিৰাৰম্ভঃ কৰ্মগামশমঃ স্পৃহা ।

ৰজস্যেতানি জায়ন্তে বিবৃদ্ধে ভৰতৰ্ষভ ॥ ১২ ॥

হে অৰ্জুন! ৰজগুণৰ বিশেষ বৃদ্ধি হলে লোভ, কাৰ্য্যত প্ৰবৃত্ত হোৱাৰ চেষ্টা, কৰ্মৰ আৰম্ভ অশান্তি অৰ্থাৎ মনৰ চঞ্চলতা, বিষয় ভোগত লালসা এই সকলো খিনি উৎপন্ন হয়। এতিয়া তমগুণৰ বৃদ্ধি কেনেদৰে হয়?

অপ্ৰকাশ্যোহপ্ৰবৃত্তিষ্চ প্ৰমাদো মোহ এব চ ।

তমস্যেতানি জায়ন্তে বিবৃদ্ধে কুৰুন্‌ন্দন ॥ ১৩ ॥

অৰ্জুন ! তমগুণৰ বৃদ্ধি হলে (প্ৰকাশ পৰমাত্মাৰ দ্যোতক) ঈশ্বৰীয় প্ৰকাশৰ ফালে আগ নবঢ়াৰ স্বভাৱ, যি কৰাৰ যোগ্য প্ৰক্ৰিয়া বিশেষ তাত প্ৰবৃত্ত নথকা, অন্তঃকৰণত মিছা চেষ্টাৰ টৌ আৰু সংসাৰত মুগ্ধ কৰিব পৰা প্ৰবৃত্তি সমুহ এই সকলো বিলাক উৎপন্ন হয়। এই গুণ সমুহ জানিলে লাভ কি?

যদা সত্ত্বে প্ৰবৃদ্ধে তু প্ৰলয়ং যাতি দেহভৃৎ।

তদোত্তমবিদাং লোকানমলান্‌প্ৰতিপদ্যতে ॥ ১৪ ॥

যেতিয়া এই জীৱাত্মা সত্ত্বগুণৰ বৃদ্ধিকালত মৃত্যু প্ৰাপ্ত হয়, শৰীৰ ত্যাগ কৰে, তেতিয়া উত্তম কৰ্মকৰোঁতাৰ দুখ নথকা দিৱ্য লোক প্ৰাপ্ত কৰে। তথা -

সি প্ৰলয়ং গত্বা কৰ্মসঙ্গিষু জায়তে।

তথা গ্ৰহীনস্তমসি মৃঢ়যোনিষু জায়তে ॥ ১৫ ॥

ৰজগুণৰ বৃদ্ধি হোৱাত মৃত্যু প্ৰাপ্ত হলে কৰ্মত আসক্তি থকা মনুষ্যহে জন্ম গ্ৰহণ কৰে, তথা তমগুণৰ বৃদ্ধি সময়ত মৃত্যু হোৱা পুৰুষ মুঢ় যোনীত জন্ম হয় য'ত কীট পতঙ্গ আদি যোনীসমূহ আছে। সেয়ে গুণৰ ভিতৰতো মানুহ সাত্বিক গুণৰাণ হোৱা উচিত। প্ৰকৃতিৰ এই জমাধন আপোনাৰ অৰ্জিত গুণ সমূহক, মৃত্যুৰ পাছতো তেওঁ আপোনাক সুৰক্ষীত ভাবেই ঘূৰাই দিয়ে। এতিয়া চাওক ইয়াৰ পৰিণাম -

কৰ্মণঃ সুকৃতস্যাহ্ৰঃ সাত্বিকং নিৰ্মলং ফলম্।

ৰজসস্ত ফলং দুঃখমজ্ঞানং তমসঃ ফলম্ ॥ ১৬ ॥

সাত্বিক কৰ্মৰ ফল সাত্বিক, নিৰ্মল, সুখ, জ্ঞান আৰু বৈৰাগ্য আদি বুলি কোৱা হৈছে; ৰাজস কৰ্মৰ ফল দুখ আৰু তামস কৰ্মৰ ফল অজ্ঞানতা। তথা -

সত্ত্বাৎসঞ্জায়তে জ্ঞানং ৰজসো লোভ এব চ।

প্ৰমাদমোহৌ তমসো ভবতোহজ্ঞানমেৰ চ ॥ ১৭ ॥

সত্ত্বগুণৰ দ্বাৰা জ্ঞানৰ উৎপন্ন হয় (ঈশ্বৰীয় অনুভূতিৰ নাম জ্ঞান) ঈশ্বৰীয় অনুভূতিৰ প্ৰৱাহ হয়। ৰজগুণৰ দ্বাৰা নিঃসন্দেহে লোভ উৎপন্ন হয়, তথা তমগুণত প্ৰমাদ, মোহ, আলস্য (অজ্ঞান) হে উৎপন্ন হয়। এইবোৰ উৎপন্ন হৈ কি গতি দিয়ে ?

উধ্বৰ্গ গচ্ছন্তি সত্ত্বস্থা মধ্যে তিষ্ঠন্তি ৰাজসাঃ।

জঘন্যগুণৰ্ভিত্ত্বা অধো পচ্ছন্তি তামসাঃ।। ১৮।।

সত্ৰগুণত স্থিত হোৱা পুৰুষৰ 'উৰ্ব্বমূলং' সেই মূল পৰমাত্মাৰ ফালে প্ৰবাহিত হৈ নিৰ্মল লোকলৈ যায়। ৰজগুণত স্থিত ৰাজস পুৰুষ মধ্যম শ্ৰেণীৰ মানুহ হয়, যাৰ ওচৰত - বিবেক-বৈৰাগ্য আদি নাথাকে আৰু অধৰ্ম কীট-পতঙ্গ যোনিত পুনৰ জন্ম প্ৰাপ্ত নকৰে আৰু নিন্দনীয় তমগুণত প্ৰবৃত্ত হোৱা তামস পুৰুষ 'অধোগতিঃ' অৰ্থাৎ পশু-পক্ষী, কীট-পতঙ্গ আদি অধৰ্ম যোনিত প্ৰাপ্ত হয়। এইদৰে তিনিও গুণ কোনোৱা ৰূপত যোনিৰ কাৰণ হৈ পৰে। যি পুৰুষ এই গুণৰ পৰা পাৰ হৈ যায়, তেওঁ জন্ম বন্ধনৰ পৰা মুক্ত হৈ যায় আৰু মোৰ স্বৰূপ প্ৰাপ্ত কৰে। এই বিষয়ে কয় -

নান্য গুণেভ্যঃ কৰ্তাৰং যদা দ্ৰষ্টানুপশ্যতি।

গুণেভ্যশ্চ পৰং বেত্তি মন্ত্ৰাৰং সোহধিগচ্ছতি।। ১৯।।

যি সময়ত দ্ৰষ্টা আত্মা তিনিও গুণৰ অতিৰিক্ত অন্য কোনো কৰ্তা বুলি নেদেখে আৰু তিনিও গুণতকৈ অত্যন্ত দূৰত থকা পৰমতত্বক 'বেত্তি' বিদিত কৰি লয়, সেই সময়ত সেই পুৰুষে মোৰ স্বৰূপ প্ৰাপ্ত কৰে। এইটো বৌদ্ধিক মান্যতা নহয় যে গুণ গুণতে থাকে। সাধন কৰিলে এনে এটা অৱস্থা প্ৰাপ্ত হয় যত সেই পৰমৰ অনুভূতি হয় যে গুণৰ বাদে কোনো কৰ্তাই দেখা নাপায়, সেই সময়ত পুৰুষ তিনিও গুণৰ পৰা অতীত হৈ যায়। ই কল্পনা নহয়। আগলৈ কৈছে

গুণানেতানতীত্য ত্ৰীন্দেহী দেহ সমুদ্ভৱান্।

জন্ম মৃত্যু জৰাদুঃখৈৰ্বিমুক্তোহমৃতমশ্নুতে।। ২০।।

পুৰুষে এই স্থূল শৰীৰৰ উৎপত্তিৰ কাৰণ স্বৰূপ তিনিও গুণৰ অতীত হৈ জন্ম-মৃত্যু বৃদ্ধাৱস্থা আৰু সকলো প্ৰকাৰৰ দুখৰ পৰা বিশেষ ৰূপেৰে মুক্তি হৈ অমৃত তত্বক পান কৰে। ইয়াত অৰ্জুনে প্ৰশ্ন কৰিছে -

অৰ্জুন উবাচ

কৈৰ্লিঙ্গৈস্ত্ৰীন্‌গুণানেতানতীতো ভৱতি প্ৰভো।

কিমাচাৰঃ কথং চৈতাংস্ত্ৰীন্‌গুণানতিবৰ্ততে।। ২১।।

প্ৰভু! এইতিনিও গুণৰ পৰা অতীত হোৱা পুৰুষ কেনে লক্ষণ যুক্ত
আৰু কিদৰে আচৰণ কৰে তথা মানুহে কি উপায়েৰে এই তিনিও গুণৰ পৰা
অতীত হ'ব পাৰে?

শ্ৰীভগৱানুবাচ

প্ৰকাশং চ প্ৰবৃত্তিং চ মোহমেৰ চ পাণ্ডৱ।

ন দ্বেষ্টি সম্প্ৰবৃত্তানি ন নিবৃত্তানি কাঙ্ক্ষতি।। ২২।।

অৰ্জুনৰ উপৰোক্ত তিনিওটা প্ৰশ্নৰ উত্তৰত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কয়
- অৰ্জুন! যি পুৰুষ ঈশ্বৰীয় প্ৰকাশ সত্ৰুগুণ কাৰ্য্যৰূপ, ৰজগুণৰ কাৰ্য্যৰূপ প্ৰবৃত্তি,
আৰু তমগুণৰ কাৰ্য্যৰূপ মোহতো প্ৰবৃত্তি হ'লেও বেয়া নাপায় আৰু নিবৃত্তি
হ'লেও তাৰ আকাংক্ষা নকৰে, তথা -

উদাসীনবদাসীনো গুণৈৰ্যো ন ৰিচাল্যতে।

গুণা বৰ্তন্ত ইত্যেব যোহবৰ্তিষ্ঠতি নেঙ্গতে।। ২৩।।

যাক এইদৰে উদাসীন সদৃশ স্থিত হোৱা গুণৰ দ্বাৰা বিচলিত কৰিব
নোৱাৰে, গুণ গুণতেই থাকে, এনেদৰে যথার্থ ভাবে জানি যি জনে সেই
স্থিতিত নচলে, তেতিয়া সেই গুণৰ পৰা অতীত হ'ব পৰা যায়।

সমদুঃখসুখঃ স্বস্থঃ সমলোস্তাশ্মকাধঃনঃ।

তুল্যপ্ৰিয়াপ্ৰিয়ো ধীৰস্তুল্যানিন্দাত্মসংস্ততিঃ।। ২৪।।

যি নিৰন্তৰ স্বয়ং অর্থাৎ আত্মভাৱত স্থিত হৈ থাকে, সুখ আৰু দুখক
সমান ভাৱে, শিল-মাটি আৰু সোনতো সম ভাৱ ৰাখে, ধৈৰ্য্যৱান, যি প্ৰিয়
আৰু অপ্ৰিয় সমানে ভাৱে, আৰু -

মানাপমানয়োস্তুল্যোমিত্ৰাৰিপক্ষয়োঃ।

সৰ্বাৰম্ভ পৰিত্যাগী গুণাতীতঃ স উচ্যতে ॥ ২৫ ॥

যি জনে মান আৰু অপমানক সমানে ভাৰে, মিত্ৰ আৰু শত্ৰুকোসমানে ভাৰ ৰাখে, তেওঁ সম্পূৰ্ণ আৰম্ভ ৰহিত পুৰুষক গুণাতিত বুলি কোৱা হয়।

বাইশৰ পৰা পঁচিশ শ্লোকলৈকে গুণৰ পৰা অতীত হোৱা পুৰুষৰ লক্ষণ আৰু আচৰণত কোৱা হ'ল যে তেওঁ অচল, গুণৰ দ্বাৰা বিচলিত নোহোৱা, স্থিৰ থাকে। এতিয়া গুণৰ পৰা অতীত হোৱা বিধি প্ৰস্তুত কৰি কয় -

মাং চ যোহব্যভিচাৰেণ ভক্তিয়োগেন সেবতে।

স গুণাসমতীতৈতানব্ৰহ্মভূয়ায় কল্পতে ॥ ২৬ ॥

যি পুৰুষে অব্যভিচাৰিণী ভক্তিৰ দ্বাৰা অৰ্থাৎ ইষ্টৰ অতিৰিক্ত অন্য সাংসাৰিক স্মৰণৰ পৰা সৰ্বদা ৰহিত হৈ যোগৰ দ্বাৰা অৰ্থাৎ সেই নিয়ত কৰ্মৰ দ্বাৰা মোৰ নিৰন্তৰ ভজনা কৰে, তেওঁ এই তিনিও গুণক ভালদৰেই উল্লংঘন কৰি পৰব্ৰহ্মৰ লগত একে হ'বৰ যোগ্য হয়, যাৰ নাম হ'ল কল্প। ব্ৰহ্মৰ লগত একেভাৱ হোৱাই হ'ল বাস্তৱিক কল্প। অনন্য ভাৱেৰে নিৰ্দিষ্ট কৰ্মৰ আচৰণ নকৰিলে কোনেও এই গুণৰ পৰা অতীত হব নোৱাৰিব। শেষত যোগেশ্বৰে নিৰ্ণয় দিলে যে -

ব্ৰহ্মণো হি প্ৰতিষ্ঠাহমমৃতস্যাব্যয়স্য চ।

শাস্বতস্য চ ধৰ্মস্য সুখসৈকান্তিকস্য চ ॥ ২৭ ॥

হে অৰ্জুন! সেই অবিনাশী ব্ৰহ্মৰ (যাৰ সৈতে তেওঁ কল্প কৰে, যত সেই গুণাতিত একীভাৱেৰে প্ৰবেশ পায়) অমৃতৰ, শাস্বত ধৰ্মৰ আৰু সেই অখণ্ড একবস আনন্দৰ - ময়েই আশ্ৰয় হওঁ, অৰ্থাৎ পৰমাত্মস্থিত সদৃগুৰুৱেই এই সকলোৰ আশ্ৰয়। শ্ৰীকৃষ্ণ এজন যোগেশ্বৰ আছিল। এতিয়া যদি আপোনাৰ অব্যক্ত, অবিনাশী, ব্ৰহ্ম, শাস্বত ধৰ্ম, অখণ্ড, একবস আনন্দৰ আৱশ্যকতা আছে, তেতিয়াহলে কোনো তত্ত্বস্থিত, অব্যক্তস্থিত মহাপুৰুষৰ শৰণ লওক। তেওঁৰ দ্বাৰাহে এইটো সম্ভৱ হব পাৰে।

নিষ্কৰ্ষঃ-

বৰ্তমান আধ্যাত আৰম্ভণীতে যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছিল যে অৰ্জুন ! জ্ঞানতকৈ অতি উত্তম পৰম জ্ঞান, মই আকৌ তোমাক কম যাক জানি মুনিজন উপাসনাৰ দ্বাৰা মোৰ স্বৰূপ প্ৰাপ্ত কৰে; পুণৰ সৃষ্টিৰ আদিত তেওঁ জন্ম নলয়; কিন্তু শৰীৰৰতো নিধন আছেই। সেই সময়ত তেওঁ ব্যৰ্থিত নহয়। তেওঁ বাস্তৱত শৰীৰতো সেই দিনাই ত্যাগ কৰে; যি দিনা স্বৰূপ প্ৰাপ্ত কৰে। প্ৰাপ্তী জীয়াই থাকোতে হয়; কিন্তু শৰীৰৰ অন্তৰ সকলতো তেওঁ ব্যৰ্থাক দুখ অনুভৱ নকৰে।

প্ৰকৃতিৰ পৰা উৎপন্ন হোৱা বজ, সত্ৰ, তম তিনিও গুণে এই জীৱাত্মক শৰীৰত বান্ধে। দুটা গুণক দবাই তৃতীয় গুণক বঢ়াব পৰা যায়। গুণ পৰিবৰ্তনশীল। প্ৰকৃতি, যি অনাদি, নষ্ট নহয়, বৰঞ্চ গুণৰ প্ৰভাৱ এৰাই চলিব পাৰি। গুণে মনৰ ওপৰত প্ৰভাৱ পেলায়। যেতিয়া সত্ৰ গুণৰ বৃদ্ধি হয় তেতিয়া ঈশ্বৰীয় প্ৰকাশ আৰু বোধশক্তি থাকে। বজগুণ ৰাগাত্মক। সেই সময়ত কৰ্মৰ লোভ থাকে, আসক্তি থাকে, অন্তঃকৰণত তমগুণে কাৰ্য্যৰূপ ল'লে আলস্য-প্ৰমাদে আক্ৰমণ কৰে। সত্ৰৰ বৃদ্ধি সময়ত মৃত্যুপ্ৰাপ্ত পুৰুষ উপৰৰ নিৰ্মল লোকত জন্ম গ্ৰহণ কৰে। বজগুণৰ বৃদ্ধিৰ সময়ত মৃত্যু বৰণ কৰা মনুষ্য মানৱ যোগীত পুনৰ ঘূৰি আহে আৰু তমগুণৰ বৃদ্ধিৰ সময়ত শৰীৰ ত্যাগ কৰা পুৰুষ (পশু-কীট-পতঙ্গ আদি) অধম যোগীত প্ৰাপ্ত হয়। সেইকাৰণে মানুহক ক্ৰমশঃ উন্নত গুণ সাত্বিকৰ ফালে অগ্ৰসৰ হোৱা উচিত। মূলতঃ তিনিও গুণ কোনোৱা এটা যোগীৰ কাৰণ হৈ পৰে। গুণেই আত্মাক শৰীৰত বান্ধি থয়, সেই কাৰণে গুণৰ অতীত হোৱা উচিত।

তেওঁ যাৰদ্বাৰা মুক্ত হয় তাৰ স্বৰূপৰ বিষয়ে যোগেশ্বৰে কয় যে অষ্টধা মূল প্ৰকৃতি গৰ্ভত ধাৰণ কৰোঁতা মাতা আৰু বীজৰূপ পিতাও ময়েই, বেলেগে কোনো মাতা-পিতা নাই। যেতিয়ালৈকে এই ক্ৰম থাকেই তেতিয়ালৈকে চৰাচৰ জগতত নিমিত্তৰ বাবে কোনোৱে মাতা-পিতা হ'বই; কিন্তু মূলতঃ

প্ৰকৃতিয়ে মাতা আৰু ময়েই পিতা।

ইয়াত অৰ্জুনে তিনিটা প্ৰশ্ন কৰিলে - যে গুণাতীত পুৰুষৰ লক্ষণ কি? আচৰণ কেনেকুৱা? আৰু কি উপায়েৰে মনুষ্য এই তিনি গুণৰ পৰা অতীত হব পাৰিব? এইদৰে যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই গুণাতীত পুৰুষৰ লক্ষণ আচৰণৰ বিষয়ে কৈ, শেষত গুণাতীত হোৱাৰ উপায় ক'লে যে যি পুৰুষে অব্যভিচাৰিণী ভক্তি আৰু যোগৰ দ্বাৰা নিৰন্তৰ মোৰ ভজনা কৰে, তেওঁ তিনিও গুণৰ পৰা অতীত হৈ যায়। অন্য কাৰো চিন্তন নকৰাকৈ নিৰন্তৰ ইষ্টৰ চিন্তন কৰাই হ'ল অব্যভিচাৰিণী ভক্তি। যি সংসাৰৰ সংযোগ-বিয়োগৰ পৰা সৰ্বদা নিৰোধ হৈ আছে তাৰ নামেই যোগ, তাক কাৰ্য্যৰূপ দিয়াৰ প্ৰণালীৰ নামেই হ'ল কৰ্ম। যজ্ঞ যাৰ দ্বাৰা সম্পন্ন হয়, সেয়াই নিৰ্দিষ্ট কৰ্ম। অব্যভিচাৰিণী ভক্তিৰ দ্বাৰা সেই নিৰ্দিষ্ট কৰ্মৰ আচৰণেৰেই পুৰুষে তিনিও গুণৰ পৰা অতীত হয় আৰু অতীত হৈ ব্ৰহ্মৰ লগত একেভাৱ হ'বৰ বাবে, পূৰ্ণ কল্প প্ৰাপ্ত হ'বৰ বাবে যোগ্য হৈ উঠে। গুণে যাৰ মনত প্ৰভাৱ পেলায়, তাৰ বিলয় হলেই ব্ৰহ্মৰ লগত একাভাৱ হৈ যায়, এয়াই বাস্তৱিক কল্প। সেয়ে ভজন নকৰাকৈ কোনেও গুণৰ অতীত হব নোৱাৰে।

শেষত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই নিৰ্ণয় দিলে যে সেই গুণাতীত পুৰুষ যি ব্ৰহ্মৰ লগত একিভাৱত স্থিত হয়, সেই ব্ৰহ্মৰ, অমৃত তত্বৰ, শাস্ত্ৰত ধৰ্মৰ আৰু অখণ্ড একৰস আনন্দৰ ময়েই আশ্ৰয় হওঁ অৰ্থাৎ প্ৰধান কৰ্ত্তা ময়ে হওঁ। এতিয়াতো শ্ৰীকৃষ্ণ গ'লেই। এতিয়া সেই আশ্ৰয়তো গ'ল। তেতিয়া বৰ বিস্ময়কৰ কথা হ'ল। সেই আশ্ৰয় এতিয়া ক'ত পাব? কিন্তু নহয়, শ্ৰীকৃষ্ণই নিজৰ পৰিচয় দিছে। তেওঁ এজন যোগী আছিল, স্বৰূপস্থিত মহাপুৰুষ আছিল। **‘শিষ্যস্তেহহং শাধি মাং ত্বাং প্ৰপন্নম্’**। অৰ্জুনে কৈছিলে “মই আপোনাৰ শিষ্য, আপোনাৰ শৰণত আঁছো, মোৰ ৰক্ষা কৰক।” ঠায়ে ঠায়ে শ্ৰীকৃষ্ণই নিজৰ পৰিচয় দিছে। স্থিতপ্ৰজ্ঞ মহাপুৰুষৰ লক্ষণ কৈছে আৰু তেওঁৰ লগত নিজৰ তুলনা কৰিছে। সেয়ে স্পষ্ট হৈছে যে শ্ৰীকৃষ্ণ এজন মহাত্মা যোগী

আছিল। এতিয়া আপোনাৰ অখণ্ড, একৰস আনন্দ, শাস্ত্ৰত ধৰ্ম অথবা অমৃত তত্ত্বৰ যদি আৱশ্যকতা আছে, তেতিয়াহলে এই সকলোৰ প্ৰাপ্তিৰ সূত্ৰ একমাত্ৰ সদগুৰু আছে। পোনে পোনে কিতাপ পঢ়ি কোনেও ইয়াক পাব নোৱাৰে। যেতিয়া সেই মহাপুৰুষ আত্মাৰ পৰা অভিন্ন হৈ সাৰথী হৈ যায়, তেতিয়া লাহে লাহে অনুৰাগীক সঞ্চালিত কৰি তেওঁৰ স্বৰূপলৈকে য'ত তেওঁ নিজেই প্ৰতিষ্ঠিত আছে তাতেই পোৱাই দিয়েগৈ। তেৱেই একমাত্ৰ মাধ্যম। এইদৰে যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই নিজকে সকলোৰে আশ্ৰয় বুলি কৈ এই চৈধ্য আধ্যায়ৰ সমাপন কৰিছে, য'ত গুণ সমূহৰ বিস্তৃত বৰ্ণন আছে। সেয়ে -

এই দৰে শ্ৰীমৎভগবৎ গীতাৰূপী উপনিষদ এবং ব্ৰহ্মবিদ্যা তথা যোগশাস্ত্ৰ বিষয়ক শ্ৰীকৃষ্ণ আৰু অৰ্জুনৰ সম্বাদত “গুণত্ৰয় বিভাগযোগ” নামৰ চৈধ্য অধ্যায় পূৰ্ণ হয়।

ইতি শ্ৰীমৎপৰমহংস পৰমানন্দস্য শিষ্য স্বামী অড়গড়ানন্দকৃতে শ্ৰীমৎভ গৱৎ গীতায়ঃ ‘যথার্থ গীতা’ ভাষ্য “গুণত্ৰয়াবিভাগযোগো” নাম চতুৰ্দশোহধ্যায়ঃ ॥১৪॥

॥ হৰি ওঁ তৎসৎ ॥

‘ওঁ’

শ্ৰী পৰমাত্মনে নমঃ

অথ পঞ্চদশোহধ্যায়ঃ

মহাপুৰুষ সকলে সংসাৰক বিভিন্ন উদাহৰণেৰে বুজাবৰ চেষ্টা কৰিছে। কোনোৱাই ইয়াক ভৱ-সাগৰ আকৌ কোনোৱাই ইয়াক সংসাৰ-সাগৰ কৈছে। অৱস্থাভেদে ইয়াকে ভৱনদী আৰু ভৱকুপ বুলিও কয় আৰু কেতিয়াবা ইয়াৰ তুলনা গো-পদৰ লগতো কৰা হৈছে অৰ্থাৎ ইন্দ্ৰিয় সমূহৰ যিমান আয়তন আছে, সিমানেই সংসাৰ আছে আৰু শেষত এনে অৱস্থাও হয় যে (নাম লেত ভব সিন্ধু সুখাহী) ভৱ-সিন্ধুও শুকাই গ’ল। কি সংসাৰত এনে সমুদ্ৰও আছেনে? যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণইও সংসাৰক সমুদ্ৰ আৰু বৃক্ষৰ সংজ্ঞা দিছে। বাৰ আধ্যায়ত তেখেতে কৈছে - যি মোৰ অনন্য ভক্ত, তেওঁক সংসাৰ সমুদ্ৰৰ পৰা শীঘ্ৰেই উদ্ধাৰ কৰোঁতা হওঁ মই। ইয়াত এই আধ্যায়ত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছে যে সংসাৰ এটা বৃক্ষ, ইয়াক কাটিহে সেই যোগী সকলে সেই পৰমপদক বিচাৰে। চাওক -

শ্ৰী ভগবানুবাচ

উৰ্বমূলমধঃশাখমশ্বখং প্ৰাহৰব্যায়ম্।

ছন্দাসি যস্য পৰ্ণানি যন্তং বেদ স বেদবিৎ।। ১।।

অৰ্জুন ! **উৰ্বমূলং** - ওপৰ ফালে পৰমাত্মাই যাৰ মূল **‘অধঃশাখম্’** তলৰ ফালেপ্ৰকৃতিয়ে যাৰ শাখা সমূহ, এনে সংসাৰ ৰূপী আহঁত গছক অবিনাশী বুলি কোৱা হৈছে। (বৃক্ষ তো অ-শ্বঃ অৰ্থাৎ কালিলৈকে নাথাকে, যেতিয়া ইচ্ছা হয় কাটিব পাৰি, কিন্তু অবিনাশী)। শ্ৰীকৃষ্ণৰ অনুসৰি অবিনাশী দুটা আছে - এটা সংসাৰ ৰূপী বৃক্ষ অবিনাশী আৰু আনটো তাতকৈও পাৰৰ পৰম অবিনাশী। বেদক এই অবিনাশী সংসাৰ বৃক্ষৰ-পাত বুলি কোৱা হৈছে। যি পুৰুষে এই সংসাৰৰূপী বৃক্ষক (দেখে) বিদিত কৰি লয়, তেওঁ বেদৰ জ্ঞাতা।

যি জনে সেই সংসাৰ বৃক্ষক জানি লৈছে, তেওঁ বেদকো জানি লৈছে, গ্ৰহ পঢ়ি নহয়। কিতাপ পঢ়িলে, সেই ফাললৈ আগ বঢ়াৰ প্ৰেৰণা হোমাত্ৰ পোৱা যায়। পাতৰ স্থানত বেদৰ কি আৱশ্যকতা আছে? মূলতঃ পুৰুষ ঘূৰি-ফুৰি যি শেষ কলি অৰ্থাৎ অন্তিম জন্ম লয় তাৰ পৰাই তেওঁ বেদৰ ছন্দ (যি কল্যাণৰ সৃজনা কৰে) তাৰ পৰাই প্ৰেৰণা দিয়ে, তাৰ পৰাই তেওঁৰ উপযোগীতা হয়। তাৰ পৰাই তেওঁৰ বৃথা ভ্ৰমৰ সমাপ্ত হয়। তেওঁ স্বৰূপৰ ফালে আগবাঢ়ে। তথা -

অধশ্চোদ্ধৰং প্ৰসূতাস্তস্য শাখা গুণপ্ৰবৃদ্ধা বিষয় প্ৰবালাঃ।

অধশ্চ মূলান্যনুসন্ততানি কৰ্মানুবন্ধীনি মনুষ্যালোকে।। ২।।

সেই সংসাৰ বৃক্ষৰ তিনিও গুণৰ দ্বাৰা বঢ়া বিষয় আৰু ভোগৰূপী কলিয়ুক্ত শাখাবোৰ তলে-ওপৰে সৰ্বত্ৰ বিস্তৃত হৈ আছে। তলৰ ফালে কীট-পতঙ্গ পৰ্য্যন্ত আৰু ওপৰ ফালে দৰভাৱৰ পৰা আৰম্ভ কৰি ব্ৰহ্মা পৰ্য্যন্ত সৰ্বত্ৰ বিস্তৃত আছে। মাত্ৰ মনুষ্য যোগীত কৰ্মৰ দ্বাৰা বান্ধিব পাৰিব, অন্য সকলো যোগী ভোগ ভোগৰ কাৰণেহে। মনুষ্য যোগীয়েই কৰ্মৰ অনুসৰি বন্ধন সৃষ্টি কৰে।

ন ৰূপমস্যেহ তথোপলভ্যতে নাস্তো ন চাৰ্দ্দিন চ সম্প্ৰতিষ্ঠা।

অশ্বখমেনং সুবিকট-মূল মসঙ্গশস্ত্ৰেণ দৃঢ়েন ছিদ্ধা।। ৩।।

কিন্তু এই সংসাৰ বৃক্ষৰ ৰূপ যেনেদৰে কোৱা হৈছে, তেনেদৰে ইয়াত পোৱা নাযায়; কিয়নো তাৰ আদিও নাই অন্তও নাই আৰু ভালদৰে তাৰ স্থিতিও নাই, (কিয়নো ই পৰিবৰ্ত্তনশীল) এই সূদৃঢ় মূল থকা সংসাৰ ৰূপী বৃক্ষক দৃঢ় অসংগ অৰ্থাৎ বৈৰাগ্যৰূপী শস্ত্ৰৰে কাটি (সংসাৰৰূপী বৃক্ষক কাটিব লাগিব, এনে নহয় যে আহঁতৰ গুৰিত পৰমাত্মা থাকে বা আহঁতৰ পাত বেদ আৰু গছৰ আৰতী কৰিব।)

এই সংসাৰ বৃক্ষৰ মূলতো স্বয়ং পৰমাত্মাই বীজৰূপে প্ৰসাৰিত হৈ আছে, তেতিয়াহ'লে সেইটোও কাটিবনে? দৃঢ় বৈৰাগ্যৰ দ্বাৰা এই প্ৰকৃতিৰ সম্বন্ধ-বিচ্ছেদ হৈ যায়, এয়াই কটা। কাটি কি কৰিব?

ততঃ পদং তৎপৰিমার্গিতব্যং যস্মিন্গতা ন নিৰতন্তি ভূয়ঃ।

তমেব চাদ্যং পুৰুষং প্ৰপদ্যে যতঃ প্ৰবৃত্তিঃ প্ৰসূতা পুৰাণী ॥ ৪ ॥

দৃঢ় বৈৰাগ্যৰ দ্বাৰা সংসাৰ বৃক্ষক কটাৰ পিছত সেই পৰমপদ পৰমেশ্বৰক ভালদৰে বিচাৰিব লাগিব, য'ত যোৱা পুৰুষ পূণৰ এই সংসাৰলৈ ঘূৰি নাহে অৰ্থাৎ পূৰ্ণ নিবৃত্তি প্ৰাপ্ত কৰে। কিন্তু তাক বিচাৰিব কেনেদৰে? যোগেশ্বৰে কয় ইয়াৰ বাবে সমৰ্পণ, যি পৰমেশ্বৰৰ দ্বাৰা পুৰাতন সংসাৰ বৃক্ষৰ প্ৰবৃত্তি বিস্তৃত হৈ আছে। সেই আদি পুৰুষ পৰমাত্মাৰ - মই শৰণ লৈছোঁ। (তেওঁৰ শৰণৰ বিনে বৃক্ষ কাট নাখায়) এতিয়া শৰণত যোৱা বৈৰাগ্যৱান পুৰুষে কেনেকৈ বুজি পাব যে বৃক্ষ কাটি গ'ল? তাৰ চিনাকী কি? ইয়াত কয়-

নিমানমোহা জিতসঙ্গদোষা অধ্যাত্মনিত্যা বিনিবৃত্তকামাঃ।

দ্বৈন্দ্ববিমুক্তাঃ সুখদুঃখসংস্ৰে-গচ্ছন্ত্যমূঢ়াঃ পদমব্যয়ং তৎ ॥ ৫ ॥

উপৰোক্ত প্ৰকাৰে - সমৰ্পণেৰে সৈতে যাৰ মোহ আৰু মান নষ্ট হৈ গৈছে, আসক্তিকৰ্মী সংগদোষ যি জনে জিকি লৈছে 'অধ্যাত্মনিত্যা' পৰমাত্মাৰ স্বৰূপত যাৰ নিৰন্তৰ স্থিতি আছে, যাৰ কামনা বিলাক বিশেষ ৰূপেৰে নিবৃত্তি হৈ গৈছে আৰু সুখ-দুখৰ দ্বন্দ্বৰ পৰা বিমুক্ত হোৱা জ্ঞানীজন সেই অবিনাশী পৰমপদ প্ৰাপ্ত কৰে। যেতিয়ালৈকে এই অৱস্থা নহয়, তেতিয়ালৈকে সংসাৰবৃক্ষ কাট নাখায় ইয়ালৈকে বৈৰাগ্যৰ আৱশ্যকতা আছে। সেই পৰমপদৰ স্বৰূপ কি, যাক পোৱা হয়?

ন তন্ত্ৰাসয়তে সূৰ্য্যো ন শশাঙ্কো ন পাবকঃ।

যদগত্বা ন নিবৰ্তন্তে তদ্ধাম পৰমং মম ॥ ৬ ॥

সেই পৰমপদক সূৰ্য্য, চন্দ্ৰ আৰু অগ্নিয়েও প্ৰকাশিত নকৰে। যি পৰমপদক প্ৰাপ্ত কৰি মনুষ্য পূণৰ সংসাৰলৈ নাহে, সেয়াই মোৰ পৰমধাম, অৰ্থাৎ তেওঁৰ পূণৰ জন্ম নহয়। এই পদৰ প্ৰাপ্তিত সকলোৰে সমান অধিকাৰ আছে। ইয়াত কয়

মমৈবাংশো জীৱলোক জীবভূতঃ সনাতনঃ।

মনঃ ষষ্ঠানীন্দ্রিয়াণি প্ৰকৃতি স্থানি কৰ্ষতি ॥ ৭ ॥

অৰ্থাৎ এই দেহত (শৰীৰেই লোক) এই জীৱাত্মা মোৰেই সনাতন অংশ আৰু সিয়েই এই ত্ৰিগুণময়ী মায়াত স্থিত হৈ মনেৰে সৈতে পঞ্চ ইন্দ্ৰিয়ক আকৰ্ষিত কৰে। কেনেকৈনো বাৰু?

শৰীৰং যদবাপ্নোতি যচ্চাপ্যুৎক্ৰামতীশ্বৰঃ।

গৃহীত্বৈতানি সংযাতি বায়ুৰ্গন্ধানিৰাশয়াৎ।। ৮।।

যি দৰে বায়ুৱে গন্ধৰ স্থানৰ পৰা গন্ধক গ্ৰহন কৰি লৈ যায়, ঠিক সেইদৰে দেহৰ স্বামী জীৱাত্মাই প্ৰথমে যি শৰীৰক ত্যাগ কৰে, তাৰ পৰা মন আৰু পঞ্চ জ্ঞানেন্দ্ৰিয়ৰ কাৰ্য্য-কলাপক গ্ৰহণ কৰি (আকৰ্ষিত কৰি লগতে লৈ) পূৰ্ণৰ যি শৰীৰত প্ৰাপ্ত হয়, তালৈকে লৈ যায়। (যেতিয়া অন্য শৰীৰ তৎক্ষণাৎ নিশ্চিত হৈ আছে তেতিয়া আটাৰ পিণ্ড বনাই কাক দিবা? কোনে লয়? সেইকাৰণে শ্ৰীকৃষ্ণই অৰ্জুনক কৈছিল যে এই অজ্ঞানতা তোমাৰ কৰ পৰা উৎপন্ন হ'ল যে পিণ্ডোদক ত্ৰিষ্মা লুপ্ত হৈ যাব?) তাত গৈ কৰে কি? মনৰে সৈতে যষ্ঠ ইন্দ্ৰিয় কোন হয়?

শ্ৰোত্ৰং চক্ষুঃ স্পৰ্শনং চ বসনং স্ৰাণমেৰ চ।

অধিষ্ঠায় মনশ্চায়ং বিষয়ানুপসেৱতে।। ৯।।

সেই শৰীৰত স্থিত হৈ এই জীৱাত্মাই কান, চকু, ছাল, জিভা, নাক আৰু মনৰ আশ্ৰয় লৈ অৰ্থাৎ এই সকলোৰে সহায়ত বিষয় সমূহক সেৱন কৰে। কিন্তু এইদৰে দেখা পোৱা নাযায়, সকলোৰে তেনেকৈ নেদেখে, এই ক্ষেত্ৰত শ্ৰীকৃষ্ণই কয় -

উৎক্ৰামন্তুং স্থিতং ৰাপি ভুঞ্জানং বা গুণাস্বিতম্।

বিমূঢ়া নানুপশ্যন্তি পশ্যন্তি জ্ঞান চক্ষুষণঃ।। ১০।।

শৰীৰ এৰি গলেও, শৰীৰত স্থিত থাকিলেও, বিষয় সমূহে ভোগ কৰিলেও অথবা তিনিও গুণৰে মুক্ত হৈও জীৱাত্মাক বিশেষ মুঢ় অজ্ঞানীয়ে নেজানে। মাত্ৰ জ্ঞানৰূপী নেত্ৰ থকা জনেহে তাক জানে, দেখে, ঠিক সেইদৰে। এতিয়া সেই দৃষ্টি ক'ত পোৱা যায়? আগলৈ চাওক -

যতন্তো যোগিনশ্চৈনং পশ্যন্ত্যাত্মন্যবস্থিতম্।

যতন্তোহপ্যকৃতাত্মানো নৈনং পশ্যন্ত্যচেতসঃ।। ১১।।

যোগীজনে নিজৰ হৃদয়ত চিন্তক চাৰিওফালৰ পৰা টানি আনি এই আত্মাক যত্ন কৰি প্ৰত্যক্ষ ভাৱে দৰ্শন কৰে; কিন্তু অকৃতার্থ আত্মবানে অৰ্থাত

মলিণ অন্তঃকৰণ থকা জনে, অঞ্জলনী জনে যত্ন কৰিও এই আত্মাক নেদেখে (কিয়নো তাৰ অন্তঃকৰণ বাজ্যিক পবৃত্তিত এতিয়াও সিচৰিত হৈ আছে)। চিত্তক চাৰিওফালৰ পৰা টানি একত্ৰিত কৰি অন্তৰাত্মাত যত্ন কৰা ভাবুকজন তেওঁক পাবৰ যোগ্য। সেয়ে অন্তঃকৰণৰ পৰাই সততে স্মৰণৰ আৰম্ভ্যক। এতিয়া মহাপুৰুষ সকলৰ স্বৰূপত যি বিভূতি সমূহ পোৱা যায়। (যি আগতে কোৱা হৈছে) তাৰ ওপৰত প্ৰকাশ কৰে-

যদাদিত্যগতং তেজো জগদ্ধাসয়তেহখিলম্।

যচ্চন্দ্ৰমসি যচ্চাগ্নৌ তত্তেজো বিদ্ধি মামকম্ ॥১২॥

যি তেজ সূৰ্য্যত স্থিত থাকি সম্পূৰ্ণ জগতক প্ৰকাশিত কৰে, যি তেজ চন্দ্ৰত থাকে আৰু যি তেজ অগ্নিত থাকে, সেইটো তুমি মোৰ বুলিয়ে জানা। এতিয়া সেই মহাপুৰুষৰ দ্বাৰা কৰা কাৰ্য সম্পৰ্কে কয়-

গামাৰিণ্য চ ভূতানি ধাৰয়াম্যহমোজসা।

পুষ্যমি চৌষধীঃ সৰ্বাঃ সোমো ভূত্বা বসাত্মকঃ ॥ ১৩ ॥

ময়েই পৃথিৱীত প্ৰৱেশ কৰি নিজৰ শক্তিৰে সকলো ভূতক ধাৰণ কৰোঁ আৰু চন্দ্ৰত বস স্বৰূপ হৈ সম্পূৰ্ণ বনস্পতিক পুষ্টি সাধন কৰোঁ।

অহং বৈশ্বানৰো ভূত্বা প্ৰাণিনাং দেহমাত্মিতঃ।

প্ৰাণাপানসমায়ুক্তঃ পচাম্যন্নং চতুৰ্বিধম্ ॥ ১৪ ॥

ময়েই প্ৰাণীৰ শৰীৰত অগ্নিকপে থাকি প্ৰাণ আৰু আপানেৰে যুক্ত হৈ চাৰি প্ৰকাৰৰ অন্নক পাচন ক্ৰিয়া কৰোঁ।

চাৰি আধ্যায়ত স্বয়ং যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই ইন্দ্ৰিয়াগ্নি, সংযমাগ্নি, যোগাগ্নি, প্ৰাণ-অপানাগ্নি, ব্ৰহ্মাগ্নি ইত্যাদি তেৰ-চৈধ্য অগ্নিৰ উল্লেখ কৰিছিল, যত সকলোৰ পৰিণাম আছিল জ্ঞান। জ্ঞানেই অগ্নি। শ্ৰীকৃষ্ণই কয় এনে অগ্নি স্বৰূপ হৈ প্ৰাণ আৰু অপানৰ দ্বাৰা হৈ আছে, তাৰ চাৰিটা বিধিৰে (জপ সদায়েই শ্বাস-প্ৰশ্বাসৰ দ্বাৰা হৈ আছে, তাৰ চাৰিটা বিধি হ'ল ব্যাখৰী, মধ্যমা, পশ্চ্যন্তী আৰু পৰা, এই চাৰি বিধিৰ দ্বাৰা) সজা অন্নক মইয়ে পাচন কৰোঁ।

শ্ৰীকৃষ্ণৰ অনুসৰি ব্ৰহ্মাই হ'ল একমাত্ৰ অন্ন, যাৰদ্বাৰা আত্মা পূৰ্ণ তৃপ্ত হৈ যায় আৰু কেতিয়াও অতৃপ্ত নাথাকে। শৰীৰ পোষণৰ প্ৰচলিত অন্নক

যোগেশ্বৰে আহাৰৰ সংজ্ঞা দিছে (যুক্তাহাৰ) বাস্তৱিক অন্ন পৰমাত্মাহে। ব্যাখৰী, মধ্যমা, পশ্চ্যন্তী আৰু পৰা চাৰি বিধিৰ পৰা উলাই আহিহে সেই অন্ন পৰিপক্ক হয়। ইয়াকে বহুতো মহাপুৰুষে নাম, ৰূপ, লীলা আৰু ধাম বুলি কৈছে। প্ৰথমে নামৰ জপ হয়। ক্ৰমশঃ হৃদয়দেশৰ ইষ্টৰ স্বৰূপ প্ৰকট হ'ব ধৰে। তাৰ পিছত তেওঁৰ লীলাৰ বোধ হব ধৰে যে সেই ঈশ্বৰ কেনেকৈ অণুপৰমাণুত ব্যাপ্ত হৈ আছে? কি দৰে তেওঁ সৰ্বত্ৰ কাৰ্য্য কৰি আছে? এইদৰে হৃদয় দেশত ক্ৰিয়া-কলাপৰ দৰ্শনেই লীলা (বাহিৰৰ ৰামলীলা, ৰাসলীলা নহয়) আৰু সেই ঈশ্বৰীয় লীলাৰ প্ৰত্যক্ষ অনুভূতি লৈ, যেতিয়া মূল লীলাধাৰীৰ লীলাৰ স্পৰ্শ পায়, তেতিয়াহে ধামৰ স্থিতি আহি পৰে। তাক জানি সাধক তাতে প্ৰতিষ্ঠিত হৈ যায়। তাতে প্ৰতিষ্ঠিতহোৱা আৰু পৰাবানীৰ পৰিপক্কতা অৱস্থাত পৰব্ৰহ্মৰ স্পৰ্শ কৰি তাতে স্থিত থকা, দুটাই লগে লগে হয়।

এইদৰে প্ৰাণ আৰু অপাণ অৰ্থাৎ শ্বাস আৰু প্ৰশ্বাসেৰে যুক্ত হৈ চাৰি বিধিৰে অৰ্থাৎ ব্যাখৰী, মধ্যমা, পশ্চ্যন্তী আৰু ক্ৰমশঃ উত্থান হৈ পৰাৰ শেষকালত তেওঁ 'অন্ন' ব্ৰহ্ম পৰিপক্ক হৈ যায়, প্ৰাপ্তীও হয়, পাচনও হৈ যায় আৰু পাত্ৰও পৰিপক্ক হৈ যায়।

সৰ্বস্য চাহং হৃদি সন্নিৱিষ্টো মন্তঃ স্মৃতিজ্ঞানমপোহনং চ।

বেদৈশ্চ সৰ্বৈৰহমেৰ বেদ্যো বেদান্তকৃদ্বেদবিদেৰ চাহম্ ॥ ১৫ ॥

ময়েই সকলো প্ৰাণীৰ হৃদয়ত অন্তৰ্য্যামী ৰূপে স্থিত হওঁ। মোৰ দ্বাৰাই স্বৰূপৰ স্মৃতি (সুৰত যাৰ তত্ত্ব পৰমাত্মা বিস্মৃত হৈ আছে, তাৰ স্মৰণ হোৱা) হয়, (প্ৰাপ্তীকালৰ চিত্ৰণ) স্মৃতিৰ লগতে জ্ঞান(সাক্ষাৎকাৰ) আৰু 'অপোহনং' অৰ্থাৎ বাধা সমূহৰ শমন মোৰ, ইষ্টৰ দ্বাৰাই হয়। সকলো বেদৰ দ্বাৰা ময়েই জনাৰ যোগ্য। বেদান্তৰ কৰ্ত্তা অৰ্থাৎ 'বেদস্য অন্তঃসঃ বেদান্ত' (বেলেগে আছিল কাৰণে জনাগ'ল, যেতিয়া জনাৰ পিছত সেই স্বৰূপতে প্ৰতিষ্ঠিত হৈ গ'ল তেতিয়া কাক জানিব) বেদৰ অন্তিম স্থিতিৰ কৰ্ত্তাময়েই আৰু 'বেদবিদ'ও ময়েই অৰ্থাৎ বেদৰ জ্ঞাতা। আধ্যায়ৰ আৰম্ভনীতে তেখেতে কৈছিল যে সংসাৰ এটা বৃক্ষ। ওপৰত পৰমাত্মা মূল আৰু তলত প্ৰকৃতিলৈকে শাখা। যি জনে এই মূলৰ দ্বাৰা প্ৰকৃতিৰ বিভাজন জানে, মূলকো জানে, তেৱেই বেদবিদ। ইয়াত কৈছে ময়েই বেদবিদ। তাক যিয়ে জানে, শ্ৰীকৃষ্ণই নিজক তেওঁলোকৰ

লগত তুলনা কৰিলে যে, তেওঁ বেদবিদ; ময়েই বেদবিদ। শ্ৰীকৃষ্ণও এজন তত্ত্বজ্ঞ মহাপুৰুষ যোগীতকৈও পৰমযোগী আছিল। ইয়াত এই প্ৰশ্ন পূৰা হৈ গ'ল। এতিয়া কৈছে যে সংসাৰত পুৰুষৰ স্বৰূপ দুই প্ৰকাৰৰ হয় -

দ্বাবিমৌ পুৰুষৌ লোকে ক্ষৰশচাক্ষৰ এব চ।

ক্ষৰঃ সৰ্বাণি ভূতানি কূটস্থোহক্ষৰ উচ্যতে ॥ ১৬ ॥

অৰ্জুন! এই সংসাৰত ক্ষৰ হোৱা পৰিবৰ্ত্তনশীল আৰু অপৰিবৰ্ত্তনশীল এনে দুই প্ৰকাৰৰ পুৰুষ আছে। তাৰ ভিতৰত সম্পূৰ্ণ ভূত-প্ৰাণীৰ শৰীৰতো নাশশীল, সেইটো ক্ষৰ পুৰুষ। আজি আছে, কালিলৈ নেথাকিব আৰু এই স্থিত পুৰুষক অবিনাশী বুলি কোৱা হয়। সাধনাৰ দ্বাৰা মনেৰে সৈতে ইন্দ্ৰিয়সমূহৰ নিৰোধ অৰ্থাৎ যাৰ ইন্দ্ৰিয় সমূহ স্থিৰ হৈছে তেওঁক অক্ষৰ বুলি কোৱা হয়; এতিয়া আপুনি স্ত্ৰী হওক অথবা পুৰুষ, যদি শৰীৰ, আৰু শৰীৰ জন্মৰ কাৰণ সংস্কাৰ সমূহৰ ক্ৰমত লাগি আছে, তেতিয়া হলে আপোনাক ক্ষৰ পুৰুষ কোৱা হয় আৰু যেতিয়া মনেৰে সৈতে ইন্দ্ৰিয় স্থিৰ হৈ আছে, তেতিয়াহলে তেৱেই অক্ষৰ পুৰুষ হয়। কিন্তু এইটোও পুৰুষৰ অৱস্থা বিশেষ হৈছে। এই দুটাৰো পাৰত এক অন্য পুৰুষ আছে -

উত্তমঃ পুৰুষস্তন্যঃ পৰমাত্মেত্য়াদাহতঃ।

যো লোকত্ৰয়মাৰিষ্য বিভৰ্তব্যয় ঈশ্বৰঃ ॥ ১৭ ॥

তেওঁলোক দুটাতকৈ অতি উত্তম পুৰুষতো অন্যই আছে, যি তিনিও লোকত প্ৰৱেশ কৰি সকলোৰে ধাৰণ-পোষণ কৰিছে আৰু অবিনাশী, পৰমাত্মা, ঈশ্বৰ এনেদৰে কোৱা হৈছে। পৰমাত্মা, অব্যক্ত, অবিনাশী, পুৰুষোত্তম ইত্যাদি তেওঁৰ পৰিচায়ক শব্দ হয়, বস্তুত ই বেলেগেই অৰ্থাৎ অনিৰ্বচনীয়। এই ক্ষৰ-অক্ষৰৰ পাৰত মহাপুৰুষৰ শেষৰ অৱস্থা হয়, যাক পৰমাত্মা ইত্যাদি শব্দেৰে ইঙ্গিত কৰা হয়, কিন্তু তেওঁ বেলেগে হয় অৰ্থাৎ অনিৰ্বচনীয়। সেই স্থিতিতে যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই নিজৰ পৰিচয় দিছে। যেনে -

যস্মাৎক্ষৰমতীতোহহমক্ষৰাদপি চোত্তমঃ।

অতোহস্মি লোকে বেদে চ প্ৰথিতঃ পুৰুষোত্তমঃ ॥ ১৮ ॥

মই উপৰোক্ত নাশৱান, পৰিবৰ্ত্তনশীল ক্ষেত্ৰৰ পৰা সৰ্বদা অতীতত

আছোঁ আৰু অক্ষৰ-অবিনাশী স্থিৰ পুৰুষতকৈও উত্তম হওঁ। সেই কাৰণে
লোক আৰু বেদত মই পুৰুষোত্তম নামেৰে প্ৰসিদ্ধ আছোঁ।

যো মামেবমসম্মুঢ়ো জানাতি পুৰুষোত্তমম্।
স সৰ্ব্ব্বিদ্ভজতি মাং সৰ্বভাৰেন ভাৰত।। ১৯।।

হে ভাৰত! যেনেদৰে ওপৰত কোৱা হৈছে যে এইদৰে যি জ্ঞানী
পুৰুষে মোক পুৰুষোত্তমক সাক্ষাৎ জানে, তেওঁ সৰ্ব্বজ্ঞ পুৰুষ সকলো প্ৰকাৰেৰে
মোক পৰমাত্মাকে ভজনা কৰে। তেওঁ মোতকৈ বেলেগে নহয়।

ইতি গুহ্যতমং শাস্ত্ৰমিদমুক্ত ময়ানঘ।
এতদ্বুদধ্বা বুদ্ধিমান্স্যাৎকৃতকৃত্যশ্চ ভাৰত।। ২০।।

হে নিষ্পাপ অৰ্জুন! এইদৰে এই অতি গোপনীয় শাস্ত্ৰ মোৰ দ্বাৰা
কোৱা হ'ল। ইয়াৰ তত্বক জানি মনুষ্য পূৰ্ণজ্ঞাতা আৰু কৃতার্থ হয়। সেয়ে
যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণৰ এই বানী স্বয়ং এখন পূৰ্ণ শাস্ত্ৰ।

শ্ৰীকৃষ্ণৰ এই বহস্য অত্যন্ত গুপ্ত আছিল। তেওঁ মাত্ৰ অনুৰাগী
সকলক হে কৈছিল। এইটো মাত্ৰ অধিকাৰ প্ৰাপ্ত জনৰ বাবে আছিল, সকলোৰে
বাবে নাছিল; কিন্তু যেতিয়া এই বহস্য (শাস্ত্ৰ) লিখিত আকাৰে হ'ল তেতিয়া
সকলোৰে সন্মুখত কিতাপ আকাৰে হ'ল, সেই কাৰণে শ্ৰীকৃষ্ণই সকলোৰে
বাবে কৈছে বুলি কলেও বস্তুতঃ অধিকাৰ প্ৰাপ্ত জনৰ বাবে কৈছে। শ্ৰীকৃষ্ণৰ
এই স্বৰূপ সকলোৰে বাবে নাছিলেও। কোনোবাই তেওঁক ৰজা, কোনোবাই
দুত আৰু কোনোবাই যাদৱ বুলি কৈছিল; কিন্তু অধিকাৰ প্ৰাপ্ত অৰ্জুনক তেওঁ
বেলেগে নেভাবিলে। অৰ্জুনে জানিলে যে তেওঁ পৰমসত্য পুৰুষোত্তম হয়।
বেলেগে ভৱা হলে তেওঁৰ কল্যাণ নহ'লহেতেন।

এই বিশেষত্ব প্ৰাপ্তীৰান প্ৰত্যক মহাপুৰুষত পোৱা যায়। ৰামকৃষ্ণ
পৰমহংস দেৱ এবাৰবৰ আনন্দিত হৈ আছিল। ভক্ত সকলে সুধিলে “আজিতো
আপুনি বহুত প্ৰসন্ন হৈ আছে!” কলে, “আজি মই ‘সেই’ পৰমহংস হলোঁ”।
তেওঁৰ সমকালীন কোনোৱা ভাল মহাপুৰুষ পৰম হংস আছিল, তেওঁৰ ফালে
সংকেত কৰি কৈছিল। অলপ সময়ৰ পাছত মনক্ৰম-বচনৰ দ্বাৰা বৈবাগ্যৰ
আশাত নিজৰ পিছত ঘূৰি থকা সাধকক কলে - “চোৱা, এতিয়া তোমালোকে

সন্দেহ নকৰিবা। মই সেই বাম, যি ত্ৰেতাতে হৈছিল। ময়েই সেই কৃষ্ণ, যি দ্বাপৰতে হৈছিল। মই তেওঁলোকৰেই পবিত্ৰ আত্মা, সেই স্বৰূপেই মোৰ। যদি পাব বিচৰা মোলৈ চোৱা।

ঠিক এইদৰে ‘পূজ্যগুৰু মহাৰাজ জী’ও সকলোৰে আগতে কৈছিল - শুনা, আমি ভগৱানৰ দূত। যি সচাকৈ সন্ত, তেওঁ ভগৱানৰেই দূত হয়। আমাৰ দ্বাৰাই তেওঁৰ বাৰ্তা পোৱা যায়।” যীশুয়ে কৈছিল - “মই ভগৱানৰ পুত্ৰ” মোৰ ওচৰলৈ আহা - তেতিয়া ঈশ্বৰৰ পুত্ৰ হবা।” সেয়ে সকলো পুত্ৰ হব পাৰে। অৱশ্যে ওচৰলৈ যোৱা মানে সাধনাৰ মাধ্যমেদি গৈ পোৱা। মহম্মদ সাহাৰে কৈছিল - “মই আল্লাৰ ৰছুল হওঁ, বাৰ্তাবাহক হওঁ।” পূজ্য মহাৰাজ জী সকলোকে এইটোৱে কৈছিল যে কোনো বিচাৰ কৰাৰ আৱশ্যক নাই। তেওঁৰ পিছত লাগি থকা বিৰক্ত সকলক তেওঁ কৈছিল - “কেৱল মোৰ স্বৰূপক চোৱা। যদি তোমাৰ সেই পৰমতত্ত্বৰ ইচ্ছা আছে, তেতিয়াহলে মোলৈ চোৱা, সন্দেহ নকৰিবা।” বহুতে সন্দেহ কৰিছিল, তেতিয়া তেওঁলোকক অনুভৱত দেখা দি দাবী ধমকী দি, বাহ্যিক বিচাৰৰ পৰা আতঁৰাই, যত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণৰ অনুসৰি (আধ্যায় ২/৪০-৪৩) অনন্ত পূজা পদ্ধতিৰ পৰা উলিয়াই নিজৰ স্বৰূপত লগালে। তেওঁ এতিয়াও মহাপুৰুষৰ ৰূপতে অৱস্থিত হৈ আছে। এইদৰে শ্ৰীকৃষ্ণৰ নিজৰ স্থিতি গোপনীয় আছিল যদিও, নিজৰ অনন্য ভক্ত পূৰ্ণ অধিকাৰী অনুৰাগী অৰ্জুনৰ প্ৰতি প্ৰকাশিত কৰিছিল। প্ৰত্যেক ভক্তৰ বাবে এইটো সম্ভৱ আছে, মহাপুৰুষ সকলে বহুতক সেই ৰাস্তায়েদি লৈ যায়।

নিষ্কৰ্ষ :-

এই আধ্যায়ৰ আৰম্ভণীত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছিল যে সংসাৰ এজোপা বৃক্ষ। আহঁতৰ দৰে বৃক্ষ। আহঁত এই উদাহৰণ হে। ওপৰ ফালে ইয়াৰ মূল পৰমাত্মা আৰু তলৰফালে প্ৰকৃতি শাখা-প্ৰশাখাবোৰ। যি জনে এই বৃক্ষক মূলেৰে সৈতে বিদিত কৰি লয়, তেঁৱেই বেদৰ জ্ঞাতা। এই সংসাৰ বৃক্ষৰ শাখাবোৰ তলে-ওপৰে সৰ্বত্ৰ ব্যাপ্ত হৈ আছে আৰু ‘মূলানি’ - তাৰ

শিৰাৰ জালও তলে-ওপৰে সৰ্বত্ৰ ব্যাপ্ত হৈ আছে; কিয়নো সেইমূলেই হ'ল
ঈশ্বৰ আৰু তেৱে বীজ ৰূপে প্ৰত্যেক জীৱৰ হৃদয়ত নিবাস কৰিছে।

পৌৰাণিক আখ্যান মতে, এবাৰ কমলত বহা ব্ৰহ্মাই ভাবিলে যে
মোৰ উদগম স্থল ক'ত আছে য'ৰ পৰা জন্ম হৈছিল, সেই কমলৰ নলৰ ভিতৰত
প্ৰবেশ কৰি যাবলৈ ধৰিলে। অনবৰত গৈয়ে থাকিল; কিন্তু নিজৰ উদগম স্থল
দেখা নাপালে। তেতিয়া হতাশ হৈ তেওঁ সেই কমলৰ আসনতে বহি ললে।
চিন্তক নিৰোধ কৰিবলৈ ধৰিলে আৰু ধ্যানৰ দ্বাৰা তেওঁ নিজৰ উদগম স্থল
পাই গ'ল; পৰমতত্বৰ সাক্ষাৎকাৰ কৰিলে। স্তুতি কৰিলে। পৰম স্বৰূপৰ পৰা
আদেশ হ'ল যে “মই সৰ্বত্ৰতে ব্যাপ্ত আছোঁ হয়, কিন্তু মোৰ প্ৰাপ্তীৰ স্থান মাত্ৰ
হৃদয়। হৃদয়-দেশত যি ধ্যান কৰে, তেওঁমোক প্ৰাপ্ত কৰে।

ব্ৰহ্মা এটা প্ৰতীক হে। যোগ-সাধনাৰ এটা ফালে উন্মুখ হৈ ব্ৰহ্মবিদ্যাৰে
সংযুক্ত বুদ্ধিয়েই ব্ৰহ্মা। কমল পানীত থাকিও নিৰ্মল আৰু নিৰ্লেপ হৈ থাকে।
বুদ্ধি যেতিয়া ইফালে-সিফালে ফুৰে, তেতিয়ালৈকে পোৱা নাযায় আৰু
যেতিয়া সেই বুদ্ধি নিৰ্মলতাৰ আসনত স্থিত হয়, মনেৰে সৈতে ইন্দ্ৰিয়বিলাকক
একগোট কৰি হৃদয়-দেশত নিৰোধ কৰি লয়, সেই নিৰোধৰো বিলয়কালত
নিজৰ হৃদয়তেই পৰমাত্মাক প্ৰাপ্ত কৰে।

ইয়াতো যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণৰ অনুসৰি সংসাৰ এজোপা বৃক্ষ, যাৰ মূল
সৰ্বত্ৰ আৰু শাখা বিলাকো সৰ্বত্ৰতে আছে। ‘কৰ্মানুবন্ধীনি মনুষ্যালোকে’ - কৰ্মৰ
অনুসৰি মাত্ৰ মনুষ্য যোনীতে বন্ধন তৈয়াৰ হয়, বান্ধে। অন্য যোনীবোৰ এইবোৰ
কৰ্মঅনুসৰিয়েই ভোগ কৰিব লাগিব। সেয়ে দৃঢ় বৈৰাগ্যৰূপী শস্ত্ৰৰ দ্বাৰা এই
সংসাৰৰূপী আহঁত বৃক্ষক তুমি কাটা আৰু সেই পৰম পদক বিচৰা, যলৈ
যোৱা মহৰ্ষি সকলৰ পূণৰ জন্ম হোৱা নাই বা নহয়।

কি দৰে জানিব পৰা যাব যে সংসাৰ বৃক্ষ কটা হ'ল? যোগেশ্বৰে কয়
যে যিজন মান আৰু মোহৰ পৰা সৰ্বদা ৰহিত হৈছে, যিজনে সংগ দোষক
জিকিছে, যাৰ কামনা বিলাক নিবৃত্ত হৈ গৈছে আৰু যি দ্বন্দ্বৰ পৰা মুক্ত হৈছে,
সেই পুৰুষে সেই পৰমতত্বক প্ৰাপ্ত কৰিছে। সেই পৰমপদক সূৰ্য্য, চন্দ্ৰ আৰু
অগ্নিয়ে প্ৰকাশিত নকৰে, সি স্বয়ং প্ৰকাশ স্বৰূপ। য'ত যোৱা বিলাক ঘূৰি

অহা নাই, সেয়াই মোৰ পৰমধাম, যাক প্ৰাপ্ত কৰাৰ অধিকাৰ সকলোৰে আছে; সেই জীৱাত্মা মোৰেই শুদ্ধ অংশ।

শৰীৰ ত্যাগ কৰিবৰ সময়ত জীৱাত্মাই মন আৰু পঞ্চ জ্ঞানেন্দ্ৰিয়ৰ কাৰ্য্য-কলাপক লৈ নতুন শৰীৰ ধাৰণ কৰে। সংস্কাৰ সাত্ত্বিক থাকিলে সাত্ত্বিক স্তৰলৈ যায়, ৰাজসী থাকিলে মধ্যম স্থানলৈ যায়, আৰু তামসী থাকিলে জঘন্য যোনীলৈকে যায় তথা ইন্দ্ৰিয়ৰ অধিষ্ঠাতা মনৰ মাধ্যমেৰে বিষয়সমূহ দেখে আৰু ভোগ কৰে, এইটো দেখা নাপায়, ইয়াক দেখাৰ দৃষ্টিয়েই হ'ল জ্ঞান। কিবা এটা মনত ৰখাৰ নাম জ্ঞান নহয়। যোগীজনে হৃদয়ত চিন্তক একত্ৰিত কৰি যত্ন কৰিহে তাক দেখা পায়; সেয়ে জ্ঞান সাধনাৰ দ্বাৰা হয়; অৱশ্যে অধ্যয়নেৰেও তাৰ প্ৰতি আকৰ্ষণ উৎপন্ন হয়। সংশয়যুক্ত, আকৃতাৰ্থা লোকে যত্ন কৰিলেও তাক দেখা নাপায়। ইয়াত প্ৰাপ্তীৱানৰ স্থানৰ চিত্ৰণ কৰা হৈছে। সেয়ে সেই অৱস্থাত বিভূতি সমূহৰ প্ৰবাহ স্বাভাৱিক। তাৰ ওপৰত প্ৰকাশ পেলাই যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কয় যে সূৰ্য্য আৰু চন্দ্ৰত ময়েই প্ৰকাশ, অগ্নিত ময়েই তেজ। মইয়ে প্ৰচণ্ড অগ্নিৰূপে চাৰিটা বিধিৰে পৰিপক্ক হোৱা অন্নক পাচন কৰাওঁ। শ্ৰীকৃষ্ণৰ শব্দত অন্ন একমাত্ৰ ব্ৰহ্ম। **অন্নং ব্ৰহ্ম ব্যজানাৎ** (তৈতৰিয় উপনিষদ ২/১) যি উপনিষদৰ দ্বাৰা শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছিল, তাৰ এয়াই নিৰ্ণয়) যাক প্ৰাপ্ত কৰি এই আত্মা তৃপ্ত হৈ যায়। ব্যাখৰীৰ পৰা পৰালৈকে অন্ন পূৰ্ণ পৰিপক্ক হৈ পাচন হৈ যায়, সেই পাত্ৰও হেৰাই যায়। এই অন্নক ময়েই পাচন কৰোঁ, অৰ্থাৎ সদগুৰু যেতিয়ালৈকে সাৰথি নহয়, তেতিয়ালৈকে এইটো উপলব্ধি নহয়।

এই ক্ষেত্ৰত জোৰ দি যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই পুনৰ কৈছে যে সম্পূৰ্ণ প্ৰাণী সমূহৰ অন্তৰত থাকি ময়েই স্মৃতি কৰাওঁ যি স্বৰূপ বিস্মৃত আছিল তাৰ স্মৰণ কৰাওঁ। স্মৃতিৰ লগতে পাব পৰা জ্ঞানও ময়েই। তাত আহিব পৰা বাধাৰ ব্যৱস্থাও মোৰ দ্বাৰাই হয়। ময়ে জানিবৰ যোগ্য আৰু বিদিত হোৱাৰ পিছত তয় জনাওতা অন্তকৰ্ত্তাও ময়েই। কোনে কাক জানিব? মই বেদবিদ। আধ্যায়ৰ আৰম্ভনীতে কৈছিল, যিজনে সংসাৰ-বৃক্ষৰ মূলে সৈতে জানে তেৱে বেদবিদ;

কিন্তু তাক কটা জনেহে জানে। ইয়াত কৈছে - ময়ো বেদবিদ্। সেই বেদবিদ্ সমুহৰ ভিতৰত নিজকো গণনা কৰিছে। সেয়ে শ্ৰীকৃষ্ণও ইয়াত বেদবিদ্ পুৰুষোত্তম, যাক পাবৰ অধিকাৰ মানৱমাত্ৰেই আছে।

শেষত তেখেতে কৈছেযে লোকত তিনি প্ৰকাৰৰ পুৰুষ থাকে। ভূত-প্ৰাণী আদিৰ সম্পূৰ্ণ শৰীৰ ক্ষৰ! মনৰ স্থিৰ অৱস্থাত এই পুৰুষেই অক্ষৰ হয়; কিন্তু তথাপিও দ্বন্দ্বাত্মক হয়, ইয়াতকৈ দূৰত থকা যি পৰমাত্মা পৰমেশ্বৰ, অব্যক্ত আৰু অবিনাশী কোৱা হয় সেইটো মূলত বেলেগেই। এই ক্ষৰ-অক্ষৰতকৈ দূৰত থকা অৱস্থা, এয়াই পৰমস্থিতি। এই প্ৰসংগত তেওঁ কয় যে ময়ো ক্ষৰ-অক্ষৰৰ পাৰত থকা সেয়াই হওঁ, সেইকাৰণে লোকে মোক পুৰুষোত্তম বুলি কয়। এইদৰে উত্তম পুৰুষক যিজনে জানে, সেই জ্ঞানী ভক্তজন সদায়েই সকলো ফালৰ পৰা মোৰেই ভজনা কৰে। তেওঁৰ জনাত কোনো প্ৰভেদ নাই। অৰ্জুন! এই অত্যন্ত গোপনীয় বহস্য মই তোমাৰ বাবে ক'লো। প্ৰাপ্তীৱান মহাপুৰুষ সকলে সকলোৰে আগত নকয়, কিন্তু অধিকাৰ প্ৰাপ্ত ভক্তৰ ওচৰত গোপন (দূৰত্ব) নাৰাখে। দূৰত্ব ৰাখিলে তেওঁ পাব কেনেকৈ?

এই আধ্যাত আত্মাৰ তিনিটা স্থিতিৰ চিত্ৰণ ক্ষৰ, অক্ষৰ আৰু তাতকৈও অতিউত্তম পুৰুষৰ ৰূপ স্পষ্ট কৰা হ'ল, যেনেদৰে আগৰ আধ্যায় বিলাকত কোৱা হোৱা নাই। সেয়ে -

এইদৰে শ্ৰীমৎভাগৱৎ গীতাৰূপী উপনিষদ এৰং ব্ৰহ্মবিদ্যা তথা যোগশাস্ত্ৰ বিষয়ক শ্ৰীকৃষ্ণ আৰু অৰ্জুনৰ সংবাদত 'পুৰুষোত্তম যোগ' নামৰ পোন্ধৰ আধ্যায় পূৰ্ণ হ'ল।

ইতি শ্ৰীমৎ পৰমহংস পৰমানন্দস্য শিষ্য স্বামী অড়গড়ানন্দকৃতে শ্ৰীমৎভাগৱৎ গীতায়াঃ 'যথার্থ-গীতা' ভাষ্য 'পুৰুষোত্তম যোগ' নাম পঞ্চদশোহধ্যায়ঃ ॥ ১৫ ॥

॥ হৰি ওঁ তৎসৎ ॥

‘ওঁ’

শ্ৰীপৰমাত্মনে নমঃ

অথ ষোড়শোহধ্যায়ঃ

যোগেশ্বৰ ভগৱান শ্ৰীকৃষ্ণৰ প্ৰশ্ন প্ৰস্তুত কৰাৰ নিজৰ বিশিষ্ট কৌশল আছে। প্ৰথমে তেওঁ প্ৰকৰণৰ বিশেষতা সমূহৰ ওপৰত উল্লেখ কৰে, যাৰ ফলত পুৰুষ তেওঁৰ ফালে আকৰ্ষিত হয়, তাৰ পিছত সেই প্ৰকৰণক স্পষ্ট কৰে। উদাহৰণৰ বাবে কৰ্মকে লোৱা হওক। তেখেতে দ্বিতীয় আধ্যায়ত প্ৰেৰণা দি কৈছিল যে, অৰ্জুন! কৰ্ম কৰা। তৃতীয় আধ্যায়ত তেখেতে সংকেত কৰিছিল যে নিৰ্দাৰিতকৰ্ম কৰা। নিৰ্দাৰিত কৰ্ম কি? তেখেতে কৈছিল যজ্ঞৰ প্ৰক্ৰিয়াই হ’ল কৰ্ম। আকৌ তেখেতে যজ্ঞৰ স্বৰূপ নকৈ প্ৰথমে কলে যে যজ্ঞ আহিল কৰ পৰা আৰু কি দিয়ে? চতুৰ্থ আধ্যায়ত তেৰটা-চৈধ্যটা বিধিৰে যজ্ঞৰ স্বৰূপ স্পষ্ট কৰিলে, যাক কৰাই হ’ল কৰ্ম। ইয়াত কৰ্ম স্পষ্ট হৈ পৰে, যাৰ শুদ্ধ অৰ্থ হ’ল - যোগ-চিন্তন, আৰাধনা, যিটো মন আৰু ইন্দ্ৰিয় সমূহৰ ক্ৰিয়াৰ দ্বাৰা সম্পন্ন হয়।

এইদৰে তেখেতে ন আধ্যায়ত দৈৱী আৰু আসুৰী সম্পদৰ কথা কৈছে। তাৰ বিশেষতাৰ ওপৰত জোৰ দি কৈছে যে অৰ্জুন! আসুৰী স্বভাৱ থকা জনে মোক তুচ্ছ বুলি সম্বোধন কৰে। অৱশ্য মই মনুষ্য শৰীৰতে আছো; কিয়নো মনুষ্য শৰীৰতেই ময়ো এই স্থিতি প্ৰাপ্ত কৰিছো; কিন্তু আসুৰী স্বভাৱ থকাজনে মুঢ় স্বভাৱ থাকোঁতাই মোৰ ভজনা নকৰে। অৱশ্য দৈৱী সম্পদযুক্ত ভক্তজনে অনন্য শ্ৰদ্ধাৰে মোৰ উপাসনা কৰে। কিন্তু সেই সম্পত্তি সমূহৰ স্বৰূপ, তাৰ গঠন এতিয়ালৈকে কোৱা নাই।

এতিয়া যোদ্ধা আধ্যায়ত তাৰ স্বৰূপ স্পষ্ট কৰিব বিচাৰিছে, যাৰ ভিতৰত প্ৰথমে দৈৱী সম্পদৰ লক্ষণ প্ৰস্তুত কৰিছে।

শ্ৰীভগৱানুবাচ

অভয়ং সত্ত্বসংশুদ্ধিজ্ঞানযোগব্যৱস্থিতিঃ ।

দানং দমশ্চ যজ্ঞশ্চ স্বাধ্যায়স্তপ আৰ্জবম্ ॥ ১ ॥

সম্পূৰ্ণনিৰ্ভয়তা, অন্তঃকৰণৰ শুদ্ধতা, তত্ত্বজ্ঞানৰ বাবে ধ্যানত দৃঢ় স্থিতি অথবা নিৰন্তৰ লাগি থকা, সৰ্বস্বৰ সমপৰ্ণ, ইন্দ্ৰিয় সমূহক উত্তম প্ৰকাৰে দমন, যজ্ঞৰ আচৰণ (যেনে স্বয়ং শ্ৰীকৃষ্ণই চাৰি আধ্যায়ত কৈছিল যে সংযমগ্নিত হৰন, ইন্দ্ৰিয়গ্নিত হৰন, প্ৰাণ-আপানত হৰন আৰু শেষত জ্ঞানগ্নিত হৰন অৰ্থাৎ আৰাধনাৰ প্ৰক্ৰিয়া, যি কেৱল মন আৰু ইন্দ্ৰিয় সমূহৰ অন্তঃক্ৰিয়াৰ দ্বাৰা সম্পন্ন হয়; তিল, যৱ, বেদী ইত্যাদি সামগ্ৰীৰ দ্বাৰা হোৱা যজ্ঞৰ গীতাত উল্লেখ কৰা যজ্ঞৰ লগত কোনো সম্বন্ধ নাই। শ্ৰীকৃষ্ণই এনে কোনো কৰ্মকাণ্ডক যজ্ঞ বুলি কোৱা নাই।) স্বাধ্যায় অৰ্থাৎ স্ব-স্বৰূপৰ ভালে অগ্ৰহৰ কৰাব পৰা অধ্যয়ন, তপ অৰ্থাৎ মনেৰে সৈতে ইন্দ্ৰিয় সমূহক ইষ্টৰ অনুৰূপে ঢালি দিয়া তথা 'আৰ্জবম্'- শৰীৰ আৰু ইন্দ্ৰিয় সমূহৰ সৈতে অন্তঃকৰণৰ সৰলতা -

অহিংসা সত্যমক্ৰোধস্ত্যাগঃ শান্তিৰপৈশুনম্ ।

দয়া ভূতেষ্বলোলুপ্তং মাদৰ্বং হ্ৰীৰচাপলম্ ॥ ২ ॥

অহিংসা অৰ্থাৎ আত্মাৰ উদ্ধাৰ (আত্মাক অধোগতিলৈ নিয়াই হ'ল হিংসা। শ্ৰীকৃষ্ণই কয় - যদি মই সাৱধান হৈ কৰ্ম নকৰো তেতিয়াহলে এই সম্পূৰ্ণ প্ৰজাৰ হত্যা কৰোঁতা আৰু বৰ্ণসংকৰৰ কৰ্ত্তা হৈ পৰোঁ।

আত্মাৰ শুদ্ধ বৰ্ণহ'ল - পৰমাত্মা, তাৰ প্ৰকৃতিত ঘৃষি-ফুৰাই হ'ল বৰ্ণসংকৰ, আত্মাৰ অৱনতি হিংসা আৰু আত্মাৰ উদ্ধাৰ হ'ল অহিংসা।) সত্য (সত্যৰ অৰ্থ যথার্থ আৰু প্ৰিয় ভাষণ নহয়। আপুনি কয় - এই বস্ত্ৰমোৰ, তেতিয়া আপোনাৰ সত্য কোৱা হ'ল নে? ইয়াতকৈ ডাঙৰ মিথ্যা কি হব পাৰে? যেতিয়া শৰীৰেই আপোনাৰ নহয়, নশ্বৰ, তেতিয়াহলে ইয়াক ঢাকিবৰ বস্ত্ৰ আপোনাৰ হব নে? মূলতঃ সত্যৰ স্বৰূপ যোগেশ্বৰে নিজেই কৈছে যে, অৰ্জুনঙ্গ সত্য বস্ত্ৰৰ তিনিও কালত অভাৱ নাই। এই আত্মাই সত্য।, এয়েই পৰম সত্য এই সত্যত দৃষ্টি ৰাখিবা।) ক্ৰোধ সম্পূৰ্ণ নিৰ্মূল হোৱা, সৰ্বস্বৰ সমপৰ্ণ, শুভাশুভ কৰ্মফলৰ ত্যাগ, চিন্তৰ চঞ্চলতাৰ অভাৱ, লক্ষ্যৰ বিপৰীত নিন্দিত কাৰ্য্য নকৰা,

সম্পূৰ্ণ প্ৰাণীত দয়াৰ ভাৱ, ইন্দ্ৰিয় সমূহৰ বিষয়ৰ লগত সংযুক্ত হলেও তাত আসক্তিৰ অভাৱ, কোমলতা, নিজৰ লক্ষ্যত উপনিত নোহোৱাত লাজ, ব্যৰ্থ চেষ্টাৰ অভাৱ তথা -

তেজঃ ক্ষমা ধৃতিঃ শৌচমদ্রোহো নাতিমানিতা ।
ভৱন্তি সম্পদং দৈবীমভিজাতস্য ভাৰত ॥ ৩ ॥

তেজ (যি একমাত্ৰ ঈশ্বৰত থাকে, তাৰ তেজৰ দ্বাৰা যি কাৰ্য্য হয়। মহাত্মা বুদ্ধৰ দৃষ্টি পৰা মাত্ৰেই আঙুলীমালৰ চিন্তা পৰিবৰ্তিত হৈ গ'ল, এইটো সেই তেজৰেই পৰিণাম আছিল, যত কল্যাণৰ সৃজনা হয়, যিটো বুদ্ধত আছিল।) ক্ষমা, ধৈৰ্য্য, পৰিত্ৰতা কাৰো লগত শত্ৰু ভাৱ নৰখা, নিজৰ শ্ৰেষ্ঠতা ভাৱৰ অভাৱ, এই সকলো হে অৰ্জুন! দৈবী সম্পদ প্ৰাপ্ত পুৰুষৰ লক্ষণ। এইদৰে মুঠ ছাব্বিশটা লক্ষণৰ কথা কলে, যি সকলো খিনি সাধনাত পৰিপক্ক অৱস্থান পুৰুষত সম্ভৱ হয় আৰু আংশিক ৰূপত আপোনাতো নিশ্চিত আছে, তথা আসুৰী সম্পদেৰে বুৰি থকা মনুষ্যতো এই গুণ থাকে, কিন্তু সুপ্ত অৱস্থাত থাকে, তেতিয়াহলে ঘোৰ পাপীৰো কল্যাণৰ অধিকাৰ আছে। এতিয়া আসুৰী সম্পদৰ প্ৰধান লক্ষণ বোৰ কয় -

দস্তো দৰ্পোহিভিমানশ্চক্ৰোধঃপাৰুষ্যমেৰ চ ।
অজ্ঞানং চাভিজাহতোহস্য পাৰ্থ সম্পদমাসুৰীম ॥ ৪ ॥

হে পাৰ্থ! পাখণ্ড, ঘমণ্ড, অভিমান, ক্ৰোধ কঠোৰ-বাণী আৰু অজ্ঞানতা এই সকলোখিনি আসুৰী সম্পদ প্ৰাপ্ত পুৰুষৰ লক্ষণ। দুটা সম্পদৰ কাৰ্য্য কি?

দৈবী সম্পদ্বিমোক্ষায় নিবন্ধায়াসুৰী মতা ।
মা শুচঃ সম্পদং দৈবীমভিজাতোহসি পাণ্ডৱ ॥ ৫ ॥

এই দুই প্ৰকাৰৰ সম্পদত দৈবী সম্পদ হ'ল - বিশেষ মোক্ষৰ বাবে আৰু আসুৰী সম্পদক বন্ধন বুলি মানি লোৱা হৈছে। হে অৰ্জুন! তুমি শোক নকৰিবা; কিয়নো তোমাৰ দৈবী সম্পদ প্ৰাপ্ত হৈছে। বিশেষ মুক্তি লভিবা অৰ্থাৎ মোক প্ৰাপ্ত কৰিবা। সেই সম্পদবোৰ থাকে ক'ত?

দ্বৌ ভূতসৰ্গৌ লোকেহস্মিন্দৈৱ আসুৰ এব চ ।

দৈৰী ৰিস্তৰশঃ প্ৰোক্ত আসুৰং পাৰ্থ মে শৃণু ॥ ৬ ॥

হে অৰ্জুন! এই লোকত ভূত প্ৰাণী সমূহৰ স্বভাৱ দুই প্ৰকাৰৰ হয় - দেৱতাৰ দৰে আৰু অসুৰৰ দৰে। যেতিয়া হৃদয়ত দৈৰী সম্পদৰ কাৰ্য্যৰূপ লয় তেতিয়া মনুষ্যই দেৱতা আৰু যেতিয়া আসুৰী সম্পদৰ বাহুল্যতা থাকে তেতিয়া মনুষ্যই অসুৰ হয়। সৃষ্টিত এই দুটাহে জাতি আছে। তেওঁ লাগিলে আৰৱতেই জন্ম হওক, বা আষ্ট্ৰেলিয়াতেই, যতেই জন্ম নহওক এই দুটা জাতিহে থাকে। এতিয়ালৈকে দৈৰী সম্পদৰ স্বভাৱৰ বৰ্ণনা কৰা হ'ল, এতিয়া অসুৰৰ স্বভাৱ মোৰ পৰা বৃষ্টিত ভাবে শুনা?

প্ৰবৃত্তিং চ নিবৃত্তিং চ জনা ন ৰিদুৰাসুৰাঃ।

ন শৌচং নাপি চাচাৰো ন সত্যং তেষু বিদ্যতে ॥ ৭ ॥

হে অৰ্জুন! অসুৰ বিলাকে 'কায়ম কৰ্ম' ত প্ৰবৃত্ত হোৱা আৰু অকৰ্তব্যৰ পৰা নিবৃত্ত হবও নাজানে। সেই কাৰণে তেওঁলোকৰ পৰিত্ৰতাও নাথাকে, আচৰণো নাথাকে আৰু সত্যও নাথাকে। সেই পুৰুষ সকলৰ বিচাৰ বিবেচনা কেনে হয়?

অসত্যমপ্ৰতিষ্ঠং তে জগদাহৰনীশ্বৰম্।

অপৰম্পৰসম্ভুতং কিমন্যাৎকামহৈতুকম্ ॥ ৮ ॥

তেওঁলোকে, আসুৰী প্ৰকৃতি থকা মনুষ্যই কয় যে এই (পৃথিৱীখন) জগত আশ্ৰয়হীন, সম্পূৰ্ণ মিছা আৰু বিনা ঈশ্বৰৰ হয়, এই ভূতপ্ৰাণী সমূহ স্ত্ৰী-পুৰুষৰ সংযোগৰ দ্বাৰা উৎপন্ন হৈছে। সেই কাৰণে মাত্ৰ ভোগ কৰিবৰ বাবে হে, আৰু নো কিহৰ বাবে?

এতাং দৃষ্টিমৰষ্টভ্য নষ্টাৎমানোহল্লবুদ্ধয়ঃ।

প্ৰভবন্তুং গ্ৰকৰ্মাণঃ ক্ষয়ায় জগতোহহিতাঃ ॥ ৯ ॥

এই মিছা দৃষ্টিকোণৰ অবলম্বনেৰে যাৰ স্বভাৱ নষ্ট হৈ গৈছে, এনে মন্দবুদ্ধি, অপকাৰী, কুৰকৰ্মী মানুহ বিলাকে মাত্ৰ জগতক নাশ কৰিবৰ কাৰণেই উৎপন্ন হয়।

কামমাপ্ৰিত্য দুস্পূৰং দম্ভমানমদাহিতাঃ।

মোহাদ্গৃহীত্বাসদ্গ্ৰাহান্‌প্ৰবৰ্ত্তন্তেহ শুচিত্ৰতাঃ ॥ ১০ ॥

সেই মনুষ্য দম্ভ, মান আৰু মদেৰে যুক্ত হৈ কোনো প্ৰকাৰতে পূৰ্ণ হব
নোৱাৰা কামনাৰ আশ্ৰয়লৈ অজ্ঞানেৰে মিছা সিদ্ধান্ত গ্ৰহণ কৰি অশুভ তথা ভ্ৰষ্ট
ব্ৰতত যুক্ত হৈ সংসাৰত থাকে। তেওঁলোকে ব্ৰতও কৰে; কিন্তু ভ্ৰষ্ট হয়।

চিন্তামপৰিমেয়াং চ প্ৰলয়ান্তামুপাশ্ৰিতাঃ।

কামোপভোগপৰমা এতাবদিতি নিশ্চিতাঃ।। ১১।।

তেওঁলোকে শেষ নিশাহলৈকে অনন্ত চিন্তাত লাগি থাকে আৰু বিষয়
ভোগতেই সাজু হৈ বচ্ ইমানেই আনন্দ বুলি ভাৱে। তেওঁলোকে ভাৱে যে
যিমান পাৰে ভোগৰ বাবে সংগ্ৰহ কৰা, অন্য একোৱেই নাই।

আশাপাশশতৈৰ্বদ্ধাঃ কামক্ৰোধপৰাষণাঃ।

ঈহন্তে কামভোগাৰ্থমন্যায়েনাৰ্থসঞ্চয়ান্।। ১২।।

আশাৰূপী শতফন্দাত (একে ফন্দাতে মানুহ মৰে, ইয়াত শত ফন্দা
বুলি কোৱা হৈছে) বান্ধ খাই কাম-ক্ৰোধ পৰাষণ হৈ বিষয় ভোগ পূৰণৰ বাবে
অন্যায় পূৰ্বক ধন সংগ্ৰহ কৰিবলৈ চেষ্টা কৰে। সেয়ে ধনৰ বাবে তেওঁলোকে
ৰাতিদিনে অসামাজিক কাৰ্য্য কৰি থাকে। আৰু কয় -

ইদমদ্য ময়া লন্ধমিমং প্ৰাপ্ত্যে মনোৰথম্।

ইদমস্তীদমপি মে ভবিষ্যতি পুনৰ্ধনম্।। ১৩।।

তেওঁলোকে ভাৱেযেই আজি ইমান পালোঁ, অমুকটো ইচ্ছা পূৰ্ণ
হব। মোৰ লগত ইমানটো আছে আৰু ইমানটো হব।

অসৌ ময়া হতঃ শত্ৰুহনিষ্যে চাপৰানপি।

ঈশ্বৰোহহমহং ভোগী সিদ্ধোহহং বলবান্সুখী।। ১৪।।

সেই শত্ৰু মোৰ দ্বাৰা মৰা হ'ল আৰু অন্যবোৰকো মাৰিম। ময়েই ঈশ্বৰ আৰু
ঐশ্বৰ্য্যৰ ভোগ কৰোঁতা। মই সিদ্ধিৰে যুক্ত হৈ আছোঁ, মই বলৱান আৰু ময়েই সুখী।

আঢ্যোহভি জনৱানস্মি কোহন্যোৎস্তি সদৃশ্যো ময়া।

যক্ষ্যে দাস্যামি মোদিষ্য ইত্যজ্ঞানবিমোহিতাঃ।। ১৫।।

মই ডাঙৰ ধনী আৰু সম্ভ্ৰান্ত। মোৰ দৰে অন্য কোন আছে? মই যজ্ঞ

কৰিম, দান কৰিম, মই আনন্দ পাম - এইদৰে অজ্ঞানেৰে তেওঁ বিশেষ ভাৱে মোহিত হৈ থাকে। যজ্ঞ, দান কৰাটো অজ্ঞানতা নে? এই বিষয়ে সোঁতৰ শ্লোকত স্পষ্ট কৰা হৈছে। ইমানতো তেওঁলোক বৈ নাথাকে আনকি বহুতো ভুলৰ চিকাৰ হয়। ইয়াত কৈছে -

অনেকচিত্তিৰিভাস্তা মোহজালসমাবৃত্তাঃ।

প্রসক্তাঃ কামভোগেষু পতন্তি নৰকেহুশুচৌঃ ॥ ১৬ ॥

অনেক প্ৰকাৰেৰে চিত্ত ভ্ৰামিত হোৱা, মোহ-জালত সোমাই পৰা, বিষয় ভোগত অত্যন্ত আসক্তি থকা সেই আসুৰী স্বভাৱ থকা পুৰুষ অপবিত্ৰ নৰকত পৰে। আগলৈ শ্ৰীকৃষ্ণই নৰক কি স্বয়ং কৈছে -

আত্মসম্ভাবিতাঃ স্তব্ধা ধনমানমদাঘ্নিতাঃ।

যজন্তে নামযজ্ঞেষু দন্তেনাবিধিপূৰ্বকম্ ॥ ১৭ ॥

নিজে নিজকেই শ্ৰেষ্ঠবোলোঁতা, ধন আৰু মানব মদেৰে যুক্ত হোৱা সেই ঘমণ্ডি (অহংকাৰী) মনুষ্যই শাস্ত্ৰবিধি নোহোৱাকৈ নামমাত্ৰেৰে যজ্ঞৰ দ্বাৰা অহংকাৰেৰে যজন কৰে। তেনেকৈ যজ্ঞ কৰেনে, যি দৰে শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছিলে?

নহয়, তেনে বিধিক এৰিহে কৰে, কিয়নো তাৰ বিধিতো যোগেশ্বৰে স্বয়ং কৈছে। (আধ্যায় ৪/২৪ তত আৰু আধ্যায় ৬/১০-১৭ লৈ)

অহঙ্কাৰং বলং দৰ্পং কামং ক্ৰোধং চ সংশ্ৰিতাঃ।

মামাত্মপৰদেহেষু প্ৰদ্বিষন্তোহভ্যসূয়কাঃ ॥ ১৮ ॥

তেওঁ অন্যৰ নিন্দা কৰোঁতা, অহংকাৰ, বল, হঠতা, কামনা আৰু ক্ৰোধৰ বশবৰ্ত্তী পুৰুষে নিজৰ আৰু অন্যৰ শৰীৰত স্থিত হৈ থকা মোক অন্তৰ্য্যামী পৰমাত্মাক দ্বেষ কৰে। শাস্ত্ৰবিধিৰ দ্বাৰা পৰমাত্মাৰ স্মৰণ কৰা হ'ল যজ্ঞ। যি জনে এই বিধি ত্যাগ কৰি নাম মাত্ৰৰ যজ্ঞ কৰে, যজ্ঞৰ নামত কিবা এটা কৰি থাকে, তেওঁলোকে নিজৰ আৰু অন্যৰ শৰীৰত স্থিত মোৰ পৰমাত্মাক দ্বেষ কৰে। মানুহে দ্বেষো কৰি থাকে আৰু জীয়াইও থাকে। এই সকলো জীয়াই থাকিবনে? ইয়াত কৈছে - নহয়

তানহং দ্বিষতঃ ক্ৰূৰান্‌সংসাৰেষু খৰাধমান্।

ক্ষিপাম্যজস্ৰমশুভানাসুৰীষেৰ যোনিষু ॥ ১৯ ॥

মোৰ লগত দ্বেষ কৰোঁতা সেই পাপাচাৰী, ত্ৰুৰ্ণকৰ্মী, নৰাধমক মই সংসাৰক নিৰন্তৰ আসুৰী যোনীসমূহত পেলাই থাকো। যি শাস্ত্ৰবিধিক ত্যাগকৰি যজন কৰে তেওঁলোকেই পাপযোনি, সেই মনুষ্যই অধৰ্ম, তেওঁলোককেই ত্ৰুৰ্ণকৰ্মী বোলা হৈছে। অন্যকোনো অধৰ্ম নহয়। আগত কৈছিলে যে তেনে অধৰ্মক মই নৰকত পেলাই দিওঁ। তাকে ইয়াত কৈছে যে তেওঁলোকক অজস্ৰ আসুৰী যোনীত পেলাই দিওঁ। এয়াই নৰক। সাধাৰণ জেলৰ যাতনা কিমান ভয়ংকৰ হয়, আৰু ইয়াত অনবৰত আসুৰী যোনীত পৰাৰ ক্ৰমও কিমান দুঃখদ। সেয়ে দৈৱী সম্পদৰ বাবে প্ৰযত্নশীল হোৱা উচিত।

আসুৰীং যোনিমাপন্বা মূঢ়া জন্মনি জন্মনি।

মামপ্ৰাপ্যৈৰ কৌন্তেয় ততো যাস্ত্যধমাং গতিম্ ॥ ২০ ॥

হে কৌন্তেয়! মুৰ্খ মনুষ্যই জন্ম-জন্মান্তৰ লৈকে আসুৰী যোনী প্ৰাপ্ত কৰি মোক নেপাই আগতকৈও অতি নীচ গতি প্ৰাপ্ত কৰে। যাৰ নাম নৰক। আকৌ চাওক, নৰকৰ উদগম স্থ'ল ক'ত?

ত্ৰিবিধং নৰকস্যেদং দ্বাৰং নাশনমাত্মনঃ।

কামঃ ক্ৰোধস্তথা লোভস্তস্মাদেতৎত্ৰয়ং ত্যজেৎ ॥ ২১ ॥

কাম, ক্ৰোধ আৰু লোভ এই তিনিটা হ'ল নৰকৰ মূল দ্বাৰ। এইবিলাক আত্মাক নাশ কৰোঁতা তেওঁক অধোগতিলৈ লৈ যাওঁতা। সেয়ে এই তিনিটাক ত্যাগ কৰিব লাগে। এই তিনিটাত আসুৰী সম্পদ নিৰ্ভৰ আছে। ইয়াক ত্যাগ কৰিলে কি লাভ হয়?

ত্ৰৈতৰ্বিমুক্তঃ কৌন্তেয় তমোদ্বাৰৈস্ত্ৰিভিৰ্ভৰঃ।

আচৰত্যাত্মনঃ শ্ৰেয়স্ততো যাতি পৰাং গতিম্ ॥ ২২ ॥

হে কৌন্তেয়! নৰকৰ এই তিনিওটা দ্বাৰৰ পৰা মুক্ত হোৱা পুৰুষে নিজৰ পৰম কল্যাণৰ বাবে আচৰণ কৰে, যাৰ ফলত তেওঁ পৰমগতি অৰ্থাৎ মোক প্ৰাপ্ত কৰে। এই তিনিওটা বিকাৰক ত্যাগ কৰিলেহে মনুষ্যই নিৰ্দিষ্ট কৰ্ম কৰা হয়, যাৰ পৰিণাম পৰম শ্ৰেয়।

যঃ শাস্ত্ৰবিধিমুৎসৃজ্য বৰ্ততে কামকাৰতঃ।

ন স সিদ্ধিমৰাপ্নোতি ন সুখং ন পৰাং গতিম্।। ২৩।।

যি পুৰুষে উপৰোক্ত শাস্ত্ৰবিধিক ত্যাগ কৰি (সেই শাস্ত্ৰ কোনো অন্য নহয় 'ইতি গুহ্যতমম্ শাস্ত্ৰম্' (১৫/২০) গীতা স্বয়ং পূৰ্ণ শাস্ত্ৰ, যাক স্বয়ং শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছে, সেই বিধিক ত্যাগ কৰি) নিজৰ ইচ্ছা মতে কৰে, তেওঁ সিদ্ধিও প্ৰাপ্ত নকৰে, তথা পৰমগতি আৰু সুখো প্ৰাপ্ত নকৰে।

তস্মাচ্ছাস্ত্ৰং প্ৰমাণং তে কাৰ্য্যকৰ্ণ্যৰ্ঘব্য রস্থিতৌ।

জ্ঞাত্বা শাস্ত্ৰবিধানোক্তং কৰ্ম কৰ্তুমিহাৰ্হসি।। ২৪।।

সেইকাৰণে হে অৰ্জুন! তোমাৰ বাবে এই কৰ্তব্য আৰু অকৰ্তব্যৰ ব্যৱস্থাত কোৱা হ'ল যে মই কি কৰোঁ কি নকৰোঁ ভাবিব নালাগে। ইয়াৰ বাবে শাস্ত্ৰই প্ৰমাণ। এইদৰে জানি শাস্ত্ৰ-বিধিৰ দ্বাৰা নিৰ্দিষ্ট কৰা কৰ্মকে তুমি কৰা উচিত।

তিনি আধ্যায়ত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছে যে 'নিয়তং কুৰু কৰ্মত্বং ' নিয়ত কৰ্মৰ ওপৰত জোৰ দিছে আৰু কৈছে যে যজ্ঞৰ প্ৰক্ৰিয়াই হ'ল সেই নিয়ত কৰ্ম আৰু যজ্ঞ হ'ল আৰাধনাৰ বিধি বিশেষৰ চিত্ৰণ, যি মনক সৰ্বদা

নিৰোধ কৰি শাস্ত্ৰত ব্ৰহ্মত প্ৰৱেশ কৰায়। ইয়াত তেখেতে কৈছে যে কাম, ক্ৰোধ আৰু লোভ এই তিনিটা হ'ল নৰকৰ মুখ্য দ্বাৰ। এই তিনিটাক ত্যাগ কৰিলেহে সেই কৰ্ম (নিয়ত কৰ্ম) আৰম্ভ হয়। যাক মই বাৰে বাৰে কৈছোঁ, যি পৰম কল্যাণ, পৰমশ্ৰেয় দিব পৰা বুলি। বাহিৰি সাংসাৰিক কাৰ্য্যত যি যিমান ব্যস্ত হৈ থাকে, তেওঁ কাম, ক্ৰোধ আৰু লোভৰ পৰা সিমানই বেছি সাজি পাৰি থাকে। কৰ্ম কোনো এনে বস্তু নহয় যে কাম, ক্ৰোধ আৰু লোভক ত্যাগ কৰিলেই তাত প্ৰবেশ ঘটে, কৰ্ম আচৰণত ফুটি ওঠিব লাগিব। যি জনে সেই বিধিক ত্যাগ কৰি নিজৰ ইচ্ছা মতে আচৰণ কৰে, তেওঁৰ বাবে সুখৰ সিদ্ধি বা পৰমগতি একোৱে নাপাব। এতিয়া কৰ্তব্য আৰু অকৰ্তব্যৰ ব্যৱস্থাত শাস্ত্ৰই প্ৰমাণ আছে। সেয়ে শাস্ত্ৰবিধি অনুসৰি তোমাৰ কৰ্ম কৰা উচিত আৰু সেই শাস্ত্ৰ হ'ল 'গীতা'।

নিষ্কৰ্ষ :-

এই অধ্যায়ৰ আৰম্ভনীতে যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই দৈৱী সম্পদৰ সবিস্তাৰ বৰ্ণন কৰিছিল। য'ত ধ্যানত স্থিতি, সৰ্বস্বৰ সমৰ্পণ, অন্তঃকৰণৰ পবিত্ৰতা, ইন্দ্ৰিয়

সমূহৰ দমন, মনৰ শমন, স্বৰূপক স্মৰণ দিব পৰা অধ্যয়ন, যজ্ঞৰ বাবে যত্ন, মনেৰে সৈতে ইন্দ্ৰিয়সমূহক তাপ দিয়া, অক্ৰোধ, চিত্তৰ শান্ত প্ৰবাহত থকা ইত্যাদি ছাব্বিশটা লক্ষণৰ কথা কৈছে, যি সকলোৱে ইষ্টৰ ওচৰত পোৱা যোগ সাধনাত প্ৰবৃত্ত কোনোবা সাধকতহে সম্ভৱ হয়। আংশিক ৰূপত সকলোতে হয়।

তাৰ পিছতেই তেখেতে আসুৰী সম্পদৰ মুখ্য পাঁচ-ছয়টামান বিকাৰৰ নাম ললে, যেনে- অভিমান, দম্ভ, কঠোৰতা, অজ্ঞানতা ইত্যাদি আৰু শেষত নিৰ্ণয় দিলে যে অৰ্জুন! দৈৱী সম্পদতো - পূৰ্ণ নিবৃত্তিৰ বাবে, পৰমপদৰ প্ৰাপ্তীৰ বাবে, আৰু আসুৰী সম্পদ বন্ধন আৰু অধোগতিৰ বাবে। অৰ্জুন! তুমি বেজাৰ নকৰিবা; কিয়নো তুমি দৈৱী সম্পদক প্ৰাপ্ত কৰিছা।

এই সম্পদবোৰ থাকে ক'ত? তেখেতে ক'লে যে এই লোকত মনুষ্যৰ স্বভাৱ দুই প্ৰকাৰৰ হয়, দেৱতাৰ দৰে আৰু অসুৰৰ দৰে। যেতিয়া দৈৱী সম্পদৰ বাহুল্য হয়, তেতিয়া মনুষ্য দেৱতাৰ দৰে হয়, আৰু যেতিয়া আসুৰী সম্পদ বাহুল্য হয় তেতিয়া মানুহ অসুৰৰ দৰে হয়। সৃষ্টিত মানুহৰ মাত্ৰ এই দুটাহে জাতি আছে; লাগিলে তেওঁৰ জন্ম যতেই হওঁক বা যেনেকুৱাই হওঁক।

তাৰ পাছত তেখেতে আসুৰী স্বভাৱ থকা মানুহৰ লক্ষণৰ বৰ্ণনা কৰিলে। আসুৰী সম্পদ প্ৰাপ্ত পুৰুষে কৰ্তব্য কৰ্মত প্ৰবৃত্ত হ'বও নাজানে আৰু অকৰ্তব্য কাৰ্যৰ পৰা নিবৃত্ত হ'বও নাজানে। তেওঁ যেতিয়া কৰ্মত প্ৰবৃত্তই নহয়, তেতিয়াহ'লে তাত সত্যও নাথাকে, পৱিত্ৰতাও নাথাকে আৰু আচৰণো নাথাকে। তাৰ মতে জগতখন আশ্ৰয় ৰহিত, ঈশ্বৰৰ বিনাই নিজেই স্ত্ৰী-পুৰুষৰ সংযোগত উৎপন্ন হয়, সেয়ে মাত্ৰ ভোগ কৰিব লাগে। তাৰ বাদে একো নাই। এই ভাৱধাৰা শ্ৰীকৃষ্ণৰ সময়তো আছিলে। সদায় থাকিবই। মাত্ৰ চাৰ্বাকৈ কৈছিল, এনে নহয়। যেতিয়ালৈকে মানুহৰ মাজত দৈৱী-আসুৰী সম্পদৰ উঠা-নমা আছে, তেতিয়ালৈকে থাকিবই। শ্ৰীকৃষ্ণই কয়-তেওঁলোক মন্দবুদ্ধি থকা ত্ৰুণ কৰ্মী পুৰুষ সকলোৰ অহিত (কল্যাণৰ নাশ) কৰিবৰ বাবেই জগতত জন্ম লয়। তেওঁলোকে কয় - মোৰ দ্বাৰা এই শত্ৰু মৰা হ'ল, তাক মই মাৰিম। এইদৰে হে অৰ্জুন! কাম-ক্ৰোধত আশ্ৰিত সেই পুৰুষে শত্ৰুক নামাৰে বৰষণ নিজৰ আৰু অন্যৰ শৰীৰত স্থিত হৈ থকা মোক পৰমাত্মাক দ্বেষ কৰে। তেতিয়াহলে অৰ্জুনে প্ৰণ কৰি জয়দ্রথ আদিক মাৰিলেনে? যদি মাৰিলে

তেতিয়াহ'লে আসুৰী সম্পদৱান হে হ'ল, সেই পৰমাত্মক দ্বেষ কৰোঁতাহে হ'ল; আকৌ অৰ্জুনক শ্ৰীকৃষ্ণই স্পষ্ট কৰি কৈছিল যে তুমি দৈৱী সম্পদক প্ৰাপ্ত কৰিছা, বেজাৰ নকৰিবা। ইয়াত স্পষ্ট হৈ গ'ল যে ঈশ্বৰৰ নিবাস সকলোৰ হৃদয় দেশতেহে হয়। মনত ৰখা উচিত যে কোনোবাই তোমাক সততে চাই আছে। সেয়ে সদায় শাস্ত্ৰ-নিৰ্দিষ্ট ক্ৰিয়াৰ আচৰণ কৰা উচিত অন্যথা শাস্তি পাব লাগিব।

যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই আকৌ কৈছে যে - আসুৰী স্বভাৱ থকা ব্ৰুৰ মনুষ্যক মই বাৰে বাৰে - নৰকত পেলাওঁ। নৰকৰ স্বৰূপ কি? তেতিয়া কলে - বাৰেবাৰে নীচ অধৰ্ম যোনীত পৰাই হ'ল ইটো সিটোৰ পৰ্য্যায়। এয়ে নৰকৰ স্বৰূপ। কাম, ক্ৰোধ আৰু লোভ এই তিনিটা নৰকৰ মূল দ্বাৰ। এই তিনিটাতো আসুৰী সম্পদ নিৰ্ভৰ হৈ আছে। এই তিনিটাক ত্যাগ কৰিব পাৰিলেই সেই কৰ্মৰ আৰম্ভ হয়, যাক মই বাৰেবাৰে কৈ আছোঁ। প্ৰমাণ আছে যে কৰ্ম কোনো এনে এটা বস্তু যাৰ আৰম্ভনী কাম, ক্ৰোধ, লোভক ত্যাগ কৰিলেই হয়।

সাংসাৰিক কাৰ্য্যত, মৰ্য্যাদাৰে সৈতে সামাজিক ব্যৱস্থাত থকাৰ বাবে যি যিমনেই ব্যস্ত হয়, কাম, ক্ৰোধ, লোভে তেওঁৰ ওচৰত সিমনেই বেছি সাজি-কাচি থাকে। বস্তুতঃ এই তিনিটাক ত্যাগ কৰিলেহে পৰমত প্ৰৱেশ কৰিব পৰা নিৰ্দ্ধাৰিত কৰ্মত প্ৰৱেশ পায়। সেইকাৰণে মই কি কৰোঁ নকৰোঁ? এনে কৰ্তব্য-অকৰ্তব্যৰ ব্যৱস্থাত শাস্ত্ৰই একমাত্ৰ প্ৰমাণ আছে। কোন খন শাস্ত্ৰ? এই গীতা শাস্ত্ৰ। সেই কাৰণে এই শাস্ত্ৰৰ দ্বাৰা নিৰ্দ্ধাৰিত কৰা কৰ্ম বিশেষ - (যথার্থ কৰ্ম) কেই তুমি কৰা।

এই আধ্যাত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই দৈৱী আৰু আসুৰী দুইটাই সম্পদৰ বিস্তৃত বৰ্ণন কৰিলে। তাৰ স্থান মানৱ-হৃদয় বুলি ক'লে। তাৰ ফলো কলে। সেয়ে এইদৰে শ্ৰীমৎভাগৱৎগীতা ৰূপী উপনিষদ্ আৰু ব্ৰহ্মবিদ্যা তথা যোগেশাস্ত্ৰ বিষয়ক শ্ৰীকৃষ্ণ অৰ্জুনৰ সংবাদত 'দৈৱাসুৰ সম্পদ বিভাগ যোগ নামৰ যোদ্ধা আধ্যায় পূৰ্ণ হ'ল।

ইতি শ্ৰীমৎপৰমহংস পৰমানন্দস্য শিষ্য স্বামী অড়গড়ানন্দ কৃতে শ্ৰীমৎভাগৱৎগীতয়াঃ 'যথার্থ গীতা' ভাষ্য দৈৱাসুৰ সম্পদ বিভাগ যোগো' নাম যোড়শোহধ্যায়ঃ ॥ ১৬ ॥

‘ওঁ’

শ্ৰীপৰমাত্মনে নমঃ

অথ সপ্তদশোহধ্যায়ঃ

যোল্ল আধ্যায়ৰ শেষত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই স্পষ্ট কৰি কৈছে যে কাম ত্ৰোধ আৰু লোভক ত্যাগ কৰিলেই কৰ্মৰ আৰম্ভ হয়, যিটো মই বাৰে বাৰে কৈ আহিছে। নিয়ত কৰ্ম নকৰাকৈ সুখ, সিদ্ধি আৰু পৰমগতি পোৱা নাযায়। সেই কাৰণে এতিয়া তোমাৰ বাবে কৰ্তব্য আৰু অকৰ্তব্যৰ ব্যৱস্থাত, মই কি কৰোঁ - নকৰোঁ? - এই সম্বন্ধত শাস্ত্ৰই প্ৰমাণ আছে। কোনো অন্য শাস্ত্ৰ নহয়, বৰঞ্চ “ইতি গুহ্যতমং শাস্ত্ৰমিদম্” গীতা স্বয়ং শাস্ত্ৰ আছে। অন্য শাস্ত্ৰও আছে; কিন্তু ইয়াতে এই গীতা শাস্ত্ৰৰ ওপৰতেই দৃষ্টি ৰাখা, অন্য বিচাৰিব নালাগে। অন্য ফালে বিচাৰিলে এই ক্ৰমবদ্ধতাটো নাপাবা, সেয়ে বিচলিত হবা।

ইয়াত অৰ্জুনে প্ৰশ্ন কৰিলে যে ভগৱান। যি সকলে শাস্ত্ৰ বিধিক ত্যাগ কৰি পূৰ্ণ শ্ৰদ্ধাৰে যুক্ত হৈ ‘যজন্তে’ - যজন কৰে, তেওঁলোকৰ গতি কি হব? সাত্বিকী হওক, ৰাজসী হওক অথবা তামসী হওক? কিয়নো আগতে অৰ্জুনে শুনিছিল যে সত্বিকী, ৰাজসী বা তামসীয়ে হওক, যেতিয়ালৈকে গুণ থাকিব, কোনোবা এটা যোনিৰ কাৰণ হব পাৰে। সেইকাৰণে প্ৰস্তুত আধ্যায়ৰ আৰম্ভনীতে তেওঁ প্ৰশ্ন কৰিলে -

অৰ্জুন উবাচ

যে শাস্ত্ৰ বিধিমুৎসৃজ্য যজন্তে শ্ৰদ্ধয়াগ্নিতাঃ।

তেষাং নিষ্ঠা তু কা কৃষ্ণ সত্ত্বমাহো ৰজস্তমঃ।। ১।।

হে কৃষ্ণ! যি মনুষ্যই শাস্ত্ৰ বিধি ত্যাগকৰি শ্ৰদ্ধাৰে সৈতে যজন কৰে, তেওঁৰ কি গতি হব? সাত্বিকী, ৰাজসী অথবা তামসীয়ে হওক। যজনত

দেৱতা-যক্ষ-ভূত ইত্যাদিকো ধৰা হয়।

শ্ৰীভগবানুবাচ

ত্ৰিবিধা ভৱতি শ্ৰদ্ধা দেহিনাং সা স্বভাৱজা।

সাত্ত্বিকী ৰাজসী চৈব তামসী চেতি তাং শৃণু ॥ ২ ॥

দুই আধ্যাত যোগেশ্বৰে কৈছিল যে অৰ্জুন! এই যোগত নিৰ্দ্ধাৰিত ক্ৰিয়া একেই আছে। অবিবেকী সকলৰ বুদ্ধি অনন্ত শাখায়ুক্ত হয়, সেইবাবে তেওঁলোকে অনন্ত ক্ৰিয়াৰ বিস্তাৰ কৰে, দেখুৱাবৰ বাবে সুন্দৰ কথা কয়। তেওঁলোকৰ কথাৰ প্ৰভাৱ যাৰ চিন্তত পৰে, হে অৰ্জুন! তেওঁলোকৰো বুদ্ধি নষ্ট হৈ যায়, অৱশ্য একো নাপায়। সেই কথাকে ইয়াত পূৰ্ণৰাবৃত্তি কৰা হৈছে যে শাস্ত্ৰ বিধিক ত্যাগকৰি ভজনা কৰে, তেওঁলোকৰ শ্ৰদ্ধাও তিনি প্ৰকাৰৰ হয়।

ইয়াত শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছে - মনুষ্যৰ স্বভাৱেৰে উৎপন্ন হোৱা সেই শ্ৰদ্ধা সাত্ত্বিকী, ৰাজসী আৰু তামসী - এইদৰে তিনি প্ৰকাৰৰ হয়, তাক তুমি মোৰ পৰা শুনা। মনুষ্যৰ হৃদয়ত এই শ্ৰদ্ধা অবিৰল আছে -

সত্বানুকুপা সৰ্বস্য শ্ৰদ্ধা ভৱতি ভাৰত।

শ্ৰদ্ধাময়োহয়ং পুৰুষো যো যচ্ছুদ্ধঃ স এব সঃ ॥ ৩ ॥

হে ভাৰত! সকলো মানুহৰ শ্ৰদ্ধা তেওঁলোকৰ চিন্তবৃত্তিৰ অনুৰূপে হয়। এই পুৰুষ শ্ৰদ্ধাৱান আছে। সেই কাৰণে যি পুৰুষ যেনে শ্ৰদ্ধাৱান, তেওঁ স্বয়ংসেয়াই। প্ৰায় লোকে সোধে মই কোন? কোনোবাই কয় - মইতো আত্মা হওঁ। কিন্তু নহয়, ইয়াত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছে যে যেনে শ্ৰদ্ধা, যেনে বৃত্তি, তেনেপুৰুষ।

গীতা হ'ল যোগ-দৰ্শন। মহৰ্ষিপতঞ্জলিও যোগী আছিল। যোগ কি? তেওঁ কৈছিল-‘যোগশ্চিন্তবৃত্তিনিৰোধঃ’ চিন্ত বৃত্তি সৰ্বদা নিৰোধ হোৱাই হ'ল যোগ। কোনোবাই যদি পৰিশ্ৰম কৰি নিৰোধ কৰিলে লাভ কি হয়? ‘তদা দ্ৰষ্টুঃ স্বৰূপেহব স্থানম্’ - সেই সময়ত এই দ্ৰষ্টা জীৱাত্মা নিজৰেই শাস্ত্ৰত স্বৰূপত স্থিত হৈ যায়। স্থিত হোৱাৰ আগত কি মলিন আছিল নে? পতঞ্জলিয়ে

কয় - 'বৃত্তিসাৰুপ্যমিতৰত্ৰ' অন্য সময়ত যেনে বৃত্তিৰ ৰূপ, সেই দৃষ্টাও তেনেকৈ। ইয়াত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কয় - এই পুৰুষ শ্ৰদ্ধাময়, বৰ শ্ৰদ্ধাৰান। কৰবাত শ্ৰদ্ধা অৱশ্য থাকিব আৰু যেনে শ্ৰদ্ধাময় তেনেকৈ স্বয়ং নিজেও। যেনে বৃত্তি, তেনে পুৰুষ। এতিয়া তিনিওটা শ্ৰদ্ধাৰ বিভাজন কৰিছে -

যজন্তে সাত্ত্বিকা দেৱাংন্যক্ষ ৰক্ষাংসি ৰাজসা।

প্ৰেতান্ভূতগনাংশ্চান্যে যজন্তে তামসাঃ জনা ॥ ৪ ॥

তাৰ ভিতৰত সাত্ত্বিক পুৰুষে দেৱতাক পূজা কৰে, ৰাজস পুৰুষে যক্ষ আৰু ৰাক্ষসক পূজা কৰে তথা অন্য তামস পুৰুষে প্ৰেত আৰু ভূতক পূজা কৰে। তেওঁলোকে পূজা কাৰ্য্যত অথক পৰিশ্ৰমও কৰে।

অশাস্ত্ৰবিহিতং ঘোৰং তপ্যন্তে যে তপো জনাঃ।

দম্ভাহংকাৰসংযুক্তাঃ কামৰাগবলাঘ্নিতাঃ ॥ ৫ ॥

সেই মনুষ্য বিলাকে শাস্ত্ৰ-বিধি বাদ দি অতি কল্পিত ভাবে (কল্পনাৰে ক্ৰিয়া ৰচনা কৰি) তপ কৰে, দম্ভ আৰু অহংকাৰেৰে যুক্ত হৈ, কামনা আৰু আসক্তিৰ বলত বান্ধ খাই থাকে।

কৰ্শয়ন্তঃ শৰীৰস্থং ভূতগ্ৰামমচেতসঃ।

মাং চৈবান্তঃ শৰীৰস্থং তাগ্নিদ্ধ্যাসুৰনিশ্চয়ান্ ॥ ৬ ॥

তেওঁলোকে শৰীৰ ৰূপত স্থিত ভূত সমূহক আৰু অন্তঃকৰনত স্থিত মোক অন্তৰ্য্যামীৰ লগতো দ্বেষ কৰে অৰ্থাৎ দুৰ্বল কৰিব বিচাৰে। আত্মা প্ৰকৃতিৰ ফাঁকত পৰি বিকাৰ সমূহৰ দ্বাৰা দুৰ্বল আৰু যজ্ঞ-সাধনাৰ দ্বাৰা সবল হয়। সেই অজ্ঞানীবোৰক (অচেতন) সমূহক তুমি নিশ্চয় অসুৰ বুলি জানা অৰ্থাৎ তেওঁলোক সকলোৱে অসুৰ। প্ৰশ্ন পূৰ্ণ হ'ল।

শাস্ত্ৰবিধিক ত্যাগ কৰি ভজোতা সকলে সাত্ত্বিক পুৰুষে দেৱতাক, ৰাজস পুৰুষে যজ্ঞ-ৰাক্ষসক আৰু তামস পুৰুষে ভূত-প্ৰেতক পূজা কৰে। অকল পূজা কৰাই নহয় ঘোৰ তপস্যাও কৰে; কিন্তু অৰ্জুন। শৰীৰৰূপী ভূতপ্ৰাণীক আৰু অন্তৰ্য্যামী ৰূপী মোক পৰমাত্মাক দুৰ্বল কৰোতাই মোৰ

পৰা আঁতৰিহে যায়, মোক পূজা নকৰে। তেওঁক তুমি অসুৰ বুলি জানা অৰ্থাৎ দেৱতাক পূজা কৰোঁতাও অসুৰ হয়। ইয়াতকৈ আৰু কি কব লাগে? সেয়ে যাৰ এই সকলো অংশ আছে, সেই এক মূল পৰমাত্মাকেইভজন কৰা। এই ক্ষেত্ৰতেই যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই বাৰে বাৰে জোৰ দিছে।

আহাৰস্তৃপি সৰ্বস্য ত্ৰিবিধো ভৱতি প্ৰিয়ঃ।

যজ্ঞস্তপস্তথা দানং তেষাং ভেদমিমং শণু।। ৭।।

অৰ্জুন! যেনেদৰে শ্ৰদ্ধা তিনি প্ৰকাৰৰ হয়, তেনেকৈ সকলোৰে নিজৰ নিজৰ প্ৰকৃতি অনুসৰি ভোজনো মানে আহাৰো তিনি প্ৰকাৰৰ প্ৰিয় হয়। তেনেকৈ যজ্ঞ, তপ আৰু দানো তিনি প্ৰকাৰৰে হয়। তাৰ ভেদ তুমি মোৰ পৰা শুনা। প্ৰথমে আহাৰ সম্পৰ্কীয়-

আয়ুঃ সত্ৰবলারোগ্যসুখপ্ৰীতি বিবৰ্ধনাঃ।

বস্যাঃ স্নিগ্ধাঃ স্থিৰা হৃদ্যা আহাৰঃ সাত্বিকপ্ৰিয়াঃ।। ৮।।

আয়ু, বুদ্ধি, বল, আৰোগ্য, সুখ আৰু প্ৰীতিক বঢ়াব পৰা, বসযুক্ত স্নিগ্ধ আৰু স্থিৰ থাকিব পৰা তথা স্বাভাৱিক ভাৱে হৃদয়ত ভাল লগা ভোজ্য পদাৰ্থ সাত্বিক পুৰুষৰ প্ৰিয় হয়।

যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণৰ অনুসৰি স্বভাৱতে হৃদয়েৰে প্ৰিয় লগা, বল-আৰোগ্য-বুদ্ধি আৰু আয়ু বৃদ্ধি কৰিব পৰা ভোজ্য পদাৰ্থই সাত্বিক। যি ভোজ্য পদাৰ্থ সাত্বিক, সেইটো সাত্বিক পুৰুষৰ বাবে প্ৰিয়। ইয়াৰ পৰা স্পষ্ট হয় যে কোনো খাদ্য পদাৰ্থ সাত্বিকী, ৰাজসীক আৰু তামসীক হব নোৱাৰে। তাৰ প্ৰয়োগ হে সাত্বিকী নহয়, পিয়াজো ৰাজসী হিচাবে হয়। গাখীৰো সাত্বিকী নহয়, পিয়াজো ৰাজসীক নহয় আৰু নহৰুও তামসীক নহয়।

যিদৰে বল, বুদ্ধি, আৰোগ্য আৰু হৃদয়ত প্ৰিয় লগাৰ প্ৰশ্ন আছে, তেনেদৰে বিশ্বৰ সকলো মানুহৰ নিজৰ নিজৰ প্ৰকৃতি, পৰিবেশ আৰু পৰিস্থিতি অনুকূলে বিভিন্ন খাদ্যবস্তু প্ৰিয় হয়। যেনে- বংগালী আৰু মাদ্ৰাজিবিলাকৰ চাউল প্ৰিয় হয় আৰু পাঞ্জাবিৰ বাবে ৰুটী। এফালে আৰববাসী বিলাকৰ বাবে

দুস্বা,চিনাবাসীৰ বাবে ভেকুলী আৰু অন্যফালে ধ্ৰুৱীয়ৰ দৰে ঠাণ্ডা দেশৰ বাবে মাংস নহলেই নচলে। ৰাচিয়া আৰু মঙ্গোলীয়া আদিবাসীৰ খাদ্য ঘোড়া ব্যৱহাৰ কৰিলে, ইউৰোপবাসী বিলাকে গৰু তথা গাহৰি দুইটাই খায়। তথাপিও বিদ্যা, বুদ্ধি বিকাশ আৰু উন্নতিৰ ক্ষেত্ৰত আমেৰিকা আৰু ইউৰোপ বাসীক প্ৰথম শ্ৰেণীত গণিত কৰা হয়।

গীতাৰ অনুসৰি ৰসযুক্ত আৰু স্থিৰ থাকিব পৰা ভোজ্য পদাৰ্থ সাত্বিক। দীৰ্ঘায়ু, অনুকূল বল-বুদ্ধি দিব পৰা, আৰোগ্য বৰ্দ্ধক, পদাৰ্থ সাত্বিক। স্বাভাৱিক ভাবে মনত ভাল লগা ভোজ্য পদাৰ্থ সাত্বিক। সেয়ে কতো কোনো খাদ্য পদাৰ্থকে বঢ়া-টুটা কৰিব নালাগে। পৰিস্থিতি, পৰিবেশ তথা দেশ কাল অনুসৰি যি ভোজ্য বস্তু স্বাভাৱিক ভাবে ভাল লাগে আৰু জীৱনী শক্তি প্ৰদান কৰে সেয়াই সাত্বিক। বস্তু সাত্বিক, ৰাজসীক আৰু তামসীক নহয়, তাৰ প্ৰয়োজন হে সাত্বিকী, ৰাজসী আৰু তামসী হয়।

ইয়াৰ অনুকূলতাৰ বাবে যি ব্যক্তিয়ে ঘৰ-দুৱাৰ ত্যাগ কৰি, মাত্ৰ ঈশ্বৰ আৰাধনাতে লিপ্ত আছে, সন্যাস আশ্ৰমত আছে, তেওঁলোকৰ বাবে মদ-মাংস ত্যাজ্য আছে; কিয়নো অনুভৱৰ পৰা দেখা গৈছে যে এইবোৰ পদাৰ্থই আধ্যাত্মিক পথত বিপৰীত মনোভাৱ উৎপন্ন কৰে। সেয়ে এইবোৰৰ দ্বাৰা সাধনা-পথত ভ্ৰষ্ট হোৱাৰ অধিক সম্ভাৱনা থাকে। যি জন একান্ত দেশ সেৱা কৰাত লিপ্ত, তেওঁৰ বাবে যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই ছয় আধ্যাত্ম আহাৰৰ বাবে এটা নিয়ম দিছে যে ইয়াকে মনত ৰাখি আচৰণ কৰা উচিত। যিয়ে ভজন চিন্তনত সহায়ক হয় সিমানেই (তাকে) আহাৰ গ্ৰহণ কৰা উচিত।

কট্ৰল্ললৰণাত্যুযুতীক্ষ্ণকক্ষ বিদাহিনঃ।

আহাৰা ৰাজসস্যেষ্ঠা দুঃখশোকাময়প্ৰদাঃ।। ৯।।

তিতা, টেঙা, নিমখীয়া, বেছি গৰম, জলা, পোৰা আৰু দুখ চিন্তা আৰু ৰোগ উৎপন্ন কৰিব পৰা আহাৰ ৰাজসী পুৰুষে ভাল পায়।

যাতযামং গতৰসং পৃতি পৰ্যুযিতঞ্চ যৎ।

উচ্ছিষ্টমপি চামেধ্যং ভোজনং তামসপ্ৰিয়ম ॥ ১০ ॥

যি আহাৰ এক প্ৰহৰ (তিনি ঘণ্টা) তকৈ বেছি আগতে তৈয়াৰ হোৱা, 'গতৰসং' বসনথকা, দুৰ্গন্ধ যুক্ত, বাহি, উচ্ছিষ্ট (জুঠা) আৰু অপবিত্ৰও, সেইটো তামসী জনৰ প্ৰিয় হয়। প্ৰশ্ন পূৰ্ণ হ'ল। এতিয়া যজ্ঞ সম্পৰ্কে -

অফলাকাংক্ষিভিৰ্যজ্ঞো বিধিদৃষ্টো য ইজ্যতে।

যষ্টব্যমেবেতি মনঃ সমাধায় সসাত্বিকঃ ॥ ১১ ॥

যি যজ্ঞ 'বিধিদৃষ্ট' শাস্ত্ৰবিধিৰে নিৰ্দ্ধাৰিত কৰা হৈছে। (যেনেকৈ আগৰ ৩ য় আধ্যায়ত যজ্ঞৰ নাম লৈছিল, ৪ৰ্থ আধ্যায়ত যজ্ঞৰ স্বৰূপ কৈছিল যে বহুতো যোগীয়ে প্ৰাণক অপানত, অপানক প্ৰাণত হৰন কৰে। প্ৰাণ-অপানৰ গতি নিৰোধ কৰি, প্ৰাণৰ গতি স্থিৰ কৰি লয়, সংযমায়িত হৰন কৰে। এইদৰে যজ্ঞৰ চৈধ্যটা সোপান কৈছিল, যি বোৰ সকলোৱে ব্ৰহ্মৰ ওচৰলৈ নিবৰ বাবে একেই ক্ৰিয়াৰ উচ্চ-নীচ অৱস্থা। সংক্ষেপত যজ্ঞ চিন্তনৰ প্ৰক্ৰিয়াৰ চিত্ৰণ, যাৰ পৰিণাম সনাতন ব্ৰহ্মত প্ৰৱেশ লাভ। যাৰ বিধান এই শাস্ত্ৰত দিয়া হৈছে।

সেই শাস্ত্ৰ বিধানৰ ওপৰত পূণৰ জোৰ দি কৈছে যে অৰ্জুন। শাস্ত্ৰ বিধিৰ দ্বাৰা নিৰ্দ্ধিষ্ট কৰা কৰ্ম যাক কৰাই হ'ল কৰ্তব্য তথা যি মনক নিৰোধ কৰিব পাৰে যি ফলৰ আশা-নথকা পুৰুষৰ দ্বাৰা কৰা হয় সেই যজ্ঞই সাত্বিক যজ্ঞ।

অভিসন্ধায় তু ফলং দস্তাৰ্থমপি চৈব যৎ।

ইজ্যতে ভৱতশ্ৰেষ্ঠ তং যজ্ঞং বিদ্ধি ৰাজসম ॥ ১২ ॥

হে অৰ্জুন! যি যজ্ঞ মাত্ৰ দস্তাচৰণৰ বাবেহে বা ফলৰ উদ্দেশ্য লৈ কৰা হয়, তাক ৰাজস যজ্ঞ বুলি জানা। এই কৰ্ত্তাই যজ্ঞৰ বিধি জানে; কিন্তু দস্তাচৰণ বা ফলৰ উদ্দেশ্য লৈ কৰে যে মোৰ অমুক টো বস্তু প্ৰাপ্ত হওক তথা যজ্ঞ কৰাটো মানুহে চাওক, প্ৰশংসা কৰক, এনে যজ্ঞ কৰ্ত্তা বস্তুতঃ ৰাজসী হয়। এতিয়া তামস যজ্ঞৰ স্বৰূপ কয়-

বিধিহীনমসৃষ্টান্নং মন্ত্ৰহীনমদক্ষিনম্।

শ্রদ্ধাবিৰহিতং যজ্ঞং তামসং পৰিচক্ষতে ॥ ১৩ ॥

যি যজ্ঞ শাস্ত্ৰবিধিৰহিত, যি অন্ন (পৰমাত্মা)ৰ সৃষ্টি কৰিবলৈ অসমৰ্থ, মনৰ অন্তৰালত নিৰুদ্ধ কৰিবৰ ক্ষমতা নাই, দক্ষিণা অৰ্থাৎ সৰ্বস্ব সমৰ্পণেৰে হীন তথা যি শ্রদ্ধাবিৰহিত, এনে যজ্ঞক তামস যজ্ঞ বুলি কোৱা হয়। এনে পুৰুষে বাস্তৱিক যজ্ঞক নজানেই। এতিয়া প্ৰস্তুত আছে তপ -

দেৱদ্বিজগুৰুপ্ৰাজ্ঞপূজনংশৌচমার্জবম্।

ব্ৰহ্মচৰ্য্যমহিংসা চ শাৰীৰং তপ উচ্যতে ॥ ১৪ ॥

পৰমদেৱ পৰমাত্মা, দ্বৈতত জয় প্ৰাপ্ত কৰোঁতা দ্বিজ, সদগুৰু আৰু জ্ঞানীজনৰ পূজা, পবিত্ৰতা, সৰলতা ব্ৰহ্মচৰ্য্য তথা অহিংসাক শৰীৰ সম্বন্ধীয় তপ বুলি কোৱা হয়। শৰীৰ সদায় বাসনাৰ পিনে ঢাল খায়, ইয়াক অন্তঃকৰণৰ উপৰোক্ত বৃত্তিৰ অনুৰূপ তাপ দিয়াই হ'ল শাৰীৰিক তপ।

অনুদ্বৈগকৰং বাক্যং সত্যং প্ৰিয়হিতং চ যত্।

স্বাধ্যয়াভ্যসনং চৈব বাঙময়ং তপ উচ্যতে ॥ ১৫ ॥

উদ্বৈগ উৎপন্ন নোহোৱা, প্ৰিয়, হিত-কাৰক আৰু সত্য ভাষণ তথা পৰমাত্মাত প্ৰবেশ দিব পৰা শাস্ত্ৰৰ চিন্তনৰ অভ্যাস, নামজপ এইবিলাকক বাণী-সম্বন্ধীয় তপ বুলি কোৱা হয়। বাণীয়ে বিষয় ফালে নিব পৰা বিচাৰ বুদ্ধিকো ব্যক্ত কৰে। ইয়াক সেই ফালৰ পৰা টানী আনি পৰম সত্য পৰমাত্মাৰ দিশত লগোৱা বাণী-সম্বন্ধীয় তপ হয়। এতিয়া মন সম্বন্ধীয় তপ চোৱা হওক -

মনঃ প্ৰসাদ ঃ সৌম্যত্বং মৌনমাত্মবিনিগ্ৰহঃ।

ভাৱ সংশুদ্ধিৰিত্যেতৎতপো মানসমুচ্যতে ॥ ১৬ ॥

মনৰ প্ৰসন্নতা, সৌম্যভাৱ মৌন অৰ্থাৎ ইষ্টৰ অতিৰিক্ত অন্য বিষয়ৰ স্মৰণ নোহোৱা, মনৰ নিৰোধ, অন্তঃকৰণৰ সম্পূৰ্ণ শুদ্ধতা, এইবোৰ মন-সম্বন্ধীয় তপ বোলা হয়। উপৰোক্ত তিনিওটা শৰীৰ, বাণী আৰু মনৰ তপ মিলাই এটা সাত্বিক তপ হয়।

শ্রদ্ধয়া পৰয়া তপ্তং তপস্তৎত্রিবিধং নবৈঃ ।

অফলা কাঙ্ক্ষিভি যুক্তৈঃ সাত্ত্বিকং পৰিচ্ছতে ॥ ১৭ ॥

ফলৰ ইচ্ছা নকৰি অৰ্থাৎ নিষ্কাম কৰ্মৰে যুক্ত পুৰুষৰ দ্বাৰা পৰম শ্রদ্ধাৰে সৈতে কৰা উপৰোক্ত তিনিওটা তপক মিলাই সাত্ত্বিক তপ কোৱা হয়। এতিয়া প্ৰস্তুত আছে ৰাজসী তপ -

সৎকাৰমানপূজাৰ্থং তপো দস্তেন চৈব যৎ ।

ক্রিয়তে তদিহ প্ৰোক্তং ৰাজসং চলমধ্ৰৱম্ ॥ ১৮ ॥

যি তপ সৎকাৰ, মান আৰু পূজাৰ বাবে অথবা মাত্ৰ ঘমণ্ডৰ দ্বাৰা কৰা হয়, সেই অনিশ্চিত আৰু চঞ্চল ফল দিব পৰা তপক ৰাজস তপ বুলি কোৱা হয়।

মুচগ্ৰাহেণাঅনো যৎপীড়য়া ক্রিয়তে তপঃ ।

পৰস্যোৎসাদনাৰ্থং বা তৎতামসমুদাহতম্ ॥ ১৯ ॥

যি তপ মুৰ্খতাৰে, জেদেৰে, মন, বচন আৰু শৰীৰক কষ্ট দি অথবা আনৰ অনিষ্ট কৰিবৰ বাবে প্ৰতিশোধৰ ভাৱনাৰে কৰা হয় তাক তামস তপ বুলি কোৱা হয়।

এইদৰে সাত্ত্বিক তপত শৰীৰ, মন আৰু বাণীক মাত্ৰ ইষ্টৰ অনুৰূপ পেলাব লাগে। ৰাজস তপত তপৰ ক্ৰিয়া একেই; কিন্তু দস্ত, মান সন্মান পাবৰ ইচ্ছাৰে তপ কৰে। প্ৰায় মহাত্মাই ঘৰ-বাৰী এৰিলেও এই বিকাৰৰ চীকাৰ হৈ যায় আৰু তৃতীয় তামস তপ অবিধি দ্বাৰা হয়, অন্যক দুখ দিবৰ উদ্দেশ্যৰে হয়। এতিয়া প্ৰস্তুত আছে দান সম্পৰ্কে-

দাতব্যমিতি যদানং দীয়তেহনুপকাৰিণে ।

দেশে কালে চ পাত্ৰে চ তদানং সাত্ত্বিকং স্মৃতম্ ॥ ২০ ॥

দান দিয়া হ'ল কৰ্তব্য- এই ভাৱেৰে যি দান দেশ (স্থান), কাল সময়ানুকূল আৰু সত্য পাত্ৰৰ প্ৰাপ্ত হলে প্ৰত্যাশাৰ ভাৱনা ৰহিত হৈ দিয়া দানক সাত্ত্বিক দান বুলি কোৱা হয়।

যত্নু প্ৰত্নুপকাৰাৰ্থং ফলমুদ্दिश्य बा पुनः।

दीयते च परिक्लिष्टं तद्दानं राजसं स्मृतम् ॥ २१ ॥

যি দান অসন্তোষ ৰাখি (যি দিবলৈ ইচ্ছা নাছিলে কিন্তু দিব লগা হৈছে) তথা প্ৰত্নুপকাৰ ভাৱনাৰে ‘এইটো দিলে সেইটো পাম’ অথবা ফলৰ উদ্দেশ্য লৈ কৰা দানক ৰাজস দান বুলি কোৱা হয়।

अदेशकाले यद्दानमपात्रेभ्यश्च दीयते।

असत्कृतमवज्जातं तत्तामसमुदाहृतम् ॥ २२ ॥

যি দান বিনা সৎকাৰে অথবা তিৰস্কাৰ কৰি দলি মাৰি দিয়াৰ দৰে অযোগ্য দেশ-কালত অনাধিকাৰীক দিয়া হয়, সেই দানক তামস দান বোলে। ‘পূজ্য মহাৰাজ জীয়ে’ কৈছিল- ‘হয়, কুপাত্ৰক দান দিলে দাতা নষ্ট হৈ যায়।’ ঠিক সেইদৰে শ্ৰীকৃষ্ণও কৈছে যে দান দিয়া হ’ল কৰ্ত্তব্য। দেশ-কাল আৰু পাত্ৰৰ প্ৰাপ্ত হলে প্ৰত্নুপকাৰৰ ভাৱনা নাৰাখি উদাৰতাৰে সৈতে দিয়া দানক সাত্বিক দান বুলি কোৱা হয়। অতি কষ্টৰে ওলিয়াই, প্ৰত্যাশাৰ আশাত দিয়া দান হ’ল ৰাজস আৰু অশ্ৰদ্ধাৰে দলিয়াই দিয়াৰ দৰে প্ৰতিকূল দেশ-কালত কুপাত্ৰত দিয়া দান হ’ল তামস, যদিও সেয়া দানেই হয়; কিন্তু যি জনে শৰীৰ-গৃহ সকলোৰ মমতা ত্যাগ কৰি একমাত্ৰ ইষ্টৰ ওপৰত নিৰ্ভৰ হয়, তাৰ দানৰ বিধান ইয়াতকৈ বহুত উন্নত হয় আৰু সেয়া হ’ল সৰ্বস্বৰ সমপণ, সম্পূৰ্ণ বাসনা ত্যাগ কৰি মনৰ সমৰ্পণ, যেনে দৰে শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছিলে - সেয়ে দান অত্যন্ত আৱশ্যকীয়। এতিয়া প্ৰস্তুত আছে ‘ওঁ’ তৎ আৰু সত্ৰ স্বৰূপ-

ওঁ तत्सदिति निर्देशो ब्रह्मनस्त्रिविधः स्मृतः।

ब्रह्मणास्तेन वेदाश्च यज्ज्ञाश्च विहिताः पूषा ॥ २३ ॥

অৰ্জুন! ওঁ, তৎ আৰু সত্ৰ- এনে তিনি প্ৰকাৰৰ নামে ব্ৰহ্মৰ নিৰ্দেশ কৰে, স্মৃতি দিয়ে, সংকেত কৰে আৰু ব্ৰহ্মৰ পৰিচায়ক হয়। তাৰ দ্বাৰাই ‘পুৰা’-পূৰ্বত (আৰম্ভনীত) ব্ৰাহ্মণ, বেদ আৰু যজ্ঞ আদি ৰচনা কৰা হৈছিল। অৰ্থাৎ ব্ৰাহ্মণ, যজ্ঞ আৰু বেদ ‘ওঁ’ ৰ দ্বাৰা উৎপন্ন হয়। এওঁলোক যোগৰ বাবে। ওমৰ সতত চিন্তাৰ দ্বাৰাই এওঁলোকৰ উৎপত্তি হয় আৰু কোনো বিধি নাই।

তস্মাদৌমিত্যুদাহৃত্য যজ্ঞদান তপঃ ক্ৰিয়া।

প্ৰবৰ্ত্তন্তে বিধানোক্তাঃ সততং ব্ৰহ্মবাদিনাম্ ॥ ২৪ ॥

সেইকাৰণে ব্ৰহ্মকৰ্ম কৰোঁতা পুৰুষৰ স্বাৰা শাস্ত্ৰ-বিধিৰ দ্বাৰা নিৰ্দিষ্ট কৰা যজ্ঞ, দান আৰু তপত ক্ৰিয়া নিৰন্তৰ 'ওম' এই নাম উচ্চাৰণ কৰিহে কৰা হয়, যাৰ দ্বাৰা সেই ব্ৰহ্মৰে স্মৰণ হৈ থাকে। এতিয়া তৎ শব্দৰ প্ৰয়োগ সম্পৰ্কে কয়-

তদিত্যনভিসন্ধায় ফলং যজ্ঞতপঃক্ৰিয়াঃ।

দানক্ৰিয়াশ্চ বিবিধাঃ প্ৰিয়ন্তে মোক্ষকাঙ্ক্ষিভিঃ ॥ ২৫ ॥

তত্ অৰ্থাৎ সেই (পৰমাত্মা) সৰ্বত্ৰতে আছে। এই ভাৱেৰে ফলৰ ইচ্ছা নকৰি শাস্ত্ৰৰ দ্বাৰা নিৰ্দিষ্ট নানা প্ৰকাৰৰ যজ্ঞ, তপ আৰু দানৰ ক্ৰিয়া পৰম কল্যাণৰ ইচ্ছা কৰোঁতা পুৰুষৰ দ্বাৰা কৰা হয়। তৎ শব্দ পৰমাত্মাৰ প্ৰতি সমৰ্পণ সূচক হয়। অৰ্থাৎ জপতো ওমৰে কৰক। যজ্ঞ, দান আৰু তপ ক্ৰিয়া তাৰ ওপৰত নিৰ্ভৰ কৰি কৰক। এতিয়া সংপ্ৰয়োগৰ স্থান সম্পৰ্কে কয়-

সদভাৱে সাধুভাৱে চ সদিত্যেতপ্ৰযুক্ত্যতে।

প্ৰশস্তে কৰ্মণি তথা সচ্ছব্দঃ পাৰ্থ যুক্ত্যতে ॥ ২৬ ॥

আৰু সত্, যোগেশ্বৰে ক'লে যে সত্ কি? গীতাৰ আৰম্ভনীতে অৰ্জুনে প্ৰশ্ন কৰিছিল যে কুলধৰ্মই শাস্ত্ৰত, সত্, তেতিয়া শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছিল- অৰ্জুন। তোমাৰ এই অজ্ঞানতা ক'ৰ পৰা উৎপন্ন হ'ল? সত্য বস্তুৰ তিনিও কালতে কেতিয়াও অভাৱ নহয়, তাক নাইকিয়া কৰিব নোৱাৰি আৰু অসত বস্তুৰ তিনিও কালত অস্তিত্ব নাই, আৰু তাক ৰাখিবও নোৱাৰি। মূলত সেইটো কি বস্তু, যাৰ তিনিও কালত অভাৱ নাই? আৰু সেই অসত বস্তুনো কি, যাৰ অস্তিত্বই নাই? তেতিয়া ক'লে- এই আত্মাই সত্য আৰু ভূতাদি সমস্ত শৰীৰ নাশৱান। আত্মা সনাতন, অব্যক্ত, শাস্ত্ৰত আৰু অমৃত স্বৰূপ- এয়াই পৰম সত্য।

ইয়াত কৈছে 'সত্' এনে পৰমাত্মাৰ নাম - সত্যৰ প্ৰতি ভাৱত আৰু সাধুভাৱত প্ৰয়োগ কৰা হয় আৰু হে পাৰ্থ। যেতিয়া নিৰ্দিষ্ট কৰ্ম বিধিমতে

ভালদৰে হব ধৰে, তেতিয়া সত্ শব্দৰ প্ৰয়োগ কৰা হয়। সত্ৰ অৰ্থ এইটো নহয় যে এই সকলো বস্তু আমাৰ। এইটো সত্ নহয়। সত্ৰ প্ৰয়োগ এটা দিশত প্ৰয়োগ কৰা হয়, সেইটো হ'ল- সৎভাৱত, আত্মাই পৰম সত্য। এই সত্যৰ প্ৰতি ভাৱ হওক, তাক সাধন কৰিবৰ বাবে সাধুভাৱ হওক আৰু তাৰ প্ৰাপ্তি কৰাব পৰা কৰ্ম প্ৰশস্ত ভাৱে হব ধৰে, তাতে সত্ শব্দৰ প্ৰয়োগ কৰা হয়। ইয়াত যোগেশ্বৰে কৈছে-

যজ্ঞে তপসি দানে চ স্থিতিঃ সদিত্তি চোচ্যতে।

কৰ্ম চৈব তদৰ্থীয়ং সদিত্ত্যেবাভিধীয়তে।। ২৭।।

যজ্ঞ, তপ আৰু দান কৰোঁতে যি স্থিতি প্ৰাপ্ত হয়, সেয়াও সত্- এনেকুৱা কোৱা হৈছে। - সেই পৰমাত্মাৰ প্ৰাপ্তিৰ বাবে কৰা কৰ্মই সত্- এইদৰে কোৱা হৈছে। অৰ্থাৎ সেই পৰমাত্মাৰপ্ৰাপ্তিৰান কৰ্মই সত্, যজ্ঞ-দান- তপ এইবোৰ হ'ল কৰ্মৰ পৰিপূৰক। শেষত নিৰ্ণয় দি ক'লে যে এই সকলোৰে শ্ৰদ্ধাৰ কিন্তু অতি আৱশ্যক।

অশ্ৰদ্ধয়া হৃত্তং দতং তপস্তপ্তং কৃত্তং চ যৎ।

অসদিত্ত্যচ্যতে পাৰ্থ ন চ তৎপ্ৰেত্য নো ইহ।। ২৮।।

হে পাৰ্থ! শ্ৰদ্ধাহীন ভাৱে কৰা হৰন শ্ৰদ্ধাহীন ভাৱে কৰা দান, অশ্ৰদ্ধাৰে কৰা তপ আৰু যি কোনোৱে কৰ্ম, সেইবোৰ সব অসত্- এনেদৰে কোৱা হৈছে। সেইটো এই লোকৰ বাবে বা পৰলোকৰ বাবেও কামত নাহে। সেয়ে সমৰ্পনৰ সৈতে শ্ৰদ্ধা নিতান্তই আৱশ্যক আছে।

নিষ্কৰ্ষঃ

আধ্যায়ৰ আৰম্ভনীতে অৰ্জুনে প্ৰশ্ন কৰিলে, ভগৱানঙ্গ যি জনে শাস্ত্ৰ বিধি ত্যাগ কৰি কিন্তু শ্ৰদ্ধায়ুক্ত হৈ যজন কৰে (মানুহে অন্যান্য শক্তি আদিক পূজা কৰি থাকে) তেতিয়াহলে তেওঁলোকৰ শ্ৰদ্ধা কেনে বিধৰ? সাত্বিকী, ৰাজসী নে তামসী? এইক্ষেত্ৰত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছিল, অৰ্জুন! এই পুৰুষ হ'ল শ্ৰদ্ধাৰ স্বৰূপ (পুতলা), কিবা এটাত তেওঁৰ শ্ৰদ্ধাথাকিবই। যেনে

শ্ৰদ্ধা তেনে পুৰুষ। যেনে বৃত্তি তেনেই পুৰুষ। তেওঁলোকৰ সেই শ্ৰদ্ধা সাত্ত্বিক, ৰাজসীক আৰু তামসীক তিনি প্ৰকাৰৰে হয়। সাত্ত্বিক শ্ৰদ্ধাৱান দেৱতাৰ, ৰাজসী শ্ৰদ্ধাৱান যক্ষ (যিয়ে যশ, শৌৰ্য্য দিব পাৰে), ৰাক্ষসৰ (যিয়ে সুৰক্ষা দিব) পিছ ধৰে আৰু তামসী শ্ৰদ্ধাৱানে ভূত-প্ৰেতৰ পূজা কৰে। শাস্ত্ৰ বিধি ৰহিত এই পূজাৰ- দ্বাৰা এই তিনিও প্ৰকাৰৰ শ্ৰদ্ধাৱানে শৰীৰত স্থিত ভূত সমূহক অৰ্থাৎ নিজৰ সংকল্পক আৰু হৃদয়-দেশত স্থিত মোক অন্তৰ্যামীক দ্বেষ কৰে- পূজাতো কৰা নহয়েই। সেই সকলোকে নিশ্চয় তুমি অসুৰ বুলি জানা অৰ্থাৎ ভূত-প্ৰেত-যক্ষ-ৰাক্ষস তথাদেৱতাক পূজা কৰোঁতা বোৰ অসুৰ।

দেৱতা- প্ৰসংগক শ্ৰীকৃষ্ণই ইয়াত তৃতীয় বাৰৰ বাবে উঠাইছে। প্ৰথমে সাত আধ্যায়ত তেখেতে কৈছিল যে- অৰ্জুন! কামনা-বাসনাৰে যাৰ জ্ঞান হৰণ কৰিছে, সেই মুঢ়বুদ্ধিয়ে অন্য দেৱতাক পূজা কৰে। দ্বিতীয়বাৰ ন আধ্যায়ত সেই প্ৰশ্নকে পূৰ্ণৰায় কৈছে, যিয়ে অন্যান্য দেৱতাক পূজা কৰে, তেওঁলোকেও মোকে পূজা কৰে; কিন্তু তেওঁলোকৰ সেই পূজা অবিধি হয় অৰ্থাৎ শাস্ত্ৰত নিৰ্দ্ধাৰিত বিধিতকৈ ভিন্ন, সেয়ে সেইটো নষ্ট হৈ যায়। ইয়াত সোতৰ আধ্যায়ত তেওঁলোকক আসুৰী স্বভাৱ থকা বুলি সন্সোধন কৰিছে। শ্ৰীকৃষ্ণৰ মতে এক পৰমাত্মাৰ পূজনেই একমাত্ৰ বিধান।

তাৰ পিছত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই চাৰিটা প্ৰশ্ন ল'লে- আহাৰ, যজ্ঞ, তপ আৰু দান। আহাৰ তিনি প্ৰকাৰৰ হয়। সাত্ত্বিক পুৰুষৰ বাবে আৰোগ্য দিব পৰা, স্বাভাৱিক ভাল লগা, স্নিগ্ধ আহাৰ প্ৰিয় হয়। ৰাজস পুৰুষক তিতা, জলা, গৰম, স্বাদযুক্ত, মচলাযুক্ত, ৰোগ বৃদ্ধি কৰিব পৰা আহাৰ প্ৰিয় হয়। তামস পুৰুষে উচ্ছিষ্ট মানে জুঠা, বাহি আৰু অপবিত্ৰ আহাৰ গ্ৰহণ কৰি ভাল পায়।

শাস্ত্ৰবিধিৰ দ্বাৰা নিৰ্দ্ধিষ্ট যজ্ঞ (যি আৰাধনাৰ আন্তৰ্জিগ্যা) যিয়ে মনক নিৰোধ কৰে, ফলাকাংক্ষা নথকা যজ্ঞ হ'ল সাত্ত্বিক যজ্ঞ। দস্ত প্ৰদৰ্শন তথা ফলৰ বাবে কৰা যজ্ঞ ৰাজস যজ্ঞ আৰু শাস্ত্ৰবিধিহীন, মন্ত্ৰ, দান আৰু শ্ৰদ্ধাহীন যজ্ঞ হ'ল তামস যজ্ঞ।

পৰম দেৱ পৰমাত্মাত প্ৰৱেশ পাব পৰা সকলো যোগ্যতা যাৰ আছে,

সেই প্ৰাজ্ঞ সদৃশৰ ৰ সেৱা-অৰ্চনা আৰু অন্তঃকৰণৰ দ্বাৰা অহিংসা, ব্ৰহ্মাচৰ্য্য আৰু পবিত্ৰতাৰ অনুৰূপে তপ হ'ল শাৰীৰিক তপ। সত্য, প্ৰিয় আৰু হিতকোৱা হ'ল বাণীৰ তপ আৰু মনক কৰ্মত প্ৰবৃত্ত ৰখা, ইষ্টৰ অতিৰিক্ত কোনো বিষয়ৰ চিন্তনত মনক মৌন ৰখা হ'ল মন সম্বন্ধী তপ। মন, বাণী আৰু শৰীৰ এই তিনিও তপক সাত্বিক তপ বুলি কোৱা হয়। ৰাজস তপত কামনাৰ লগতে তাকে কৰা হয়, আৰু তামস তপ শাস্ত্ৰবিধিহীন স্বেচ্ছাচাৰিতা হয়।

কৰ্তব্য বুলি ভাবি দেশ-কাল আৰু পাত্ৰ চাই কৰা শ্ৰদ্ধাৰ দানক সাত্বিক দান বুলি কোৱা হয়। কিবা লাভৰ লোভত কঠোৰ ভাৱে দিয়া দানক ৰাজস দান আৰু অনাদৰ ভাবে কুপাত্ৰক দিয়া দানক তামস দান বুলি কোৱা হয়।

‘ওঁ’ তত্ আৰু সতৰ স্বৰূপৰ বিষয়ে যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কলে যে এই নামে পৰমাত্মাৰ স্মৰণ কৰায়। শাস্ত্ৰবিধিৰ দ্বাৰা নিৰ্দ্ধাৰিত তপ, দান আৰু যজ্ঞ আৰম্ভ কৰোঁতে ওমৰ প্ৰয়োগ হয় আৰু অন্তলৈকে ওম থাকেই। ততৰ অৰ্থ হ'ল - সেই পৰমাত্মা। তাৰ প্ৰতি সমৰ্পণ হৈ সেই কৰ্ম হয় আৰু যেতিয়া কৰ্ম ধাৰাবাহিকতাত হ'ব ধৰে, তেতিয়া সতৰ প্ৰয়োগ হয়। ভজনেই সত। সতৰ প্ৰতি ভাৱ আৰু সাধুভাৱতেই সতৰ প্ৰয়োগ কৰা হয়। পৰমাত্মাৰ প্ৰাপ্তী কৰাব পৰা কৰ্ম, যজ্ঞ, দান আৰু তপৰ পৰিণামতো সতৰ প্ৰয়োগ হয় আৰু পৰমাত্মাত প্ৰৱেশ কৰাব পৰা কৰ্ম নিশ্চয়ই সত হয়; কিন্তু এই সকলোৰে লগত শ্ৰদ্ধাৰ নিতান্ত আৱশ্যক আছে। শ্ৰদ্ধাহীন হৈ কৰা কৰ্ম, দিয়া দান, তপ, ইত্যাদিয়ে এই জন্মতো লাভ নিদিয়ই, পৰজন্মতো নিদিয়। শ্ৰদ্ধা অত্যন্ত অপৰিহাৰ্য্য আছে।

সম্পূৰ্ণ অধ্যায়টোত শ্ৰদ্ধাৰ ওপৰত প্ৰকাশ কৰা হৈছে আৰু শেষত ওঁ, তত্ আৰু সতৰ বিস্তৃত ব্যাখ্যা প্ৰস্তুত কৰা হৈছে, যি গীতাৰ শ্লোকত প্ৰথম বাৰ উল্লেখ হৈছে। সেয়ে -

ওঁ তৎসদিতি শ্ৰীমদভাগৱদ গীতা সুপনিষৎসু ব্ৰহ্মবিদ্যায়াং যোগশাস্ত্ৰে শ্ৰীকৃষ্ণৰ্জুনসন্বাদে ‘ওঁ তৎসৎ শ্ৰদ্ধাত্ৰয় বিভাগ যোগো’ নাম সপ্তদশোহধ্যায়ঃ।। ১৭।।

এইদৰে শ্ৰীমৎভাগৱৎ গীতা ৰূপী উপনিষদ আৰু ব্ৰহ্মবিদ্যা তথা যোগশাস্ত্ৰ বিষয়ক শ্ৰীকৃষ্ণ আৰু অৰ্জুনৰ সম্বাদত ‘ওঁ তৎসৎ শ্ৰদ্ধাত্ৰয় বিভাগ যোগ’ নামৰ সোতৰ আখ্যায় পূৰ্ণ হ’ল।

ইতি শ্ৰীমৎপৰম হংস পৰমানন্দস্য শিষ্য স্বামী অড়গড়ানন্দকৃতে শ্ৰীমৎভাগৱৎগীতায়ঃ ‘ষথার্থ গীতা’ ভাষ্য ‘ওঁ তৎসৎ শ্ৰদ্ধাত্ৰয় বিভাগ যোগ’ নাম সপ্তদশোহধ্যায়ঃ ॥ ১৭ ॥

॥ হৰি ওঁ তৎসৎ ॥

‘ওঁ’

শ্ৰীপৰমাত্মনে নমঃ

অথ অষ্টাদশোহধ্যায়ঃ

এইটো হ'ল গীতাৰ অন্তিম আধ্যায়, যাৰ পূৰ্বাৰ্দ্ধত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণৰ দ্বাৰা প্ৰস্তুত বহুতো প্ৰশ্নৰ সমাধান দিয়া হৈছে আৰু উত্তৰাৰ্দ্ধৰ গীতাৰ উপসংহাৰত কোৱা হৈছে যে গীতাৰ পৰা লাভ কি? সোঁতৰ আধ্যায়ত আহাৰ, তপ, যজ্ঞ, দান আৰু শ্ৰদ্ধাৰ বিভাগেৰে সৈতে স্বৰূপৰ কথা কলে, সেই সন্দৰ্ভত ত্যাগৰ প্ৰকাৰ বাকী আছে। মানুহে যি কৰে, কাৰণ তাৰ কি? কোনে কৰায়? ভগৱানে কৰায় নে প্ৰকৃতিয়ে? এই প্ৰশ্ন বোৰ প্ৰথমে আৰম্ভ কৰা হৈছিল, যাৰ ওপৰত এই আধ্যায়ত পুনৰ প্ৰকাশ কৰা হৈছে। এইদৰে বৰ্ন-ব্যৱস্থাৰো আলোচনা হৈ গ'ল। সৃষ্টিত তাৰ স্বৰূপৰ বিশ্লেষণ এই আধ্যায়ত প্ৰস্তুত কৰা হৈছে। শেষত গীতাৰ পৰা পাবপৰা বিভূতি সমূহৰ ওপৰত প্ৰকাশ পেলোৱা হৈছে।

আগৰ আধ্যায়ত বহুতো প্ৰকৰণৰ বিভাজন শুনি অৰ্জুনে নিজে এটা প্ৰশ্ন ৰাখিলে যে ত্যাগ আৰু সন্ন্যাসকো বিভাগেৰে সৈতে কব লাগে-

অৰ্জুন উবাচ

সন্ন্যাসস্য মহাবাহো তদ্ধিমিচ্ছামি বেদিতুম্।

ত্যাগস্য চ হৃষীকেশ পৃথক্ কেশিনিষুদন ॥ ১ ॥

অৰ্জুনে কলে- হে মহাবাহু ! হে হৃদয়ৰ সৰ্বস্ব হে কেশিনিষুদনঙ্গ মই সন্ন্যাস আৰু ত্যাগৰ যথার্থ স্বৰূপক বেলেগে বেলেগে জানিব বিচাৰিছো। পূৰ্ণ ত্যাগ হ'ল সন্ন্যাস, যত সংকল্প আৰু সংস্কাৰৰ শেষ হৈ যায় আৰু ইয়াৰ

আগতে সাধনাৰ পুৰ্তীৰ বাবে উত্তৰোত্তৰ আসক্তিৰ ত্যাগেই ত্যাগ। ইয়াত দুটা প্ৰশ্ন হয় যে সন্যাসৰ তত্বক জানিব বিচাৰিছো আৰু দ্বিতীয়তে ত্যাগৰ তত্বক জানিব বিচাৰিছোঁ। এই ক্ষেত্ৰত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছে-

শ্ৰীভগবানুবাচ

কাম্যানাং কৰ্মনাং ন্যাসং সন্ন্যাসং কবয়ো বিদুঃ।

সৰ্বকৰ্মফলত্যাগং প্ৰাহুস্ত্যাগং বিচক্ষণাঃ।। ২।।

অৰ্জুন! বহুতো পণ্ডিতজনে কাৰ্য্য কৰ্মৰ ত্যাগক সন্যাস বুলি কয় আৰু বহুতো বিচাৰৱান পুৰুষে সম্পূৰ্ণ কৰ্ম ফলৰ ত্যাগক ত্যাগ বুলি কয়।

ত্যাগ্যং দোষবদিত্যেকে কৰ্ম প্ৰাহুমনীষিণঃ।

যজ্ঞদানতপঃ কৰ্ম ন ত্যাগ্যমিতি চাপৰে।। ৩।।

কোনো বিদ্বানে এনেকৈ কয় যে সকলো কৰ্ম দোষযুক্ত হয়, সেয়ে ত্যাগ কৰাৰ যোগ্য আৰু অন্য বিদ্বানে এনেকৈ কয় যে যজ্ঞ, দান আৰু তপ ত্যাগিবৰ যোগ্য নহয়। এইদৰে বহুতো মত প্ৰস্তুত কৰি যোগেশ্বৰে নিজৰো নিশ্চিত মত দিয়ে-

নিশ্চয়ং শণু মে তত্র ত্যাগে ভৰতসত্তম।

ত্যাগো হি পুৰুষব্যাস্ত্ৰ ত্ৰিবিধঃ সম্প্ৰকীৰ্তিতঃ।। ৪।।

হে অৰ্জুন! সেই ত্যাগৰ বিষয়ে মোৰ নিশ্চয়ক তুমি শুনা। হে পুৰুষশ্ৰেষ্ঠ! সেই ত্যাগ তিনি প্ৰকাৰৰ কোৱা হৈছে।

যজ্ঞদানতপঃকৰ্ম ন ত্যাগ্যং কাৰ্য্যমেব তৎ।

যজ্ঞো দানং তপশ্চৈব পাবনানি মনীষিণাম্।। ৫।।

যজ্ঞ, দান আৰু তপ এই তিনি প্ৰকাৰৰ কৰ্ম ত্যাগ কৰা যোগ্য নহয়, এইবোৰতো কৰা উচিত; কিয়নো যজ্ঞ, দান আৰু তপ এই তিনিটাই পুৰুষক পবিত্ৰ কৰে।

শ্ৰীকৃষ্ণই চাৰিটা প্ৰচলিত মতৰ উল্লেখ কৰে। প্ৰথম- কাম্য কৰ্মৰ ত্যাগ,

দ্বিতীয়- সম্পূৰ্ণ কৰ্মফলৰ ত্যাগ, তৃতীয়- দোষযুক্ত হোৱাৰ কাৰণে সকলো কৰ্মৰ ত্যাগ আৰু চতুৰ্থ মত আছিল- যজ্ঞ, দান আৰু তপ ত্যাগ কৰাৰ যোগ্য নহয়। তাৰ ভিতৰত এই মতত নিজৰ সহমত প্ৰকট কৰি কয় যে অৰ্জুন। মোৰো এইটো নিশ্চিত মত যে যজ্ঞ, দান আৰু তপ ৰূপী ত্ৰিণীয়া ত্যাগ কৰাৰ যোগ্য নহয়। ইয়াৰ পৰা এইটো প্ৰমাণ হয় যে কৃষ্ণ কালতো বহুতো মত যথার্থ আছিল। সেইসময়তো বহুতো মত আছিল, আজিও আছে। মহাপুৰুষ যেতিয়া পৃথিবীলৈ আহে, তেতিয়া বহুতো মতামতৰ পৰা কল্যাণকাৰী মতক উলিয়াই সন্মুখত বাখে। প্ৰত্যেক মহাপুৰুষে এইটোৱে কৰিছে, শ্ৰীকৃষ্ণইও তাকে কৰিছে। তেখেতে কোনো নতুন পথৰ কথা কোৱা নাই, আনকি প্ৰচলিত বহুতো মতৰ পৰা সত্যক সমৰ্থন কৰি তাকে স্পষ্ট কৰিছে।

এতান্যপি তু কৰ্মানি সঙ্গং ত্যাঙ্ক্ৰা ফলানি চ।

কৰ্তব্যনীতি মে পাৰ্থ নিশ্চিতং মতমুত্তমম্ ॥ ৬ ॥

যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই জোৰ দি কৈছে যে- পাৰ্থ ! যজ্ঞ, দান আৰু তপৰূপী কৰ্ম আসক্তি আৰু ফল ত্যাগ কৰি অৱশ্যে কৰা উচিত। এইটো মোৰ নিশ্চয় কৰি থোৱা উত্তম মত হয়। এতিয়া অৰ্জুনৰ প্ৰশ্ন অনুসৰি তেওঁ ত্যাগৰ বিশ্লেষণ কৰি কয়-

নিয়তস্য তু সন্ন্যাসঃ কৰ্মণো নোপপদ্যতে।

মোহান্তস্য পৰিত্যাগস্ত্যামসঃ পৰিকীৰ্তিতঃ ॥ ৭ ॥

হে অৰ্জুন! নিয়ত কৰ্ম (শ্ৰীকৃষ্ণৰ শব্দত নিয়ত কৰ্ম এটাই হ'ল যজ্ঞৰ প্ৰক্ৰিয়া। এই নিয়ত শব্দক যোগেশ্বৰে আঠ-দহ বাৰমান কৈছে। ইয়াত বাৰে বাৰে জোৰ দি কৈছে যে ক'ৰবাত সাধকে ভ্ৰমত পৰি বেলেগে এটা নকৰক।) এই শাস্ত্ৰবিধিৰ দ্বাৰা নিদ্ভাৰিত কৰ্মৰ ত্যাগ কৰা উচিত নহয়। মোহৰ দ্বাৰা তাক ত্যাগ কৰিলে তাক তামস ত্যাগ বুলি কোৱা হয়। সাংসাৰিক বিষয়-বস্তুৰ আসক্তিত সোমাই কাৰ্য্যম কৰ্ম (কাৰ্য্যম কৰ্ম, নিয়ত কৰ্ম ইটো সিটোৰ পৰিপূৰক) ত্যাগ কৰিলে তাক তামস ত্যাগ বুলি কোৱা হয়। এনে পুৰুষ 'অধঃ গচ্ছতি' কীট পতঙ্গ পৰ্য্যন্ত অধম যোনীত যায়, কিয়নো তেওঁ ভজনৰ প্ৰবৃত্তিক ত্যাগ কৰি দিছে। এতিয়া ৰাজস ত্যাগৰ সম্পৰ্কে কয়-

दुःखमित्येव यत्कर्म कायक्लेशभयां त्यजेत् ।

स कृत्वा राजसं त्यागं नैव त्यागफलं लभेत् ॥ ८ ॥

कर्मक दुखमय बुलि भावि शारीरिक कष्टर भयत तक त्याग कर्षोंतहि
राजस त्याग करिओ त्यागर फल प्राप्तु नकरे। याषद्द्वारा भजन नहय आरु -
एहि भयत कर्म त्याग करे ये शरीरर कष्ट हव, सेहि मनुष्यर त्यागक राजस
त्याग बुलि कोरा हय, तेओ त्यागर फल परम शान्ति लाभ करिव नोरावे।
आरु -

कार्यमित्येव यत्कर्म नियतं क्रियतेहर्जुन ।

सङ्गं त्याक्त्वा फलं चैव स त्यागः सात्त्विको मतः ॥ ९ ॥

हे अर्जुन ! कषा ह'ल कर्तव्य, एने भावि यि 'नियतम्' - शास्त्र-विधि
द्वारा निद्धारित कर्म संग-दोष आरु फल त्याग करि करे, सेयाहि ह'ल सात्त्विक
त्याग। सेये नियत कर्महि कषा आरु इयाष वाने यि कोनो कर्मके त्याग
कषा। एहि नियत कर्मको करियेहि थाकिव ने इयाषो त्याग हव ? एहि विषये
कय- (एतिया अन्तिम त्यागर रूप चोरा हओक)

न द्वेष्यकुशलं कर्म कुशले नानुषङ्गते ।

त्यागी सत्त्वसमाविष्टो मेधावी ह्यसंशयः ॥ १० ॥

हे अर्जुन ! यि पुरुषे 'अकुशलं कर्म' अर्थां अकल्याणकारी कर्मक
द्वेष नाषाखे (शास्त्रविधि कर्महि कल्याणकारी। इयाष विरोधत यिये कषा हय,
एहि लोकर वन्दन, सेहिकारने अकल्याणकारी, एने कर्म) आरु कल्याणकारी
कर्मत आसक्ति नाषाखे यि करिव लगा आछिल, सेयाओ वार्की नाथाकिल, एने
सत्त्वरे संयुक्त पुरुष संशयहीन, ज्ञानवान आरु त्यागी हय। तेओ सकलो
त्याग करिछे, तथापिओ प्राप्तीर लगते पूर्ण त्याग ह'ल सन्यास। आरु किवा
सबल पथ थाकिव पावे नेकि ? इयात कय-नहय, चोरा याओक -

न हि देहभृता शक्यं त्यक्तुं कर्मान्यशेषतः ।

यस्तु कर्मफलत्यागी स त्यागीत्यभिधीयते ॥ ११ ॥

देहधारी पुरुषर द्वारा (मात्र शरीरैहि नहय, आपुनि याक देषिछे।

শ্রীকৃষ্ণৰ অনুসৰি প্ৰকৃতিৰ দ্বাৰা উৎপন্ন সতঃ-ৰজঃ-তমঃ এই তিনি গুণেৰে এই জীৱাত্মক শৰীৰত বান্ধি ৰাখিছে। যেতিয়ালৈকে গুণ জীৱিত থাকে, তেতিয়ালৈকে ই জীৱধাৰী। কিবা ৰূপত শৰীৰ পৰিবৰ্তীত হৈ য়ে থাকে। দেহৰ বাবে যেতিয়ালৈকে জীৱিত থাকে) সম্পূৰ্ণভাৱে সকলো কৰ্ম ত্যাগ কৰা সম্ভৱ নহয়, সেই কাৰণে যি পুৰুষে কৰ্মফলক ত্যাগ কৰে, তেৱে ত্যাগী-এনেদৰে কোৱা হৈছে। সেয়ে যেতিয়ালৈকে শৰীৰৰ কাৰণে জীয়াই থকা হয়, তেতিয়ালৈকে নিয়ত কৰ্ম কৰি থাকা আৰু তাৰ ফল ত্যাগ কৰা। সলনিত কেনো ফলৰ কামনা নকৰা। তেনেদৰে সকামী পুৰুষৰ কৰ্মৰ ফলত থাকে-

অনিষ্টমিষ্টং মিশ্ৰং চ ত্ৰিবিধং কৰ্মনঃ ফলম্।

ভবত্যত্যাগিনাং প্ৰেত্য ন তু সন্যাসিনাং ক্ৰটিৎ ॥ ১২ ॥

সকামী পুৰুষৰ কৰ্মৰ ভাল, বেয়া আৰু মাজৰ এনে তিনি প্ৰকাৰৰ ফল মৃত্যুৰ পাছতো পাই থাকে, জন্ম-জন্মান্তৰলৈ পাই থাকে; কিন্তু - সৰ্বস্বৰ ন্যাস (অন্ত) কৰোঁতা পূৰ্ণ ত্যাগী পুৰুষৰ কৰ্মৰ ফল কোনো কালতো নহয়। এয়াই শুদ্ধ সন্যাস। সন্যাসৰ চৰম উৎকৃষ্ট অৱস্থা। ভাল, বেয়া কৰ্মৰ ফল তথা পূৰ্ণ ন্যাস কালত তাৰো অন্ত, প্ৰশ্ন পূৰা হ'ল। এতিয়া পুৰুষৰ দ্বাৰা শুভ বা অশুভ কৰ্ম হোৱাৰ কাৰণ কি? চোৱা যাওক-

পঞতানি মহাবাহো কাৰণানি নিবোধ মে।

সাংখ্যে কৃতান্তে প্ৰোক্তানি সিদ্ধয়ে সৰ্বকৰ্মণাম্ ॥ ১৩ ॥

হে মহাবাহু! সম্পূৰ্ণ কৰ্মৰ সিদ্ধিৰ বাবে পাচঁটা কাৰণ সাংখ্য-সিদ্ধান্তত কোৱা হৈছে। সেইবোৰক তুমি মোৰ পৰা ভালকৈ জানি লোৱা।

অধিষ্ঠানং তথা কৰ্ত্তাকৰণং চ পৃথগ্ধিধম্।

বিবিধাশ্চ পৃথক্ চেষ্টা দৈৱং চৈবাত্ৰ পঞ্চমম্ ॥ ১৪ ॥

এই বিষয়ত কৰ্ত্তা (এই মন), বেলেগ-বেলেগ কৰণ হয় (যাৰ দ্বাৰা কৰা যায়, যদি শুভ হয় তেতিয়া বিবেক, বৈৰাগ্য, শম, দম, ত্যাগ, অনবৰত চিন্তন কৰি থকাৰ প্ৰবৃত্তি কৰণ হয়। যদি অশুভ হয়, তেতিয়াহলে কাম, ক্ৰোধ, ৰাগ-দ্বেষ, লিঙ্গা ইত্যাদি কৰণ হয়। এই বিলাকৰ দ্বাৰা প্ৰেৰিত হয়।) নানা

প্ৰকাৰৰ সুন্দৰ চেষ্টা (অনন্ত ইচ্ছা), আধাৰ (অৰ্থাৎ সাধনা, যি ইচ্ছা হ'ল সাধনা কৰিলে, ইচ্ছা পূৰ্ণ হ'ব ধৰিলে) আৰু পঞ্চমটো কাৰণ হ'ল - দৈৱ অথবা সংস্কাৰ। ইয়াকে পুষ্টি কৰি কয়-

শৰীৰবাঙমনোভিৰ্যৎকৰ্ম প্ৰাৰম্ভতে নৰঃ।

ন্যায়াং বা বিপৰীতং বা পঐশ্বেতে তস্য হেতবঃ।। ১৫।।

মনুষ্যই মন, বাণী আৰু শৰীৰেৰে শাস্ত্ৰৰ অনুসৰি বা বিপৰীত যি কৰ্মই আৰম্ভ কৰে, তাত এই পাচঁটা কাৰণেই হয়। কিন্তু এনে হলেও-

তত্রৈৱ সতি কৰ্ত্তাৰমাত্মানং কেবলং তু যঃ।

পশ্যত্যকৃতবুদ্ধিত্বান্ন স পশ্যতি দুৰ্মতিঃ।। ১৬।।

যি পুৰুষে অশুদ্ধি বুদ্ধিৰ কাৰণে সেই বিষয়ত কেবল্য স্বৰূপ আত্মাক কৰ্ত্তা ৰূপে দেখে, সেই দুৰ্বুদ্ধিয়ে যথার্থনেদেখে অৰ্থাৎ ভগৱানে নকৰে।

এই প্ৰশ্নৰ ওপৰত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই দ্বিতীয় বাৰৰ বাবে জোৰ দিছে। পঞ্চম আধ্যায়ত তেখেতে কৈছে যে সেই প্ৰভূৱে ন কৰে, ন কৰায়, ন ক্ৰিয়াৰ সংযোগ কৰে। তেতিয়াহলে মানুহে কিয় কয়? মোহৰ দ্বাৰা মানুহৰ বুদ্ধি ঢাক খাই গৈছে, সেই কাৰণে যি কোনো ক'ব পাৰে। ইয়াতো কৈছে কৰ্ম হবলৈ পাচঁটা কাৰণ লাগে। তাৰ স্বত্বেও যিয়ে কেবল্য স্বৰূপ পৰমাত্মাক কৰ্ত্তা হিচাবে দেখে, সেই মুঢ় বুদ্ধিয়ে (দুৰ্বুদ্ধি) যথার্থত নেদেখে অৰ্থাৎ ভগৱানে নকৰে, আকৌ ইফালে অৰ্জুনৰ বাবে তেওঁ তালি মাৰি থিয় হৈ থাকে যে কৰ্ত্তা- ধৰ্ত্তাতো ময়ে হওঁ, তুমি নিমিত্ত মাত্ৰ হৈ ঠিয় হোৱা। অন্ততঃ সেই মহাপুৰুষে কি ক'ব বিচাৰিছে?

বস্তুতঃ ভগৱান আৰু প্ৰকৃতিৰ মাজত এটা আকৰ্ষণ ৰেখা আছে। যেতিয়ালৈকে সাধক প্ৰকৃতিৰ সীমাত থাকে, ভগৱানে নকৰে। বহুত ওচৰত থাকিও দ্ৰষ্টা ৰূপতহে থাকে। অনন্য ভাৱেৰে ইষ্টক ড়ৰিলে তেওঁ হৃদয়-দেশত সঞ্চালক ৰূপে হৈ যায়। সাধক প্ৰকৃতিৰ আকৰ্ষণ সীমাৰ পৰা ওলাই তেওঁৰ ক্ষেত্ৰত আহি যায়। এনে অনুৰাগীৰ বাবে তেওঁ তালি বজাই ঠিয় হৈ

থাকে। মাত্ৰ চিন্তন কৰা। প্ৰশ্ন পূৰা হ'ল। আগলৈ চাওঁ-

যস্য নাহঙ্কৃতো ভাবোবুদ্ধিৰ্যস্য ন লিপ্যতে।

হত্বাপি স ইমাঁল্লোকান হন্তি ন নিবধ্যতে।। ১৭।।

যি পুৰুষৰ অন্তঃকৰণত 'মই কৰ্তা' এনে ভাৱ নাই তথা যাৰ বুদ্ধি লিপ্ত নহয়, সেই পুৰুষে এই সকলো লোকক মাৰিলেও বাস্তৱত নেমাৰেও, নেবান্ধেও। লোক সম্বন্ধী সংস্কাৰৰ বিলয় হোৱাই হ'ল লোক সংহাৰ। এতিয়া সেই নিয়ত কৰ্মৰ প্ৰেৰা কেনেকৈ হয়। চোৱা যাওক-

জ্ঞানং জ্ঞেয়ং পৰিজ্ঞাতা ত্ৰিবিধা কৰ্মচোদনা।

কৰণং কৰ্ম কৰ্তেতি ত্ৰিবিধঃ কৰ্মসংগ্ৰহঃ।। ১৮।।

অৰ্জুন! পৰিজ্ঞাতা অৰ্থাৎ পূৰ্ণ জ্ঞাতা মহাপুৰুষৰ দ্বাৰা 'জ্ঞানং', তেওঁক জনাৰ বিধিৰ দ্বাৰা 'জ্ঞেয়' জনাৰ যোগ্য বস্তুৰ (শ্ৰীকৃষ্ণই আগত কৈছিল যে ময়েই জ্ঞেয়, জনাৰ যোগ্য পদাৰ্থ হওঁ) দ্বাৰা কৰ্ম কৰাৰ প্ৰেৰণা পোৱা যায়। প্ৰথমেতো পূৰ্ণ জ্ঞাতা কোনো মহাপুৰুষৰ আৱশ্যক, তেওঁৰ দ্বাৰা সেই জ্ঞানক জানিবৰ বিধি প্ৰাপ্ত কৰা, লক্ষ্য হ'ল-জনাৰ যোগ্য পদাৰ্থৰ ওপৰত দৃষ্টি ৰাখিলেহে কৰ্মৰ প্ৰেৰণা পোৱা যায় আৰু কৰ্তা (মনৰ একাগ্ৰতা) কৰণ (বিবেক, বৈৰাগ্য, শম, দম ইত্যাদি) তথা কৰ্ম জনাৰ পৰা কৰ্মৰ সংগ্ৰহ হয়, কৰ্ম একত্ৰিত হ'ব ধৰে। আগত কৈছিল যে প্ৰাপ্তিৰ পিছত সেই মহাপুৰুষৰ কৰ্ম কৰাৰ কোনো প্ৰয়োজন নাথাকে আৰু এৰি দিলেও কোনো লোকচান নহয়; তথাপিও লোক সংগ্ৰহ অৰ্থাৎ পৰবৰ্তী সকলৰ হৃদয়ত কল্যাণকাৰী সাধনৰ সংগ্ৰহৰ বাবে কৰ্ম কৰি থাকে। কৰ্তা, কৰণ আৰু কৰ্মৰ দ্বাৰা এওঁলোকৰ সংগ্ৰহ হয়। জ্ঞান, কৰ্ম আৰু কৰ্তাৰো তিনিটা প্ৰকাৰ আছে-

জ্ঞানং কৰ্ম চ কৰ্তা চ ত্ৰিধৈব গুণভেদতঃ।

প্ৰোচ্যতে গুণসংখ্যানে যথাবচ্ছনুতান্যপি।। ১৯।।

জ্ঞান, কৰ্ম আৰু কৰ্তাৰো গুণৰ ভেদেৰে সংখ্যা শাস্ত্ৰত তিনি প্ৰকাৰৰ

বুলি কোৱা হৈছে, তাকো তুমি যথাযথ ভাৱে শুনা। প্ৰস্তুত আছে প্ৰথমে জ্ঞানৰ ভেদ-

সৰ্বভূতেষু যেনৈক্যং ভাৱমব্যয়মীক্ষতে।

অবিভক্তং বিভক্তেষু তজ্জ্ঞানং বিদ্ধি সাত্ত্বিকম্ ॥ ২০ ॥

হে অৰ্জুন! যি জ্ঞানৰ দ্বাৰা মনুষ্যই বেলেগে-বেলেগে সকলো ভূত-প্ৰাণীত এক অবিনাশী পৰমাত্মা ভাৱকে বিভাগ নোহোৱা একৰস ভাৱে দেখে, সেই জ্ঞানক তুমি সাত্ত্বিক জ্ঞান বুলি জানা।

জ্ঞান হ'ল প্ৰত্যক্ষ অনুভূতি, যাৰ লগত গুণৰো শেষ হৈ যায়। এয়াই হ'ল জ্ঞানৰ পৰিপক্ক অৱস্থা। এতিয়া ৰাজস জ্ঞান চোৱা যাওক-

পৃথক্‌ত্বেন তু যজ্জ্ঞানং নানাভাৱান্‌পৃথগ্বিধান।

বেত্তি সৰ্বেষু ভূতেষু তজ্জ্ঞানং বিদ্ধি ৰাজসম্ ॥ ২১ ॥

যি জ্ঞানে সম্পূৰ্ণ ভূত-প্ৰাণীক ভিন্ন প্ৰকাৰৰ বুলি বেলেগে-বেলেগে ভাৱে যে এইটো ভাল, এইটো বেয়া- এনে জ্ঞানক তুমি ৰাজস জ্ঞান বুলি জানা। এনে স্থিতি তোমাৰ যদি আছে, তেতিয়াহলে তোমাৰ জ্ঞানো ৰাজসী স্তৰতে আছে। এতিয়া চোৱা যাওক তামস জ্ঞান-

যতু কৃৎস্নবদেকস্মিন কাৰ্যে সক্তমহৈতুকম্।

অতত্ৰাৰ্থৰদল্লপঃ তত্‌তামসমুদাহতম্ ॥ ২২ ॥

যি জ্ঞান শৰীৰতেই সম্পূৰ্ণতাৰ আসক্ত, যুক্তিহীন অৰ্থাৎ যাৰ পিছত কোনো ক্ৰিয়া নাই, তত্ৰৰ অৰ্থ স্বৰূপ পৰমাত্মাক জনাৰ পৰা আতঁৰি ৰাখোতা আৰু তুচ্ছ, তেনে জ্ঞানক তামস জ্ঞান বুলি কোৱা হয়। এতিয়া প্ৰস্তুত আছে কৰ্মৰ তিনিটা ভেদ-

নিয়তং সঙ্গৰহিতমৰাগদ্বেষতঃ কৃতম।

অফলপ্ৰেপ্সুনা কৰ্মযৎ‌তৎ‌সাত্ত্বিক মুচ্যতে ॥ ২৩ ॥

যি কৰ্ম 'নিয়তম'-শাস্ত্ৰ-বিধিৰ দ্বাৰা নিৰ্দ্ধাৰিত (অন্য নহয়) সংগদোষ

আৰু ফলক ইচ্ছা নকৰা পুৰুষেৰ দ্বাৰা বাগ-দ্বেষ্ট নকৰাকৈ কৰা হয়, সেই কৰ্মক সাত্ত্বিক কৰ্ম বুলি কোৱা হয় নিয়ত কৰ্ম আৰাধন হ'ল চিন্তন, যি পৰমত প্ৰৱেশ কৰাব পাৰে।

যত্ন কামেপ্সুনা কৰ্ম সাহস্কাৰেণ বা পুনঃ।

ক্ৰিয়তে বহুলায়াসং তদ্রাজসমুদাহতম্ ॥ ২৪ ॥

যি কৰ্ম বহু পৰিশ্ৰমযুক্ত, ফলৰ ইচ্ছা কৰোঁতা আৰু অহংকাৰযুক্ত পুৰুষেৰ দ্বাৰা কৰা হয়, সেই কৰ্মক ৰাজস কৰ্ম বুলি কোৱা হয়। এই পুৰুষে নিয়ত কৰ্মকেই কৰে; কিন্তু প্ৰাৰ্থক্য ইমানেই যে ফলৰ ইচ্ছা আৰু অহংকাৰ যুক্ত হোৱা বাবে তেওঁৰ দ্বাৰা কৰা কৰ্মক ৰাজস কৰ্ম কোৱা হয়। এতিয়া চোৱা যাওক তামস কৰ্ম-

অনুবন্ধং ক্ষয়ং হিংসামনবেক্ষ্য চ পৌৰুষম্।

মোহাদাৰভ্যতে কৰ্ম যতৎ তামসমুচ্যতে ॥ ২৫ ॥

যি কৰ্ম অন্ততঃ নষ্ট হোৱা বিধৰ, হিংসা-সামৰ্থ্য বিচাৰ নকৰাকৈ মাত্ৰ মোহত পৰি আৰম্ভ কৰা হয়। সেই কৰ্মক তামস কৰ্ম বুলি কোৱা হয়। স্পষ্ট যে এই কৰ্ম শাস্ত্ৰ-বিধিৰ নিয়ত কৰ্ম নহয়। তাৰ মাজত ভ্ৰান্ত ধাৰণা আছে। এতিয়া চোৱা হওক কৰ্ত্তাৰ লক্ষণ-

মুক্তসঙ্গেহনহংবাদী ধৃত্যৎ সাহসমগ্নিত্ত্ব।

সিদ্ধ্যসিদ্ধৌনিৰ্বিকাৰঃ কৰ্ত্তা সাত্ত্বিক উচ্যতে ॥ ২৬ ॥

যি কৰ্ত্তাই সংগ-দোষ ৰহিত হৈ, অহংকাৰ বচন নোকোৱাকৈ, ধৈৰ্য আৰু উৎসাহ যুক্ত হৈ কাৰ্য্য সিদ্ধি হোৱা অথবা নোহোৱাত কোনো হৰ্ষ-বিষাদ বিকাৰহীন হৈ কৰ্মত (অহৰ্নিশে) প্ৰবৃত্ত হয়, সেই কৰ্ত্তাক সাত্ত্বিক বুলি কোৱা হয়। এয়াই উত্তম সাধকৰ লক্ষণ। কৰ্ম সেয়াই- নিয়ত কৰ্ম।

বাগী কৰ্মফলপ্ৰেপ্সুৰ্লুকৌ হিংসাত্মকোহশুচিঃ।

হৰ্ষ শোকান্বিতঃ কৰ্ত্তা ৰাজসঃ পৰিকীৰ্তিতঃ ॥ ২৭ ॥

আসক্তিয়ুক্ত, কৰ্মফলৰ ইচ্ছা ৰাখোঁতা, লুভিয়া, আত্মাক কষ্ট দিওঁতা,

পবিত্ৰ নথকা আৰু হৰ্ষ-বিষাদত যি লিপ্ত হৈ আছে, তেনে কৰ্ত্তাক ৰাজস কৰ্ত্তা বুলি কোৱা হয়।

অযুক্তঃ প্ৰাকৃতঃ স্তব্ধঃ শঠো নৈষ্কৃতিকোহলসঃ।
বিষাদী দীৰ্ঘসূত্ৰী চ কৰ্ত্তা তামস উচ্যতে।। ২৮।।

যি চঞ্চল চিত্ত থকা, অসভ্য, জেদি, ধূৰ্ত্ত, অন্যৰ কাৰ্য্যত বাধা দিওঁতা, বিষাদৰ স্বভাৱ থকা, এলেছা আৰু দীৰ্ঘসূত্ৰী যে পাছত কৰিম এনে ভাৱত থকা, সেই কৰ্ত্তাক তামস কৰ্ত্তা বোলা হয়। দীৰ্ঘসূত্ৰীয়ে কালিলৈ কৰিম বুলি সাৰে যদিও কৰাৰ ইচ্ছা তেওঁৰ থাকে। এইদৰে কৰ্ত্তাৰ লক্ষণ পুৰা হ'ল। এতিয়া যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই নতুন প্ৰশ্ন উঠালে যে বুদ্ধি, ধাৰণা আৰু সুখৰ লক্ষণ কি ?

বুদ্ধেৰ্ভেদং ধৃতেশ্চৈব গুণতস্ত্ৰিবিধং শণু।
প্ৰোচ্যমানমশেষেন পৃথক্বেন ধনঞ্জয়।। ২৯।।

ধনঞ্জয়! বুদ্ধি আৰু ধাৰণা শক্তিবো গুণৰ কাৰণ তিনি প্ৰকাৰৰ ভেদ সম্পূৰ্ণ বিভাগেৰে সৈতে মোৰ পৰা শুনা-

প্ৰবৃত্তিং চ নিবৃত্তিং চ কাৰ্য্যাকাৰ্ষ্যে ভয়াভয়ে।
বন্ধং মোক্ষং চ যা বেত্তি বুদ্ধিঃ সা পাৰ্থ সাত্ত্বিকী।। ৩০।।

হে পাৰ্থ! প্ৰবৃত্তি আৰু নিবৃত্তিক, কৰ্ত্তব্য আৰু অকৰ্ত্তব্যক, ভয় আৰু অভয়ক তথা বন্ধন আৰু মোক্ষক যি বুদ্ধিয়ে যথার্থ ভাৱে জানে, সেই বুদ্ধিক সাত্ত্বিক বুলি কোৱা হয়। অর্থাৎ পৰমাত্ম-পথ, আগম-নিগমৰ পথ উত্তম প্ৰকাৰে জনাই হ'ল সাত্ত্বিক বুদ্ধি। যথা-

যয়া ধৰ্মমধৰ্মং চ কৰ্য্যং চাকাৰ্য্যমেব চ।
অযথাবৎপ্ৰজানাতি বুদ্ধিঃ সা পাৰ্থ ৰাজসী।। ৩১।।

পাৰ্থ যি বুদ্ধিৰ দ্বাৰা মনুষ্যই ধৰ্ম আৰু অধৰ্মক তথা কৰ্ত্তব্য আৰু অকৰ্ত্তব্যক যথাযথ ভাৱে নাজানে, আধৰুৱাকৈ জানে, সেই বুদ্ধি ৰাজসী হয়। এতিয়া তামসী বুদ্ধিৰ স্বৰূপ চাওঁ-

অধৰ্মং ধৰ্মমিতি যা মন্যতে তমসাবৃতা।

সৰ্বাৰ্থান্বিপৰীতাংশ্চ বুদ্ধিঃ সা পাৰ্থ তামসী ॥ ৩২ ॥

হে পাৰ্থ! তমোগুণেৰে ঢাক খাই থকা যি বুদ্ধি অধৰ্মক ধৰ্ম বুলি ভাবে তথা সম্পূৰ্ণ হিতক বিপৰীত হে দেখে, তেনে বুদ্ধিক তামসী বুলি কোৱা হয়।

ইয়াত ত্ৰিশ শ্লোকৰ পৰা বত্ৰিশ শ্লোকলৈকে বুদ্ধিৰ তিনিটা ভেদ কোৱা হ'ল। প্ৰথমে যি বুদ্ধিয়ে কি কাৰ্য্যত নিবৃত্তি হ'ব লাগিব, কোনটো কৰ্ত্তব্য আৰু কোনটো অকৰ্ত্তব্য, ইয়াক ভালদৰে জনায়, সেই বুদ্ধি সাত্ত্বিক হয়। যি বুদ্ধিয়ে কৰ্ত্তব্য-অকৰ্ত্তব্যক আধৰুৱাকৈ জানে যথাযথ ভাৱে নাজানে, তেনে বুদ্ধি ৰাজসী আৰু অধৰ্মক ধৰ্ম, নশ্বৰক শাস্ত তথা হিতক অহিত, এনেদৰে বিপৰীত ভাৱে জনা বুদ্ধি হ'ল তামসী। এইদৰে বুদ্ধিৰ ভেদ সমাপ্ত হ'ল। এতিয়া প্ৰস্তুত আছে দ্বিতীয় প্ৰশ্ন 'ধৃতি' ধাৰনা সম্পৰ্কে তিনিটা ভেদ-

ধৃত্যা যয়া ধাৰয়তে মনঃ প্ৰাণেন্দ্ৰিয় ক্ৰিয়াঃ।

যোগেনাব্যভিচাৰণ্যা ধৃতিঃ সা পাৰ্থ সাত্ত্বিকী ॥ ৩৩ ॥

'যোগেন' যৌগিক প্ৰক্ৰিয়াৰ দ্বাৰা 'অব্যভিচাৰিণী' যোগ চিন্তনৰ বাদে অন্য কোনো স্মৃষণ হোৱাই হ'ল ব্যভিচাৰ, চিন্তনৰ ভ্ৰমেই হ'ল ব্যভিচাৰ; সেয়ে এনে অব্যভিচাৰিণী ধাৰণাৰ দ্বাৰা মনুষ্যই মন, প্ৰাণ আৰু ইন্দ্ৰিয়ৰ ক্ৰিয়া সমূহক যি ধাৰণ কৰে, সেইধাৰণা সাত্ত্বিকী। অৰ্থাৎ মন, প্ৰাণ আৰু ইন্দ্ৰিয়ক ইষ্টৰ দিশত ঘূৰাই দিয়াই হ'ল সাত্ত্বিক ধাৰণা। তথা-

যয়া তু ধৰ্মকামাৰ্থান্ ধৃত্যাধাৰয়তেহৰ্জুন।

প্ৰসঙ্গেন ফলাকাঙ্ক্ষী ধৃতিঃ সা পাৰ্থ ৰাজসী ॥ ৩৪ ॥

হে পাৰ্থ! ফলৰ ইচ্ছা কৰোঁতা মনুষ্যই অতি আসক্তিতে যি ধাৰণাৰ দ্বাৰা মাত্ৰ ধৰ্ম, অৰ্থ আৰু কামৰ ধাৰণা কৰে (মোক্ষৰ নহয়) সেই ধাৰণা ৰাজসী হয়। এই ধাৰণাতো লক্ষ্য একেটাই, মাত্ৰ কামনা। যি কৰে, তাৰ সলনি বিচাৰে। এতিয়া তামসী ধাৰনাৰ লক্ষণ চোৱা যাওক-

যয়া স্বপ্নং ভয়ং শোকং বিষাদং মদমেব চ।

ন বিমুঞ্চতি দুৰ্মেধা ধৃতিঃ সা পাৰ্থ তামসী ॥ ৩৫ ॥

হে পাৰ্থ! দুষ্ট বুদ্ধি থকা মনুষ্যই যি ধাৰণাৰ দ্বাৰা নিদ্ৰা, ভয়, চিন্তা,

দুখ আৰু অভিমানকো (নেৰে, এই সকলোকে) ধাৰণ কৰি থাকে, সেই ধাৰণা তামসী হয়। এই প্ৰশ্ন পম্পূৰ্ণ হ'ল। অন্য প্ৰশ্ন হ'ল, সুখ-

সুখং ত্বিদানীং ত্ৰিবিধং শৃণু মে ভৰতৰ্ষভ।

অভ্যাসাদ্ৰমতে যত্র দুঃখান্তং চ নিগচ্ছতি।। ৩৬।।

অৰ্জুন! এতিয়া সুখৰো তিনি প্ৰকাৰ মোৰ পৰা শুনা, তাৰ ভিতৰৰ যি সুখত সাধকে অভ্যাসৰ দ্বাৰা ৰমণ কৰি থাকে অৰ্থাৎ চিন্তক নিৰোধ কৰি ইষ্টত ৰমণ কৰি থাকে আৰু যি দুখৰো অন্ত কৰিব পৰা হয়। তথা-

যৎতদগ্ৰে বিষমিব পৰিণামেহমৃতোপমম্।

তৎসুখং সাত্ত্বিকং প্ৰোক্তমাত্ম বুদ্ধিপ্ৰসাদজম্।। ৩৭।।

উপৰোক্ত সুখ সাধনাৰ আৰম্ভনীত যদিওবিহ সদৃশ অনুভৱ হয় (প্ৰ!াদক ফাঁচিত ওলমোৱা হৈছিল, মীৰাক বিষ পান কৰোৱা হৈছিল। কবীৰে কয়- 'সুখিয়া সব সংসাৰ হ্যায়, খায়ে অওৰ সোয়ে। দুখিয়া দাস কবীৰ হ্যায়, জাগে অউৰ ৰোৱে' সেয়ে আৰম্ভনীত বিষৰ দৰে হয়) কিন্তু পৰিণামত অমৃততুল্য হয়, অমৃত তত্বক দিব পৰা হয়। সেয়ে আত্ম-বিষয়ক বুদ্ধিৰ প্ৰসাদত উৎপন্ন হোৱা সুখ সাত্ত্বিক সুখ বুলি কোৱা হৈছে। তথা-

বিষয়েन्द्रিয়সংযোগাদযৎতদগ্ৰেহমৃতোপমম্।

পৰিণামে বিষমিব তৎসুখং ৰাজসং স্মৃতম্।। ৩৮।।

যি সুখ বিষয় আৰু ইन्द्रিয় সমূহৰ সংযোগত হয়, সেই সুখ যদিও ভোগৰ সময়ত অমৃতৰ দৰে লাগে, কিন্তু পৰিণামত বিষৰ সদৃশ হয়; কিয়নো জন্ম-মৃত্যুৰ কাৰণ হয়, তেনে সুখক ৰাজস সুখ বুলি কোৱা হৈছে। তথা-

যদগ্ৰে চানুবন্ধে চ সুখং মোহনমাত্মনঃ।

নিদ্ৰালস্য প্ৰমাদোখং তন্ত্ৰামসমুদাহতম্।। ৩৯।।

যি সুখ ভোগৰ সময়ত আৰু পৰিণামতো আত্মক মোহত পেলায়, নিদ্ৰা 'যা নিশা সৰ্বভূতানাং'জগতৰ নিচাত অচেতন হৈ থাকে, আলস্য আৰু বৃথা চেষ্টাৰ দ্বাৰা উৎপন্ন হোৱা সুখক তামস সুখ বোলা হৈছে। এতিয়া যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই গুণৰ সীমা বিষয়ে কয়, যি সকলোৰে পিছত লাগি আছে-

ন তদস্তি পৃথিব্যাং বা দিবি দেবেষু বা পুনঃ।

সত্বং প্রকৃতিজৈর্মুক্তং যদেভিঃ স্যাৎ ত্ৰিভিগুণৈঃ ॥ ৪০ ॥

হে অৰ্জুন! পৃথিবীত, স্বৰ্গত অথবা দেৱতা সকলৰ ভিতৰতো এনে প্ৰাণী নাই, যি প্ৰকৃতিৰ দ্বাৰা উৎপন্ন হোৱা তিনিটা গুণৰ পৰা বাদ পৰি আছে। অৰ্থাৎ ব্ৰহ্মাৰ পৰা ধৰি কীট-পতঙ্গলৈকে জগত ক্ষণ ভঙ্গুৰ হয়, মৰা জীৱ হয়, এই তিনিও গুণৰ অন্তৰ্গত সকলো হয়, অৰ্থাৎ দেৱতা সকলো এই তিনি গুণৰ বিকাৰ হয়, নশ্বৰ হয়।

ইয়াত বাহ্যিক দেৱতাৰ নাম যোগেশ্বৰে চতুৰ্থ বাৰৰ বাবে লৈছে। সাত আধ্যাত ন আৰু সোতৰ আৰু এই ওঠৰ আধ্যাত লৈছে। এইসকলোৰে এটাই অৰ্থ যে দেৱতা এই তিনি গুণৰে অন্তৰ্গত। যি জনে এওঁলোকক পূজা কৰে, নশ্বৰৰে পূজা কৰে।

ভাগৱতৰ দ্বিতীয় স্কন্ধত মহৰ্ষি শুক আৰু পৰীক্ষিতৰ প্ৰসিদ্ধ আখ্যান আছে, যত উপদেশ দি তেওঁ কৈছে যে স্ত্ৰী-পুৰুষৰ প্ৰেমৰ বাবে শংকৰ-পাৰ্বতীক, আৰোগ্যৰ বাবে অশ্বিনী কুমাৰক, বিজয়ৰ বাবে ইন্দ্ৰক আৰু ধনৰ বাবে কুব্ৰৰ পূজা কৰে। এইদৰে বিভিন্ন কামনাৰ বিষয়ে কৈ শেষত এইটো নিৰ্ণয় দিলে যে সম্পূৰ্ণ কামনাৰ পূৰ্ত্তী আৰু মোক্ষৰ বাবেতো একমাত্ৰ নাৰায়নৰ পূজা কৰা উচিত। ‘তুলসী মূলহিঁ সীঁচিয়ে, ফুলই ফলই অঘাই’ সেয়ে সৰ্বব্যাপী প্ৰভুৰ স্মৰণ কৰক, যাৰ পূৰনৰ বাবে সদৃগুৰুৰ শৰণ, নিষ্কপট ভাৱেৰে প্ৰশ্ন কৰা আৰু সেৱা কৰা একমাত্ৰ উপায় আছে। আসুৰী আৰু দৈৱ সম্পদ অন্তঃকৰনৰ দুটা বৃত্তি, য’ত দৈৱ সম্পদ পৰমদেৱ পৰমাত্মাৰ দিক্‌দৰ্শন কৰায়, সেই কাৰণে দৈৱ সম্পদ কোৱা হয়, কিন্তু এইটোও তিনি গুণৰ ভিতৰতে থাকে। গুণ শান্ত হোৱাৰ পিছত এইবোৰো শান্ত হৈ যায়। তাৰ পিছত সেই আত্মতৃপ্ত যোগীৰ বাবে কোনো কৰ্তব্য বাকী নাথাকে।

এতিয়া প্ৰস্তুত আছে আগৰ পৰাই আৰম্ভ হোৱা প্ৰশ্ন বৰ্ন-ব্যৱস্থা। বৰ্ণ জন্ম প্ৰধাননে বা কৰ্মৰ পৰা পাব পৰা অন্তঃকৰণৰ যোগ্যতাৰ নাম? এই বিষয়ে চোৱা যাওক-

ব্ৰাহ্মণক্ষত্ৰিয়বিশাং শূদ্ৰাণাং চ পৰন্তপ।

কৰ্মাণি প্ৰবিভক্তানি স্বভাৱপ্ৰভৱৈশুণৈঃ ॥ ৪১ ॥

হে পৰম্পৰা! ব্ৰাহ্মণ, ক্ষত্ৰিয়, বৈশ্য আৰু শুদ্ৰৰ কৰ্ম স্বভাৱৰ দ্বাৰা উৎপন্ন গুণৰ দ্বাৰা বিভক্ত কৰা হৈছে। স্বভাৱত সাত্ত্বিক গুণ থাকিলে আপুনি নিৰ্মল হ'ব, ধ্যান-সমাধিৰ ক্ষমতা থাকিব। তামস গুণ হলে আলস্য, নিদ্ৰা, প্ৰমাদ থাকিব; তেনে শুদ্ৰৰ কৰ্ম আপোনাৰ পৰা হ'ব। যি গুণ কাৰ্য্যৰত হৈ আছে, সেয়েই আপোনাৰ বৰ্ণ, স্বৰূপ। এইদৰে অৰ্দ্ধ সাত্ত্বিক আৰু অৰ্দ্ধ ৰাজসত এক বৰ্গ ক্ষত্ৰিয়ৰ হয় আৰু আধাতকৈ কম তামস তথা বিশেষ ৰাজসৰ দ্বাৰা দ্বিতীয় বৰ্গ বৈশ্যৰ হয়।

এই প্ৰশ্নক যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই ইয়াত চতুৰ্থ বাৰৰ বাবে উত্থাপন কৰিছে। দুই আধ্যাত এই চাৰি বৰ্ণৰ ভিতৰত এটা ক্ষত্ৰিয়ৰ নাম লৈছে যে ক্ষত্ৰিয়ৰ বাবে যুদ্ধতকৈ শ্ৰেয়তৰ কোনো পথ নাই। তৃতীয় আধ্যাত তেখেতে কৈছিল যে দুৰ্বল গুণ থকা জনেও তেওঁৰ স্বভাৱৰ দ্বাৰা উৎপন্ন হোৱা যোগ্যতা অনুসৰি ধৰ্মত প্ৰবৃত্তি হয়, আৰু তাত যদি মৃত্যুও হয়, সেয়া পৰম কল্যাণকাৰক, অন্যৰ নকল কৰাটো কিন্তু ভয়াবহ। চতুৰ্থ আধ্যাত কৈছিল যে চাৰি বৰ্ণৰ সৃষ্টি ময়ে কৰিছো। তেতিয়াহলে মানুহক চাৰিটা শ্ৰেণীত ভাগ কৰিলেনে? কয়-নহয়, - গুণৰ যোগ্যতাৰ দ্বাৰা কৰ্মক চাৰিটা শ্ৰেণীত ভগোৱা হৈছে। ইয়াত গুণ এটা মাত্ৰ, তাৰ দ্বাৰা নিৰ্দ্ধাৰণ কৰি কৰ্ম কৰাৰ ক্ষমতাক চাৰিটা ভাগত ভগোৱা হৈছে। শ্ৰীকৃষ্ণৰ শব্দ অনুসৰি কৰ্ম একমাত্ৰ অব্যক্ত পুৰুষৰ প্ৰাপ্তিৰ ক্ৰিয়া হে। ঈশ্বৰ প্ৰাপ্তিৰ আচৰণ হ'ল- আৰাধনা, যাৰ আৰম্ভণী মাত্ৰ এক ইষ্টৰ শব্দৰ দ্বাৰাহে হয়। চিন্তনৰ বিধি বিশেষ আছে, যাক আগতে কৈ অহা হৈছে, এই যজ্ঞাৰ্থ কৰ্মক চাৰিটা ভাগত ভগোৱা হৈছে। এতিয়া কেনেদৰে বুজিব পৰা যায় যে মোৰ কি গুণ আছে আৰু কোন শ্ৰেণীৰ হয়? এই বিষয়ে কয়-

শমো দমস্তপঃ শৌচং ক্ষান্তিৰ্ভাৰ্জবমেৰ চ।

জ্ঞানং বিজ্ঞানমাস্তিক্যং ব্ৰহ্মকৰ্ম স্বভাবজম্ ॥ ৪২ ॥

মনৰ শমন, ইন্দ্ৰিয় সমূহৰ দমন, পূৰ্ণ প্ৰৱিত্ৰতা, মন-বাণী আৰু শৰীৰক ইষ্টৰ অনুৰূপে তপোৱা, ক্ষমাভাৱ, মন, ইন্দ্ৰিয় সমূহ আৰু শৰীৰৰ সম্পূৰ্ণ সৰল ভাৱ, আস্তিক বুদ্ধি অৰ্থাৎ এক ইষ্টত প্ৰকৃত আস্থা, জ্ঞান অৰ্থাৎ পৰমাত্মাৰ

উপলব্ধি কৰিব পৰা, বিজ্ঞান অৰ্থাৎ পৰমাত্মাৰ দ্বাৰা পাব পৰা নিৰ্দেশৰ জাগৃত হোৱা, তাৰ অনুসৰি চলিব পৰা ক্ষমতা প্ৰাপ্ত, এই সকলো স্বভাৱেৰে উৎপন্ন ব্ৰাহ্মণৰ কৰ্ম; অৰ্থাৎ যেতিয়া স্বভাৱত এই যোগ্যতা সমূহ পোৱা হয়, কৰ্ম ধাৰাবাহিক হৈ স্বভাৱত পৰিণত হয়, তেতিয়া তেওঁ ব্ৰাহ্মণ শ্ৰেণীৰ কৰ্ত্তা হয়।
তথা-

শৌৰ্যং তেজো ধৃতিৰ্দাক্ষ্যং যুদ্ধে চাপ্যপলায়নম্।

দানমীশ্বৰভাবশ্চ ক্ষাত্ৰং কৰ্ম স্বভাৱজম্ ॥ ৪৩ ॥

বীৰত্বভাৱ, ঈশ্বৰীয় তেজ প্ৰাপ্ত, ধৈৰ্য্য, চিন্তনত দক্ষতা, অৰ্থাৎ ‘কৰ্মসু কৌশলম্’ কৰ্ম কৰাৰ দক্ষতা, প্ৰকৃতিৰ লগত সংঘৰ্ষ কৰি নপলোৱা স্বভাৱ, দান অৰ্থাৎসৰ্বস্বৰ সমৰ্পণ, সকলো ভাৱত স্বামীভাৱ অৰ্থাৎ ঈশ্বৰ ভাৱ, এই সকলো ক্ষত্ৰিয়ৰ ‘স্বভাৱজম্’ স্বভাৱৰ দ্বাৰা উৎপন্ন হোৱা কৰ্ম। স্বভাৱত এই যোগ্যতা থাকিলে, সেই কৰ্ত্তা ক্ষত্ৰিয় হয়। এতিয়া প্ৰস্তুত আছে বৈশ্য তথা শুদ্ৰৰ স্বৰূপ-

কৃষিগৌৰক্ষ্যবাণিজ্যংবৈশ্যকৰ্মস্বভাৱজম্।

পৰিচযাত্মকং কৰ্ম শূদ্ৰস্যাপি স্বভাৱজম্ ॥ ৪৪ ॥

কৃষি, গোৰক্ষা আৰু ব্যৱসায় বৈশ্যৰ স্বাভাৱিক কৰ্ম। গো-পালনেই কিয়? ম’হ মাৰিবনে? ছাগলী নাৰাখিবনে? এনে একো নহয়। সূদ্ৰৰ বৈদিক কালত ‘গো’ শব্দ অন্তঃকৰণ আৰু ইন্দ্ৰিয়ৰ বাবে প্ৰচলিত আছিল। গো-ৰক্ষাৰ অৰ্থ হ’ল ইন্দ্ৰিয়ৰ ৰক্ষা। বিবেক, বৈৰাগ্য, শম, দমৰ দ্বাৰা ইন্দ্ৰিয়সমূহ সুৰক্ষিত হয় আৰু কাম, ক্ৰোধ, লোভ, মোহৰ দ্বাৰা এইবোৰ বিভক্ত হৈ যায়, ক্ষীণ হৈ যায়। আত্মিক সম্পদহে স্থিৰ সম্পদ। এইটো নিজা ধন, যি এবাৰ পালে সদায় লগতে থাকে। প্ৰকৃতিৰ দম্ভৰ মাজৰ পৰা লাহে লাহে সংগ্ৰহ কৰাই হ’ল ব্যৱসায়‘বিদ্যা ধনম্ সৰ্বধন প্ৰধানম্’ ইয়াক আৰ্জন কৰাই হ’ল বাণিজ্য। খেতি? শৰীৰেই এটা ক্ষেত্ৰ। ইয়াৰ অন্তঃৰালত সীচাঁ বীজ সংস্কাৰ-ৰূপত ভাল-বেয়া হৈ ওলায়, অৰ্জুন! এই নিষ্কাম কৰ্ম বীজ অৰ্থাৎ আৰম্ভণীৰ নাশ নহয়। (তাৰ ভিতৰত কৰ্মৰ ই তৃতীয় শ্ৰেণীৰ কৰ্ম অৰ্থাৎ ইষ্ট চিন্তনৰ নিয়ত কৰ্ম) পৰমতত্ত্বৰ চিন্তনৰ যি বীজ এই ক্ষেত্ৰত পৰে, তাক সুৰক্ষিত ৰাখি তাত আহিব পৰা বিজাতীয় বিকাৰৰ নিৰাকৰণ কৰি যোৱাই হ’ল খেতি।

কৃষি নিৰাবহিঁ চতুৰ কিসানা।

জিমি বুধ তজহিঁ মোহ মদ মানা।।(মানস, ৪/১৪/৮)।।

এইদৰে ইন্দ্ৰিয় সমূহৰ সুৰক্ষা ৰখা তথা প্ৰকৃতিৰ দন্দ্বৰ পৰা আত্মিক সম্পত্তিৰ সংগ্ৰহণ কৰা আৰু এই ক্ষেত্ৰত পৰমতত্বৰ চিন্তনৰ সম্বৰ্দ্ধন- এয়া হ'ল বৈশ্য শ্ৰেণীৰ কৰ্ম। শ্ৰীকৃষ্ণৰ অনুসৰি ' যজ্ঞশিষ্টাশিনিঃ' পূৰ্ণ কালত যজ্ঞই যি দিয়ে, সেয়া হ'ল- পৰাৎপৰ ব্ৰহ্ম। তাক পান কৰা সন্তুজন সম্পূৰ্ণ পাপৰ পৰা মুক্ত হয় আৰু তাৰে লাহে লাহে চিন্তন ক্ৰিয়াৰ দ্বাৰা বীজাৰোপন হয়। তাৰ সুৰক্ষা হ'ল খেতি। বৈদিক শাস্ত্ৰত অন্নৰ অৰ্থ হ'ল পৰমাত্মা। সেই পৰমাত্মাই হ'ল একমাত্ৰ অশন, অন্ন। চিন্তনৰ পূৰ্ণ কালত এই আত্মা পূৰ্ণতঃ তৃপ্ত হৈ যায়, পূনৰ কেতিয়াও অতৃপ্ত নাথাকে, অহা-যোৱা নাথাকে। এই অন্নৰ বীজক সুৰক্ষা দি আগ বঢ়াই হ'ল কৃষি। নিজতকৈ উন্নত অৱস্থা থকা, প্ৰাপ্তীৱান গুৰুজনৰ সেৱা কৰা শুদ্ৰৰ স্বভাৱজাত কৰ্ম। শুদ্ৰৰ অৰ্থ নীচ নহয়, আনকি অল্পজ্ঞ। নিম্ন শ্ৰেণীৰ সাধকেই শুদ্ৰ। প্ৰবেশিকা শ্ৰেণীৰ সেই সাধকে পৰিচয়্যাৰ পৰা আৰম্ভ কৰা উচিত। লাহে-লাহে সেৱাৰ দ্বাৰা তাৰ হৃদয়ত সেই সংস্কাৰ সমূহৰ সৃজন হব আৰু ক্ৰমশঃ গৈ সি বৈশ্য, ক্ষত্ৰিয় আৰু ব্ৰহ্মত প্ৰৱেশ কৰিব। স্বভাৱ পৰিবৰ্ত্তন হয়। বস্তুতঃ এই বৰ্ণ অতি উত্তম, উত্তম, মধ্যম আৰু নিকৃষ্ট এই চাৰিটা অৱস্থা হয়, কৰ্ম পথত গৈ থকা সাধকৰ তল-ওপৰ এই চাৰিটা খটখটি হয়; কিয়নো কৰ্ম একেই নিয়ত কৰ্ম। শ্ৰীকৃষ্ণই কয় যে স্বভাৱত যেনে যোগ্যতা, তাৰ পৰাই আৰম্ভ। এইটো চাওক-

স্বৈ স্বৈ কৰ্মণ্যভিৰতঃ সংসিদ্ধিং লভতে নৰঃ।

স্বকৰ্মনিৰতঃ সিদ্ধিং যথা বিন্দতি তচ্ছণু।। ৪৫।।

নিজৰ নিজৰ স্বভাৱত পোৱা যোগ্যতাৰ অনুসৰি কৰ্মত লগা মনুষ্যই -ভগৱৎপ্ৰাপ্তীৰূপী পৰমসিদ্ধি প্ৰাপ্ত কৰে। আগতে কৈছিলে- এই কৰ্ম কৰিয়েই তুমি পৰম সিদ্ধি প্ৰাপ্ত কৰিবা। কোন কৰ্ম কৰি? অৰ্জুন। তুমি শাস্ত্ৰ-বিধিৰ দ্বাৰা নিৰ্দ্ধাৰিত কৰ্ম, যজ্ঞাৰ্থ কৰ্মকে কৰ। এতিয়া স্ব-কৰ্ম কৰাৰ ক্ষমতা অনুসৰি কৰ্মত লগা মনুষ্যই পৰমসিদ্ধি কেনেদৰে প্ৰাপ্ত কৰে, সেই বিধি তুমি মোৰ পৰা শুনা। ধ্যান দিয়া-

যতঃ প্ৰবৃত্তিভূতানাং যেন সৰ্বমিদং ততম্।

স্বকৰ্মণা তমভ্যৰ্চ্য সিদ্ধিং বিন্দ্ৰতি মানবঃ।। ৪৬।।

যি পৰমাত্মাৰ দ্বাৰা সকলো ভূত-সমূহ হ'ল, যাৰ দ্বাৰা এই সম্পূৰ্ণ জগত ব্যাপ্ত হৈ আছে, সেই পৰমেশ্বৰক নিজৰ স্বভাৱৰ দ্বাৰা উৎপন্ন হোৱা কৰ্মৰ দ্বাৰা অৰ্চনা কৰি মানৱে পৰমসিদ্ধি প্ৰাপ্ত কৰে। সেয়ে পৰমাত্মাৰ ভাৱনা আৰু পৰমাত্মাৰে সৰ্বাঙ্গীণ অৰ্চনা আৰু ক্ৰমশঃ তেওৰ বিধিত চলাই আৱশ্যক। যেনেদৰে কোনো উচ্চ শ্ৰেণীত বহিলে তলৰো হেৰাই থাকিব, উচ্চতো নাপাবই। সেয়ে এই কৰ্ম পথত ক্ৰমবদ্ধ ভাৱে চলাবহে বিধান আছে। যেনে ১৮/৬ ত এই বিষয়ে কোৱা হৈছে। এই বিষয়ত পুণঃ জোৰ দি কৈছে যে আপুনি লাগিলে অল্লঙ্গই হৈ থাকক তাৰ পৰাই আৰম্ভ কৰক। সেই বিধি হ'ল- পৰমাত্মাৰ প্ৰতি সমপণ।

শ্ৰেয়ান্‌স্বধৰ্মো বিগুণঃপৰধৰ্মাৎস্বনুষ্ঠিতাৎ।

স্বভাবনিয়তং কৰ্ম কুৰ্বন্নাপ্নোতি কিল্বিষম্।। ৪৭।।

ভালদৰে অনুষ্ঠান কৰা আনৰ ধৰ্মতকৈ গুণহীন নিজৰ ধৰ্মই কল্যাণকাৰী হয়। 'স্বভাব নিয়তং' স্বভাৱৰ দ্বাৰা নিৰ্দ্ধাৰিত কৰা কৰ্ম কৰি মনুষ্যই পাপ অথবা অহা-যোৱাত প্ৰাপ্ত নহয়। প্ৰায় সাধকৰ ভাৱ হয় যে মই সেৱাই কৰি থাকিম। তেওঁ ধ্যানতে থাকে। ভাল গুণৰ কাৰণে তেওঁৰ সন্মান বাঢ়ে। কিন্তু হঠাৎ তেওঁ নকল কৰিবলৈ আৰম্ভ কৰে। শ্ৰীকৃষ্ণৰ অনুসৰি নকল বা ইৰ্ষাৰ দ্বাৰা একো পোৱা নাযায়। নিজৰ স্বভাৱৰ দ্বাৰা কৰ্ম কৰাৰ ক্ষমতা অনুসৰি কৰ্ম কৰিয়েই পৰমসিদ্ধি পাব পাৰে। এৰি নহয়।

সহজং কৰ্ম কৌন্তেয় সদৌষমপি ন ত্যজেৎ।

সৰ্বাৰম্ভা হি দৌষেণ ধূমেনাগ্নিৰ্বিবাবৃতাঃ।। ৪৮।।

হে কৌন্তেয়! দৌষযুক্ত (অল্লঙ্গ অৱস্থা থকা জনৰতো দৌষৰ বাহুল্যতা থাকে, এনে দৌষযুক্ত থাকিও) স্বভাৱৰ দ্বাৰা উৎপন্ন সহজ কৰ্মক ত্যাগ কৰা উচিত নহয়, কিয়নো ধোৱাৰ মাজত অগ্নি থকাৰ দৰে সকলো কৰ্মত কিবা এটা দৌষ থাকেই। ব্ৰাহ্মণ শ্ৰেণীৰ হ'লেও কৰ্মতো কৰিব লাগিবই।

স্থিতি প্ৰাপ্ত নোহোৱালৈকে দোষ থাকিবই, প্ৰকৃতিৰ আৱৰণ থাকিবই। দোষৰ অন্ত তাতেই হয়, যত ব্ৰাহ্মণ শ্ৰেণীৰ কৰ্মও ব্ৰহ্মত প্ৰৱেশ কৰাৰ লগেলগে বিলয় হৈ যায়। সেই প্ৰাপ্তীৱানৰ লক্ষণ কি, য'ত কৰ্মৰো প্ৰয়োজন নাথাকে-

অসক্তবুদ্ধিঃ সৰ্বত্র জিতাত্মা বিগতস্পৃহঃ।

নৈষ্কৰ্ম্য সিদ্ধিংপৰমাং সন্ন্যাসেনাধিগচ্ছতি ॥ ৪৯ ॥

সৰ্বত্র আসক্তিহীন বুদ্ধি থকা, সম্পূৰ্ণ স্পৃহাহীন, অন্তঃকৰণক বিজয়প্ৰাপ্ত কৰা পুৰুষ 'সন্ন্যাসিনাম্' সৰ্বস্বৰ ন্যাসৰ অৱস্থাত পৰম নৈষ্কৰ্ম্য সিদ্ধি প্ৰাপ্ত কৰে। ইয়াত সন্ন্যাস আৰু পৰম নৈষ্কৰ্ম্য সিদ্ধি পৰ্য্যায় হয়। ইয়াত সাংখ্য যোগী তাতে পায় য'ত নিষ্কাম কৰ্মযোগী পায়। এই উপলব্ধি দুই মাৰ্গীৰ বাবে সমান হয়। এতিয়া পৰম নৈষ্কৰ্ম্য সিদ্ধি প্ৰাপ্ত কৰা পুৰুষে যেনেদৰে ব্ৰহ্ম প্ৰাপ্ত কৰে, তাৰ সংক্ষেপে চিত্ৰণ হ'ল-

সিদ্ধিং প্ৰাপ্তো যথা ব্ৰহ্ম তথাপ্নোতি নিবোধ মে।

সমাসেনৈব কৌন্তেয় নিষ্ঠা জ্ঞানস্য যা পৰা ॥ ৫০ ॥

হে কৌন্তেয়! যি জ্ঞানৰ পৰানিষ্ঠা, পৰাকাষ্ঠা, সেই পৰমসিদ্ধি প্ৰাপ্ত কৰা পুৰুষ ব্ৰহ্মক যি দৰে প্ৰাপ্ত হয়, সেই বিধি তুমি মোৰ পৰা সংক্ষেপতে জানি লোৱা। আগৰ আধ্যাত সেই বিধি সম্পৰ্কে কৈছে, ধ্যান দিয়ক -

বুদ্ধ্যা বিশুদ্ধ্যা যুক্তো ধৃতাত্মানং নিয়ম্য চ।

শব্দাদীন্ বিষয়াং তস্যক্তো বাগদেবৌ ব্যুদস্য চ ॥ ৫১ ॥

বিবিক্তসেবী লঘ্বাসী যতবাক্কায় মানসঃ।

ধ্যানযোগপৰো নিত্যং বৈবাগ্যং সমুপাশ্ৰিতঃ ॥ ৫২ ॥

অৰ্জুন! বিশেষ ৰূপেৰে শুদ্ধ বুদ্ধিৰে যুক্ত একান্ত তথা শুভস্থানত বাস কৰোঁতা, সাধনাত যিমান সহায়ক হয় সিমানেই আহাৰ গ্ৰহণ কৰোঁতা, মন-বাণী আৰু শৰীৰক জিকোঁতা, দৃঢ় বৈবাগ্যক ভাল দৰে প্ৰাপ্ত কৰা পুৰুষ নিৰন্তৰ ধ্যান-যোগত পৰায়ণ আৰু এনে ধাৰণাৰে যুক্ত অৰ্থাৎ এই সকলোকে ধাৰণ কৰোঁতা তথা অন্তঃকৰণক বশ কৰি শব্দ আদি বিষয়ক ত্যাগ কৰা, বাগ-দেহক নষ্ট কৰি, তথা

অহংকাৰং বলং দৰ্পং কামং ক্ৰোধং পৰিগ্ৰহম্।

বিমুচ্য নিৰ্মমঃ শান্তো ব্ৰহ্মভূয়ায় কল্পতে ॥ ৫৩ ॥

অহংকাৰ, বল, জেদভাৱ, কাম, ক্ৰোধ, বাহ্যিক বস্তুৰ ত্যাগ আৰু আন্তৰিক চিন্তনৰে ত্যাগ কৰি, মমতা ৰাহিত হৈ, শান্ত অন্তঃকৰণ হোৱা পুৰুষ পৰব্ৰহ্মৰ লগত একীভাৱ হোৱাৰ বাবে যোগ্য হয়। আগলৈ চাওক -

ব্ৰহ্মভূতঃ প্ৰসন্নাত্মা ন শোচতি ন কাঙ্ক্ষতি।

সমঃ সৰ্বেষু ভূতেষু মদভক্তিং লভতে পৰাম্ ॥ ৫৪ ॥

ব্ৰহ্মৰ লগত একীভাৱ হোৱাৰ যোগ্যতা থাকোঁতা সেই প্ৰসন্নচিত্ত পুৰুষে নতো কোনো বস্তুৰ প্ৰতি শোক কৰে আৰু ন কোনো বস্তুৰ প্ৰতি আকাংক্ষাই ৰাখে। সকলো ভূতৰ প্ৰতি সমভাৱ থকা তেওঁ ভক্তিৰ পৰাকাৰ্ণাৰ্থে থাকে। ভক্তি নিজৰ পৰিণাম দিয়াৰ স্থিতিতে থাকে, যত ব্ৰহ্মত প্ৰবেশ প্ৰাপ্ত হয়। এতিয়া -

ভক্ত্যা মামভিজীনাতি যাবান্ যশ্চাম্মি তত্ত্বতঃ।

ততো মাং তত্ত্বতো জ্ঞাত্বা বিশতে তদনন্তৰম্ ॥ ৫৫ ॥

সেই পৰাভক্তিৰ দ্বাৰা মোক তত্বেৰে ভাল-দৰে জানে। সেই তত্ত্ব কি? মই যি আৰু যি প্ৰভাৱ থকা, অজৰ-অমৰ শাস্ত্ৰত যি অলৌকিক গুণ-ধৰ্ম মোৰ আছে, তাক জানে আৰু মোক তত্বেৰে জানি তৎকালেই তেওঁ মোতেই প্ৰবেশ কৰে। প্ৰাপ্তীকালততো ভগৱানক দেখে আৰু প্ৰাপ্তীৰ ঠিক পাছতেই তৎক্ষণাৎ যুক্ত দেখিবলৈ পায় যে আত্মাই অজৰ, অমৰ, শাস্ত্ৰত, অব্যক্ত আৰু সনাতন।

দ্বিতীয় আধ্যায়ত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছিল - আত্মাই সত্য, সনাতন, অব্যক্ত আৰু অমৃত-স্বৰূপ; কিন্তু এই বিভূতি যুক্ত আত্মাক মাত্ৰ তত্ত্বদৰ্শী সকলেহে দেখে। এতিয়া ইয়াত প্ৰশ্ন এটা স্বাভাৱিক হৈ পৰে যে সেই তত্ত্বদৰ্শিতা কি? বহুতো লোকে পাৰ্চতত্ত্ব, পচিশ তত্ত্বৰ বৌদ্ধিক গণনা কৰে; কিন্তু এই ক্ষেত্ৰত শ্ৰীকৃষ্ণই ওঠৰ আধ্যায়ত নিৰ্ণয় দিছে যে পৰমতত্ত্ব হ'ল পৰমাত্মা। যি তেওঁক জানে, তেৱেই তত্ত্বদৰ্শী। এতিয়া আপোনাৰ তত্ত্ব যদি

ইচ্ছা আছে, পৰমাত্মা তত্বৰ যদি ইচ্ছা আছে, তেতিয়াহলে ভজন-চিন্তনৰ আৱশ্যক আছে।

ইয়াত উনপঞ্চাশ শ্লোকৰ পৰা পছপন্ন শ্লোকলৈকে যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই স্পষ্ট কৰিছে যে সন্যাস মাৰ্গতো কৰ্ম কৰিব লাগিব। তেওঁ ক'লে ' সন্যাসেন' - সন্যাসৰ দ্বাৰা (অৰ্থাৎ জ্ঞান-যোগৰ দ্বাৰা) কৰ্ম কৰাৰ ইচ্ছাৰহিত হৈ যায়, আসক্তি ৰহিত হৈ যায় তথা অন্তঃকৰণক যি জিকিছে তেনে পুৰুষে যি দৰে নৈষ্কৰ্মৰ পৰমসিদ্ধি প্ৰাপ্ত কৰে, তাকে সংক্ষেপতে কৈছে। অহংকাৰ, বল, দৰ্প, কাম-ক্ৰোধ, মদ-মোহ ইত্যাদি প্ৰকৃতিত আওঁৰাব পৰা বিকাৰ যেতিয়া শাস্ত হৈ যায়, আৰু বিবেক-বৈৰাগ্য, শম-দম, একান্ত সেৱন, ধ্যান ইত্যাদি ব্ৰহ্মত প্ৰৱেশ কৰাৰ পৰা যোগ্যতা যেতিয়া পূৰ্ণ পৰিপক্ব হয়, সেই সময়ত তেওঁ ব্ৰহ্মক জনাৰ যোগ্য হৈ পৰে। সেই যোগ্যতাৰ নামেই পৰাভক্তি, এই যোগ্যতাৰ দ্বাৰাই তত্বক জানিব পাৰি। তত্ব কি? মোকে জনা। ভগৱান যি, যি বিভূতিৰে যুক্ত তাক জনা আৰু মোক জানি তৎক্ষণাৎ মোতেই স্থিত হৈ যোৱা। অৰ্থাৎ ব্ৰহ্মতত্ব, ঈশ্বৰ, পৰমাত্মা আৰু আত্মা এক-ইটোৰ সম পৰ্যায়। এটাক জনাৰ লগে লগে এই সকলোকে জনা হয়। এয়াই পৰমসিদ্ধি, পৰমগতি আৰু পৰমধামো।

সেয়ে গীতাৰ নিশ্চয় আছে যে - সন্যাস আৰু নিষ্কাম কৰ্মযোগ দুইটা পৰিস্থিতিতেই পৰম নৈষ্কৰ্ম সিদ্ধি পাবৰ বাবে নিৰ্দিষ্ট কৰ্ম (চিন্তন)ৰ অনিবাৰ্য্য আছে।

এতিয়ালৈকেতো সন্যাসীৰ বাবে ভজন-চিন্তনৰ ওপৰত জোৰ দিলে আৰু এতিয়া সমৰ্পণৰ বিষয়ে সেই একে বাৰ্তাকেই নিষ্কাম কৰ্মযোগীৰ বাবেও কৈছে

সৰ্বকৰ্মান্যপি সদা কুৰ্বাণো মদ্বপাশ্ৰয়ঃ।

মত্ৰপ্ৰসাদাদ্ বাপ্নোতি শাস্বতং পদমব্যয়ম্।। ৫৬।।

মোৰ ওপৰত বিশেষ ৰূপে আশ্ৰিত পুৰুষ সম্পূৰ্ণ কৰ্ম সদায়েই কৰি, অকনো ক্ৰটি নৰখাকে মোৰ কৃপা প্ৰসাদত শাস্বত, অবিনাশী পৰম পদ প্ৰাপ্ত কৰে। কৰ্ম সেয়াই - নিয়ত কৰ্ম, যজ্ঞৰ প্ৰক্ৰিয়া। পূৰ্ণ যোগেশ্বৰ সৎগুৰুৰ আশ্ৰিত

সাধকে তেওঁৰ কৃপা-প্ৰসাদত শীঘ্ৰেই প্ৰাপ্ত কৰে। সেয়ে তেওঁক পাবৰ বাবে আৱশ্যক আছে সমৰ্পণৰ।

চেতসা সৰ্বকৰ্মাণি ময়ি সংন্যস্য মৎপৰঃ।

বুদ্ধিযোগমপাশ্ৰিত্য মচ্চিন্তঃ সততং ভব।। ৫৭।।

সেয়ে অৰ্জুন! সম্পূৰ্ণ কৰ্মক (যি কৰ্মই তুমি কৰা) মনৰ দ্বাৰা মোক অৰ্পন কৰি, নিজৰ ভৰযাত নহয়, আনকি মোক সমৰ্পন কৰি, নিৰন্তৰ মোৰ পৰায়ন হৈ বুদ্ধি যোগ অৰ্থাৎ যোগৰ বুদ্ধি অৱলম্বন কৰি নিৰন্তৰ মোতেই চিন্ত লগোৱা। যোগো একেটাই, যি সৰ্বদা দুখৰ অন্ত কৰোঁতা আৰু পৰমতত্ব পৰমাত্মাত প্ৰৱেশ কৰাওতা। তাৰ ক্ৰিয়াও একেটাই-যজ্ঞৰ প্ৰক্ৰিয়া, যি মন তথা ইন্দ্ৰিয়বোৰক সংযম কৰি, শ্বাস-প্ৰশ্বাস তথা ধ্যান ইত্যাদিত নিৰ্ভৰ কৰে। যাৰ পৰিনামো একেটাই ‘যান্তি ব্ৰহ্ম সনাতনম্’ এই বিষয়ত আকৌ কৈছে -

মচ্চিন্তঃ সৰ্বদুৰ্গাণি মৎপ্ৰসাদাত্ৰিবিধ্যসি।

অথ চেৎ ত্বমহঙ্কাৰান্ শ্ৰোয্যসি বিনংক্ষ্যসি।। ৫৮।।

এইদৰে মোতেই নিৰন্তৰ চিন্তক লগাই তুমি মোৰ কৃপাৰ দ্বাৰা মন আৰু ইন্দ্ৰিয়বোৰৰ সম্পূৰ্ণ দুৰ্গক অনায়াসে পাৰ কৰি যাবা। এই বিলাকেই দুৰ্জয় দুৰ্গ। মোৰ কৃপাত তুমি এই বাধা সমূহ অতিক্ৰম কৰি যাবা; কিন্তু যদি অহংকাৰ কৰি মোৰ কথা নুশুনা, তেতিয়া হলে বিনষ্ট হৈ যাবা, পৰমার্থৰ পৰা চ্যুত হৈ যাবা। পূণৰ জোৰ দি কয় -

যদহঙ্কাৰমাশ্ৰিত্য ন যোৎস্য ইতি মন্যসে।

মিথ্যৈষ ব্যৱসায়স্তে প্ৰকৃতিস্ত্বাং নিয়োক্ষ্যতি।। ৫৯।।

যদি তুমি অহংকাৰৰ আশ্ৰয়লৈ এনেভাৱা যে মই যুদ্ধ নকৰোঁ, তেতিয়াহলে এইটো তোমাৰ সিদ্ধান্ত মিছা; কিয়নো তোমাৰ স্বভাৱেই তোমাক জোৰ কৰি যুদ্ধত লগাই দিব।

স্বভাৱজেন কৌন্তেয় নিবদ্ধঃ স্ত্বেন কৰ্মণা।

কৰ্তুং নেচ্ছসি যন্মোহাৎকৰিষ্যস্যবশোহপি তৎ।। ৬০।।

হে কৌণ্ডেয়! মোহৰ বশত তুমি যি কৰ্ম কৰিব নিবিচাৰা, তাকো তুমি স্বভাবৰ দ্বাৰা উৎপন্ন হোৱা কৰ্মেৰে বান্ধ খাই কৰিবলৈ বাধ্য হবা। প্ৰকৃতিৰ সংঘৰ্ষত পলাব নোৱাৰা তোমাৰ ক্ষত্ৰিয়ৰ স্বভাৱেই তোমাক জোৰকৈ কৰ্মত লগাই দিব। প্ৰশ্ন পুৰা হ'ল। এতিয়া সেই ঈশ্বৰ কত থাকে? এই বিষয়ে কয় -

ঈশ্বৰঃ সৰ্বভূতানাং হৃদ়েশেহৰ্জুন তিষ্ঠতি।

ভ্ৰাময়নসৰ্বভূতানি যন্ত্ৰাকটানি মায়য়া।। ৬১।।

অৰ্জুন! সেই ঈশ্বৰ সম্পূৰ্ণ ভূত-প্ৰাণী সমূহৰ হৃদয়তে নিবাস কৰে। ইমান ওচৰ থাকিও মানুহে নাজানে কিয়? মায়াকপী যন্ত্ৰত আৰুট হৈ সকলোলোক ভ্ৰমবশত ঘূৰি থাকে, সেই কাৰণে নেজানে। এই যন্ত্ৰ হ'ল ডাঙৰ বাধা, যি বাৰে-বাৰে নশ্বৰ কলেবৰত (শৰীৰত) ঘূৰাই থাকে। তেতিয়া শৰণ কাৰ লব?

তমেব শৰণং গচ্ছ সৰ্বভাবেন ভাৰত।

তৎপ্ৰসাদাৎপৰাং শান্তিং স্থানং প্ৰাপ্ল্যসি শাস্বতম্।। ৬২।।

সেইকাৰণে হে ভাৰত। সম্পূৰ্ণ ভাৱেৰে সেই ঈশ্বৰক (যি হৃদয়তে স্থিত আছে) অনন্য শৰণ-প্ৰাপ্ত হোৱা। তেওঁৰ কৃপা-প্ৰসাদত তুমি পৰম শান্তি শাস্বত পৰমধাম প্ৰাপ্ত কৰিবা। সেয়ে ধ্যান কৰিলে হৃদয় দেশতেই কৰা। এইটো জানিও মন্দিৰ, মচজিদ, গীৰ্জা বা অন্যত বিচৰাটো সময়ৰ অপব্যয় কৰাহে হব। অৱশ্য যেতিয়ালৈকে জনা নজায়, তেতিয়ালৈকেতো স্বাভাৱিক হয়। ঈশ্বৰৰ নিবাসস্থান হৃদয় হয়। ভাগৱতৰ চতু-শ্লোকী গীতাৰ সাৰাংশও এইটোৱে যে এনেতো মই সৰ্বত্ৰতো আছোঁ, কিন্তু প্ৰাপ্ত হওঁ হৃদয় দেশত ধ্যান কৰিলেহে।

ইতি তে জ্ঞানমাখ্যাৎ গুহ্যাদ্গুহ্যতৰং ময়া।

বিমূশ্যৈতদশেষেণ যথৈচ্ছসি তথা কুৰু।। ৬৩।।

এইদৰে ইমানেই গোপনীয়তকৈ গোপনীয় অতি গোপনীয় জ্ঞান মই তোমাৰ বাবে কলো। এই বিধিৰ দ্বাৰা সম্পূৰ্ণ চিন্তা কৰি, তুমি যেনেদৰে ভাবা

তেনেদৰেই কৰা। সত্য কিন্তু এইটোৱেই, সাধনাস্থলো এয়াই, প্ৰাপ্তীও ইয়াতেই হয়। কিন্তু হৃদয়ত স্থিত ঈশ্বৰক দেখা নায়ায়, ইয়াৰ উপায় কম -

সৰ্ব গুহ্যতমং ভূয়ঃ শৃণু মে পৰমং বচঃ।

ইষ্টোহসি মে দৃঢ়মিতি ততো বক্ষ্য্যামি তে হিতম্ ॥ ৬৪ ॥

অৰ্জুন! সম্পূৰ্ণ গোপনীয়তকৈও অতি গোপনীয় মোৰ বহস্যযুক্ত বচন তুমি আকৌ শুনা। (আগতো কৈছে, কিন্তু আকৌ শুনা। সাধকৰ বাবে ইষ্ট সদায় সাজু হৈ থাকে) কিয়নো মোৰ তুমি অত্যন্ত প্ৰিয়, সেইকাৰণে এই পৰম হিত কাৰক বচন মই তোমাৰ কাৰণে আকৌ কৈ আছো। কিয়?

মন্মনা ভব মদভক্তো মদ্যাজী মাং নমস্কৃৎ।

মামেবৈষ্যসি সত্যং তে প্ৰতিজানে প্ৰিয়োহসি মে ॥ ৬৫ ॥

অৰ্জুন! তুমি মোতেই অনন্য মন থকা হোৱা, মোৰ অনন্য ভক্ত হোৱা, মোৰ প্ৰতি শ্ৰদ্ধাপূৰ্ণ হোৱা, (মোৰ প্ৰতি সমৰ্পণত অশ্ৰুপাত হব ধৰে) মোকেই নমস্কাৰ কৰা। এনে কৰিলে তু কি মোকে প্ৰাপ্ত কৰিবা। এইটো মই তোমাৰ কাৰণে সত্য প্ৰতিজ্ঞা কৰি কৈছোঁ; ঈশ্বৰ হৃদয়-দেশত আছে, তেওঁৰ শৰণলৈ যোৱা। ইয়াত কৈছে - মোৰ শৰণলৈ আহাঁ। এই অতি গোপনীয় বহস্যযুক্ত বচন শুনি মোৰ শৰণলৈ আহা। বাস্তৱত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কি কব বিচাৰিছে? এইটো কব বিচাৰিছে যে সাধকৰ বাবে সদগুৰুৰ শৰণ নিতান্তই আৱশ্যক আছে। শ্ৰীকৃষ্ণ এজন পূৰ্ণ যোগেশ্বৰ আছিল। এতিয়া সমৰ্পণৰ বিধি কয় -

সৰ্বধৰ্মান্‌পৰিত্যজ্য মামেকং শৰণং ব্ৰজ।

অহং ত্বা সৰ্বপাপেভ্যো মোক্ষয়িষ্যামি মা শুচঃ ॥ ৬৬ ॥

সম্পূৰ্ণ ধৰ্ম ত্যাগ কৰি (অৰ্থাৎ মই ব্ৰাহ্মণ শ্ৰেণীৰ কৰ্ত্তা বা শুদ্ৰ ক্ষত্ৰিয় অথবা বৈশ্য এই চিন্তাক ত্যাগ কৰি) মাত্ৰ এক মোৰ মাত্ৰ শৰণলৈ আহা। মই তোমাক সম্পূৰ্ণ পাপৰ পৰা মুক্ত কৰি দিম। তুমি শোক নকৰিবা।

এই সকলো ব্ৰাহ্মণ-ক্ষত্ৰিয় বৰ্ণৰ বিচাৰ নকৰাকৈ(যে এইবোৰ কৰ্ম পথত কি স্তৰ হওঁ এনে বিচাৰ) যি অনন্য ভাৱৰ দ্বাৰা শৰণলৈ যায়, ইষ্টৰ

বাদে অন্য কাকো চিন্তা নকৰে, তাৰ ব্ৰহ্মশঃ বৰ্ণ পৰিবৰ্ত্তন, উন্নতি তথা পাপৰ
পৰা পূৰ্ণ নিবৃত্তি (মোক্ষ)ৰ দায়িত্ব সেই ইষ্ট সদগুৰুৰে নিজৰ হাতত লৈ লয়।

ইদং তে নাতপস্কায় নাভক্তায় কদাচন।

ন চাশুশ্ৰযবে বাচ্যং ন চ মাং শোহভ্য সূয়তি।। ৬৭।।

হে অৰ্জুন! এইদৰে তোমাৰ হিতৰ বাবে কোৱা এই গীতাৰ উপদেশ
কোনো কালতে ভুলতো তপহীন পুৰুষৰ প্ৰতি কোৱা অনুচিত, ভক্তিহীনৰ
প্ৰতিও কোৱা উচিত নহয় আৰু যিয়ে মোৰ নিন্দা কৰে - এইটো দোষ, সিটো
দোষ বুলি, দোষ ওলিয়াই সমালোচনা কৰা লোকৰ ওচৰতো কোৱা উচিত
নহয়। মহাপুৰুষেইতো আছিলে, তাৰ ভিতৰটো কিছু নিন্দকো আছিলে সম্ভৱ।
তেওঁলোকৰ ওচৰত কোৱা অনুচিত। কিন্তু প্ৰশ্ন এটা স্বাভাৱিক হৈ পৰে যে
কাৰ ওচৰত কোৱা উচিত? এই ক্ষেত্ৰত চোৱা হওক -

য ইমং পৰমং গুহ্যং মদভক্তেষুভিধাস্যতি।

ভক্তিং ময়ি পৰাং কৃতা মামেবৈষ্যত্যসংশয়।। ৬৮।।

যি মনুষ্যই মোৰ পৰাভক্তি প্ৰাপ্ত কৰি এই পৰম বহস্যযুক্ত গীতাৰ
উপদেশ মোৰ ভক্ত বিলাকক কয়, তেওঁ নিসন্দেহে মোকে প্ৰাপ্ত কৰিব। অৰ্থাৎ
সেই ভক্তই মোকে প্ৰাপ্ত কৰে যিয়ে শুনি লয়; কিয়নো উপদেশক ভালদৰে
শুনি হৃদয়ংগম কৰে তেতিয়া তেনে দৰে চলি পাৰ হৈ যায়। এতিয়া সেই
উপদেশ কৰ্ত্তাৰ বাবে কয় -

ন চ তস্মান্‌মনুষ্যেষু কশ্চিন্মে প্ৰিয়কৃত্তমঃ।

বিতা ন চ মে তস্মাদন্যঃ প্ৰিয়তৰো ভুবি।। ৬৯।।

তেওঁতকৈ বেছি মোৰ প্ৰিয় কাৰ্য্যকৰা মনুষ্য কোনোৱে নাই আৰু
তেওঁতকৈ বেছি মোৰ অতি মৰমৰ পৃথিৱীত অন্য কোনোৱে নাই। যিয়ে মোৰ
ভক্ত বিলাকত মোৰ উপদেশ কৰে, তেওঁলোকক সেই ৰাস্তায়েদি চলায়;
কিয়নো কল্যাণৰ ৰাস্তা এয়েই, এয়াই ৰাজমাৰ্গ। এতিয়া চোৱা যাওক অধ্যয়ন
সম্পৰ্কে -

অধ্যব্যতে চ য ইমং ধৰ্ম্যং সংবাদমাবয়োঃ।

জ্ঞানযজ্ঞেন তেনাহমিষ্টঃ স্যামিতি মে মতিঃ।। ৭০।।

যি পুৰুষে এই ধৰ্মময় আমি দুটাৰ সম্বাদক ভালদৰে মনন কৰি
লয়, তেওঁৰ দ্বাৰা মই জ্ঞান-যজ্ঞৰে পূজিত হওঁ অৰ্থাৎ এনে যজ্ঞ যাৰ পৰিণাম
হ'ল জ্ঞান, যাৰ স্বৰূপ আগতে কোৱা হৈছে, যাৰ তাৎপৰ্য্য হ'ল
সাক্ষাতকাৰৰসহিতে পাব পৰা জ্ঞান, এয়াই মোৰ নিশ্চিত মত।

শ্ৰদ্ধাবাননসূয়শ্চ শ্ৰণুয়াদপি যো নৰঃ।

সোহপি মুক্তঃ শুভাংল্লোকান্ প্ৰাপুয়াৎ পুণ্যকৰ্মণাম্ ॥ ৭১ ॥

যি পুৰুষে শ্ৰদ্ধায়ুক্ত হৈ ইয়াৰহিত হৈ মাত্ৰ শুণে, তেৱো পাপৰ
পৰা মুক্ত হৈ উত্তম কৰ্ম কৰোতাঁৰ শ্ৰেষ্ঠলোক প্ৰাপ্ত কৰে। অৰ্থাৎ কৰিব নোৱাৰা
জনেও যদি শ্ৰদ্ধাৰে শুনে উত্তম লোক তেতিয়াও পায়; কিয়নো চিত্তই সেই
উপদেশবোৰ গ্ৰহণ কৰে। ইয়াত সাতষষ্টিৰ পৰা এসত্তৰ গ্লোকত ভগৱান
শ্ৰীকৃষ্ণই এইটো কলে যে গীতাৰ উপদেশ অনাধিকাৰি সকলক শুনোৱা উচিত
নহয়। যিয়ে শুনে সেই ভক্তই মোকে প্ৰাপ্ত কৰে; কিয়নো অতি গোপনীয়
কথা শুনি সেই পুৰুষ তেনেকৈ চলিব ধৰে। যি জনে ভক্ত সকলক শূনাব,
তেওঁতকৈ অধিক প্ৰিয় মোৰ আন কোনো নহব। যি জনে অধ্যয়ন কৰে,
তেওঁৰ দ্বাৰা মই জ্ঞান-যজ্ঞৰে পূজিত হওঁ। যজ্ঞৰ পৰিণামেই জ্ঞান। যি জন
গীতাৰ অনুসৰি কৰ্ম কৰাত অসমৰ্থ; কিন্তু শ্ৰদ্ধাৰে সহিতে শুনে, তেৱো
পূন্যলোক প্ৰাপ্ত কৰে। এইদৰে ভগৱান শ্ৰীকৃষ্ণই ইয়াৰ কোৱা, শূনা আৰু
অধ্যয়ন কৰাৰ ফল কলে। প্ৰশ্ন পুৰা হ'ল। এতিয়া শেষত তেওঁ অৰ্জুনক সুধিছে
যে কিবা বুজি পালানে?

কচ্চিদেতচ্ছ্ৰুতং পাৰ্থ ত্বয়ৈকাগ্ৰেণ চেতসা।

কচ্চিদজ্ঞানসম্মোহ প্ৰনষ্টস্তে ধনঞ্জয় ॥ ৭২ ॥

হে পাৰ্থ! মোৰ এই বচন কি তুমি একাগ্ৰ চিত্ত হৈ শুনিলানে? তোমাৰ
অজ্ঞানৰ পৰা উৎপন্ন হোৱা মোহ কি নষ্ট হলনে? অৰ্জুনে কলে -

অৰ্জুন উবাচ

নষ্টো মোহঃ স্মৃতিৰ্লঙ্কা ত্বৎপ্ৰসাদান্ময়াচ্যুত।

স্থিতোহস্মি গতসন্দেহঃ কৰিষ্যে বচনং তব ॥ ৭৩ ॥

হে অচ্যুত! আপোনাৰ কুপাৰ দ্বাৰা মোৰ মোহ নষ্ট হ'ল; মোৰ স্মৃতি

প্ৰাপ্ত হ'ল। যি বহুসাময় জ্ঞান মনুৱে স্মৃতি পৰম্পৰাৰে চলাই আহিছিলে তাকে অৰ্জুনেও প্ৰাপ্ত কৰিলে। এতিয়া মই সংশয়হীন হৈ আছোঁ আৰু আপোনাৰ আজ্ঞা পালন কৰিম। অৱশ্য সৈন্য নিৰীক্ষণৰ সময়ত দুটাই সৈন্য দলৰ মাজতস্বজনক দেখি অৰ্জুন ব্যাকুল হৈ উঠিছিল। তেওঁ নিবেদন কৰিছিলে যে হে গোবিন্দ! এই আত্মীয় সকলক মাৰি আমি কেনেকৈ সুখী হম? এনে যুদ্ধৰ দ্বাৰা শাস্ত্ৰত কূলধৰ্ম নষ্ট হৈ যাব, পিণ্ড-পানী ক্ৰিয়া লুপ্ত হৈ যাব, বৰ্ণসংকৰৰ উৎপন্ন হব। আমালোক জনাবুজা হৈ ও পাপ কৰিবলৈ উদ্যত হৈছোঁ ইয়াৰ পৰা ৰক্ষা পোৱাৰ উপায় কিয় নকৰো? শস্ত্ৰধাৰী এই কৌৰৱবোৰে মই শস্ত্ৰহীনক যুদ্ধত মাৰি পেলাওক; সেই মৃত্যুও শ্ৰেয়স্কৰ হব। হে গোবিন্দ! মই যুদ্ধ নকৰোঁ, এনেদৰে কৈ ৰথৰ শেষ ভাগত গৈ বহিছিলে।

এইদৰে গীতাত অৰ্জুনে যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণৰ সন্মুখত প্ৰশ্নৰ উপৰি প্ৰশ্নৰ এটা ক্ৰম ঠিয় কৰি দিলে। যেনে ২/৭ সেই সাধনা কওক যাৰ দ্বাৰা মোৰ পৰম শ্ৰেয় প্ৰাপ্ত হয়। ২/৪৬ ত স্থিত প্ৰজ্ঞ পুৰুষৰ লক্ষণ কি? ৩/১ ত যেতিয়া আপোনাৰ দৃষ্টিত জ্ঞান যোগ শ্ৰেষ্ঠ হয়, তেতিয়া মোক এই জঘন্য কৰ্মত কিয় লগা হৈছে? ৩/৩৬ মনুষ্যই ইচ্ছা নকৰিলেও কাৰ প্ৰেৰণাত কুকৰ্মৰ আচৰণ কৰে? ৪/৪ ত আপোনাৰ জন্মতো এতিয়াইহৈছে আৰু সূৰ্য্যৰ জন্মতো বহুত পূৰণা, গতিকে মই কেনেকৈ মানি লম যে কল্পৰ আদিত এই যোগ আপুনিয়ৈ সূৰ্য্যক কৈছিল বুলি? ৫/১ ত কেতিয়াবাআপুনি সকলো কৰ্মৰ ত্যাগ কৰিবলৈ কয়, আকৌ কেতিয়াবা নিষ্কাৰ্ম কৰ্মৰ অনুষ্ঠান কৰিবলৈ কয়। ইয়াৰ ভিতৰত এটা নিশ্চয় কৰি কওক যে যাৰ দ্বাৰা মোৰ পৰম শ্ৰেয় প্ৰাপ্ত হয়? ৬/৩৫ ত মন চঞ্চল আছে, তথাপিও শিথিল যত্নৱান শ্ৰদ্ধাৱান পুৰুষে আপোনাক প্ৰাপ্ত নকৰি কোন দুৰ্গতি প্ৰাপ্ত হয়? ৮/১-২ ত হে গোবিন্দ। যাৰ বিষয়ে আপুনি বৰ্ণন কৰিলে সেই ব্ৰহ্ম কি? সেই অধ্যাত্ম কি? অধিদৈৱ, অধিভূত কি? এই শৰীৰত অধিযজ্ঞ কোন হয়? সেই কৰ্ম কি? অন্ত সময়ত আপোনাক কেনেদৰে জানিব পাৰি? সাতটা প্ৰশ্ন কৰিলে। ১০/১৭ অৰ্জুনে প্ৰশ্ন কৰিলে যে নিৰন্তৰ চিন্তন কৰি মই কি ভাৱৰ দ্বাৰা আপোনাক স্মৰণ কৰিম? ১১/৪ ত তেওঁ নিবেদন কৰিলে যে যি বিভূতি সমূহৰ আপুনি বৰ্ণনা কৰিলে সেইবোৰক মই প্ৰত্যক্ষভাৱে দৰ্শন কৰিব বিচাৰো। ১২/১ ত যি অনন্য শ্ৰদ্ধাত

লগা ভক্তজনে ভালদৰে আপোনাৰ উপাসনা কৰে আৰু আন যি সকলে
অক্ষৰ অব্যক্তৰ উপাসনা কৰে, এই দুইত কোনজন উত্তম যোগী? ১৪/২১
ত তিনিও গুণৰ অতীত পুৰুষ কি লক্ষণৰ যুক্ত হয় তথা মনুষ্য কি উপায়েৰে
এই তিনিও গুণৰ অতীত হব পাৰি? ১৭/১ ত যি মনুষ্যই উপৰোক্ত শাস্ত্ৰবিধি
ত্যাগ কৰে কিন্তু শ্ৰদ্ধাৰে যুক্ত হৈ যজন কৰে তেওঁৰ গতি কেনে হয়? ১৮/১
ত কৈছে যে হে মহাবাহু! মই ত্যাগ আৰু সন্যাসৰ যথার্থ স্বৰূপক পৃথকে-
পৃথকে জানিব বিচাৰো?

এইদৰে অৰ্জুনে প্ৰশ্ন কৰি গ'ল। যি তেওঁ নোৱাৰিছিল সেই গোপনীয়
বহস্যবোৰক ভগৱানে স্বয়ং দেখুৱাই দিছিল। এই সকলোৰ সমাধান হোৱাৰ
পাছত তেওঁ প্ৰশ্নৰ পৰা বিৰত থাকিল আৰু কলে যে হে গোবিন্দ? এতিয়া
মই আপোনাৰ আজ্ঞা পালন কৰিম। বস্তুতঃ এইবোৰ প্ৰশ্ন মানৱ মাত্ৰৰ বাবে
হয়। এই সকলো প্ৰশ্নৰ সমাধানৰ বিনে কোনো সাধকেই শ্ৰেয়-পথত অগ্ৰসৰ
হব নোৱাৰিব। সেয়ে সদগুৰুৰ আদেশ পালন কৰিবৰ বাবে, শ্ৰেয়-পথত
অগ্ৰসৰ হবৰ বাবে সম্পূৰ্ণ গীতাৰ শ্ৰৱণ অতি আৱশ্যক। অৰ্জুনৰ সমাধান হৈ
গ'ল। লগতেই যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণৰ শ্ৰীমুখ নিঃসৃত বাণীৰো উপসংহাৰ হ'ল।
ইয়াত সঞ্জয়ে কলে -

এঘাৰ আধ্যায়ত বিৰাট ৰূপৰ দৰ্শনৰ সময়ত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই
কৈছিল যে - অৰ্জুন। অনন্য ভক্তিৰ দ্বাৰা মই এইদৰে দেখা পোও (যি দৰে
তুমি দেখিলা) তত্বেৰে জানিবৰ বাবে তথা প্ৰৱেশ কৰিবৰ বাবে মই সুলভ হওঁ
(১১/৫৪) এইদৰে দৰ্শন কৰোঁতা সাক্ষাৎ মোৰ স্বৰূপ প্ৰাপ্ত কৰে আৰু ইয়াত
অৰ্জুনক সুধিছে - কি তোমাৰ মোহ নষ্ট হ'ল নে? অৰ্জুনে কলে যে মোৰ
মোহ নষ্ট হৈ গ'ল। মই নিজৰ স্মৃতি প্ৰাপ্ত কৰিলো। আপুনি যি কয়, মই তাকে
কৰিম। দৰ্শনৰ লগতে অৰ্জুন তো মুক্ত হব লাগিছিলে। মূলতঃ অৰ্জুনৰ যি হব
লগীয়া আছিলে সেয়াই হ'ল; কিন্তু ভৱিষ্যতত উওৰ পুৰুষ সকলৰ বাবে
শাস্ত্ৰৰ প্ৰয়োজন। তাৰ উপযোগ আপোনা সকলৰ বাবেই।

সঞ্জয় উবাচ

ইত্যহং বাসুদেবস্য পাৰ্থস্য চ মহাত্মনঃ।

সংবাদমিমমশ্ৰীষমদভুতং ৰোমহষণম্ ॥ ৭৪ ॥

এইদৰে মই বাসুদেৱ আৰু মহাত্মা অৰ্জুনৰ (অৰ্জুন এক মহাত্মা আছিল, যোগী আছিল, সাধক আছিল, তেওঁ কোনো ধনুৰ্ধৰ নাছিল যি যুদ্ধৰ বাবে ঠিয় হৈছিল। সেয়ে মহাত্মা অৰ্জুন) এই বিলক্ষণ আৰু ৰোমাঞ্চকাৰী সম্বাদ শুনিলো। আপোনাৰ শূনাৰ ক্ষমতা কেনেকৈ হ'ল? আগত কয়-

ব্যাসপ্ৰসাদাচ্ছুতবানেতদ্ গুহ্যমহং পৰম্ ।

যোগং যোগেশ্বৰাৎ কৃষ্ণাৎ সাক্ষাৎ কথয়তঃস্বয়ম্ ॥ ৭৫ ॥

শ্ৰীব্যাসজীৰ কৃপাত তেওঁৰ দ্বাৰা দিয়া দৃষ্টিৰে মই এই পৰম গোপনীয় যোগক সাক্ষাৎ কৰি স্বয়ং যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণৰ পৰা শুনিলোঁ, সঞ্জয়ে শ্ৰীকৃষ্ণক যোগেশ্বৰ বুলি মানিছিল। যি স্বয়ং যোগী আৰু অন্যকো যোগ প্ৰদান কৰাৰ ক্ষমতা থাকে, তেওঁকেই যোগেশ্বৰ কোৱা হয়।

ৰাজনসংস্মৃত্য সংস্মৃত্য সংবাদমিমমদ ভুতম্ ।

কেশৰাৰ্জুনয়োঃ পুণ্যং হৃষ্যামি চ মুহুৰ্মুহুঃ ॥ ৭৬ ॥

হে ৰাজন! কেশৰ আৰু অৰ্জুনৰ এই পৰম কল্যাণকাৰী আৰু অদ্ভুত সম্বাদক মই বাৰে বাৰে স্মৰণ কৰি পুলকিত হৈ আছো, সেয়ে এই সম্বাদক সদায়ে স্মৰণ কৰা উচিত আৰু এই স্মৃতিত প্ৰসন্ন হোৱা উচিত। সঞ্জয়ে কয়-

তচ্চ সংস্মৃত্য সংস্মৃত্য ৰূপমত্যদভুতংহৰেঃ ।

বিস্ময়ো যে মহান্ ৰাজনহৃষ্যামি চ পুনঃ পুনঃ ॥ ৭৭ ॥

হে ৰাজন! হৰিৰ (যি শুভাশুভক হৰণ কৰি স্বয়ং বাকী থাকে, সেই হৰিৰ) অতি বিস্ময়ক ৰূপক বাৰে-বাৰে স্মৰণ কৰি মোৰ চিত্তত মহান আশ্চৰ্য্য হৈছে আৰু মই বাৰে-বাৰে হৰ্ষিত হৈ আছোঁ। ইষ্টৰ স্বৰূপ বাৰে-বাৰে স্মৰণ কৰা বস্তু হয়। শেষত সঞ্জয়ে নিৰ্ণয় দিয়ে-

যত্র যোগেশ্বৰ কৃষ্ণে যত্র পাৰ্থো ধনুৰ্ধৰঃ ।

তত্র শ্ৰীৰ্বিজয়ো ভূতি ধ্ৰুবা নীতিমতিমম ॥ ৭৮ ॥

হে ৰাজন য'ত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণ আৰু ধনুৰ্ধৰ অৰ্জুন (ধ্যানেই ধনু,

ইন্দ্ৰিয় সমূহক দৃঢ়ভাৱে ৰখা হ'ল গাণ্ডিৰ অৰ্থাৎ স্থিৰতাৰে সৈতে ধ্যান কৰিব পৰা মহাত্মা অৰ্জুন) থাকে, তাতে 'শ্ৰীঃ' - ঐশ্বৰ্য্য, বিজয় যাৰ পৰাজয় নাই, ঈশ্বৰীয় বিভূতি আৰু চলায়মান সংসাৰত অচল থাকিব পৰা নীতি থাকে, এইটো হ'ল মোৰ মত।

আজিতো ধনুৰ্ধৰ অৰ্জুন নাই। এই নীতি, বিজয়, বিভূতি কি অৰ্জুনলৈকে সীমিত আছিল নে? সেই সময়ৰে আছিল এইটো। তেতিয়াহলে দ্বাপৰতে শেষ হ'ল নেকি? নহয়, এনেদৰে নহয়। যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছিল যে মই সকলোৰ হৃদয় দেশতে নিবাস কৰোঁ। আপোনাৰ হৃদয়তো তেওঁ আছে। অনুৰাগেই অৰ্জুন। অনুৰাগ- আপোনাৰ অন্তঃকৰণক ইষ্টৰ ফালে লৈ যোৱাৰ একাগ্ৰতাৰ নাম। যদি এনে অনুৰাগ আপোনাৰো থাকে, তেতিয়া সদায়ে বাস্তৱিক বিজয় আছে আৰু অচল স্থিতি দিব পৰা নীতিও সদায়ে থাকিব, যি আগতো আছিলে। যেতিয়ালৈকে প্ৰাণী থাকিব, পৰমাত্মাৰ নিবাস তাৰ হৃদয়-দেশত থাকিবই, বিকল আত্মাই তাক পাবৰ বাবে ইচ্ছা কৰি থাকিব, আৰু তাৰ ভিতৰত যাৰ আত্মাত, হৃদয়ত তাক পাবৰ বাবে অনুৰাগ উথলি উঠিব, তেৱেঁই অৰ্জুনৰ শ্ৰেণীৰ সাধক হব; কিয়নো অনুৰাগেই অৰ্জুন। সেয়ে মানৱ মাত্ৰ ইয়াৰ প্ৰত্যাশি হব পাৰে।

নিষ্কৰ্ষঃ

এইটো হ'ল গীতাৰ অন্তিম আধ্যায়। আৰম্ভণীতেই অৰ্জুনৰ প্ৰশ্ন আছিল যে, প্ৰভূ! মই ত্যাগ আৰু সন্যাসৰ প্ৰভেদ আৰু স্বৰূপ জানিব বিচাৰো। যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই ইয়াত প্ৰচলিত চাৰিটা মতৰ আলোচনা কৰিছিল। ইয়াৰ ভিতৰত এটা শুদ্ধও আছিল। তাৰ ভিতৰত মিলা-জুলা এটা নিৰ্নয় যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই দিছিল যে যজ্ঞ, দান আৰু তপ কোনো কালতে ত্যাগ কৰাৰ যোগ্য নহয়। এইবোৰ মনিষি সকলকো পবিত্ৰ কৰা বস্তু। এই তিনিকে ৰাখি ইয়াৰ বিৰোধী বিকাৰ সমূহক ত্যাগ কৰাই হ'ল বাস্তৱিক ত্যাগ। এইটো সাত্বিক ত্যাগ। ফলৰ ইচ্ছা কৰি কৰা ত্যাগক ৰাজস ত্যাগ আৰু মোহত পৰি নিৰ্দিষ্ট কৰ্ম ত্যাগ হ'ল তামস ত্যাগ আৰু সন্যাস ত্যাগৰেই চৰম উৎকৃষ্ট অৱস্থা। নিয়ত কৰ্ম আৰু ধ্যানজনিত সুখ হ'ল সাত্বিক সুখ। ইন্দ্ৰিয় বোৰৰ আৰু বিষয়

সমূহৰ ভোগ ৰাজস সুখ আৰু তৃপ্তিদায়ক অন্নৰ পৰা হীন হৈ যি সুখ পায় সেয়া হ'ল তামস সুখ।

মনুষ্যৰ দ্বাৰা শাস্ত্ৰৰ অনুকূলে বা প্ৰতিকূলে কাৰ্য্য হোৱাত পাৰ্চটা কাৰণ আছে- কৰ্ত্তা (ক), পৃথক-পৃথক কৰণ (যাৰ দ্বাৰা কৰা হয়। শুভ হলে বিবেক, বৈৰাগ্য, শম, দম কৰণ। অশুভ হলে কাম, ত্ৰেণধ, ৰাগ-দ্বেষ ইত্যাদি কৰণ হয়) নানা প্ৰকাৰৰ ইচ্ছাবোৰ অনন্ত, সকলো পূৰ্ণ নহয়। মাত্ৰ সেইটো ইচ্ছাহে পূৰ হয় যাৰ লগত আধাৰ মিল খায়। চতুৰ্থ কাৰণ হ'ল আধাৰ (সাধনা) আৰু পঞ্চম হ'ল হেতু, দৈৱ (প্ৰাৰদ্ধ বা সংস্কাৰ)। প্ৰত্যেক কাৰ্য্য হ'বৰ বাবে এই পাৰ্চটা কাৰণ থাকে, তথাপিও যি জনে কেবল্য স্বৰূপ পৰমাত্মাক কৰ্ত্তা বুলি ভাবে, তেওঁ মুঢ়বুদ্ধি যথার্থতে নাজানে। অৰ্থাৎ ভগৱানে নকৰে আকৌ আগতে কৈছিলে যে, অৰ্জুন! তুমি নিমিত্ত মাত্ৰ হৈ ঠিয় হোৱা, ধৰ্ত্তা কৰ্ত্তাময়েই। অন্ততঃ সেই জন মহাপুৰুষে কি ক'ব বিচাৰিছে?

মূলতঃ প্ৰকৃতি আৰু পুৰুষৰ মাজত এটা আকৰ্ষণ সীমা আছে। যেতিয়ালৈকে মনুষ্যই প্ৰকৃতিত চলে, তেতিয়ালৈকে মায়াই প্ৰেৰণা কৰে। যেতিয়া তেওঁ তাতকৈ ওপৰত উঠে, ইষ্টত সমৰ্পিত হৈ যায় আৰু যেতিয়া ইষ্ট হৃদয়-দেশত সাৰথী হৈ যায়, তেতিয়া ভগৱানে কৰে। অৰ্জুন এনে স্তৰতে আছিল, সঞ্জয়ও আছিল আৰু সকলোৰে বাবে ইয়াত (এই শ্ৰেণীত) পোৱাৰ বিধান আছে। সেয়ে ইয়াত ভগৱানে প্ৰেৰণা দিয়ে। পূৰ্ণ জ্ঞাতা মহাপুৰুষ, জনাৰ বিধি আৰু জ্ঞেয় পৰমাত্মা এই তিনিওৰ সংযোগত কৰ্মৰ প্ৰেৰণা পায়। সেই কাৰণে কোনো অনুভৱি মহাপুৰুষৰ ওচৰলৈ গৈ বুজিবৰ চেষ্টা কৰা উচিত।

বৰ্ণ ব্যৱস্থাৰ প্ৰশ্নক চতুৰ্থ বাৰৰ বাবে লৈ যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছে। ইন্দ্ৰিয় সমূহৰ দমন, মনৰ শমন, একাগ্ৰতা, শৰীৰ-বাণী আৰু মনক ইষ্টৰ অনুৰূপে তাপ দিয়া। ঈশ্বৰীয়-অনুভূতিৰ সঞ্চাৰ, ঈশ্বৰীয় নিৰ্দেশত চলাৰ ক্ষমতা ইত্যাদি ব্ৰহ্মত প্ৰৱেশ কৰাৰ পৰা যোগ্যতা ব্ৰাহ্মণ শ্ৰেণীৰ কৰ্ম। শৌৰ্য্য, পিছ নুহুকা স্বভাৱ, সকলো ভাৱতে স্বামীভাৱ কৰ্মত প্ৰবৃত্ত হব পৰা দক্ষতা ক্ষত্ৰিয় শ্ৰেণীৰ কৰ্ম হয়। ইন্দ্ৰিয় সমূহ সংৰক্ষণ, আত্মিক সম্পদৰ সম্বৰ্দ্ধন,

ইত্যাদি বৈশ্য শ্ৰেণীৰ কৰ্ম আৰু পৰিচৰ্যা শুদ্ৰ শ্ৰেণীৰ কৰ্ম হয়। শুদ্ৰৰ অৰ্থ হ'ল - অল্পজ্ঞ। অল্পজ্ঞ সাধকে যি নিৰ্দিষ্ট কৰ্ম চিন্তনক দুই ঘণ্টা বহিও দহ মিনিটো নিজৰ পক্ষত লগাব নোৱাৰে। শৰীৰ বহি থাকে, কিন্তু যি মনক বহুৱাব লাগিছিলে সেই মন হাৰাত ঘূৰি থাকে। এনে সাধকৰ কল্যাণ কি দৰে হ'ব? তেওঁক নিজতকে উন্নত অৱস্থা থকা জনৰ সেৱা কৰিব লাগিব। লাহে-লাহে তেওঁতো সংস্কাৰৰ সৃজনা হ'ব আৰু গতিৰ ধাৰা ধৰা পৰিব। সেয়ে এই অল্পজ্ঞৰ কৰ্ম সেৱাৰ পৰাই আৰম্ভ হ'ব। কৰ্ম একেই নিয়ত কৰ্ম চিন্তন। তাৰ কৰ্ত্তাৰ চাৰিটা শ্ৰেণী আছে অতি উত্তম, উত্তম, মধ্যম আৰু নিকৃষ্ট অৰ্থাৎ ব্ৰাহ্মণ, ক্ষত্ৰিয়, বৈশ্য আৰু শুদ্ৰ। মনুষ্যৰ নহয় বৰঞ্চ গুণৰ মাধ্যমেৰে কৰ্মক চাৰিটা ভাগত ভগোৱা হৈছে। গীতোক্ত বৰ্ণ ব্যৱস্থা এয়াই।

তত্বক স্পষ্ট কৰি তেখেতে ক'লে যে অৰ্জুনঙ্গ সেই পৰম সিদ্ধিৰ বিধি মই কম, যি হল জ্ঞানৰ পৰানিষ্ঠা। বিবেক, বৈৰাগ্য, শম দম, অবিৰল চিন্তন আৰু ধ্যানৰ প্ৰবৃত্তি, ব্ৰহ্মত প্ৰৱেশ কৰাব পৰা সকলো যোগ্যতা যেতিয়া পৰিপক্ব হৈ যাব; কাম, ক্ৰোধ, মোহ, ৰাগ-দ্বেষ আদি প্ৰকৃতিত নিব পৰা প্ৰবৃত্তি যেতিয়া সম্পূৰ্ণ শান্ত হৈ যাব, সেই সময়ত সেই ব্যক্তি ব্ৰহ্মক জানিবৰ যোগ্য হৈ উঠিব। সেই যোগ্যতাৰ নাম পৰাভক্তি। পৰাভক্তিৰ দ্বাৰাহে সে তত্বক জানিব পাৰি। তত্ব কি? ক'লে - মইয়েই, যি বিভূতিৰ দ্বাৰা যুক্ত হৈ আছোঁ, তাকেই জনা অৰ্থাৎ পৰমাত্মা যি, অব্যক্ত, শাস্বত, অপৰিৱৰ্ত্তন শীল যি আলৌকিক গুণ ধৰ্মৰালা, তাক জনা আৰু জানি সি তৎক্ষণাৎ মোতেই স্থিত হৈ যোৱা। সেয়ে তত্ব হ'ল পৰমতত্ব, পাট পাটশ তত্ব নহয়। প্ৰাপ্তীৰ লগতে আত্মা সেই স্বৰূপত স্থিত হৈ যায়, সেই গুণ-ধৰ্মেৰে যুক্ত হৈ যায়।

ঈশ্বৰৰ নিবাস সম্পৰ্কে যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কলে-অৰ্জুন! ঈশ্বৰ সম্পূৰ্ণ ভূত-প্ৰাণীৰ হৃদয়-দেশতে নিবাস কৰে; কিন্তু মায়াৰূপী যন্ত্ৰত উঠি মানুহ ভ্ৰমি আছে, সেই কাৰণে নাজানে। সেয়ে অৰ্জুন। তুমি হৃদয়ত স্থিত সেইজন ঈশ্বৰৰ শৰণলৈ যোৱা। ইয়াতকৈ গোপনীয় আৰু এটা ৰহস্য আছে যে সম্পূৰ্ণ ধৰ্মৰ চিন্তা বাদ দি তুমি মোৰ ওচৰলৈ আহ। তুমি মোক প্ৰাপ্ত কৰিবা। এই

বহস্য অনাধিকাৰীক কোৱা অনুচিত, যি ভক্ত নহয় তাক ক'ব নালাগে। কিন্তু যি ভক্ত তাক অৱশ্যে ক'ব লাগে। তাৰ পৰা আতঁৰি থাকিলে তাৰ কল্যাণ কেনেকৈ হ'ব? শেষত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই সুধিলে- অৰ্জুন! মই যি খিনি ক'লো তুমি ভালদৰে শুনিলানে, বুজিলানে আৰু মোহ নষ্ট হ'ল নে নাই? অৰ্জুনে ক'লে - ভগৱানঙ্গ মোৰ মোহ নষ্ট হৈ গ'ল। মই মোৰ নিজৰ স্মৃতি প্ৰাপ্ত কৰিলো। আপুনি যি ক'লে সেয়াই সত্য আৰু এতিয়া মই তাকে কৰিম।

সঞ্জয়, যি জনে এই দুজনৰ সম্বাদ ভালদৰে শুনিলে, নিজৰ নিৰ্ণয় দি ক'লে যে শ্ৰীকৃষ্ণ মহাযোগেশ্বৰ আৰু অৰ্জুন এজন মহাত্মা আছিল। তেওঁলোকৰ সম্বাদ বাৰে-বাৰে স্মৰণ কৰি তেওঁ হৰ্ষিত হৈ আছে। সেয়ে তাৰ স্মৰণ কৰি থকা উচিত। সেইজন হৰিৰ স্বৰূপক মনত পৰি বাৰে-বাৰে হৰ্ষিত হৈ আছে। সেয়ে বাৰে-বাৰে স্বৰূপৰ স্মৰণ কৰি থকা উচিত। ধ্যান কৰি থকা উচিত। য'ত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণ আৰু মহাত্মা অৰ্জুন থাকে, তাতে শ্ৰী থাকে, বিজয়-বিভূতি আৰু ধ্বংসনীতিও থাকে। সৃষ্টিৰ নীতি বিলাক আজি আছে, কালিলৈ পৰিবৰ্তন হৈ যাব। ধ্বংস হ'ল একমাত্ৰ পৰমাত্মা। তাত প্ৰৱেশ কৰাব পৰা নীতি, ধ্বংসনীতিও সেয়াই। যদি শ্ৰীকৃষ্ণ আৰু অৰ্জুনক দ্বাপৰ কালীন ব্যক্তি বুলি ধৰি লয় তেতিয়া হ'লে আজিতো অৰ্জুনো নাই; শ্ৰীকৃষ্ণও নাই। তেতিয়া হ'লে বিজয়-বিভূতি একোৱে ন'হব। তেতিয়া হ'লেতো গীতাৰ আৱশ্যকতাই নাই। কিন্তু এনে নহয়। শ্ৰীকৃষ্ণ এজন যোগী আছিল, অনুৰাগেৰে পূৰ্ণ হৃদয়বান মহাত্মাই অৰ্জুন আছিল। তেওঁ সদায় আছে আৰু থাকিবই। শ্ৰীকৃষ্ণই নিজৰ পৰিচয় দি কৈছিল যে হওঁতে মই অব্যক্ত কিন্তু যি ভাৱত মই প্ৰাপ্ত হওঁ, সেই ঈশ্বৰ সকলোৰে হৃদয়-দেশত নিবাস কৰে। তেওঁ সদায় আছে আৰু থাকিবই। সকলোৱে তেওঁৰ শৰণলৈ যাব লাগিব। শৰণলৈ যোৱা জনেই মহাত্মা, অনুৰাগী আৰু অনুৰাগেই অৰ্জুন। তাৰ বাবে কোনোৱা স্থিত প্ৰজ্ঞ মহাপুৰুষৰ ওচৰলৈ শৰণলৈ যোৱা নিতান্তই আৱশ্যক আছে; কিয়নো তেওঁ হ'ল ইয়াৰ প্ৰেৰণা দাতা।

এই আধ্যাত সন্যাসৰ স্বৰূপ স্পষ্ট কৰা হ'ল যে সৰ্বস্বৰ ন্যাস হ'ল সন্ন্যাস। মাত্ৰ বস্ত্ৰ কমণ্ডলু ধাৰণ কৰি লোৱাটো সন্ন্যাস নহয়। বৰঞ্চ ইয়াৰ

লগতে একান্তৰ সেৱন কৰি নিয়ত কৰ্মত নিজৰ শক্তি বৃদ্ধি অথবা সমৰ্পণৰ সৈতে সতত যত্ন অপৰিহাৰ্য্য। প্ৰাপ্তীৰ লগতে সম্পূৰ্ণ কৰ্মৰ ত্যাগেই সন্ন্যাস, যি মোক্ষৰ পৰ্য্যায়। এয়াই সন্ন্যাসৰ পৰাকাষ্টা। সেয়ে -

ওঁ তৎসদিতি শ্ৰীমদ্ভাগবদগীতা সুপনিষৎসু ব্ৰহ্মবিদ্যায়াং যোগশাস্ত্ৰে
শ্ৰীকৃষ্ণাৰ্জুন সংবাদে 'সন্ন্যাস যোগো' নাম অষ্টাদশোহধ্যায়ঃ ॥ ১৮ ॥

এইদৰে শ্ৰীমৎভাগৱৎ গীতাৰূপী উপনিষদ এবং ব্ৰহ্মবিদ্যা তথা যোগশাস্ত্ৰ বিষয়ক শ্ৰীকৃষ্ণ আৰু অৰ্জুনৰ সন্বাদৰ 'সন্ন্যাস যোগ' নামৰ ঠঠৰ আধ্যায় পূৰ্ণ হ'ল।

ইতি শ্ৰীমৎপৰমহংস পৰমানন্দস্য শিষ্য স্বামী অড়গড়ানন্দকৃতে
শ্ৰীমৎভাগৱৎগীতায়ঃ 'যথার্থ গীতা' ভাষ্য 'সন্ন্যাস যোগো' নাম
অষ্টাদশোহধ্যায়ঃ ॥ ১৮ ॥

॥ হৰি ওঁ তৎসৎ ॥

উপসংহাৰ

প্ৰায় টিকা টিপ্তনিত মানুহবোৰে নতুনত্ব বিচাৰে; কিন্তু বস্তুতঃ সত্যতো সত্যই হয়। সেইটো নতুনো নহয় পুৰণাও নহয়। নতুন কথাতো বাতৰি কাকতত ছপা হয়, যি জন্ম-মৰণৰ ঘটনা ঘটে। সত্য অপৰিবৰ্ত্তনশীল, কাৰ কি কব লগা আছে? যদি কোনোবাই কিবা কয়, তেতিয়া হ'লে বুজিব লাগিব যে তেওঁ একোৱে পোৱা নাই প্ৰত্যেক মহাপুৰুষে গৈ তেওঁ যদি সেই লক্ষ্যত পায়, তেতিয়াতো একেটা কথাকেই ক'ব। তেওঁ সমাজত ফাট নেমেলে। যদি ফাট মেলে, তেতিয়া বুজিব লাগিব যে তেওঁ একো পোৱা নাই। শ্ৰীকৃষ্ণইও সেই সত্যকে কৈছে, যি পূৰ্ব পুৰুষে মনিষি সকলে দেখিছিল, পাইছিল আৰু ভৱিষ্যতত হ'ব পৰা মহাপুৰুষেও যদি পায়, তেতিয়া হ'লে ইয়াকে ক'ব।

মহাপুৰুষ আৰু তেওঁৰ কাৰ্য্য প্ৰণালী :- মহাপুৰুষে পৃথিৱীত সত্যৰ নামত চলা, সত্যৰ দৰে দেখা পোৱা অন্ধ বিশ্বাস, দুৰ্নীতি-কুৰীতিবোৰক শমন কৰি কল্যাণৰ পথ প্ৰশস্ত কৰে। এই পথ পৃথিৱীত প্ৰথমৰ পৰাই থাকে, কিন্তু তাৰ সমান্তৰালত তাৰ দৰেই দেখা অনেক পথ বা নীতি প্ৰচলিত হয়। তাৰ ভিতৰৰ পৰা সত্যক ওলিওৱা টান হৈ পৰে, মূলতঃ সত্য কি? মহাপুৰুষ সত্য স্থিত হোৱাৰ বাবে সত্যক চিনি পায়, তাক নিশ্চিত কৰে আৰু সেই সত্যৰ ফালে অগ্ৰসৰ কৰিবৰ বাবে সমাজক প্ৰেৰিত কৰে। ইয়াকে ৰামেও কৰিছিল, মহাবীৰেও কৰিছিলে, মহাত্মা বুদ্ধ, যিশু, মহম্মদেও ইয়াকে কৰিছিলে। কবীৰ, গুৰুজ্ঞানক ইত্যাদি সকলোৱে ইয়াকে কৰিছিলে। মহাপুৰুষ যেতিয়া দুৰ্নীয়াৰ পৰা যায়, তেতিয়া পাছৰ মানুহ বিলাক তেওঁৰ কোৱা পথত নচলি, তেওঁৰ জন্মস্থল, মৃত্যুস্থল আৰু সেই স্থল সমূহক পূজা কৰিবলৈ ধৰে য'ত তেওঁ গৈছিলে। ক্ৰমশঃ তেওঁলোকে তেওঁৰ মুৰ্ত্তী বনাই পূজিবলৈ ধৰে। যদিও আৰম্ভনীত তেওঁলোকে তেওঁৰ স্মৃতিক ৰাখিব বিচাৰে; কিন্তু কালান্তৰত ভুলত পৰে আৰু সেই ভ্ৰম অন্ধ পৰম্পৰা হৈ পৰে।

যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণইও তেওঁৰ সময়ত সমাজত সত্যৰ নামত প্ৰচলিত অন্ধ ৰীতি-নীতি বোৰক খণ্ডন কৰি সমাজত সত্যৰ পথ প্ৰশস্ত কৰি তুলিছিল। চাৰছ আধ্যায়ত তেখেতে কৈছে, অৰ্জুন। অসত্যৰতো অস্থিত্বই নাই আৰু সত্যৰ তিনিও কালত অভাৱ নাই। ভগৱান হোৱাৰ কাৰণে মই নিজৰ ফালৰ পৰা কোৱা নাই, আনকি ইয়াৰ প্ৰভেদ তত্বদৰ্শী সকলে দেখিছিলে আৰু তাকে মই কৈ আছোঁ। তেৰ আধ্যায়ত তেখেতে ক্ষেত্ৰ-ক্ষেত্ৰজ্ঞৰ বৰ্ণন তেনেদৰে কৰিছে, যে “ঋষিভিৰ্বহুধাগীতং” ঋষি সকলৰ দ্বাৰা প্ৰায়ে গোৱা হৈছিল। ওঠৰ আধ্যায়ত ত্যাগ আৰু সন্ন্যাসৰ তত্বক কৈ চাৰিটা মতৰ ভিতৰত এটাক বাছি তাকে তেওঁ সমৰ্থন কৰিছে।

সন্ন্যাসঃ- কৃষ্ণকালতো জুই নুহোৱা আৰু চিন্তনকো ত্যাগ কৰি নিজক যোগী, সন্ন্যাসী কোৱা প্ৰচলন আছিল। তাৰ খণ্ডন কৰি তেখেতে স্পষ্ট কৰিছে যে জ্ঞানমাৰ্গ, তথা ভক্তিমাৰ্গ দুইটাতে কোনোটোৰ মতেও কৰ্ম ত্যাগ কৰাৰ বিধান নাই। কৰ্মতো কৰিব লাগিবই। কৰ্ম কৰোঁতে কৰোতে সাধনা ইমান সুক্ষ্ম হৈ যাব যে সকলো সংকল্পৰ অভাৱ হৈ যায়, সেইটো হৈ পূৰ্ণ সন্ন্যাস। মাজবাটত সন্ন্যাস নামৰ কোনো বস্তু নাই। মাত্ৰ ক্ৰিয়া ত্যাগ কৰিলেই আৰু অগ্নি স্পৰ্শ নকৰিলেই কোনো সন্ন্যাসিও হ'ব নোৱাৰিব আৰু যোগীও হ'ব নোৱাৰিব-যাক দুই, তিনি, পাঁচ, ছয় আৰু বিশেষকৈ ওঠৰ আধ্যায়ত চাব পাৰি।

কৰ্মঃ- এনে ধৰণৰ ভুল কৰ্মৰ সম্বন্ধতো দেখা যায়। ২/৩৯ আধ্যায়ত তেখেতে কলে যে, অৰ্জুন! এতিয়ালৈকে এই বুদ্ধি তোমাৰ বাবে সাংখ্য যোগ বিষয়ত কলোঁ আৰু এতিয়া তুমি নিষ্কাম কৰ্মৰ বিষয়ে শুনা। ইয়াত যুক্ত হৈ তুমি কৰ্ম-বন্ধনক ভালদৰে নাশ কৰিব। ইয়াৰ অলপমান আচৰণ কৰিলেও মহান জন্ম-মৰণৰ ভয়ৰ পৰা উদ্ধাৰ কৰে। এই নিষ্কাম কৰ্মত নিশ্চয়াত্মক ক্ৰিয়া একেটাই বুদ্ধি একেটাই, দিশও একেটাই, কিন্তু অবিবেকীবোৰৰ বুদ্ধি অনন্ত শাখা যুক্ত হয়, সেই কাৰণে কৰ্মৰ নামত বহুতো ক্ৰিয়া বিস্তাৰ কৰে। অৰ্জুন। তুমি নিয়ত কৰ্ম কৰা। অৰ্থাৎ ক্ৰিয়া বহুত আছে, সেইবোৰ কৰ্ম নহয়, কৰ্ম হ'ল কোনো নিদ্ধাৰিত দিশ। কৰ্ম এনে এটা বস্তু, যি জন্ম-জন্মান্তৰৰ পৰা

চলি আহি শৰীৰৰ যাত্ৰাক অন্ত কৰি দিয়ে। যদি এটাও জন্ম হব লগীয়া হয় তেতিয়া হলে যাত্ৰা ক'ত পুৰা হ'ল?

যজ্ঞ :- সেই নিয়ত কৰ্মনো কি? শ্ৰীকৃষ্ণই স্পষ্ট কৰিছে যে 'যজ্ঞার্থাৎ কৰ্মণোহন্যত্র লোকোহয়ং কৰ্মবন্ধনঃ' অৰ্জুন। যজ্ঞৰ প্ৰক্ৰিয়াই হ'ল কৰ্ম। ইয়াৰ অতিৰিক্ত পৃথিৱীত যি হকে কৰা হয়, সেইটো এই লোকৰেই বন্ধন, কৰ্ম নহয়। কৰ্মইতো এই সংসাৰ বন্ধনৰ পৰা মোক্ষ দিয়ে। এতিয়া সেই যজ্ঞ কি, যাক ক্ৰিয়ান্বিত কৰিলে কৰ্ম সম্পাদিত হয়? চাৰি আধ্যায়ত শ্ৰীকৃষ্ণই তেৰ-চৈধ্য প্ৰকাৰে যজ্ঞৰ বৰ্ণনা কৰিছে, যি বোৰ সকলো মিলাই পৰমাত্মাত প্ৰবেশ কৰাব পৰা বিধি বিশেষৰ চিত্ৰণ হয়-যি শ্বাসৰ দ্বাৰা, ধ্যানৰ দ্বাৰা, চিন্তন আৰু ইন্দ্ৰিয় সংযম ইত্যাদিৰ দ্বাৰা সিদ্ধ হয়। ভৌতিক দ্ৰব্যৰে সিদ্ধ হোৱা যজ্ঞ অত্যন্ত কম। আপুনি কোটি হৰন নকৰক কিয়? সম্পূৰ্ণ যজ্ঞ মন আৰু ইন্দ্ৰিয় সমূহৰ অন্তঃক্ৰিয়াৰ দ্বাৰা হে সিদ্ধ হয়। পূৰ্ণ হোৱাত যজ্ঞই যাৰ সৃষ্টি কৰে, সেই অমৃততত্ত্বক জনাৰ নামেই হ'ল জ্ঞান। সেই জ্ঞানামৃত পান কৰোতা যোগী সনাতন ব্ৰহ্মাত প্ৰবেশ পায়। য'ত প্ৰবেশ কৰিব লগীয়া আছিলে কৰিলে, তেতিয়া আকৌ সেই পুৰুষৰ কৰ্ম কৰাৰ কোনো প্ৰয়োজন নাই। সেই কাৰণে সম্পূৰ্ণ কৰ্ম সেই সাক্ষাৎকাৰৰ সৈতে জ্ঞানত শেষ হৈ যায়। কৰ্ম কৰাৰ বন্ধনৰ পৰা তেওঁ মুক্ত হৈ যায়। এইদৰে নিৰ্দ্ধাৰিত যজ্ঞক কাৰ্য্যৰূপ দিয়াই হ'ল কৰ্ম। কৰ্মৰ শুদ্ধ অৰ্থ হ'ল - আৰাধনা।

এই নিয়ত কৰ্ম, যজ্ঞার্থ কৰ্ম বা তদৰ্থ কৰ্মৰ অতিৰিক্ত গীতাতে অন্য কোনো কৰ্ম নাই। ইয়াৰ ওপৰতে শ্ৰীকৃষ্ণই ঠায়ে-ঠায়ে জোৰ দিছে। ছয় আধ্যায়ত 'নিয়তকৰ্ম' ইয়াকে তেখেতে বুলি কৈছে। যোগ আধ্যায়ত কৈছে যে কাম, ক্ৰোধ আৰু লোভ ত্যাগ কৰিলে হে সেই কৰ্ম আৰম্ভ হয়, যিয়ে পৰম শ্ৰেয় প্ৰদান কৰে। সাংসাৰিক কৰ্মত যি যিমান ব্যস্ত, তাৰ ওচৰত কাম-ক্ৰোধ আৰু লোভ সিমানেই বেছিকৈ সজ্জিত হৈ থাকে, সমৃদ্ধি পাই থাকে। এই নিয়ত কৰ্মক তেখেতে শাস্ত্ৰ বিধানোক্ত কৰ্মৰ সংজ্ঞা দিছে। গীতা নিজেই পূৰ্ণ শাস্ত্ৰ বিধানোক্ত কৰ্মৰ সংজ্ঞা দিছে। গীতা নিজেই পূৰ্ণ শাস্ত্ৰ। সৰ্বোপৰি শাস্ত্ৰ হ'ল বেদ। বেদৰ সাৰ উপনিষদ আৰু সেই সকলোৰে সাৰাংশ যোগেশ্বৰ

শ্ৰীকৃষ্ণৰ এই বাণী হ'ল গীতা। সোঁতৰ আৰু ওঠৰ আধ্যাত্মিক শাস্ত্ৰবিধিৰ দ্বাৰা নিৰ্দ্ধাৰিত কৰ্ম, নিয়ত কৰ্ম, কৰ্তব্য কৰ্ম আৰু পুণ্য কৰ্মৰে ইঙ্গিত কৰি তেখেতে বাৰে-বাৰে দৃঢ় কৰি কৈছে যে নিয়ত কৰ্মই হ'ল পৰম কল্যাণকাৰক।

যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই ইমান জোৰ দিয়া স্বত্বেও আপুনি সেই নিয়ত কৰ্ম নকৰে, শ্ৰীকৃষ্ণৰ কথা নামানি ওলট-পালট কল্পনা কৰে যে সংসাৰত যিয়েই কৰা হয়, সেয়াই কৰ্ম। কোনো ত্যাগ কৰাৰ আৱশ্যক নাই, মাত্ৰ ফলৰ কামনা নকৰিলেই, হৈ গ'ল নিষ্কাম কৰ্মযোগ। কৰ্তব্য ভাৱনাৰে কৰা, হৈ গ'ল কৰ্তব্য-যোগ। যিয়েই কৰা, নাৰাষণক সমৰ্পণ কৰি দিয়া হৈ গ'ল সমৰ্পণ যোগ। এইদৰে যজ্ঞৰ নাম আহিলেই আমি ভূত-যজ্ঞ, পিতৃ-যজ্ঞ, পঞ্চযজ্ঞ, বিষ্ণুৰ বাবে কৰা যজ্ঞ গঢ়ি লওঁ আৰু তাৰে ক্ৰিয়াত স্বাহা কবলৈ ধৰোঁ। যদি শ্ৰীকৃষ্ণই স্পষ্ট কৰি নকলেহেতেন, তেতিয়াহলে আমি সকলো কৰ্মকে কৰিলোহেতেন। কৈছে যেতিয়া, যিমান কৈছে অন্ততঃ সিমান কৰা হওঁক। কিন্তু আমি নকৰোঁ, নেমানো। পূৰ্বৰ পৰা বহুতো ৰীতি-নীতি, পূজা-পদ্ধতি আমাৰ মস্তিষ্কত সোমাই গৈছে। বাহ্যিক বস্তুক আমি বেচি বা কাৰোবাক দি পলাই যাব পাৰোঁ; কিন্তু এই পূৰ্বৰ পৰা মস্তিষ্কত সোমোৱা বোৰে আমাৰ পিছনেৰে। শ্ৰীকৃষ্ণৰ শব্দকো আমি সেইবোৰৰ অনুৰূপ গ্ৰহণ কৰো। গীতা অতি সৰল ভাৱত বুজিব পৰাকৈ সংস্কৃতত আছে। আপুনি অন্নয় অৰ্থ ভাঙিলেও সন্দেহ নাথাকে। এই চেষ্টা প্ৰস্তুত কিতাপ খনত কৰা হৈছে।

যুদ্ধ :- যদি যজ্ঞ আৰু কৰ্ম - এই দুটা প্ৰশ্নৰ যথার্থ উত্তৰ আপুনি বুজি পায়, তেতিয়া হলে যুদ্ধ, বৰ্ণ-ব্যৱস্থা, বৰ্ণসংকৰ, জ্ঞান যোগ, কৰ্মযোগ অথবা সংক্ষেপত সম্পূৰ্ণ গীতাই আপুনি বুজিব পাৰিব। অৰ্জুনে যুদ্ধ কৰিব নিবিচাৰিছিলে। তেওঁ ধনু পেলাই ৰথৰ শেষ ভাগত গৈ বহি পৰিছিল; কিন্তু যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই একমাত্ৰ কৰ্মৰ শিক্ষা দিয়েই কৰ্মক দৃঢ় কৰাই নহয় বৰঞ্চ অৰ্জুনক সেই কৰ্মত লগাইও দিলে। যুদ্ধ হৈ গ'ল ইয়াত সন্দেহ নাই। গীতাৰ পোন্ধৰ-বিশটা শ্লোকত এনেদৰে আছে যত বাৰে-বাৰে কৈছে, অৰ্জুন। তুমি যুদ্ধ কৰা। কিন্তু এটাও শ্লোক এনেদৰে নাই, যি বাহ্যিক কাটিবলৈ, মাৰিবলৈ সমৰ্থন কৰিছে। (দ্রষ্টব্য - আধ্যায় -২,৩,১১,১৫ আৰু ১৮) কিয়নো যি কৰ্মৰ

ওপৰত জোৰ দিছে- সেইটো হ'ল নিংয়ত কৰ্ম, যি একান্ত স্থানত সেৱন হয়, চিত্তক চাৰিও ফালৰ পৰা সাৰটি ধ্যান কৰাৰ পৰা হয়। যদি কৰ্মৰ স্বৰূপ এয়াই হয়, চিত্ত একান্ত ধ্যানতেই যদি লাগি থাকে তেতিয়া হ'লে যুদ্ধ কেতিয়া হ'ল? যদি গীতাত উল্লেখিত কল্যাণ যুদ্ধই কৰিব লগীয়া হয়, তেতিয়া আপুনি গীতাৰ পিছ এৰক। আপোনাৰ সন্মুখত অৰ্জুনৰ নিচিনাযুদ্ধৰ পৰিস্থিতিতো নাই। বস্তুতঃ তেতিয়াও সেই পৰিস্থিতি আছিল আৰু আজিও সেই একেদৰেই আছে। যেতিয়া আপুনি চাৰিওফালৰ পৰা চিত্তক টানি আনি হৃদয়-দেশত ধ্যান কৰিব ধৰে, তেতিয়া কাম, ক্ৰোধ, বাগ-দ্বেষ ইত্যাদি বিকাৰ আপোনাৰ চিত্তত টিকিবলৈ নিদিব। সেই বিকাৰবোৰৰ লগত সংঘৰ্ষ কৰা, সিহঁতৰ অন্ত কৰাই হ'ল যুদ্ধ। বিশ্বত যুদ্ধ হৈয়ে থাকে; কিন্তু সেইবোৰৰ পৰা কল্যাণ নহয়, বৰঞ্চ বিনাশহে হয়। তাক শান্তি কওক অথবা পৰিস্থিতি। অন্য কোনো শান্তি এই জগতত পাবলৈ নাই। শান্তি তেতিয়াই পোৱা যায়, যেতিয়া এই আত্মাই নিজৰ শাস্ততক প্ৰাপ্ত কৰে। এয়াই একমাত্ৰ শান্তি, যাৰ পাছত কোনো অশান্তি নাই। কিন্তু এই শান্তি সাধনাৰ দ্বাৰাহে পোৱা যায়, তাৰ কাৰণে নিৰ্দিষ্ট কৰ্মৰ বিধান আছে।

বৰ্ণ :- সেই কৰ্মকেই চাৰি ভাগত বিভক্ত কৰা হয়। চিন্তনততো সকলোৱে লাগি থকা হয়; কিন্তু কোনোৱাই শ্বাস-প্ৰশ্বাসৰ গতি নিৰুদ্ধ কৰিবৰ সক্ষম হয়; কোনোৱাই আৰম্ভনীত দুই ঘণ্টা চিন্তনত বহিও দহ মিনিটো নিজৰ পক্ষলৈ আনিব নোৱাৰে। এনে স্থিতি থকা অল্পজ্ঞ সাধক শুদ্ৰ শ্ৰেণীৰ হয়। তেওঁ নিজৰ স্বাভাৱিক ক্ষমতা অনুসৰি পাৰিচৰ্য্যাৰ দ্বাৰাই কৰ্ম আৰম্ভ কৰে। ক্ৰমশঃ বৈশ্য, ক্ষত্ৰিয় আৰু বিপ্ৰ শ্ৰেণীৰ ক্ষমতা তাৰ স্বভাৱত আহি পৰে। তেওঁ উন্নত হৈ গৈ থাকে। কিন্তু সেই ব্ৰাহ্মণ শ্ৰেণী দোষ-যুক্ত হয়; কিয়নো এতিয়াও সেই ব্ৰহ্ম বেলেগ আছে। ব্ৰহ্মত প্ৰৱেশ ঘটিলে তেওঁ ব্ৰাহ্মণো হৈ নাথাকে। বৰ্ণৰ অৰ্থ হ'ল আকৃতি। এই শৰীৰ আপোনাৰ আকৃতি নহয়। আপোনাৰ আকৃতি তেনেকুৱাই যেনেকুৱা আপোনাৰ বৃত্তি। শ্ৰীকৃষ্ণই কয়- অৰ্জুন। পুৰুষ শ্ৰদ্ধাময়; সেইকাৰণে কৰবাত তেওঁৰ শ্ৰদ্ধা অৱশ্যে থাকিবই। যেনে শ্ৰদ্ধাৱান সেই পুৰুষ, স্বয়ং তেওঁ সেয়াই। যেনে বৃত্তি তেনে পুৰুষ। বৰ্ণ, কৰ্মৰ ক্ষমতাৰ আন্তৰিক মাপকাঠি। কিন্তু মানুহে নিয়ত কৰ্ম বাদ দি বাহিৰি সমাজত জন্মৰ

আধাৰত জাতিকেই বৰ্ণ বুলি মানি তেওঁ লোকৰ জীৱিকা নিশ্চিত কৰি দিয়ে, যি এটা সামাজিক ব্যৱস্থা মাত্ৰ হয়। তেওঁলোকে কৰ্মৰ যথার্থ ৰূপক ভাঙি-ছিঙি দিয়ে, যাৰ দ্বাৰা তেওঁলোকৰ অন্তঃসাৰ শূন্য সামাজিক মৰ্য্যদা আৰু জীৱিকাক আঘাত নকৰক। কালান্তৰত বৰ্ণৰ নিৰ্দ্ভাৰণ মাত্ৰ জন্মৰ দ্বাৰা হ'ব ধৰিলে। এনে একো নহয়। শ্ৰীকৃষ্ণই ক'লে জাতি বৰ্ণ মোৰ দ্বাৰা সৃষ্টি হ'ল। কি ভাৰতৰ বাহিৰে সৃষ্টি নহ'ল নে? আন ঠাইত এই জাতি বিলাকৰ অস্তিত্বই নাই। ভাৰতত ইয়াৰ অন্তৰ্গত লাখ-লাখ জাতি -উপজাতি আছে। শ্ৰীকৃষ্ণই কি মনুষ্যক ভাগ কৰিছিল নে? নহয়; গুণৰ আধাৰত কৰ্মক ভাগ কৰিলে। 'গুণকৰ্ম বিভাগশঃ' কৰ্ম ভাগ কৰা হ'ল। কৰ্ম বুজি পালে আৰু বৰ্ণ বুজি পালে বৰ্ণ সংকৰৰ যথার্থ ৰূপ আপুনি বুজিব পাৰিব।

বৰ্ণ সংকৰ :- এই কৰ্ম পথৰ পৰা চ্যুত হোৱাই হ'ল বৰ্ণ সংকৰ। আত্মাৰ শুদ্ধ বৰ্ণই হ'ল পৰমাত্মা। তাত প্ৰৱেশ কৰিব পৰা কৰ্মৰ পৰা আতৰি প্ৰকৃতিত সোমাই যোৱাই হ'ল বৰ্ণসংকৰ। শ্ৰীকৃষ্ণই স্পষ্ট কৰিছিল যে এই কৰ্মক নকৰাকৈ সেই স্বৰূপ কোনেও নাপায় আৰু প্ৰাপ্তীৱান মহাপুৰুষক কৰ্ম কৰিলেও কোনো লাভ নাই আৰু এৰিলেও কোনো ক্ষতি নাই। তথাপিও লোক সংগ্ৰহৰ বাবে তেওঁ কৰ্মত লাগি থাকে। সেই সকল মহাপুৰুষৰ দৰে মোৰো প্ৰাপ্ত হোৱাৰ যোগ্য বস্তু অপ্ৰাপ্য হৈ থকা নাই, তথাপিও পাছৰ বিলাকৰ হিতৰ ইচ্ছা কৰি কৰ্মত লাগি থাকোঁ। যদি নকৰিলোহেঁতেন; তেতিয়া সকলো বৰ্ণ সংকৰ হৈ যায়। স্ত্ৰীসকল দুষিত হোৱাত বৰ্ণসংকৰ হোৱা শুনা গৈছে; কিন্তু ইয়াত শ্ৰীকৃষ্ণই কয় যে স্বৰূপ পস্থিত মহাপুৰুষে কৰ্ম নকৰে তেতিয়াহলে লোক বৰ্ণসংকৰ হৈ যাব। সেই কহাপুৰুষৰ নকল কৰি আৰাধনা বন্ধ কৰি দিলে তেওঁ প্ৰকৃতিতে ঘূৰি ফুৰিব। বৰ্ণসংকৰ হৈ যাব; কিয়নো এই কৰ্ম কৰিয়েই সেই নৈৰ্দ্ধৰ্মৰ স্থিতি, নিজৰ শুদ্ধবৰ্ণ পৰমাত্মাক পাব পাৰি।

জ্ঞানযোগ তথা কৰ্মযোগ :- কৰ্ম একেই- নিয়ত কৰ্ম, আৰাধনা; কিন্তু তাক কৰাৰ দৃষ্টিকোণ দুটা। নিজৰ শক্তিক বুজি লৈ, লাভ-লোকচানৰ নিৰ্ণয় লৈ এই কৰ্ম কৰা হ'ল- 'জ্ঞান যোগ'। এই মাৰ্গৰ সাধকে জানে যে "আজি মোৰ এই স্থিতি, আগলৈ এই ভূমিকা হব। আকৌ নিজৰ স্বৰূপ প্ৰাপ্ত কৰিম"।

এই ভাৱনাকে লৈ কৰ্মত প্ৰবৃত্ত হয়। নিজৰ স্থিতিৰ জ্ঞান ৰাখি চলে, সেই সমৰ্পণেৰে সৈতে কৰ্মত প্ৰবৃত্ত হোৱা, লাভ-লোকচানৰ নিৰ্ণয় ইষ্টৰ ওপৰত নিৰ্ভৰ কৰি চলা হ'ল নিষ্কাম কৰ্মযোগ, ভক্তিৰ্মাগ। দুইটাৰে প্ৰেৰক হ'ল সদগুৰু। একেজন মহাপুৰুষৰ পৰা শিক্ষা লৈ এজন স্বাৱলম্বী হৈ সেই কৰ্মত প্ৰবৃত্ত হয় আৰু সিজনতেওঁৰ পৰা শিক্ষা লৈ তেখেতৰ ওপৰতে নিৰ্ভৰশীল হৈ কৰ্মত প্ৰবৃত্ত হয়। মাত্ৰ প্ৰভেদ ইমানেই। সেইকাৰণে যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছে- অৰ্জুন। সাংখ্য যোগৰ দ্বাৰা যি পৰম সত্য প্ৰাপ্ত হয়, সেই পৰম সত্য নিষ্কাম কৰ্মযোগৰ দ্বাৰাও প্ৰাপ্ত হয়; যিয়ে দুটাতে একে দেখে তেওঁহে যথার্থত দেখে। দুটাৰে ক্ৰিয়া কৈ দিয়া তত্ত্বদৰ্শী এজনেই, ক্ৰিয়াও একেই- আৰাধনা। কামনাক ত্যাগ কৰি দুইটাই কৰে, আৰু পাৰণামো একেই হয়। মাত্ৰ কৰ্মৰ দৃষ্টিকোন দুটা।

এক পৰমাত্মা :- নিয়ত কৰ্ম হ'ল মন আৰু ইন্দ্ৰিয় সমূহৰ এটা নিৰ্দ্ধাৰিত আন্তঃক্ৰিয়া। যদি কৰ্মৰ এই স্বৰূপ হয়, তেতিয়াহলে বাহিৰত মন্দিৰ-মছজিদ, গীঁজা বনাই দেৱ-দেৱীৰ মুৰ্ত্তি বা প্ৰতীক পূজা কৰাটো কিমান যুক্তি সংগত হয়? ভাৰতত হিন্দু বোলাওঁতা সমাজ (মূলতঃ তেওঁলোক সনাতন ধৰ্মৰ হয়। তেওঁলোকৰ পূৰ্বজ সকলে পৰম সত্যৰ সন্ধান কৰি দেশে-বিদেশে তাৰ প্ৰচাৰ কৰিছিল। সেই পথত চলোঁতা বিশ্বাস যতেই নাথাকক তেওঁ সনাতন ধৰ্মী। ইমান গৌৰৱশালী হিন্দু সমাজ) কামনাৰ বলি হৈ বিভিন্ন ভুল কৰি আছে। শ্ৰীকৃষ্ণই কয়- অৰ্জুন। দেৱতাৰ স্থানত দেৱতা নামৰ কোনো শক্তি নাই। য'ত মনুষ্যৰ শ্ৰদ্ধা হয়, তাৰ পিছত ময়ে থাকি ফল প্ৰদান কৰোঁ। তাৰ শ্ৰদ্ধাক পুষ্টি কৰোঁ; কিয়নো ময়ে সৰ্বত্ৰতে আছোঁ। কিন্তু তাৰ সেই পূজা অবৈধ, তাৰ ফল নাশৱান। কামনাৰ দ্বাৰা যাৰ জ্ঞান হৰণ হৈ গৈছে, তেনে মুঢ়বুদ্ধিয়ে অন্য দেৱতাক পূজা কৰে। সাত্বিক লোকে দেৱতাক পূজা কৰে, ৰাজসীয়ে যক্ষ-ৰাক্ষসক আৰু তামসীয়ে ভূত-প্ৰেতক পূজা কৰে। ঘোৰ তপস্যাও কৰে। কিন্তু অৰ্জুন। তেওঁলোকে শৰীৰত স্থিত হোৱা ভূত-প্ৰাণীক আৰু অন্তঃকৰণ স্থিত মোক-পৰমাত্মাক দ্বেষকৰে, নুপূজে। তেওঁলোকক তুমি আসুৰী স্বভাৱ যুক্ত বুলি জানা। ইয়াতকৈ অধিক শ্ৰীকৃষ্ণই আৰু নো কি ক'ব? তেখেতে স্পষ্ট

কৰি ক'লে- অৰ্জুন। ঈশ্বৰ সকলো প্ৰাণীৰ হৃদয়তে থাকে, মাত্ৰ তেওঁৰ শৰণলৈ যোৱা। পূজাৰ স্থল হৃদয়তে আছে, বাহিৰত নহয়। তথাপিও মানুহে শিল-পাহাৰ, মন্দিৰ-মছজিদ, দেৱ-দেৱীৰ পিছ নেৰেই। তাৰ লগতে শ্ৰীকৃষ্ণৰো এটা প্ৰতিমা বঢ়াই লয়। শ্ৰীকৃষ্ণৰে সাধনাত জোৰ দিওঁতা আৰু আজিৰ মূৰ্ত্তি পূজাৰ বিৰোধ কৰোতা বুৰো মূৰ্ত্তি তেওঁৰ অনুগামী সকলে বনাই লয় আৰু পূজা কৰিবলৈ (ধূপ-চাকী দেখুৱাবলৈ) ধৰে, আনহাতে বুদ্ধই কৈছিলে- আনন্দ। তথাগত সকলৰ শৰীৰ পূজাত সময় নষ্ট নকৰিবা।

মন্দিৰ, মছজিদ, গীৰ্জা, তীৰ্থ, মূৰ্ত্তি আৰু স্মাৰকৰ দ্বাৰা পূৰ্বৰতী মহাপুৰুষ সকলৰ স্মৃতিবোৰ সজীৱ কৰি ৰখা হয়, যাৰ ফলত তেওঁলোকৰ উপলক্ষী বোৰৰ স্মৰণ হৈ থাকে। মহাপুৰুষ সকলৰ ভিতৰত স্ত্ৰী-পুৰুষ সকলো আছে। জনকৰ কন্যা 'সীতা' আগৰ জন্মত এজনী ব্ৰাহ্মণ কন্যা আছিল। নিজৰ দেউতাৰ প্ৰেৰণাত পৰম ব্ৰহ্মাক পাবৰ বাবে তেওঁ তপস্যা কৰিছিল; কিন্তু সফল হব নোৱাৰিলে। পিছৰ জন্মত তেওঁ ৰামক প্ৰাপ্ত কৰিলে আৰু চিন্ময়, অবিনাশী, আদিশক্তিৰ ৰূপত প্ৰতিষ্ঠিত হ'ল। ঠিক এইদৰে ৰাজকুলত উৎপন্ন হোৱা মীৰাতো পৰমাত্মাৰ ভক্তি প্ৰস্ফুটিত হ'ল। সকলো ত্যাগ কৰি তেওঁ ভগৱানৰ চিন্তনত লাগি গ'ল। বাধাৰ সন্মুখীন হ'ল আৰু সফল হ'ল। তেওঁৰ স্মৃতি সজীৱ কৰিবৰ বাবে মন্দিৰ সাজিলে, স্মাৰক সাজিলে- যাতে সমাজ তেওঁৰ উপদেশৰ দ্বাৰা অনুপ্ৰাণিত হব পাৰে। মীৰা, সীতা অথবা এই পথত সন্ধান কৰোতাঁ প্ৰত্যেক মহাপুৰুষ সকল আমাৰ আদৰ্শ। আমি তেওঁলোকৰ পদানুসৰণ কৰা উচিত; কিন্তু ইয়াতকৈ ডাঙৰ ভুলকি হব- যদি আমি মাত্ৰ তেওঁলোকৰ চৰণত এপাহ ফুল অৰ্পণ কৰোঁ, চন্দন লগাই দিওঁ আৰু নিজৰ কৰ্তব্যক ইয়াতে ইতি শ্ৰী কৰি দিওঁ?

প্ৰায়ে যাৰ আদৰ্শ থাকে, তেওঁৰ মূৰ্ত্তী, চিত্ৰ, খৰম, তেওঁৰ স্থানৰ বা তেওঁৰ সম্পৰ্ক থকা বস্তু দেখিলে মনত শ্ৰদ্ধা জাগৃত হয়। এইটো বাৰু উচিত। আমিও নিজৰ গুৰুদেৱৰ ভগৱানৰ চিত্ৰ জাবৰত নেপেলাও; কিয়নো তেওঁ আমাৰ আদৰ্শ। তেওঁৰ প্ৰেৰণা আৰু বচন অনুসৰি আমি চলোঁ। তেওঁৰ যি স্বৰূপ, ক্ৰমে গৈ তাৰ প্ৰাপ্তী আমাৰ অভিষ্ট আৰু এইটো হ'ল তেওঁৰ যথার্থ পূজা।

ইয়ালৈকে ঠিকে আছে, যি মূলত আদৰ্শ, তেওঁৰ নিৰাদৰ কৰা উচিত নহয়; কিন্তু তেওঁক পত্ৰ-পুষ্প অৰ্পণ কৰিয়ে ভক্তি বুলি ভাবি ললে, তাকে কল্যাণ সাধন বুলি ভাবি ললে আমি লক্ষ্যত কৈ দূৰতে থাকি যাম।

নিজৰ আদৰ্শক, উপদেশক হৃদয়ংগম কৰিবলৈ তথা তাত চলাৰ প্ৰেৰণা গ্ৰহণ কৰিবলৈহে স্মাৰকৰ উপযোগ কৰা হয়; লাগিলে তাক আশ্ৰম, মন্দিৰ, মচজিদ, গীৰ্জা, মঠ, বিহাৰ, গুৰুদ্বাৰ বা যিয়েই নাম নিদিয়ক। অৱশ্যে সেই কেন্দ্ৰৰ সম্বন্ধ ধৰ্মৰ লগত থাকে যদিও যাৰ প্ৰতিমা আছে, তেওঁ কৰিলে কি? আৰু পালে কি? তপস্যা কেনেকৈ কৰিলে? কেনেকৈ প্ৰাপ্ত কৰিলে? মাত্ৰ এইটো শিকিবৰ বাবে আমি তালৈ যাওঁ; কিন্তু যদি এই স্থানত মহাপুৰুষ সকলৰ আদৰ্শৰ কথা কোৱা নাযায়, কৰি দেখুৱা নহয়, কল্যাণৰ ব্যৱস্থা তাত যদি নাই তেতিয়াহলে সেই স্থান ভুলতে আছে। তাত গলে আপোনাৰ লোকচান হে হ'ব। ব্যক্তিগত ৰূপত ঘৰে-ঘৰে, গলীয়ে-গলীয়ে গৈ উপদেশ দিয়াৰ অপেক্ষা সামূহিক উপদেশ কেন্দ্ৰ ৰূপে ধাৰ্মিক স্থানৰ স্থাপন কৰা হৈছিল; কিন্তু কালান্তৰত এই প্ৰেৰণা স্থল বিলাকে মূৰ্ত্তি-পূজা তথা অন্ধ-পৰম্পৰাই ধৰ্মৰ স্থান গ্ৰহণ কৰি ললে। ইয়াৰ পৰাই ভ্ৰম আৰম্ভ হ'ল। গ্ৰন্থঃ- এইদৰে কিতাপৰ অধ্যয়নো আৱশ্যক আছে, যাৰ ফলত আপুনি সেই নিৰ্দিষ্ট কৰ্ম বা ক্ৰিয়াক বুজি পাব, যাক যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই নিয়ত কৰ্ম বুলি কৈছে আৰু যেতিয়া বুজি পাব তৎক্ষণাৎ কৰিবলৈ আৰম্ভ কৰিব। পাহৰি যাব ধৰিলে আকৌ অধ্যয়ন কৰিবলৈ ধৰে। এইটো নহয় যে কিতাপক হাত যোৱা কৰি ফুল-চন্দন ছটিয়াই ৰাখি দিয়ক। গ্ৰন্থ হ'ল মার্গ নিৰ্দেশনৰ চিন, যি শেষ পৰ্যন্ত লগ দিয়ে। চাই চাই আগ বাঢ়ি গৈ থাকে নিজৰ লক্ষ্যৰ ফালে। যেতিয়া ইষ্টক হৃদয়েৰে ধৰি লব, তেতিয়া ইষ্টই কিতাপ হৈ যায়। সেয়ে স্মৃতি সজাই ৰখা হানী নহয়, কিন্তু এই স্মৃতি-চিনৰ পূজা কৰিয়েই সম্ভূষ্ট থকাটোহে হানীকাৰক।

ধৰ্মঃ- (আধ্যায় ২/১৬-২৯) যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণৰ অনুসৰি অসত বস্তুৰ অস্তিত্ব নাই আৰু সত্যৰ কেতিয়াও অভাৱ নাই। পৰমাত্মাই সত্য, শাস্ত, অজৰ-অমৰ-অপৰিবৰ্ত্তনশীল আৰু সনাতন; কিন্তু সেই পৰমাত্মা অচিন্ত্য আৰু অগোচৰ, চিত্তৰ তৰঙ্গৰ পৰা দূৰত। চিত্তৰ নিৰোধ কেতিয়া হয়? চিত্ত নিৰোধ

কৰি সেই পৰমাত্মাৰ পাবৰ বাবে বিধি-বিশেষৰ নাম কৰ্ম। এই কৰ্মক কাৰ্য্যৰূপ দিয়াই ধৰ্ম, দায়িত্ব।

গীতা (অধ্যায় ২/৪০) ত আছে যে অৰ্জুন ঙ্গ এই কৰ্ম যোগত আৰম্ভনীৰ নাশ নাই। এই কৰ্মৰূপী ধৰ্মৰ বিধিঃ মাত্ৰ সাধনে জন্ম-মৃত্যুৰ মহান ভয়ৰ পৰা উদ্ধাৰ কৰে অৰ্থাৎ এই কৰ্মৰ কাৰ্য্যৰূপ দিয়াই হ'ল ধৰ্ম।

এই নিয়ত কৰ্ম (সাধন পথ) ক সাধকৰ স্বভাৱত উপলব্ধ ক্ষমতাৰ অনুসৰি চাৰি ভাগত ভাগ কৰা হৈছে। কৰ্মক বুজি মনুষ্যই যেতিয়াৰ পৰা আৰম্ভ কৰে, সেই আৰম্ভণীত তেওঁ শুদ্ৰ হৈ থাকে। ক্ৰমশঃ বিধিৰ মতে গৈ থাকিলে বৈশ্য হয়। প্ৰকৃতিৰ লগত সংঘৰ্ষ কৰিব পৰা ক্ষমতা আৰু শৌৰ্য্য-বীৰ্য্য আহিলেই সেই ব্যক্তি ক্ষত্ৰিয় হয় আৰু ব্ৰহ্মাৰ দৰে হোৱাৰ ক্ষমতা জ্ঞান (বাস্তৱিক ভাবে জনা), বিজ্ঞান (ঈশ্বৰীয় বাণী প্ৰাপ্তী কৰা), সেই অস্তিত্বৰ ওপৰত নিৰ্ভৰ থাকিব পৰা ক্ষমতা এনে যোগ্যতা প্ৰাপ্ত হলেই তেওঁ ব্ৰাহ্মণ হয়। সেই কাৰণে যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছে যে(গীতাআধ্যায় ১৮/৪৬-৪৭) স্বভাৱত পৰা ক্ষমতাৰ অনুসৰি কৰ্মত লগাই হ'ল স্বধৰ্ম। পাতল বা লঘু হলেও স্বভাৱৰ পৰা উপলব্ধ স্বধৰ্ম শ্ৰেয়তৰ হয় আৰু ক্ষমতা অৰ্জন নকৰাকৈ অন্যৰ উন্নত কৰ্মৰ পালনো হানীকাৰক। স্বধৰ্মত মৰাও শ্ৰেয়; কিয়নো বস্ত্ৰ সলালেই পূৰ্ব কৰ্ম সলনী নহয়। তাৰ সাধনাৰ ক্ৰম তাৰ পৰাই পূৰ্ণৰ আৰম্ভ হব, য'ৰ পৰা এৰিছিলে। সেইদৰে গৈ গৈ তেওঁ পৰম সিদ্ধি পদ প্ৰাপ্ত কৰে।

ইয়াতে আকৌ জোৰ দি কৈছে যে যি পৰমাত্মাৰ দ্বাৰা সকলো প্ৰাণীৰ উৎপত্তি হৈছে, যি সৰ্বত্ৰ ব্যাপ্ত আছে, স্বভাৱৰ দ্বাৰা উৎপন্ন হোৱা ক্ষমতা অনুসৰি তাক ভালদৰে পূজা কৰি মানৱে পৰম সিদ্ধি প্ৰাপ্ত কৰে। অৰ্থাৎ নিশ্চিত বিধিৰ দ্বাৰা এক পৰমাত্মাৰ চিন্তনেই ধৰ্ম।

ধৰ্মত প্ৰৱেশ কাৰ হব? ইয়াক কৰাৰ অধিকাৰ কাৰ আছে? ইয়াক স্পষ্ট কৰি যোগেশ্বৰে কয় যে “অৰ্জুন। অত্যন্ত দুৰাচাৰীও যদি অনন্য ভাৱেৰে মোক ভজে (অনন্য মানে অন্য নহয়) মোক এৰি অন্য কাকো নভজি মাত্ৰ মোৰে ভজনা কৰে তেতিয়া তেওঁ শীঘ্ৰেই ধৰ্মাত্মা হৈ যায়। তাৰ আত্মা ধৰ্মৰ

লগত সংযুক্ত হৈ যায়।” সেয়ে শ্ৰীকৃষ্ণৰ অনুসৰি -ধৰ্মাত্মা তেওঁ, যি এক পৰমাত্মাত অনন্য নিষ্ঠাৰে লাগি আছে। ধৰ্মাত্মা তেওঁ, যি এক পৰমাত্মাৰ প্ৰাপ্তীৰ বাবে নিয়ত কৰ্মৰ আচৰণ কৰিছে। ধৰ্মাত্মা তেওঁ, যি স্বভাৱেৰে নিৰ্দিষ্ট ক্ষমতা অনুসৰি পৰমাত্মাৰ অনুসন্ধানত সংলগ্ন আছে।

শেষত কৈছে যে ‘ সৰ্বধৰ্মান্ পৰিত্যজ্য মামেকং শৰণং ব্ৰজ’ অৰ্জুন সম্পূৰ্ণ ধৰ্মৰ চিন্তা বাদ দি এক মোৰে শৰণলৈ আহা। সেয়ে এক পৰমাত্মাৰ প্ৰতি সমৰ্পিত ব্যক্তিয়েই হ'ল ধাৰ্মিক। এক পৰমাত্মাত শ্ৰদ্ধা স্থিৰ কৰাই ধৰ্ম। সেই এক পৰমাত্মাৰ প্ৰাপ্তীৰ নিশ্চিত ক্ৰিয়া কৰাই ধৰ্ম। এই স্থিতিপ্ৰাপ্ত মহাপুৰুষ, আত্মতৃপ্ত মহাপুৰুষৰ সিদ্ধান্তহে সৃষ্টিত একমাত্ৰ ধৰ্ম। তেওঁৰ শৰণলৈ যোৱা উচিত যে সেই মহাপুৰুষে কেনেদৰে পৰমাত্মাক প্ৰাপ্ত কৰিলে? কোন মাৰ্গেৰে যোৱা হয়? সেই মাৰ্গ সদায় একেটাই, সেই মাৰ্গেৰে চলাই ধৰ্ম।

ধৰ্ম মনুষ্যৰ আচৰণৰ বস্তু হয়। সেই আচৰণ মাত্ৰ এটাই - এই কৰ্মযোগত নিশ্চয়াত্মক ক্ৰিয়া এটাই ইন্দ্ৰিয় সমূহৰ চেষ্টা আৰু মনৰ ব্যাপাৰক সংযমিত কৰি আত্মাত (পৰাৎপৰ ব্ৰহ্মত) প্ৰবাহিত কৰা (৪/২৭)।

ধৰ্মান্তৰণ :- সনাতন ধৰ্মৰ আদি দেশ ভাৰতত কুৰীতি ইমানকৈ বিস্তাৰিত হৈছিল যে মুছলমান সকলৰ আক্ৰমণৰ সময়ত তেওঁলোকৰ ধৰ্ম আক্ৰমণকাৰীৰ হাতৰ এগৰাহ চাউল খোৱাত, এচলু পানী খোৱাতেই নষ্ট হৈ গৈছিল। ধৰ্ম ভ্ৰষ্টৰ ঘোষণাত হাজাৰ হাজাৰ হিন্দু সকলে আত্মহত্যা কৰিছিল। ধৰ্মৰ বাবে তেওঁলোকে মৰিব পাৰে, কিন্তু ধৰ্ম বুজি পালেহে। ধৰ্ম ছোৱা হৈ গ'ল। লাজুকী লতাৰ দৰে হ'ল। লাজুকী লতা ছুলেই জাপ যায়, কিন্তু এৰি দিলে আকৌ মেল খায়। তেওঁলোকৰ সনাতন ধৰ্মতো এনেকৈ জাপ খালে যে পুণৰ মেল নাখালেই। যি সনাতন আত্মাক ভৌতিক বস্তুৰে স্পৰ্শও কৰিব নোৱাৰে, সেইটো ছুলে খালেই নষ্ট হৈ যায় নে? আপুনি তৰোৱালেৰে কাটিলে মৰে, ধৰ্ম আকৌ ছুলেই মৰি যাবনে? কি সাঁচাকৈ ধৰ্ম নষ্ট হৈ গ'ল নে? কেতিয়াও নহয়, ধৰ্মৰ নামত কিবা কুৰীতি আছিলে, সেইটোহে নষ্ট হৈ গ'ল। ফিৰোজ টোগলকৰ শাসন কালত বয়ানৰ কাজী মুগী সুদীনে ব্যৱস্থা কৰি কৈছিল যে

হিন্দু সকলে নিজৰ মুখ খুলি দিয়া উচিত। যদি কোনোৱা মুচলমানে পিকাব বিচাৰে, তেতিয়া হলে সেই হিন্দু কৃপা পাত্ৰ হব; কিয়নো তাৰ কোনো ধৰ্মই নাই। কোনো বেয়া কলে? মুখত পিকালে এটাহে মুচলমান হব, কুৰাঁত পিকালে তো হাজাৰ হাজাৰ মুচলমান বনিব। মূলতঃ তেওঁ আততায়ী আছিল নে সেই সময়ৰ হিন্দু সমাজ?

যিবিলাকে এনেকৈ ধৰ্ম পৰিবৰ্ত্তন কৰি ললে, তেওঁলোকে কি ধৰ্ম পালে? হিন্দুৰ পৰা মুছলমান হোৱা বা এক ধৰণৰ থকা মেলাৰ পৰা অন্য এটা ধৰণৰ থকা-মেলালৈ যোৱাটো ধৰ্ম নহয়। এইদৰে আঁচনি প্ৰস্তুত কৰি ষড়যন্ত্ৰৰ চীকাৰ বনাই যি জনে ধৰ্ম সলালে তেওঁ কি ধৰ্মাত্মা আছিল? তেওঁতো আৰু ডাঙৰ কুৰীতিৰ চীকাৰ আছিল। হিন্দু সকল তাতে গৈ সোমাই পৰিল। অনুন্নত আৰু পিছপৰা অঞ্চল বোৰক সাম্যতা আনিবৰ বাবে মহম্মদে বিবাহ, তালাক, নামজাৰি, লেন-দেন, সুত, সাক্ষী, শপত, প্ৰায়শ্চিত্ত, কাম-দাম, খোৱা-বোৱা, থকা-মেলা ইত্যাদি বিষয়ত এটা সামাজিক ব্যৱস্থা দিলে আৰু মূৰ্ত্তি-পূজা, শিৰ্ক, ব্যভিচাৰ, চুৰি, মদ, জুৱা মা-আইতা ইত্যাদিৰ লগত বিবাহ কৰাত প্ৰতিবন্ধ লগালে। সমলিঙ্গ তথা ৰজস্বলা মৈথুনত নিষেধাজ্ঞা লগাই, ৰোজাৰ দিনতো এইবোৰৰ বেহাই দি স্বৰ্গত বহুতো সম বয়স্ক, অপূৰ্ব সুন্দৰী আৰু কিশোৰ বালককো প্ৰলোভন দিছিল। এইটো কোনো ধৰ্ম নাছিল। এক প্ৰকাৰৰ সামাজিক ব্যৱস্থা আছিল এনেদৰে কিছু কৈ তেখেতে বাসনাত ডুব যোৱা সমাজক সিফালৰ পৰা ঘূৰাই নিজৰ পিনে কৰি লৈছিল। স্ত্ৰী সকলক স্বৰ্গত কিমান পুৰুষ প্ৰাপ্ত হব? এই বিষয়ে তেওঁ ভবাই নাছিল। এইটো তেওঁৰ দোষ নাছিল, দোষ সেই দেশ-কাল আৰু পৰিস্থিতিৰ আছিল, য'ত স্ত্ৰী সকলৰ আকাংক্ষাৰ ওপৰত কোনো ধ্যান দিয়া হোৱা নাছিল।

মহম্মদ সাহেবে যাক ধৰ্ম বিষয়ে কৈছিল, সিফালে কাৰো ধ্যানেই নাছিল। তেওঁকৈছিল যে যি পুৰুষৰ এটাও উশাহ খুদাৰ নাম নোলোৱাকৈ খালিকৈ যায়, তাক খুদাই বিচাৰৰ সময়ত এনেদৰে সুধিব, যি দৰে এটা পাপীক পাপৰ বদলি শাস্তিৰ বাবে সোধে। যাৰ শাস্তি হব চিৰকাল নৰক বাস। কিমান নো প্ৰকৃত মুচলমান আছে, যাৰ এটাও উশাহ খালিকৈ নাযায়? কোটাৰ

ভিতৰত কোনো বা এটা থাকিব পাৰে, বাকীতো সকলোৰে উশাহ খালিকৈ যায়, যাৰ শাস্তি সেই পাপীৰ দৰে 'দোজখ' চিৰকাল নৰক বাস। মহম্মদে কৈছিলে যে কোনো মনুষ্যক অত্যাচাৰ কৰিব নালাগে বুলি নকৰে, পশুকো অত্যাচাৰ নকৰে তেওঁ আকাশৰ পৰা খুদাৰ বচন শুনিবলৈ পাব। এই সকলো স্থানৰ বাবে প্ৰযোজ্য আছিলে, কিন্তু পাছৰ বিলাকে কবলৈ ধৰিলে যে মক্কাত এটা মচজিদ আছে, য'ত সেইজীয়া ঘাঁহ উভালিব নাপায়, সেই মচজিদত কোনো পশু মাৰিব নাপায়, তাত কাকো আঘাত দিব নাপায়, পূণৰ একে অৱস্থা প্ৰাপ্ত হ'ল। খুদাৰ বচন শুনাৰ আগতে মহম্মদে কোনো মচজিদ বনাইছিলনে? কেতিয়াবা কোনোবা মচজিদত কোনো ফৰিস্তা নামি আহিছেনে? এই মচজিদ তেওঁলোকৰ স্মৃতিৰ সুৰক্ষিত স্থল হ'ল। মহম্মদৰ কথাৰ অৰ্থ তৰবেজে বুজিছিল, মঞ্জুৰে বুজিছিল, ইকবালে বুজিছিল; কিন্তু তেওঁলোক সাম্প্ৰদায়িকতা সমৰ্থক লোকৰ চিকাৰ হৈছিল, তেওঁলোকক যাতনা দিয়া হৈছিল। সুকৰাতক বিহ পান কৰিবলৈ দিছিল; কিয়নো তেওঁ মানুহক নাস্তিক বনাই আছিল। এই ধৰণৰ আৰোপ যীশুৰ ওপৰতো লগোৱা হৈছিল; কিয়নো তেওঁ বিশ্ৰাম সবাথৰ দিনতো কাম কৰিছিল, অন্ধক দৃষ্টি প্ৰদান কৰিছিল। এইদৰে ভাৰততো হৈছিল। যেতিয়াই কোনোবা প্ৰত্যক্ষ দৰ্শী মহাপুৰুষে সত্যৰ ফালে সংকেত কৰিছিল, তেতিয়াই এই মন্দিৰ-মচজিদ, মঠ-সাম্প্ৰদায় আৰু তীৰ্থ সমূহৰ দ্বাৰা যাৰ জীৱিকা চলি আছে, তেওঁলোকে হয়-হয় কৰিবলৈ ধৰে, অধৰ্ম-অধৰ্ম বুলি চিঞৰিবলৈ ধৰে। কাৰোবাৰ ইয়াৰ ফলত লাখ-কোটিৰ আয় হয় আৰু কাৰোবাৰ এমুঠি অন্ন যোগাৰ হে যেনে তেনে হয়। বাস্তবিকতাৰ প্ৰচাৰত তেওঁলোকে সত্যক ঠন ধৰি উঠিবলৈ নিদিয়া আগলৈও নিদিয়া। ইয়াৰ অতিৰিক্ত তেওঁলোকৰ বিৰোধ কৰাৰ কোনো কাৰণ নাই। বহুতো আগৰ পৰা এওঁলোকৰ স্মৃতি কিয় সংৰক্ষণ কৰি ৰখা হ'ল, তাকো এওঁলোকে নাজানে।

গৃহস্থ লোকৰ অধিকাৰ :- প্ৰায় মানুহে কয় যে যেতিয়া কৰ্মৰ স্বৰূপ এয়াই, যত একান্ত সেৱন, ইন্দ্ৰিয়ৰ সংযম, নিৰন্তৰ চিন্তন আৰু ধ্যান কৰা, তেতিয়া হলে গীতা গৃহস্থ সকলৰ বাবে অনুপযোগী। তেতিয়া হলে গীতা মাত্ৰ সাধু সকলৰ বাবেহে। কিন্তু এনে একো নহয়। গীতা মূলতঃ তেওঁলোকৰ

বাবে যি এই পথৰ পথিক আৰু আংশিক ভাৱে তেওঁলোকৰ বাবেও যি এই পথৰ পথিক হবৰ ইচ্ছা কৰে। গীতাই মানৱ মাত্ৰৰ কাৰণেই সমানে অৰ্থ ৰাখে। সদ্গৃহস্থি সকলৰ বাবেও ইয়াৰ বিশেষ উপযোগ আছে; কিয়নো ইয়াৰ পৰাই কৰ্ম আৰম্ভ হয়।

শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছিল, অৰ্জুনঙ্গ এই নিষ্কাম কৰ্ম যোগত আৰম্ভনৰ নাশ নহয়। ইয়াৰ অলপো সাধনে জন্ম-মৰণৰ মহান ভয়ৰ পৰা উদ্ধাৰ কৰিহে এৰে। আপুনিযে কওক অলপ সাধন কোনে কৰে? গৃহস্থ বা বৈৰাগীয়ে? গৃহস্থিয়ে হে কম সময় দিয়ে, এইটো তেওঁৰ বাবে। আধ্যায় ছয়ছ ত কৈছে - অৰ্জুন। যদি তুমি সম্পূৰ্ণ পাপীতকৈও অধিক পাপ কৰোঁতা হোৱা, তেতিয়াও জ্ঞানৰূপী নৌকাৰ দ্বাৰা নিঃসন্দেহে পাৰ হৈ যাবা। অধিক পাপীনো কোন? যি অনবৰত লাগি আছে, তেওঁ বা যি এতিয়াও লাগিবলৈ বাকী আছে বা বিচাৰে? সেয়ে সদ্গৃহস্থ আশ্ৰমৰ পৰাই কৰ্মৰ আৰম্ভ হয়। আধ্যায় ছয়ছ ত অৰ্জুনে সুধিছে ভগৱান। শিথিল যত্ন থকা শ্ৰদ্ধাৱান পুৰুষে পৰম গতি নাপাই কি দুৰ্গতি প্ৰাপ্ত কৰিব? শ্ৰীকৃষ্ণই ক'লে অৰ্জুন। যোগৰ দ্বাৰা চলি থকা যত্নবান, শিথিল যত্নশীল পুৰুষৰো কেতিয়াও নাশ নহয়। তেওঁ যোগভ্ৰষ্ট শ্ৰীমান (শুদ্ধ সত্য আচৰণ কৰোঁতা শ্ৰীমান)ৰ ঘৰত জন্ম লৈ যোগী-কুলত প্ৰৱেশ হয়, সাধনাৰ ফালে আকৰ্ষিত হৈ অনেক জন্মত গৈ গৈ তাতে পায়, যাৰ নাম পৰমগতি বা পৰম ধাম। এনে শিথিল যত্ন কোনে কৰে? যোগভ্ৰষ্ট হৈ তেওঁ ক'ত জন্ম লয়। গৃহস্থিয়ে তো হ'ল। তাৰ পৰাই তেওঁ সাধন মুখী হব। আধ্যায় ৯/৩০ ত তেখেতে কৈছে যে অত্যন্ত দুৰাচাৰীও যদি অনন্য ভাৱেৰে মোক ভজন কৰে, তেওঁ সাধুৰেই হয়; কিয়নো তেওঁ নিশ্চয় কৰি শুদ্ধ ৰাস্তাত গৈ আছে। অত্যন্ত দুৰাচাৰী কোন? যি ভজনত প্ৰবৃত্ত হৈ গ'ল তেওঁ নে এতিয়াও ভজন আৰম্ভ কৰা নাই তেওঁ? আধ্যায় ৯/৩২ ত কৈছে স্ত্ৰী, বৈশ্য, শুদ্ৰ বা পাপ যোনীৱালাই নহওঁক কিয়, মোৰ আশ্ৰিত হৈ সাধনা কৰিলে পৰম গতি প্ৰাপ্ত কৰে।

হিন্দু হওক, খৃষ্টান হওক, মুচলমান হওক; শ্ৰীকৃষ্ণই একো কোৱা নাই। অত্যন্ত দুৰাচাৰি পাতকিয়ে নহওক কিয়, মোৰ শৰণ ললে পৰম গতি

প্ৰাপ্ত কৰে। সেয়ে গীতা প্ৰত্যেক মানৱ মাত্ৰৰে বাবে হয়। সদগৃহস্থ আশ্ৰমৰ পৰাই ইয়াৰ কৰ্ম আৰম্ভ হয়। ক্ৰমশঃ তেওঁ সদগৃহস্থ যোগী হয়, পূৰ্ণ ত্যাগী হৈ যায় আৰু তত্ৰৰ দিক্‌দৰ্শন কৰি পৰমত প্ৰৱেশ লাভ কৰে; যাক শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছে যে জ্ঞানী হ'ল মোৰ স্বৰূপ।

স্ত্ৰী :- গীতাৰ অনুসৰি শৰীৰ হ'ল এটা বস্তু। যেনেদৰে পুৰণি বস্তু ত্যাগ কৰি মনুষ্যই নতুন বস্তু ধাৰণ কৰি লয়, ঠিক সেই দৰে ভূত আদিৰ স্বামী আত্মাই এই শৰীৰ ৰূপী বস্তু ত্যাগ কৰি অন্য শৰীৰ (বস্তু) ধাৰণ কৰে। আপুনি পিণ্ডৰূপত স্ত্ৰী হওক অথবা পুৰুষ হওক এইটো বস্তুৰ আকাৰহে।

সংসাৰত পুৰুষ দুই প্ৰকাৰৰ হয় - ক্ষৰ আৰু অক্ষৰ সমস্ত প্ৰাণী সমূহৰ শৰীৰ ক্ষৰ পুৰুষ অথবা পৰিৱৰ্ত্তনশীল পুৰুষ। মনেৰে সৈতে ইন্দ্ৰিয়সমূহ যেতিয়া স্থিৰ হৈ যায়, তেতিয়া তেওঁ অক্ষৰ পুৰুষ হয়। তেওঁৰ কেতিয়াও বিনাশ নহয়। এইটোৱে ভজনৰ অৱস্থা।

স্ত্ৰী সকলৰ প্ৰতি কেতিয়াবা সন্মান আকৌ কেতিয়াবা অপমান, এই ভাৱনা সমাজত আছেই; কিন্তু গীতাৰ অপৌৰুষেয় বাণীত এইটো আছে যে শুদ্ৰ (অল্লজ), বৈশ্য (বিধি প্ৰাপ্ত), স্ত্ৰী-পুৰুষ যিয়েই নহওক কিয় মোৰ শৰণলৈ আহি পৰমগতি প্ৰাপ্ত কৰে। সেয়ে এই কল্যাণৰ পথত স্ত্ৰীৰো সেয়ে স্থান, যি এটা পুৰুষৰ স্থান।

ভৌতিক সমৃদ্ধি :- গীতাই পৰম কল্যাণতো দিয়েই, লগতে মনুষ্যৰ বাবে আৱশ্যক ভৌতিক বস্তুৰো বিধান কৰে। আধ্যায় ৯/২০-২২ ত যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছে যে বহুতো লোকে নিৰ্ধাৰিত বিধিৰে মোৰ পূজা কৰাৰ সলনী স্বৰ্গৰ কামনা

কৰে। তেওঁলোকক বিশাল স্বৰ্গলোক প্ৰাপ্ত হয়, মই দিওঁ। যি বিচৰা তাকে মোৰ পৰা পাবা; কিন্তু উপভোগ কৰাৰ পিছত সেইটো শেষ হৈ যাব; কিয়নো স্বৰ্গ ভোগও নশ্বৰ। তেওঁলোকৰ পূৰ্ণৰ জন্ম হয়। অৱশ্যে মোৰ লগত সম্বন্ধ থকাৰ বাবে তেওঁলোক নষ্ট নহয়; কিয়নো মইয়ে কল্যাণ স্বৰূপ। মই

তেওঁলোকক ভোগদিওঁ আৰু লাহে-লাহে নিবৃত্তি কৰাই পূণৰ তেওঁক কল্যাণত লগাই দিওঁ।

ক্ষেত্ৰ :- যি পৰমাত্মাৰ শ্ৰীমুখৰ বাণী এই গীতা তেখেতে নিজে স্বয়ং পৰিচয় দিছে, অৰ্জুনঙ্গ এই শৰীৰেই ক্ষেত্ৰ (পথাৰ) য'ত সিঁচা ভাল-বেয়া কৰ্মবীজ সংস্কাৰ ৰূপত সঞ্চিত হয়, আৰু কালান্তৰত সুখ-দুখৰ ৰূপ লৈ ভোগৰ ৰূপত প্ৰাপ্ত হয়। আসুৰী সম্পদে অধৰ্ম যোনীলৈ লৈ যায় আনকি দৈৱী সম্পদে পৰমদেৱ পৰমাত্মাত প্ৰবেশ কৰাই দিয়ে। সদগুৰুৰ সান্নিধ্যত ইয়াৰে নিৰ্ণায়ক যুদ্ধৰ আৰম্ভ হয়, এয়াই ক্ষেত্ৰ-ক্ষেত্ৰজ্ঞৰ যুদ্ধ।

টীকাকাৰে কৈছে - এটা কুৰুক্ষেত্ৰ বাহিৰত আৰু আনটো মনৰ ভিতৰত। গীতাৰ এটা অৰ্থ বাহিৰে আৰু আনটো ভিতৰুৱা। কিন্তু এনে একো নহয়। বক্তাই এক প্ৰকাৰে কয় কিন্তু শ্ৰোতাই তাৰ অৰ্থ বেলেগে বেলেগে লয়। সাধনা পথত ক্ৰমে চলি গৈ যি পুৰুষে শ্ৰীকৃষ্ণৰ স্তৰ পাই, তেতিয়া যি দৃশ্য শ্ৰীকৃষ্ণৰ সমুখত আছিল সেই দৃশ্যই তেওঁৰ সন্মুখতো থাকিব। সেইজন মহাপুৰুষেই তেওঁৰ মনোগত ভাৱক, গীতাৰ সংকেতক বুজিব আৰু বুজাব পাৰিব।

গীতাৰ এটাও শ্লোকে বাহিৰৰ চিত্ৰ দাঙি ধৰা নাই। খোৱা-বোঁৱা, থকা-মেলা আপুনি জানেই। থকা-মেলা, বিধি পালন, লোক ৰীতি-নীতি ইত্যাদিত দেশ-কাল আৰু পৰিস্থিতিৰ অনুকূলে পৰিৱৰ্ত্তন প্ৰকৃতিৰে দেন হয়। তাত শ্ৰীকৃষ্ণই আপোনাক কি ব্যৱস্থানো দিব? ক'ৰবাত তেওঁলোকৰ সংখ্যা বেছি তাত বহুবিবাহ হয়, আকৌ ক'ৰবাত তেওঁলোকৰ সংখ্যা কম। ক'ৰবাত কেবাজনো ভাই-ককাইৰ মাজত এজনী পত্নী আছে। ইয়াত শ্ৰীকৃষ্ণই কি ব্যৱস্থা দিব? দ্বিতীয় বিশ্বযুদ্ধৰ পিছত জাপানৰ জনসংখ্যা কমি এটা সমস্যাৰ সৃষ্টি হ'ল, যত ত্ৰিশটা লৰা-ছেৱালী জন্ম দিয়া মাকক 'মাদাৰ লেণ্ড' (দেশৰ মাক) নামৰ উপাধিৰে সন্মান কৰা হ'ল। বৈদিককালীন ভাৰতত প্ৰথমে দহটা সন্তান উৎপন্ন কৰাৰ বিধান আছিল, এতিয়া এটা বা দুটা হলেই ভাল ঘৰ বুলি ক'বলৈ আৰম্ভ কৰে। সেইটোও যদি নেথাকিলে হেঁতেন, তেতিয়া দেশৰ

বাবে চিন্তাৰ বিষয়ে নেথাকিলে হেতেন, সমস্যাৰ সমাধানেই হ'ল হেতেন।
শ্ৰীকৃষ্ণই ইয়াত কি ব্যৱস্থা দিব?

শ্ৰেয় :- কাম, ক্ৰোধ, লোভ, মোহৰ ক'তো বিদ্যালয় খোলা নাই, তথাপিও এই বিকাৰত লৰা বিলাক ডাঙৰতকৈ তথা টেঙৰতকৈও অধিক প্ৰবীণ হৈ ওলাই আহিছে। ইয়াত শ্ৰীকৃষ্ণই কি শিক্ষা দিব? এইবোৰ সকলো প্ৰকৃতিৰ দ্বাৰা নিজেই সঞ্চালিত হৈ আছে। কেতিয়াবা বেদ পঢ়োৱা হৈছিল, ধনুৰ্বেদ, গদাযুদ্ধ শিকোৱা হৈছিল, আজি ইয়াক কোনে শিকায়? আজিতো পিষ্টল চলাই আছে। স্বয়ং চালিত যন্ত্ৰৰ যুগ। কেতিয়াবা বথ সঞ্চালন শিকিব লাগিছিল, ঘোৰাৰ গোবৰ পেলাব লাগিছিল - আজিতো মটৰ গাড়ীৰ তেল চাফা কৰিব লাগিব। ইয়াত শ্ৰীকৃষ্ণই কি কৰিব? ক'ব নেকি যে ঘোৰাক তেনেকৈ নঘৰিবা। বাহ্যিক ব্যৱস্থানো আপোনাক কি দিব? আগতে স্বাহা ক'লে বৰষুণ হ'ব ধৰিছিল, আজিতো নিজৰ ইচ্ছানুসৰি শস্য উৎপাদন কৰিব পাৰিছে। যোগেশ্বৰে কয় যে, প্ৰকৃতিৰে উৎপন্ন গুণৰ দ্বাৰা বশৱৰ্তী হৈ মনুষ্য পৰিস্থিতিৰ অনুসৰি ঢাল খায়, গুণে স্বয়ং তেওঁলোকক ঢাল খাবলৈ বাধ্য কৰায়। ভৌতিক শাস্ত্ৰ, সমাজশাস্ত্ৰ, শিক্ষাশাস্ত্ৰ, অৰ্থশাস্ত্ৰ, তৰ্কশাস্ত্ৰই সেইটো সৃষ্টি কৰিয়ে থাকে। এটাই এনেকুৱা বস্তু আছে যাক মনুষ্যই নাজানে, চিনি নাপায়। আছে কিন্তু তেওঁৰ ওচৰতে তথাপিও বিস্মৃত (পাহৰি) হৈ আছে। গীতা শুনি অৰ্জুনৰ সেই স্মৃতি ঘুৰি আহিছিল। সেই স্মৃতি পৰমাত্মাৰ, যি হৃদয় দেশত থাকিও বহুত দূৰত আছে। তাকে মনুষ্যই পাব বিচাৰে; কিন্তু ৰাস্তা নাপায়। মাত্ৰ কল্যাণৰ পথৰ বাবে মনুষ্য অনভিজ্ঞ হৈ আছে। মোহৰ আৱৰণ ইমান ঘন যে সিফালে ভাবিবৰ সময় পোৱাই নাযায়। সেই মহাপুৰুষে আপোনাৰ বাবে সময় উলিয়াই দিছে, সেই কৰ্মক স্পষ্ট কৰি দিছে, যাৰ কৰাৰ নিৰ্দেশ গীতাত আছে। গীতাই মুখ্যতঃ এয়াই দিয়ে। ভৌতিক বস্তুও তাৰ পৰাই পোৱা হৈছে, কিন্তু শ্ৰেয়ৰ তুলনাত ইঅথবা প্ৰেয় একেবাৰে নগণ্য।

যোগ-প্ৰদাতা :- যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণৰ অনুসৰি কল্যাণ পথৰ জানকাৰী তাৰ সাধনা আৰু প্ৰাপ্তী সদৃশৰ পৰাই হয়। বহুতো তীৰ্থ ঘূৰি-ফুৰিলে বা বহুতো পৰিশ্ৰমৰ দ্বাৰাও পোৱা নাযায়, যেতিয়া লৈকে কোনো সদৃশৰ দ্বাৰা

প্ৰাপ্ত কৰা নহয়। ৩/৩৪ আধ্যাত শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছে, অৰ্জুন। তুমি কোনোবা তত্বদৰ্শী মহাপুৰুষৰ ওচৰলৈ যোৱা ভালদৰে দণ্ডৱত-প্ৰণাম কৰি নিষ্কপট ভাৱেৰে সেৱা কৰা, প্ৰশ্ন কৰা আৰু তেওঁৰ পৰা জ্ঞান প্ৰাপ্ত কৰা। প্ৰাপ্তীৰ একমাত্ৰ উপায় হ'ল কোনোবা মহাপুৰুষৰ সান্নিধ্যলৈ গৈ তেওঁৰ সেৱা কৰা। তেওঁৰ অনুসৰি চলি যোগৰ সংসিদ্ধি কাল প্ৰাপ্ত কৰিবা। ১৮/১৮ আধ্যাত তেখেতে কৈছে যে পৰিজ্ঞাতা অৰ্থাৎ তত্বদৰ্শী মহাপুৰুষ, জ্ঞান অৰ্থাৎ জনাৰ বিধি আৰু জ্ঞেয় পৰমাত্মা-তিনিওটা কৰ্মৰ প্ৰেৰক হয়। সেয়ে শ্ৰীকৃষ্ণৰ অনুসৰি মহাপুৰুষেই হ'ল কৰ্মৰ মাধ্যম, মাত্ৰ কিতাপেই নহয়। কিতাপ হ'ল এটা পথ্যৰ বিধি, পথ্যৰ বিধি জানিলেই কোনো আৰোগ্য হব নোৱাৰে, বৰঞ্চ পথ্যৰ ব্যৱস্থা কৰিব লাগিব।

নৰক :- ১৬/১৬ আধ্যাত আসুৰী সম্পদৰ বৰ্ণনা কৰি যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছে যে বহুতো প্ৰকাৰৰ ভ্ৰমিত চিত্তথকা, মোহত আবদ্ধ হোৱা, আসুৰী স্বভাৱশীল মনুষ্যই অপৰিত্ৰ নৰকত পৰে। প্ৰশ্ন স্বাভাৱিক হৈ উঠে যে নৰক কেনে আৰু কাক নৰক কোৱা হয়? ইয়াত স্পষ্ট কৰি কৈছে যে মোক দ্বেষ ৰখা নৰাধমক মই বাৰে-বাৰে আসুৰী যোনীত পেলাই থাকোঁ, অজস্ৰ আসুৰী যোনীত পেলাওঁ। এয়াই নৰক। এই নৰকৰ দ্বাৰ কি? তেখেতে ক'লে যে কাম, ক্ৰোধ আৰু লোভ হ'ল নৰকৰ তিনিটা দ্বাৰ য'ত আসুৰী সম্পদ গঠিত হয়। সেয়ে বাৰে-বাৰে কীট-পতঙ্গ, পশু ইত্যাদি যোনীত জন্ম হৈ থকাই হ'ল নৰক।

পিণ্ডদান :- প্ৰথম আধ্যাত বিষাদ গ্ৰস্ত অৰ্জুনৰ আশংকা হৈছিল যে যুদ্ধ জনিত নৰসংহাৰৰ দ্বাৰা পিতৃ সকল পিণ্ডদান আৰু অৰ্পণৰ পৰা বঞ্চিত হৈ যাব, পিতৃ নৰকলৈ যাব। এই ক্ষেত্ৰত ভগৱান শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছিল যে, অৰ্জুন। তোমাৰ এই অজ্ঞানতা ক'ব পৰা হ'ল। পিণ্ডদানক ত্ৰিণ্যাক যোগেশ্বৰে অজ্ঞানতা বুলি কৈছে, আৰু কৈছে যে যি দৰে ফটা-চিটা পুৰণা বস্ত্ৰক ত্যাগ কৰি মনুষ্যই নতুন বস্ত্ৰ ধাৰণ কৰে, ঠিক এই দৰে এই আত্মাই জীৰ্ণ শৰীৰক ত্যাগ কৰি তৎক্ষণাৎ শৰীৰৰূপী নতুন বস্ত্ৰহে সলনি কৰে, আৰু যেতিয়া আত্মাই মাত্ৰ বস্ত্ৰহে সলনী কৰে, তেওঁ নমৰে, নশ্বৰ শৰীৰহে বদলায়, তাৰ

ব্যৱস্থা আগতেই হৈয়ে আছে, তেতিয়া হলে ইয়াৰ বাবে ভোজন (পিণ্ডান) আসন, শয্যা, বাহন, আবাস বা জল ইত্যাদিৰে কাক তৃপ্ত কৰা হয়? সেই কাৰণে যোগেশ্বৰে ইয়াক অজ্ঞানতা বুলি কৈছে। ১৫/৭ আধ্যায়ত ইয়াৰ ওপৰত জোৰ দি কৈছে যে এই আত্মা মোৰে সনাতন অংশ বিশেষ, স্বৰূপ আৰু মনেৰে সৈতে পাৰ্চোঁটা ইন্দ্ৰিয়ৰ কাৰ্য্য কলাপ জন্য সংস্কাৰ লৈ অন্য শৰীৰ ধাৰণ কৰি লয় আৰু মনেৰে সৈতে ষষ্ঠ ইন্দ্ৰিয়ৰ দ্বাৰা আনটো দেহত বিষয় ভোগক ভোগ কৰে। আত্মাই যি শৰীৰ ধাৰণ কৰে তাতেই ভোগৰ সামগ্ৰী উপলব্ধ হয়, তেতিয়া হলে আকৌ পিণ্ডান কিহৰ?

এইফালে এটা শৰীৰ ত্যাগ কৰিলে, সিফালে এটা আন শৰীৰ ধাৰণ কৰিলে, পোনে পোনে সিটো শৰীৰলৈ গুচি গ'ল, মাজত কোনো বিৰাম নাই, কোনো স্থান নাই যেতিয়া হাজাৰ হাজাৰ বছৰৰ পিতৃসকলক অনাদি কালৰ পৰা পৰি থকা, আৰু তেওঁলোকৰ জীৱিকা বংশ পৰম্পৰাৰ পৰা নিৰ্দ্ধাৰিত কৰা তথা সাজৰ পক্ষীৰ দৰে অজ্ঞানতা হে মাথোন। সেই কাৰণে শ্ৰীকৃষ্ণই ইয়াক অজ্ঞানতা বুলি কৈছে।

পাপ আৰু পুণ্য :- এই প্ৰশ্নৰ ওপৰত সমাজত বহুতো ভুল ধাৰণা আছে; কিন্তু যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণৰ অনুসৰি ৰজগুণৰ দ্বাৰা উৎপন্ন এই কাম-ক্ৰোধ আৰু ভোগৰ বাবে কেতিয়াও তৃপ্ত নোহোৱাজন হ'ল মহান পাপী। অৰ্থাৎ কাম হ'ল এক মাত্ৰ পাপী। পাপৰ উদগমস্থল হ'ল কাম, কামনা। এই কামনাবোৰ থাকে ক'ত? শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছে যে ইন্দ্ৰিয় সমূহ, মন আৰু বুদ্ধি ইয়াৰ বাসস্থান। যেতিয়া বিকাৰ দেহতে আছে, মনতে আছে, তেতিয়া শৰীৰক চাফা কৰিলে কি হ'ব?

শ্ৰীকৃষ্ণৰ অনুসৰি এই মনৰ শুদ্ধি হয় নাম জপৰ দ্বাৰা, ধ্যানৰ দ্বাৰা, সমকালীন কোনো তত্ত্বদৰ্শী মহাপুৰুষৰ সেৱাৰ দ্বাৰা, তেওঁৰ প্ৰতি সমৰ্পণৰ দ্বাৰা, যাৰ বাবে তেখেতে ৪/৩৪ আধ্যায়ত উৎসাহ দি কৈছে যে 'তদ্বিদ্ধি প্ৰণি পাতেন' সেৱা আৰু প্ৰশ্ন কৰি তেওঁৰ পৰা জ্ঞান প্ৰাপ্ত কৰা, যাৰ দ্বাৰা সকলো পাপ নষ্ট হৈ যাব।

৩/১৩ আধ্যায়ত তেখেতে কৈছে যে যজ্ঞৰ দ্বাৰা শেষ থকা অন্ন খাওতা সন্তজন সম্পূৰ্ণ পাবৰ পৰা মুক্ত হয় আৰু যি জনে শৰীৰৰ কামনা কৰে সেই পাপীয়ে পাপ হৈ খায়। ইয়াত যজ্ঞক চিন্তনৰ এটা নিশ্চিত প্ৰক্ৰিয়া বুলি কোৱা হৈছে, যাৰদ্বাৰা মনত নিহিত হৈ থকা চৰাচৰ জগতৰ সংস্কাৰ জ্বলি শেষ হৈ যায়। শেষ মাত্ৰ ব্ৰহ্মহৈহে থাকে। সেয়ে শৰীৰ জন্মৰ যি কাৰণ, সেইয়াই পাপ আৰু যি অমৃত তত্বক দিব পাৰে, যাৰ পাছত কেতিয়াও শৰীৰ ধাৰণ কৰিব নালাগে, সেইয়াই পুণ্য।

আধ্যায় ৭/২৯ ত তেখেতে কৈছে যে মোৰ শৰণলৈ আহি জৰা-মৰণৰ দোষৰ পৰা মুক্তি পাবৰ বাবে যত্ন কৰোঁটা, পুণ্য কৰ্মী যি পুৰুষৰ পাপ নষ্ট হৈ গৈছে, তেওঁ সম্পূৰ্ণ ব্ৰহ্মক, সম্পূৰ্ণ কৰ্মক, সম্পূৰ্ণ অধ্যাত্ম তথা ভালদৰে মোক জানে আৰু মোক জানি মোতেই স্থিত থাকে। সেয়ে পুণ্যকৰ্ম সেয়াই, যি জৰা-মৰণ আৰু দোষৰ ওপৰত উঠাই শাস্ত্ৰৰ জানকাৰী দিয়ে আৰু তাতেই সকলো সময়ৰ বাবে স্থিতি দিয়ে আৰু যিয়ে জন্ম-মৃত্যু, জৰা-মৰণ, দুখ-দোষৰ পৰিধিতে ঘূৰাই ঘূৰাই ৰাখে, সেয়াই পাপ কৰ্ম।

আধ্যায় ১০/৩ ত কৈছে যে যি জনে মোক জন্ম-মৃত্যুহীন, আদি-অন্তহীন তথা সকলো লোকৰেই মহান ঈশ্বৰক সাক্ষাৎকাৰৰ সৈতে জানি লয়, সেই পুৰুষ মৰণশীল মনুষ্যৰ ভিতৰত জ্ঞানৱান আৰু এনে জানোতা সম্পূৰ্ণ পাপৰ পৰা মুক্ত হৈ যায়। সেয়ে সাক্ষাৎকাৰৰ লগতে সম্পূৰ্ণ পাপৰ পৰা নিবৃত্তি পোৱা যায়।

সাৰাংশত বাৰে-বাৰে জন্ম-মৃত্যুৰ কাৰণেই হ'ল পাপ আৰু যিয়ে তাৰ পৰা বচাই শাস্ত্ৰ পৰমাত্মাৰ ফালে ঘূৰাই দিয়ে, পৰম শান্তি প্ৰাপ্ত কৰায় সেয়াই পুণ্য কৰ্ম। সত্য কথা কোৱা, নিজৰ পৰিশ্ৰমৰ দ্বাৰা উপাৰ্জিত খোৱা, স্ত্ৰী সকলক মাতৃ-ভাৱ ৰখা, ইজ্জতদাৰ ইত্যাদিও এই পুণ্য কৰ্মৰ সহায়ক অংগ হয়; কিন্তু সৰ্বোৎকৃষ্ট পুণ্য হ'ল পৰমাত্মা প্ৰাপ্তী। যিয়ে একমাত্ৰ পৰমাত্মাৰ শ্ৰদ্ধাক ভাঙি পেলায় সেয়াই পাপ।

সন্ত সকলো একেই :- গীতাত, আধ্যায় ৪/১ ত ভগৱান শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছিল যে, এই অবিদ্যাশী যোগক কল্পৰ আদিত ময়েই সূৰ্য্যৰ প্ৰতি কৈছিলোঁ;

কিন্তু শ্ৰীকৃষ্ণৰ পূৰ্বকালীন ইতিহাস বা অন্য কোনো শাস্ত্ৰতো কৃষ্ণ-নামৰ উল্লেখ নাই।

বাস্তৱত শ্ৰীকৃষ্ণ এজন পূৰ্ণ যোগেশ্বৰ আছিল। তেওঁ এক অব্যক্ত আৰু অবিনাশী ভাৱৰ স্থিতিত আছিল। যেতিয়া কোনোবা সময়ত পৰমাত্মাৰ লগত মিলাবপৰা ক্ৰিয়া অৰ্থাৎ যোগৰ সুত্ৰপাত হৈছিল তেতিয়া এই স্থিতিথকা কোনোবা মহাপুৰুষে কৰিছিল, লাগিলে তেওঁ ৰামেই হওক বা ঋষি জৰথুস্থই নহওক কিয়? পৰবৰ্তী কালত এই উপদেশ খৃষ্ট, মহম্মদ গুৰুনাৰক ইত্যাদি যি কোনোৰ দ্বাৰাই ওলাইছিল, কৈছিল শ্ৰীকৃষ্ণই।

অতঃ সকলো মহাপুৰুষ একেই। সকলোৱে একেটা বিন্দু স্পৰ্শ কৰি একেই স্বৰূপ প্ৰাপ্ত কৰে। এই পদ একে একেই। বহুতো পুৰুষ এই পথত চলে কিন্তু যেতিয়া প্ৰাপ্ত কৰে একেই পদ প্ৰাপ্ত কৰে।

এনে অৱস্থা প্ৰাপ্ত সন্তৰ শৰীৰ এটা থকা ঘৰমাত্ৰ হয়, তেওঁ শুদ্ধ আত্ম স্বৰূপ হয়। এনে স্থিতি প্ৰাপ্ত লোকে কেতিয়াবা কিবা যদি কয় তেতিয়া এজন যোগেশ্বৰে কোৱা হয়।

সন্তই ক'ববাততো জন্ম লয়ই। পূৰ্বত বা পশ্চিমত, ক'লা অথবা বগা পৰিয়ালত, পূৰ্ব প্ৰচলিত কোনো ধৰ্মাৱলম্বীৰ মাজত বা হোজা গাঁৱত সাধাৰণ ভাৱে জীৱন যাপন কৰা দুখীয়া ঘৰত বা ধনীৰ ঘৰত জন্ম লৈও সন্তই তেওঁলোকৰ পৰম্পৰা ধৰি নাথাকে। তেওঁতো নিজৰ লক্ষ্য পৰমাত্মাক ধৰি স্বৰূপৰ ফালে অগ্ৰসৰ হৈ যায়, সেয়াই হৈ পৰে। তেওঁৰ উপদেশত জাত-পাত, বৰ্ণভেদ, আৰু ধনী-দুখীয়া বুলি নাথাকে। ইয়ালৈকে হয় যে তেওঁৰ দৃষ্টিত পুৰুষ-স্ত্ৰীৰ ভেদো নথকা হৈ যায় ((চাওক, গীতা ১৫/১৬) “দ্বাবিমৌ পুৰুষৌ লোকে”)

মহাপুৰুষৰ পাছত তেওঁৰ সমৰ্থক সকলে নিজৰ সম্প্ৰদায় সৃষ্টি কৰি সংকুচিত হৈ পৰে। কোনোবা মহাপুৰুষৰ পিছত চলা ইহুদী হৈ যায়, আকৌ কোনোবা খৃষ্টান হয়, কোনোবা মুচলমান, সনাতনী ইত্যাদি হৈ যায়; কিন্তু

এই দেৱালৰ লগত সন্তৰ সম্বন্ধ কেতিয়াও নাথাকে। সন্ত কোনো সম্প্ৰদায়ৰো নাথাকে আৰু কোনো জাতিৰো। সন্ত, সন্তই। তেওঁক কোনো সামাজিক সংগঠনৰ লগত লোটিয়াই ল'ব নালাগে।

সেয়ে সংসাৰৰ যি কোনো সন্তকে, লাগিলে তেওঁৰ য'তেই জন্ম নহওক কিয়, লাগিলে কোনোবা সম্প্ৰদায়ে (মজহব) তেওঁৰ পূজন বেছিনকৰক কিয়, কোনোবা সম্প্ৰদায়িক প্ৰভাৱত পৰি এনে সন্তৰ আলোচনা কৰা উচিত নহয়; কিয়নো তেওঁ নিৰাপক্ষ হৈ থাকে। যদি কোনোবাই এনে কৰে, তেনেহলে তেওঁ নিজৰ ভিতৰত থকা অন্তৰ্য্যামী পৰমাত্মক দুৰ্বল কৰে, নিজৰ পৰমাত্মাৰ লগত দূৰত্ব সৃষ্টি কৰে, নিজেই নিজৰ ক্ষতি কৰে। পৃথিৱীত জন্ম লওঁতাৰ ভিতৰত যদি আপোনাৰ কোনো প্ৰকৃত হিতৈষী আছে, তেতিয়া সন্তহে আছে। সেয়ে তেওঁৰ প্ৰতি সহৃদয় থকা পৃথিৱীৰ সকলো লোকৰে মূল কৰ্তব্য। ইয়াৰ পৰা বঞ্চিত হোৱা, নিজকেই (ধোকা) ফাঁকি দিয়া হয়।

বেদ :- গীতাত বেদৰ বৰ্ণন বহুত আছে; কিন্তু মুঠতে বেদ মার্গ নিদৰ্শক চিহ্ন মাত্ৰ (mile stone) হয়। লক্ষ্যস্থান প্ৰাপ্ত কৰাৰ পিছত সেই ব্যক্তিৰ বাবে ইয়াৰ উপযোগীতা সমাপ্ত হৈ যায়। আধ্যায় ২/৪৫ ত শ্ৰীকৃষ্ণই কৈছে- অৰ্জুনঙ্গ বেদে তিনি গুণলৈকে হে প্ৰকাশ কৰিব পাৰে, তুমি বেদৰ কাৰ্য্যক্ষেত্ৰতকৈ ওপৰত উঠা। আধ্যায় ২/৪৬ ত কৈছে- চাৰিওফালৰ পৰা পৰিপূৰ্ণ স্বচ্ছ জলাশয় প্ৰাপ্ত হ'লে সৰু জলাশয় বিলাকৰ প্ৰতি মনুষ্যৰ যিমান প্ৰয়োজনীয়তা থাকে, ভালদৰে ব্ৰহ্ম জ্ঞাতা মহাপুৰুষে অৰ্থাৎ ব্ৰাহ্মণৰ বেদৰ সিমানেই প্ৰয়োজনীয়তা থাকে; কিন্তু আনৰ ক্ষেত্ৰত তাৰ উপযোগীতা একেই থাকে। আধ্যায় ৮/২৮ ত কৈছে- অৰ্জুনঙ্গ মোক তত্বৰে ভালদৰে জানি লোৱাৰ পাছত যোগীয়ে বেদ, যজ্ঞ, তপ, দান ইত্যাদি পূণ্যফলক পাৰকৰি সনাতন পদ প্ৰাপ্ত কৰে। অৰ্থাৎ যেতিয়ালৈকে বেদ জীৱিত আছে, যজ্ঞ কৰিবলৈ বাকীয়ে থাকে তেতিয়ালৈকে সনাতন পদৰ প্ৰাপ্তি নহয়। আধ্যায় ১৫/১ ত কৈছে- উপৰফালে পৰমাত্মাই যাৰ মূল তললৈ কীট-পতঙ্গ পৰ্য্যন্ত প্ৰকৃতি যাৰ শাখা-প্ৰশাখা সংসাৰখন এনেকুৱা আহঁতৰ এজোপা অবিনাশী বৃক্ষ। যি জনে ইয়াৰ মূলেৰে সৈতে জানে তেৱেই বেদৰ জ্ঞাতা। এই জনাৰ মূল স্ৰোত মহাপুৰুষেই

হয়; তেওঁৰ দ্বাৰা নিৰ্দিষ্ট কৰা হ'ল ভজন, কিতাপ বা পাঠশালাই তেওঁৰ ফালেই প্ৰেৰিত কৰে।

ওমঃ- শ্ৰীকৃষ্ণৰ নিৰ্দেশনাত (ওঁ) ওমৰ জপৰ বিধান পোৱা গৈছে।
আধ্যায় ৭/৮ ত ওম্কাৰ ময়েই, ৮/১৩ ত ওঁৰ জপ আৰু মোৰ চিন্তন কৰা।
আধ্যায় ৯/১৭ ত জানিবৰ যোগ্য পৰিত্ৰ ওঁ কাৰা ময়েই। আধ্যায় ১০/২৫ ত
আখৰত অ কাৰ ময়েই বজ্জযচপ্ত ত বচনত এটা আখৰ ময়েই। আধ্যায় ১৭/২৩
ত ওঁ, তৎ আৰু সৎ ব্ৰহ্মৰ পৰিচায়ক। ১৭/২৪ ত যজ্ঞ, দান আৰু তপৰ
ক্ৰিয়া ওম্ ৰ পৰাই আৰম্ভ হয়। সেয়ে শ্ৰীকৃষ্ণৰ অনুসৰি ওঁ ৰ জপ নিতান্ত
আৱশ্যক আছে, যাৰ বিধি কোনোবা অনুভৱী মহাপুৰুষৰ পৰা শিকিব লাগিব।

গীতোক্ত জ্ঞানেই বিশুদ্ধ মনুস্মৃতি :- গীতা আদি মানৱ মহাৰাজ
মনুতকৈও পূৰ্বতে প্ৰকট হৈছিল - “ইমং বিবস্বতে যোগং প্ৰোক্তবানহমব্যয়ম্”।
(৪/১) অৰ্জুনঙ্গ এই অবিনাশী যোগক ময়ে কল্পৰ আদিত সূৰ্য্যক কৈছিলোঁ,
তথা সূৰ্য্যই মনুক কৈছিল। মনুৱে তাক শ্ৰৱণ কৰি নিজৰ মনতে ধাৰণ কৰিছিল;
কিয়নো শ্ৰৱণ কৰা (শুনা) কথা মনৰ স্মৃতিত ৰাখিব পাৰি। ইয়াকে মনুবে ৰজা
ইক্ষ্বাকুক কলে। ইক্ষ্বাকুৰ দ্বাৰা ৰাজৰ্ষি সকলে জানিব পাৰিলে আৰু এই
মহত্বপূৰ্ণ কালতেই এই অবিনাশী যোগ এই পৃথিৱীৰ পৰা লুপ্ত হৈ গ'ল।
প্ৰাৰম্ভনী কালত কোৱা আৰু শুনাৰ পৰম্পৰা আছিল। লিখিবও পাৰি এনে
কল্পনাও নকৰিছিল। মনু মহাৰাজে ইয়াক মানসিক স্মৃতিত ধাৰণ কৰিছিল
তথা স্মৃতিৰ পৰম্পৰা দিলে। সেই কাৰণে এই গীতোক্ত জ্ঞানেই বিশুদ্ধ
মনুস্মৃতি।

ভগৱানে এই জ্ঞান মনুতকৈও পূৰ্বে সূৰ্য্যক কৈছিল, তেতিয়া হলে
ইয়াক সূৰ্য্য স্মৃতি বুলি কিয় কোৱা নহল? বস্তুতঃ সূৰ্য্য জ্যোতিৰ্ময় পৰমাত্মাৰ
সেই অংশ যাৰ দ্বাৰা এই মানৱ সৃষ্টিৰ সৃজনা হ'ল। ভগৱান শ্ৰীকৃষ্ণই কয়,
“ময়েই পৰম চৈতন্য বীজৰূপী পিতা, প্ৰকৃতি গৰ্ভ ধাৰণ কৰোঁতা মাঁ।” সেই
বীজৰূপী পিতা সূৰ্য্য। সূৰ্য্য পৰমাত্মাৰ সেই শক্তি যিয়ে মানৱৰ সংৰচনা
কৰিলে। সেইটো কোনো ব্যক্তি নহয় আৰু য'ত পৰমাত্মাৰ সেই জ্যোতিৰ্ময়

তেজেৰে মানৱৰ উৎপত্তি হ'ল সেই তেজত সেই গীতোকৃত জ্ঞানও প্ৰসাৰিত কৰিলে অৰ্থাৎ সূৰ্য্য কলে। সূৰ্য্যই নিজৰ পুত্ৰ মনুক কলে সেইকাৰণে এইটো মনুস্মৃতি হ'ল। সূৰ্য্য কোনো ব্যক্তি নহয়, বীজহে।

ভগৱান শ্ৰীকৃষ্ণই কয় - 'অৰ্জুনঙ্গ সেই পুৰাতন যোগেই মই তোমাৰ কাৰণে কৈ আছোঁ। তুমি মোৰ প্ৰিয় ভক্ত, অনন্য সখা। অৰ্জুন মেধাৰী আছিল, প্ৰকৃত অধিকাৰী আছিল। তেওঁ প্ৰশ্ন ওপৰি প্ৰশ্নৰ ক্ৰম সজাই দিলে যে আপোনাৰ জন্মতো এতিয়া হৈছে আৰু সূৰ্য্যৰ জন্মতো বহুত আগতে হোৱা। "ইয়াক আপুনিয়ৈ সূৰ্য্যক ক'লে মই কেনেকৈ মানি লও"? এই ধৰণৰ বিশ পচিশটা মান প্ৰশ্নৰ উত্তৰ হৈ গৈছিল, যেতিয়া অৰ্জুনে প্ৰশ্ন কৰিলে। গীতাৰ শেষলৈকে তেওঁৰ সম্পূৰ্ণ প্ৰশ্নৰ উত্তৰ হৈ গৈছিল, যেতিয়া অৰ্জুনে প্ৰশ্ন কৰিব নোৱাৰিছিল, তেতিয়া ভগৱানে তেওঁৰ হিতৰ বাবে স্বয়ং প্ৰশ্ন উঠাই সমাধান দিছিল। অন্ততঃ ভগৱানে কলে অৰ্জুনঙ্গ তুমি মোৰ উপদেশ বোৰক একাগ্ৰচিত হৈ শুনিলানে? তোমাৰ মোহৰ দ্বাৰা উৎপন্ন হোৱা অজ্ঞানতা নষ্ট হ'লনে? অৰ্জুনে ক'লে -

নস্তৌ মোহঃ- স্মৃতিৰ্লঙ্কা ত্বৎপ্ৰসাদান্ময়াচ্যুত।

স্থিতোহস্মি গতসন্দেহঃ কৰিষ্যে বচনং তব।। ১৮/৭৩।।

ভগৱানঙ্গ মোৰ মোহ নষ্ট হ'ল। মই স্মৃতি প্ৰাপ্ত কৰিলোঁ। মাত্ৰ শুনাই নহয় আনকি স্মৃতিত ধাৰণা কৰি ল'লোঁ। মই আপোনাৰ আদেশ পালন কৰিম, যুদ্ধ কৰিম। তেওঁ ধনু উঠাই ল'লে, যুদ্ধ হ'ল, বিজয় প্ৰাপ্ত কৰিলে এটা বিশুদ্ধ ধৰ্ম সাস্ৰাজ্যৰ স্থাপনা হ'ল আৰু এখন ধৰ্মশাস্ত্ৰৰ ৰূপত সেই আদি ধৰ্মশাস্ত্ৰ গীতা পুণৰ প্ৰসাৰণ হ'ল। গীতা আপোনাৰ আদি ধৰ্মশাস্ত্ৰ। এয়েই মনুস্মৃতি, যাক অৰ্জুনে নিজৰ স্মৃতিত ধাৰণ কৰিছিল। মনুৰ দুটা কৃতিৰ উল্লেখ আছে, এটা হ'ল পিতাৰ পৰা উপলব্ধ গীতা, আনটো বেদ মনুৰ প্ৰাপ্ত হৈছিল। তৃতীয় কোনো কৃতিয়ে মনুৰ সময়ত প্ৰকট হোৱা নাছিল, সেই সময়ত লিখাৰ, লিখাবৰ কোনো প্ৰচলন নাছিল, কাগজ কলমৰ প্ৰচলন নাছিল, সেই কাৰণে জ্ঞানক শ্ৰুত অৰ্থাৎ শুনা আৰু স্মৃতি পটলত ধাৰণ কৰাৰ পৰম্পৰা আছিল। যাৰ দ্বাৰা

মানৱৰ প্ৰাদুৰ্ভাৱ হ'ল, সৃষ্টিৰ প্ৰথম মানৱ সেই মনু মহাৰাজে বেদক শ্ৰুতি আৰু গীতাক স্মৃতিৰ সন্মান দিছিল।

বেদ মনুৰ ওচৰত আছিল, ইয়াক শুনক, ই শুনাব যোগ্য। পাছত পাহৰি যাব পাৰে, কোনো ক্ষতি নাই, কিন্তু গীতা স্মৃতি হয়, সদায় মনত ৰখা উচিত। ই প্ৰত্যেক মানৱৰ সদায় থাকিব পৰা সমৃদ্ধি, ঐশ্বৰ্য্য সম্পন্ন জীৱন প্ৰাপ্ত কৰাওঁতা ঈশ্বৰীয় গায়ন হয়।

ভগৱানে ক'লে - অৰ্জুনঙ্গ যদি তুমি অহংকাৰবশ মোৰ উপদেশবোৰ নুশুনা তেতিয়া বিনষ্ট হৈ যাবা অৰ্থাৎ গীতাৰ উপদেশবোৰৰ অৱহেলা কৰোতা নষ্ট হৈ যায়। পোন্ধৰ আধ্যায়ৰ শেষৰ ১৫/২০ শ্লোকত ভগৱানে কৈছে - “ইতি গুহ্যতমং শাস্ত্ৰমিদমুক্তং ময়ানঘ”। এই গোপনীয়তকৈও অতি গোপনীয় শাস্ত্ৰ মোৰ দ্বাৰা কোৱা হ'ল। এই তত্বৰে জানি তুমি সমস্ত জ্ঞান আৰু পৰম শ্ৰেয়ৰ প্ৰাপ্ত কৰিবা। যোদ্ধ আধ্যায়ৰ শেষৰ দুটা শ্লোকত কৈছে - “যঃ শাস্ত্ৰবিধিমুৎসৃজ্য বৰ্ত্ততে কামকাৰতঃ।” এই শাস্ত্ৰবিধিক ত্যাগ কৰি কামনাৰ দ্বাৰা প্ৰেৰিত হৈ অন্য বিধিৰে যিয়ে ভজনা কৰে তেওঁৰ জীৱনত সুখ নাথাকে, সমৃদ্ধি নাথাকে আৰু পৰম গতিও নাপায়।

‘তস্মাচ্ছাস্ত্ৰং প্ৰমাণং তে কাৰ্য্যকাৰ্য্যব্যৱস্থিতৌ’। সেই কাৰণে অৰ্জুনঙ্গ তোমাৰ কৰ্ত্তব্য আৰু অকৰ্ত্তব্যৰ ব্যৱস্থাত এই শাস্ত্ৰই প্ৰমাণ আছে। ইয়াক ভালদৰে অধ্যয়ন কৰি তাৰপাছত আচৰণ কৰা। তুমি মোতেই নিবাস কৰিবা, অবিনাশী পদ প্ৰাপ্ত কৰিবা, সদায় থাকিবা পৰা জীৱন, সদায় থাকিব পৰা শান্তি আৰু সমৃদ্ধি পাবা।

গীতা মনুস্মৃতি হয় আৰু ভগৱান শ্ৰীকৃষ্ণৰ অনুসৰি গীতাই ধৰ্মশাস্ত্ৰ, অন্য কোনো শাস্ত্ৰ নাই, কোনো অন্য স্মৃতি নাই। সমাজত প্ৰচলিত বহুতো স্মৃতিবোৰ গীতাৰ বিস্মৃত হৈ যোৱাত দুস্পৰিণাম হৈছে। স্মৃতি বোৰ কিছুমান ৰজাৰ সংৰক্ষণত লিখি সমাজত উচ্চ-নীচ দেৱালৰ সৃষ্টি কৰি ৰখাৰ উপায়হে হৈছে। মনুৰ নামত প্ৰচাৰিত তথা কথিত মনুস্মৃতিত মনুকালীন পৰিবেশৰ চিত্ৰণ নাই। মূল মনুস্মৃতি গীতাই এক পৰমাত্মাকেই সত্য বুলি মানে, তাতে

বিলয় কৰাই দিয়ে; কিন্তু বৰ্তমান কালত প্ৰচলিত প্ৰায়ে ১৬৪ স্মৃতিবোৰে পৰমাত্মাৰ নামো লোৱা নাই, পৰমাত্মা প্ৰাপ্তীৰ উপায়বোৰকো প্ৰকাশ কৰা নাই। সেইবোৰ মাত্ৰ স্বৰ্গৰ আৰক্ষনলৈকে সীমিত হৈ 'ন অস্তি' যি নায়েই তাকে উৎসাহ দিছে। মোক্ষৰ কথা উল্লেখই নাই।

মহাপুৰুষ :- মহাপুৰুষে বাহ্যিক তথা আন্তৰিক, ব্যৱহাৰিক তথা আধ্যাত্মিক, লোকৰীতি তথা যথার্থ বেদ-ৰীতি সকলোৰে জানকাৰী ৰাখে। এই কাৰণেই যে সম্পূৰ্ণ সমাজক মহাপুৰুষ সকলে থকা-মেলাৰ বিধান কৈছে আৰু এটা মৰ্যাদিত ব্যৱস্থা দিছে। বশিষ্ঠ, শুক্ৰাচাৰ্য্য, স্বয়ং যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণ, মহাত্মা বুদ্ধ, মুচা, যীশু, মহম্মদ, ৰামদাস, দয়ানন্দ, গুৰু গোবিন্দ সিং ইত্যাদি সহস্ৰ মহাপুৰুষ সকলে এনেদৰে ব্যৱস্থা দিছিল; কিন্তু এই ব্যৱস্থাবোৰ সাময়িক আছিল। শোষিত সমাজক ভৌতিক পদাৰ্থ প্ৰদান কৰাই যথার্থ নহয়। ভৌতিক সমস্যা ক্ষণেকীয়া, শাস্ত নহয় সেইকাৰণে তাৰ সমাধানো তৎসাময়িকে হয়। সেই বিলাকক চিৰন্তন ব্যৱস্থাৰ ৰূপত গ্ৰহণ কৰিব পৰা নাযায়।

ব্যৱস্থাকাৰ :- সামাজিক বিকৃতিবোৰক মহাপুৰুষ সকলে সমাধান কৰে। যদি এইবোৰ সমাধান নহ'লহেতেন, তেতিয়াহলে জ্ঞান-বৈৰাগ্যৰ পৰমৰ সাধনাৰ কথা কোনো শুনিলেহেতেন। ব্যক্তি যি পৰিবেশত সোমাই পৰে, তাৰ পৰা তাক ওলিয়াই আনি যথার্থৰ স্থিতিত আনিবলৈ বহুতো প্ৰলোভন দিয়া হয়। এতদৰ্থে মহাপুৰুষে যি বোৰ শব্দৰ প্ৰয়োগ কৰে, কোনো ব্যৱস্থা দিয়ে সেইটো ধৰ্ম নহয়। তাৰ দ্বাৰা দুশ বছৰৰ আগৰ ব্যৱস্থাৰ কথা পোৱা যায়, চাৰি-ছয় শ বছৰৰ বাবে উদাহৰণ হৈ পৰে আৰু হাজাৰ শ বছৰত সেইটো সামাজিক আবিষ্কাৰত নতুন পৰিস্থিতিৰ লগে লগে এইবোৰ নিস্প্ৰাণ হৈ পৰে। গুৰু গোবিন্দ সিংহৰ সামাজিক ব্যৱস্থাত শব্দ অনিবাৰ্য্য আছিল। এতিয়া সেই তৰোৱাল শব্দৰ স্থানত কি উচিত হ'বনে? যীশু গাধৰ ওপৰত উঠিছিল। (মন্তী ২১) গাধৰ সম্বন্ধত তেও দিয়া ব্যৱস্থা আজি কি উপযোগী হৈছেনে? কৈছিলে - কাৰো গাধ চুৰ-নকৰিবা। আজি গাধ কোনে পোহে? এইদৰে যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণইও সেই সময়ৰ সমাজক সাময়িক ব্যৱস্থা দিছিল, যাৰ উল্লেখ মহাভাৰত, ভাগৱত ইত্যাদি গ্ৰন্থত আছে, লগতে এই গ্ৰন্থবোৰত

তেখেতে যথার্থ ভাৱকো যতে-ততে চিত্ৰণ কৰিছে। পৰম কল্যাণকাৰী সাধনা আৰু ভৌতিক ব্যৱস্থাৰ নিৰ্দেশক একে লগে মিলাই দিলে সমাজে তত্ব নিৰ্ণয়ৰ ক্ৰম সম্পূৰ্ণভাৱে বুজি নাপায়। ভৌতিক ব্যৱস্থাবোৰক তেওঁলোকে তেনেভাৱে এৰি নিদিয়ৈ আনকি বেছিহে গ্ৰহণ কৰে; কিয়নো সেই ভৌতিক হোৱাৰ বাবে। মহাপুৰুষে কৈছে এনেদৰে কৈ এই ব্যৱস্থা সমূহৰ বাবে মহাপুৰুষ সকলক দোষ দিয়ে। তেওঁলোকে মহাপুৰুষৰ বাস্তবিক ক্ৰিয়া কলাপবোৰক ভাঙি ছিঙি ভুল ধাৰণাৰ সৃষ্টি কৰে। বেদ, ৰামায়ণ, মহাভাৰত, বাইবেল, কোৰাণ সকলোৰে প্ৰতি পূৰ্বাগ্ৰহ যুক্তধূঁসৰিত ধাৰণাবোৰহে বাকী আছে।

গীতা প্ৰত্যেক মনুষ্যৰ বাবেঃ- পতঞ্জলি ইত্যাদি বহুতো মহাপুৰুষ সকলে পৰম শ্ৰেয়ৰ যথার্থ বিবেক সমাজিক ব্যৱস্থাৰ পৰা ওলিয়াই বেলেগে প্ৰস্তুত কৰিছিল। যোগেশ্বৰ শ্ৰী কৃষ্ণইও বেলেগে কৰাটো কল্যাণকাৰী বুলি ভাবিলে। উত্তম অধিকাৰী প্ৰতিহে তেখেতে তাক ব্যক্ত কৰিলে। প্ৰেমী ভক্ত হোৱাৰ বাবে তোমাৰ হিতৰ বাবেহে কৈছোঁ। ই অতি গোপনীয়। শেষত তেখেতে কৈছে- যি ভক্ত নহয় তাৰ বাবে প্ৰতীক্ষা কৰা, তাক সেই ৰাস্তালৈ লৈ আহা, তেতিয়া তেওঁৰ বাবে কোৱা। এয়াই মনুষ্য মাত্ৰৰ বাবে যথার্থ কল্যাণৰ একমাত্ৰ সাধনা, যাৰ ক্ৰমবদ্ধ বৰ্ণন শ্ৰী কৃষ্ণ বৰ্নিত গীতা।

প্ৰস্তুত টিকাঃ- যোগেশ্বৰ শ্ৰী কৃষ্ণৰ ভাৱ যেনে আছিল তেনেদৰে ব্যক্ত কৰাৰ কাৰণে প্ৰস্তুত টিকাৰ নাম হল যথার্থ গীতা; গীতা নিজেই পূৰ্ণ সাধনা গ্ৰন্থ। সম্পূৰ্ণ গীতাত সন্দেহৰ অকনো স্থল নাই। কৰবাত যদি সন্দেহ হয়, সেইটো বৌদ্ধিক স্তৰত জনাৰ সক্ষম নহল, তেনেদৰে ভৱা হয়। সেয়েঃ কৰবাত যদি বুজি নেপায় তেতিয়াহলে কোনোবা তত্বদৰ্শী মহাপুৰুষৰ সান্নিধ্যত গৈ বুজিবৰ চেষ্টা কৰা উচিত।

তদ্বিদ্ধি প্ৰণিপাতেন পৰিপ্ৰশ্নেন সেবয়া।

উপদেক্ষ্যন্তি তে জ্ঞানং জ্ঞানিনস্তত্বদৰ্শিনঃ।।

ওঁ শান্তিঃ ! শান্তিঃ !! শান্তিঃ !!!

নিবেদন

‘যথার্থ গীতা যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণৰ পৰম পবিত্ৰ বাণী শ্ৰী মদ্ভগবদ্ গীতাৰেই অৰ্থ। ইয়াত আপোনাৰ হৃদয়স্থিত পৰমাত্মাৰ প্ৰাপ্তিৰ বিধানৰ প্ৰাপ্তিৰ পশ্চাতৰ চিত্ৰণ কৰা হৈছে। অবহেলা কৰি ইয়াৰ উপযোগ বৰ্জিত আছে, অন্যথা আমি লক্ষ্যৰ পৰা বঞ্চিত হ’ম। ইয়াৰ শ্ৰদ্ধাপূৰ্ণ অধ্যয়ণৰ দ্বাৰা মানুহৰ নিজৰ কল্যাণৰ সাধন পৰিপূৰ্ণ হয় আৰু যৎ কিঞ্চিৎ গ্ৰহণ কৰিব পাৰিলে পৰম শ্ৰেয় লাভ কৰিব; কাৰণ এই ঈশ্বৰ পথত আৰম্ভণীৰ কেতিয়াও নাশ নহয়।

-স্বামী অড্‌গডানন্দ

কেচেট প্ৰসাৰণত আধ্যায় সমূহৰ পূৰ্বৰ ভূমিকাঃ

(১) মাত্ৰ এক পৰমাত্মাত শ্ৰদ্ধাআৰু সমৰ্পণৰ বাণী প্ৰচাৰ গীতাই সকলোকে পবিত্ৰ কৰাৰ সাদৰ আমন্ত্ৰণ জনায়। সৃষ্টিৰ ভিতৰত যতেই নাথাকক, তেনে বিলাকৰ ধনী অথবা দুখীয়া, সম্ভ্ৰান্ত অথবা সাধাৰণ, পুণ্যাত্মা বা পাপী, স্ত্ৰী-পুৰুষ, সদাচাৰী অথবা দুৰাচাৰী সকলোৰে তাত প্ৰবেশ কৰাৰ অধিকাৰ আছে। বিশেষকৈ গীতাই পাপী সকলক উদ্ধাৰৰ সূগম পথৰ কথা কয়, পুণ্যাত্মা সকলেতো জানেই। প্ৰস্তুত আছে সেই গীতাৰে অদ্বিতীয় ব্যাখ্যা যথার্থ গীতাৰ কেচেট প্ৰসাৰণ।

(২) শাস্ত্ৰৰ ৰচনা দুটা দৃষ্টিৰে কৰা হয়- এটা হল সামাজিক ব্যৱস্থা আৰু সংস্কৃতিক জীয়াই ৰখা, যাৰ ফলত পূৰ্ব পুৰুষৰ পদ চিহ্নৰ অনুকৰণ কৰিব পৰা হয়, আৰু দ্বিতীয়টো এইটো যে তেওঁ শাস্ত্ৰত শাস্তি প্ৰাপ্ত কৰিব পাৰে। ৰামচৰিত মানস, বাইবেল, কোৰাণ ইত্যাদিত উভয় পক্ষৰেই সমাবেশ আছে; কিন্তু ভৌতিক দৃষ্টি প্ৰধান হোৱাৰ কাৰণে মনুষ্যই সমাজ উপযোগী ব্যৱস্থাকে ধৰে। আধ্যাত্মিক মুক্তি সমূহকো তেওঁলোকে সামাজিক ব্যৱস্থাতে চাবলৈ ধৰে; কয় এনেকৈ তো শাস্ত্ৰই কৈছে। সেই কাৰণে বেদব্যাসে দুটা দুটা পক্ষকেই একেখন গ্ৰন্থ মহাভাৰতত লিখিও আধ্যাত্মিক ক্ৰিয়াৰ সংকলন গীতাৰ ৰূপত বেলেগে কৰিছে, যাৰ ফলত মানুহে এইমূল কল্যাণ পথত প্ৰাপ্তি মিশ্ৰণ যাতে নকৰে। সেই আধ্যাত্মিক মূল্যৰ লগতে প্ৰস্তুত আছে, গীতাৰ দিব্যবাণী।

(৩) গীতা কোনো বিশেষ ব্যক্তি, কোনো জাতি, কোনো বৰ্ণ, কোনো পত্নী, দেশ-কাল বা কোনো অন্ধ পৰম্পৰা পালন কৰা সম্প্ৰদায়ৰ গ্ৰন্থ নহয় বৰঞ্চ ই সৰ্বলোকৰ আৰু সৰ্বকালৰ ধৰ্মশাস্ত্ৰ। ই প্ৰত্যেক দেশ, প্ৰত্যেক জাতি, প্ৰত্যেক বয়সৰ প্ৰত্যেক স্ত্ৰী-পুৰুষৰ বাবে হয়। সচাকৈ গীতা সম্পূৰ্ণ মানৱ জাতিৰে ধৰ্মশাস্ত্ৰ। আৰু কিমান গৌৰৱৰ কথা যে-গীতা আপোনাৰ ধৰ্মশাস্ত্ৰ।

(৪) পূজ্য ভগৱান মহাবীৰ, তথাগত ভগৱান বুদ্ধ বিজ্ঞ হৈও লোকভাষাত গীতাৰ বাণীৰে বাহক আছিল। আত্মা সত্য আৰু পূৰ্ণ সংযমেৰে আত্মস্থিতিৰ বিধান এই গীতাৰে কথা। বুদ্ধই সেই তত্বক সৰ্বজ্ঞ তথা অবিনাশী পদ বুলি গীতাৰ কথাকেই পুষ্টি কৰিছে। ইমানেই নহয়, বৰঞ্চ বিশ্বত ধৰ্মৰ নামত যি সাৰ-সৰ্বশ্ব আছে- যেনে, এপেশ্বৰ, প্ৰাৰ্থনা, অনুতাপ, তপ ইত্যাদি গীতাৰে উপদেশ। সেই উপদেশ, স্বামীশ্ৰী অড়গড়ানন্দ জীৰ শ্ৰীমুখ নিঃসৃত যথার্থ গীতা কেচেট ৰূপত মানৱ মাত্ৰৰে যুক্তিৰ দিব্য বাণীহে উপস্থিত হৈছে।

(৫) ভাৰতৰ লোক কথাত আছে যে সুকৰাতৰ শিষ্যৰ ভিতৰত মনিষি অৰস্ত্ৰৰে নিজৰ শিষ্য চিকন্দৰক (আলেকজেণ্ডাৰ) ভাৰতৰ পৰা গীতা জ্ঞানী গুৰু নিবলৈ নিৰ্দেশ দিছিল। গীতাৰেই একেশ্বৰ বাদক বিশ্বৰ বিভিন্ন ভাষাত মুচা, যীশু আৰু বহুতো সূফী মহাত্মা সকলে প্ৰচাৰ কৰিছিল। ভাষান্তৰ হোৱাৰ বাবে বেলেগ বেলেগ যেন লাগিলেও কিন্তু সিদ্ধান্ত গীতাৰেই। সেয়ে গীতা মানৱ মাত্ৰৰ তৰ্কহীন ধৰ্মশাস্ত্ৰ। গীতাৰ অৰ্থ যথার্থ গীতা ৰ ৰূপত প্ৰস্তুত কৰি স্বামী শ্ৰীঅড়গড়ানন্দ মহাৰাজে মানৱ মাত্ৰক এক অমূল্য নিধি যাৰ কেচেট

ৰূপান্তৰণ শ্ৰী জিতেন ভাইৰ সৌজন্যত হৈছে। গীতাৰ হাজাৰ হাজাৰ অনুবাদৰ মাজত দেদিপ্যমান এই ব্যাখ্যাৰ আলোকত আপোনালোক সকলো পৰম শ্ৰেয়ৰ সাধক হওক।

(৬) সংসারত প্ৰচলিত সকলো ধৰ্ম গীতাৰে দূৰস্থ প্ৰতিধ্বনী মাত্ৰ। স্বামী শ্ৰী অড়গড়ানন্দ জী মহাৰাজ দ্বাৰা ইয়াৰ ব্যাখ্যা যথার্থ গীতা শুনি জৈন কুলত উৎপন্ন শ্ৰী জিতেন ভাইয়ে ব্ৰত লৈ কৈছে যে কেচেটৰ মাধ্যমেৰে ইয়াৰ প্ৰচাৰণ কৰিম, কিয়নো ভগৱান মহাবীৰ, ভগৱান গৌতম বুদ্ধ, গুৰু নানক, কবীৰ ইত্যাদিৰ শ্ৰদ্ধাপূৰণ তপ সিদ্ধাস্তৰ উচ্চতম অভিব্যক্তিয়েই হল গীতা। গীতাৰ কেচেট সুমন তেৰে আপোনাৰ সন্মুখত আত্ম-দৰ্শনাৰ্থ প্ৰস্তুত কৰিছে।

(৭) গীতাৰ দুই হাজাৰ বছৰলৈকে ধৰ্মৰ নামত কোনো সম্প্ৰদায়ৰ সৃষ্টি হোৱা নাছিল। সেই কাৰণে গীতা (মজহব) সাম্প্ৰদায়িকতাৰ পৰা মুক্ত। সেই সময়ত বিশ্ব মনিষি সকলৰ মাজত এখনেই শাস্ত্ৰ প্ৰতিধ্বনীত হৈ আছিল উপনিষদ-সাৰ গীতা! মোক্ষ আৰু সমৃদ্ধিৰ স্ৰোত গীতা! শাস্ত্ৰ পঢ়াৰ অপেক্ষা তাৰ শ্ৰৱণত (শুনাত) বেছি লাভদায়ক হয়, কিয়নো উচ্চাৰণৰ শুদ্ধতা ইত্যাদিত একাগ্ৰতা ভাঙি যায়। সেই কাৰণে সৰল ভাষাত ৰূপান্তৰিত যথার্থ গীতাৰ এই কেচেট আপোনাৰ সন্মুখত সেৱাত প্ৰস্তুত আছে। ইয়াৰ শ্ৰৱণেৰে লৰা-ছোৱালীৰ মাজত, ওচৰ-চুবুৰীয়াত পৰমাত্মাৰ শুভ সংস্কাৰৰ সঞ্চাৰ হব, আপোনাৰ ঘৰ-চোতালৰ বায়ু মন্ডলো তপোভূমিৰ দৰে সুৰভিত হৈ উঠিব।

(৮) সেই ঘৰ শ্মশান তুল্য যাৰ ঘৰত প্ৰভুচৰ্চা নহয় আজিৰ মানৱ ইমানেই ব্যস্ত আছে যে ইচ্ছা কৰিও ভজনৰ সময় উলিয়াব নোৱাৰে। এনে পৰিস্থিতিত গীতাৰ বাণী কৰ্ণৰ ভিতৰত সোমাই গলে পৰম শ্ৰেয় আৰু সমৃদ্ধিৰ সংস্কাৰৰ বীজাৰোপণ হৈ যায়। ভগৱানৰ বাণীৰ এই কেচেটৰ দ্বাৰা ওৰেটো দিন পৰম প্ৰভুৰ স্মৰণ হৈ থাকিব আৰু এয়াই ভজনৰ আধাৰ শিলা।

(৯) নিজৰ লৰা-ছোৱালীক আমি শিক্ষা দিও যে তেও ভাল সংস্কাৰ অৰ্জন কৰক। ভাল সংস্কাৰৰ অৰ্থ মানুহে এইটো ভাৱে যে নিজৰ উপাৰ্জন ঘৰ-দুৱাৰ ইত্যাদি সমস্যাৰ সমাধান হওক। ঈশ্বৰৰ ফালে তেওলোকৰ ধ্যানেই নাথাকে। কাৰোবাৰ ওচৰত ইমান আছে যে তেওৰ প্ৰভুক মাতিবৰ আৱশ্যকতাই নাভাৱে। কিন্তু এই সকলো খিনি পাৰ্থিব বস্তুহে। ইচ্ছা নকৰিলেও সকলো বৈভৱ ইয়াতে এৰি থৈ যাব লাগিব। এনে স্থিতিত ঈশ্বৰৰ চিনাকীয়ে এক মাত্ৰ সম্বল যাক প্ৰদান কৰিছে এই যথার্থ গীতাৰ কেচেট প্ৰসাৰনে।

(১০) সংসারত যিমানবোৰ ধাৰ্মিক মত-মতান্তৰ আছে সেইবোৰ সকলো কোনোবা মহাপুৰুষৰ ভক্ত সমূহৰে সংগঠিত সমাজ। মহাপুৰুষৰ একান্ত চিন্তনস্থল কালান্তৰত তীৰ্থ, আশ্ৰম, মঠ আৰু মন্দিৰৰ ৰূপ লয়, যত মহাপুৰুষৰ নামত জীৱিকা উপাৰ্জনৰ পৰা ধৰি বিলাসিতাৰ সাধনো সংগ্ৰহ হৈ যায়। গন্দি মহাপুৰুষৰ পাছত সজোৱা হয়, গন্দিৰ দ্বাৰা কোনো মহাপুৰুষ নহয়। সেই কাৰণে ধৰ্ম সদায়েই প্ৰত্যক্ষদৰ্শী মহাপুৰুষৰ ক্ষেত্ৰৰ বস্তু হৈ আছে। গীতা এনেদৰে নিৰ্বিবাদ মহাপুৰুষ যোগেশ্বৰ ভগৱান শ্ৰী কৃষ্ণৰ বাণী যাৰ চিৰন্তন সত্যৰ দ্বাৰা আপোনাক সাক্ষাৎ কৰাই আছে যথার্থ গীতাৰ এই কেচেট প্ৰসাৰনে।

গীতা আপোনাৰ ধৰ্মশাস্ত্ৰ

বিশ্বৰ প্ৰচলিত সমস্ত ধাৰ্মিক বিচাৰ
ধাৰাত আদি উদ্‌গম স্থান ভাৰত বৰ্ষৰ
সম্পূৰ্ণ আধ্যাত্ম আৰু আত্মস্থিতি
প্ৰদানকাৰী, সম্পূৰ্ণ ৰূপে অনুসন্ধানৰ
বৰ্ণনা এই গীতা শাস্ত্ৰত কৰা হৈছে; এই
শাস্ত্ৰ অনুসৰি ঈশ্বৰ এক, প্ৰাপ্তিৰ ক্ৰিয়াও
এক, এই পথৰ পথিকৰ অনুকম্পাও
এক আৰু পৰিণামো এক.....।

তেতিয়া হ'লে প্ৰভূৰ দৰ্শন, ভগৱৎ
স্বৰূপৰ প্ৰাপ্তি আৰু কালাতিত অনন্ত
জীৱন। যথার্থ গীতা পাঠ কৰক।

শাস্ত্ৰ

পৰমাত্মাত প্ৰবেশ কৰাব পৰা ক্ৰিয়াত্মক অনুশাসনৰ নিয়ম সমূহৰ সংকলনেই শাস্ত্ৰ। এই দৃষ্টি কোণৰ পৰা ভগৱান শ্ৰীকৃষ্ণৰ শ্ৰীমুখ নিঃ সূত গীতা সনাতন, শাস্ত্ৰত শুদ্ধ শাস্ত্ৰ; যি চাৰি বেদ, উপনিষদ সমূহ, সমস্ত যোগ শাস্ত্ৰ, ৰামচৰিতমানস আৰু বিশ্বৰ সমস্ত দৰ্শন শাস্ত্ৰক অকলে প্ৰতিনিধিত্ব কৰে, গীতা প্ৰত্যেক মানুহৰ কাৰণে ধৰ্মৰ অতৰ্ক শাস্ত্ৰ।

পৰমাত্মাৰ নিবাস

সেই সৰ্ব সমৰ্থ, শাস্ত্ৰত পৰমাত্মা সকলো মানুহৰ হৃদয়তে আছে। তাৰ আশ্ৰয়লৈ যোৱাৰ বিধানৰে গ'লে সম্পূৰ্ণ ভাৱে যাব পাৰি; যাৰ দ্বাৰা শাস্ত্ৰত ধাম, শাস্ত্ৰত শান্তি আৰু অনন্ত জীৱনৰ প্ৰাপ্তি হয়।

সংবাদ

সত্যৰ তিনিও কালত অভাৱ নাই আৰু অসত্যৰ অস্তিত্বও নাই। পৰমাত্মাই হ'ল তিনিও কালৰ সত্য, শাস্ত্ৰত আৰু সনাতন।

- স্বামী অড়গড়ানন্দ

₹২০০

₹২০০

₹২০০

₹২০০

₹২০০

₹২০০

₹২০০

₹২০০

₹২০০

₹২০০

₹২০০

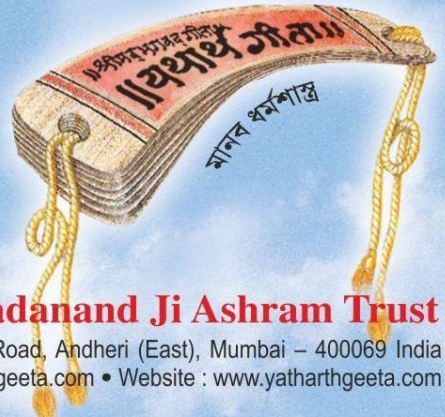
₹২০০

₹২০০

₹২০০

₹২০০

বছৰৰ দীঘলীয়া
অন্তৰালৰ পিছত
শ্ৰীমদ্ভগবদ্ গীতাৰ
শাস্ত্ৰত ব্যাখ্যা



Shri Paramhans Swami Adgadanand Ji Ashram Trust

5, New Apollo Estate, Mogra Lane, Opp. Nagardas Road, Andheri (East), Mumbai – 400069 India
Telephone : (022) 2825300 • Email : contact@yatharthgeeta.com • Website : www.yatharthgeeta.com